विषय-सूची

प्रस्तावना

अमरीका में सगठित मजदूरो की संख्या इस समय करीब डेढ करोड़ है। इस सगठित श्रमिक शक्ति का देश के भावी आर्थिक और राजनीतिक विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। हमारी लोकतन्त्रीय जीवन-पद्धति को कायम रखने में सहायता पहुँचाने में स्वतन्त्र श्रमिक संगठनो के महत्त्व को अमरीकी जनता अब सामान्यत: स्वीकार करने लगी है, किन्तु श्रमिक-सगठनो की बढती हुई शक्ति ने श्रम-सम्बन्धों के क्षेत्र में नयी और गम्भीर समस्याएँ पैदा कर दी है। अपनी इस वर्तमान स्थिति के बावजूद, तथ्य यह है कि श्रमिक आन्दोलन इतना शक्तिशाली इधर हाल ही मे हुआ। मान्यता प्राप्त करने और जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए श्रमिक सगठनो को बहुत लम्बा और कडा सघर्ष करना पडा, कभी-कभी तो रक्तपात भी हुआ। श्रम-आन्दोलन के वर्तमान रूप को तब तक सही-सही नही समझा जा सकता जब तक कि इसे इस लम्बे और कडे सघर्ष की पृष्ठभूमि में समझने की कोशिश न की जाय।

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य वास्तव में सामान्य पाठक को यह बताना है कि अमरीका में श्रमिक-आन्दोलन का उस धुँधले उपनिवेशी युग से आरम्भ होकर 'न्यू डील' और फिर द्वितीय विश्वयुद्ध के हलचल-भरे दिनों में किस प्रकार विकास होता गया। राष्ट्रीय संगठनो पर विशेष बल दिया गया है, जैसे, राष्ट्रीय श्रम-सघ, 'नाइट्स आव लेबर', अमरीकी श्रमसघ और औद्योगिक संगठन समिति। एक ही पुस्तक में श्रमिक आन्दोलन के हर पहलू का विवेचन सम्भव नही। अलग-अलग सघो के इतिहास, श्रमिक संगठनो में महिलाओ और अल्पसंख्यक समूहों की भूमिका, श्रमिको की शिक्षा और सघो के समाज-कल्याण कार्यो और अमरीकी श्रम-आन्दोलन का अन्य देशो के श्रम-आन्दोलन से सम्बन्ध जैसे विषयों पर अलग-अलग विस्तार से चर्चा न कर सारे आन्दोलन के समष्टि रूप का विवेचन करना ही उचित समझा गया। राष्ट्र के विकास की पृष्ठभूमि में श्रमिक आन्दोलन के इस

इतिहास को प्रस्तुत करने में, इन सारी सीमाओ के बावजूद, आशा है कि इसका समकालीन स्वरूप अधिक स्पष्ट रूप में पेश किया जा सका है जो कि आन्दोलन की सही धारणा बनाने के लिए बहुत आवश्यक है।

अमरीकी श्रम-आन्दोलन पर पहले भी अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी है और लेखक को वर्तमान पुस्तक की रचना मे इन अध्ययनो से बहुत सहायता मिली। जिनका हवाला पुस्तक के अन्त मे 'पुस्तक विवरण' मे दिया गया है। परन्तु जहाँ कही यह महसूस हुआ कि और खोज करनी आवश्यक है, लेखक ने उसके लिए मूल स्रोतो का सहारा लिया। अनेक सहयोगियो ने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि को सर्वांश मे या आंशिक रूप से पढ़ा, इसके लिए लेखक प्रो० अलमा हर्बस्ट, हेनरी आर० स्पेन्सर और राबर्ट ई० मैथ्यूज, डेविड और रूथ एस० स्पिन्ज का बहुत आभारी है। लेखक, राबर्ट एल० क्रोवेल और आर्थर बी० टर्टेलोट का भी, जो उस 'सिरीज' के क्रमश. प्रकाशक व सम्पादक है, जिसकी यह पुस्तक एक भाग है, उनके सुझावो और सलाह के लिए ऋणी है। एकदम अस्पष्ट पाण्डुलिपि को बार-बार टाइप करने के लिए लेखक एडिथ स्नोर और सैली डलेस का आभारी है। अपनी अन्य पुस्तको की तरह इसके लिए भी लेखक मारियन डलेस का बहुत कृतज्ञ है जिन्होने पाण्डुलिपि का अध्ययन किया और समय-समय पर बहुत विचारपूर्ण एवम् रचनात्मक सुझाव दिये।

—फास्टर रहो डलेस

संशोधित संस्करण की प्रस्तावना

इस पुस्तक का प्रथम सस्करण प्रकाशित हुए दस वर्ष से अधिक हो चुके और आज जब मै पुन. सशोधित सस्करण की भूमिका लिखने बैठा तो ऐसा प्रतीत होता है कि १९४९ की भूमिका मे जो कुछ लिखा, उसमें कोई नयी बात जोड़ने को नही है। १९६० की स्थिति को देखते हुए यह निश्चित रूप से दुहराया जा सकता है कि अमरीकी जनता, श्रमिको की उत्तरदायित्व की भावना मे यदा-कदा शंकालु हो जाने के बावजूद, यह मानने लगी है कि श्रमिक सगठन लोकतंत्रीय जीवन पद्धति की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। साथ ही, ये शक्तिशाली सगठन आज भी ऐसी गम्भीर समस्याएँ पैदा करते रहते है जिनका प्रभाव सम्पूर्ण औद्योगिक सम्बन्धो पर पडता है। ये ऐसी समस्याएँ नही है जिन्हें अन्तिम रूप से और सदा के लिए हल किया जा सके। अमरीकी समाज मे सगठित श्रम आन्दोलन का दर्जा और स्वय मजदूरो का दर्जा उन सभी परिवर्तनो और नयी बातो से प्रभावित होता रहता है जो निरन्तर विकासशील राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मे निहित है।

अमरीकी श्रम सघ (अमेरिकन फेडरेशन ऑव लेबर) और औद्योगिक संगठन समिति (काग्रेस ऑव इडस्ट्रियल ऑर्गनाइजेशन्स) का विलय गत दशाब्दी के श्रम आन्दोलन के इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है, लेकिन इससे श्रमिकों और प्रबन्धको के सम्बन्धो मे कोई विशेष परिवर्तन नही आया। लैन्ड्रम-ग्रिफिन कानून, जो १९५९ मे पास हुआ, भी एक काफी महत्त्वपूर्ण घटना है परन्तु औद्योगिक मामलो में सरकार की भूमिका के इतिहास के विकास-क्रम में इसका वैगनर कानून या टैफ्ट-हार्टले कानून से मुकाबला नही किया जा सकता। वास्तव में गत दशाब्दी में सगठित श्रम आन्दोलन ने उन उपलब्धियो को सुदृढ़ बना लिया जो उनको 'न्यू डील' और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान प्राप्त हुई थी। यद्यपि अमरीकी श्रम सघ और औद्योगिक संगठन समिति के विलय से जो आशाएँ थी वे पूर्णत पूरी नही हुईं, और हाल ही में श्रमिक संघो को असफलताओं का सामना भी करना पड़ा जिसका भविष्य पर

प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, परन्तु राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का मार्ग निर्धारित करने मे श्रमिक सघो की भूमिका आज भी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बनी हुई है।

'लेबर इन अमेरिका' के इस नये सस्करण को तैयार करने मे मैने ऐसी सामग्री इसमे शामिल कर ली जो मुझे उपयुक्त लगी, श्रम-आन्दोलन के इतिहास के सम्बन्ध मे इधर हाल मे लिखी महत्त्वपूर्ण रचनाओं को शामिल करने के लिए पुस्तक के अन्त मे 'पुस्तक विवरण' को भी बढा दिया और १९६० के आरम्भ तक के विकास के विवरण को इसमे शामिल कर लिया है। उल्लिखित घटनाओ को ध्यान मे रखते हुए मैने निष्पक्षता के साथ सम-कालीन विकास-क्रम की व्याख्या करने की चेष्टा की है।

मई, १९६०

फास्टर रहो डलेस

---

१ : औपनिवेशिक अमरीका

औपनिवेशिक अमरीका मे श्रम की प्राप्ति के मुख्य साधन करार-बद्ध नौकर अथवा गुलाम थे। १७ वी और १८ वी शताब्दि मे स्वतत्र श्रमिक बहुत थोडे थे। लेकिन अटलाण्टिक समुद्र के किनारे बिखरे हुए छोटे-छोटे शहर जैसे-जैसे विकसित और समृद्ध होते गए वैसे-वैसे मिस्त्रियो और कारीगरो का महत्व बढता चला गया जो या तो सीधे 'पुरानी दुनिया' से आए थे अथवा अपना करार पूरा कर लेने के बाद करार-बद्ध मजदूर के दर्जे से ऊपर उठ कर स्वतत्र रूप से जीवनयापन कर रहे थे। इनमें बढई, राज, जहाज बनाने वाले, पाल बनाने वाले, चमडा रगने वाले, जुलाहे, मोची, दर्जी, धातु का काम करने वाले, टीन की चीजें बनाने वाले, खिडकियो मे शीशे लगाने वाले और मुद्रण का काम करने वाले शामिल थे।

इन श्रमिको में से दक्ष कारीगर पहले स्वतत्र रूप से अपने कारोबार करते थे, लेकिन जैसे-जैसे शहर विकसित होते गए, कुशल श्रमिको ने अपनी छोटी-छोटी खुदरा दुकानें खोल ली जिनमे वे दिहाडिये और अप्रैण्टिस रखकर मजदूरी पर उनसे अपना काम करवाते थे। १८ वी सदी के समाप्त होते-होते तक इन दिहाडियो ने स्थानीय मजदूर-समाज बनाने शुरू कर दिए थे जो पहली यूनियनो के बीज रूप थे जो बाद मे जाकर सगठित मजदूर आन्दोलन के रूप मे अकुरित हुए।

उस जमाने की आर्थिक पद्धति इतनी सरल थी कि २० वी सदी के जटिल औद्योगिक ढाचे से उसकी कोई तुलना ही नही की जा सकती। मुट्ठीभर स्वतंत्र शिल्पियो तथा मिस्त्रियो की स्थिति का हमारे आधुनिक समाज के विशाल औद्योगिक श्रमिक समुदाय की स्थिति के साथ कोई युक्तियुक्त सम्बन्ध नही है। औपनिवेशिक जमाने मे मजदूरो के विरोध प्रदशन के कभी-कभार जो इक्के-दुक्के उदाहरण मिलते है उनमें और आजकल की राष्ट्र-व्यापी हडतालो में जिन्होने हाल के वर्षों में कोयला खानो, इस्पात तथा मोटर निर्माण के उद्योगों मे उत्पादन, जिस पर हमारी परस्पर निबद्ध अर्थतत्र सम्पूर्ण रूप से आश्रित है,

ठप्प कर दिया है इतना अधिक अन्तर है कि उससे ज्यादा अन्तर होना संभव नही है। फिर भी कुछ बुनियादी परिस्थितिया उस जमाने में भी कार्यशील रही जिन्होंने अमरीकी श्रम के समस्त इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

१७ वी और १८ वी शताब्दि में मजदूरो की लगातार कमी रहने से मजदूरी की दर यूरोपीय स्तर से ऊँची रही। नई दुनिया मे तरक्की के अवसरो ने वर्ग-विभाजन की पक्की रेखाएँ जो पुरानी दुनिया की सामन्ती विरासत थी, खत्म कर दी और नए-नए प्रदेशो मे जाकर बसने की आकाक्षा ने सामान्यत. एक प्रबल व्यक्तिवाद की भावना उत्पन्न की। औद्योगिक क्राति ने जहा पुरानी आर्थिक व्यवस्था को बिल्कुल बदल दिया, वहा अमरीकी जीवन पद्धति के ये मूल तत्व, जिन्होंने श्रमिको पर ही नही, अपितु हमारे समाज के अन्य सब वर्गों पर प्रभाव डाला, ज्यों के त्यो कायम रहे। ये तत्व श्रमिको को लोकतत्रीय प्रगति की उस व्यापक धारा मे ले आए, जिसने हमारे इतिहास को विशिष्टता प्रदान की और अमरीका के सगठित मजदूर आन्दोलन को विशिष्ट तथ अद्वितीय बनाने मे महत्वपूर्ण योग दिया।

शुरु-शुरू के प्रवासियो ने वर्जीनिया तथा मैसाच्युसेट्स मे उतरते ही अमरीका मे, जो उस वक्त जगल ही जगल था मजदूरो की अनिवार्य आवश्यकता अनुभव की। जेम्सटाउन की पहली यात्रा और बाद की तीन यात्राओ मे वर्जीनिया कम्पनी ने साहसी व्यक्तियो, सैनिको तथा भद्रजनो की मिलीजुली जमात भेजी। इतने असन्तोपजनक सामान से एक स्थिर बस्ती बसाने में अधिकाधिक निराश कप्तान जॉन स्मिथ ने अन्त मे जोरदार विरोध-पत्र भेजा। उसने वर्जीनिया कम्पनी को लिखा, "जब तुम दुबारा आदमी भेजो तो मेरी प्रार्थना है कि हमारे पास इस समय जैसे आदमी है उन्हे हजार की स्या मे भेजने के बजाय अच्छे साज-सामान से लैस सिर्फ ३० बढई, किसान, ाली, मछियारे, राज तथा लकडहारे भेज देना।"

प्लाइमाउथ की हालत कुछ अच्छी रही। उसके छोटे से यात्री दल मे ज्यादातर शिल्पी, कारीगर व अन्य मजदूर थे। उनके नेताओ को भी लन्दन के बिशप ने बडे भद्दे ढग से "मोचियो, दर्जियो, फेल्ट बनाने वालो और ऐसे ही नीच समझे जाने वाले लोगो के लायक गाइड" बताया था। १६३० मे

मैसाच्युसेट्स वे के प्युरीटन प्रवासियो में भी शिल्पियों व किसानो की वहुतायत थी। लेकिन इस लाभ के बावजूद न्यू इंग्लैण्ड के संस्थापको ने वर्जीनिया के लोगो की तरह शीघ्र ही ऐसे लोगो की कमी महसूस की जो सन्तोषपूर्वक समाज के छोटे काम कर सके। मैसाच्युसेट्स के गवर्नर ने १६४० में मजदूरों को उनके काम पर स्थिर रखने की कठिनाइयो का निराशापूर्ण उल्लेख किया। ये मजदूर निरन्तर सीमावर्ती इलाको में जाते रहते थे जहां मजदूरी ज्यादा मिलती थी अथवा वे जमीन लेकर स्वतत्र किसान वन जाते थे। कौटन मेथर "ईश्वर से विशेष प्रार्थना किया करते थे कि वह अच्छा नौकर भेजे .."

प्रवास के इन प्रारम्भिक दिनो में यद्यपि पहली और मुख्य माग किसानो तथा लकड़हारो की होती थी, तथापि दक्ष मजदूरो की माग भी तेजी से वढी।

प्रवासियो में से ही लोग, चाहे पहले वे कुछ भी काम करते रहे हो, बढ़ई, राज, जुलाहे और मोची वनने के लिए मजबूर हो जाते थे। लेकिन दक्षिणी वागानो और न्यू इग्लैण्ड के शहरो मे, दोनो जगह दक्ष शिल्पियो तथा मिस्त्रियों की सदा आवश्यकता रहती थी।

मजदूरो सम्बन्धी समस्याओ को हल करने के लिए अमरीका के अलग-अलग स्थानों पर वहुत भिन्न-भिन्न प्रकार के उपाय अपनाए जाते थे। वस्ती औरो से पहले वसने तथा प्राकृतिक वातावरण के कारण न्यू इंग्लैण्ड ज्यादातर स्वतत्र श्रमिको पर निर्भर करता था। दक्षिण को अन्ततोगत्वा पूर्ण रूप से नीग्रो गुलामो पर निर्भर करना पड़ा। १७ वी सदी में अधिकाश वस्तियो में तथा १८ वी सदी मे वीच की बस्तियो में ज्यादातर मजदूर करार-वद्ध नौकरों मे से भर्ती किए जाते थे। अनुमान लगाया गया है कि नई दुनिया में जितने भी प्रवासी बसने के लिए आए उनमे से कम से कम आधे और सम्भवतः उनसे भी ज्यादा किसी न किसी करार के अन्तर्गत ही आए और अपने करार की शर्तें पूरी करने के बाद ही पूर्णत. स्वतत्र नागरिक बने।

इस प्रकार के प्रतिज्ञा-बद्ध मजदूर पाने के तीन ज़रिए थे। वे स्त्री, पुरुष और वच्चे जिनके पुरानी दुनिया से रवाना होने से पूर्व ही इकरारनामे पर दस्तखत किए हुए होते थे, किराया चुका कर स्वतत्र हो जाने वाले (रिडेम्पशनर) जो बस्तियो में आने के वाद अपना श्रम बेचकर नई दुनिया में लाये जाने का अपना किराया चुका देने के लिए राजी हो जाते थे और

सजायाफ़्ता जिन्हें अमरीका निर्वासित कर दिया जाता था ! एक वार वस्तियों में आ जाने के वाद इन सव लोगो का एक सामान्य करार-वद्ध वर्ग ही वन जाता था जो कुछ नियत वर्षो तक विना कोई मजदूरी लिए अपने स्वामी के पूर्ण नियत्रण मे काम करते थे।

मजदूरो की माग इतनी ज्यादा थी कि उनकी भर्ती का व्यापार चमक उठा। औपनिवेशिक वागानो तथा व्रिटिश कम्पनियो के एजेण्ट इग्लैंड के गावो और कस्वो मे घूमते थे और वाद में वे यूरोप मे और विशेप रूप से राइनलैण्ड के युद्ध ग्रस्त क्षेत्रो मे गए और लोगो को अमरीका जाकर वसने के लाभ वताते थे। देहाती मेलो मे वे पर्चे वाटते थे, जिनमें इस नई दुनिया के चमत्कारो का खूव लुभावना वर्णन रहता था और कहा जाता था कि वहां के सौभाग्यशाली आदमियों के मुह मे भोजन स्वय आ पडता है और हर आदमी को अपनी जमीन का मालिक वनने का मौका मिलता है। ये वायदे प्राय इतने लुभावने और जोश पैदा करने वाले होते थे कि नादान और भोले लोग इकरारनामो र खुशी से हस्ताक्षर कर देते थे, विना यह सोचे-समझे कि जिस नए जीवन वे प्रवेश कर रहे है, उसमे क्या कठिनाइया हो सकती है। इस प्रकार से लोगों को भर्ती करने वाले ये एजेण्ट जिन्हें व्रिटेन के देहातो में 'क्रिम्प' और यूरोप में 'न्यूलैंण्डर' कहा जाता था, ठग्गी और छलकपट करने मे सकोच नही करते थे।

इन परिस्थितियो में हजारो व्यक्ति इग्लैण्ड से "सव्जवाग दिखाकर" लाए गए और इस प्रकार की हरकतो को रोकने के लिये कोशिश करने के वजाय स्थानीय अधिकारी प्राय. उनको प्रोत्साहन देते थे। यह जो आम धारणा वनी हुई थी कि इग्लैण्ड की आवादी जरूरत से ज्यादा है उसके कारण वे गरीवो और आवारा लोगों को, जिनके पास आजीविका कमाने का कोई साधन नही होता था, और जो वैसे समाज पर शायद भार वन कर रहते, समुद्र पार भेज दिए जाने के लिए उत्साह से मजूरी दे देते थे। वस्तुत. कभी कभी मजिस्ट्रेट ऐसे व्यक्तियो को पकड़वा मगाते और उनके सामने प्रवास अथवा जेल का विकल्प रखते थे। यह यतीमो और अन्य किशोरो की, जिनके पालन पोपण का कोई ज़रिया नही था, देखभाल करने का भी एक आसान तरीका पाया गया। किडनैंपिग (अपहरण) शव्द की उत्पत्ति वस्तिया वसाने के इस कठोर तरीके से ही हुई है।

१६१९ में लन्दन की कॉमन कौन्सिल ने "एक झुण्ड में से १०० बच्चे छाट लिए जिन्हे कुछ वर्षो तक अप्रैण्टिस के तौर पर काम करने के लिये वर्जीनिया भेजा जाना था।" प्रिवी कौसिल ने इस बात की जाच की और "इतनी गरीब आत्माओ को कष्ट और विनाश से उबारने के लिये" अधिकारियो की प्रशंसा करते हुए वर्जीनिया कम्पनी को यह अधिकार दिया कि "अगर कोई बालक किसी किस्म की गड़बडी करता है तो अपने उद्देश्य के मुताबिक वह उन्हे जेल भेज सकती है, सजा दे सकती है या उनके साथ अन्य प्रकार के बर्ताव कर सकती है और इस प्रकार उन्हें अपनी सहूलियत के मुताबिक अधिक से अधिक तेजी से वर्जीनिया भेज सकती है।"

लगभग ४० वर्ष बाद वर्जीनिया कम्पनी द्वारा इस रिवाज का दुरुपयोग किए जाने पर शायद प्रिवी कौसिल की आखें खुली। पता चला कि ग्रेवसेण्ड्स पर दो जहाज लगर डाले खडे है उनमे बच्चे व अन्य नौकर दोनो हैं "जिन्हे धोखा व प्रलोभन देकर लाया गया है और जो अपने छुटकारे के लिए चीख पुकार मचा रहे है।" यह आदेश दिया गया कि जिन किन्ही लोगो को उनकी इच्छा के विरूद्ध रोक रखा गया है—"यह इतनी बर्बर और अमानवीय चीज थी कि स्वयं प्रकृति और उससे भी ज्यादा ईसाई उससे घृणा किए बिना नही रह सकते थे—" उन्हें तुरन्त रिहा कर दिया जाए।

इन परिस्थितियो में यह फर्क करना बहुत कठिन था कि कौन अपनी इच्छा से जा रहा और किसे जबर्दस्ती ले जाया जा रहा है, विशेषकर तब जब कि वे नादान गरीब और अबोध बालक उपनिवेशो मे ऐसे करारबद्ध नौकरो की सख्या निस्सन्देह काफी थी जो शायद उस किशोरी की करुण गाथा को प्रतिध्वनित करें जिसका "सोट-वीड फैक्टर या मेरीलैण्ड की एक यात्रा" नामक १७०८ में प्रकाशित लघु पुस्तिका में वर्णन आया है।

इस प्रदेश के सब से सुखद समय में
मै दुर्भाग्य से फसा ली गई,
और शायद मै यहा अन्य
किसी लार्ड या लेडी की तरह ही लगती थी,
तब मै कोई गुलाम नही थी क्योकि

दो वर्ष में दो बार मेरे वस्त्र बहुत फैशनदार और नए थे;
मेरी शमीज भी नीली लिनन की नही थी,
किन्तु अब स्थिति बदल गई है, अब मै
प्रतिदिन कुदाल पर काम करता हू और नगे पैर
मकई के खेत साफ करके या सूअर चराकर
मै अपना उदासी-पूर्ण समय बिताती हू;
अपहृत और मूर्ख बनाई गई मै वहा से
एक घृणित विवाह-शय्या से बचने के लिए भाग आई
किन्तु यहा आ कर मैंने देखा कि
मै और भी बुरे लोगो मे फस गई हू।

जैसे जैसे समय गुजरता गया "हिज़ मैजेस्टी के सप्तवर्षीय यात्रियो" में अटलाण्टिक को पार करके आने वाले प्रवासियो मे जेलखाने के आदमियो की सख्या बढती गई। इनमे पहले ज्यादातर "बदमाश, आवारा और भिखारी" थे जिनमें सुधार की कोई गु जायश नही रह गई थी किन्तु १८ वी सदी मे कुछ और ज्यादा गम्भीर अपराधियो को भी समुद्र पार निर्वासित के योग्य व्यक्तियों की सूची मे शामिल कर लिया गया। मेरीलैण्ड बस्ती मे इन आवासियो की क्राति से पूर्व की सूची मे · जिसमें १११ महिलाओ समेत ६५५ व्यक्तियो के नाम थे, व्यापक प्रकार के अपराधो का उल्लेख था—हत्या, बलात्कार डकैती, घोड़ो की चोरी तथा बड़ी लूट जैसे जुर्म शामिल थे। महिलाओ में ऐसी बहुत सी थीं जिन्हे उस जमाने के वर्णनो में सक्षेप में "लम्पट" कहा गया था।

इंग्लैण्ड के जेलखानो से इस गन्दगी के आने पर उपनिवेश बहुत क्रुद्ध थे। "उनमे से अधिकाश बड़ी बदमाशिया करते है . . . . . नौकरो को बिगाड़ देते हैं जो पहले बहुत अच्छे थे।" इन उपनिवेशो के लिये उन्हे नियन्त्रित करना अधिकाधिक कठिन होता गया। किन्तु उनके विरोध के बावजूद यह परिपाटी जारी रही और कुल मिलाकर कोई ५०,हजार सजायाफ्ता ज्यादातर मध्यवर्ती बस्तियो में भेजे गए। मेरीलैण्ड मे, जहा उन्हे फैकना शायद सबसे ज्यादा पसन्द किया जाता था, समस्त १८ वी सदी मे प्रतिज्ञाबद्ध नौकरो मे उन्ही की संख्या ज्यादा रही।

पेंसिलवेनिया गजट मे १७५१ में एक व्यक्ति ने व्यग्यपूर्वक कहा : "हमारी मा जानती है कि हमारे लिए क्या सर्वोत्तम है। उपनिवेशो मे सुधार और खुशहाली के मुकाबले अगर किसी घर मे सेंध लगा ली, दुकान से कुछ उठा लिया, या डकैती कर ली तो क्या हुआ? अगर कभी-कभार किसी लडके को भ्रष्ट करके फासी पर लटका दिया गया, किसी लड़की को भ्रष्ट कर दिया गया, किसी पत्नी के छुरा घोप दिया गया, किसी पति का गला काट दिया गया या कुल्हाडे से किसी बच्चे का सिर फोड दिया गया तो क्या हुआ ? बेंजामिन फ्रैकलिन ने तीखेपन से कहा कि "हमारी बस्तियो मे अपनी जेले खाली करने की उनकी नीति एक जनसमुदाय द्वारा दूसरे जनसमुदाय के अबतक किए गए महानतम अपमान और घृणा की क्रूरतम अभिव्यक्ति है।" इसके परिणाम अमरीकियो के बारे मे डा० सेम्युअल जान्सन की प्रसिद्ध उक्ति में एक बिल्कुल भिन्न दृष्टि से प्रकट हुए . "श्रीमन् उनकी जाति सजायाफ्ताओ की है और उन्हे फासी पर लटकाने से घटकर हमारे किसी भी बर्ताव पर उन्हे सन्तोष करना चाहिए।"

सजायाफ्ता, आवारा और देहातो से "फुसलाकर" लाए गए बच्चे हो, या किराया देकर छुटकारा पाने वाले हो, नई दुनिया मे प्रवास के लिए स्वेच्छा से गए हो या अनिच्छा से दोनो ने ही अटलाण्टिक पार की यात्रा मे ऐसी असुविधाए और कठिनाइया उठाई जिनकी तुलना बदनाम "मिडल पैस्सेज" पर नीग्रो गुलामो द्वारा उठाए गए कष्टो से ही की जा सकती है। ह्वाइट गिनी मैन में वे अन्धाधुन्ध भर दिए गए। छोटे से जहाजो में जिनका वजन २०० टन से अधिक नही होता था, प्राय ३०० तक यात्री ठूस दिए जाते थे जिससे बहुत घिचपिच रहती थी, स्थान बडा अस्वास्थ्यकर हो जाता था और खान-पान की चीजे बहुत कम होती थी। टाइफस आदि बीमारिया सदव ही बहुत से यात्रियो का खात्मा कर देती थी। कभी-कभी तो ५० फी सदी तक आदमी मर जाते थे और बच्चे तो इस यात्रा की विभीषिका से, जो सात सप्ताह से १२ सप्ताह तक होती थी, शायद ही बच पाते थे।

जर्मन पैलाटिनेट से भरती किए गए रिडेम्पशनरो के एक अनुभव में बताया गया है कि यात्रा के दौरान इन जहाजो में भयावह कष्ट, बदबू,

जहरीली गैसें, भय, उलटियां, मितलियां, बुखार, पेचिश, सिरदर्द, गर्मी बढ़ना, कब्ज, फोड़ा-फुंसी स्कर्वी, कैन्सर, मुंह की सड़ाद और ऐसी ही अनेक बीमारियां हो जाती थी जो सब की सब बासी, तेज नमक वाले भोजन व मांस से, तथा बहुत बुरे और गन्दे पानी से उत्पन्न होती थी जिससे अनेक बड़ी दयनीय हालत में मर जाते थे। इतना ही नही चीजो की कमी, भूख, प्यास, पाला, गर्मी, सीलन, चिन्ता, अभाव, व्यथा और पश्चात्ताप का भी बड़ा भारी कष्ट था। और भी अनेक मुसीबतें थी जैसे जूं, जो लोगो के बदन पर, विशेषकर बीमार लोगो पर इस कदर फैल जाती थी कि उन्हें शरीर पर से उलीचकर फेंकना पड़ता था। यह कष्ट अपनी चरम अवस्था पर तब पहुँचता है जब दो-तीन रात तक तूफान आता रहता है और हर कोई यह समझने लगता है कि अब यह जहाज सब यात्रियो को अपने साथ लेकर समुद्र के गर्भ में समा जाएगा। जब इस प्रकार का दृश्य उपस्थित होता है तब लोग बहुत भक्तिभाव से प्रार्थना किया करते हैं।"

बन्दरगाह पर पहुंच जाने के बाद भी यह जरूरी नही कि आवासियो की कठिनाइयो का अन्त हो जाए। जिनके लिए पहले से ही करार कर लिए गए होते है उन्हें तो उनके अज्ञात मालिको को सौंप दिया जाता है। अगर रिडेम्पशनरो को तुरन्त कोई रोजगार नही मिलता था तो जहाज के कप्तान या वे व्यापारी, जिन्होने उनका यात्रा-खर्च दिया होता था उन्हें बेच देते थे। इन परिस्थितियो में अक्सर परिवार भी छिन्न-भिन्न हो जाते थे क्योंकि पत्नियां और बच्चे उसी को सौंपे जाते थे जो सबसे ऊँची बोली बोलता था। गुलामी की शर्त उमर के अनुसार अलग-अलग होती थी और उसकी अवधि एक से ७ वर्ष तक होती थी। प्राय: २० वर्ष से ऊपर के व्यक्तियो के लिए जो किसी खास प्रतिज्ञा-पत्र से बंधे नही होते थे, "देश के रीति-रिवाज के मुताबिक" गुलामी की अवधि ४ वर्ष होती थी।

औपनिवेशिक अखबारों में प्राय. गुलामो की बिक्री के विज्ञापन छपे होते थे। २८ मार्च, १७७१ को 'वर्जीनिया गजट' मे निम्न घोषणा प्रकाशित हुई:

> लीड्स टाउन में जस्टीशिया जहाज अभी हाल में आया है, जिस पर करीब १०० स्वस्थ नौकर है।

> इनमें स्त्री, पुरुष व बच्चे सभी है, अनेक दक्ष कारीगर है—जैसे लुहार, मोची, दर्जी, बढई, जायनर, एक कूपर (टीन का काम करने वाला), कई चादी के कारीगर, जुलाहे, एक जौहरी व अन्य कारीगर हैं। बिक्री २ अप्रैल, मगलवार को रैपनहाक नदी पर लीड्स टाउन में शुरू होगी। टामस हैज को मजूरशुदा जमानत और बाण्ड दिए जाने पर मुनासिब ऋण भी मिल सकेगा। —थोमस हॉज

अगर प्रवेश के बन्दरगाह में बिक्री नही हो पाती थी तो रिडेम्पशनरो को लाने वाले उन्हे आगे हाक ले जाते थे, बिल्कुल भेड-बकरी की तरह और तब सार्वजनिक मेलो में उन्हे नीलाम किया जाता था।

बाहर से नौकर लाना बडा मुफीद काम था। कुछ बस्तियो में प्रत्येक आवासी को ५० एकड जमीन की मिल्कियत प्रदान की जाती थी और प्रतिज्ञा-बद्ध नौकरो की बिक्री तो सदा होती ही थी। हट्टे-कट्टे किसानो और विशेषकर दक्ष कारीगरो की प्राय बहुत ऊँची कीमत मिलती थी। १७३९ में विलियम बायर्ड ने राटरडम मे अपने एजेन्ट को लिखा कि वह वडी सख्या में भेजे गए नौकरो को भी सम्हाल सकता है। "मै नही जानता कि जो पैलाटाइन अपना किराया नही चुकाते वे फिलाडेल्फिया में कब से बिक रहे है। किन्तु यहा वे चार वर्ष से बिक रहे है और उन पर ६ से ९ पौण्ड तक मिल जाते है। बडे व्यापारी १० पौण्ड तक भी दे सकते हैं। अगर ये कीमतें ठीक जचें तो मुझे विश्वास है मै, प्रतिवर्ष दो जहाज भरे यात्री बेच सकता हूँ."

प्रतिज्ञा-बद्ध मजदूरो के साथ जैसा वर्ताव होता था उसमे काफी भिन्नताएं होती थी। १७ वी सदी के जॉन हैमण्ड के वर्णन मे बताया गया है कि "लीह और राशेल, या दो भाग्यशाली बहनो वर्जीनिया और मेरीलैण्ड को इतना कठिन और ज्यादा श्रम नही करना पड़ता था जितना इग्लैण्ड मे किसानो या हाथ के कारीगरो को।" काम के घण्टे सूर्योदय से सूर्यास्त तक होते थे लेकिन गर्मियो मे दोपहर को ५ घण्टे विश्राम मिलता था, शनिवार को आधे दिन काम करना होता था और सैब्बथ अच्छे कामो मे बीतता था "एक प्रतिज्ञाबद्ध नौकर जॉर्ज आलसप्प ने स्वय १६५९ मे मेरीलैण्ड के जीवन का करीब-करीब प्रशसनीय चित्रण किया है। उसने कहा, "इस प्रान्त के नौकर, जिन्हें इग्लैड मे लोग 'गुलाम'

कह कर वदनाम करते है, लन्दन के अधिकाश यात्रिक अप्रैण्टिसो के मुकाबले अधिक स्वतत्रता से रहते हैं। जो चीज भी सुविधाजनक और आवश्यक है उससे वे वचित नही हैं।

लेकिन अन्य वर्णनो में उस वक्त की जिन्दगी का अधिक कठोर चित्रण पाया जाता है। औपनिवेशिक कानूनो में यद्यपि यह विधान था कि मालिक अपने नौकरो को पर्याप्त भोजन, निवास और कपडे प्रदान करे, फिर भी ऐसे उदाहरणो की कमी नही है जव मालिक अपने नौकरो से ज्यादा से ज्यादा काम लेते थे और खाना कम देते थे। इसके अलावा नौकर जहा काम करते थे उससे दूर उन्हे नही जाने दिया जाता था और सराय के मालिक को हिदायत थी कि वे इन नौकरो को अपने यहा न आने दे और न उन्हे शराव वेचे। छोटे-छोटे अपराधो के लिए उनकी नौकरी की अवधि वढा दी जाती थी और अवज्ञा या सुस्ती दिखाने पर उनके मालिक उन्हे कोडो की या अन्य शारीरिक सजा दिया करते थे। नाजायज औलाद के कारण नौकरानिया ज्यादा अरसे तक वन्धन मे रखी जा सकती थी और उनके मालिक कभी-कभी इस प्रकार परिस्थिति जानवूझ कर उत्पन्न करने के लिये षडयत्र रचा करते थे। एक .ॅ मे कहा गया है कि 'वाद के परीक्षणो से जाहिर हुआ कि कुछ .भिचारी मालिको ने अपनी नौकरानियों के वच्चे पैदा कर दिए और फिर भी वे उनकी सेवाओ का लाभ उठाने का दावा करते हैं।"

प्रतिज्ञा-वद्ध नौकरो को साथी ईसाई समझा जाता था और कम से कम ऐसे मसलो मे उन्हे अदालत मे जाने का हक था। उनकी हैसियत नीग्रो गुलामो से भिन्न थी। लेकिन उनके मालिको के अर्ध-मालिकाना हको के कारण उनके लिए किसी आघात या अपमान का प्रतीकार करवा सकना अत्यन्त कठिन था। यद्यपि दयालु मालिक अपने नौकरो के साथ अच्छा वर्ताव करते थे, तथापि इस रिपोर्ट पर विश्वास करना कठिन नही कि उनसे प्राय: इतना कठिन श्रम और नौकरी कराई जाती थी जितना न्यूगेट से लाए गए, किसी भी नीच से नीच आदमी से कराई गई है।"

अदालती रिकार्डो में जानवूझ कर दुर्व्यवहार करने के अनेक उदाहरण मिलते है। इन्हें नमूना भले ही न माना जाए, किन्तु स्थिति पर ये अच्छा प्रकाश डालते है। वार्ड नाम की एक मालकिन ने अपनी नौकरानी को पीठ

पर इतना मारा और फिर घावों पर आनन्द ले ले कर नमक छिडका कि वह शीघ्र मर गई । जूरी के यह फैसला देने पर कि इस प्रकार की कार्रवाई "अयुक्तियुक्त और ईसाइयत के खिलाफ" है, मालकिन वार्ड पर ३०० पौण्ड तम्बाकू देने का जुर्माना किया गया । एक अन्य मामले में मालकिन मोर्निंग ग्रे ने अदालत को चुनौती देते हुए कहा कि किसी भी परिस्थिति मे वह अपने नौकरो को "खेलने या खाली नहीं बैठने देगी" और जिस अभागे ने शिकायत की थी उसे नगा करके ३० कोड़े लगाए गए । एक तीसरा मुकदमा एक अन्य नौकरानी के पक्ष मे गया । उसे एक मालिक की नौकरी से मुक्ति दे दी गई जो उसे बार-बार मारता था यहा तक कि एक बार रविवार की सुबह जब उसने उसे एक पुस्तक पढते हुए देखा तो उसने तीन टागो वाला स्टूल (तिपाई) उसके सिर पर दे मारा । अदालती रिकार्डों के अनुसार वह चिल्लाया . "तू कुटिल, नीच, अपने हाथ मे किताब लिए तू क्या कर रही है ?"

एक नौकर जब बहुत ही तग आ गया तो उसने बदला लिया । उसकी अपनी कहानी के अनुसार "मेरी मालकिन बदजबान थी । वह न केवल घर में मुझे गाली गलौज देती और कोसती रहती थी, जब कभी मे घर आता तो मुझे निरन्तर तीखे ताने और कटु शब्द कहती, बल्कि जब मैं बाहर खुले मे शाति से काम कर रहा होता था तो गुस्ताखी से एक जीते-जागते भूत की तरह मेरे पीछे लगी रहती ।" आखिर होश-हवास खोकर एक दिन उसने कुल्हाडा लिया और न केवल अपनी बदजबान मालकिन की, बल्कि मालिक और एक नौकरानी की भी हत्या कर दी ।

औपनिवेशिक अखबारो मे भागे हुए नौकरो के बारे मे विज्ञापन अक्सर निकलते रहते थे । ऐसा एक नोटिस एक बार एक अंग्रेज नौकर के बारे में निकला जिसका 'हल्के रग का लम्बा चेहरा है, पतले सनिया बाल हैं और ऊपर के अगले दात निचले दातो पर विलक्षण ढग से आगे की ओर बढ़े हुए हैं ।" एक अन्य नोटिस मे सारगी बजाने वाले एक मोची का जिक्र था जो "आमोद-प्रमोद के स्थानो और मदिरालयो मे जाना बहुत पसन्द करता है । शराब पीने का आदी है और जब पी लेता है तो उसे दौरे पडते हैं ।" बहुत से अन्य विज्ञापनो में भगोड़े, राज, दर्जी, बढ़ई और स्कूल मास्टरो तक के लिए विशेष इनाम प्रस्तुत किए जाते थे । उनके कपडो का कही कही जो वर्णन

मिलता है उसके अनुसार वे नाना प्रकार के रंगों की वास्कटें और पीले कोट पहनते थे। एक भगोड़ा डबल ब्रेस्ट का केपकोट, जिसमें सफेद धातु के बटन लगे थे, नीले रग की एक पुरानी जाकेट, अच्छे जूते और बड़े सफेद बक्सुए धारण किए हुए था। जुराब नही पहनता था, केवल चुराकर ही पहनता था।

८ सितम्बर, १७४५ को मेरीलैण्ड गजट में अधिक प्रसन्नतादायक नोटिस निकला। जॉन पवेल यह रिपोर्ट दे सका कि "जिस आदमी को पहले भगोड़ा विज्ञापित किया गया था वह देहात में सिर्फ देसी शराब पीने गया था।" नोटिस मे आगे लिखा था : चूंकि वह अपने मालिक के पास लौट आया है, सब लोग जिन्हें अपनी घडियो की मरम्मत करानी है अब "उपयुक्त दरो पर बहुत अच्छी तरह" मरम्मत करा सकते है।

जो नौकर अपने करार की शर्तें निष्ठापूर्वक पूरी कर लेते थे उन्हें काफी पुरस्कार दिए जाते थे। जमीन तो सिर्फ अपवाद रूप में ही दी जाती थी लेकिन कुछ मामलो में कम से कम मेहनती लोगो को "एक अच्छी जागीर" दी जाती थी और किसी न किसी प्रकार का "मुक्ति-सम्पत्" दिए जाने का सर्वत्र रिवाज था। उदाहरणार्थ मैसाच्युसेट्स में कानून में इस बात का विशेष रूप से उल्लेख था कि जिन नौकरो ने ७ वर्षो तक परिश्रम और वफादारी से सेवा की है उन्हें खाली हाथ नही भेजा जाना चाहिए। इसका अभिप्राय न केवल अलग-अलग उपनिवेशो मे भिन्न था अपितु हरेक की करार की शर्तो के मुताबिक भी भिन्न-भिन्न होता था। "मुक्ति-सम्पत्" में सामान्यत कम-से-कम कपडे, कुछ किस्म के औजार तथा शायद ऐसे मवेशी शामिल होते थे, जिनसे नौकर स्वतत्र रूप से खेती कर सके। कुछ प्रकार के करार-पत्र ऐसे थे, जिनमें कहा गया था : "हर वर्ष की समाप्ति पर एक सूअर और करार की समाप्ति पर एक जोड़ा पोशाक।"

इस प्रकार समस्त १७ वी और १८ वी शताब्दि में प्रतिज्ञाबद्ध नौकर—स्त्री हो या पुरुष—अपनी जिन्दगी बनाने की आशा कर सकते थे। १७२४ में ह्यू जोन्स ने लिखा : "एक बार जब वे मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं तब दैनिक मजदूरी कर सकते है या थोड़ी सी रकम देकर एक बाग ठेके पर ले सकते है और यदि वे दक्ष और मेहनती हैं और लापरवाह नही है तो ओवरसीयर बन सकते है या अपना लुहार, बढई, दर्जी, लकड़ी काटने वाले, कूपर या राज

आदि का काम जारी रख सकते है।"

अधिकाश लोग इन अवसरो का लाभ उठाते थे। जव वे स्वतत्र किसान या श्रमिक वन जाते थे तो अपने पहले हालात को भूल जाते थे। अन्य लोग देश के पिछले स्थानो में साधनहीन और उत्साह-हीन भटकते रहते थे, जिससे दक्षिण की वस्तियो में गरीव गोरो का एक अलग वर्ग वन गया। लेकिन व्यक्तिगत तौर पर किसी का भाग्य कैसा भी रहा हो, जैसे-जैसे देश का विकास और विस्तार हुआ, प्रतिज्ञावद्ध नौकरो ने औपनिवेशिक अमरीका के निर्माण में वड़ा महत्वपूर्ण भाग लिया।

उपनिवेशो में स्वतत्र मजदूरों में आवासी शिल्पी और मिस्त्री शामिल होते थे जो अपना अमरीका आने का खर्चा स्वयं दे देते थे। इनके अतिरिक्त वे प्रतिज्ञावद्ध नौकर शुमार किये जाते थे जिन्होंने अपने करार की शर्तें पूरी कर दी होती थी। लेकिन इस प्रकार के श्रमिक फिर भी वहुत कम मिलते थे और अटलाण्टिक समुद्र के तटवर्ती शहरो मे सदा ही श्रमिको की वहुत कमी रहती थी। ऊँची मजदूरी और अपेक्षाकृत अच्छी काम की हालतें भी श्रमिको का पश्चिम की ओर जाना नही रोक सकी। सीमा पर जमीन सस्ती होने के कारण वह तटवर्ती शहरो से लोगो को खीचती रहती थी।

एक औपनिवेशिक अधिकारी ने १७६७ में वोर्ड आफ ट्रेड को लिखा : "जिस देश में हर किसी को काम करने के लिये जमीन उपलव्ध है, उसमें लोगो की प्रतिभा स्वभावत कृषि की ओर ले जाती है और वह हर अन्य व्यवसाय पर हावी हो जाती है। इसका सवसे प्रवल प्रमाण विभिन्न व्यवसाय करने वाले [illegible]ोप से लाए गए नौकर है। जैसे ही उन के करार की अवधि खत्म होती है [illegible]ुरन्त अपने मालिको को छोड़ देते हैं और जमीन का एक छोटा-सा टुकड़ा [illegible]ीद लेते हैं। इसको निवास योग्य वनाने मे पहले ३-४ वर्षो तक वे वडी दीन-[illegible]ीन और गरीवी की हालत मे रहते है। लेकिन इन सव कष्टो को वे वड़ी खुशी से सह लेते है। जमीन का मालिक वनने का सन्तोष उनकी हर कठिनाई पर विजय पा लेता है और वे उस आराम देह जीवन की अपेक्षा जो उन्हे और उनके परिवार को अपना पुश्तैनी धन्धा करने से प्राप्त हो सकता है, इस प्रकार की जिन्दगी को अधिक पसन्द करते है।"

इस स्थिति का सवसे ज्यादा दुष्प्रभाव न्यू इंग्लैण्ड पर पडा जहां प्रतिज्ञावद्ध

नौकर अपेक्षाकृत कम सख्या मे थे। वहा मजदूरी की दरें इतनी वढ गईं और दक्ष और अदक्ष दोनों प्रकार के मजदूर इतनी स्वतत्र प्रकृति के हो गए कि औपनिवेशिक अधिकारियो को मजबूरन कार्रवाई करनी पड़ी। फलस्वरूप स्वतत्र मजदूरो पर असर डालने वाला अमरीका में पहला श्रम कानून बना। कानून के जरिये अधिकतम मजदूरी निश्चित कर दी गई, धन्धे में तब्दीली वन्द कर दी गई और निम्न वर्ग के लोगो को निम्न स्तर पर रखने के लिए पोशाक और व्यवहार में भेदभाव कर दिया गया।

१६३० के जमाने में भी मैसाच्युसेट्स की जनरल कोर्ट ने वढई, जायनर, राज, लकडी काटने वालो, फूस की झोपडी वनाने वालो तथा अन्य कारीगरो के लिए दो शिलिंग प्रतिदिन की, तथा दिहाड़ियो के लिए १८ पेंस प्रतिदिन की अधिकतम मजदूरी निश्चित की। इसके साथ यह व्यवस्था भी की गई कि "सब श्रमिक सारे दिन काम करेंगे, सिर्फ भोजन और विश्राम के लिए उन्हें उपयुक्त समय मिलेगा।" इस प्रकार की मजदूरी को शराव के लिए भत्ते से पूरा करने के रिवाज को ध्यान मे रखते हुए (जिसके विना यह दुखद अनुभव देखने में आया कि अनेक काम करने से इन्कार कर देते हैं) अदालत ने यह भी घोषणा की कि जो कोई व्यक्ति किसी श्रमिक को आवश्यकता के विना ही तेज शराव देगा, उसपर प्रत्येक अपराध के लिए २० शिलिंग जुर्माना किया जाएगा।

४० वर्ष वाद एक अन्य कानून में भी मजदूरी की इन सामान्य दरो को दोहराया गया। अधिक स्पष्टता से यह कहा गया कि "काम का दिन भोजन के अलावा १० घण्टे का काम" समझा जाना चाहिए और यह कानून और ज्यादा कारीगरो पर लागू किया गया। वढ़ई, राज, पत्थर की इमारतें वनाने वालो, कूपरो और दर्जियो के लिए दो शिलिंग प्रतिदिन की मजदूरी तय की गई, जूते वनाने वालो, कूपरों और लुहारो के लिए एक चीज के वनाने के विशेष रेट निश्चित किए गए और अन्त में नए कानून में कहा गया कि "चूंकि ऐसा प्रतीत होता है कि दस्ताने, काठी और टोप वनाने वाले अथवा अन्य कारीगरो को न्यायोचित मात्रा से कही अधिक पारिश्रमिक मिलता है, इसलिए उन्हे अन्यो के लिए निर्धारित नियमों के अनुसार उसमें कमी करनी चाहिए।"

अधिकतम मजदूरी की इन दरो की भरपाई कुछ हद तक, जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओ के मूल्य पर नियंत्रण करके की जाती थी किन्तु वडी अदालत

का स्पष्ट अभिप्राय मालिको की मदद करना तथा 'सार्वजनिक हित की दृष्टि से' मजदूरो को उनके काम के स्थानो पर ही रखना था।" न्यू इग्लैण्ड के धार्मिक नेताओ की पौराणिक नजर में कारीगरो, मजदूरो और नौकरो की मजदूरी की अत्यधिक महगाई दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम पैदा करने वाली थी। उन्होने सख्ती से कहा : "इस श्रम का फल कई लोगों द्वारा इतनी ठाठ-बाट की पोशाको मे, जो उनके स्थान और पद के लायक नही है, तथा आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने मे खर्च किया जाता है। उसका अधिकांश समय और मदिरालयो मे तथा अन्य बुरे कामो में खर्च कर दिया जाता है जो ईश्वर का अपमान धर्म की अवमानना, और हम मे से भद्र और ईश्वर-भक्त लोगो को महान दुख देने वाला है।"

हमारे पूर्वजो की निगाह मे अर्थनीति और नैतिकता का चोली-दामन का साथ था। कम मजदूरी और अधिक काम मजदूरो के लिए कल्याणकारी है, उनके इन उच्च-आदर्श का एक व्यावहारिक लाभ था, जो बाद की पीढियो ने दर-गुजर नहीं किया। २०वी सदी मे नहीं, तो १९वी सदी में काम के अधिक घण्टो का उसी पुराण-पन्थी भावना से समर्थन किया जाता था और कहा जाता था कि काहिली दूर करने और मजदूरो को हानिकारक प्रलोभनो से बचाने के लिए ये जरूरी है। फैक्ट्री जीवन के "हितकारी अनुशासन" को बाद मे मालिको ने मदिरालयो और संलापगृहो के, जिन्होने औपनिवेशिक जमाने की सरायो का स्थान ले लिया था, हानिकारक आकर्षण को मिटाने वाले की सज्ञा दी।

मजदूरो द्वारा विशेष खपत पर और ज्यादा प्रत्यक्ष प्रतिबन्ध एक अन्य कानून द्वारा लगाया गया जिसमें निर्धारित किया गया था कि मजदूरो को किस प्रकार की पोशाके पहननी है। इस आज्ञा मे कहा गया था : "हम इस चीज पर अपनी अत्यन्त घृणा व्यक्त करते है कि समाज में नीचा स्थान रखने वाले स्त्री-पुरुष कुलीन लोगो की पोशाक पहने।" प्रतिबन्ध मे "सोना या चांदी के गोटा या बटन लगाना या बूट पहन कर चलना, एक ही पद की स्त्रियो के लिए रेशम या मलमल के दुपट्टे ओढना शामिल था, जिसकी अधिक सम्पन्न या शिक्षित लोगो को तो अनुमति दी जा सकती थी लेकिन जिन्हे हम इस प्रकार की अवस्थाओ वाले व्यक्तियो द्वारा पहना जाना किसी भी हालत में

बर्दाश्त नही कर सकते।"

ये कानून अमल मे नही लाए जा सके। यद्यपि अधिकारीगण अधिक वेतन की माग को असहिष्णुता, रविवार को छुट्टी न मनाने, जुआ खेलने और मिलजुलकर नाचने से जोड़ते रहे, जिन्हे "शैतानी बुराइयां समझा जाता था, जिनकी ओर मनुष्य की प्रकृति सहज झुक जाती है" तो भी वे स्थिति को काबू में नही रख सके। बड़ी अदालत ने अन्त मे यह काम स्थानीय नगर सरकारो को सौप दिया तो भी मजदूरी की दर तथा सामाजिक रीति-रिवाज निश्चित करने में मनमाने कानून के बजाय श्रमिको की कमी ही अधिक निर्णायक सिद्ध हुई।

यद्यपि अधिकाश प्रवासी अपनी जमीन खुद जोतते थे और रोजमर्रा के जीवन के लिए आवश्यक वस्तुए, जैसे कपडे, घर का फर्नीचर, अनेक प्रकार के औजार और बर्तन खुद बना लेते थे तो भी जैसे-जैसे १८वी सदी बीतती गई. शिल्पियो व कारीगरो का महत्व बढता गया। उनमे से बहुत से घूमते-फिरते श्रमिक थे जो कोई भी बताया गया काम करने के लिए एक शहर से दूसरे शहर घूमते थे या फारम वाले परिवारो की जरूरत की चीजें आर्डर पर बनाते थे। कभी-कभी एक ही आदमी कई धन्धे करता था। लुहार औजार बनाने का भी काम करता होता था चमडा रगने वाला जूते भी बनाता और साबुन उबालने वाला चर्बी की चीजें भी बेचा करता था। किसी कारीगर के धन्धे कहा तक विस्तृत हो सकते थे इसका अनुमान जून, १७७५ मे न्यूयार्क गजट मे प्रकाशित एक विज्ञापन से लगाया जा सकता है। जॉन जूलियस सोर्ज ने घोषणा की कि वह कृत्रिम फल बना सकता है, वार्निश का काम कर सकता है, सफाई करने वाले द्रव, साबुन का पानी, साबुन, मोमबत्तिया, कृमिनाशक द्रव्य और शराब बना सकता है तथा महिलाओ के माथे और भुजाओ पर से बाल सफा कर सकता है।

औपनिवेशिक नगरो के और विकास के साथ-साथ कारीगरो की माग भी बढी। छोटी-छोटी खुदरा दूकाने ज्यादा संख्या मे खुलती गई जिनमे एक बड़ा कारीगर अनेक दिहाडियो को अर्थात् कारीगरो व मिस्त्रियो को दैनिक मजदूरी पर काम देता था और लड़को को, जो कोई धन्धा होता था उसके अप्रैण्टिस की ट्रेनिंग देता था। छापेखाने, कपड़ो की सिलाई तथा जूते बनाने

की दुकानें, कैविनेट वनाने की दुकानें और वेकरियां इस प्रकार के संस्थानो में शुमार होती थी। काम सामान्यत: आर्डर पर किया जाता था और दुकाने प्राय: वड़े कारीगर का घर भी होती थी जहां दिहाड़िये और अप्रेण्टिस काम करने के अलावा रह भी सकते थे। इसके साथ ही इमारती व्यवसाय के फलने-फूलने पर वड़े वढई तथा राजों ने भी दिहाडिये और अप्रेण्टिस रखने शुरू कर दिए।

न्यू इंग्लैण्ड तथा बीच की वस्तियो, दोनो जगह सव तरह की छोटी-छोटी मिले जिनमें दक्ष व अदक्ष दोनों प्रकार के मजदूरो की जरूरत रहती थी, जहाज निर्माण घाट, रस्सी वंटने के स्थान, शराव खीचने की भट्टिया, कागज र वारूद के काराखने थे। दक्षिण के वडे-वडे वागानो पर घरेलू निर्माण ने दक्ष मजदूरो की आवश्यकता उत्पन्न की। रावर्ट कार्टर के वगीचे लुहार खाना, कपड़े की घुलाई की मशीन, अनाज की चक्की, नमक का खाना तथा कताई-वुनाई दोनो होती थी, जहा उसने स्वतंत्र गोरे श्रमिक र नीग्रो गुलाम दोनों काम पर लगा रखे थे।

वड़े पैमाने पर निर्माण-कार्य की कम-से-कम शुरुआत हो चुकी थी। १८ वी सदी के मध्य तक पॅसिलवेनिया, मेरीलैण्ड और न्यूजर्सी मे लोहे के कारखाने स्थापित हो चुके थे जिनमें काफी संख्या में लोग काम करते थे। उपनिवेश मे सव से ज्यादा विख्यात लोहा मास्टर पीटर हासेनक्लेवर द्वारा स्थापित कारखाने मे ६ घमन भट्टिया, ७ फोर्ज और एक स्टाम्पिग मिल थी और कहा जाता है कि उन्हें चलाने के लिये वह जर्मनी से ५०० मजदूर लाया था। मैनहीम, पेसिलवेनिया में हेनरी स्टीगल के काच के कारखाने में काफी आदमी काम करते होगे क्योकि उसमें एक संयन्त्र इतना वड़ा था कि "कांच को पिघलाने वाले कक्ष के ईंटो की गुम्वद में एक गाड़ी और चार घूम सकते थे।" लिनन के कारखाने, जिनमें १४-१४ करघे होते थे, कपडे की मिलो में वढ़ते हुए रोजगार की पूर्व-भूमिका थे। १७६९ में वोस्टन की एक निर्माता कम्पनी के पास ४०० तकुए थे और ६ वर्ष वाद अमरीकी निर्माण कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए निर्मित युनाइटेड कम्पनी आव फिलाडेल्फिया ने सूती कपड़े वनाने के काम में ४०० महिलाएं लगा रखी थी। इनमें से वाद में निर्दिष्ट कुछ धन्धो में गरीबों और यतीमों को समाज की सेवा के नाम पर विना मजदूरी के काम दिया जाता था।

इसके अतिरिक्त निर्माण उद्योगो मे कर्मचारियो के अलावा अन्य श्रेणियों के मजदूरों का महत्व भी बढ़ रहा था। इनमें ज्यादातर नाविक तथा मछुए थे और हर नगर मे दैनिक-मजदूरो का अपना कोटा होता था। समाज के सम्पन्न वर्ग की जरूरतें पूरी करने के लिए घरेलू नौकर कभी ज्यादा सख्या में उपलब्ध नही होते थे। "सहायता की कमी है और वह दुर्लभ है। सहायता देने वालों को खुश करना मुश्किल है और वह अनिश्चित भी है" यह औपनिवेशिक समाज की चिर-परिचित शिकायत रहती थी।

क्राति नजदीक आने पर जब लोगो की सेनाओ मे जरूरत पड़ी तो मजदूरी कमाने वालो के लिए अवसर बढे और श्रमिकों की उपलब्धि कम हो गई, जिससे मजदूरी की दरें और ऊँची चढी। मजदूरी की दरे निश्चित करने तथा मूल्य नियत्रण के पहले प्रयत्नो को बार-बार दोहराना पड़ा। महाद्वीपीय काग्रेस के आर्टीकल्स आव ऐसोसियेशन में इस प्रकार के नियत्रणो के महत्व पर बल दिया गया और अनेक राज्य सरकारो ने उन्हें लागू करने का बीडा उठाया। सन् १७७६ में प्रौविडेन्स मे आयोजित एक सम्मेलन मे, जिसमें मैंसाच्युसेट्स, न्यू हैम्पशायर, रोड द्वीप और कनैक्टिकट के प्रतिनिधियो ने हिस्सा लिया, मूल्य तथा मजदूरी के नियंत्रण के सामान्य कार्यक्रम पर समझौता हो गया। कृषि मजदूर की अधिकतम दैनिक मजदूरी ३ शिलिंग ४ पेंस नियत की गई (जो एक सदी पूर्व की दर से तिगुनी से भी ज्यादा थी) और कारीगरो तथा मिस्त्रियो की मजदूरी भी इस प्रकार नियत की जानी थी जिससे इस नई दर पर कृषि-मजदूरी के साथ उसका उचित सम्बन्ध स्थापित हो सके। सबन्धित राज्यो ने इस प्रस्ताव पर तुरन्त कार्रवाई की जो अन्तर्राज्यीय समझौता का शुरू का एक उदाहरण था, और जब यह मामला महाद्वीपीय काग्रेस के सामने लाया गया तो बाकी राज्यो को भी उसने कहा कि वे भी "इसी प्रकार के कदम उठाए।"

लेकिन मजदूरी की दर निश्चित करने तथा मूल्य नियत्रण के बारे में आपस में समझौता करने मे अन्य सम्मेलन इतने सफल नही हुए, जितना प्रौविडेन्स का सम्मेलन। दक्षिण के राज्य उत्तरी राज्यो के लिए निर्धारित मानदण्ड अपनाने में अनिच्छा जाहिर करने लगे थे और इस विषय में विभिन्न वर्गों के अनुभव भी विभ्रम और विरोध उत्पन्न करने वाले थे। यद्यपि स्थानीय

रूप से कही कही इस बारे में आगे भी कार्रवाई की गई, तथापि महाद्वीपीय कांग्रेस ने अंत में यह निर्णय कर लिया कि सारा प्रोग्राम ही न केवल अव्यावहारिक है "बल्कि बड़े बुरे परिणाम पैदा करने वाला है जो सार्वजनिक सेवा के लिए बहुत हानिकारक और व्यक्ति के लिए बहुत उत्पीड़क है।" इसने राज्यो को इस विषय मे मौजूदा कानून रद्द कर देने की सलाह दी और इस प्रकार नियंत्रित अर्थतंत्र स्थापित करने का यह पहला प्रयत्न आगे कोई प्रगति न कर सका।

औपनिवेशिक जीवन की परिस्थितियो के कारण यद्यपि अमरीका में सामाजिक और आर्थिक समानता पुरानी दुनिया के किसी भी स्थान से ज्यादा थी तो भी श्रमिको को राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त नही थी। मतदान का अधिकार सिर्फ सम्पत्ति वालो को ही प्राप्त था और दक्ष कारीगर तथा मिस्त्री अपने अधिकारो पर बल देने में उतने ही असमर्थ थे, जितने दिहाड़िये। लेकिन १७८० की दशाब्दि तक तटवर्ती नगरो के श्रमिक व्यापक अधिकारो की अधिकाधिक माग करने लगे थे। उस आन्दोलन का समर्थन कर, जिसकी बदौलत अमरीका आजाद हुआ ये श्रमिक न केवल सुदूर इग्लैण्ड के उत्पीडन के खिलाफ बल्कि स्वदेश में शासक वर्ग के नियंत्रणों के खिलाफ भी अपना विरोध प्रकट कर रहे थे।

क्राति मे छोटे व्यापारियो, कारीगरो तथा मिस्त्रियो का योग विशेष रूप से मैसाच्युसेट्स में बहुत महत्वपूर्ण रहा। जब-जब भी व्यापारियों और किसानो का उत्साह मन्द होता प्रतीत हुआ तब-तब उन लोगो के, जिन्हे टोरी उपहासपूर्वक 'मोबिलिटी' या 'रैबल' (समाज में नीचा स्थान रखने वाले) कहा करते थे, जोश से 'देशभक्ति की ज्वाला' और प्रदीप्त हुई। बोस्टन के लोकप्रिय दल में, जिसका नेतृत्व सेम्युअल ऐडम्स के कुशल हाथों में था, ज्यादातर जहाज गोदियो के मालिक जहाजी श्रमिक, ईंटों की चिनाई करने वाले, जुलाहे और चमड़ा रगने वाले शामिल थे, जो ब्रिटिश अधिकारियों अथवा औपनिवेशिक सामन्तों दोनों के शासन के समान रूप से विरोधी थे। 'आजादी के पुत्र' और बाद में कारेस्पोंडेंस कमेटियो में सामान्यतः गोदी, जहाजी घाट अथवा रस्सी बटने के कारखानों के मजदूर भर्ती किए जाते थे।

प्रसिद्ध "लायल-नाइन" मे जिसे वह सामूहिक कार्रवाई भड़कानी थी, जिससे बोस्टन हत्याकाण्ड हुआ और बोस्टन टी पार्टी मे दो शराब खीचने वाले, दो कसेरे, एक मुद्रक, एक जौहरी, एक पेण्टर तथा एक जहाज का कप्तान शामिल था।

इस प्रकार की ताकतो का संगठन अन्य उपनिवेशो में भी था। बाल्टी-मोर की दि ऐशेंट ऐण्ड आन रेबल मैकेनिकल कम्पनी, चार्ल्सटन की फायरमेन्स ऐसोसियेशन और फिलडेल्फिया की हार्ट ऐण्ड हैण्ड कम्पली—इन शहरो में 'सन्स आव लिबर्टी' की केन्द्र बिन्दु थी। इनमें से प्रत्येक की पजिका यह जाहिर करती है कि उनके सदस्य मुख्यत. छोटे व्यापारी और कारीगर थे।

इसका यह मतलब नही कि क्रातिकारी आंदोलन मे औपनिवेशिक समाज के अन्य तत्वो ने पूरा भाग नही लिया। ब्रिटिश करो के खिलाफ पहले-पहल व्यापारियो ने ही विरोध प्रकट किया और सन्स आव लिबर्टी को सगठित करने में पहले इसी वर्ग ने नेतृत्व प्रदान किया। लेकिन मिस्त्रियो, कारीगरो तथा छोटे व्यापारियो ने औपनिवेशिक स्वाधीनता के पक्ष में ज्यादा क्रातिकारी मागे प्रस्तुत की और जब व्यापारी समझौते के लिए झुकते प्रतीत होते थे तो वे अपना आन्दोलन जारी रखते थे। उनका उत्साह टोरियो मे अवसर यह भय पैदा कर देता था कि क्रातिकारी आदोलन बेकाबू होता जा रहा है। गवर्नर मारिस ने एक बार उत्तेजित होकर लिखा कि 'मोबिलिटी' के मुखिया सभ्रांत वर्ग के लिए खतरनाक हो गए हैं और उन्हें कैसे काबू मे रखा जाय, यह एक अहम सवाल बन गया है।"

उन्हे काबू मे नही रखा जा सका। उनके प्रदर्शनो से, जिनसे कभी कभी दंगे हो जाते और अव्यवस्था फैल जाती थी ब्रिटिश अधिकारियो के प्रति आम लोगो का विरोध जाहिर होता था और वह बढता भी जाता था। उदाहरणार्थ बोस्टन हत्याकाण्ड औपनिवेशिक श्रमिको और ब्रिटिश सैनिको मे झगड़े का सीधा परिणाम था। जनरल गेज ने बताया . "रस्सी बंटने के एक कारखाने मे २६ वी रेजिमेण्ट के कुछ सैनिको के साथ एक विशेष झगड़ा हो गया। यह झगड़ा उकसाया मजदूरो ने, यद्यपि यह कहा जा सकता है कि कसूर दोनो तरफ था। इस झगड़े से लोग इतने उत्तेजित हुए कि ५ मार्च की रात को उन्होने आम विद्रोह कर दिया।"

कारीगरो और मिस्त्रियों का क्रांति में योग यद्यपि काफी पहले कबूल किया जा चुका है तो भी संविधान को अपनाने में उनका क्या योग रहा यह निश्चित करना कठिन है। नई सरकार की स्थापना में जहा तक पुरानी विचारधारा प्रतिक्षिप्त होती थी, जिसमें आजादी के संघर्ष में प्राप्त लोकतत्रीय सफलताएं कम कर दी गई थी और व्यक्ति के हितों के बजाय सम्पत्ति के हितो की रक्षा पर बल दिया गया था, श्रमिकों से उसकी स्वीकृति का विरोध किए जाने की आशा की जा सकती थी। सांविधानिक सम्मेलन में उनका कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व नही था और उस सम्मेलन के विचार-विमर्श में उनके और सामान्यत: आम लोगो के अधिकारो का कोई खयाल नही रखा गया। तो भी कुछ शहरो में उस संविधान को स्वीकार किए जाने के पक्ष में मजदूरो प्रदर्शन हुए और न्यूयार्क शहर में सघवादियो की विजय में उनका समर्थन ाशिक कारण रहा है।

ाधीनता आंदोलन तथा सयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना में मजदूरो ुछ भी योग रहा हो, इन वर्षो मे उन्हें कोई खास प्राप्तियां नही हुईं। ार और कुलीन लोगो की सरकार के अलैग्ज़ेण्डर हैमिल्टन जैसे प्रबल क्षपाती लोगो के अनुदार विचारो का यह जताने के लिए उल्लेख करना आवश्यक नही है। १८ वी सदी की समाप्ति के वर्षो में अमरीका लोकतत्रीय समाज से कितना दूर था। हर जगह "समानता की भावना" का भय छाया हुआ था जो क्रांति के जमाने मे बहुत ज्यादा प्रतीत होता था और जिससे यह समझा जाता था कि अगर लोकतन्त्र-प्रेमी लोगो को और ज्यादा रियायतें दी गईं तो राष्ट्र की स्थिरता को खतरा पैदा हो जाएगा।

टामस जैफरसन को भी, जिसने जोरो से यह घोषणा की कि "सरकार पर प्रभाव में सब लोगो का हिस्सा होना चाहिए" इस बात का कोई ख्याल नही था कि जिन लोगो को मतदान का अधिकार दिया जाना है और सार्वजनिक पदो पर नियुक्ति की अनुमति प्रदान की जानी है उनमें जायदाद-हीन श्रमिको को भी शामिल किया जाए। जिस लोकतत्र के वह समर्थक थे वह छोटे किसानो का लोकतत्र था और उन्हे इस बात का बड़ा सन्देह था कि क्या कारीगरो, मिस्त्रियो और मजदूरो मे जिन पर भूस्वामी होने का स्थिरकारी

प्रभाव नही है, समानता की उस भावना का विकास कभी हो सकता है जो एक स्वतत्र समाज के सुचारू ढग से चलते रहने के लिए आवश्यक है।

जैफरसन अमरीका में निर्माण-उद्योगो का विकास करने के कट्टर विरोधी थे क्योंकि उन्हें शहरी श्रमिको की निरन्तर बढती हुई संख्या का हमारी संस्थाओ पर प्रभाव पढ़ने का डर था। वह यह पसन्द करते कि हमारे कारखाने यूरोप में ही रहें, बजाय मजदूरी कमाने वालो का एक ऐसा वर्ग उत्पन्न करने का खतरा मोल लेने के, जिनके सिद्धान्त और तौर-तरीको को वे [illegible] की निगाह से देखते थे। यूरोप में जो कुछ हो रहा था, उसकी एक भया-[illegible]ह कल्पना करके जैफरसन ने लिखा: "बड़े शहरो की भीड़ विशुद्ध सरकार को उतना ही बल प्रदान करती है जितना फोड़े मानव शरीर को शक्ति प्रदान करते है।"

इस प्रकार स्वाधीनता की घोषणा के बड़े-बड़े वायदो के बावजूद अमरीकी समाज मे मजदूरी कमाने वाले वर्ग की राजनीतिक स्थिति में कोई बहुत सुधार नही हुआ था। इसका जीवन स्तर यूरोप की अपेक्षा उन्नत था किन्तु क्राति के बाद के जमाने मे जब महगाई बढी तो अटलाण्टिक के तटवर्ती कस्बो में श्रमिको की दशा अत्यधिक गरीबी से शायद ही कभी अच्छी रही हो। जॉन ले ने जब कि १७८४ में मिस्त्रियो और मजदूरो की मजदूरी के बारे में बडी शिकायत की, जिसे वह बहुत ज्यादा समझता था, तब अदक्ष श्रमिक का वेतन मुश्किल से ही कभी १५ शिलिंग प्रति सप्ताह से ज्यादा होता था जो ४ डालर से भी कम के बराबर था।

"इस तुच्छ मजदूरी पर", जॉन बैक मैकमास्टर ने लिखा है, "अत्यन्त किफायत करके ही कोई मिस्त्री अपने बच्चो को भुखमरी से और स्वय को जेल से मुक्त रख पाता था। निचले और अधेरे कमरो मे, जिसे वह अपना घर कहता था, सजावट और उपयोग की उन बहुत सी चीजो का अभाव था, जो आजकल गरीब से गरीब घरो मे भी पायी जाती हैं। फर्श पर फैलाई हुई रेत गलीचे का काम देती थी, उसकी मेज पर कोई काच नहीं होता था, अलमारी में कोई चीनी का वर्तन नही होता था, दीवार पर कोई कलैण्डर नही होते थे। स्टोव क्या होता है, वह अनभिज्ञ था, कोयला उसने कभी देखा नही था, माचिस का कभी नाम नही सुना था। पेटियो और पीपो के टुकड़ो को पत्थर

की रगड से उत्पन्न चिनगारी से या पड़ौसी की अंगीठी से लाए गए अंगार से आग सुलगाकर उसकी पत्नी मोट-झोटा खाना बनाती थी और उसे रांग की रकाबियों में परोसती थी। ताजा मांस उसे हफ्ते में मुश्किल से एक बार मिल पाता था और अपनी भावी पीढी के मुकावले उसकी कही ज्यादा कीमत देता था .... अगर कारीगर के भोजन को रूखा-सूखा समझा जाए तो उसके कपड़े तो घृणास्पद मानने होगे। पीले सावर की खाल या चमडे का एक पजामा, एक चारखाने वाली कमीज, एक लाल फलानैल की जाकेट, एक जंग लगा हुआ टोप जो किनारों पर से उठा होता था, मवेशी के चमड़े के जूते, जिस पर पीतल के वड़े-वड़े वक्सुए लगे होते थे और एक चमड़े का लवादा यही कुछ पोशाकें उसकी अलमारी में मिलती थी।"

इस प्रकार के जीवन में कितनी भी तगियां हो—और यह नही भूलना चाहिए कि उस समय अमीरो के पास भी सुख-सुविधा की वहुत सी ऐसी चीजें नही थी, जिन्हें आजकल आवश्यक समझा जाता है तो भी अमरीका तव भी शानदार अवसरों की भूमि थी। कारीगर और मिस्त्री विश्वासपूर्वक अपना जीवनस्तर उन्नत करने की आशा कर सकते थे और श्रेणी-विभाजन पक्का न होने से परिश्रमी और स्फूर्तिमान लोगो को और ज्यादा उन्नति करने में कोई रुकावटें नही थी। इतना ही नही, जो समाज अब भी कृषि और हाथ की कारीगरी पर निर्भर करता था उसमें कारीगर की एक मानी हुई प्रतिष्ठित हैसियत थी जो उसकी तुच्छ आर्थिक स्थिति की कुछ अशो में भरपाई कर देती थी। उसके जीवन-यापन का तरीका भले ही सादा रहा हो, वह उद्योगो से अछूते एक सरल समाज मे रह रहा था।

क्षितिज पर दूर-गामी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे थे जो उस समाज को जिसमें वह रह रहा था और उसकी अपनी हैसियत पर प्रभाव डालेंगे। प्रगति के नाम पर वे उसके लिए कही अधिक उन्नत जीवन स्तर को प्राप्त करने की सम्भावनाएं खोल देंगे; ऐसी संभावनाएं जो यहां या अन्य किसी देश में श्रमिकों को पहले कभी प्राप्त नही हुईं। लेकिन इन परिवर्तनों के लिए अनुकूलन की बडी जरूरत थी, जो वड़ी कठिन सावित हुई और १९वी सदी का श्रमिक प्रायः अनुभव करता था कि औद्योगिक प्रगति जो लाभ प्रद करती दीखती है वह उससे अछूता है। अपनी आशाओं तथा . फा।

की पूर्ति मे नई बाधाए उत्पन्न होने पर राष्ट्र के श्रमिको ने आगे चलकर यह अनुभव किया कि जिन अधिकारो की प्राप्ति के वे हकदार है उन्हें वे एक संगठन के जरिये ही प्राप्त कर सकते हैं।

—o:—

२ : पहली यूनियनें

मजदूर संगठनो की वास्तविक शुरुआत तब तक नही हुई, जब तक १९ वी सदी के शुरू में व्यापारी पूंजीपतियों के अभ्युदय से, जो थोक व्यापार करते थे आर्थिक समाज में परिवर्तन नही हो गया। औपनिवेशिक जमाने में मास्टर श्रमिको ने जो दिहाड़ियों और अप्रैण्टिसो को सामान्य परियोजना या संयुक्त व्यवसायो के लिए काम पर जुटा लेते थे और उन्हे मजदूरी देते थे, आधुनिक मायनों मे कोई मालिक-मजदूर का सा सम्बन्ध कायम नही किया था। दिहाडियो और मास्टरो के हितो में, जो साथ-साथ काम करते थे, कोई फर्क नही था। विभिन्न चीजो के निर्माण के लिए जो मूल्य सूची निर्धारित होती थी, उसी से मजदूरी की दर तय होती थी और व्यापारी, मास्टर और दिहाड़िये के काम काफी हद तक एक ही व्यक्ति मे केन्द्रित होते थे।

इन परिस्थितियों में मास्टर और दिहाड़िये अपनी कारीगरी के स्तर को कायम रखने, मूल्य सूची को स्थिर रखने तथा सामान्यत. अनुचित प्रतियोगिता से अपनी रक्षा करने के लिये मिलकर कार्रवाई करते थे। ऐसे भी अवसर आते थे, जब दिहाडिये मास्टरो के खिलाफ, जब वे मालिक की तरह व्यवहार करते थे, विरोध प्रकट करते थे। उन धन्धों में जिनमें उनके बहुत करीब के रिश्ते कायम नही हो पाते थे, कभी कभी ऐसे झगडे खडे हो जाते थे जिनसे इक्का-दुक्का हड़तालें और आदिम किस्म के मजदूर विद्रोह हो जाते थे। किन्तु सामान्यतः १७ वी और १८ वी सदी में आर्थिक गठन इतना सरल था कि श्रमिको द्वारा कोई महत्वपूर्ण सयुक्त कार्रवाई संभव नही थी। लेकिन व्यापारी पूंजीपतियो के आविर्भाव से उत्पन्न परिणामों पर विचार करने से पूर्व औपनिवेशिक जमाने में जो विरोध-प्रदर्शन या हडतालें हुई उन पर इस दृष्टि से विचार किया जा सकता है कि उन से उन परिस्थितियो पर क्या प्रकाश पड़ता है जिनसे अन्ततोगत्वा यूनियनो के रूप मे मजदूर सगठन बने।

जिसे श्रमिको का क्षोभ कहा जा सकता है उसका सबसे पहला रिकार्ड

१६३६ ई० का है। मेन के तट के सामने रिचमण्ड द्वीप में राबर्ट ट्रेलानी का काम करने वाले मछुओ ने, वेतन रोक लिए जाने पर "विद्रोह" कर दिया बताते है। लगभग ४० वर्ष बाद न्यूयार्क के लाइसेंसदार कूड़ा उठाने वालो ने, जिन्हें ३ पेंस फी बोझ की दर से सडको पर से कूडा उठाने का आदेश दिया गया था, न केवल इतनी कम मजदूरी के खिलाफ विरोध जाहिर किया, बल्कि "मिलकर उस आदेश को पूरी तरह मानने से इन्कार कर दिया।" १८ वी सदी में औपनिवेशिक प्रेस मे कभी-कभी इस प्रकार की घटनाओं का उल्लेख रहता था और सन् १७६८ मे न्यूयार्क मे दिहाड़िये दर्जियों का 'वाक आउट' मालिकों के खिलाफ शायद पहली वास्तविक हड़ताल थी, जिसमें कुछ आधुनिकता की छाया थी। अपनी मजदूरी में कमी के कारण कोई २० श्रमिको ने हडताल कर दी और खुल्लमखुल्ला यह घोषणा की कि अपने मास्टर की परवाह न करते हुए वे निजी काम करेंगे। अखबार में उनके नोटिस में लिखा था कि "लोमडी और कुत्ते के चिन्ह पर खुराक समेत ३ शिलिंग ६ पेंस की दैनिक मजदूरी पर वे काम पर वापस आ जाएगे।"

कभी-कभी स्वय मास्टर अपने हितो की रक्षा के लिए उनसे मिल जाते थे, जैसा कि 'न्यू इग्लैंड कूरैण्ट' मे नाइयो के झगडे के बारे मे पहले प्रकाशित एक विवरण से पता चलता है। ३२ मास्टर नाई "अपने उद्घोषक के साथ गोल्डनबाल में एकत्र हुए" और "सबने मिलकर शेविंग की दर ८ शिलिंग से बढ़ाकर १० शिलिंग फी तिमाही करने और कृत्रिम बाल बनाने की मजदूरी ५ शिलिंग बढ़ाने तथा उनकी टाई बनाने की मजदूरी १० शिलिंग बढ़ाने का निश्चय किया। यह भी प्रस्ताव किया गया कि उनकी बिरादरी का कोई नाई रविवार की सवेरे हजामत या बाल नही बनाएगा। यह ऐसा प्रस्ताव था जिस पर कूरैण्ट ने आक्षेप पूर्वक लिखा है कि "यह समझा जा सकता है कि अतीत में इस प्रकार की परिपाटी इन लोगो मे बहुत आम रही है।"

क्रान्ति के युग में, जिसमें युद्ध के कारण कीमते बहुत चढी, श्रमिको ने और ज्यादा विरोध प्रदर्शन किए, जिन्होने देखा कि कीमतें उनकी मजदूरी की दर से बहुत ज्यादा तेजी से चढ रही है। इसका उदाहरण न्यूयार्क के मुद्रकों ने दिया। १७७८ में दिहाड़ियो ने उन परिस्थितियो मे वेतन वृद्धि की माँग की और उसमें सफल हुए जिनमे आज की छाया दिखाई देती है लेकिन सिर्फ

इस बात का फर्क है कि उन्होने अपनी माँग बड़ी नम्रता से रखी।

'रायल गजट' में दिहाड़ियों का जो विरोध-पत्र प्रकाशित हुआ, उसमें कहा गया था: "जीवन की आवश्यक वस्तुओं के मूल्य चूँकि बहुत ज्यादा बढ़ गए है इसलिये यह आशा नही की जा सकती कि हम अपनी वर्तमान मजदूरी पर काम जारी रख सकते है। इसलिये हम प्रार्थना करते है कि हमारे वर्तमान तुच्छ वेतन में ३ शिलिंग प्रति सप्ताह और जोड़ दिए जाएँ। इस पर यह ऐतराज उठाया जा सकता है कि इस समय आदमियो की कमी के कारण मास्टर मुद्रकों को तग करने की दृष्टि से यह प्रार्थना-पत्र दिया गया है लेकिन यह सही नही है। वस्तुत जीवन की हर वस्तु के दाम आकाश को छूने लगे है और आगे डल मौसम आ रहा है। हमें विश्वास है कि हम मे से कोई भी ऐसा नही है जा आजकल के कठिन समय का अनुचित लाभ उठाए। हम तो सिर्फ जिन्दा रहना चाहते हैं जो मजदूरी की वर्तमान दरो पर असम्भव है।"

गजट के सुप्रसिद्ध टोरी प्रिन्टर और प्रकाशक जेम्स रिविंगटन ने इस पत्र के सक्षिप्त उत्तर में लिखा: "मै उपर्युक्त प्रार्थना को मंजूर करता हूँ।"

इन वर्षो में और इनसे तुरन्त बाद के वर्षों मे अन्य सयुक्त विरोध-प्रदर्शन या हडतालें की गई। १७७९ में फिलाडेल्फिया में नाविको ने, १७८५ में न्यूयार्क मे जूते बनाने वालों ने और १७८६ में फिलडेल्फिया में दिहाडी मुद्रकों ने हडतालें की। इन मुद्रको ने घोषणा की: "हम अपने उन भाइयो की मदद करेंगे जो ६ डालर प्रति सप्ताह से कम की मजदूरी पर काम करने से इन्कार कर देने के कारण बेकार हो जाएँगे।" मालिको ने पहले तो उनकी माँग मजूर करने से इन्कार कर दिया लेकिन अन्ततोगत्वा यह हडताल सफल रही।

इमारती व्यवसाय के श्रमिक भी बेचैन हो रहे थे और फिलाडेल्फिया में दिहाडियो तथा मास्टर मुद्रको के बीच चिरकाल से सुलगता आ रहा सघर्ष सन् १७९१ मे फूट पड़ा। दिहाडियो ने घोषणा की कि उनके मालिक उस हर तरीके से, जो उनका लोभ उन्हें सुझा सकता है, मजदूरी की दर कम करने की कोशिश कर रहे है। उन्होने स्पष्ट रूप से काम के छोटे दिन और ओवर-टाइम के लिए अतिरिक्त वेतन की माँग की। उन्होनें जोरो से शिकायत की कि "अब तक उन्हें गर्मियों के सम्पूर्ण लम्बे दिन मे काम करना पड़ा है और

इस पर भी अनेक बार यह सान्त्वना तक नही मिली कि उनकी इस मेहनत में तुरन्त किसी पुरस्कार की आशा से कोई मिठास भर दिया जाएगा।"

इस झगड़े का क्या हल निकला, मालूम नही है। मास्टरो ने कम मजदूरी के लिए धन्धे को कोसा और घोषणा की कि "एक भी मामले मे उन्हे सताने या तग करने की अभिलाषा का पता नही लगा है।"

ये हड़तालें किसी भी तरह ऐसे सगठनो को नही थी, जिन्हे मजदूर यूनियन कहा जा सके। मजदूर सिर्फ अस्थायी तौर पर अपनी किसी माग पर जोर डालने के लिए अथवा अपने हितो की रक्षा के लिए सयुक्त प्रयत्न के हेतु परस्पर मिल जाते थे। जो व्यापारिक सगठन उस वक्त थे भी और १८ वी सदी के आखिरी हिस्से मे उनकी सख्या काफी थी, वे कोई आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए नही अपितु परोपकार की भावना से बनाए गए थे। वे पारस्परिक सहायता सस्थाएँ थी जिनमे दिहाडिये और मास्टर दोनो शामिल होते थे और जो अपने सदस्यो को बीमारी या मृत्यु की अवस्था में विभिन्न प्रकार से सहायता पहुँचाते थे। १७९० तक न्यूयार्क, फिलाडेल्फिया और बोस्टन जैसे शहरो मे प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यवसाय में इस प्रकार की सस्था बन गई थी। कुछ सस्थाएँ तो ऐसी थी, जिनका क्षेत्र बहुत व्यापक था। जैसे—न्यूयार्क मे जनरल सोसाइटी आव मैकेनिक्स, मैसाच्युसेट्स की ऐसोसियेशन आव मैकेनिक्स आव दि कामनवेल्थ और अल्बानी मैकेनिक्स सोसाइटी।

जिन सदस्यो को बीमारी या दुर्घटना के कारण किसी मदद की जरूरत हो सकती थी उन्हे तथा गरीबी की हालत मे मृत्यु के बाद उनकी विधवाओ और यतीम बच्चो की सहायता करके ये सस्थाएँ मास्टरो और दिहाडियो को "निजी अथवा सरकारी दया से राहत पाने के पतनकारी प्रभाव से मुक्त रखने का प्रयत्न करती थी।" श्रमिक स्वाभिमानी थे। इस प्रकार शुरू के जमाने मे भी, जैसा कि एक सोसाइटी के चार्ट में कहा गया है, वे राहत की माँग "एक अधिकार के तौर पर" करने के लिए तैयार थे।

बहुत सी पारस्परिक सहायता सस्थाओ का सामाजिक पहलू भी था जो आपस मे मिल-बैठने के लिए कमरो और मनोरजन की व्यवस्था करती थी। १७६७ मे फिलाडेल्फिया मे आयोजित फ्रैंडली सोसाइटी आव ट्रेड्समेन हाउस कार्पेटर्स के नियमो से इस के कार्य क्षेत्र की व्यापकता तथा इनके व्यवहार पर

कार्पेण्टर्स के नियमों से इन के कार्य-क्षेत्र की व्यापाकता तथा इनके व्यवहार पर सख्त अकुश रखने वाले विनियमो का पता चलता है। जो सदस्य "अपशब्द कहता, शराब में धुत्त होकर आता या कोई उपद्रव करता या क्लब के समय जुए को प्रोत्साहन देता था उसे सस्था के सामान्य कोप में ६ पेंस जुर्माना देना पडता था।"

यद्यपि आर्थिक गतिविधियां सामान्यत: इन संस्थाओ के कार्य क्षेत्र में नही आती थी। न्यूयार्क में दिहाडिये जहाजी श्रमिको की संस्था की यह व्यवस्था थी कि अगर सगठन ने मजदूरी निश्चित करने का कोई भी प्रयत्न किया तो स्वयमेव भंग कर दी जाएगी। तो भी यह लाजिमी था, कि समय आने पर ये सस्थाएं रोजगार की समस्या पर ध्यान दें। इस प्रकार पारस्परिक सहायता सस्था तथा वास्तविक व्यापार सगठन में स्पष्ट भेद कर सकना लगभग असम्भव हो गया। तथापि जूता बनाने वाले दिहाडियो की सघीय सस्था को जो १७९४ मे फिलाडेल्फिया मे कायम हुई अमरीका में मजदूरी कमाने वालो का पहला व कुछ स्थायी सगठन बताया जाता है और वह सम्भवत. पहली ट्रेड यूनियन कहलाए जाने की अधिकारी है। इसके सदस्यों मे सिर्फ जूता बनाने वाले दिहाड़िये ही थे। इसने १७९९ मे हड़ताल की, मास्टरो की दूकानो पर धरना दिया और १२ वर्प तक इसका अस्तित्व रहा।

फिलाडेल्फिया में जूता बनाने वालो का सगठन स्थापित होने के कुछ महीने वाद न्यूयार्क के दिहाडिये मुद्रको ने इस व्यवसाय में यूनियनो की एक कड़ी स्थापित की और दो वर्ष वाद न्यूयार्क में दिहाडिये कैबिनेट निर्माताओं की कुछ अधिक स्थायी सस्था बनी। इस बाद के संगठन ने अखबारो में एक पूरी मूल्य सूची प्रकाशित की,—जिसका अभिप्राय मजदूरी की दर निश्चित करना ही था—और यह भी व्यवस्था की कि "कुर्सी बनाने वाले दिहाड़िये प्रतिदिन १० घण्टे काम करेंगे और बत्तियो का इतजाम मालिको को करना होगा।"

संगठन सम्बन्धी ये प्रायोगिक शुरूआत उन व्यापारिक सस्थाओ के सामान्य विकास की ओर इगित करती थी जो व्यापारी पूजीपतियो के अभ्युदय के बाद बनी। उस समय यूनियनो को चिर काल तक व्यापारिक सस्थाएं ही

कहा जाता रहा था। खुदरा दुकानो और आर्डर पर माल सप्लाई करने का स्थान जब दुकानो ने ले लिया और मास्टर और दिहाडियो के बीच पुराने सरल सम्बन्ध टूट गए तभी वस्तुत: मजदूरो ने मालिको के खिलाफ सगठन स्थापित करने की मजबूरी महसूस की। किन्तु १६ वी सदी के शुरू होने पर एक के बाद एक धन्धो में कुशल कारीगरो तथा मिस्त्रियों ने ऐसी सस्थाए बनाने में मुद्रको तथा जूता-बनाने वालो के पहले उदाहरणो का अनुकरण किया जिनका घोषित उद्देश्य "मालिको की जाल साजियो के खिलाफ" अपने हितो की रक्षा करना तथा अपने श्रम की वाजिब मजदूरी प्राप्त करना था। इन सस्थाओ मे सभव है, परस्पर सहायता के तत्व तब भी बाकी बच रहे हों लेकिन मुख्यत जोर अब आर्थिक पहलू पर दिया जाने लगा था।

व्यापारी पूँजीपतियो को बाहर से माल मगाने तथा स्वदेश मे बडे उद्योग स्थापित करने दोनो मे दिलचस्पी थी। उनकी कोशिश बडे बाजार स्थापित करने और उन्हें सस्ते माल मे पाटने की रहती थी। पूंजी चूँकि उनकी मुट्ठी मे रहती थी इसलिए बडी तादाद मे वे कच्चा माल खरीद सकते थे, अपने यहाँ काम करने वाले मिस्त्रियो व कारीगरो को काम करने के लिए उपयुक्त स्थान और अन्ततोगत्वा औजार दे सकते थे, तैयार माल को गोदामो मे भर कर रख सकते थे, और तब उन्हें देश के सब हिस्सो मे भेज सकते थे। छोटी-छोटी खुदरा दुकानें जो किस्म के बढियापन और कारीगरी पर जोर देती थीं इस प्रकार के बडे पैमाने के उत्पादन का मुकाबला नही कर सकती थी।

१६ वी शताब्दि के प्रारम्भ मे जब व्यापार के विस्तार के लिए और भी ज्यादा अनुकूल अवसर प्रदान किए तो यह रुझान बढता चला गया। परिवहन के साधनो, नहरो, सडको तथा नावो—में सुधार से अटलाण्टिक तट के शहरों के व्यापारियो के लिए व्यापार का क्षेत्र बढ गया। पश्चिम की ओर जाने वाले राजपथो पर ऊँचे-ऊँचे त्रिपाल से ढके ठेलो की भीड लगी रहती थी जो पश्चिमी न्यूयार्क तथा ओहायो घाटी की नई बस्तियो के लिए पूर्व के कस्बो और नगरो मे बने कपड़े, जूते, फर्नीचर, रसोई का सामान, औजार और लोहे के बर्तन ले जाते थे। एक राष्ट्रीय बाजार बनने लगा था जो खुदरा व्यापार और आर्डर पर तैयार किए जाने वाले माल के स्थानीय बाजार पर छा गया और इसने आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। छोटे पैमाने पर उसी तरह

का विकास हो रहा था जैसा औद्योगिक क्रान्ति के बाद के दौर में सामूहिक उत्पादन से हुआ होता। थोक व्यापार से खुदरा व्यापार का नेस्तनाबूद हो जाना १८८० और १८९० के दशको में औद्योगिक संस्थानो के मिल जाने से स्थानीय कारखानो के लुप्त हो जाने का पूर्व परिचायक था।

व्यापार की इस नई दुनिया में अत्यन्त कड़ी प्रतियोगिता में ठहर सकने के लिये माल की कीमतें कम करने की निरन्तर आवश्यकता के कारण मालिको ने वेतन न बढ़ने देने, अपने कर्मचारियो के काम के घण्टे बढाने और सस्ते श्रम के नए साधन ढूंढने की कोशिश की। उन्होने परम्परागत अप्रैण्टिस प्रणाली के बन्धनों को तोड़ने की कोशिश की; जहां कही सभव हुआ, उन्होने स्त्रियो और बच्चो को काम पर लगाना शुरू कर दिया; उनसे बहुत देर तक कम वेतन पर सख्त काम लिया जाता तथा जेलो के मजदूरो को ठेके देने शुरू कर दिए। दक्ष कर्मचारियो के लिए, चाहे उनका कुछ भी धन्धा रहा हो, मालिकों के इस प्रकार के कदम न केवल जीवन स्तर को नीचे ले जाने का बल्कि उनकी हैसियत पर भी चोट करने का खतरा उत्पन्न कर रहे थे। इस घटना-चक्र का मुकाबला करने के लिये वे तुरन्त एक हो गए और उन्होने यह महसूस किया कि संयुक्त कार्रवाई से ही वे अपने अधिकारों की रक्षा की आशा कर सकते है।

कुछ अरसे तक तो कारीगर और मिस्त्री अपने मालिको का बराबरी के स्तर पर मुकाबला करते रहे। दक्ष श्रमिको की कमी, जो औपनिवेशिक जमाने की एक खासियत थी अमरीकी अर्थतंत्र में अब भी एक बुनियादी तथ्य था। अलैग्जेण्डर हैमिलटन ने निर्माताओं पर अपनी प्रसिद्ध रिपोर्ट में लिखा है: "अमरीका मे निर्माण उद्योगो की स्थापना का विरोध इसलिए किया गया कि तीन कारणो से उनकी सफलता संदिग्ध थी। ये थे—श्रमिको की कमी, श्रम की महगाई और पूँजी का अभाव।" इसके अलावा विस्तार पाती हुई सीमाएँ अब भी बहुत से श्रमिको के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी, जिन्हें पश्चिमी बस्तियो मे सस्ती जमीन आसानी से मिल जाने और काम-धन्धे के ज्यादा अवसर मिल जाने की आशा रहती थी। आहोपो घाटी में सडको और नदी मार्गों के साथ-साथ जो नए शहर बस रहे थे उनमें पूर्व की पुरानी बस्तियों की अपेक्षा भी अधिक मजदूरी की पेशकश की जाती थी।

इस जमाने के अखबारो में श्रमिको की इस माँग की अनेक साक्षियाँ मिलती है। नौकरियो के लिए बहुत से विज्ञापन निकलते थे "दो या तीन दिहाड़िये कूपर स्मिथ (टीन-डिब्बो का काम करने वाले) चाहिएँ; अच्छा वेतन दिया जाएगा।"६ से ८ तक बढ़ई चाहिएँ, उन्हे औजारो का उपयोग करने दिया जाएगा"; और ४-५ ईटो की चिनाई करने वाले दिहाडिये चाहिएँ।" सन् १८०३ में न्यूयार्क मे सिटी हाल की इमारत बनाने वाले ठेकेदारो को पत्थर तराशने वालो के लिये फिलाडेल्फिया, बाल्टीमोर तथा चार्ल्सटन के अखबारो मे विज्ञापन निकालना पडा जिसमे ऊँचे वेतनो व सब औजारो की मरम्मत का वायदा किया गया था, तथा यह आश्वासन दिया गया था कि यद्यपि शहर के अन्य भागो मे पीला बुखार फैला हुआ है तो भी श्रमिको को उससे डरने की जरूरत नही है।

तो भी दक्ष श्रमिको ने शीघ्र ही यह अनुभव किया कि उन्हे मालिको के बढते हुए साधनो के खिलाफ रक्षात्मक लड़ाई लडनी पड रही है। १९ वी सदी की पहली दशक में मजदूरी जीवन-यापन के खर्चे के अनुपात में नही बढी और न ही वे अदक्ष मजदूरो के मुकाबले अपनी मजदूरी का स्तर कायम रख सके। सन् १८१८ के आस-पास औसत मजदूरी कुछ विशिष्ट व्यवसायो जैसे, जहाज बनाने वाले बढ़इयो को छोडकर १·२५ डालर प्रति दिन रह गई थी। उदाहरणार्थ न्यूयार्क के कम्पोजीटर ८ डालर प्रति सप्ताह और बाल्टीमोर मे दिहाड़िये दर्जी ६ डालर प्रति सप्ताह कमा रहे थे। इसके मुकाबले नहरो तथा सडको पर, इमारतो के निर्माण तथा ऐसे ही अन्य कार्यो मे मजदूरो की भारी माँग ने दिहाडियो की मजदूरी ४ डालर प्रति सप्ताह से क्रान्ति की समाप्ति पर ७ डालर प्रति सप्ताह तक पहुँचा दी और कभी-कभी तो उनकी मजदूरी इससे भी ज्यादा होती थी जब उनको खाना दिया जाता था और निवास का प्रबन्ध किया जाता था तब तो उनका पूरा वेतन बिल कारीगरो और मिस्त्रियो से भी ज्यादा हो जाता था। जेनेसी नदी से बफैलो तक बनाई जाने वाली सडक के लिए जब मजदूरो की माँग निकली तब उन्हें प्रति मास १२ डालर वेतन, मुफ्त खाना तथा निवास और प्रतिदिन ह्विस्की की एक बोतल का वायदा किया गया। यद्यपि दक्ष कारीगर अब भी अपेक्षाकृत आरामदायक परिस्थितियो मे, विशेषकर विदेशियो की निगाह में जो उनकी तुलना यूरोप के

मजदूरो से करते थे, रह रहे थे, तो भी उन्होने महसूस किया कि परिस्थितियाँ उनके विपरीत जाती रही है और पुराने स्तर कायम रखना उनके लिये अब पहले से मुश्किल होगा ।

इन परिस्थितियो में जिन संगठनो ने दक्ष मजदूरो की स्थिति की रक्षा का प्रयत्न किया, वे सामान्यत. मुद्रको, जूता बनाने वालो, दर्जियो, बढइयो, कैबिनेट बनाने वालो, जहाज बनाने वालो, कूपर तथा जुलाहो के संगठन थे। इनमें भी मुख्य दिहाड़िये मुद्रक तथा जूता बनाने वाले थे। यह मान लिया गया है कि उनकी अग्रिम युनियनें थी और वे १६ वी सदी के पहले २० वर्षो में सक्रिय संस्याओ को न केवल न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया में बल्कि बोस्टन, बाल्टीमोर अल्बानी, वाशिंगटन, पिट्सबर्ग और न्यूयार्क में भी कायम रखने में सफल रहे। करीब-करीब हर नगर में इमारती व्यवसाय के सदस्य भी सगठित थे और अन्य संस्थाओ में मिले खडी करने वालो, पत्थर काटने वालो, हाथ-करघे के जुलाहो और टोप बनाने वालों की संस्थाएं शामिल थी। १८२० से पहले फैक्ट्री कर्मचारियो का कोई सगठन नही था। यद्यपि उस वर्ष तक कपड़ो के कारखानो मे १ लाख मजदूर काम करने लगे थे और विकसित होने वाले मजदूर आन्दोलन मे महिलाओ के भाग लेने का भी कोई प्रमाण नही था।

शुरू की ये व्यवसाय सस्थाएँ वस्तुत: कारीगरो की यूनियने थी, जिनकी सदस्यता बहुत सीमित थी क्षेत्र भी इनका बिल्कुल स्थानीय था। जो मजदूर उनके सदस्य थे वे उनके कठोर नियमो से बंधे होते थे। उन्हें यूनियन की कार्रवाई गुप्त रखनी होती थी, शपथ लेकर मजदूरी की प्रचलित दर पर डटे रहना होता था और अन्य श्रमिकों के मुकाबले साथी सदस्यो को काम दिलाने में सहायता देनी होती थी। संस्था में प्रवेश की फीस ५० सेण्ट थी और हर महीने ६ से १० सेण्ट चन्दा देना पड़ता था। नियमित बैठको में हाज़िरी जरूरी थी और बगैर वाजिब कारण के अनुपस्थित रहने पर जुर्माना किया जाता था। इसके अलावा अनुशासन बहुत कड़ा था और बार-बार शराब में मदहोश होने, भीषण अनैतिकता या संस्था की बैठक के समय किसी साथी सदस्य को अपशब्द कहने जैसे अपराधो पर सदस्य को यूनियन से निकाला जा सकता था। सस्थाओ को इस बात की बड़ी चिन्ता रहती थी कि जिस शिल्प का वे प्रतिनिधित्त्व करती है उसका उन्नत स्तर कायम रखा जाए और

इस प्रकार यह निश्चित किया जाय कि उनके सदस्यो में समाज के सब उत्तम कारीगर शामिल है।

मूल उद्देश्य वही रहे जो हमेशा ही संगठित श्रमिको के रहे है, अधिक वेतन, काम के कम घण्टे और काम की हालतो में सुधार। अप्रशिक्षित कर्मचारियो, विदेशियो और लडको और अन्तत महिलाओ को काम पर लगा कर मजदूरी की दरो को कम करने की मालिको की कोशिशो से उस चीज पर अमल करने की जोरो से कोशिश की जाने लगी जिसे आजकल 'बन्द कारखाना' कहा जाता है। न्यूयार्क की टाइपोग्रैफिकल सोसाइटी ने जोरदार शिकायत की कि नौसिखियो की बहुतायत, अप्रैण्टिसो के काम सीखकर चले जाने और अधकचरे दिहाडियो से 'पूरे कर्मचारियो' की मजदूरी की दरो पर आघात पहुँचा है। अन्य सस्थाओ के और सभवत. उनमे से अधिकाश के सहयोग से इसने अपने एक नियम का कडाई से पालन किया कि उसका कोई सदस्य ऐसे कारखाने मे काम नही करेगा जो ऐसे सदस्यो को काम पर रखता हो जो सगठन के सदस्य नही है। इस जमाने मे और उसके बाद भी जो मालिक ऐसे कारीगर और मिस्त्री भरने की शोशिश करते थे, जो यूनियन के सदस्य नही होते थे, उनके खिलाफ अनेक हड़ताले हुई और सस्था के नियमो का कडाई से पालन किया गया। प्रतीत होता है कि शिल्पियो के खिलाफ प्रयुक्त दबाव से किसी अन्य जमाने की अपेक्षा इस जमाने मे 'बन्द कारखाने' का सिद्धान्त का पालन करने के लिए अधिक सगठित प्रयत्न किया गया। न्यूयार्क मे जूते बनाने वाले दिहाडियो की यूनियन के सविधान में किसी भी यूनियन रहित सस्थान में न केवल काम करने की मुमानियत थी बल्कि शहर में आने वाला कोई दिहाडिया अगर एक महीने के अन्दर-अन्दर सस्था में शामिल नही होता था तो उस पर जुर्माना भी कर दिया जाता था।

मालिको के साथ व्यवहार में इन सस्थाओ ने सामूहिक सौदेबाजी के सिद्धान्त लागू किए। फिलाडेल्फिया के जूता निर्माताओ के मामले में १७९९ में एक शिष्टमण्डल समझौते का प्रस्ताव लेकर मालिको से मिला और ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते है जब दिहाडियो ने एक मूल्य सूची प्रस्तुत करके लम्बी वार्ता के बाद समझौते किए। जब सस्था और मालिको के बीच समझौते हो जाते थे तब सस्था के एक सदस्य को प्राय. एक कारखाने से दूसरे कारखाने

में घूम-फिरकर यह देखने के लिये कहा जाता था कि समझौते का पालन किया जा रहा है या नही। अन्य मामलो में समझौते के परिपालन पर निगरानी रखने के लिए "चलती-फिरती समितिया" नियुक्त की गई।

उस जमाने में हडतालें प्राय. शान्तिपूर्ण होती थी जिनसे मजदूर मजदूरी सम्बन्धी वार्ता भग हो जाने पर, अथवा जब मालिक समझौते की शर्तों का पालन करने से इन्कार कर देते थे या संस्था के सदस्यो से अतिरिक्त अन्य लोगो को काम पर लगाया जाता था, अपने हितो की रक्षा करने का यत्न करते थे। कर्मचारी अपना काम छोड़कर घर बैठ जाते थे, जब तक कि कोई समझौता नही हो जाता था। सघर्ष हिंसात्मक रूप में नही प्राय. अखबारो के कालमो मे चलता था। मालिक व श्रमिक दोनों अखबारो मे नोटिस निकाल कर जनता के सामने अपना-अपना पक्ष रखते थे। जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए अपील और जवाबी अपीलें यह जाहिर करती है कि श्रम-सम्बन्धो का उपयुक्त आधार निश्चित करने के लिये जनमत का कितना अधिक महत्व था।

लेकिन ऐसे भी अवसर आए जब हड़तालियों ने अधिक उग्र कदम उठाए। फिलाडेल्फिया के जूता-निर्माताओ की हड़ताल में ६ मजदूर काम करते रहे और उन्हे मालिक के मकान के ऊपर के कमरे में छिपा कर रखा गया। हडताली उनकी टोह लेते रहे और एक रविवार को जब वे पास की सराय में गए तो उनको उन्होंने बुरी तरह पीटा। एक दूसरे अवसर पर, निर्धारित वेतन न देने के कारण एक कारखाने का बायकाट किया गया और मालिक ने ५० नए मजदूरो के लिए विज्ञापन दिया तो हडतालियो ने मजबूती के साथ धरना दिया। जो गैर-यूनियन श्रमिक हड़तालियो का स्थान लेते थे उनके खिलाफ बड़ा रोष फैलता था और उन पर जिन्हें घृणा से "स्कैब" कहा जाने लगा था, हमले की वारदातें असाधारण बात नही थी।

नाविको की बार-बार की गई हड़तालो में कोलाहलपूर्ण प्रदर्शन और कभी कभी हिंसा भी हुई। न्यूयार्क में एक हडताल में, जिसमें नाविको ने साप्ताहिक वेतन १० डालर से १४ डालर किए जाने की माग की थी, इतना उपद्रव हुआ कि अंत में हड़तालियो के प्रदर्शन को सिपाहियो द्वारा भंग कराना पड़ा। एक और दफा नाविको ने एक जहाज पर चढ़कर उसे लूटने की कोशिश

की, जिसके मालिक से वे विशेष रूप से रुष्ट थे। उनके आयोजित हमले की बात का पता लगते ही कुछ नागरिकों ने जहाज पर रक्षात्मक मोर्चे सम्हाल लिए और जब हड़तालियों ने एक वाद्यवादक दल की आड में झण्डे लिए हुए पीछे की तरफ से उस पर चढ़ने की कोशिश की तो उन्हें "तीन बार पीछे धकेल दिया गया, उनकी नाकें तोड़ दी गईं सो अलग।" नाविक सगठित नही थे और बहुत उपद्रवी थे कारीगर और मिस्त्री इस प्रकार के तौर-तरीको को पसन्द नही करते थे, जिन्हें वे दक्ष कारीगरो के लिए शोभा की बात नही समझते थे।

मजदूरो की संस्थाओ के विकास तथा उनकी उग्र हलचलो से मालिकों को अधिकाधिक चिन्ता होने लगी थी। उन्होने शीघ्र ही अधिक वेतन की मांग मजूर न करने और 'बन्द कारखाना' पद्धति का मुकाबला करने के लिये परस्पर सहयोग करना शुरू कर दिया। बदलती हुई आर्थिक परिस्थितिया जब मजदूरों की भूतपूर्व स्वतंत्र स्थिति पर चोटें कर रही थी, तब उन मजदूरो ने जहां आत्मरक्षा के लिए अपने सगठन स्थापित किए, वहां मास्टरो को भी प्रतियोगितात्मक पूंजीवादी समाज में अपनी स्थिति को कायम रखना मुश्किल प्रतीत होने लगा। जब वे स्वयं अपने बलबूते पर सगठित कर्मचारियो का सामना नही कर सके तो उन्होने अदालतो की शरण ली और मजदूरो की संस्थाओ को व्यापार में रुकावट डालने वाले संगठन और षड्यन्त्र कहकर उन्हें बदनाम किया।

पहले पहल १८०६ में फिलाडेल्फिया के जूता-निर्माण मजदूरो की संस्था पर मुकद्दमा चलाया गया। अदालत मे केस रखा गया कि इन उग्र जूता-निर्माताओ ने अधिक वेतन की माग करते हुए बार-बार हड़तालें की हैं। अदालत का जज मालिको का पक्षपोषक सिद्ध हुआ। जूरी के सामने अभियोगपत्र पढ़ते हुए उसने हड़ताल को "सार्वजनिक शरारत और निजी-नुक्सान से भरा" बताया और उन १२ आदमियो के लिए यह सोचने की गुंजायश नही छोड़ी कि वह उनसे किस प्रकार के फैसले की आशा करता है।

उसने कहा: "अपनी मजदूरी बढ़वाने के लिये मजदूरो के संगठित होने को दो दृष्टियो से देखा जा सकता है। एक तो स्वय को लाभ पहुँचाने

की दृष्टि से और दूसरे उनको नुकसान पहुँचाने की दृष्टि से जो उनकी संस्था मे शामिल नही होते, कानून दोनो की निन्दा करता है".....इस प्रकार के निर्णय का आधार पुराने कानून मे निहित यह सिद्धान्त था, कि जहाँ कही दो या तीन व्यक्ति मिलकर कुछ करने का षड़यंत्र रचते है, सार्वजनिक हित खतरे में पडता ही है, यद्यपि 'वे अलग-अलग उस काम को करने के हकदार होते हैं। इस सिद्धान्त को उन संगठनो पर भी जिनका उद्देश्य केवल अपने वेतनो में वृद्धि करवाना था, लागू करने से शायद न्यायाधीश के मन में भी सन्देह उत्पन्न हो गया था लेकिन शीघ्र ही उसने उसे अपने मन से निकाल फेंका। उसनें कहा कि "अगर नियम स्पष्ट है तो हमें उन पर चलना पडेगा, यद्यपि जिस सिद्धान्त पर वे आधारित है, वह हमें समझ नही आता। हम उसे इसी लिए नही ठुकरा सकते क्योकि वह हमें समझ नही आता।"

४ वर्ष बाद न्यूयार्क के जूता-निर्माता मजदूरो की और १८१५ में पिट्सबर्ग में जूता-निर्माताओ के एक और संगठन पर इसी प्रकार का मुजरिमाना साजिश का आरोप लगाया गया। किन्तु अब वेतन-वृद्धि के लिए किए जाने वाले संगठित प्रयत्नो की एक दम निन्दा ही नही की जाती है। न्यूयार्क के जज ने इस उद्देश्य के मजदूरो के सगठित होने के अधिकार से सर्वथा इकार नही किया लेकिन उसने कहा कि "जिन साधनो का वे इस्तेमाल कर रहे हैं वे "बहुत मनमाने और दबाव डालने वाले है और अपने साथी नागरिको को उतने ही कीमती अधिकारो से वचित करने वाले है, जितने कीमती वे अपने अधिकारो को समझते हैं।" पिट्सबर्ग के केस में एक और मुद्दे पर बल दिया गया। किसी मालिक के खिलाफ सयुक्त कार्रवाई करके अपनी माँगे पूरी करवाने की कोशिश में मजदूरों का संगठन करने के कार्य को न केवल इसलिए अवैधानिक साजिश बताया गया कि इससे मालिक को नुकसान पहुँचता है बल्कि इसलिए भी कि इससे समाज को भी हानि होती है। जज ने इस विषय में जाने से ही इंकार कर दिया कि ज्यादती मजदूरों की है या मास्टरो की और मजदूरो की सस्था की इसलिए निन्दा की, क्योकि यह "एकाधिकार की प्रवत्ति उत्पन्न करती या व्यवसाय की समस्त स्वाधीनता को सीमित करती है।"

साजिशो के इन फतवो ने मजदूरो में व्यापक रोष उत्पन्न कर दिया।

वे पूछने लगे कि क्या अन्य सब संगठनो जैसे व्यापारियो, राजनीतिज्ञो, खिलाड़ियों और नृत्य, दावत और भोजो के लिए स्त्री-पुरुषो के संगठनो को तो अनुमति रहेगी और निन्दा केवल भुखमरी के खिलाफ गरीब मजदूरो के संगठन की ही की जाएगी ?

जनता के नाम एक अपील मे कहा गया कि "स्वाधीनता तो सिर्फ नाम-मात्र रह जाएगी, अगर वह काम करने पर, जिसका देश के कानून हमें अधिकार देते है, हमारे ऊपर जीवन-यापन के अल्प साधनों की पैमाइश के लिए जमादारों की नियुक्ति की जानी है, अगर अपने परिवारो के भरण-पोषण के लिए उपयुक्त और न्यायपूर्ण वेतन प्राप्त करने की कोशिशो के लिए हमें जेलो में डाल दिया जाना है और सिर्फ इसलिए हमें गम्भीर अपराधी और हत्यारा समझा जाना है कि अपने श्रम के लिए जिसे हम पर्याप्त मेहनताना समझते है उसे लेने या इन्कार करने के अपने अधिकार का हम दावा करते है।"

स्थानीय नीतियो में भी इस मामले का समावेश हो गया। अमरीका में अंग्रेजी कानूनो के सामान्य उपयोग के प्रश्न पर एक बार सघवादियो और जैफरसनी रिपब्लिकनों के बीच कडा विवाद खड़ा हो गया और रिपब्लिकनो ने अंग्रेजी कानून के अलोकतन्त्रीय सिद्धान्तो को मजदूर यूनियनों पर लागू करने को स्वाधीनता के सम्पूर्ण ध्येय के लिए एक चुनौती करार दिया। उन्होने कहा कि संगठन बनाने के अधिकार को अन्य बुनियादी अधिकारो से अलग नही किया जा सकता और उन्होने श्रमिको का बड़े उत्साह से पक्ष लिया।

प्रमुख जैफरसनी अखबार 'फिलाडेल्फिया औरोरा' ने सन् १८०६ में लिखा कि "क्या इस चीज पर विश्वास किया जा सकता है कि ऐसे समय जब कि नीग्रो की हालत सुधरने वाली है, गोरो की हालत गुलामो की सी बनाने की कोशिश की जा रही है ? क्या अमरीका अथवा पेसिलवेनिया के संविधानो में ऐसी कोई चीज है जो एक व्यक्ति को दूसरे से यह कहने का अधिकार प्रदान करती है कि उसके श्रम का मूल्य क्या होगा ? नही ऐसी कोई बात नही है। अंग्रेजी कानूनो की बदौलत ही इस प्रकार की चीजे संभव है।"

यह विवाद अगले अनेक वर्षो तक चलता रहा लेकिन मजदूरो के खिलाफ निर्णय कायम रहे। इनसे मजदूरो की न तो आगे और संस्थाएँ बनना रुका

और न ही हड़ताल और बहिष्कार बिल्कुल समाप्त हुए। लेकिन जब मालिक झगड़ो को अदालतो में ले जाते थे तो मजदूरो को साजिश के आरोपो से अपना बचाव करने मे बड़ी परेशानी होती थी।

अगर ये मामले श्रम-संगठनो के प्रारम्भिक आन्दोलन पर पहली चोट थे तो नई यूनियनो को शीघ्र ही अपने अस्तित्व के लिए अधिक गम्भीर खतरों का सामना करना पड़ा। १८१९ में देश मे भीषण मन्दी आई। जैसे-जैसे कारोबार ठप्प हुए, मजदूरो की माँग स्वतः घट गई और दक्ष मजदूरो को भी काम पाने में बड़ी कठिनाई होने लगी। अब वे इस स्थिति मे नही रहे कि ऊँचे वेतनो के लिए डटे रह सकें या 'बन्द कारखाना' प्रणाली को लागू करवा सकें। जो कोई काम उन्हें दिया जाता उसके लिए मजदूरी की दर और काम की हालतो की परवाह किए बिना वे उसे स्वीकार कर लेते थे। इन परिस्थितियो में युवा यूनियनें अपनी सदस्यता कायम नही रख सकी और शीघ्र ही भंग हो गईं। हालाकि कुछ यूनियनें जिन्दा रह सकी फिर भी जैसे ही यह आर्थिक विपदा देश मे फैली अधिकाश यूनियने देखते-देखते खत्म हो गईं।

१९ वी सदी में बार-बार ऐसा ही हुआ। समृद्धि के दिनो मे जब मजदूरो की बढ़ती हुई माँग ने उन्हे सौदेबाजी की प्रभावशाली शक्ति दी तब मजदूर यूनियनें खूब फली-फूली और जब कभी मन्दी आई और काम-धन्धे की कमी ने हर आदमी को दूसरो की परवाह किए बिना अपनी ही फिक्र करने पर मजबूर कर दिया तब वे खत्म हो जाती थी। कठिन समय में भी मजदूर अपनी यूनियन की शक्ति को बनाए रख सकें, इसका पहला मौका १८९० के बाद के दशक में आया।

लेकिन यह अभी सुदूर भविष्य के गर्भ मे था। सदी के प्रारम्भिक वर्षो में नवनिर्मित यूनियनों का क्षेत्र इतना सीमित था और वे इतनी अनुभवहीन थी कि मालिको ने जब कभी वेतनो का स्तर गिराने और "बन्द कारखाना" पद्धति को तोड़ने के लिए हर अवसर का लाभ उठाने की कोशिश की तब वे यूनियने मुकाबला कर सके, इसकी कोई सम्भावना नही थी। लेकिन जैसा कि बाद में ढर्रा ही पड गया, सन् १९२२ के बाद जब समृद्धि लौटी तो यूनियने भी फिर पनपी। कारीगरो और मिस्त्रियों की जो थोडी संस्थाएं इस मन्दी

में भी किसी प्रकार जीवित रह सकी उनको अपने सदस्यो की सौदेबाजी की ताकत वढ जाने से मानो नवजीवन मिला और जो सगठन खत्म हो गए थे, उनके स्थान पर नए सगठन बन गए।

न केवल मुद्रको, जूता बनाने वालो, दर्जियो बढ़इयो व अन्य दक्ष श्रमिको की यूनियनें फिर से हरी-भरी हो गईं बल्कि न्यू इग्लैण्ड की कपड़ा मिलो में फैक्ट्री मजदूरो के बीच सगठन की पहली बार प्रायोगिक शुरूआत हुई। इसके अलावा ये नई यूनियनें विशेष रूप से सक्रिय थी और अपनी मागे मनवाने के लिये हडतलो या बहिष्कार का आश्रय लेने से नही हिचकिचाती थी। अधिक वेतन तथा काम के कम घण्टे दोनो के लिए सफल हडतालो के समाचार उस वक्त के अखबारो मे देखने को मिलते है। बफैलो मे दर्जियो ने, फिलाडेल्फिया में जहाज बनाने वाले खातियो, बाल्टीमोर के फर्निचर बनाने लो ने और न्यूयार्क मे पेण्टरो, दर्जियो, पत्थर काटने वाले दिहाडियो और ा तक कि सामान्य मजदूरो ने भी सफल हडतालें की। कारखाने के मजदूरो में संगठन की बदौलत महिला कर्मचारियो ने भी पहली हड़ताल की, जब १८२४ मे पाटुकट (रोड आइलैण्ड) मे जुलाहो ने काम बन्द कर दिया। जिस बैठक मे इन महिलाओ ने उक्त कदम उठाने का निश्चय किया, उसकी रिपोर्ट 'नेशनल गजट' मे इस प्रकार छपी :—"कितना भी विचित्र लगे, यह हडताल बिना किसी शोर-शराबे के चलाई गई और इसमे मुश्किल से ही कोई भाषण हुआ।"

इन स्थानीय मजदूर सस्थाओ के पुनरुज्जीवन और उग्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि मजदूरो के सगठन की खातिर एक ऐसा कदम उठाया गया जो कारीगरो की सीमा को लाघ जाता था। १८२७ मे फिला-डेल्फिया में मैकेनिक्स यूनियन आव ट्रेड ऐसोसियेशन की स्थापना हुई। आज की शब्दावली में इसका अभिप्राय है—यूनियनो का सघ या केन्द्रीय सगठन। यह देश मे मजदूरो का ऐसा पहला सगठन था जो एक से अधिक व्यवसाय के श्रमिको को एक प्लेटफार्म पर लाया और इससे फिलाडेल्फिया के मजदूरो द्वारा नगर-व्यापी आधार पर मिलकर कार्रवाई कर सकना सभव हुआ।

यह नया सघ खातियो की एक हडताल से बना जो १० घण्टे के दिन की माग कर रहे थे और जिन्हे इमारती व्यवसाय के राज, पेन्टर और ग्लेजियर

जैसे अन्य मजदूरो का समर्थन प्राप्त हुआ। हड़ताल विफल हो गई लेकिन साथ-साथ काम करने का इससे जो अनुभव प्राप्त हुआ उससे और ज्यादा स्थायी संगठन बनाया जा सका। सब विद्यमान श्रमिक संस्थाओ को संघ में शामिल होने को कहा गया और जिन व्यवसायो मे कोई यूनियन नही थी उनसे कहा गया कि वे तुरन्त संगठित हों और अपने प्रतिनिधि भेजें।

मिस्त्रियो की यूनियन का जन्म यद्यपि १० घण्टे का दिन कराने के लिए की गई हड़ताल से हुआ था तो भी इसको मुख्य चिन्ता अधिक वेतन और काम के कम घण्टे जैसे प्रारम्भिक उद्देश्यो की नही थी। उत्पादको के लिए समानता की व्यापक आवाज़ बुलन्द करके श्रमिक सस्थाओ मे एक नई गतिविधि का सूत्रपात किया गया। नई आर्थिक व्यवस्था से उत्पन्न परिवर्तनो के कारण मजदूर अपनी आर्थिक व सामाजिक स्थिति के बारे में अधिकाधिक चिन्तित रहने लगे थे। जब मजदूरो को यह अहसास हुआ कि नई श्रेणिया बनती जा रही हैं तो फिलाडेल्फिया के मजदूरो ने अपने वर्ग की स्थिति को कायम रखने के कुछ उपाय सोचे। वे स्वयं को मालिको के खिलाफ डटे श्रमिक नही समझते थे बल्कि "उत्पादक व यान्त्रिक वर्ग" के सदस्य समझते थे जिनका लक्ष्य सारे समाज की समृद्धि और कल्याण की चिन्ता करना था।

नए सगठन के संविधान की भूमिका में कहा गया है कि "अगर आम लोगो को अपने श्रम से अपने व अपने परिवार के लिए जीवन के भरपूर सुख सुविधाओं का उपयोग करने लायक बनाना है तो मकान, फर्निचर और कपडो की खपत अब की अपेक्षा कम से कम दुगनी करनी होगी और जिस भाग से मालिक अपना गुजारा कर सकें, या धन-सचय कर सकें उसे भी समानुपात में बढाना होगा। इसलिए इस संघ का वास्तविक उद्देश्य सभव हो तो उन बुराइयो को दूर करना है जिनका मानव-श्रम का मूल्य गिरने से उभरना अनिवार्य है ..और ऐसी अन्य संस्थाओं के साथ, जो अब के बाद सारे देश में बनेंगी, समाज के सब वर्गो तथा व्यक्तियो के बीच मानसिक, नैतिक, राजनीतिक तथा वैज्ञानिक शक्तियो के न्यायपूर्ण संतुलन की स्थापना में सहयोग करना है।"

इन उद्देश्यो के, जिनमें ऊँचे वेतन के लिए क्रयशक्ति के सिद्धान्त का सुझाव दिया जाने लगा था, निश्चित राजनीतिक प्रयोजन थे। मैकेनिक्स

यूनियन ग्राव ट्रेड ऐसोसियेशन्स ने ट्रेड यूनियन हरकतो में वस्तुत. कभी सीधा हिस्सा नहीं लिया वल्कि वह एकदम राजनीति की ओर मुड़ गई। इसने फिलाडेल्फिया के मिस्त्रियो और कारीगरो को "सजातीयता की भावना के बन्धन काट डालने और समान अधिकारो के झण्डे के नीचे एकजूट होने" का आह्वान किया। इसने स्थानीय कार्यालय के लिए उम्मीदवार नामजद करने की अपील की जो श्रमिको का प्रतिनिधित्व करेंगे।

—:०:—

३ : श्रमिकों की पार्टियां

मैकेनिक्स यूनियन श्राव ट्रेड ऐसोसियेशन ने जब अपने सदस्यो को सार्व-जनिक पदो के लिए उम्मीदवार नमाजद करने की प्रेरणा दी तब उसने मजदूरों के लिए एक नई चीज शुरू की जो बाद में श्रमिक पार्टियो का व्यापक राज-नीतिक आन्दोलन बन गई। यह शीघ्र ही पेंसिलवेनिया और न्यूयार्क जैसे शहरों में भी फैल गया और उसे न केवल न्यूयार्क की स्थानीय पार्टियो में बल्कि ऊपरी राज्यो की बस्तियो मैसाच्युसेट्स और न्यू इंग्लैण्ड के अन्य हिस्सो मे भी व्यापक समर्थन मिला। अन्ततोगत्वा कम से कम एक दर्जन राज्यों में श्रमिको की पार्टियां बन गईं। पश्चिम में ओहायो तक और अटलाण्टिक समुद्र-तट के साथ-साथ किसानो, कारीगरो और मिस्त्रियो के स्थानीय समुदायो ने अपने-अपने राजनीतिक उम्मीदवार नामजद किए और कई स्थानो पर उन्हें चुना। कुछ अरसे तक उनका बड़ा महत्व रहा और कभी-कभी स्थानीय चुनावो में बडी पार्टियो के बीच वे सन्तुलन का काम करते थे।

१८३० के दशक के प्रारंभिक दिनो मे मजदूरों के अखबारों का भी खूब विस्तार हुआ। इस प्रकार के कम से सम ६८ अखबार श्रमिको के हितो की रक्षा कर रहे थे और उन की हालत में सुधार के लिए आन्दोलन कर रहे थे। उनके उत्साह और विश्वास की कोई सीमा नही थी। "नेवार्क विलेज क्रानिकल" ने मई, १८३० में लिखा कि "मेन से जार्जिया तक कुछ ही महीनो में हमें क्राति के लक्षण दिखाई देते है जो '७६ की क्राति को छोड़कर और किसी क्रान्ति से हीन नही है।" इसके कुछ दिन बाद 'अलबानी वर्किंगमेंन्स ऐडवोकेट' ने लिखा : "समस्त विशाल गणराज्य में किसान, मिस्त्री और श्रमिक इसके कानूनो व प्रशासन में स्वाधीनता और समानता के उन सिद्धान्तों का जो स्वा-धीनता की घोषणा में प्रतिपादित है, पुट देने के लिए एकत्र हो रहे है।"

ये घटनाए जैक्सनी लोकतत्र की जिसके साथ श्रमिको की राजनीतिक गतिविधिया धीरे-धीरे घुल मिल गईं जागती हुई ताकतों की अभिव्यक्ति और पहले पहल फिलाडेल्फिया में व्यक्त की गई समान नागरिकता की मांग का

इजहार दोनों थी। देश इन वर्षों मे तेजी से फैल रहा था। नए पश्चिमी प्रदेशो मे निवास के द्वार खुलने, सड़को व नहरो के निर्माण उद्योग के निरन्तर विकास तथा सब जगह शहर बनते जाने से उत्फुल्ल विश्वास की भावना उत्पन्न हो गई थी। देश के श्रमिक मूलत. यही चाहते थे कि राष्ट्र के विकास तथा समृद्धि के लाभो में पूर्ण भाग लेने का उन्हें भी हक हो और उन्होने महसूस किया कि १८२० के दशक की मौजूदा परिस्थितियो मे उन्हें उन अवसरो से वंचित किया जा रहा है, जिन्हें प्राप्त करने का उन्हे हक है। मताधिकार के लिए जायदाद की मिल्कियत की शर्त को हटाकर हाल में उन्होनें जो राजनीतिक सत्ता प्राप्त की थी उसके बाद वे अपने हितो की रक्षा के लिए अपने उम्मीदवार खडे करने को तैयार थे।

इसमे सन्देह नही कि व्यावसायिक पूंजीवाद के अभ्युदय से अर्थ तत्र में जो तब्दीलिया हो रही थी उनके फलस्वरूप मजदूरो की आम हालत निरन्तर गिरती जा रही थी। समाज मे साधारण श्रेणी-भेद ज्यादा गहरे हो चले थे। तत्कालीन आलोचकों ने देखा कि एक तरफ तो पैदावार करने वाला गरीब मजदूरो का आम समूह है और दूसरी ओर सम्पन्न अनुत्पादक सभ्रान्त वर्ग है जिसने विशेष अधिकारो का दुर्ग खड़ा कर रखा है। बैंकिंग तथा अन्य एकच्छत्र उद्योगों ने इस भेद को और बढाया और अधिकाश मजदूरो ने यह देखा कि उनकी काम की हालतों में कोई सुधार नही हो रहा है, यद्यपि वाणिज्य और व्यापार का विस्तार हो रहा है और राष्ट्र समग्र दृष्टि से अधिक समृद्ध हो रहा है।

मजदूरिया बढी लेकिन उतनी नही जितनी चीजो की कीमतें। काम के सामान्य घण्टे १२ और १५ रहे। गर्मियो में कारीगर और मिस्त्री सवेरे ४ बजे से ही काम शुरू कर देते थे। १० बजे एक घण्टे तक लंच करते थे और फिर ३ बजे खाना खाते थे जिसके बाद सूरज छिपनें पर ही उस दिन के काम से छुट्टी मिलती थी। उन्हें प्राय उस मुद्रा में मजदूरी दी जाती जिसकी कीमत गिरी होती थी और वह निरन्तर घटती-बढती रहती थी। अगर मालिक मजदूरी न दे पाए तो मजदूरो की शिकायतो की कोई सुनवाई नही थी और यदि मजदूर अपनी कोई देनदारी न निबाह पाए तो उन्हें ऋणग्रस्तता पर जेल की सजा दी जा सकती थी।

इसके अलावा श्रमिकों ने महसूस किया कि सरकार बिल्कुल संभ्रान्त लोगों की तरफ है और उसकी नीतियां उन अवस्थाओं को बनाए हुए है जो सभी मजदूरों की हालत को बिगाड़ रही है। दोनों बड़े दलों में से किसी में भी उनका विश्वास नहीं था, चाहे वे मजदूरों के प्रति अपनी सद्भावना का कितना भी बखान करें, क्योंकि सार्वजनिक पदों पर जो भी व्यक्ति चुने जाते थे वे हमेशा उसी वर्ग के होते थे, जिसे वे अपना उत्पीड़क मानने लगे थे। अब तक वे अपने खिलाफ झुकते हुए शक्ति-सन्तुलन को ठीक करने में राज-नीतिक दृष्टि से असहाय थे। मताधिकार से लैस होने के बाद उन्होंने घोषणा कर दी कि वे उन नीतियों को अब चुप-चाप स्वीकार नहीं करेंगे जो विशाल बहुमत के हितों की परवाह न करते हुए कुछ गिने चुने प्रिय व्यक्तियों के लिए सरकार, वित्त और व्यवसाय में विशेष अधिकार सुरक्षित रखने का यत्न करती थी।

अपने निजी दल बनाकर मजदूरों ने अपने ही उत्पादक वर्ग के सदस्यों को सरकार में स्थान दिलाने का प्रयत्न किया और उन्हें विश्वास हो गया कि इस प्रकार वे जनता का हित कर रहे है। उनकी पार्टी के प्लेट-फार्मों से विशेषाधिकार के हर मामले पर विशेषकर बैंकिंग एकाधिकार पर जोरदार आक्षेप किए जाते थे। लेकिन समान नागरिकता की स्थापना के सामान्य उद्देश्य के प्रतीक के रूप में उनकी सबसे पहली मांग निश्चित रूप से मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा की थी। हर सरकारी काम-काज में "जन सामान्य" के लिए प्रतिनिधित्व प्राप्त करने की चेष्टा करते हुए उन्होंने यह महसूस किया कि आम लोगों के लिए शिक्षा प्रभावशाली लोकतंत्र की तरफ पहला कदम है। इससे ज्यादा विशिष्ट आधार पर मजदूरों ने कर्जदारी के लिए कैद की व्यवस्था और गिरवी रखी गई चीज को हस्तगत करने के कानूनों के खात्मे, गरीबों के लिए बहुत कष्टकारी सैनिक कवायद के रिवाज में संशोधन करने, सब सरकारी अधिकारियों के प्रत्यक्ष चुनाव, कर लगाने में ज्यादा समानता और चर्च तथा राज्य को बिल्कुल अलग कर देने की भी मांग की।

इस प्रकार मजदूरों के राजनीतिक आन्दोलन, और उनके स्थानीय दलों के निर्माण में उदार-सुधार की भावना निहित थी। यह आन्दोलन अब तक के किसी भी मजदूर अन्दोलन की अपेक्षा अधिक व्यापक था। लोकतंत्र के

महान उभार मे जिससे राष्ट्रीय मच पर ऐण्ड्र्यू जैक्सन का समान्य जन के हितों के प्रवक्ता के रूप में आविर्भाव हुआ, पूर्वी शहरो मे श्रमिको का विद्रोह नई पश्चिमी बस्तियों में किसानो के विद्रोह से अधिकाधिक जुडता चला गया। सभव है १८२८ में सभी श्रमिको ने डैमोक्रेटो का समर्थन न किया हो, लेकिन इनमे कोई सदेह नही कि जब जैक्सन ने उनके द्वारा पेश किए गये मामलो मे अधिकाधिक दिलचस्पी दिखाई तो उनका भारी बहुमत जैक्सन के पक्ष मे हो गया। 'समाज के अदना सदस्यो' के हितो की वकालत करते हुए वह उनमे मिस्त्रियों, मजदूरो और किसानो को खास तौर से शामिल करता था। जैक्सनी लोकतत्र का आधार जैफरसनी लोकतत्र से ज्यादा व्यापक था और उसमे सामन्तो की व्यक्तिवादी भावना और पूर्व के श्रमिको की समता की भावना दोनो का समावेश था।

मजदूरो द्वारा बनाई गई पार्टियो का १८३० के दशक के जटिल व परिवर्तमान राजनीतिक ढाचे मे उलझ जाना अनिवार्य था। किन्तु उनका अन्तिम भाग्य कुछ भी रहा हो, सुधारो की माग मे तेजी लाने और प्रगतिवादी सिद्धान्तो को बढावा देने मे उनका प्रभाव महत्वपूर्ण था। मैसाच्युसेट्स में श्रमिको की पार्टी की भूमिका पर टीका करते हुए एक ह्विग अखबार ने बड़ी चिढ के साथ यह आरोप लगाया कि "मजदूरवाद और जैक्सनवाद" मे कोई फर्क नही है। यह बात अगर हमेशा ही सच नही थी तो भी यह तो निश्चित था कि जैक्सनी लोकतत्र ने जो विजय हासिल की वे अधिकाश मे मजदूरो के सहयोग से प्राप्त की गई थी।

मजदूरो की बढती हुई राजनीतिक सत्ता के महत्व का अन्य प्रकार से भी दिग्दर्शन हुआ। जैक्सन द्वारा सामान्यजन के हितो की वकालत किए जाने के विरोध मे नव संगठित ह्विगो ने कुछ अरसे तक संघवादी परम्पराओ को कायम रखने की कोशिश की जो अमीर और सामन्ती लोगो की सरकार के पक्ष मे थी। उन्होंने विशेष रूप से "हर चलते हुए आदमी को मताधिकार दिए जाने का" विरोध किया। लेकिन जब उन्होने यह देखा कि वे छोटे किसानो और शहरी मजदूरो की बढती हुई राजनीतिक सत्ता को रोकने मे असमर्थ है तो वे अपनी टेक बदलने लगे। जैक्सन पर वर्ग सघर्ष बढ़ाने का आरोप लगाते हुए — जो आरोप बाद के टोरियो ने फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट पर लगाया, उन्होंने कहा

कि उच्च कुलीनता और लोकतंत्र को हमारे राष्ट्रीय जीवन में विरोधी ताकतें समझने का कोई कारण नही है। एक ह्विग सम्पादक ने लिखा—"ऊँची और नीची श्रेणी" जैसा वाक्यांश मूलत. यूरोपीय है और यांकी वोली में उसका कोई स्थान नही" उनके विचार अव भी कितने ही पौराणिक क्यो न रहे हो, उनके लिए समानता के सिद्धान्तो का वखान करना अव राजनीतिक दृष्टि से व्यावहारिक नही रह गया था और उन्हे सरकार में समाज के हर वर्ग की भागीदारी के अधिकार को मानना पड़ा।

जैक्सनी युग के समाप्त होते-होते मजदूरो की मूल पार्टियां खत्म हो चली थी। किन्तु राष्ट्र के उत्पादक श्रमिको ने राजनीतिक मान्यता की वह जीत हासिल कर ली थी, जो उनका सबसे पहला लक्ष्य था। दोनो बड़े दल मजदूरों का समर्थन प्राप्त करने की निरन्तर कोशिश कर रहे थे। एक उदाहरण के तौर पर जव १८३६ में 'ओहायो पीपल्स प्रेस' का सम्पादक जैक्सन के वजाय हैरिसन का राजनीतिक भक्त वन गया। उसने हैरिसन के समर्थन की अपील उन्ही युक्तियो के आधार पर की जिनके आधार पर उसने पहले जैक्सन का समर्थन करने की अपील की थी। उसने कहा कि हैरिसन के प्रोग्राम से "किसान, मिस्त्री और मजदूर को राज्य में अपना उचित स्थान और प्रभाव फिर से प्राप्त हो जाएगा।" मताधिकार की व्यापकता तथा मजदूरो की बढ़ती हुई राजनीतिक जागृति ने मजदूरों को पहली वार एक राजनीतिक शक्ति बना दिया था।

वहुत-सी स्थानीय श्रमिक-पार्टियो में से न्यूयार्क की एक पार्टी का अनुभव तुरन्त यह जाहिर कर देता है कि अस्थायी रूप से वे अपना कितना प्रभाव डाल सकी और किन जटिल वातो के कारण वे खत्म हो गई। यह पार्टी "मिस्त्रियों वह अन्यों से" वनी थी, जिन्हें २३ अप्रैल १८२९ को १० घण्टे के दिन को बढ़ाने के विरुद्ध, जो पहले की ट्रेड यूनियनो ने संघर्ष करके जीता था, प्रदर्शन करने के लिए बुलाए गए थे अपनी गतिविधियो का क्षेत्र व्यापक बनाने के निर्णय के बाद प्रतिनिधियों ने एक बड़ी सभा बुलाई। इसमें ६००० व्यक्ति शामिल हुए और मजदूरो के अधिकारों के व्यापक सिद्धान्तो से सम्बन्धित अनेक प्रस्ताव पास किए गए। इस कार्यक्रम को अमल में लाने के उपायों पर विचार करने का काम तब ५० व्यक्तियो की एक समिति को सौंप

दिया गया और १६ अक्टूबर को उसने एक रिपोर्ट निकाली, जिसकी २० हजार प्रतियाँ बाद में वितरित की गई । उसमें मौजूदा सामाजिक व्यवस्था पर तीव्र प्रहार किये गए थे और न्यूयार्क विधान सभा के लिए उन लोगो में से "जो अपने ही श्रम से जीते है, परोपजीवी नही" राजनीतिक उम्मीदवार नामजद करने के लिए एक सम्मेलन बुलाने को कहा गया था। ४ दिन बाद यह सम्मेलन हुआ। जब सब गैर-श्रमिको को "जैसे बैकरो, दलालो, अमीरों आदि को" सभा-भवन से चले जाने की चेतावनी दी गई उसके बाद मजदूर विधान सभा के लिए एक मुद्रक, दो मशीन-चालक, दो खातियो, एक पेण्टर तथा एक मोदी को उम्मीदवार नामजद करने पर सहमत हो गए।

लेकिन शुरू से ही मजदूरो की नई पार्टी के नेतृत्व के प्रश्न पर प्रतिद्वन्द्विता और साजिशो से मजदूरो में फूट का खतरा पैदा हो गया। इस पर कई अत्यन्त व्यक्तिवादी सुधारको का प्रभुत्व स्थापित हो गया जिनका दर्शन और विचार उन व्यावहारिक माँगो से कही ज्यादा उग्र थे जिनमें मजदूरों की मुख्यत: दिलचस्पी थी। न्यूयार्क की श्रमिक पार्टी पर और मजदूरों की आम राजनीतिक गतिविधियो की दिशा पर उक्त प्रकार के चार व्यक्तितो का विशेष रूप से प्रभाव था।

शुरू-शुरू में पार्टी ज्यादातर एक मशीन-चालक, स्किडमोर के प्रभाव में थी, जिसने मजदूरो को १० घण्टे का दिन कायम करने के लिए "अपने सामन्ती उत्पीड़को को झुकाने" के साधन के रूप मे अपना प्रोग्राम व्यापक कर देने के लिए राजी कर लिया। स्किडमोर ने स्वय शिक्षा पाई थी, मजदूरो के हितो का वह एक उग्र और कट्टर चैम्पियन था और कृषि के सम्बन्ध मे उसने एक ऐसी विचारधारा अपनाई जो सम्पत्ति के वर्तमान अधिकारो के सम्पूर्ण आधार पर कुठाराघात करने वाली थी। वह कहता था कि जब कोई व्यक्ति जुलाहा, राज, धातु का कारीगर या अन्य मजदूर बनने के लिए जमीन पर अपने मौलिक और कुदरती अधिकार को छोडता है तब उसे समाज से यह गारण्टी प्राप्त करने का हक है कि "अपने युक्तियुक्त श्रम की बदौलत वह अन्यो के समान ही आराम से रह सकेगा।" जो प्रणाली इस प्रकार की सामाजिक सुरक्षा प्रदान नही करती वह उसकी राय में गलत थी और वह बुनियादी राजनीतिक सुधारो के पक्ष में मजदूरो के विद्रोह का नेतृत्व करने की आशा करता था।

उसके विचार शीघ्र ही एक बड़े निबन्ध के रूप में प्रकाशित किए गए जिसका उसने लम्बा-चौड़ा शीर्षक रखा : "सम्पत्ति के लिए मनुष्य का अधिकार; वर्तमान पीढ़ी के वयस्कों के समान वितरण का प्रस्ताव और हर आने वाली पीढ़ी के प्रत्येक व्यक्ति के लिए वयस्क बनने पर उसका समान उत्तराधिकार" स्किडमोर ने खास तौर से प्रस्ताव किया कि कर्जा और सम्पत्ति के सब दावे तुरन्त रद्द कर दिए जाएँ, और समाज की सम्पत्ति समग्रतः नीलाम कर दी जाए, जिसके साथ ही हर नागरिक की क्रयशक्ति बराबर हो। सम्पत्ति के इस प्रकार के कम्युनिस्टी विभाजन के बाद सब उत्तराधिकार का खात्मा कर समानता को निश्चित रूप से कायम रखा जा सकेगा।

इस क्रान्तिकारी प्रोग्राम के सब परिणामों को अच्छी तरह समझे बिना न्यूयार्क-श्रमिक पार्टी के सदस्यों ने अपने मूल प्लेटफार्म का खाका खींचने का काम स्किडमोर को सौंप दिया। यह प्लेटफार्म इस सीधे वायदे पर आधारित था। "सब मानव-समाज, हमारा भी और दूसरे भी मूलतः गलत बने हुए हैं" और इसमें जमीन के व्यक्तिगत स्वामित्व तथा सम्पत्ति के उत्तराधिकार दोनों की निन्दा की गई थी। लेकिन इसकी ज्यादा स्पष्ट धाराओं में उन उद्देश्यों का उल्लेख था जो सब कहीं श्रमिकों के आन्दोलन के लिए आधारभूत थीं। प्लेटफार्म में सामूहिक शिक्षा, ऋण के लिए कैद की प्रणाली की समाप्ति, ऋण चुकाए जाने तक मिस्त्रियों की जायदाद को हथियाये रखने और लाइसेंसदार एकाधिकार की समाप्ति की माँग की गई थी।

एक दूसरा नेता जो स्किडमोर के कार्यक्रम को कम-से कम आंशिक रूप में स्वीकार करता था लेकिन बाद के वर्षों में श्रमिक आन्दोलन में जिसका स्किडमोर से कहीं ज्यादा प्रभाव रहा जार्ज हेनरी एवन्स था। उसका धन्धा मुद्रण का था और उसने न्यूयार्क-पार्टी के मुखपत्र के रूप में "वर्किङ्गमेन्स ऐडवोकेट" की स्थापना की जो उन वर्षों में मजदूरों का सबसे महत्वपूर्ण अखबार था। इसमें वह मजदूरों के हितों को बढ़ावा देने वाले लेख और सम्पादकीय निरन्तर लिखा करता था। स्किडमोर के प्रभाव को जाहिर करते हुए पहले उसके अखबार ने यह नारा दिया, "सब बच्चों को बराबर की शिक्षा पाने का हक है; सब वयस्कों को समान सम्पत्ति का, और सारी मानव-जाति को समान अधिकार प्राप्त करने का हक है।" लेकिन बाद में उसके विचारों में

सशोधन हो गया यद्यपि वह जीवन-भर बुनियादी कृषि-सुधारो का कट्टर पक्ष-पाती बना रहा ।

सब टोरियो की नज़र में मजदूरो की पार्टी को बदनाम कराने के लिए मानो इस प्रकार के नेता पर्याप्त नही थे, इसकी गतिविधि में अन्य प्रकार के क्रान्तिकारी सुधारको राबर्ट डेल ओवन और फ्रासिस राइट के भाग लेने से यह और बदनाम हुई। न्यूहार्मनी (इण्डियाना) में जहाँ कि राबर्ट डेल ओवन के पिता अग्रेज-सुधारक रावर्ट ओवन ने फैक्ट्री प्रणाली की जगह अपने सामाजिक कार्य-क्रम पर अमल करने की कोशिश की थी, सहकारी समाज से हाल मे न्यूयार्क आकर इन दोनो ने स्वभावत' ही मज़दूरो के आन्दोलन को अपने विशिष्ट प्रकार के सुधारो को लागू करने का माध्यम बना लिया। उन्होने अपने विचारो का प्रचार करने के लिए "फ्री इक्वाइरर" की स्थापना की और शीघ्र ही यह नए दल के समर्थन मे प्रचार करने लगा ।

रावर्ट डेन ओवन इस वक्त छोटे कद का, नीली आँखो, लाल-पीले बालो वाला २८ वर्ष का नवयुवक था जिसके आदर्शवाद और सच्ची दयानत-दारी ने उसे वस्तुत प्रभावशाली बना दिया था। लडखडाती आवाज़ और भद्दे हाव-भाव के बावजूद मजदूरो की सभाओ मे वह ओजस्वी भाषण देता और वह लिखता भी बहुत काफी और बहुत अच्छा था। वह सम्पत्ति के अधिक समान वितरण में दृढ विश्वास रखता था, सगठित धर्म के विरुद्ध था, तलाक के अधिक उदार कानूनो का हामी था, लेकिन उसकी मुख्य दिलचस्पी मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा मे थी। वह एकात्म-भाव से यह महसूस करता था कि केवल इसी से समाज का पुनरुत्थान हो सकता है और उसने शिक्षा का एक व्यापक कार्यक्रम तैयार भी किया था जिसमे एक प्रकार की 'राज्य सरक्षकता" प्रणाली की आवश्यकता बताई गई थी।

इस योजना के अनुसार सब बच्चो को चाहे वे अमीर के हो या गरीब के, अपने घरो से हटा कर राष्ट्रीय स्कूलो मे रखा जाता जहाँ उन्हें लोकतन्त्र की भावना उत्पन्न करने के लिए एक ही तरह का खाना मिलता, एक ही तरह के वे सारे कपडे पहनते और सबको एक से विषयो की शिक्षा दी जाती। "इस प्रकार ईश्वर करे, भोग-विलास, दर्प और अज्ञान हमारे मे से दूर हो और हम भाइयो का राष्ट्र बन जाए, जैसा कि हम साथी नागरिको को होना चाहिए।"

उक्त बात राज्य सरक्षकता पर एक रिपोर्ट में कही गई है। मजदूरो ने यद्यपि इस विशिष्ट कार्यक्रम का पूरी तरह समर्थन नही किया तो भी ओवन ने उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारो के विकास में बहुत योग दिया।

जिन सुधारकों का श्रमिकों की पार्टी से सम्बन्ध रहा उन सबमें फ्राँसिस राइट सबसे ज्यादा उत्साही, सबसे ज्यादा आकर्षक और समकालीन लोगो की नज़रो में सबसे ज्यादा खतरनाक थी। यद्यपि वह एक स्वतन्त्र विचारक थी और महिलाओ के अधिकारो तथा आसान तलाक की इतनी ज्यादा पक्ष-पाती थी कि उस पर सामान्यत: स्वच्छन्द प्रेम की वकालत करने का आरोप लगाया जाता था तो भी उसने उग्र आन्दोलनकारी की भूमिका अदा नही की। लम्बी, पतली, घुघराले लाल-भूरे बालो वाली यह महिला मज़दूरो की सभाओ मे, जिनमे वह निरन्तर भाषण किया करती थी, चकाचौध उत्पन्न कर देती थी। टोरी लोग जितने हैरान उसके क्राँतिकारी विचारो से होते थे, उतने ही एक महिला द्वारा सभामच पर आने के दुसाहसपूर्ण गुस्ताखी से स्तब्ध रह जाते थे किन्तु जो उसके भाषण को सुनते थे उनमें शायद ही कोई उसके प्रभाव से अछूता रह पाता हो। वाल्ट ह्विटमैन ने, जिसका खाती पिता उसे फ्रासिस राइट की एक सभा में ले गया, बाद के वर्षो में लिखा कि "मेरे लिए वह एक मधुरतम स्मृति रही है। हम सब उससे प्रेम करते थे, उसके आगे शीश झुकाते थे। उस कमनीय हरिणी-सी के दर्शन हमें आनन्द विभोर कर देते थे ....उसका शरीर और आत्मा दोनो सुन्दर थी।"

फैनी राइट स्काटलैड में पैदा हुई थी और शुरू से ही जेरेमी बेथम के प्रभाव मे आने के कारण युवावस्था में ही सुधारो की उग्र चैम्पियन बन गई और बाद में जीवन भर रही। इस देश में आने पर शुरू में उसने गुलाम नीग्रो के हित-साधन का काम अपने हाथ में लिया और नाशोबा (टेनेसी) में उसने एक बस्ती बसाई जहा अपने खर्चे से कुछ गुलाम खरीद कर वहाँ रखे और उन्ह अन्ततोगत्वा आज़ादी के लिए और अमरीका से बाहर बसने के लिए तैयार किया। उसकी यह योजना जब फेल हो गई तो वह न्यू हार्मनी के समाज मे आ मिली और तब राबर्ट डेल ओवन को "फ्री इन्क्वाइरर" के सम्पादन मे सहायता देने के लिए उसके साथ न्यूयार्क आ गई।

नाशोबा और न्यू हार्मनी में अपनी निराशाओ से वह मायूस नही हुई,

सुधार के लिए उसका उत्साह जरा भी ठण्डा नही पडा और बडे उत्साह से उसने श्रमिक आन्दोलन को अपना लिया। इसमें उसने केवल सामाजिक असमानता के खिलाफ विरोध की बल्कि पीड़ितो की तरफ से विद्रोह की झलक दिखाई दी, जिसके लिए इतिहास में कोई और उदाहरण नही था। 'फ्री इन्क्वाइरर' मे उसने लिखा कि मानवजाति ने अब तक जो सघर्ष किए है उन से वर्तमान सघर्ष इस बात में भिन्न है कि यह स्पष्ट और खुला वर्ग सघर्ष है . . . . दुनिया के पीड़ित लोग अपनी पीठ पर से उन बूटधारी सवारो को उतार फेंकने के लिए सघर्ष कर रहे हैं जिनका मजदूरो को मृत्युपर्यन्त भूखा मार-मार कर उनसे काम लेने का अधिकार अब नही चलेगा। मजदूर काहिली के खिलाफ, मेहनत पैसे के खिलाफ और न्याय कानून तथा विशेषाधिकार के खिलाफ उठ खडा हुआ है।"

अखबारो ने फेनी राइट को कोसना शुरू कर दिया। उन्होने उसे "बदनाम विदेशी" कहकर उसका महत्व घटाने की कोशिश की और उसे "नास्तिकता का महान रेड हारलट" बताया। लेकिन उन्होने उसे कितनी भी गालिया दी, सार्वजनिक मचो पर और प्रेस मे वह बेशर्मी से अपने "भयावह सिद्धान्तो" का प्रतिपादन करती रही।

जब श्रमिको की पार्टी ने इस प्रकार के लोगों के नेतृत्व में सन् १८२९ मे न्यूयार्क के चुनाव दगल मे अपने दूकानदार और कारीगर उम्मीदवारो के साथ कदम रखा तो टोरी हक्के-बक्के रह गए। पहले तो उन्होने इसी बात का नारा लगाया कि उनके हितों को कोई खतरा नही है किन्तु जब मजदूरो के वोट भारी सख्या मे नई पार्टी को मिलते दिखाई दिए तो वे पूर्णत सचेत हो गए। 'कूरियर ऐण्ड इन्क्वाइरर' ने विरोध प्रकट किया कि "हमे आश्चर्य और भय के साथ पता लगा है कि "नास्तिक टिकट" जिसे गलती से 'श्रमिक टिकट' कहा जाता है, शहर में अन्य हर विधान सभाई टिकट से कही आगे है। हमारी क्या दशा हो गई है। एक टिकट खुल्लमखुल्ला और जान बूझकर सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ, सम्पत्ति के अधिकारो के खिलाफ खडा होता है और हर अन्य टिकट से आगे बढ रहा है।" "न्यूयार्क कमर्शियल ऐडवर्टाइजर" की चीख-पुकार तो और भी ज्यादा तेज थी उसने लिखा "समाज, पृथ्वी और स्वर्ग से प्रताड़ित, अनीश्वरवादी और निराश चोरी और नास्तिकता के वशीभूत .....

ऐसे है ये देवदूत जो इस शहर में अनेक व्यस्को को अपने मार्ग पर चलाने के लिए घसीट रहे है ।"

लेकिन जब चुनाव का परिणाम निकला तो इस प्रकार की आशंकाएं अतिरंजित निकली । श्रमिको की पार्टी शहर पर छा नही गई । तो भी उसने चुनाव मे डाले गए २१ हज़ार वोटो में से ६००० वोट प्राप्त किए और अपने एक उम्मीदवार को जो खाती था, विधान सभा मे भेजा । 'वर्किंगमेन्स ऐडवोकेट में जार्ज हेनरी एवन्स ने आवेशपूर्ण सम्पादकीय में लिखा । "आज़ादी के सूर्य ने ५० वर्ष तक अपना स्थिर और अपरिवर्तनशील रास्ता व्यर्थ में ही तय नहीं किया और तब एकदम अपनी इस उत्प्रेक्षा को भूलकर कुछ नरमी से कहा कि चुनाव परिणाम ने अवाम के हितो को हमारी उज्वल से भी उज्वल आशाओ से अधिक सिद्ध किया है ।"

तो भी पार्टी के स्वयभू नेताओ के विचारो में काफी मतभेद पैदा होने लगे थे और टामस स्किडमोर के अत्यधिक उग्रतावाद के खिलाफ आम सदस्यो के विद्रोह से शीघ्र ही आन्तरिक फूट और ग्रुपीय झगड़े उत्पन्न हो गए । दिसम्बर १८२९ की एक सभा में एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया जिसमे श्रमिको ने साफ यह कहा कि "व्यक्तियो अथवा जनता में सम्पत्ति के अधिकार में उथल पुथल करने की उनकी कोई इच्छा या इरादा नही है ।" राबर्ट डेल ओवन ने जब स्किडमोर के परित्याजित नेतृत्व को अपने हाथ मे लेने की कोशिश की तो राज्य सरक्षकता के उसके कार्यक्रम के खिलाफ भी विरोध खड़ा हो गया । श्रमिक शिक्षा को अपने कार्यक्रम में सबसे ऊँचा स्थान देने को तो तैयार थे लेकिन उन्होने कहा कि "किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह पर वे नास्तिकता, कृषक-वाद या वर्गीय सिद्धान्तों को थोपने के प्रयत्न का समर्थन नहीं करेंगे ।" उन्होने कहा कि स्कूल-प्रणाली "एक ऐसी योजना पर आधारित होनी चाहिए कि प्यार करने वाले मा-बाप अपनी सन्तान के समाज का आनन्द ले सके ।"

इन आतरिक सघर्षों की जिन्हें कुछ हद तक मजदूरो का समर्थन चाहने वाले राजनीतिक नेताओ ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए उभारा था, परिणति मूल संगठन में एक त्रिमुखी फूट के रूप में हुई स्किडमोर और उसके कुछ अनुयायियो ने, जिन्हें वह अपने साथ रख सका, सीधे कृषि-श्रमिको का एक दल

बना लिया एक अन्य ग्रुप ने, जिसके हितों की जार्ज हेनरी एवन्स ने वर्किंगमेन्स ऐडवोकेट द्वारा वकालत की थी और जिसका ओवन पन्थी तथा फैनी राइट अब भी समर्थन करते थे मूल पार्टी को अक्षुण्ण रखने के लिए संघर्ष करते रहे। एक नए नेतृत्व में एक तीसरा ग्रुप एक अन्य मज़दूर अखबार 'इवनिंग जरनल' के सहयोग से बन गया और जिस होटल में इसकी बैठकें की जाती थी उसके नाम पर 'नार्थ अमेरिकन पार्टी' कहलाया।

पिछले दो ग्रुपो में खास तौर से कटुता और निरतर सघर्ष बना रहा। वे शीघ्र ही प्रतिद्वन्द्वी राजनीतिज्ञो का समर्थन करने लगे, मैदान में प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवार खड़े करने लगे, अपने-अपने अखबारों के पन्नों से एक-दूसरे पर शाब्दिक ईंट-पत्थर फेंकने लगे और एक दूसरे की सभाएं भंग करने लगे। मूल श्रमिक पार्टी ने जब यह देखा कि ओवन और फैनीराइट के क्रांतिकारी विचारों के कारण उस पर निरन्तर आक्षेप किए जा रहे है, तब उसने जोरो से उन आरोपो का प्रतिवाद किया। उसने कहा कि "नास्तिकता और कृषिवाद कोरे राजनीतिक काग भगोड़े है जैसे कि पहले १८०१ में डैमोक्रैटो को आतंकित करने के लिये खड़े किए गए थे।" नार्थ अमेरिकन पार्टी पर स्थानीय राजनीतिज्ञो के हाथ बिक जाने का आरोप लगाया गया और श्रमिकों से कहा गया कि वे "राजनीतिक पार्टियाँ बदलने वाले, चालबाज़ और पद के भूखो" से बचें। उनका कुछ प्रभाव पड़े इसके लिए एकता आवश्यक थी—इसलिए उनसे कहा गया कि युद्ध के अभिजात घोड़े को नीच गधे के साथ जुए में मत जोतो।"

न्यूयार्क में जहां अन्तर्दलीय प्रतिद्वन्द्विता जोरों पर थी, वहाँ अलबानी, ट्राय, स्केनेक्टडी, रोचेस्टर, सिराक्यूज़ तथा आबर्न जैसे शहरो में स्थानीय दल उठ खड़े हुए। श्रमिको का एक राज्य सम्मेलन बुलाने तथा गवर्नर व ले० गवर्नर पदों के लिए उम्मीदवार खड़े करने की योजना बनाई गई। इस सम्मेलन में अन्त में १३ काउण्टियो के ७८ प्रतिनिधि शामिल हुए लेकिन जब प्रतिद्वन्द्वी प्रतिनिधि मण्डलो ने सम्मेलन में भाग लिया तो न्यूयार्क शहर में फैली फूट बहुत खतरनाक साबित हुई। बागडोर पेशेवर राजनीतिज्ञों ने सम्हाल ली और वे मज़दूरों के वोट एक डैमोक्रैटिक उम्मीदवार के समर्थन में प्राप्त करने में कामयाब हुए। 'ऐडवोकेट' चिल्लाया: "मज़दूरों को धोखा

दिया गया है" और कहा कि उसके अनुयायी अपना निजी उम्मीदवार नामजद करेंगे।

इसके फलस्वरूप जो विभ्रम फैला उसमें १८३० में मजदूरो के तीन ग्रुपो ने शहर के चुनावो के लिए अपने अलग-अलग उम्मीदवार खडे किए और गवर्नर पद के लिए प्रतिद्वन्द्वी उमीदवार का समर्थन किया। एकता के विना श्रमिक पार्टी पेशेवर राजनीतिक प्रभावो और टमानी हाल फेशेवर राजनीतिको के प्रलोभनों का आसानी से शिकार बन गई और उसका मूल रूप नष्ट हो गया। डैमोक्रैट राज्य का और स्थानीय दोनो चुनाव जीत गये और न्यूयार्क में मजदूरो के बीच और कोई प्रभावशाली संगठन बनाने का काम ठप्प हो गया। 'वर्किंगमेन्स ऐडवोकेट' ने लिखा "कि अन्ततोगत्वा मजदूरो के लक्ष्यो की पूर्ति मे कोई और चीज इतनी प्रभावशाली रुकावट नही बन सकती जितना एक खास आदमी के चुनाव के तात्कालिक उद्देश्य के लिए अन्य पार्टी के साथ सहयोग।" लेकिन मजदूरो के वोट डैमोक्रैटिक पार्टी की तरफ जा चुके थे।

अगर न्यूयार्क के कारीगरो और मिस्त्रियो का स्वतत्र राजनीतिक सगठन बनाने की कोशिशों का अनुभव अल्पकालिक रहा तो अन्य मजदूरो की पार्टियों की गतिविधि के बारे में भी यही कहानी कही जा सकती है। अनेक बार, विशेषकर पेंसिलवेनिया और मैसाच्युसेट्स में वे कुछ अरसे के लिए अपने उम्मीदवारों के समर्थन मे मजदूरो के वोट प्राप्त कर सकी और स्थानीय राजनीति पर महत्वपूर्ण और कभी-कभी निर्णायक असर डाल सकी। किन्तु जैसा कि न्यूयार्क में हुआ, आन्तरिक सघर्ष और बाहरी दबाव से इनमें भी फूट पड़ गई और ये धीरे-धीरे छिन्न-भिन्न हो गई। स्वयंभू नेताओ ने सुधार के लिये अपने-अपने नुस्खो पर जोर दिया जो कि स्किडमोर, ऐवन्स, ओवन और फैनी राइट के कार्यक्रमों के समान ही प्रायः मजदूरो के वास्तविक हितो से मेल नही खाते थे। और जब सुधारक खदेड़ दिए गए तब राजनीतिज्ञों ने शीघ्र आकर बागडोर सम्हालने और मजदूरो के वोट बड़े दलों में से किसी एक के पक्ष में प्राप्त करने की कोशिश की।

मैसाच्युसेट्स में सन् १८३२ में किसानों, मिस्त्रियो और श्रमिको का न्यू

इंग्लैण्ड ऐसोसियेशन बनाकर श्रमिको का एक व्यापक राजनीतिक सगठन बनाने का प्रयत्न किया गया। इस ग्रुप ने स्थानीय चुनावो में जो सफलता प्राप्त की उस से प्रेरित होकर इसने गवर्नर पद के लिये अपना उम्मीदवार खड़ा किया लेकिन ऐसोसियेशन शीघ्र ही उस समय के एक बड़े राजनीतिक सघर्ष के दलदल मे फस गई जिसमें गवर्नर पद के लिए उसके अपने उम्मीदवार ने मजदूरो से डैमोक्रैटो का समर्थन करने के लिये कहा।

मज़दूरो की पार्टियों की अपनी ही बदौलत विफलताओ के बावजूद जिन सिद्धान्तो के लिए वे लड़े उनमे से बहुत-सो का व्यापक रूप से मान लिया जाना जैक्सनी लोकतन्त्र की ज्यादा बडी ताकतो के साथ उनके अन्तिम रूप से विलय की खास बात थी। जैसा कि हमने देखा, दोनों बडे दल मज़दूरो की नई राजनीतिक शक्ति से बहुत प्रभावित हुए। किन्तु ह्विगो की अपेक्षा डैमोक्रेट मजदूरो के उद्देश्यो का ज्यादा खुल्लमखुल्ला समर्थन करते थे। जब जैक्सन ने युनाइटेड स्टेट्स बैंक के खिलाफ अपना सघर्ष छेड़ा और अनेक मोर्चों पर एकाधिपत्य तथा विशेषाधिकार पर जोरदार प्रहार किये तब कारीगर, मिस्त्री और मज़दूर स्वभावत: उसके साथ हो गये। यद्यपि मज़दूरो ने समग्र दृष्टि से किसी एक दल को कभी वोट नही दिया तो भी सन् १८३२ में उन्होंने सामान्यत एकाधिपत्य के दुश्मन और अवाम के मित्र के रूप में जैक्सन का स्वागत किया।

टोरियों ने उन शब्दो मे अपनी चेतावनी दी जो बाद में एक सदी बाद एक अन्य ज़माने में, जब वर्ग सघर्ष ज्यादा तीव्र था, एक राष्ट्रपतीय चुनाव में दोहराये गए। एक फैक्ट्री मालिक ने अपने कर्मचारियो से कहा—"जैक्सन को चुनो और तुम्हारी सडको पर घास उगेगी, मिलो में उल्लू अपना घोसला बनाएगे और लोमड़िया सडको मे अपनी माद बनाएगी।" किन्तु फिर भी मजदूरो ने उसे जिताने मे मदद की। न्यूयार्क मे वे यह गीत गाते हुए वोट डालने गए :

मिस्त्रियो, गाडी वानो, मज़दूरो को
एक निकट सबन्ध बनाना चाहिए
और अमीर संभ्रान्त लोगो को इस

चुनाव मे अपनी ताकत दिखानी चाहिए।
याँकी डूडल, अभिमानी बैंक
मालिको को निकाल बाहर करो
सिर्फ हार्टफोर्ड फेड्स जैसे लोग
ही गरीबो और जैक्सन का विरोध करते है।

१८३० के दशक में राजनीतिक मोड और करवटे एक अलग चीज है किन्तु प्रगतिशील सिद्धान्तो का निरन्तर विकास और उन सुधारो की वास्तविक प्राप्ति जिन्हें मजदूर चाहते थे, बिल्कुल अलग चीज है। श्रमिक दलो के मूल उद्देश्यो का आम समर्थन जैसे-जैसे ज़ोर पकडता गया और समाज के उदार वर्गो ने सामान्यत उसका पक्षपोषण किया वैसे-वैसे उन मागो की पूर्ति मे जो पहले मजदूर-अखबारो की मोटी-मोटी सुर्खियो में रखी गई थी, निरन्तर प्रगति हुई।

पहली माँग शिक्षा मे सुधार की थी। श्रमिको के हर अखबार के सम्पादकीय स्तम्भ के शीर्ष पर जो माँग रखी गई और जिस पर न्यूयार्क के आन्दोलन में भी बहुत बल दिया गया था वह थी—"समान सार्वभौम शिक्षा" जिन बच्चो के माँ-बाप निजी सस्थाओ का खर्चा बर्दाश्त नही कर सकते थे उनकी आवश्यकताओ पर अब तक बहुत अस्पष्ट ध्यान दिया जा रहा था। टैक्स से चलाए जाने वाले स्कूलो मे न्यू इग्लैण्ड शेष देश से आगे था किन्तु न्यूयार्क, न्यूजर्सी, पेसिलवेनिया और डेलावेयर जैसे घनी आबादी वाले और समृद्ध राज्यो में भी (पश्चिम में नए राज्यो तथा दक्षिण के पिछडे हुए राज्यो के बारे मे तो कहा ही क्या जाए) श्रमिको व अन्य गरीब परिवारो के बच्चो के लिए सिर्फ खैराती स्कूल की व्यवस्था थी, जो अपर्याप्त, अकुशल और सामाजिक दृष्टि से व्यक्ति को गिराने वाली थी। १८२६ में पब्लिक स्कूल सोसाइटी ने एक रिपोर्ट में बताया कि न्यूयार्क मे ५ से १५ वर्ष के बीच की आयु के ऐसे २४००० बच्चे है जो स्कूल बिल्कुल गए ही नहीं और करीब इतने ही बच्चे खैराती तथा निजी स्कूलो मे पढते है। कुछ वर्ष बाद पेसिलवेनिया में एक विस्तृत रिपोर्ट में बताया गया कि राज्य के ४ लाख बच्चों मे से २॥ लाख बच्चे स्कूल नही जाते। समस्त देश मे १० लाख से अधिक बच्चे स्कूल नहीं

जा रहे थे और इसी अनुपात में पूर्ण निरक्षरता भी व्याप्त थी।

जैसा कि इन आँकडो से पता चलता है, शिक्षा के लिए अवसरों की कमी और पब्लिक स्कूलो के साथ, क्योंकि वे खैराती स्कूल थे, जुडी हीनता दोनों पर श्रमिक क्रुद्ध थे। राबर्ट डेल ओवन तथा फ्रासिस राइट के सब सिद्धान्तो को अपनाये बिना ही वे सब उससे इस बात में सहमत थे कि मुफ्त, लोकतत्रीय शिक्षा पर बल दिया जाए जो अमीर और गरीब सब के बच्चो को पूर्ण समानता के आधार पर उपलब्ध हो। श्रमिको ने अपनी इस माग का आधार स्वाधीनता की घोषणा मे निहित समान अधिकारों की विचारधारा को बनाया और इस युक्ति से उसकी पुख्ता किलेबन्दी की कि सब बच्चो को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए कि वे समझदारी के साथ वोट दे सकें। शिक्षा में अमरीकियो की इस पीढ़ी से ज्यादा विश्वास कभी भी किसी जनसमूह का नहीं रहा जो शिक्षा को 'मानव जाति को दिया गया महत्तम वरदान" समझते थे। अपने बच्चों के लिए शिक्षा के अधिकार की माँग करने मे मज़दूर इससे ज्यादा दृढ़-

न२५ नही हो सकते थे।

फिलाडेल्फिया मे श्रमिको के ग्रुप की एक खास रिपोर्ट में कहा गया है: "इसलिये समितियो को लगा कि वास्तविक बुद्धिमत्ता के व्यापक प्रसार के बिना स्वीधीनता नही रह सकती; एक गणराज्य के सदस्यो को मानव और नागरिक के नाते अपने समान अधिकारो और कर्त्तव्यो के स्वरूप के बारे में एक-सी शिक्षा मिलनी चाहिए..." इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि केवल पब्लिक स्कूलों की एक प्रभावशाली प्रणाली ही बच्चो को अल्पायु में समाज के घातक प्रभावो के प्रलोभनो से बचा सकती है और 'इस प्रकार सुधार-गृहो के लिए काफी 'मसाला' प्रदान कर सकती है या असहिष्णुता का शिकार बन सकती है जो "निजी शान्ति और सार्वजनिक गुण" को नष्ट कर डालता है। लेकिन शिक्षा के महत्व पर जोर प्राय यही कह कर दिया गया। यह उस लोकतन्त्रीय सरकार का, जिसका अमरीका एक नमूना है, आधार ही है। १८२९ में न्यूयार्क की पुनर्गठित श्रमिक पार्टी ने उस शिक्षा-प्रणाली की माँग रखी" जो गरीब और अमीर और विधवा के बच्चो तथा यतीम बच्चों को एक ही छत के नीचे एकत्र कर दे और जहाँ भेद का आधार वंश या कुल नही, अपितु अधिक मेहनत, गुण और सफलताएँ हो।"

इस विषय मे राय अलग-अलग थी कि शिक्षा किस प्रकार की दी जानी चाहिए। लेकिन अधिकाश मामलो में व्यावहारिक प्रशिक्षण और कला-विषयो दोनो के महत्व पर बल दिया गया। फिलाडेल्फिया के श्रमिको की एक और रिपोर्ट मे अनुरोध किया गया कि सार्वजनिक संस्थाएँ "ऐसे स्थानो पर होनी चाहिएँ, जिनमे स्वास्थ्य अच्छा रहे, यन्त्र-विद्या, कला-विषयो अथवा कृषि का अच्छा अभ्यास हो और साथ ही प्राकृतिक विज्ञानो और अन्य उपयोगी साहित्य का ज्ञान कराया जाए।"

इस शिक्षा-आन्दोलन को मजदूरो के अलावा अन्य वर्गो का भी सहयोग प्राप्त था। बहुत-से सुधारको ने यह काम अपने हाथ में लिया और उस पर उत्तरोत्तर ज्यादा ध्यान दिया गया। साथ ही टोरियो ने इसका चिरकाल तक विरोध किया जो यह समझते थे कि पढाई का लाभ कुछ ही लोगो तक सीमित रहना चाहिए और गरीबो की शिक्षा के लिए अमीरो पर टैक्स लगाना सर्वथा अनुपयुक्त है। 'नेशनल गजट' ने कहा: "अगर व्यापार, कारखाने चलाने है और मजदूरो से ठीक तरह काम लेना है तो सार्वभौम समान शिक्षा तब तक असम्भव है जब तक शिक्षा का स्तर बहुत गिराया न जाए और उसका दायरा तग न किया जाये।"

तो भी समान, लोकतन्त्रीय, वैज्ञानिक व्यावहारिक शिक्षा के लिए ज़ोरो से चलाया गया यह आन्दोलन फलीभूत होने लगा। राज्यो के विधानमंडल इस विषय पर पहले किसी भी समय की अपेक्षा ज्यादा गम्भीरता से ध्यान देने लगे और शनैः-शनैः नए कानून बनाए गए, जिनमें पहले स्थानीय नगरपालिकाओ को सार्वजनिक शिक्षा के लिए टैक्स लगाने का अधिकार दिया गया और बाद में उन्हें यह टैक्स लगाने की हिदायत की गई। घटनाचक्र में यह मोड शायद तब आया जब पेंसिलवेनिया ने, जहाँ मजदूर इतने सक्रिय थे, अन्त में १८३४ में एक मुफ्त और टैक्स समर्थित प्रणाली अपनाई। इस कार्य-क्रम वाला बिल हारते-हारते बचा। एक विरोध-याचिका पर कार्रवाई करते हुए जिस पर ३२००० हस्ताक्षर थे, सीनेट ने "गरीबो की शिक्षा के लिए व्यवस्था करने वाली" एक धारा को बदलने की कोशिश की। किन्तु समानता के आधार पर सब के लिये मुफ्त पब्लिक स्कूल प्रणाली का सिद्धान्त आखिर विजयी हुआ। अन्य राज्यो ने भी इस का अनुकरण किया और अन्त में वह

विजय प्राप्त हुई जिसके लिए मज़दूरो ने इतने लम्बे अरसे तक संघर्ष किया था।

एक और मामला जिसके लिये मज़दूरो ने इस काल में बहादुरी और सफलता के साथ संघर्ष किया, कर्ज़दारी के लिए कैद की व्यवस्था की समाप्ति थी। कोई आदमी जब अपने आर्थिक दायित्वो को पूरा न कर सके तब उसे जेल के सीकचो मे बन्द कर देने की पुरानी परिपाटी १८२० के दशक मे भी लगभग सभी जगह चल रही थी। दशक के अन्त में बोस्टन जेल अनुशासन सोसइटी ने अनुमान लगाया कि प्रतिवर्ष कर्जदारी के लिए कोई ७५००० आदमी जेलो मे बन्द किए जा रहे है और कम-से-कम इनमे से आधे मामले २५ डालर से कम कर्ज़ के थे। एक मामले में तो एक महिला को ३'६० डालर कर्ज के लिये अपने घर तथा अपने दो बच्चो की देख-भाल से अलग घसीट कर जेल मे डाल दिया गया। एक दूसरे मामले मे एक व्यक्ति को पंसारी का ५ डालर बकाया होने पर जेल भेज दिया गया यद्यपि यह कर्ज चढा था जब वह व्यक्ति बीमार था। एक जेल मे ३२ व्यक्ति ऐसे पाये गए जिन्हे १ डालर से भी कम कर्ज़ के अभियोग में कैद किया गया था।

स्पष्ट ही इस प्रणाली का गरीबो पर बहुत बुरा असर पड़ा और इसके अन्याय ने गहरा घाव किया। मजदूरो के एक राजनीतिक उम्मीदवार ने कहा कि "जो कानून गरीबी को अपराध मानता है, जबकि इन्ही कानूनो ने गरीबी को अनिवार्य बना दिया है और गरीब को शैतान, वह न केवल क्रूर और आततायी है, बल्कि बेहूदा और विद्रोहजनक है।" परिस्थितियो की इन तकलीफो के साथ-साथ कर्जदारो की जेलो में अत्यन्त भीड रहती थी और वह अस्वास्थ्यकर थी। उनमे कैदियो को भोजन देने की भी कोई व्यवस्था नही थी और वे सब-के-सब प्रायः खैरात पर जिन्दा रहते थे। एक रिपोर्ट के अनुसार न्यूजर्सी में अपराधियो के लिए तो "खाना, बिस्तर और ईंधन था।" किन्तु कर्जदारो के लिये सिर्फ "दीवारें, सीकचे और कुण्डे" ही थे।

यह सुधार बहुत पहले हो जाना चाहिये था किन्तु फिर भी व्यापारी-वर्ग ने इसका विरोध किया। जोन क्विन्सी ऐडम्स भी यह कहने के लिए मजबूर हुआ कि कर्ज़दारी के लिये कैद की व्यवस्था के खात्मे से सम्पत्ति की सुरक्षा

श्रौर करार की पवित्रता पर खतरनाक असर पडेगा। व्यापारी श्रौर वकील इस प्रकार की धारणाश्रो को ज्यादा महत्व देते थे बजाय इस चीज के जिसे राष्ट्रपति जैक्सन ने "दुर्भाग्य श्रौर गरीबी पर पीस देने वाली ताकत श्राजमाने" का अन्याय कहा था।

मजदूरों के श्रान्दोलन की बदौलत पहले ऐसे कानून पास हुए जिनसे गरीब कर्जदार दिवालिया होने की कसम खाकर छुटकारा पा सकता था श्रौर बाद में उस रकम की मात्रा निश्चित कर दी गई जिसे न चुकाने पर उसे जेल में डाला जा सकता था। लेकिन शीघ्र ही एक के बाद एक सभी राज्यो को इस प्रणाली को बिल्कुल खत्म कर देने का अपरिहार्य तर्क स्वीकार करना पड़ा। श्रोहायो ने यह कदम सन् १८२८ मे उठाया श्रौर उसके बाद एक दशक में ही न्यूयार्क, न्यूजर्सी, कनेक्टिकट वर्जीनिया, तथा अन्य राज्यो ने उसका अनुकरण किया। यह परिपाटी देश के कुछ हिस्सों में बनी रही लेकिन १८३० के दशक की समाप्ति तक इसका बिल्कुल खात्मा दिखाई देने लगा था।

मिलीशिया प्रणाली पर प्रहार भी, जो ज्यादातर श्रमिको की पार्टियाँ किया करती थीं, सफल रहा। अधिकांश राज्यो में तीन दिन की वार्षिक कवायद श्रौर परेड मे हर नागरिक का भाग लेना लाजिमी था। उनको इसका सारा खर्चा खुद करना होता था श्रौर साज-सामान भी स्वयं ही जुटाना पड़ता था। तिस पर भी अगर कोई इस परेड में शामिल नही होता था तो उस पर जुर्माना किया जाता या उसे जेल की हवा खानी पड़ती थी। श्रमिको के लिए इस नियम का परिपालन न केवल मजदूरी का नुकसान करना था, बल्कि उनका बहुत खर्चा भी होता था। दूसरी श्रोर अमीर लोग बिना किसी कठिनाई के उतना ही जुर्माना देकर श्रासानी से अपने इस उत्तरदायित्व से बच जाते थे। १८३० के बाद इस अनिवार्य सेवा मे या तो सुधार कर दिया गया या वह बिल्कुल ही समाप्त कर दी गई। राष्ट्रपति जैक्सन ने १८३२ में अपने वार्षिक सन्देश में इस प्रश्न की श्रोर ध्यान खीचा श्रौर यह अनुरोध किया कि यह प्रणाली जहा कही भी प्रचलित है, जैसे कि न्यूयार्क मे वहां इसकी असमानताश्रो की सावधानी से जाच की जानी चाहिए।

श्रमिको की पार्टियो का उद्भव किसी वर्ग-श्रान्दोलन का प्रतीक बिल्कुल नही था श्रौर यह पूर्ण रूप से एक मजदूर श्रान्दोलन भी नही था। मजदूरो की

होते हुए पूंजीवाद को नष्ट करने के बजाय उसके लाभो मे वे हिस्सा बटाना चाहते थे। फैनी राइट वर्ग सघर्ष पर धुआँधार भाषण दे सकती थी लेकिन इस प्रकार की भावनाएं स्वयं मजदूरो के विचारो का प्रतिनिधित्व नही करती थी।

मजदूरो को एकजूट रखने के लिए कोई एक सिद्धान्त उपलब्ध नही था। यूरोप में अपने समकालीन मज़दूरों की तरह मताधिकार प्राप्त करने के लिए मिल-जुल कर राजनीतिक कार्रवाई करने के लिए उन्हें प्रेरित नही किया जा सकता था, क्योकि १८२० के दशक में लोकतत्री सिद्धान्तो की राष्ट्र-व्यापी जीत के एक अंग के रूप में वे मताधिकार पहले ही प्राप्त कर चुके थे। न ही वे इंग्लैण्ड और यूरोप के मज़दूरो की तरह समाजवाद के झण्डे तले एकत्र हो सकते थे। अमरीकी मज़दूरो के हित सामान्य लोगो के हित के साथ इतने अधिक जुड़े हुए थे कि उन्हे अलग से अपना तीसरा राजनीतिक दल बनाने के लिए कोई आधार नही मिल सकता था। विकसित होते हुए अर्थतत्र ने, भिन्न-भिन्न वर्गो के निरन्तर मेल-जोल ने और सीमान्त के व्यक्तिवाद ने उन रास्तो का निर्माण किया जिनके साथ-साथ यूरोप की स्थिति से बिल्कुल विपरीत अमरीका के मज़दूर आन्दोलन का विकास होना था।

१८३० के दशक की मज़दूर पार्टियो से अगर कुछ समय के लिए एक मज़दूर दल बनता दिखाई भी दिया तो भी जैक्सनी लोकतंत्र की आम प्रगति में उनके सन्निवेश से इस प्रकार का रुझान बिल्कुल उलट गया।

—.०.—

४ : १८३० के दशक में मज़दूरों की ताकत

मज़दूरो की शुरू-शुरू की पार्टिया अल्पकाल में ही वनी और खत्म हो गई। उनके राजनीतिक प्रभाव के वारे में कुछ भी दावा किया जाए, अलग राजनीतिक सगठनो के रूप में उनका अस्तित्व इतना क्षण-स्थायी था कि श्रमिक आन्दोलन के इतिहास में उन्हें कोई वडा स्थान नही मिल सकता। मज़दूर सोसाइटियो का फिर से आर्थिक कार्रवाइया करने लगना कई प्रकार से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण घटना थी। इन वर्षो मे, विशेषकर १८३३ से लेकर १८३७ तक जैक्सन के दूसरे शासन काल मे जब समस्त देश में सामाजिक सुधारो के क्षेत्र मे काफी प्रगति की जा रही थी तब यूनियन सम्बन्धी गतिविधिया इतनी व्यापक तथा उग्र थी कि उतनी आगे कई दशाब्दियो तक हुई।

जैसा कि राजनीति मे मजदूरो के प्रवेश ने जाहिर कर दिया था, वदलती हुई सामाजिक परिस्थिति मे वे अपनी अवमानना की भावना अनुभव करते रहे। पुनरुज्जीवित ट्रेड यूनियनो का मुख्य कार्य वेतन और काम के घण्टे ही रह गया लेकिन उनमें समाज में अपनी हैसियत फिर से पाने की सदस्यो की लालसा भी प्रतिक्षिप्त होती थी। जिस समाज को वे जानते थे, वह चूकि भग होता दिखाई दे रहा था और जो कारीगर कभी स्वतंत्र थे वे सिर्फ मज़दूरी कमाने वाले वनते जा रहे थे इसलिए कारीगरो और मिस्त्रियो ने पहले से भी ज्यादा इस वात की आशा रखी कि यूनियनो के सदस्य बन कर वे श्रम की प्रतिष्ठा को फिर से कायम कर सकेंगे और अपने सामाजिक तथा आर्थिक महत्व के प्रति समाज को अधिक सजग कर सकेंगे।

१८३४ में एक मजदूर नेता ने लिखा कि "मालिक और कर्मचारी के बीच भेदभाव की रेखा जैसे-जैसे चौड़ी होती गई वैसे-वैसे कर्मचारी की हालत अनिवार्य रूप से एक गुलाम की सी होती चली गई जो समाज के सर्वोत्तम हितो और हमारी सरकार की प्रकृति के खिलाफ थी।" मज़दूर सोसाइटियो ने मज़दूरो में एकता पैदा करके, जो उनकी मालिको की पूर्ण और नि.सहाय

गुलामी से रक्षा करती, इस रुख का मुकाबला करने की कोशिश की।

१८३० के दशक के प्रारम्भ की अवस्था यूनियनो के विकास के लिए आशाजनक थी। एक तरफ तो बढ़ती हुई समृद्धि ने मजदूरो की सौदेबाजी की ताकत को मजबूत किया और दूसरी ओर बढती हुई कीमतो में मालिको द्वारा वेतन कम रखने की कोशिश किए जाने से वे आत्मरक्षा के लिए संगठित होने को मजबूर हो गए। न केवल सभी वर्गों के श्रमिको मे मज़दूर सोसाइटियो की सख्या तेजी से बढी बल्कि इन स्थानीय यूनियनो का नगर-व्यापी सघ बनाने की और कोशिशे की गई जिससे मजदूरो की एकता और ज्यादा मजबूत हो। इतना ही नही इससे भी ज्यादा व्यापक एक संगठन बनाने का यत्न किया गया जो एक सच्चे राष्ट्रीय-मजदूर आन्दोलन की स्थापना की पूर्व-छाया था। इसके अलावा इन यूनियनो के सदस्यो के उग्र रवैये के कारण हड़तालें हुई जिन्हें अपने अधिकारो की प्राप्ति के लिए मजदूरो के लम्बे सघर्ष का नाटकीय अध्याय कहा जाता है।

यह गतिविधि इतनी सामान्य हो गई कि कोई भी कारोबार इसकी व्यापक रूप से फैलने वाली उग्रता से बच नही सका। अप्रैल १८३६ में न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा : "नाइयो ने हड़ताल कर दी है। अब सिर्फ सम्पादकों को हड़ताल करना बाकी रह गया है।"

शातिकाल में रहन-सहन का खर्चा पहले कभी इतनी तेजी से नही बढ़ा था, जितनी तेज़ी से १८३० के दशक के प्रारम्भिक काल में जबकि सट्टेबाजी और मुद्राप्रसार का ज़ोर था। बैंको से ऋण आसान शर्तों पर मिल जाने और नोटो के फैलाव से, जो युनाइटेड स्टेट्स बैंक पर राष्ट्रपति जैक्सन के सफल प्रहारो का तात्कालिक परिणाम था, सब तरफ कीमते चढ गई। न्यूयार्क में आटे का मूल्य १८३४ में ५ डालर का एक पीपे के बजाय अप्रैल १८३५ में ८ डालर का एक पीपा और एक वर्ष बाद १२ डालर का एक पीपा हो गया। अन्य खाद्य पदार्थों की कीमतें भी इसी प्रकार चढी। कपडो और घर के सामान की कीमतो में असाधारण वृद्धि हुई और किराये २५ से ४० प्रतिशत तक बढ गए। यह आम अनुमान था कि १८३४ और १८३६ के बीच रहन-सहन का खर्चा कोई ६६ प्रतिशत बढ़ गया।

ऊँचाई की ओर कीमतो के इस अभियान में वेतन निश्चित रूप से पीछे रह गए और मालिको ने अपने माल की लागत कम रखने के लिये जो और कदम उठाए उनसे मजदूरो के जीवन स्तर पर और ज्यादा बड़ा खतरा उत्पन्न हुआ। अनेक धन्धो मे अप्रैण्टिसशिप प्रणाली का वस्तुतः खात्मा हो जाने से युवा अर्ध-प्रशिक्षित लडके प्रशिक्षित दिहाडियो को दिए जाने वाले वेतन दर से आधी दर पर रख लिए गए। पुरुपो की जगह स्त्रिया कम वेतन पर रखी गई। ये ज्यादातर दर्जीगीरी, सिलाई, और जूते गाठनेके काम पर लगाई गई (उस वक्त के अनुमान के अनुसार इन कामो मे लगे २० हजार मजदूरो मे से १२००० को सप्ताह मे १ २५ डालर से ज्यादा नही मिलता था)। किन्तु उनसे मुद्रका, सिगार बनाने वालो और अन्य कर्मचारियो के लिए भी नई प्रतियोगिता खडी हो गई। १८३६ मे फिलाडेल्फिया कमेटी की रिपोर्ट में कहा गया कि "५८ सोसाइटियों मे से २४ पर स्त्री-मजदूरो का गम्भीर प्रभाव पडा है जिससे पूरे के पूरे परिवार गरीब हो गए है और जिससे मलिको के सिवा किसा को लाभ नही हुआ।" अन्त मे जेल में बन्द मजदूरो का व्यापक रूप से आश्रय लिया गया। मिस्त्रियो और कारीगरो ने कटुता मे शिकायत की कि ठेके जेलो को देने की इस बढती हुई प्रवृति से सजायाफ्ताओ को कुछ भी लाभ हुआ हो, "चीजे उस दाम से, जिस पर कोई ईमानदार मिस्त्री अपना और अपने परिवारा का गुजारा कर सकता है, ४० से ६० प्रतिशत तक नीचे चली गई है।"

इन परिस्थितियों मे शायद ही कोई ऐसा शहर रहा हो जिसमे मजदूरो ने अपने हितो की रक्षा के लिए संगठित रूप से कार्रवाई न की हो। फिलाडेल्फिया मे जूता बनाने वालो ने अपना फिर से सगठन किया, जुलाहो ने एक नई सोसाइटी बनाई और ईटे चिनने वालो, नल का काम करने वालो लुहारो, सिगार-निर्माताओ, कघे बनाने वालो, जीन साजो तथा अन्य धन्धे करने वालो ने अपनी यूनियनें बनाई। न्यूयार्क की पुरानी सोसाइटियों मे फिर से जीवन स्पन्दित हो उठा। छापेखाने के मजदूरो, जूता बनाने वालो, और दर्जियो ने एक बार फिर नेतृत्व सम्हाला और फर्निचर, हैट तथा टोकरिया बनाने वाले, ताला बनाने वाले, पिआनो बनाने वाले और रेशमी टोप बनाने वाले यूनियनो मे शामिल हुए। बाल्टीमोर के संगठनो मे जूता बानाने वाले,

पत्थर तराशने वाले, टीन के डिब्बे बनाने वाले, गलीचे बनाने वाले और गाडियां बनाने वाले शामिल हुए। अटलाण्टिक तट के किसी भी शहर के बारे में उत्तर के न्यूयार्क, वाशिगटन, पिट्सबर्ग और लुइसविल राज्यो के बारे में तथा पश्चिम के अन्य निर्माण केन्द्रो के बारे में भी यही कहानी कही जा सकती है।

परम्परागत मिस्त्रियो तथा कारीगरो के अतिरिक्त और श्रमिको में सगठन कम से कम कुछ प्रगति कर रहा था। अब तक मैसाच्युसेट्स और रहोड आइलैण्ड में तेजी से विकसित होते हुए कपडा उद्योग स्थापित हो चुके थे, कनेक्टिकट के कारखाने हाथ की और दीवार की घड़िया बना रहे थे और पेंसिलवेनिया में लोहे की फाउण्ड्रिया बडे पैमाने के उद्योगो के विकास की पूर्व-भूमिका थी। इन सस्थानो में सामान्य कर्मचारियो के अलावा मशीन-चालक, इजन चालक, माल ढोने वाले, नावो पर काम करने वाले फायरमैन, स्टेज ड्राइवर, सडको पर और नहरो के पुलो पर गेटकीपरो का काम करने वाले मज़दूरो के नए वर्ग बन गए थे। ये मज़दूर जहा अब भी ज्यादातर असगठित थे, वहा सूती कपडो के कारखानो के, टिनप्लेट तथा लोहे की चद्दरें बनाने वाले कारखानो के कर्मचारियो तथा अन्य समूहो के कर्मचारियो की अग्रगामी यूनियनो को अधिकाधिक सहयोग मिल रहा था।

स्त्रियो को भी, उनकी अपनी मज़दूर सोसाइटिया बनाकर मज़दूर आन्दोलन मे लाया गया। बाल्टीमोर मे एक युनाइटेड सीमस्ट्रेस सोसाइटी, न्यूयार्क में लेडीज शू-बाइण्डर्स ऐण्ड फिमेल बुकबाइण्डर्स सोसाइटी तथा फिमेल यूनियन ऐसोसियेशन और फिलाडेल्फिया में फिमेल इम्प्रूवमेण्ट सोसाइटी बनी। न्यू इग्लैण्ड की कपड़ा मिलो मे महिला कर्मचारियो मे सगठित गतिविधि के एक प्रारम्भिक चिन्ह् के रूप मे १८३८ मे स्त्री-उद्योगो की रक्षा और विकास के लिए लिन और विसिनिटी की फिमेल सोसाइटी और एक वर्ष बाद फैक्ट्री गर्ल्स ऐसोसियेशन बना।

इस काल में न्यूयार्क मे मजदूर सोसाइटियो का क्या रूप था, इसकी एक चित्रमय झाँकी उस शहर मे हुए एक प्रदर्शन के विवरण मे मिलती है, जो प्रदर्शन १८३० में फ्रॉसीसी राज्यक्रॉति की सफलता के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। यद्यपि प्रदर्शन का नियन्त्रण पेशेवर राजनीतिज्ञो ने अपने

हाथ में ले लिया था तो भी मजदूर इस पर हावी थे। एक परेड मे, जिसकी लम्बाई करीब तीन मील थी, और जिसे लगभग ३० हज़ार आदमियो की भीड ने आनन्दमग्न होकर देखा, मजदूरो के प्रतिनिधि मण्डलो की उपस्थिति सबसे प्रमुख थी।

खूब मेहनत से बनाई गई झाँकियाँ, जैसा कि 'वर्किंगमेस एडवोकेट' ने लिखा, उस दिन का विशेष आकर्षण थी। मुद्रको के दो प्रेस थे, जो उन्होने मैसर्स रस्ट ऐण्ड हो से उधार लिए थे। इनको उन्होने खूब सजाया और चमकाया था और चार घोड़ो वाली दो अलग-अलग बग्घियो पर उन्हे रखा था। चुस्त, उछलते-कूदते घोड़ो पर चढे हुए कसाई भी अपने व्यवसाय के लायक खास पोशाको में प्रदर्शन मे उपस्थित थे। उनकी एक गाडी पर एक बैल की खाल में भुस इस चतुराई से भरा गया था कि वह बिल्कुल जीवित प्रतीत होता था और उसे फीतो और फूलो से खूब अच्छे ढग से सजाया गया था। एक अन्य गाडी पर कसाई की दुकान बनाइ गई थी जिसमे "कीमा तैयार किया जा रहा था और उससे दर्शको का बडा मनोरंजन हो रहा था।"

जूता बनाने वालो ने प्रदर्शन के लिए व्यापक पैमाने पर और शानदार ढग से तैयारी की थी। उनकी एक गाडी पर दो नवयुवतियाँ जूते गाँठ रही थी। भाप के इंजन बनाने वालो ने एक पूरे आकार के इजन का प्रदर्शन किया ("पाइपो से आनेवाला धुआ ऊपर उठ रहा था, पानी के पहिये घूम रहे थे") और फर्निचर बनाने वालो ने इतना बढ़िया फर्निचर दिखाया था कि एडवोकेट के रिपोर्टर ने उसकी खूबियो का वर्णन करने मे स्वयं को असमर्थ पाया। सगतराश और मुलमची (मुलम्मा चढाने वाले) जैफर्सन और लफायेट के सुन्दर सुनहरे फ्रेमो वाले चित्र लिए जलूस मे चल रहे थे। तम्वाकू वाले बीडी-सिगरेट बाट रहे थे और भीड से वाह-वाह लूट रहे थे। जीन, साज और कवच बनाने वालो ने भी अपनी गाडियो पर अपनी बनाई हुई चीजें खूब सजा रखी थी। जिल्दसाजो ने एक विशाल पुस्तक की झाँकी बनाई जिसे चार मजबूत घोडे खीच रहे थे और कुर्सी बनाने वालो ने बडे शानदार ढंग से रास्ते मे एक "ग्रीशियन पोस्ट मेपल चेयर" बना रखी थी।

हंसी-खुशी के नारो, दोलायमान झण्डो, तिरगे फीतो और सितारो से सजे झण्डो की वजह से यह जलूस बडा भव्य बन गया था। सलामी मच के आस-

पास विशाल भीड़ में से कुछ को ही जगह दी जा सकी थी। आदरणीय भूतपूर्व राष्ट्रपति मोनरो इस स्थान पर तब तक सम्मानित अथिति के रूप में रहे जब तक "वायुमण्डल की शीतलता" ने उन्हे वहाँ से हटने के लिए मजबूर नही कर दिया। इस अवसर पर जोशीले भाषण हुए और मुद्रक सेम्युअल वुडवर्थ द्वारा लिखा गया एक गीत मार्सलेज की धुन में पार्क थियेटर के आर्केस्टा के साथ इस प्रकार गाया गया

पवित्र आदेश का स्वागत करने के लिये
सामूहिक गीत ज़ोर से गाओ।
मुदित हो, मुदित हो, प्रेस का प्रभुत्व होगा
और सारा संसार आज़ाद होगा।

उस रात विभिन्न सोसाइटियो ने स्मृति-भोज दिए (नवे वार्ड के रहमदिल तिनिधियो ने कर्जदारो की जेल में बन्द कैदियो को भोजन भेजा गया) और मिको का विशाल समुदाय मेसोनिक हाल में एकत्र हुआ। "मानसिक भोजन के आस्वादन" की पूर्व भूमिका के रूप मे बढिया भोज हो चुकने के बाद फ्राँसीसी क्राँतिकारी आन्दोलन और उसमे मजदूरो के योग पर एक जोशीला व प्रशंसात्मक भाषण दिया गया।

उस शाम के वक्ता ने अपने व्याख्यान को समाप्त करते हुए आह्वान किया : "मिस्त्रियो और मज़दूरो, मानसिक स्वाधीनता के अपने गौरवमय अध्यवसाय में आगे बढो; समान शिक्षा तुम्हारा ध्रुवतारा हो और यूनियन और दृढता तुम्हारा आधार स्तम्भ, वह दिन दूर नही है जब तुम्हारे इन सत्प्रयत्नो को विजयश्री प्राप्त होगी और तुम्हारा देश फैशन के कीडे और पार्टी के घृणित कीडे से मुक्त होगा और उसके स्थान पर विशुद्ध समानतावाद का वृक्ष उगेगा और वह अधिकारो की वास्तविक समानता के बढिया फल प्रदान करेगा। तब आदमी की परख उसके वचन से नही काम से होगी, एक मेहनती नागरिक के रूप में समाज के लिए उसकी उपयोगिता से होगी; इस बात से नही कि वह कितना बढिया कपडा पहनता है।"

भाषण के बाद जामो का सिलसिला चला। बीच-बीच में उपयुक्त गीतो

और कथाओ के साथ-साथ १४ औपचारिक और ३१ ऐच्छिक जाम पिए गए। भोज में शामिल होने वाले उत्साही लोगो ने पेरिस के श्रमिको और न्यूयार्क के श्रमिको के कल्याण के लिए जाम पीए। जैफर्सन और लफायेट, बोलीवर, सच्चे डैमोक्रैटो, सार्वभौम शिक्षा और मुक्त जाच के लिए जाम पीए गए।" मूल श्रमिको के लिए इस कामना के साथ जाम पीए गए, कि वे दाए या बाएं न झुक जाए" साइमन प्योर्स के लिए भी इस कामना के साथ जाम पिए गए कि फैनी राइटवाद, कृषकवाद या अन्य किसी वाद के नारो से वे भयभीत न हो, बल्कि सच्चे समानतावाद पर दृढ रहें।"

कुल ४५ बार जाम पीए गए और श्रमिक हर्षित होते रहे। 'वर्किंगमेंस ऐडवोकेट' अन्त मे लिखता है कि अत्यधिक प्रसन्नता और एकता शाम के आयोजनो की विशेषता थी और यह मजमा भोर तक चला और जिस प्रकार उसका मनोरंजन किया गया, उससे वह सन्तुष्ट था।

मज़दूर सोसाइटियों का तेजी से विकास होने से अपने 'समान उद्देश्यो की पूर्ति के लिए उनमें स्वभावत. निकट सम्बन्ध स्थापित करने का आन्दोलन शुरू हो गया। इस सहयोग का उदाहरण फिलाडेल्फिया में मैकेनिक्स यूनियन आव ट्रेड ऐसोसियेशन ने प्रस्तुत किया, लेकिन जैसा कि हमने देखा, यह ग्रुप तुरन्त ही राजनीति के अखाडे मे आ उतरा। ट्रेड यूनियन बनाने मे अब मज़दूरो का उद्देश्य स्थानीय मज़दूर सोसाइटियो की यूनियनें बनाने का था जिन्हे आज की शब्दावली मे केन्द्रीय मज़दूर परिषदें कहा जा सकता है। यह उनकी सयुक्त गतिविधि का आधार था। इन नए सगठनो में से एक के संविधान मे "मिस्त्रियो और श्रमिको की सोसाइटियो तथा ऐसोसियेशनो के, जो यह देख लेने के बाद कि वे अपने खिलाफ तैनात अनेक ताकतो का मुकाबला करने में असमर्थ है, आपसी सुरक्षा के लिए मिलकर एक हो गई है, समूह को ही मज़दूर यूनियन कहा गया है।"

इन नई केन्द्रीय मदूजर परिषदो मे न्यूयार्क की जनरल ट्रेड्स यूनियन सबसे महत्वपूर्ण थी और फिलाडेल्फिया, बोस्टन, बाल्टीमोर, वाशिंगटन, सिनसिनाटी, पिट्सबर्ग, लुईसविल तथा अन्य निर्माता शहरो में भी इसी प्रकार के सगठन स्थापित हुए। १८३६ में इनकी संख्या १३ हो गई थी, जिनके साथ

न्यूयार्क में ५२, फिलाडेल्फिया में ५३, बाल्टीमोर में २३ और बोस्टन मे १६ सोसाइटियाँ इनसे सम्बद्ध थी।

इस गतिविधि मे अन्तिम समन्वयकारा कदम १८३४ में उठाया गया जबकि सब व्यवसायो का एक राष्ट्रीय सगठन बनाने का आह्वान किया गया। न्यूयार्क, ब्रुकलिन, बोस्टन, फिलाडेल्फिया, पोकीपसी और न्यूयार्क की स्थानीय सोसाइटियो के प्रतिनिधियो की न्यूयार्क में बैठक हुई और उन्होने राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन बनाई। इसका उद्देश्य मजदूर वर्ग के कल्याणकार्यो को प्रोत्साहन देना, देश के हर हिस्से में मजदूर यूनियनो की स्थापना के कार्य को आगे बढाना और कारीगरो तथा श्रमिको के लिए उपयोगी जानकारी को प्रकाशित करना था। श्रमिको की पार्टियो की विफलता को देखते हुए नए नेताओ ने निश्चय कर रखा था कि नए संगठन को राजनीतिक क्षेत्र में नही घसीटा जाएगा। मैसाच्युसेट्स के एक मज़दूर नेता ने कहा: श्रमिको का "किसी दल से सम्बन्ध नही है। वे न तो जैक्सनवाद के चेले है और न ही क्ले-वाद, वान बुरेन-वाद, वेबस्टर-वाद या अन्य किसी वाद के बल्कि सिर्फ मजदूरवाद के शिष्य है।"

इन दिनो मज़दूरों का राष्ट्रीय सगठन वस्तुत. प्रभावशाली नही था। उसे गृहयुद्ध के बाद के दिनो में वाणिज्य के राष्ट्रीयकरण तक प्रतीक्षा करनी पडी। किन्तु इस प्रकार का सघ बनाने का प्रयत्न ही १८३० के दशक में मजदूर आन्दोलन की शक्ति और जीवट का साक्षी है। स्थानीय सोसाइटियो, नगर मज़दूर परिषदो और राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन के प्रयत्नो के फलस्वरूप समस्त देश में यूनियनो के अन्तर्गत ३ लाख सदस्य हो गए। आपेक्षिक आधार पर इतने अधिक मज़दूर आगे आधी सदी तक ट्रेड यूनियनो के सदस्य नही रहे। न्यूयार्क में सभी मजदूरो का कोई दो-तिहाई हिस्सा ५० के करीब मज़दूर यूनियनो में से किसी न किसी यूनियन का सदस्य था।

अपने अधिकारो की रक्षा के अधिकाधिक सक्रिय प्रयत्नो में मजदूर यूनियनो के सदस्यों ने अपने मालिको द्वारा उनकी उपयुक्त मागे पूरी करने से इन्कार कर देने पर हड़ताल की धमकी देने और वस्तुत. हड़ताल कर देने में भी कोई हिचकिचाहट नही दिखाई। जब मालिको ने वेतन कम रखने या कम वेतन पर अप्रशिक्षित मजदूर लाने की चेष्टा की तो लगभग हर व्यवसाय में

और हर शहर में हड़ताल हो गई। मुद्रक और बुनकर, दर्जी और कोच-निर्माता, राज और जिल्दसाज सब अपना काम छोड कर बाहर आ गए। न्यूयार्क में १·५० डालर प्रतिदिन कमाने वाले खातियो ने १.७५ डालर की मज़दूरी के लिए हड़ताल कर दी और जब उसमें सफल हो गए तो २ डालर की दर के लिए हडताल कर दी।

न्यू इंग्लैण्ड की कपडा मिलो में काम करने वाली लडकियो ने फिर हड़ताल कर दी। "बोस्टन ट्रान्सक्रिप्ट" की रिपोर्ट के अनुसार 'उनकी एक नेता पम्प पर चढ़ गई और महिलाओं के अधिकारो और अमीर-सामन्तवाद के अन्यायो के बारे मे एक भडकीला भाषण दिया जिसका उसके श्रोताओ पर इतना गहरा असर हुआ कि उन्हें यदि मरना भी पड़े तो भी अपनी माँग पर अड़े रहने का निश्चय कर लिया।" इससे पहले की मजदूर सोसाइटियो द्वारा भड़काई गई हड़तालो की पहली लहरो की भाति ये हड़ताले भी सदा शान्ति-पूर्ण रही किन्तु वे इतनी आम हो गई कि व्यापारी अधिकाधिक चौक उठे। उस समय के अखबारो मे १८३३ और १८३७ के बीच कम से कम १६८ हड़-तालें दर्ज है।

जैसा कि बाद मे हुआ, मालिको ने इन उपद्रवो का कारण यह नही बताया कि मज़दूरो को कुछ वाजिब शिकायते है, बल्कि इन उपद्रवो को उग्र तथा विध्वंसक आन्दोलनकारियो की, जिन्हे सामान्यतः विदेशी समझा जाता था, कारस्तानी बताया। न्यूयार्क-वासी एक टोरी फिलिप होन ने जो पहले मेयर रह चुका था, अपनी डायरी मे लिखा "मुझे आशका है कि उपद्रवी तत्व सक्रिय है। मज़दूर यूनियनो की शरारती परिषदो और अन्य असन्तुष्ट व्यक्तियो के सगठनो द्वारा भड़काए गए आयरिश व अन्य विदेशियो के दल इतनी शक्ति और महत्व प्राप्त कर रहे है जिसे शीघ्र ही शात करना कठिन हो जाएगा।" मज़दूरो की कुछ भी शिकायतें हो (और होन ने महगाई अत्य-धिक बढ जाने का स्वय भी जिक्र किया है) वह महसूस करता था कि कोई भी हडताल चाहे वह कितनी भी व्यवस्थित हो, एक "गैर-कानूनी कार्र-वाई" है।

समस्त पूर्व मे १० घण्टे के दिन की मजदूरो की माँग संगठित हड़तालो के रूप में सामने आई। काम के घण्टो में कमी के लिए पहले भी आन्दोलन

हो जुके थे । इसी की पृष्ठभूमि में सन् १८२७ में फिलाडेल्फिया में मैकेनिक्स यूनियन आव ट्रेड ऐसोसियेशन का निर्माण हुआ और दो वर्ष बाद न्यूयार्क में मज़दूर पार्टी बनी । लेकिन अब मजदूर मालिको को अपनी मागें मानने के लिए मजबूर करने के हेतु अपना प्रबलतम अस्त्र इस्तेमाल करने के लिए उद्यत थे ।

फिलाडेल्फिया में दिहाड़िये खातियो के एक प्रस्ताव में कहा गया : "सब मनुष्यो को उनके सृष्टा ने समान अधिकार प्रदान किए हैं । उन्हें अपने मन का विकास करने तथा आत्म-सुधार के लिए पर्याप्त समय प्राप्त करने का समान अधिकार है । इसलिए हम समझते है कि १० घण्टे मेहनत से किया गया काम एक दिन की मजदूरी के लिए बहुत काफी है ।"

इसी स्वर मे न्यू इग्लैंड के श्रमिको ने भी छोटे दिन के लिए माँग की और आश्चर्य की बात है कि 'बोस्टन ट्रान्सक्रिप्ट' जैसे कन्ज़रवेटिव अखबार ने उनकी माँग का समर्थन किया । उसने लिखा · "जब कोई मिस्त्री ग्रीष्म के लम्बे दिन मे १० या १२ घण्टे श्रम कर चुके तो उसका काम खत्म समझा जाना चाहिए जिससे वह कुछ समय और पर्याप्त शक्ति बाकी रहते अपने परिवार में लौट जाए और कुछ घण्टे अपने बच्चो को पढाने-लिखाने तथा अपने मस्तिष्क का विकास करने में व्यतीत कर सके ।"

काम के कम घण्टो के लिए मजदूरो के लम्बे सघर्ष के अन्य कालो में लम्बे समय तक कठिन श्रम का मजदूरो के स्वास्थ्य और कल्याण पर बुरा असर पडने या बेरोजगारी के खतरे का सामना करने के लिए काम को ज्यादा आदमियो में बाँटने के महत्व पर बल दिया गया किन्तु १८३० के दशक मे आत्म-शिक्षा के लिए, जिसे हाल मे मताधिकार प्राप्त मजदूरो को नागरिक के रूप मे अपने कर्त्तव्य अच्छी तरह निबाहने लायक बनाने के लिए आवश्यक समझा जाता था, समय मिलने की युक्ति पर ज्यादा जोर दिया जाता था और इस युक्ति मे मज़दूरो के ध्येय को आगे बढ़ाने की दृष्टि से ही नही, बल्कि अन्य दृष्टियो से भी काफी वजन था । इस बात के बहुत प्रमाण मिलते है कि मज़दूरों को अपनी व अपने बच्चो की शिक्षा मे बहुत दिलचस्पी थी । उस समय के व्याख्यान गृहो मे मज़दूरो की भारी भीड़ एकत्र होती थी, चलते-फिरते पुस्तकालयो का रिवाज़ बढ रहा था और मुफ्त पब्लिक स्कूलों की जोरदार माँग

की जा रही थी। ये सब बातें इस बात की साक्षी है कि मज़दूरो को शिक्षा प्राप्त करने की बडी चिन्ता थी, क्योकि उनका यह गहरा विश्वास था कि शिक्षा ही एक सफल लोकतन्त्र का अधिकार प्रदान कर सकती है।

१८३५ में बोस्टन में हड़ताली कर्मचारियो के एक परिपत्र मे कहा गया कि "हम चिरकाल तक घृणित क्रूर, अन्यायपूर्ण और अत्याचारी प्रणाली के शिकार रहे है जो काम पर गये हुए मिस्त्री को अपनी सब मानसिक और शारीरिक ताकत खत्म कर देने के लिये मजबूर करती है। हमें अधिकार है और हमें अमरीकी नागरिको तथा समाज के सदस्यो के रूप में अपने कर्तव्य निबाहने हैं जो हमें एक दिन में १० घण्टे से अधिक काम करने से मना करते है।"

किन्तु इस प्रकार की युक्तियो का मालिको पर ज्यादा असर नही हुआ। एक अखबार ने लिखा "१० घण्टे के दिन का प्रस्ताव काम के घण्टो के बारे मे आदेश जारी करके उद्योगो की स्नायु पर ही और नैतिकता पर प्रहार करता है। सवेरे और शाम को कई उपयोगी घण्टो का अवकाश निश्चय ही असहिष्णुता और विनाश का कारण बनेगा।" व्यापारियो तथा जहाज़-मालिको द्वारा 'बोस्टन कूरियर' में प्रकाशित एक वक्तव्य मे काम के घण्टो में कमी का समाज पर गम्भीर क्षतिकारक प्रभाव पडने पर जोर दिया गया और "खाली रहने से बुरी आदतें पड़ जाने की सम्भावना पर चिन्ता व्यक्त की गई।" काम के कम घण्टो पर आपत्ति का कारण चाहे व्यावसायिक मुनाफो पर विपरीत असर पडने की सम्भावना ही मुख्य रहा हो, किन्तु वस्तुत यह प्रदर्शित भय ही कि अवकाश का मजदूरो की नैतिकता पर बुरा असर पडेगा और असहिष्णुता पैदा करेगा, जो कि औपनिवेशिक न्यूइग्लैण्ड के मालिको के रवैये में स्पष्ट था, सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम करने की प्रणाली मे टोरियो द्वारा किसी भी परिवर्तन के विरोध का आधार बन गया।

किन्तु एक के बाद एक शहर में सगठित श्रमिको ने इस प्रकार की युक्तियो को मानने से इन्कार कर दिया और अपने रास्ते पर जमे रहे। उनकी सब जगह यही माँग रही कि सवेरे ६ बजे से शाम को ६ बजे तक काम का दिन हो, और इस बीच एक घण्टे का विश्राम नाश्ते के लिए और एक घण्टे का विश्राम भोजन के लिए मिलना चाहिये। बाल्टीमोर में सन् १८३३ में इस सुधार के लिए १७ व्यवसायो के कर्मचारियो ने मिलकर कदम उठाया।

दो वर्ष बाद बोस्टन के खातियों ने राजो, पत्थर तराशने वालो और अन्य मकान-मजदूरों के सहयोग से इसी माँग के लिये हड़ताल कर दी। दोनो हड़-ताले फेल हो गईं। दूसरी ओर फिलाडेलफिया में ज्यादा अच्छी तरह सगठित और व्यापक रूप से सहायता प्राप्त एक अन्य हड़ताल ने १८३५ में शानदार विजय प्राप्त की जिसका दूर-दूर तक प्रभाव पड़ा।

यह हड़ताल कोयला उठाने वालो तथा अन्य सामान्य मजदूरो ने की थी किन्तु शीघ्र ही उनमें जूता बनाने वाले, हाथकरघा बुनकर, सिगार-निर्माता, जीन-साज, मुद्रक और मकान-मजदूर शामिल हो गये। बोस्टन में श्रमिकों के अनुभवो के बारे में एक परिपत्र का फिलाडेलफिया के मजदूरों की एकता को मजबूत करनें में जादू का सा असर हुआ और उसने हार न माननें के उनके सकल्प को दृढ किया। एक सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया, जिसमें गाजे-बाजे के साथ प्रदर्शन पट्ट लिये हुए—जिन पर लिखा था। "६ बजे से ६ बजे तक"—सब व्यवसायों के कर्मचारियो ने सड़को पर कूच किया।

उनके नेता जॉन फेरल ने, जो एक हाथकरघा बुनकर और जोशीला मज़दूर नेता था, लिखा. "हम सार्वजनिक कार्य विभाग के दफ्तर पर कूच करते हुए गए और उसके कर्मचारी हमारे साथ शामिल हो गए। काम बन्द हो गया, कारोबार ठप्प हो गया, आस्तीन चढा ली गई, लबादा पहन लिय गाया, औजार हाथ में ले लिए गये। सब जगह यही दृश्य दिखाई देता था। अगर किसी हमलावर दुश्मन की तोप ने हमारी पितृभूमि पर चुनौती दी होती तब भी फिलाडेलफिया के नागरिकों में सघर्ष के लिये उत्पन्न उत्साह इससे ज्यादा न होता; खून चूसने वाला सामन्ती वर्ग, वही भयभीत और आतंकित अलग खड़ा रहा। वह समझता था कि बदले का दिन आ पहुँचा है किन्तु लोगों ने अपने दुश्मनो से उनके द्वारा लादे गए अन्याय का बदला लेने की कोशिश भी नही की।"

पहले पहल शहर की सामान्य परिषद् ने घुटने टेके। उसने सब सरकारी कर्मचारियो के लिए १० घण्टे का दिन स्वीकार कर लिया। इसके बाद मास्टर खातियो और मास्टर जूता-निर्माताओं की बारी आई। अन्य मालिकों ने भी शीघ्र ही उनका अनुकरण किया और सारे शहर में १० घण्टे के दिन का रिवाज कायम हो गया। फेरल ने लिखा. "मशीन कर्मचारी दृढ़ और

सच्चे रहे। वे इसलिए जीते क्योकि वे सगठित और एकनिष्ठ रहे। अखबार, जो लोकमत के कूच को नही रोक सके, न ही उसे अपने न्यायपूर्ण उद्देश्य से भटका सके, अब हमारी रक्तहीन क्रांति की घोषणा कर रहे है।"

यह आन्दोलन देश के अन्य भागो में भी फैल गया और कई मामलो में ऐसी ही सफलता प्राप्त की गई। शीघ्र ही मिस्त्रियो और कारीगरो के लिए सब कही सूर्योदय से सूर्यास्त के बजाय १० घण्टे का दिन कायम हो गया, न्यू इग्लैण्ड के कपडा उद्योगो के लिए जो कारखाने स्थापित हो रहे थे और अन्य निर्माता उद्योगो मे इसके बाद भी बहुत अरसे तक काम का दिन १२ घण्टे और उससे अधिक का ही रहा। कुछ धन्धो मे तो १८३० के दशक में प्राप्त किए गए लाभ भी जाते रहे। किन्तु फिलाडेलफिया तथा अन्य शहरो मे की गई हडतालो में मजदूरों ने अपनी सगठित और दृढतापूर्ण कारंवाई से वास्तविक विजय प्राप्त की थी। इसके अलावा सघ सरकार ने सब सरकारी कार्यों के लिए शीघ्र ही १० घण्टे का दिन नियत कर दिया। इस विषय पर कांग्रेस को जो अनेक ज्ञापन दिए गए, उन पर उसने कोई ध्यान नही दिया किन्तु जब हडताली जहाजी मजदूरो ने १८३६ मे राष्ट्रपति जैक्सन से सीधी अपील की तो फिलाडेल्फिया के नौ-सैनिक घाट में भी यह प्रणाली जारी हो गई। ४ वर्ष बाद वान बुरेन ने यह घोषणा कर अपने राजनीतिक समर्थन के लिए मजदूरो का ऋण स्वीकार किया कि सब सरकारी परियोजनाओ मे काम का दिन १० घण्टे का होगा

मजदूरो की अधिक वेतन और काम के कम घण्टे की दोनो मांगो का मालिको ने यथा सम्भव दीर्घकाल मुकाबला किया। जहाँ कही भी उन्हें मुमकिन दिखाई दिया, वे सस्ते मजदूर लगा कर अपने कर्मचारियो की सौदे-बाजी की ताकत पर चोट करते रहे। लेकिन जहाँ दक्ष मिस्त्रियो और कारी-गरो का सवाल होता, मालिको को अपनी स्थिति कायम रख सकने मे कठिनाई होती। कारीगरों की यूनियनें एक *क्लोज्ड शाप (बन्द कारखाना) नियम लागू कराने में सफल हो गई जिसने मालिको के हाथ बाँध दिए। पब्लिक कार्डों के जरिये, जिसमें वे किसी भी दिहाडिये को जो यूनियन मे शामिल नही

*ऐसा सस्थान जिसमें मालिक सिर्फ यूनियन के सदस्यों को ही काम पर रखता है।

होता था, "अनुचित" करार देकर और उस सस्थान को जहाँ कोई "अनुचित" कर्मचारी काम पर लगाया गया होता, "गन्दा" कह कर वे श्रम बाजार पर प्राय अपना नियंत्रण रखती थी। यह हमेशा ही सच नही होता था किन्तु उस वक्त के रिकार्डों से दक्षता की अपेक्षा वाले धन्धो में सगठित श्रमिको की एक अप्रत्याशित शक्ति जाहिर होती है।

इन परिस्थितियो मे मालिक अधिकाधिक पारस्परिक सुरक्षा सगठनो की ओर झुके जो मजदूरो के "प्रत्येक घातक सगठन का विरोध करने के लिए मिलकर काम करने को तैयार थे। न्यूयार्क मे मालिको, चमडे का प्रोसेसिंग करने वालो और चमडे के व्यापारियो ने जनरल ट्रेड्स यूनियन के खिलाफ मोर्चा लिया और आपस मे यह निश्चय किया कि वे "ऐसे आदमी को काम पर नही लगाएगे जो उस या ऐसी किसी सोसाइटी का सदस्य है जिसका उद्देश्य मज़दूरो के काम करने की शर्तें तय कराना है।" फिलाडेल्फिया में मास्टर मुद्रको ने ट्रेड यूनियन विरोधी ऐसोसियेशन की स्थापना के लिए आह्वान करने वालो का नेतृत्व किया। अनेक प्रस्ताव पास करके ट्रेड यूनियनो को स्वेच्छाचारी, अन्यायपूर्ण, हानिकारक और सबको बराबर कर देने वाली प्रणाली का, जो मास्टरो को सिर्फ दिहाडिया बनाकर छोड देगी, शक्तिशाली साधन घोषित किया। एक प्रस्ताव मे कहा गया कि मालिको को श्रमिको की किसी भी सोसाइटी के हस्तक्षेप के बिना कर्मचारियो के साथ काम की कुछ भी शर्तें तय करने का अधिकार है।

मालिको के संगठन जब पुन. मजदूर सगठनो का मुकाबला नही कर सके तो एक बार फिर अदालतो का आश्रय लिया जाने लगा। यूनियनो को व्यापार में रुकावट डालने वाला षड्यंत्र बता कर उन्हे तोड़ने का आन्दोलन पुन: जोर से चलाया गया और सदी के प्रारम्भिक वर्षो की भाँति इन वर्षों में भी अनुदार न्यायाधीशो ने मालिको का पूरा साथ दिया।

'पीपल वर्सेज फिशर' केस मे जिसका १८३५ में न्यूयार्क की सुप्रीम कोर्ट मे निबटारा हुआ, इस युग मे इस चीज का पहला महत्वपूर्ण प्रदर्शन था कि मजदूर यूनियनो के प्रति अदालतो के विरोध में कोई तब्दीली नही आई है। जेनीवा, न्यूयार्क में दिहाड़िये जूता-निर्माताओ की एक सोसाइटी पर मजदूरी बढाने की साजिश करने और इस प्रकार, जैसा कि वादियों ने दावा किया,

वाणिज्य को नुकसान पहुँचाने और मौजूदा कानून के अनुसार दुर्व्यवहार का आरोप लगाया गया। मुख्य-न्यायाधीश ने मालिको के पक्ष मे फैसला दिया। 'समाज का सर्वोत्तम हित-साधन तभी तो सकता है, जब श्रम की कीमत स्वयमेव नियमित होने दी जाए।' इस सिद्धान्त के आधार पर उसने घोषणा की कि जूता बनाने वाले वेतन-वृद्धि के लिए अपना संगठन करके पब्लिक का नुकसान कर रहे है क्योंकि "इस उद्देश्य के लिए साजिश सामान्य कानून की भावना के विरुद्ध है।"

फैसले के अन्त मे कहा गया. "प्रतियोगिता वाणिज्य की जान है। अगर प्रतिवादी सामान्य जूते १ डालर फी जोडी से कम मे नही बना सकते तो भले ही वे इससे इन्कार कर दें किन्तु उन्हें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से यह कहने का कोई अधिकार नही है कि अन्य लोग भी इससे कम कीमत पर काम नही करेंगे.. प्रतिवादियो का हस्तक्षेप गैरकानूनी है। उनका रवैया न केवल व्यक्ति-विशेष को सताने का है बल्कि आम लोगो के लिए असुविधा और परेशानी उत्पन्न करता है।"

इस निर्णय का असर यह हुआ कि अन्य मालिको को मजदूर सोसाइटियों के दमन के लिए प्रोत्साहन मिला, भले ही उन सोसाइटियो ने हडतालें न की हो और जब अदालते खुल्लमखुल्ला मजदूर-विरोधी नीति अपनाती रही तो श्रमिको और उनके साथ सहानुभूति रखने वालो मे विरोध का तूफान उठ खडा हुआ। १८३६ मे एक और मामले के बाद यह विरोध अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। इस मामले में अध्यक्ष न्यायाधीश ने जूरी पर दिहाडिये दर्जियो की एक सोसाइटी को वाणिज्य मे रुकावट डालने वाली साजिश का अपराधी घोषित करने के लिये जोर दिया था।

'न्यूयार्क इवनिंग पोस्ट' में विलियम कलेन ब्रायण्ट ने लिखा' "इन दर्जियों की इसलिए निंदा की गई, क्योंकि उन्होने पेश की गई मजदूरी की दरो पर काम करने से इन्कार कर दिया था। क्या इससे ज्यादा घिनौनी किसी चीज की कल्पना की जा सकती है? अगर यह गुलामी नही है तो हम उसकी परिभाषा ही भूल चुके है। मेहनत बेचने के लिए व्यक्ति का ऐसोसियेशन बनाने का अधिकार खत्म कर दीजिए तो आप उसे किसी एक मास्टर के लिए अथवा किसी एक ही स्थान पर काम करने के लिए मजबूर कर देते है .. ।"

न्यूयार्क के उत्तेजित मज़दूर नेताओ ने शहर में पोस्टर बाँटे, जिनपर एक कफन का चित्र अकित था। इसमें श्रमिको से कहा गया था कि जिस दिन दर्जियो के लिए सजा की घोषणा की जानी है उस दिन वे अदालत में पहुँचे।

पोस्टर में कहा गया था। "सोमवार, ६ जून, १८३६ को इन मज़दूरो को सामन्ती वर्ग की नारकीय भूख को मिटाने के लिए सजा दी जाएगी। सोमवार को मजदूरो की आजादी दफना दी जाएगी, न्यायाधीश ऐडवर्डस प्रार्थना पढ़ेंगे। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक मजदूर जाओ ! जाओ ! और समानता के कफन पर मिट्टी गिरने की दु खद ध्वनि को सुनो ! अदालत के कमरे, सिटी हाल और सारे पार्क को शोकातुरो से भर जाने दो !" लोग आशा से कम ही सख्या में अदालत पहुँचे और उनकी भीड़ पूर्णत शान्त रही। किन्तु दर्जियों को सजा दिए जाने के एक सप्ताह बाद एक अन्य आम सभा हुई, जिसमें २७,००० व्यक्ति जमा हुए और जिस न्यायाधीश ने फैसला दिया था, उसका बुत जलाया गया।

इन मुकदमो के खिलाफ प्रतिक्रिया वस्तुत. इतनी उग्र थी कि जूरी भी उससे प्रभावित हुए बिना नही रह सके और दो अन्य साजिशो के मुकदमे में 'अपराधी नही' का फैसला सुनाया गया। १८४२ मे मैसाच्युसेट्स सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने कामनवेल्थ बनाम हण्ट के केस मे एक महत्वपूर्ण फैसला दिया जो यूनियनो की वैधानिकता के लिए एक दृढ आधार प्रदान करता प्रतीत होता था।

यह केस बोस्टन के दिहाडिये जूता निर्माताओ की सोसाइटी का था जिसके सदस्यो ने अपने सगठन से सम्बन्ध न रखने वाले दिहाडियो को काम पर रखने वाले किसी भी मालिक के लिए काम न करने का निश्चय किया था। मुख्य न्यायाधीश शा ने कहा कि सोसाइटी का प्रत्यक्ष उद्देश्य एक ही व्यवसाय मे काम करने वाले व्यक्तियो को सदस्य बनने के लिए प्रेरित करना है और इसे गैर-कानूनी नही समझा जा सकता, न ही मै यह मानता हूँ कि गैर-सदस्य दिहाडियो को काम पर रखने वाले मालिको के लिए काम करने से इन्कार कर देने के कारण जूता-निर्माता कोई अपराधपूर्ण साधन अपना रहे है। उन्होने एक सम्भावित समानान्तर सोसाइटी का उदाहरण दिया

जिसके सदस्य भड़कीलेदिहाडियो का इस्तेमाल करने वाले मालिक के लिए काम न करने का निश्चय करके सहिष्णुता का अत्यन्त प्रशसनीय उद्देश्य पूरा कर रहे हो। दूसरे शब्दो में एक कानूनी उद्देश्य के लिए मिलकर कार्रवाई करने का निश्चय अनिवार्य रूप मे अपराधपूर्ण साजिश ही नही है। न्यायाधीश के फैसले के अन्त में कहा गया "इस प्रकार के एसोसियेशन की वैधानिकता इसके लक्ष्यो की पूर्ति के लिए अपनाये जाने वाले साधनो पर निर्भर करेगी।"

इस निर्णय के बाद भी चूँकि मजदूर सोसाइटियो को यह सिद्ध करना पडता कि अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए उन्होने जो साधन अपनाये है, वे पूर्णत. वैधानिक है, इसलिए यह फैसला भी मजदूरो के लिए पूरी जीत नही था। इसने वस्तुतः निन्दा करने में कुछ टैकनिकल मुद्दो का सहारा लिया था। किन्तु तो भी यूनियन बनाने और 'बन्द कारखाना' के सिद्धान्त को भी पर्याप्त समर्थन मिला। इसके बाद काफी अरसा बीतने पर ही मजदूरो को अपना वैधानिक बचाव करना पडा, ट्रस्ट विरोधी कानूनो के अन्तर्गत नए सिरे से साजिश के अभियोगो और हडतालो व बायकाटों क खिलाफ आदेशो के मनमाने प्रयोग के खिलाफ सघर्ष करना पडा।

१८३० के दशक में श्रमिको को अपने १० घण्टे के आन्दोलन में, साजिश सम्बन्धी कानूनो का विरोध करने मे और अपनी हडतालो मे अपनी आम ट्रेड यूनियनो का सक्रिय समर्थन प्राप्त रहा। ये सगठन स्थानीय सोसाइटियो की माँगो का समर्थन करने और मजदूरो द्वारा हडताल किए जाने पर वित्तीय सहायता देने के लिए जो कुछ कर सकते थे, इन्होने किया। न्यूयार्क, फिलाडेल्फिया और बोस्टन मे जहां-कही भी ये बडी ट्रेड यूनियनें बनी, इस नेतृत्व की बदौलत मजदूरो मे निकट सहयोग रहा। केन्द्रीय सगठन को मासिक चन्दा दिया जाता, जिससे एक हडताल-कोष स्थापित हो सका और कई मामलो में हडताल करने वाली अन्य सोसाइटियो के सदस्यो की सहायता के लिए अतिरिक्त रकम की सहायता दी गई। कभी-कभी यह सहायता एक नगर से दूसरे नगर को भी दी जाती थी। फरवरी, १८३६ में जब फिलाडेल्फिया के जिल्दसाजो ने न्यूयार्क की जनरल ट्रेड्स यूनियन से सहायता के लिए प्रार्थना की तो इस सहायता के पक्ष मे तुरन्त एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

इसमें सब सदस्यो से "अपने साथी कारीगरो की मदद करने के लिए कहा गया, जिन्हें इस प्रतिकूल समय में सामन्ती अत्याचार के खिलाफ अपने अधिकारो की रक्षा के लिए सघर्ष करना पड़ रहा है।" न केवल न्यूयार्क की यूनियनों ने ही बल्कि वाशिगटन, बाल्टिमोर, अलबानी और नेवार्क की यूनियनो ने भी जिल्दसाजो की मदद के लिए अलग-अलग राशियाँ भेजी।

राष्ट्रीय ट्रेड यूनियनो का जिनकी पहली बैठक १८३४ में हुई थी और जिन्होने बाद के दो वर्षो में अपने सम्मेलन किये थे, जनरल ट्रेड यूनियन जैसा एकजूट संगठन नही था। यह वार्षिक सम्मेलन के अलावा कुछ नही था जिसमें मजदूर सम्बन्धी मामलों पर बहस की जाती थी और जो कभी-कभी १० घटे का दिन, जेल-मजदूर या सार्वजनिक जमीनो जैसे मामले पर काँग्रेस को ज्ञापन भेज दिया करता था। यद्यपि इसने सीधी राजनैतिक कार्रवाई में भाग लेने से इन्कार कर दिया, तो भी जैक्सन डैमोक्रेटो द्वारा किए जा रहे बहुत-से सुधारो का इसने समर्थन किया। इसने अमरीकी बैंकिंग प्रणाली पर आक्षेप किये और उसे कानून-सम्मत एकाधिकार प्रणाली बताया जो अमीरो को और अमीर तथा गरीबो को और गरीब बना देती है।" किन्तु यह आन्दोलन कोई वर्ग-सघर्ष का आन्दोलन नही था। इसके अखबार 'दि यूनियन' ने २१ अप्रैल, १८३६ को लिखा : "ट्रेड यूनियन बनाने का हमारा उद्देश्य अनुत्पादक वर्ग के प्रति शत्रुता की भावना उत्पन्न करना नही, बल्कि अपनी व अन्यो की जो जीवन की आवश्यक वस्तुओ तथा वैभव की चीजो के उत्पादक है, हैसियत को ऊँचा करना है।"

मजदूरो के हित-साधन में नेशनल ट्रेड्स यूनियन का शायद सबसे बड़ा योग देश के विभिन्न भागो से बुलाकर मज़दूर नेताओ को एक जगह जुटाना था। इसने उन्हें सामान्य उद्देश्य की भावना प्रदान की और उनके कार्यो को जैसे १० घण्टे के आन्दोलन को सहयोग प्रदान किया जिससे उन्हे मज़दूरों के अधिकारो की रक्षा के लिए स्थानीय संघर्ष जारी रखने में प्रोत्साहन मिला।

उग्र हाथ-करघा बुनकर जॉन फेरल, जिसने फिलाडेल्फिया मे १० घण्टे के आन्दोलन की सफल हड़ताल का नेतृत्व किया था, इस सम्मेलन में प्रमुख व्यक्ति था। वही एक ऐसा आदमी था जिसने मजदूर सोसाइटियो द्वारा सीधी आर्थिक कार्रवाई किए जाने पर सबसे अधिक बल दिया और राजनीतिक

प्रलोभनो द्वारा मुख्य उद्देश्यो से भटक जाने के खतरो के विरुद्ध सबसे अधिक बार चेतावनी दी। उसने लिखा : "सब दलो के पदाधिकारियो तथा पद के इच्छुको ने अपने-अपने जाल में फँसाने के लिए प्रलोभन दिये किन्तु अनुभव ने हमारी सहायता की, शर्मीले युवा हरिण की भाँति हम उनके प्रलोभनो को स्वीकार करने में सकुचाए, उनके सहायता के प्रस्तावो के प्रति कृतज्ञता अनुभव की किन्तु उनसे कह दिया कि कि हम अपने अधिकारो के बारे में जानते है और उनकी रक्षा के लिये सजग है," फिलाडेल्फिया जनरल ट्रेड्स यूनियन के सगठन में उसकी सूझ-बूझ, पहल और स्फूर्ति शायद सबसे महत्वपूर्ण चीज थी। इसकी मूल सगठन समितियो मे से एक का वह चेयरमैन रहा था, उसकी गतिविधियो मे सतत सलग्न रहता था और उसके "जोशीले भाषणों" का उल्लेख यूनियन की कारंवाई सम्बन्धी प्रत्येक रिपोर्ट में होता था।

फिलाडेल्फिया का एक दूसरा डेलीगेट विलियम इगलिश था, जो कुछ समय तक जनरल ट्रेड्स यूनियन का सैक्रेटरी रहा था। वह एक दिहाडिया ... -निर्माता था तथा मजदूरो के हितो का जोशीला और अत्यन्त साहसी चैम्पियन था। उसके आलोचक कहा करते थे कि उसका कोई विचार ऐसा नही होता था जो किसी का चुराया हुआ अथवा किसी से उधार लिया हुआ न हो किन्तु उसके आवेशपूर्ण भाषणो को लोग ध्यान से सुनते थे।

न्यू इग्लैण्ड के श्रमिको का मुख्य प्रतिनिधि चार्ल्स डगलस था जो न्यू इंग्लैण्ड के किसानो, मिस्त्रियो व अन्य मदूजरो के एसोसियेशन का एक सस्थापक तथा 'न्यू इग्लैड आर्टिजन' का सम्पादक था। न्यू इग्लैड की एसो-सियेशन यद्यपि मैसाच्युसेट्स के राज्य-आन्दोलनो में सीधे उलझ गई थी तो भी राजनीतिक गतिविधियो के खिलाफ उसका विरोध जॉन फेरल से कम नही था। उसकी मुख्य दिलचस्पी कपड़ा मिलो के कर्मचारियो की स्थिति को सुधारने में थी और वह इस श्रेणी के मजदूरो के पहले प्रवक्ताओ मे से था।

नेशनल ट्रेड्स यूनियन की कम-से-कम एक बैठक मे भाग लेने वाला उसका साथी सेठ लूथर था, जिसे 'आर्टिजन' का तथाकथित 'सफरी एजेण्ट" और अन्य बहुत से आन्दोलनकारियो का नमूना कहा जाता था। वह इस युग के आकर्षक मज़दूर नेताओ में से एक था, लम्बा, पतला तम्बाकू चबाने वाला,

आदतन चमकीली हरी जाकेट पहनने वाला यांकी जो फैक्ट्री वाले नगरो में घूम-फिर कर मज़दूरो को अपने हितो की रक्षा करने के लिए आह्वान करता था। उसने बार-बार नारा लगाया कि "आप समाज के किसी वर्ग को, गरीबो की लाश पर खडे हुए बिना दूसरों से ऊँचा नही उठा सकते" और अपनी इस मान्यता के समर्थन में उसने कई पर्चे निकाले, जिनमें कपड़ा-मिलो में फैक्ट्री मैनेजरो के चाबुक-तले काम करती हुई स्त्रियो और बच्चो का कठोर जीवन चित्रित किया गया था। उसकी शैली भयानक, विडम्बनापूर्ण और अत्यन्त रगी हुई थी लूथर ने लिखा : "अमीरो के सुसज्जित और सुगन्धित कमरो में काँपते हुए गलो से जहाँ सगीत प्रवाहित होता है वहां कपड़ा-मिलो में गरीब स्त्री और बच्चे की नसें इस शान-शौकत को बनाए रखने के लिए किये जाने वाले अत्यधिक परिश्रम के कारण करीब-करीब मरणासन्न वेदना से काँप रही है।"

नेशनल ट्रेड्स यूनियन का प्रथम अध्यक्ष ऐली मूर था जो पहले चिकित्सा का विद्यार्थी था किन्तु बाद मे इस धन्धे को छोड़कर एक दिहाडिया मुद्रक बन गया और मजदूर आन्दोलन मे कूद पडा। उसका स्वास्थ्य अच्छा नही था, जिस कारण उसे अन्तत राजनीतिक मच से हटना पडा किन्तु तब तक वह अपने आपको यूनियन की गतिविधियो में एक कुशल सगठनकर्ता और प्रभावशाली प्रशासक सिद्ध कर चुका था। लम्बा, सुन्दर, घु घराले काले बालो वाला जो उसके चौडे मस्तक से पीछे की ओर बहाए गए होते थे, हमेशा अच्छे कपड़े पहनने वाला और प्राय हाथी दाँत की मूठ वाली बेत रखने वाला यह व्यक्ति उस वक्त के लोगो के कथनानुसार रोमाचक भाषण शक्ति का धनी था। नेशनल ट्रेड्स यूनियन मे अपने पद पर आने से पूर्व वह न्यूयार्क मे जनरल ट्रेड्स यूनियन का अध्यक्ष था और 'महान ध्येय' में मज़दूरो को पायोनियर बता कर उसने विकसित होते हुए मजदूर आन्दोलन के मुख्य स्वर को गुन्जारित किया था।

मूर ने कहा "देशभर में मिस्त्रियो के हितो के सच्चे प्रतिनिधियो के नाते लाखो लोगो की आखे आपकी ओर लगी हुई है क्योकि अगर यहा परीक्षण सफल हो जाए और 'यूनियन' के दोस्तो की आशाए पूरी हो जाएँ तो हर क्षेत्र मे इसी प्रकार की अन्य यूनियने भी बनेगी" .. ..और फिर उसने अपने

श्रोताओं को चेतावनी दी : "किन्तु अगर ये फेल हो गई तो देश के अभिमानी सामन्त बड़े उल्लासपूर्ण हृदय से और नारकीय सन्तोष के साथ उसका स्वागत करेंगे।"

मूर ने शीघ्र ही मजदूर क्षेत्रो मे अपनी स्थिति को सक्रिय राजनीति मे प्रवेश का सोपान बना लिया और यूनियनो तथा पेशेवर राजनीतिज्ञो के सहयोग से उसी वर्ष कांग्रेस मे पहुँच गया और तभी वह नेशनल ट्रेड्स यूनि-नियन का निर्वाचित अध्यक्ष बन गया। इसमें काम करते हुए उसने मजदूरों के हितो के प्रवक्ता के रूप में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की और यूनियन द्वारा कांग्रेस को विभिन्न ज्ञापन भिजवाने मे उल्लेखनीय भाग लिया। जब कभी वह बोलता, मजदूरो के अधिकारो के पक्ष मे उसकी युक्तियो को और "थोड़े से विशिष्ट अधिकार प्राप्त लोगो की हृदयहीन लोलुपता" पर उसके तीव्र प्रहारो को बड़े ध्यान से सुना जाता था।

दिहाड़िये दर्जियो पर साजिश सम्बन्धी मुकदमा चलने से न्यूयार्क मे जो आम उत्तेजना फैली उसके बाद अप्रैल, १८३६ मे एक बार उसने असाधरण नाटकीय परिस्थितियो में मजदूरो के पक्ष की वकालत की। दक्षिण कैरोलिना के प्रतिनिधि ने श्रमिको के सम्भावित विद्रोह के खिलाफ चेतावनी दी थी। यद्यपि वह इतना बीमार था कि अपनी बेंत के सहारे ही स्थिर खडा रह सकता था तो भी मूर ने अपने श्रोताओ को ऐसी गूंजती आवाज में भाषण दिया जो सदन के हर कोने में पहुँची। दृढता के साथ उसने पूछा की राज्य की तीन-चौथाई आबादी से बना हुआ वर्ग राज्य के हितो और सुरक्षा के खिलाफ कैसे साजिश कर सकता है ? और जब उसके श्रोता ध्यानपूर्वक उसकी बात सुन रहे थे और एक दक्षिणी काग्रेसमैन यह गुनगुनाते सुना गया कि क्रान्ति का मुख्य पादरी अपना प्रिय गीत गा रहा है, तब स्पीकर की ओर मुखातिब होकर मूर ने कहा "मजदूर गैर-कानूनी रूप से पूंजी को हड़प जाएंगे, इससे ज्यादा खतरा इस बात का है कि पूंजी श्रम के लाभो को अन्यायपूर्ण ढग से खुद हडप लेगी।"

"डैमोक्रैटिक रिव्यू" के लिए दृश्य का वर्णन करते हुए एक रिपोर्टर लिखता है: " मेरी आंखें उस पर टिकी हुई थी। मैंने उसका चेहरा पहले से भी सफेद होता हुआ देखा जब तक कि एक घातक रग उसके चेहरे पर नही छा गया,

उसके हाथ आसमान मे ठहर गए, वह शून्य को पकड़ता प्रतीत हुआ—लगता था कि जैसे उत्तेजित भीड के सामने हाथ फैलाए एक मुर्दा खड़ा है। उसकी आँखें बन्द थी—वह लडखड़ाया और सम्पूर्ण सदन की भागदौड़ और कोलाहल के बीच वह अपने एक दोस्त की भुजाओ मे मूर्छित होकर गिर पडा।"

मूर इस बीमारी से तो उठ खडा हुआ किन्तु उसने सदन मे भाषण देना बन्द कर दिया। उसके मित्रो ने अनुभव किया कि उसका स्वास्थ्य इतना खराब हो चला है कि अपने उत्तेजित हो जाने वाले संवेदनशील स्वभाव के कारण वह अब सार्वजनिक भाषण देने का बोझ बर्दाश्त नही कर सकता किन्तु उसके व्याख्यान के बहुत जल्दी ४ सस्करण छप गए और अदालतो द्वारा यूनियनो को अवैधानिक करार दिए जाने का सिलसिला कुछ रुका। जनमत अधिकाधिक उनके पक्ष में होता जा रहा था। न्यूयार्क इवनिग पोस्ट मे विलियम कलेन ब्रयाण्ट ने पूछा . "मज़दूर वर्ग पर बिना किसी कारण इन अमर्यादित हमलो से सिवाय इसके क्या लाभ होगा कि वे आम विद्रोह कर दें।"

इस जमाने के मज़दूर आन्दोलन की एक सदी के बाद के आन्दोलनों से तुलना नही की जा सकती। यह अमरीकी समाज की उन परिस्थितियो से उद्‌भूत हुआ था जिनका उस जमाने की परिस्थितियो से दूर का ही सादृश्य था जबकि बड़े पैमाने पर माल तैयार करने वाले कारखानो मे बडी संख्या मे मजदूर काम करते थे। जैसा कि हमने देखा, शुरू की मजदूर सोसाइटियो के सदस्य अपेक्षाकृत स्वतन्त्र मिस्त्री और कारीगर ही थे जो स्वय को एक स्थायी और विशिष्ट मजदूर वर्ग का सदस्य कहलाना पसन्द नही करते थे।

उस समय के अमरीकी समाज मे उनके खयाल से सिर्फ दो ही विभाजक रेखाएं थी। एक सामन्तवाद और लोकतन्त्र के बीच और दूसरी अमीर और गरीब के बीच। मालिक और कर्मचारी का श्रेणी भेद वे नही मानते थे। जैसा कि न्यू इग्लैड ऐसोसियेशन के एक भाषण में बताया गया वे इस बात से बहुत क्षुब्ध थे कि जो लोग लोकमत बनाने का सामर्थ्य रखते थे वे उपयोगी श्रमिको को बहुत अच्छी निगाह से नही देखते थे। वे जमाने की इस चाल पर क्रुद्ध होते थे जिसमे कुछ लोग कठिन परिश्रम के बिना ही जीविका कमाने के साधन जुटा लेते थे और समाज के अधिक उपयोगी और परिश्रमी अग को

निरन्तर परिश्रम का जीवन बिताने को मजबूर करते थे और फिर भी उन्हे अपने परिश्रम के फल का एक बडा भाग नही मिल पाता था। समाज मे उनका स्थान हीनता का नही तो नीचा जरूर माना जाता था और वही स्त्री-पुरुष और बच्चे उनसे घृणा करते थे जिनका ऐशो-आराम उनके परिश्रम के फल पर ही निर्भर करता है। १८३० के दशक की मजदूर यूनियनो को काम की हालतें सुधारने की जितनी चिन्ता थी, उतनी ही श्रम की प्रतिष्ठा और श्रमिको के लिए सम्मान प्राप्त करने की भी थी।

१८३० के दशक की मजदूर यूनियनो के उच्च उद्देश्य के बारे में कुछ भी कहा जाए और अपने व्यापक तथा तात्कालिक उद्देश्यो की पूर्ति में उन्होने कुछ भी सफलताए प्राप्त की हो, उनके दिन गिने-चुने थे। १८३७ में समृद्धि यकायक जाती रही जिसने उनके विकास और सफलताओ के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि प्रदान की थी। कल्पनाओ का बुलबुला बेरहमी से फट पडा। कीमते जैसे ही तेजी से गिरी, सम्पूर्ण राष्ट्र को कठिन समय ने आ घेरा। वाणिज्य तथा व्यापार के स्रोत सूख गए, निर्माण तेजी से घट गया और अटलाण्टिक तट तथा पश्चिम मे दोनो जगह के कभी समृद्ध रहे नगरो और कस्बो मे कारोबार ठप्प हो गए।

श्रमिको के सामने घटते हुए वेतन और बेकारी की समस्याएं फिर मुंह बाए खड़ी हो गईं, जैसा कि मदी के दिनो में सदा होता है। जब काम का विकल्प अपने और अपने परिवारो के लिए भुखमरी हा रह गया तो मजदूरो ने १८१६ की भाति मालिको द्वारा बदला लिए जाने के डर से यूनियनें छोड दी और जब स्थिति अच्छी थी तब प्राप्त किए लाभो की सुरक्षा के लिए उन्होने कोई हडतालें नही की। दिहाड़िया मजदूरो की सोसाइटियो का जो कभी इतनी शक्तिशाली लगती थी, कुछ अपवादो को छोड़कर बिस्तर बिल्कुल गोल हो गया। नई आर्थिक परिस्थितियो मे वे कुचली गई और उनके इस विनाश में उनके अखबार संगठन भी रातोरात गायब हो गए। १८३७ की मन्दी ने विकसित होते हुए मजदूर आन्दोलन को उसी प्रकार रोक दिया जिस प्रकार १८ वर्ष पहले की मन्दी ने मूल मजदूर सोसाइटियो की कमर तोड़ दी थी। इसके बाद आधी सदी तक ट्रेड यूनियनवाद उतना जोर और तकत नही पकड़ सका, जितना ताकतवर वह १८३७ की मन्दी से पहले था।

अगर मजदूर सगठन इस वित्तीय और आर्थिक सकट को सह गए होते तो उनका बाद का इतिहास कुछ दूसरा ही होता। क्योकि जब औद्योगिक क्राति का अमरीकी समाज पर पूरा प्रभाव पड़ा तब मजदूरो के सामने आई नई समस्यायो का शायद मजबूत ट्रेड यूनियन सगठन सामना कर पाते। क्रांति की लम्बी छाया १८३० के दशक में अमरीका पर छाने लगी थी और फैक्ट्री मजदूरो का वर्ग निरन्तर बढ़ रहा था। संगठित दक्ष कर्मचारी इन निर्बल मजदूरो के साथ सहयोग करने को तैयार थे और वे उद्योगीकरण के इस प्रारम्भिक दौर मे अदक्ष कर्मचारियों के बीच एक प्रभावशाली यूनियन की स्थापना में सहयोग दे सकते थे। किन्तु ऐसा होना न था। निर्माण का शनै.-शनै विस्तार मजदूरो को हतोत्साह करता गया और मजदूर यूनियने आम मजदूरो के सामने ऐसा कोई कार्यक्रम नही रख सकी जिससे वे अपने हितो की सफलतापूर्वक रक्षा कर पाते।

—:०:—

५ : उद्योगीकरण का प्रभाव

सन् १८४२ मे अपनी अमरीका यात्रा के दौरान चार्ल्स डिकेन्स लावेल (मैसाच्युसेट्स) गए जहाँ न्यू इग्लैण्ड के नए कपड़ा-निर्माताओ ने देश का पहला औद्योगिक नगर स्थापित किया था। वहां ज्यादातर नवयुवती महिलाएं और लड़कियाँ काम करती थीं जो डिकेंस को मूर्तिमान अच्छाई का अवतार ही प्रतीत होती थीं—सुखी, सन्तुष्ट और आदर्श व्यवहार वाली, अपने साफ और अच्छे टोपो, गरम लबादे और शाल वाली लड़कियां "अच्छी पोशाकें पहने हुई थीं किन्तु मेरे ख्याल से अपनी हैसियत से ज्यादा ऊँची नही। उस दिन मैंने विभिन्न कारखानो मे जो कर्मचारी देखे, मुझे याद नही आता कि उनमे से किसी के भी चेहरे पर मैंने दु:ख की छाया देखी हो।"

इस अंग्रेज यात्री ने कारखानो मे सुव्यवस्थित कमरो की, जिनमें से कुछ की खिड़कियों में फूल उग रहे थे, ताजी हवा आते रहने की, सफाई तथा सुविधाओ की प्रशसा की। महिला कर्मचारियो के लिए अधेड़ उम्र की महिलाओ की निगरानी में चलने वाले आवासो का और तीन अन्य आश्चर्यजनक चीजो का उसके मन पर बहुत असर पडा। ये चीजें थी, अनेक घरो में शामिलात पियानो बाजे थे, लगभग सब नवयुवतियां चलते-फिरते पुस्तकालयों की सदस्य थी और 'लावेल आफरिंग' नाम की एक पत्रिका प्रकाशित होती थी जिसमे फैक्ट्री कर्मचारियो के ही लेख तथा कहानिया छपती थी। इस औद्योगिक स्वर्ग पर सुखी मन से दृष्टिपात करते हुए डिकेंस ने इसकी इग्लैंड के कारखानो से तुलना की और "अपने देशवासियो से इस नगर तथा दुख के उन विशाल घरो के बीच फर्क पर विचार करने की प्रार्थना की।"

यद्यपि यह कहा जा सकता है कि सन् १८४२ मे भी फैक्ट्री मे काम करने वाली लड़कियों को बहुत ज्यादा घण्टे काम करना पड़ता था, उनके आवास-गृहो मे बहुत ज्यादा भीड रहती थी और उनका जीवन पूर्णत: पितृ-तुल्य फैक्ट्री मालिको की व्यवस्था और नियंत्रण में रहता था तो भी उत्साही डिकेन्स ने लावेल का जो चित्र खीचा है वह मनगढन्त नही था।

अन्य यात्रियो ने भी उसके आम अनुभवो की पुष्टि की है। उन्होने भी आनन्ददायक वातावरण, चलते-फिरते पुस्तकालयो और व्याख्यान भवनों के सास्कृतिक अवसरो तथा नवयुवतियों की अच्छी पोशाक के बारे मे लिखा है जो न केवल अपने सावधानी से संवारे हुए बालो पर साफ टोप ही पहनती थी बल्कि रेशमी मोजे पहनती थी और धूप के छाते लिए रहती थी। लावेल किसी को मनोरजक भले ही न लगता हो, जैसा कि फ्रासीसी यात्री माइकेल चेवालियर ने लिखा है किन्तु यह "साफ, अच्छा, शात और गम्भीर था।"

औद्योगिक क्रांति के इन प्रारम्भिक दिनो में लगता है कि कम-से-कम अमरीका के कुछ हिस्से यूरोप में इस युग के कुछ अभिशापो से बचे हुए थे। पहली कपडा मिले स्थापित करने वाले मैसाच्युसेट्स के पूजीपति कर्मचारियों को उन तकलीफो से बचाना चाहते थे जो विदेशो में फैक्ट्री प्रणाली के विकास के कारण मजदूरों को भुगतनी पड रही थी। वे अपने लिए मजदूर न्यू इग्लैड के किसानो में से और ज्यादातर औरतो और लडकियो में से लाना चाहते थे और आकर्षक परिस्थितियो के कारण उन्हे अपने मन-पसन्द मजदूर मिल भी गए। र्होड आइलैण्ड की मिलों मे, स्थिति बिल्कुल भिन्न थी जहा पूरे के पूरे परिवारो पति, पत्नी और बच्चो सब को नगर में आने के लिए प्रेरित किया गया और जो सब करघे व तकुए चलाया करते थे, उनका निष्ठुरता से शोषण किया जाता था। किन्तु लावेल की पृष्ठभूमि में विचार वस्तुतः एक महिला छात्रावास का था, जहा औरते पढने के बजाय मिलो मे काम करती थी।

उनके स्वास्थ्य ही नही बल्कि नैतिकता की भी रक्षा करने की पूरी कोशिश की जाती थी। उन्हे सख्त निगरानी में आवास गृहों में रहना पडता था जिनके द्वार रात को १० बजे बन्द कर दिए जाते थे। उन सब से गिरजा घर जाने की आशा की जाती थी। व्यभिचार जैसे नैतिक अपराधो की तो बात ही क्या है, गलत आचरण तथा नृत्य जैसे अपराधो में भी उन्हे नौकरी से अलग कर दिया जाता था, लेकिन जहा तक पुरुष कर्मचारियो का सम्बन्ध है, लावेल मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी ने यह व्यवस्था कर रखी थी कि "जो कोई पुरुष कर्मचारी महिला कर्मचारियो के साथ ठीक बर्ताव नहीं करेगा, या कम्पनी के अहाते में धूम्रपान करेगा या शराब पीएगा उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा।"

काम के घण्टे जरूर ज्यादा थे लेकिन वे उतने कष्टदायक नही थे, जितने

लगते है। करघो की देख-भाल इतना मुश्किल काम नही था, जितना कि फैक्ट्री के अन्य काम आगे चलकर हो गए और नवयुवतियो को आराम करने, पढ़ने, आपस मे बात करने और खिड़कियो मे रखे गमलो को पानी से सीचने का मौका मिल जाता था। अपनी खुराक और निवास का खर्चा चुकाने के बाद उनके पास अपने वेतनो में से मुश्किल से ही २ डालर प्रति सप्ताह बच पाता था किन्तु कृषक परिवारो के सदस्यो को, जिन्होने नकद आमदनी कभी देखी ही नही थी, यही रकम कारू का खजाना प्रतीत होती थी। इसे वे बैंक मे जमा करा देती थी और कहा जाता है कि लावेल की लडकियो का बैंको में ५०० डालर का औसत हिसाब रहा करता था।

इस प्रारम्भिक काल की परिस्थितियो तथा बाद के वर्षो की परिस्थितियो मे मुख्य भेद यह था कि मजदूर अब भी अपने आप को किसी भी प्रकार स्थायी रूप से काम पर लगा हुआ नही समझते थे। अधिकाश नवयुवतियाँ देहातो से लावेल मे कुछ ही वर्ष काम करने आती थी जिससे वे शादी के लिए आवश्यक पैसा जुटा सकें या ओहायो और नए पश्चिमी प्रदेशों मे स्कूल टीचर का काम करने के लिए पर्याप्त पैसा बचा सके। इसके अलावा अगर उन्हे काम पसन्द न हो या मन्दी के समय उन्हें काम न दिया गया हो तो वे आसानी से अपने गाव के घर में लौट सकती थी। मिलों के साथ उनका न तो ज्यादा सम्बन्ध था और न वे उन पर पूर्णत निर्भर करती थी।

तथापि इस प्रकार के जीवन की अपेक्षाकृत सुखद परिस्थितिया ज्यादा दिन नही रही। डिकेन्स की लावेल यात्रा के समय ही दूरगामी परिवर्तन होने लगे थे। जब कपड़ा मिलो में प्रतियोगिता बढ़ी तो मिल मालिको की पितृ-तुल्य देखभाल का स्थान सख्त नियन्त्रणो ने ले लिया जिनका मजदूरो के कल्याण से कोई सम्बन्ध नही था। मजदूरी की दरे घटा दी गई, काम के घण्टे बढा दिए गए और फैक्ट्री के काम में विभिन्न प्रक्रियाओ की रफ्तार बढाई गई। ११॥ घंटे से १३ घण्टे का दिन और औसतन ७५ घण्टे का सप्ताह कर दिया गया। महिला कर्मचारियो को १८४० के दशक के बाद के वर्षो में खुराक के खर्चे को निकाल कर १ ५० डालर प्रति सप्ताह मिल रहा था और उन्हें ४-४ करघो की देखभाल के लिए मजबूर किया जा रहा था जबकि १८३० के दशक मे वे सिर्फ दो करघो की देखभाल किया करती थीं। होलयोक मैसाच्युसेट्स में

एक मिल मालिक ने जब यह देखा कि उसके कर्मचारी "सुस्ती से काम कर रहे है क्योंकि वे नाश्ता करके आए हैं तो उसने आदेश जारी कर दिया वे नाश्ता करने से पहले काम पर आए। एक अन्य कारखाने के एजेण्ट ने कहा कि "मै अपने कर्मचारियों को बिल्कुल मशीन ही समझता हूँ।" मै जो कुछ भी उन्हें देता हुँ उसके लिए जब तक वे मेरे लिए काम कर सकते हैं मै उनसे काम लेता हू और जो कुछ मै उनमें से निचोड सकता हू, निचोड लेता हूँ।"

ये परिस्थितिया जब धीरे-धीरे बिगड़ती चली गईं तो पहले के सन्तोष का स्थान कटुता भरी शिकायतो ने ले लिया। 'लिन रिकार्ड' ने लिखा कि "ये सामन्ती और उग्र स्वभाव के मालिक महिला कर्मचारियों पर बुरी तरह धौस जमाते हैं, मानो उनके स्वामी हो।" मजदूरों के प्रबल मित्र आरेस्टेस ब्राउनसन ने लिखा : "मजदूरों का यह विशाल समुदाय पहले से कभी भी बहतर नहीं है बल्कि उसके स्वास्थ्य, आत्मा और नैतिकता का भारी ह्रास हुआ है। कपडा मिलो में मजदूरों के हितो की वकालत करने वाला मजदूरों का एक नया अखबार 'वायस आव इण्डस्ट्री' मालिको की नीति पर प्राय. ही यह आक्षेप किया करता था। ऐबट लारेंस को लिखे गए एक खुले पत्र में इस अखाबर ने लिखा : "तुम्हारी फैक्ट्री प्रणाली यूरोप की फैक्ट्री प्रणाली से बदत्तर है। तुम अपने फैक्ट्री मजदूरो को गरीब अंग्रेज मजदूरो के तहखाने और बरसातियो से अच्छे सोने के कमरे प्रदान नही करते हो। चौकीदार ६ व्यक्तियो के लिए सिर्फ एक कमरा देने पर मजबूर है और गरम रहने वाली और घुटन वाली एक बरसाती में प्राय: १२ से १६ तक महिलाए घुसा दी जाती है। यूरोप की अपेक्षा यहां तुम अपनी फैक्ट्री रूपी जेलों में कर्मचारियो को दो-तीन घण्टे ज्यादा समय तक बन्द रखते हो...तुम उन्हे भोजन करने के लिए सिर्फ आध घण्टे की छुट्टी देते हो...तुम उन्हें मशीनो पर इतने ज्यादा अरसे तक खड़े रहने के लिए मजबूर करते हो कि उनकी नसे फूल जाती है, पैर सूज जाते है तथा अन्य अनेक बीमारिया हो जाती है जो जान लेकर ही जाती है और ये बीमारिया किसी-किसी को नही प्राय. सभी को रहती है।"

फैक्ट्री में काम करनेवाली लडकियो ने स्वयं ही "हमारे लिए तैयार किए गए जुए पर" अधिकाधिक रोष प्रकट किया और मजदूरी में कटौती तथा काम के घण्टों में वृद्धि का मुकाबला करने की कोशिश की। हमने देखा कि

१८३० के दशक में भी उन्होंने हड़तालों का परीक्षण किया था और अब एक दशक बाद भी उन्होंने वेतन बढ़ाए बिना अतिरिक्त करघों पर काम करने से इंकार कर देने और काम के घण्टे घटाने की माँग करने का निश्चय किया। किन्तु इस उद्देश्य से वे कोई प्रगति नहीं कर सकीं, फलस्वरूप अपने गाँव के घरों में लौटने लगीं। तथाकथित "गुलामों के सौदागर" जो वरमौण्ट और न्यू हैम्पशायर तक के देहातों में अपना जाल फैलाने के लिए घूमा करते थे, आसान काम और अधिक मजदूरी का प्रलोभन देकर अब मिल कर्मचारियों की भरती नहीं कर पाते थे क्योंकि सब जान गए थे कि ये सब वायदे झूठे हैं; न्यू इंग्लैंड की किसान लड़कियां मिलें छोड़-छोड़ कर जा रही थीं।

तथापि उनका स्थान मजदूरों के एक ऐसे नये वर्ग ने लिया जो अपने हितों की रक्षा में उनसे भी कमजोर साबित हुआ। सदी के मध्य में आव्रजन की बड़ी लहर आने से आयरिश और जर्मन लड़कियों तथा कुछ फ्रांसीसी कैनेडियनों की बाढ़ सी आ गई जिनके पास मिलों में काम करने के सिवा कोई चारा ही न था चाहे उन्हें कितना ही कम वेतन मिले और कितना ही ज्यादा काम क्यों न करना पड़े। इन परिस्थितियों में हालत सुधरने के बजाय और बिगड़ गई। सस्ते प्रवासी मजदूरों के आगमन से, जैसा कि मैसाच्युसेट्स के विधान-मण्डल की एक समिति ने लिखा है "कल कारखानों वाले स्थानों में समाज की हालत बिल्कुल बदलकर दयनीय होती जा रही थी।"

उद्योगीकरण में वृद्धि से काम की हालतों का क्या हाल हुआ इसका ज्वलन्त उदाहरण यद्यपि कपड़ा मिलों में मिलता है, फिर भी अन्य उद्योग-धन्धों में भी हालत वैसी ही थी। १८३० के दशक में लिन के जूता निर्माताओं को बहुत स्वच्छन्दता थी। उनके अपने वर्कशाप थे और अगर धन्धा ठप्प हो जाता था तो वे खेती या मछली-पालन का काम करने लगते थे। मजदूर के जीवन के बारे में शायद एक अत्यधिक काव्यमय वर्णन में कहा गया है कि "वसन्त ऋतु के आगमन पर उनकी आशाओं का क्षितिज फैल जाता था। उसे कम कपड़े और कम ईंधन की जरूरत होती थी! बैंक अधिक आसानी से ऋण दे देते थे. स्वाम्पस्कॉट में हैडॉक (मछली) इतनी सस्ती मिलने लगती थी कि उसकी कीमत उद्धृत करने लायक नहीं होती थी; लड़के डैण्डेलियन (एक

प्रकार की सब्जी) खोदकर निकाल लिया करते थे और यदि उस विचार ने वसन्त ऋतु के लिए सारे जाडो को सूअर सम्हाल कर पाल रखा हो तो वसन्त ऋतु में सूअर का मास और डैण्डेलियन उसके मेनू में कोई तुच्छ चीजे नही होती थी। किन्तु मास्टरो ने निर्माण पर अपना नियन्त्रण शनै. शनै. कडा कर दिया। जूते बनाने वालो ने धीरे धीरे देखा कि उन्हे अपनी निजी वर्कशापो से और खाली समय में मछली पकडने और खेती करने के कामों से घसीट कर नई फैक्ट्रियो में धकेल दिया गया है, जिनकी मशीनी प्रक्रियाओ से वे अब कोई प्रतियोगिता नही कर सकते।

'दिहाडिये मोचियो के अखबार 'दि-औल' के पन्नो में उन निर्माताओ के खिलाफ वार-बार रोष प्रकट किया गया जो कहने को तो मजदूरो को गुजारे लायक मजदूरी देते थे "किन्तु अन्य उपायो से उन्हे बिल्कुल हीन कर देते थे और उनका वह आत्मसम्मान भी जाता रहता था, जिसके कारण मिस्त्री और मजदूर ससार में गौरवशाली बने हुए थे।" लिन के विरोध प्रदर्शनकारी मोचियो ने बडे शहरो मे अपने साथी कारीगरो को मिलकर कार्रवाई करने और यह दिखा देने का आह्वान किया कि "हम किसी विदेशी तानाशाह के दास या विनीत प्रजा नही, बल्कि स्वतन्त्र अमरीकी नागरिक है।" इस आन्दोलन का कुछ परिणाम नही निकला। एक प्रकार की जिन्दगी निश्चित रूप से ढल रही थी, मोची और कपडा मजदूर फैक्ट्री प्रणाली के मजबूत शिकजे मे बुरी तरह फस गए थे।

छापेखाने के उद्योग मे भी नए प्रेसो के आविष्कार तथा भाप की शक्ति के उपयोग के कारण क्रॉंति हो रही थी। इन घटनाओं से न केवल आदमी वेकार हो रहे थे और मजदूरी घट रही थी बल्कि इससे मुद्रको का अपने ही व्यापार पर से नियन्त्रण हट कर बाहर के प्रबन्धको के हाथ में जाने लगा। मालिक व कर्मचारी के बीच व्यापक खाई के कारण एक अत्यन्त स्वतन्त्र व्यवसाय भी तबदील हो गया। उनके संगठन के लम्बे इतिहास ने मुद्रको की सहायता की और वे अप्रैण्टिसो तथा काम की हालतो के बारे मे यूनियन के नियमो पर काफी सफलता से अमल करवाते रहे किन्तु नई ताकतो का उन्हें भी सामना करना पड रहा था जिसके कारण उन्हें अपनी मजदूरियाँ अथवा अपनी आम हैसियत को कायम रखने मे अधिकाधिक कठिनाई हो रही थी।

अन्य व्यवसायो के अलावा शक्ति-चालित करघो ने हाथ करघा बुनकरों की हालत खराब कर दी उनकी मजदूरी, जो पहले भी ज्यादा नही थी १८४० के दशक के मध्य तक आधी रह गई, दिहाडिये टोप-निर्माताओ के वेतन भी जिन्हे अपेक्षाकृत अच्छे पैसे मिलते थे, १८३५ और १८४५ के मध्य १२ डालर प्रति सप्ताह से घटकर ८ डालर प्रति सप्ताह रह गए और जर्मन आवासियो के, जो बहुत तेज, खराब और बहुत ही कम मेहनताने पर काम करते थे, थोक उत्पादन से उत्पन्न प्रतिस्पर्धा मे फर्निचर बनाने वालो को ५ डालर साप्ताहिक कमाने के लिए भी अपने काम के घण्टे बढाने पडे।"

सिर्फ न्यू इंग्लैण्ड की कपड़ा मिलो मे ही नही, किन्तु समस्त उद्योग में मज़दूरियो में कटौती जितनी मशीनो के प्रयोग से हुई उतनी ही सस्ते मज़दूरो की ज्यादा सप्लाई से हुई। हमारे राष्ट्रीय इतिहास की प्रथम आधी सदी मे करीब दस लाख आव्रजक अमरीका आए किन्तु १८४६ से १८५५ तक के अकेले ही दशक मे ३० लाख आव्रजक बाहर से आए। आयरलैण्ड मे अकाल पडने और यूरोप मे क्रातिकारी विद्रोहो का सख्ती से दमन किए जाने के कारण अधिकाधिक सख्या मे मज़दूर अटलाटिक सागर के इस पार आ रहे थे और इन नवागन्तुको मे अब किसानो के बजाय मिस्त्रियो और मजदूरो की सख्या बढती जा रही थी। वे पूर्व में बसने की कोशिश करते थे, तेजी से बढते हुए शहरो और उद्योगो के केन्द्रो की ओर खिचते थे और सभी काम जिनमें दक्षता की विशेष आवश्यकता नही होती थी उससे कही कम मजदूरी पर कर लेते थे, जिसे पहले से रह रहे कारीगर और मिस्त्री अच्छे जीवन यापन के लिए आवश्यक समझते थे। शायद पहली बार आव्रजन के कारण मजदूरो की बहुतायत हो रही थी जिसने सस्ती जमीन और पूर्व से पश्चिम में सीमा की तरफ मजदूरो के प्रवास की प्रवृत्ति के असर को भी मिटा डाला था। यह एक ऐसा सिलसिला चल पड़ा था, जो आगे चलकर १८८० और १८६० के दशको मे और भी स्पष्ट हुआ जब कि आव्रजन अब से भी ज्यादा बढा और दक्षिण-पूर्व यूरोप के नादान, अदक्ष और गरीब किसानों से ज्यादा सख्या मे काम लेने की प्रवृत्ति की झलक १८५० के दशक मे ही मिल रही थी।

समुद्रतट क निकटवर्ती शहरो मे मजदूरो की सामान्य हालत से इस अव्रजन के प्रभाव का पूरा खाका सामने आ जाता है। १८५० के दशक के प्रारम्भ

न्यूयार्क टाइम्स और न्यूयार्क ट्रिब्यून में अलग अलग एक मज़दूर परिवार के बजट का उल्लेख किया गया। दोनों बजटो में मकान किराया, भोजन, ईंधन और कपड़े की न्यूनतम ज़रूरतों के लिए कम से कम ११ डालर प्रति सप्ताह के खर्च का अनुमान लगाया गया। इस बजट पर टिप्पणी करते हुए होरेस ग्रीले ने कहा : "क्या मैंने मजदूरों के लिए बहुत अधिक सुविधाओं की कल्पना की है ? उनके लिए आमोद-प्रमोद, आइसक्रीम, स्वादिष्ट भोजन और ताजी हवा लेने के लिए नदी किनारे रविवार को सैर के लिए पैसा कहाँ से आएगा ?" इमारती व्यवसाय के मज़दूरों के अलावा, जिनके अपेक्षाकृत अधिक वेतन करीब-करीब इस बजट के बराबर थे, शायद ही कोई शहरी मजदूर ऐसे होंगे जो इस बजट की राशि के पास तक भी आते हो। ऐसे भाग्यशाली न तो फैक्ट्री मज़दूर थे, और न ही कपड़ा उद्योग में काम करने वाले स्त्री या पुरुष कर्मचारी और आम मज़दूर तो निश्चित ही नहीं थे। अपना बजट प्रकाशित करने से कुछ पहले ग्रीले ने वस्तुतः अनुमान लगाया था, कि "हमारे शहर में सामान्य मज़दूरो की औसत आय, जिनकी सख्या हमारी आबादी की दो-तिहाई से कम नही है, परिवार के प्रति सदस्य के हिसाब से मुश्किल से ही एक डालर प्रति सप्ताह से ज्यादा बैठती है।"

उस समय के वर्णनो में इस बात की पर्याप्त साक्षी मिलती है कि न्यूयार्क, फिलाडेल्फिया और बोस्टन जैसे शहरो में गन्दी बस्तियां बनने में अपर्याप्त मजदूरी का कितना अधिक योग रहा। अमीरो के आरामदेह, विशाल और सजे-सजाए बंगलो के मुकाबले अत्यन्त भीड़भाड़ सफाई की सुविधाओं का अभाव, गन्द और बीमारी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती थी। न्यूयार्क में १८,००० आदमी तहखानो में रहते थे। ये लोग सील वाले अंधेरे, गैर-हवादार एक-एक कमरे में ६ से २०-२० आदमी तक स्त्री-पुरुष व बच्चे सभी एक साथ ठुसे रहते थे। बदनाम फाइव प्वाइण्ट्स में सैकड़ो परिवारो को टूटी-फूटी इमारतों मे ठूंस दिया गया था; उनके लिए बाहर शौचालय ही सफाई की एकमात्र सुविधा थे। बोस्टन में भी ऐसी ही बुरी गन्दी बस्तियां थी। आन्तरिक स्वास्थ्य पर १८४९ में एक समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा . "यह सारा जिला मानो मानव प्राणियो का एक छत्ता है जिसमें न सुविधाएं है और न सामान्य आवश्यक चीजे। बहुत सी जगह उन्हे जानवरो की तरह लिंग, आयु

और भद्रता का ख्याल किये बिना ही एक ही जगह ठूंस दिया जाता था। युवा स्त्री-पुरुष एक ही कमरे में साथ-साथ सोते थे और कभी-कभी तो पत्नी, पति, भाई और बहन सब एक ही बिस्तर में सोते थे।"

टामस जैफर्सन ने जब यह कहा था कि बडे शहरो की भीड शुद्ध सरकार के निर्माण में उतना ही योग देती है जितना एक फोडा मानव शरीर की शक्ति मे योग देता है, तब उन्होने जिस स्थिति की कल्पना की थी वह आ गई प्रतीत होती थी। स्वय मजदूर आव्रजन को "गरीब और पराश्रित आबादी का जनक" कह कर उसकी मुखालफित करने लगे। वायस आव इण्डस्ट्री ने लिखा कि "इन आव्रजको के अपने देश मे जो बुरी हालत थी उसने उन्हें अमरीका मे शोषण का ज्यादा लाचार शिकार बना दिया और मालिक जो कुछ भी उन्हे दे, उसी पर १४ से १६ घण्टे तक काम करके वे सन्तुष्ट थे।"

उद्योगो की स्थापना और बढ़ते हुए आव्रजन ने काफी हद तक मजदूरो को सगठित होने से रोके रखा। १८३७ के आतक से पूर्व मजदूरो मे जो हौसला था उससे वे उस वक्त के मुकाबले की कोई राजनीतिक या ट्रेड यूनियन गतिविधि नही कर सके। उद्योगो से नि सृत नई शक्तियो के आगे स्तब्ध मजदूर बेतहाशा पलायन के मार्ग ढू ढ रहे प्रतीत होते थे। सगठन को करीब-करीब भुला दिया गया। इसके बदले मजदूर उन दिनो के सामान्य सुधार आन्दोलनो मे उलझ गए जो अमरीकी समाज में मशीनो तथा कारखानो द्वारा लाए गए परिवर्तनो के खिलाफ मध्यम वर्गीय, मानवता के नाम पर किए गए विद्रोह के प्रतीक थे। १८४० का दशक मुख्य रूप से अस्पष्ट, आदर्शवादी तथा काल्पनिक सुधार थे जिनमें से प्रत्येक को उसके उत्साही प्रवर्तक उस जमाने की सब बुराइयो का रामबाण इलाज बतलाते थे। कम्यूनिज्म और भूमिसुधार, गुलामी की समाप्ति और स्त्रियो के अधिकार के लिए आन्दोलन, मद्यपान में संयम और शाकाहार ... यानी सामाजिक परिवर्तन के उद्वेग के प्रतीक आन्दोलन और प्रचार का कोई अन्त नही था।

सुधारक स्वयं अपने विभिन्न उद्देश्यों के लिए मजदूरो का समर्थन पाने की कोशिश करते रहते थे। अगर मजदूरो के मामलो पर विचार करने के लिए कभी कोई सभा या सम्मेलन बुलाया जाता था तो उसमे इनके झुण्ड-के-

झुण्ड चले आते थे और कभी-कभी उन पर पूरी तरह हावी हो जाते थे। १० घण्टे के दिन का फिर से आन्दोलन शुरू करने के लिए १८४४ में न्यू इंगलैण्ड के मज़दूर ऐसोसियेशन की जो पहली औपचारिक सभा बुलाई गई थी, उसमें सुधारकों की बड़ी और प्रभावशाली जमात के मुकाबले मज़दूर सोसाइटियो के प्रतिनिधि तो इक्के-दुक्के ही थे। ब्रुक फार्म के जार्ज रिपले, होरेस ग्रीले और अल्बर्ट ब्रिसबेन, वेण्डल फिलिप्स और विलियम लायड गैरीसन, चार्ल्स ए० डाना, विलियम एच-चैनिंग और राबर्ट ओवन अपने नए शिष्यो की उत्सुकतापूर्ण तलाश मे सभी वहा मौजूद थे। "उत्पादक वर्ग की उन्नति, औद्योगिक सुधार तथा सब प्रकार की गुलामी और दासता के उन्मूलन में दिलचस्पी रखने वाले हर किसी के लिए" बडे जोश और उत्साह से सभा के द्वार खोल दिए गए। इस प्रकार की हरकतो के पीछे प्रेरक भावना कितनी भी उदार क्यो न हो, वह अत्यन्त अस्पष्ट और अनिश्चित थी।

इस जमाने में मज़दूर "ऐसोसियेशन-वादियो" के लुभावने वायदो के चक्कर में आ गए। स्वतंत्र तथा समाजवादी समाजों का निर्माण करके, जिनके सब सदस्य एक सामान्य उद्देश्य के लिए काम करेंगे, ऐसोसियेशनवादियो ने औद्योगिक क्राति के प्रभावो से बचने का रास्ता प्रदान करने का वचन दिया और पहले जमाने की सरल सोसाइटिया फिर से स्थापित करने की आशा प्रकट की। यह विचार मुख्यतः चार्ल्स फोरियर के काल्पनिक समाजवाद की उपज थी—व्यवस्थित सगठन प्रणाली वाले इस वाद का उद्देश्य मज़दूरो की हैसियत को ऊँचा करना और उत्पादन बढाना दोनो थे और इसका अमरीका में सूत्रपात ऐल्बर्ट ब्रिसबेन ने किया था। १८४० में ब्रिसबेन ने 'सोशल डेस्टिनी आव मैन प्रकाशित किया, जिसमें फोरियर के कार्यक्रम का खुलासा किया गया था किन्तु ऐसोसियेशन के विचारो के प्रचारो में उसके वे लेख ज़्यादा प्रभावशाली साबित हुए जो वह न्यूयार्क ट्रिब्यून में होरेस ग्रीले द्वारा प्रदान किए गए स्तम्भ में लिखा करता था।

ग्रीले वस्तुतः समाजवाद के इस सयमी रूप को विकसित करने में, जिसे वह मजदूरो की भलाई के लिए अपने सामान्य समर्थन का एक अंग समझता था, यथासंभव सब कुछ कर रहा था। वह एक आदर्शवादी यांकी था जो किसान का लडका होते हुए मुद्रण व्यवसाय मे प्रवेश करने के लिए न्यूयार्क में

आया था। मज़दूरो की सभाओ में वह सुपरिचित था। उसके गोल चाद से दाढी-मूछ वाले चेहरे को हज़ारो मजदूर जानते थे। उसने कहा: "जिनके पसीने से सब चीजें और ऐश्वर्य का सामान बनता और उपलब्ध होता है उनको इन चीजो में इतना कम हिस्सा क्यो मिले ?" मज़दूरो पर औद्योगिक क्राति का जो शोषणकारी प्रभाव पड रहा था उसे वह शायद अपने समकालीन सार्वजनिक नेताओ से ज्यादा अच्छी तरह समझता था और यह महसूस करता था कि समाज का स्थायी कल्याण उनके सगठन पर निर्भर करता है। उसने ट्रिब्यून के कालम न केवल ब्रिसबेन के लिए खोल दिए, बल्कि वह समाजवाद पर एक यूरोपीय सवाददाता कार्ल मार्क्स द्वारा भेजी गई साप्ताहिक चिट्ठी भी प्रकाशित किया करता था।

ट्रिब्यून के ज़रिये फोरियरवाद के बहुत से अनुयायी बन गए और ब्रिसबेन द्वारा उत्तर अमरीकी ऐसोसियेशन के लिए अपनी योजना पेश किए जाने से भी पहले मजदूरो के एक ग्रुप ने पश्चिमी पेंसिलवेनिया में सिलवेनिया ऐसोसियेशन बना लिया। अन्य वर्गो ने भी इसी परीक्षण का अनुकरण किया और ब्रुक फार्म के आदर्शवादी सस्थापको को भी, जिनकी बस्ती उस समय के रीति-रिवाजो के खिलाफ एक बौद्धिक विद्रोह की प्रतीक थी, फोरियर पन्थी ऐसोसियेशन के स्वरूप और सगठन को अपनाने के लिए राजी कर लिया गया। कुल मिलाकर १८४० के दशक में कोई ४० समाज बनाए गए जिनके शायद ८००० सदस्य थे।

इन्हें सफलता नही मिली और एक-एक करके खत्म हो गए। उत्तर अमरीकी ऐसोसियेशन ने १८५४ मे काम बन्द कर दिया। सामुदायिक रहन-सहन और सामुदायिक उत्पादन व्यावहारिक साबित नही हुआ। न ही उनसे किसी भी प्रकार मज़दूरो की जरूरतें पूरी हुईं। उत्साहपूर्ण प्रचार के बावजूद उद्योगीकरण का जवाब उसके असर से बचने की कोशिश करना नही था। ऐसोसियेशन वादियो के आशामय स्वप्न आर्थिक और सामाजिक ताकतो की, जिनका न तो आसानी से मुकाबला किया जा सकता था और न जिनका रुख मोड़ा जा सकता था, चट्टान पर टकरा कर चूर-चूर हो गए।

ऐसोसियेशन जब खत्म हो गए तो मज़दूरो के हित के लिए उपभोक्ता और उत्पादको, दोनो की सहकारी समितियो के रूप मे उनका आशिक

वक. : प्रदान करने की कोशिश की गई। सहकारिता के समर्थको ने कहा : "उद्योग की दिशा और लाभ उत्पादको के हाथ में रहने चाहिए।" मैसाच्युसेट्स, न्यूयार्क तथा देश के अन्य भागो मे संरक्षणात्मक यूनियनें स्थापित की गईं जिन्होने स्वयंभू कारखाने स्थापित करने का काम हाथ मे लिया। इनमें बना सामान यूनियन के सदस्यो के लाभ के लिए थोक कीमतों पर बेचा जाता था। अन्य अनेक सहकारी समितियां भी कायम हुई, जैसे जर्नीमैन मोल्डर्स यूनियन फाउण्ड्री, जिसने सिनसिनाटी में अपना कारखाना लगाया और बोस्टन की टेलर्स ऐसोसियेटिव यूनियन और न्यूयार्क में शर्ट स्युअर्स को-आपरेटिव यूनियन डिपो। किन्तु ये चाहे उपभोक्ताओं की सहकारी समितियां हो या उत्पादको की, प्रारम्भ की ये सोसाइटियां ऐसोसियेशनो से ज्यादा सफल नही रही। इनकी विफलता के अनेक कारण थे किन्तु बुनियादी तौर पर अमरीकी रहन-सहन और शायद अमरीकियो का स्वभाव सहकारिता के विकास के लिए उपयुक्त नही था। इसके बजाय अमरीकी प्रतियोगिता तथा एक नवीन विकासमान देश में अवसरो को अधिक से अधिक लाभ उठाने में व्यक्तिगत प्रयत्नो को ज्यादा पसन्द करते थे। सहकारिता ने भविष्य में भी बार-बार सिर उठाया और आंशिक सफलता भी प्राप्त की किन्तु न तो १८४० के दशक में और न बाद मे ही यह मजदूरो के सामने विद्यमान समस्याओं का कोई वास्तविक समाधान निकाल सकी।

एक अन्य और महत्वपूर्ण सुधार, जिसे मजदूरो का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ कृषिक्वाद था। शुरू की मजदूरो की पार्टियो के खात्मे का आंशिक कारण यह भी था कि कृषि के बारे मे स्किडमोर के क्रांतिकारी विचारो को अपनाने के कारण उनमें आन्तरिक संघर्ष पैदा हो गया था और बाहर से आक्षेप किए जाने लगे थे। किन्तु नई नीति मे समस्त सम्पत्ति पर चोटें नही की जाती थी, जैसी कि स्किडमोर ने "सम्पत्ति के लिए मानव का अधिकार" में की थी १८४० और १८५० का कृपिवाद-कहीं ज्यादा नरम था। इसका सिद्धान्त यह था कि लोगो का वर्तमान सार्वजनिक भूमि पर स्वाभाविक अधिकार है और वह १६० १६० एकड के प्लाटो के टुकडो के रूप में समान रूप से सब को बाट दी जानी चाहिए जो अहस्तान्तरणीय हो और जिसे ऋण चुकाने के लिये भी जब्त न किया जा सके। यह कहा गया कि इस कार्यक्रम के जरिये मजदूरो

को राष्ट्रीय सम्पत्ति में उचित हिस्सा मिलेगा और वह पूजीपतियो पर पूरी तरह निर्भर रहने से मुक्त रहेंगे ।

इस सुधार का मुख्य प्रतिपादक जार्ज हेनरी इवान्स था । न्यूयार्क मे मज़दूरो की पार्टी के भंग हो जाने के बाद १८३६ में वह स्वास्थ्य की खराबी के कारण रिटायर होकर न्यूजर्सी के फार्म मे चला गया था और फिर १८४४ मे ही अपने नए सदेश के साथ प्रकट हुआ । अपने पुराने अखबार 'वर्किंगमेन्स ऐडवोकेट' को फिर चालू करके वह मौके-बे-मौके कृषिवाद का ही राग अलापता रहा और उसने अपने कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिये कांग्रेस से कार्रवाई की माग की । ऐडवोकेट में उसने लिखा : "पहला काम यही करने का है । इसके बिना किसी भी बड़े सुधार की कोशिश करना उसी तरह बेकार है जैसे औजारो के बिना काम पर जाना । फालतू मिस्त्रियो को पश्चिम के कस्बो में, जहा बीचो-बीच बड़े-बड़े सार्वजनिक चौक और सार्वजनिक भवन है, अपनी-अपनी ज़मीनो पर भेज दीजिए जिससे जो लोग शहरो मे रह जाए, उन्हें पूर्ण रोजगार मिले......" मुश्किल से ही मज़दूरो की कोई सभा ऐसी होती होगी, जिसमे वह अपनी योजना पेश न करता हो, इस बात की परवाह किए बिना ही कि अगर सभव हो तो भी क्या मजदूर यकायक अपने खूंटो को छोड़कर दूर पश्चिम में खेती करने के लिये जाना पसन्द करेंगे ?

१८४५ में राष्ट्रीय सुधार ऐसोसियेशन की स्थापना उसकी गतिविधियों की चरम परिणति थी । अपने पहले के अनुभवो के कारण वह तीसरी पार्टी की राजनीतिक कार्रवाइयो मे अविश्वास करने लगा था और उसके नए संगठन का उद्देश्य सार्वजनिक पद के लिए खड़े होने वाले सब उम्मीदवारो से यह शर्त स्वीकार कराना था कि मज़दूरो के वोटो के बदले वे उसके कार्यक्रम का समर्थन करेंगे। यह वही तरीका था जिसे आधी सदी बाद अमरीकी श्रमिक संघ ने अपनाया, अर्थात् अपने मित्रों को पुरस्कृत करो और दुश्मन को सजा दो । इवान्स यह दिखलाना चाहता था कि कृपिवादी जो कुछ कहते है, वह करना भी चाहते है । नेशनल रिफार्म ऐसोसियेशन की सदस्यता की प्रतिज्ञा मे कहा गया था : "हम, जिनके नाम यहां दर्ज है और जो मनुष्य को जमीन को उसका स्वाभाविक अधिकार दिलाना चाहते है, गम्भीरतापूर्वक शपथ लेते है कि हम किसी ऐसे आदमी को किसी भी विधायक पद के लिए वोट नही

देंगे जो यह लिखित वचन नहीं देगा कि चुने जाने पर वह अपने प्रभाव का उपयोग राज्यों तथा अमरीका में सार्वजनिक ज़मीन की आगे सौदेबाज़ी होने से रोकने में और उस जमीन को वस्तुतः उस पर बसने वालो के मुफ्त उपयोग के लिए रिजर्व करवाने में ही करेगा।"

यद्यपि इस कायक्रम का समर्थन सिर्फ मजदूर ही नही कर रहे थे तो भी नेशनल रिफार्म ऐसोसियेशन के साथ उनके निकट सम्बन्ध मूल केन्द्रीय समिति की सदस्यता से ज़ाहिर हो जाता है। इसमें चार मुद्रक, दो मोची, एक कुर्सी बनाने वाला, एक खाती, एक लुहार, एक जिल्दसाज, एक मशीनचालक, एक चित्रो के फ्रेम बनाने वाला और एक कपड़े बेचने वाला शामिल था। इसके अलावा इवान्स का १८३० के दशक के जॉन कैमरफोर्ड और जान फेरल जैसे मजदूर नेताओ से सम्बन्ध था, जो क्रमश न्यूयार्क मे जनरल ट्रेड्स यूनियन और फिलाडेल्फिया ट्रेड्स यूनियन के अध्यक्ष रहे थे। १८३७ के आतंक के बाद फिर से प्रकाशित होने वाले मज़दूरो के नए अखबारो ने भूमि सुधारो को अपनी एक बुनियादी माँग का रूप दिया।

पूर्वी राज्यो में पूजीपतियो तथा मालिको ने इस आन्दोलन का जोरदार विरोध किया। उनके एक प्रवक्ता ने काँग्रेस मे कहा: "अपनी नीति से तुम हमारे महान निर्माण उद्योगों पर प्रहार कर रहे हो......तुम हमारे हजारों निर्माताओ तथा मज़दूरो को बेकार कर रहे हो... .. तुम वास्तविक जायदाद की कीमत घटा रहे हो! तुम हमारे उत्पादक मजदूरो को मुफ्त जमीन और रेलो मे मुफ्त सफर का भ्रष्ट वायदा देकर उन्हे अपने पुराने घरों से दूर घसीट ले जाना चाहते हो और इस प्रकार हमारी आबादी घटाना और फलस्वरूप पुराने राज्यो में बच रहने वाले लोगो का बोझ बढ़ाना चाहते हो।" किन्तु इस आन्दोलन के समर्थन में पश्चिम के किसान व अन्य प्रवासी पूर्व के मज़दूरो से मिल गए "अपने वोट से अपने लिए फार्म प्राप्त करो" के आकर्षक नारे के साथ नेशनल रिफार्म ऐसोसियेशन काफी प्रगति करता प्रतीत हुआ।

इस कार्यक्रम से १८४० के दशक के मजदूरो को लाभ नहीं हुआ और औद्योगिक उत्पीड़न से उनको राहत देने में इसकी उपयोगिता भी संदिग्ध थी। किन्तु इवान्स के आन्दोलन का सीधा परिणाम यह हुआ कि सन् १८६२ में होमस्टेड ऐक्ट पास हुआ। इसके मातहत उन्हे जमीन पर अहस्तान्तर-

णीयता और कर्ज की हालत में जब्ती से मुक्ति का अधिकार तो नही मिला किन्तु सब वास्तविक प्रवासियों को मुफ्त जमीन देने की व्यवस्था जरूर हो गई।

इस सदी के मध्य में जितने मानवतावादी आन्दोलन किये गए उनमे भूमि-सुधार का आन्दोलन अन्य बहुत-से आन्दोलनो की अपेक्षा मजदूरो के लिए ज्यादा हितकारी था। इसका सर्वाधिक तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि १० घण्टे के दिन के लिए पुन आन्दोलन छेडा गया। १८३० के दशक में कारीगरो और मिस्त्रियो के लिए तो प्राय: इसकी व्यवस्था हो गई थी किन्तु फैक्ट्री कर्मचारियो पर इसका कोई प्रभाव नही पड़ा था। नया आन्दोलन मुख्यत मजदूरो के इस नए वर्ग के लाभ के लिए था। पहले के आन्दोलन की तरह इसने ट्रेड यूनियन आन्दोलन की शक्ल अख्त्यार नही की—क्योकि फैक्ट्री कर्मचारी संगठित नही थे—बल्कि इसने राज्य विधानमडलो पर निजी उद्योग में काम के अधिकतम घण्टे तय करने के लिए राजनीतिक दवाव डाला। नेशनल रिफार्म ऐसोसियेशन के स्वरूप में काफी परिवर्तन भी किया गया, जिससे १० घण्टे दिन की माग को उसका एक सहायक स्तम्भ बनाया जा सके और इसे मजदूरो की अन्य ऐसोसियेशनो ने भी, जिनकी स्थापना इस विशेष उद्देश्य के लिए ही की गई थी, अपना लिया।

इसके लिए सबसे लम्बा सघर्ष मैसाच्युसेट्स में चला जहाँ कपड़ा उद्योग के विकास के कारण सुधार की सबसे ज्यादा जरूरत पडी और जहा सुधार का विरोध भी सबसे अधिक हुआ। सब स्थानीय ऐसोसियेशनों को मिलाकर एक संयुक्त कार्रवाई का आह्वान सबसे पहले सन् १८४४ में किया गया जिसकी बदौलत न्यू इंग्लैण्ड वर्किंगमेंस ऐसोसियेशन की स्थापना हुई। फोरियरवादियो तथा भूमि सुधार के पक्षपातियो दोनो ने इस सगठन का नियन्त्रण अपने हाथो में लेने की कोशिश की और कुछ दिनो तक लगा कि इसने मज़दूरो का ध्यान १० घण्टे के प्रश्न से हटा दिया है किन्तु फिर भी इस सुधार के पक्ष में आदोलन ज़ोर पकडता ही गया। याचिको की भरमार हो जाने के बाद (लावेल से आई हुई एक याचिका १३० फुट लम्बी थी और उस पर ४,५०० दस्तखत थे) मैसाच्युसेट्स की वड़ी अदालत सरकारी तौर पर जाच कराने के लिए बाध्य हुई।

इसकी समिति ने रिपोर्ट दी कि कपड़ा मिलो में काम का दिन ऋतु के मुताबिक ११ घण्टे २४ मिनट से लेकर १३ घण्टे ३१ मिनट तक होता है और इसमें कोई सन्देह नही कि काम के कम घण्टों और भोजन के लिए अधिक समय मिलने से मजदूरो को लाभ होगा। इसने दृढता से यह भी कहा कि जब कभी सार्वजनिक सदाचार या समाज की भलाई खतरे मे हो तब काम के घण्टों का नियमन करना विधानमण्डल का अधिकार और कर्तव्य है। किन्तु इस प्रकार के पूर्व-कथनों के बावजूद इस समिति ने ज्यादातर इस तर्क के आधार पर कि उद्योग राज्य से बाहर चले जाएगे, यही कहा कि कोई कार्रवाई न की जाए। विधान सम्बन्धी जिम्मेदारी को दरकिनार करते हुए समिति ने कहा : "इसका इलाज हमारे पास नही है। इसके लिए हमें कला और विज्ञान के उत्तरोत्तर सुधार, मानव की किस्मत के अधिक कीमती अंकन, पैसे के प्रति कम प्रेम और सामाजिक सुख तथा बौद्धिक उत्कृष्टता की प्राप्ति के प्रति अधिक उत्साह युक्त प्रेम की ओर निहारना होगा।"

फैक्ट्री कर्मचारियो ने रिपोर्ट को "औद्योगिक इजारेदारी के प्रति दब्बूपन और गुलामी की प्रतीक" बताकर उसकी निन्दा की और ऐसा सघर्ष छेडा जो राज्यों की सीमाओ को लाघ गया और जिसने सारे देश मे मजदूरो को जगा दिया। नई युक्ति-प्रत्युक्तिया पेश की गई। १८३० के दशक की भाति मजदूरों ने इस बार इस चीज़ पर बल नही दिया कि उन्हे आत्मशिक्षा तथा नागरिकता के कर्तव्य निबाहने के लिए खाली समय की जरूरत है बल्कि कहा कि कम घण्टे काम लिए जाने से काम की किस्म सुधरेगी। किन्तु मालिको को उत्पादन की लागत की ज्यादा चिन्ता थी। मजदूरो के उक्त विचारो का विरोध करने के लिए उन्होंने कहा कि काम के कम घण्टों का मतलब होगा कम दिन का वेतन। साथ ही उन्होने मजदूरो की भलाई और हित चिन्ता का फिर दावा किया। उनमें से एक ने कहा कि "अगर मजदूरो को ज्यादा समय तक फैक्ट्री जीवन के लाभदायक अनुशासन से दूर रखा गया और इस प्रकार बिना इस बात का निश्चय किये कि उनके समय का सदुपयोग होगा उन्हे अपनी इच्छा और स्वच्छन्दता पर छोड दिया गया तो उससे मजदूरो की नैतिकता को जरूर नुकसान होगा।"

मैसाच्युसेट्स में जब यह बहस अभी जारी थी, अन्य राज्यो में सुधारक

कम से कम आंशिक विजय प्राप्त करने में सफल हो गए। सन् १८४७ में राष्ट्र के इतिहास में पहली बार न्यू हैम्पशायर राज्य ने १० घण्टे के दिन का कानून पास किया। अगले वर्ष पेंसिलवेनिया ने एक बिल पास किया, जिसमें कहा गया था कि कपास, ऊन, रेशम, कागज, थैले के कपडे और पटसन के कारखानो में कोई व्यक्ति १० घण्टे दैनिक या ६० घण्टे प्रति सप्ताह से अधिक काम नही करेगा "और १८५० मे मेन, कनैक्टिकट, र्‌होड आइलैड, ओहायो, कैलिफोर्निया और जार्जिया में भी किसी न किसी तरह के १० घण्टे के दिन के सम्बन्ध मे कानून बने। किन्तु हर राज्य के कानून में एक त्रुटि रह गई। १० घण्टे के कानून का "विशेष करारो" के जरिये उल्लघन किया जा सकता था। मालिक किसी को भी तब तक काम पर न लेकर, जब तक वह १० घण्टे से ज्यादा समय तक काम करने को तैयार न हो, वस्तुत· कानून की अवहेलना कर सकता था और अन्य मालिको के साथ मिलकर अपने अधिकारो के लिए तन कर खडे होने वाले किसी भी मजदूर का नाम काली सूची मे दर्ज करा सकता था।

मालिको ने विशेष करार सम्बन्धी धारा के समावेश की इस आधार पर वकालत की कि वह नागरिक के अपनी समझ के अनुसार अपनी सेवाए बेचने के अधिकार की सुरक्षा के लिए जरूरी है। बाद के वर्षो में यह युक्तितब और भी जोर से पेश की जाने लगी जव १४ वे संशोधन का अर्थ यह लगाया गया कि वह राज्य के कानूनो के किसी उल्लघन से करार करने की व्यक्तिगत स्वाधीनता की रक्षा करता है। इसकी दिखावटी अच्छाई का भडाफोड होरेस-ग्रीले ने किया, जिसने यद्यपि पहले १० घण्टे के कानून का विरोध किया था।

१८ सितम्बर, १८४७ के ट्रिब्यून में उसने लिखा . "जब असलियत यह है कि आदमी से, जिसे अपने परिवार का भरण-पोषण करना है, और साल भर के लिए मकान किराये पर लेना है, यह कहा जाए कि 'अगर तुम दिन मे १३ घण्टे या जितनी देर हम कहें, उतनी देर काम करो, तब तो रह सकते हो, वरना अपना कागज-पत्र समेट कर चलते बनो, और तुम यह भी अच्छी तरह समझ लो, कि अब के बाद तुम्हें कोई भी काम नही देगा, "तब श्रम की स्वाधीनता की और उसे अपने करार स्वय करने देने की नीतियो की बातें

करना क्या अत्यन्त दम्भपूर्ण बकवास नही है ?"

मैसाच्यूसेट्स में मजदूर ऐसा ही सोचते थे और १० घण्टे के काम के दिन के प्रश्न पर उनके सम्मेलन बुला कर अपना सघर्ष जारी रखते हुए उन्होने आग्रह पूर्वक ऐसे प्रभावशाली कानून की मांग की, जिससे काम के दिन का केवल मानीकरण ही न हो बल्कि काम के घण्टे वस्तुत. कम होने चाहिएँ और तत्सम्बन्धी कानून पर अमल होना चाहिए......" १८५२ में कहा गया कि "हम साफ-साफ कहे देते है कि हमारा उद्देश्य ऐसा कानून पास कराना है जो कठोर और असंदिग्ध शब्दो में कम्पनियो को किसी भी मजदूर से १० घटे से अधिक समय तक काम लेने से रोके और उसकी अवहेलना करने पर पर्याप्त सजा की व्यस्था हो। यही न्यायपूर्ण कानून है और इस विषय पर हम इतना ही कानून चाहते है।"

यह सीधी स्पष्ट माँग न तो मैसाच्युसेट्स मे पूरी हुई और न अन्य किसी राज्य में। जो कानून पास किए गए उन्हे विशिष्ट करार सम्बन्धी धारा के समावेश ने बेकार कर दिया और फैक्ट्री मालिको ने जिन हालतों और शर्तों पर चाहा, मजदूरो से काम लिया। न्यू हैम्पशायर के बिल के बारे में एक अखबार ने दृढता से लिखा : "१० घण्टे का कानून मजदूरों के काम का समय कम नही करेगा। कानून के बनाने वाले ही नही चाहते कि उसका कोई ऐसा नतीजा हो और हम समझते हैं कि मजदूरो को धोखा देने में भी यह विफल रहेगा, जोकि इस कानून को बनाने वाले राजनीतिक छलियो का एकमात्र उद्देश्य प्रतीत होता है।"

१० घण्टे के आन्दोलन को जीवित रखने का अंतिम प्रयत्न अनेक औद्योगिक कांग्रेस आयोजित करके किया गया। ये नेशनल रिफार्म्स ऐसोसियेशन तथा न्यू इंग्लैण्ड वर्किंगमेन्स ऐसोसियेशन जैसे संगठनो की उपज थी। ये काँग्रेसें पहले राष्ट्रीय आधार पर आयोजित की गईं और बाद में राज्यीय तथा स्थानीय सम्मेलनो के रूप में। किन्तु मजदूरो के काम के उद्देश्यो की पूर्ति करने के बजाय ये सम्मेलन अस्पष्ट और सदिग्धतापूर्ण रहे जिनमें पुन. एक बार ट्रेड यूनियन प्रतिनिधियों के बजाए सुधारक ज्यादा एकत्र होते थे। उन्होने सुधारो के पक्षपाती उम्मीदवारो को राजनीतिक समर्थन का वचन प्रदान करके मुफ्त जमीन सहकारिता तथा १० घण्टे के दिन के पक्ष में कानून को प्रभावित करने की

कोशिश की। किन्तु कोई वास्तविक प्रगति नही हो सकी। इसके अतिरिक्त, यद्यपि हर तरह की राजनीति को इस आन्दोलन से दूर रखने की चेष्टा की गई, जैसा कि जार्ज हेनरी इवान्स ने नेशनल रिफार्म्स ऐसोसियेशन के लिए वकालत की थी, तो भी राजनीतिज्ञ उस पर सफलता पूर्वक हावी हो रहे थे। उदाहरणार्थ न्यायार्क मे औद्योगिक काग्रेस ने सदस्यता पहले मजदूर सगठनो तक ही सीमित रखने की कोशिश की किन्तु शीघ्र ही उसका पूर्ण नियन्त्रण पेशेवर राजनीतिज्ञो के हाथ मे आ गया।

राजनीति में मजदूरो की अनुभवहीनता, और पेशेवर राजनीतिज्ञो की प्रवचनापूर्ण चतुराई की कहानी फिर दोहराई गई। १८५० मे जेम्स गॉर्डन बेनेन ने न्यूयार्क की औद्योगिक काग्रेस के बारे में "न्यूयार्क हैरल्ड" मे उसने मानो भविष्यवाणी की कि इसकी बागडोर कुछ खड़यन्त्रकारियो के हाथ मे चली जाएगी जो इसका निजी लाभ के लिए उपयोग करेंगे और मजदूरो को सबसे ऊँची बोली बोलने वालो को बेच डालेंगे। तब इस शहर मे पहले खेले गए मजाकिया नाटक फिर दोहराए जाएँगे जिनमे मजदूरो को जरूरतमन्द और महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञो के उत्थान की सीढी बनाया जाएगा और ये राजनीतिज्ञ अपनी महत्वाकाक्षा की चोटी पर पहुँचते ही मजदूरो को लताड देंगे।

१८५० के दशक के कई वर्ष बीत जाने पर ही मजदूर अपने आपको सुधार ऐसोसियेशनो और सम्मेलनो की अस्पष्ट वाचालता मे खो जाने से मुक्ति पा सके और सीधी-सादी ट्रेड यूनियन गतिविधि पर लौट सके। आर्थिक परिस्थितियो में सुधार से भी—यद्यपि १८५७ में अल्पकालीन मन्दी से उसमे कुछ रुकावट पड़ी—अस्पष्ट मानवतावादी उपचारो की मृगतृष्णा को छोडने मे सहायता मिली। मजदूरो की सौदेबाजी की ताकत एक बार फिर मजबूत हो गई और हड़तालों के कारगर अस्त्र के जरिये प्रभावशाली कार्रवाई का मार्ग खुल गया। किन्तु इस समय की यूनियनो की विचारधारा १८३० के दशक की सोसाइटियो के विचारो से एक महत्वपूर्ण मामले मे कुछ भिन्न थी। मजदूरो की एकता की उन्हें अधिक चिन्ता नही थी बल्कि अपने निजी सदस्यो की आवश्यकताएँ पूरी करने पर उनका ध्यान ज्यादा केन्द्रित रहता था। नगर

में केन्द्रीय संगठनों का अथवा जनरल ट्रेड्स यूनियनो जैसे मजदूर सघ बनाने की कोई कोशिश नही की गई ।

इन दोनो जमानो की यूनियने ज्यादातर कारीगरो और मिस्त्रियो की थी, जिन्हे दक्ष कर्मचारी समझा जाता है और वे प्राय. पुराने चले आ रहे धन्धो तक सीमित थी । किन्तु पहले जमाने की यूनियने जहां अदक्ष मज़दूरो और फैक्ट्री मज़दूरो के सगठनों से सहानुभूति रखती थी और उनके द्वारा बनाई गई सोसाइटियो से सहयोग करने को उद्यत थी वहाँ १८५० के दशक की ट्रेड यूनियनो को इस प्रकार के मज़दूरो में कोई दिलचस्पी नही रह गई थी । दक्ष और अदक्ष कर्मचारियो के बीच नई विभाजक रेखाएं खीची जा रही थी और दक्ष श्रमिक अपनी हलचलों को अदक्ष श्रमिको के साथ किसी भी तरह मिलाना नही चाहते थे ।

इन वर्षों में मजदूर आँदोलन के सीमित कार्य-क्षेत्र का कारण यह था, कि फैक्ट्रियो और मिलों में मजदूरो का जो विशाल समुदाय काम पर लग रहा था उसे सगठित करने में अलंघ्य बाधाएं अधिकाधिक महसूस की जाने लगी थी । इनका संगठन बना सकने की पहले जो कुछ आशा थी भी, वह भी दो मूल कारणो से खत्म हो गई । पहली बात तो यह है कि उस समय के फैक्ट्री मजदूरो मे अधिकांश स्त्रियाँ और बच्चे थे जो पुरुष कर्मचारियो की अपेक्षा कही ज्यादा कम वेतन पर काम करने के लिए तैयार थे और कर सकते थे और दूसरी बात यह कि.पुरुष मजदूरो की संख्या भी आव्रजको के कारण निरंतर बढ़ती रहती थी जो काम की हालतो की परवाह किए बिना कोई भी काम स्वीकार कर लेते थे । सब मजदूरो की एकता की बात बिल्कुल भुला दी गई और फिर वह गृह-युद्ध के बाद ही पनपी । किन्तु १८५० के दशक की यूनियनो का यह रवैया शायद अमरीकी श्रमिक सघ के उस रवैये की ही पूर्व-भूमिका थी, जबकि उसने सब मजदूरो की एकता के ज्यादा धूमिल लक्ष्य के बजाय दक्ष मजदूरो मे मजबूत ट्रेड यूनियनो की स्थापना पर बल दिया ।

फलस्वरूप १८५० के दशक की पुनरुज्जीवित ट्रेड यूनियनो ने जहां अपने सदस्यो के लिए अप्रैण्टिसशिप के नियम, 'बन्द कारखाना', अधिक वेतन और काम के कम घण्टे रखने की आवश्यकता पर बल दिया वहाँ उन्होने

समस्त मज़दूर आन्दोलन को ही मजबूत करने में कोई उत्साह नही दिखाया। अपने पूर्ववर्तियों का-सा उत्साह और जोश उनमें नही था। १८३० के दशक मे मजदूरों ने जिस चीज पर वहुत ज्यादा बल दिया था उस समानता को राजनीतिक दबाव या सुधार के जरिये प्राप्त करना असम्भव मान कर वे शायद ज्यादा व्यावहारिक बन गई थी जैसा कि एक सोसाइटी के प्रस्ताव मे स्पष्ट कहा गया, उन्होने महसूस किया कि वर्तमान परिस्थितियो में "श्रम और पूंजी के बीच एक स्थायी विरोध पैदा हो गया है . एक तो श्रम की अधिक से अधिक कीमत लेना चाहते हैं और दूसरा उसकी कम से कम कीमत देने की कोशिश करता है।" किन्तु इस आधार पर पूंजी का मुकावला करने की उनकी कोशिशे बहुत कामयाब नही हुईं।

इस ज़माने की सबसे दिलचस्प घटना राष्ट्रीय ट्रेड यूनियनो की स्थापना का पहला वास्तविक प्रयत्न था। नेशनल टाइपोग्रैफिकल यूनियन, नेशनल मोल्डर्स यूनियन और मशीनिस्ट्स ऐण्ड ब्लैकस्मिथ्स नेशनल यूनियन की स्थापना हुई और रेलवे-इंजीनियरो ने एक नेशनल प्रोटैक्टिव ऐसोसियेशन कायम किया जिसमें १४ राज्यो तथा ५५ रेलो के प्रतिनिधि थे। मोचियो, अपहोल्स्ट्री बनाने वालो, नल का काम करने वालो, पत्थर काटने वालो और कपडा मिलो के कताई-मजदूरो ने अन्य प्रारम्भिक राष्ट्रीय यूनियनें बनाईं। इनमें से कोई सगठन बहुत सफल तो नही रहा किन्तु उन्होने बाद के वर्षो मे ज्यादा प्रभावशाली कार्रवाई करने का मार्ग साफ किया।

अन्य मामलो मे मजदूरो के आम सगठन जानी-मानी परिपाटी पर चल रहे थे। स्थानीय यूनियनो ने अपने सदस्यो के लाभ के लिए कई चीजे चला रखी थी, अपने सदस्यो से चन्दा उगाहती थी, हडताल कोष रखने का प्रयत्न करती, मालिको से समूहिक सौदेबाजी करती और उचित माँगें स्वीकार न किए जाने पर हडताल करने के लिये तैयार रहती थी। कभी-कभी हडताले व्यापक रूप से होती थी। २० अप्रैल, १८५४ को न्यूयार्क ट्रिब्यून ने लिखा: "इस व अन्य शहरो के सब नही तो कुछ धन्धो में वेतन वृद्धि के लिए हर वसन्त ऋतु में नया सघर्ष छेडा जाता है।" लोकमत स्वीकार करता था जब वेतन बढती हुई महगाई के साथ कदम मिलाकर नही चल पा रहे है तब मजदूरो का बेचैन होना वाजिब है और यूनियनों की मागो को अखबारो का सहानु-

भूतिपूर्ण समर्थन प्राप्त होता था। ट्रेण्टन डेली स्टेट गज़ट ने २४ अप्रैल १८५७ को उस शहर के मास्टर और दिहाड़िये खातियो के बीच हुए एक नये समझौते पर टीका-टिप्पणी करते हुए लिखा : "आदमियो को अपने श्रम का हमेशा उचित मुआवजा मिलना चाहिए और हमारा विश्वास है कि उनकी मांग शायद ही कभी ज्यादा होती हो।"

इस काल की समाप्ति पर एक हडताल से, जो १८६० की फरवरी के शुरू में हुई थी, गम्भीर चिन्ता उत्पन्न हो गई। यह हडताल अब तक के अमरीकी इतिहास में सबसे व्यापक सिद्ध हुई। यह हडताल नैटिक और लिन (मैसाच्युसेट्स) के मोचियो ने की थी और सारे न्यू इग्लैंड में फैल गई। कोई २५ नगरो में मिस्त्रियों के ऐसोसियेशन बनने के साथ-साथ अन्त में लगभग २०,००० मजदूरो ने हडताल कर दी। अधिक वेतन की मांग को हड़ताल का कारण बताते हुए मोचियो ने घोषणा की कि उन्होने यह कदम अपने और निर्माताओ दोनों के हित में उठाया है क्योकि "आम लोगो की सम्पदा जितनी बढेगी, उतनी ही वास्तविक जायदाद की कीमत बढेगी, उससे तैयार माल की माग बढती है और समाज की नैतिक सम्पदा तथा बौद्धिक विकास में वृद्धि होती है।"

इस हडताल पर अखबारों में सुर्खियाँ दी गईं : "उत्तर में क्रान्ति", "न्यू इग्लैंड के मजदूरो का विद्रोह" और "श्रम व पूंजी में सघर्ष का आरम्भ।" श्रम सम्बन्धी उपद्रवो में पहली बार सेना व पुलिस बुलाई गई किन्तु बहुत से नगरो में कोई हिसात्मक काण्ड नही हुआ और नागरिको ने मजदूरों के साथ हमदर्दी प्रकट की तथा उनका समर्थन किया। अनेक स्त्री-कर्मचारियों ने भी हड़ताल में भाग लिया और प्रदर्शनो तथा परेडों मे उन्होने दिखा दिया कि अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनमे कितना जोश और उत्साह है। न्यूयार्क हैरल्ड के एक रिपोर्टर ने मारवल हैड से लिखा : "वे अपने मालिको के खिलाफ इस प्रकार नारे लगाती है कि पहली फ्रासीसी राज्य क्राँति में भाग लेने वाली सुन्दर स्त्रियो की याद आ जाती है।"

दूसरे सप्ताह की समाप्ति से पहले ही मालिक हडतालियो से राजीनामा करने लगे। अधिकांश मामलो में उन्होंने यद्यपि न तो यूनियनो को मान्यता दी और न उनके साथ कोई लिखित करार किया; तो भी उन्होने तनख्वाहे

बढा कर काफी हद तक मजदूरो की मागे पूरी कर दी। हडताल सफल रही।

१८५० के दशक की समाप्ति निकट आने पर गुलामी का सवाल मजदूर आन्दोलन पर असर डालने लगा, जिस प्रकार कि देशभर में आर्थिक और राजनीतिक गतिविधि के हर पहलू को उसने प्रभावित किया था। उत्तर के मजदूरो में भी इस मामले मे वैसी ही मत-विभिन्नता थी, जैसी समाज के अन्य वर्गों मे। न्यू इग्लैण्ड मे और विशेषकर कपड़ा मिल के मजदूरो मे गुलामी की प्रथा को समाप्त करने के पक्ष मे जनमत बहुत प्रबल था किन्तु देश के अन्य हिस्सो में नीग्रो के प्रति सहानुभूति इतनी ज्यादा नही थी कि लोग उनकी स्वाधीनता के लिए युद्ध करने को तत्पर होते। विकासमान औद्योगिक केन्द्रो मे यह महसूस किया गया कि गोरे मजदूर का गुलाम होना भी उतना ही बुरा है, जितना नीग्रो का गुलाम होना इसलिए बेहतर है कि सुधार गोरे मजदूर से शुरू किया जाए। १८६० मे लिंकन के चुनाव के बाद भी बहुत सी यूनियनो ने बीच का रास्ता निकालने वाले उन प्रस्तावो का समर्थन किया जो उत्तर और दक्षिण के मतभेदो को दूर करने के लिए प्रस्तुत किए गए।

वस्तुत ३४ प्रमुख ट्रेड यूनियने १८६१ के प्रारम्भ मे सयुक्त कार्रवाई के लिए एक हो गईं और उन्होने सरकारी कदम का विरोध करने के लिये "रियायत, पर अलगाव नही", नारे के साथ एक राष्ट्रीय मजदूर सम्मेलन बुलाया। मैकेनिक्स ओन' मे बडे तीखे शब्दो मे उन्होने कहा . "राजनीतिक आन्दोलन-कारियो तथा देश द्रोहियो के नेतृत्व में देश तेजी से रसातल को जा रहा है और अगर जन सामान्य अपनी शक्ति के साथ उठ खड़ा नही होगा और अपने प्रतिनिधियों को यह नही बताएगा, कि उन्हे क्या करना है तो यह अच्छा पुराना जहाज़ टुकडे-टुकडे हो जाएगा। "२२ फरवरी को फिलाडेल्फिया मे उनकी सभा हुई जिसमे कवायद की गई, भाषण दिए गए तथा क्रिटेण्डन समझौते के पक्ष मे प्रस्ताव पास किये गए। किन्तु यह कोई बहुत प्रभावशाली चीज नही रही, और उन ताकतो पर कोई खास असर नही डाल सकी, जिन्होने शीघ्र ही राष्ट्र को युद्ध मे ढकेल दिया।

एक बार युद्ध की घोषणा हो जाने पर राष्ट्रपति लिंकन की अपील पर मजदूर बडी सख्या मे सेना में भरती हुए और जो युद्ध के उग्र विरोधी थे उनमे बहुत-सो ने सेना के लिए सबसे पहले अपने नाम लिखाए। अनेक मामलों

में तो मजदूरो के ग्रुप-के-ग्रुप सेना में भरती हो गए। इस प्रकार के एक सगठन द्वारा पास किए गए प्रस्ताव में कहा गया : "युद्ध के लिए सरकार की सेना मे भरती होने का निश्चय करके यह यूनियन तब तक के लिए अपना काम बन्द करती है, जब तक संघराज्य सुरक्षित नही हो जाता या हम वीर-गति को प्राप्त नही करते।"

युद्ध से मजदूरो की परेशानियाँ बहुत बढ गईं। उन्हे सेना में जबरन भर्ती किया जा सकता था जबकि अमीर जुर्माना देकर उससे बच सकते थे। इसके अतिरिक्त मंहगाई बढ जाने से मजदूरो को बहुत कष्ट हुआ जबकि निर्माताओ और व्यापारियो के लिए इसका मतलब अधिक मुनाफा था। दबादब नोट छापे जाने से जब मँहगाई बढ़ती ही चली गई तो असन्तोष की गूँज भी सुनाई पड़ने लगी। मजदूरो ने पूछा "एक राष्ट्र के रूप मे हमें इस युद्ध से क्या लाभ होगा? क्या हम अपनी सस्थाएँ सुरक्षित रख सकेंगे, अपने सविधान को बचा सकेंगे, या लोगो को असहाय गरीबी और अपराध के गड्ढे में ढकेल देंगे?" युद्ध के प्रयत्नो में वे अपना पूरा योग देने को तैयार थे किन्तु मुनाफाखोरो तथा सज्जेबाज़ो के खिलाफ उनका गुस्सा उबल रहा था।

१८६३ तक न्यूयार्क की स्थिति से बडे दु.खद रूप मे यह बात सामने आई कि जो लोग पैसा बनाने की स्थिति मे होते है उन्हे युद्ध से कितना लाभ हो सकता है। होटलों, थियेटरो, जौहरियो तथा विलास की चीजो के अन्य विक्रेताओ का व्यवसाय खूब चमक रहा था। "शॉडी", जैसा कि मुनाफा-खोरो को कहा जाता था, अपने धन को लापरवाही और बेशर्मी से भरी फ़ज़ूलखर्ची के साथ खर्च कर रहे थे। 'हार्पर्स' ने कहा : "ये लोग अपनी वास्केट में बढ़िया हीरो के बटन लगाते है और स्त्रियाँ सोने-चाँदी का पाउडर अपने मुँह पर लगाती है।" मुसीबतजदा मजदूरो को ऐसा कोई मुनाफा नही होता था और उन्होने जब माँग की कि उनके वेतनो का बढती हुई मँहगाई के साथ कुछ-न-कुछ युक्तियुक्त सम्बन्ध होना चाहिए तो शीघ्र हडतालें हो गईं।

शिकागो में ईंटो की चिनाई का काम करने वालो ने वेतन-वृद्धि का आग्रह किया, न्यूयार्क में कण्डक्टरो और कोचवानों ने हड़ताल कर दी; सेण्ट लुई में मुद्रको ने अधिक वेतन के लिए हड़ताल कर दी; खाती, पेण्टर और

प्लम्बर सब कही उनकी माँगे पूरी न किए जाने पर काम छोड देने की धमकी दे रहे थे; लोहे की ढलाई करने वाले १५ प्रतिशत वृद्धि की माँग कर रहे थे; जहाज बनाने वालों तथा खलासियो ने हडताल कर दी और लोकोमोटिव इजीनियरो ने भी अपने सदस्या को आह्वान किया।

कभी-कभी इस प्रकार की गडबडियो का मुकाबला करने के लिए मार्शल-ला घोषित किया गया जबकि सेनाओ ने हडतालें तोडी। किन्तु ह्वाइट हाउस में मजदूरो का एक दोस्त बैठा था। हो सकता है कि अब्राहम लिंकन ने एक संगठित मजदूर आन्दोलन के परिणामो को पूरी तरह न समझा हो लेकिन उनकी सहानुभूति मजदूरो के साथ थी। एक सम्भावित अपवाद के अलावा शायद वे हड़ताल मे सरकार के हस्तक्षेप का समर्थन न करते। युद्ध से पहले उन्होंने कहा था : "ईश्वर का धन्यवाद है, हमारे यहाँ ऐसी श्रम-पद्धति है जिसमे मजदूर हडताल कर सकते है" और समस्त राष्ट्रीय सकट-काल मे मजदूरों में उन्होने अपना विश्वास तथा उनके अधिकारो के प्रति आदर दृढता से कायम रखा। जिस लोकतन्त्र का वह बखान किया करते थे उसका आधार यह विश्वास था कि "मजदूर सभी सरकारो के स्तम्भ होते है।" काग्रेस को अपने पहले वार्षिक सन्देश में उन्होने कहा था . "श्रम का अस्तित्व पूँजी से पहले और स्वतन्त्र है। पहले श्रम न होता तो पूँजी कभी पैदा नही हो सकती थी।" १८६४ में न्यूयार्क वर्किंगमेन्स डैमोक्रैटिक रिपब्लिकन ऐसोसियेशन के एक प्रतिनिधिमण्डल से मुलाकात करते हुए उन्होने अपने ये विचार दोहराये . "श्रम का स्थान पूँजी से ऊँचा है और उसका कही ज्यादा आदर किया जाना चाहिए।"

इन परिस्थितियो में गृह-युद्ध में मजदूरों की ताकत बढ गई और ट्रेड-यूनियनों को नव-जीवन प्राप्त हुआ। १८६३ और १८६४ के बीच उनकी सख्या ७९ से २७० हो गई और यह अनुमान लगाया गया कि सगठित मजदूरो की सख्या २ लाख से अधिक थी जो यद्यपि ३० वर्ष पहले की सख्या से तो कम थी किन्तु १८४० या १८५० के दशको की सख्या से कही अधिक थी। इसके अलावा इन यूनियनो में से ३२ यूनियनें राष्ट्रीय आधार पर सगठित थी और जो १८५० के दशक की यूनियनो से ज्यादा स्थायी थी। इनमें सबसे प्रमुख पुनर्गठित आयरन मोल्डर्स इण्टरनेशनल यूनियन थी किन्तु मशीन-चालक

और लुहार, लोकोमोटिव इंजीनियर, अमेरिकन माइन्र्स ऐसोसियेशन तथा सन्स आव वल्कन (गले लोहे पर काम करने वाले) अन्य मजबूत संगठन थे जिनमें मजदूर-आन्दोलन का बदलता हुआ स्वरूप दृटिगोचर हो रहा था।

युद्ध-काल में ट्रेड-यूनियनो के पुनरुत्थान के साथ-साथ संगठित मजदूरों के विचार सामने लाने और मजदूर-सम्बन्धी सुधारो की वकालत करने के लिए मजदूरो के अखबार फिर प्रकाशित होने लगे। मशीन-चालकों तथा लुहारो की यूनियन के अखबार 'फिचर्स ट्रेड्स रिव्यू' इन अखबारो में सबसे प्रमुख था जिसके सम्पादक-मण्डल में अन्य यूनियनो के प्रतिनिधि भी थे। इसकी बदौलत यह समस्त मजदूर-आन्दोलन का राष्ट्रीय प्रवक्ता बन गया। इसका सम्पादक जोनाथन फिंचर एक सुयोग्य और अथक रिपोर्टर तथा मजदूर-सम्बन्धी मामलो पर बेलाग टिप्पणीकार था। अन्य श्रमिक-पत्रो में शिकागो से प्रकाशित होने वाला नया वर्किंगमेन्स ऐडवोकेट, न्यूयार्क ट्रेड्स ऐडवोकेट तथा वीकली-माइनर शामिल थे।

एक अन्य तरक्की नई मजदूर-सभाओ की स्थापना के रूप में की गई जो पुरानी जनरल ट्रेड्स यूनियनो की तरह की थी। पहले-पहल रोचेस्टर (न्यूयार्क) की यूनियनो ने इस प्रकार का संगठन बनाया और फिर बहुत जल्दी हर शहर में इस प्रकार की मजदूर-सभाएँ बन गईं। ये वास्तविक शक्ति का स्रोत बन गईं। उन्होने यूनियन की माँगें मानने के लिए मालिको को मजबूर करने के साधन के रूप मे मजदूरो को एक नया हथियार प्रदान किया। यह नया हथियार था—बायकाट। बायकाट के बारे में उस वक्त की एक रिपोर्ट में कहा गया : इस उद्देश्य के लिए सब यूनियने मिल जाती है। जब उत्पीडन का कोई मामला सामने आता तो मजदूर सभा की एक समिति उत्पीडक से मिलती और शिकायत दूर करने की माँग करती। अगर माँग पूरी नही की जाती है तो हर यूनियन को सूचित कर दिया जाता है और सदस्य उस घृणित सस्थान से माल खरीदना बन्द कर देते है।" ये मजदूर-सभाएँ आमोद-विहारो (पिकनिक), नृत्यों तथा अन्य सामाजिक गतिविधियो का भी आयोजन करती थी और कही-कही तो पुस्तकालय तथा वाचनालय चलाती थी।

गृह-युद्ध के बाद मजदूरो का रुख आक्रामक हो गया। वे अधिक व्यापक राष्ट्रीय-संगठन बनाने के लिए भी तैयार थे। नई युनियनों को एक ही

आन्दोलन में लाने की कोशिश कर रहे थे जो पूँजी की संगठित ताकतो का अधिक प्रभावशाली ढग से सामना कर सकता। किन्तु इसे अभी एक बड़ी लम्बी मजिल तय करनी थी।

— ० —

६ : राष्ट्रीय संगठन की ओर

गृह-युद्ध और १६ वी शताब्दि की समाप्ति के बीच अमरीका में उद्योगो का अत्यधिक विस्तार हुआ। रेलो ने सारे महाद्वीप मे फैल कर अपना एक जाल-सा बिछा दिया और देश को एक आर्थिक इकाई के सूत्र में बाध दिया। इस्पात मिलो की चिमनिया जिनसे पिट्सबर्ग के ऊपर का आसमान धूसरित रहता था, एक विशाल उद्योग के विकास की प्रतीक थी, जो मेसाबी पहाडियो मे पाये जाने वाले लोहे के अतुल भण्डार के कारण सम्भव हुआ। पश्चिमी पेंसिलवेनिया तथा ओहायो मे खोदे जाने वाले कुओ से तेल फूट पडा। शिकागो तथा सेण्ट लुई के विशाल बूचडखानो में प्रतिदिन हजारो मवेशी और सूअर काटे जा रहे थे। न्यू इग्लैंड की कपडा मिलो मे बडी चहल-पहल रहती थी और न्यूयार्क तथा पूर्व के अन्य शहरो मे सिले-सिलाए कपडो का उद्योग स्थापित हुआ। सब कही नई फैक्ट्रियां और मिले खडी होकर मशीन की विजय और बडे पैमाने पर उत्पादन के तरीको के विकास का ऐलान कर रही थी। अटलाण्टिक सागर के तट के साथ-साथ और मध्य पश्चिम मे जैसे-जैसे नये शहर और निर्माण केन्द्र स्थापित होते चले गए, वैसे-वैसे अमरीका की शक्ल बदलती चली गई।

इन सब घटनाओं के पीछे मूल बातें थी—राष्ट्र के असीम साधन, उसका महान् श्रमिक कोष तथा नए उद्योगो के माल की अतृप्त माँग, किन्तु औद्योगिक विस्तार के लिए तात्कालिक प्रेरणा दूरदर्शी, महत्वाकाक्षी और निर्दयी व्यापारिक नेताओ तथा महाजनो के एक ग्रुप ने प्रदान की। जे गोल्ड, इ० एच० हैरीमैन तथा जेम्स जे० हिल ने रेलो का, कार्नेगी ने इस्पात का और राक फेलर ने तेल का साम्राज्य स्थापित कर लिया। कार्पोरेशन को सब कही व्यापारिक सगठन का रूप स्वीकार कर लिया गया और अपने प्रतियोगियो को निर्दयता से कुचल देने वाले उपर्युक्त प्रकार के व्यक्तियो के नेतृत्व मे किए जाने वाले विलय और एकीकरण से उद्योग और ज्यादा सार्वदेशिक रूप ग्रहण करता जा रहा था। बीसियो उद्योगो में—तेल, इस्पात, खाँड, अलसी का

तेल, स्टोव और रासायनिक खाद के उद्योगों में वड़े वड़े ट्रस्ट वन गए। एकाधिकार उद्योगपति का ध्येय था और उदासीन सरकार तथा उदासीन अदालतो ने, जो खुली छूट देने के आर्थिक सिद्धान्त के हामी थे, उन नीतियो को वेलगाम छोड़ दिया जिनकी वदौलत आर्थिक सम्पदा और शक्ति एक ही जगह इतनी ज्यादा जमा हो गई, जैसी उससे पहले अमरीका में कभी नही हुई थी।

श्रमिक वर्ग इस औद्योगिक विस्तार के ज्वार में वह गया। यद्यपि उनके विना घटनाचक्र इस प्रकार करवट नही ले सकता था, तो भी आर्थिक विकास की दिशा निश्चित करने में उनकी कोई आवाज़ नही थी। श्रमिक तो कम्पनी मालिको के हाथो मे करीव-करीव नि साहाय मोहरे वन कर रह गए। कभी के स्वतन्त्र कारीगर जव फैक्ट्रियो, मिलो और फाउण्ड्रियो मे चले आए, जहाँ विशेष दक्षता की कोई कीमत नही थी और जहाँ उन्हें सामूहिक उत्पादन की जटिल प्रक्रियाओ मे से सिर्फ एक ही स्वचालित काम करना होता था तव उनकी पहले की सौदेवाजी की ताकत जाती रही। उद्योग मज़दूरो को महज एक माल समझता था, जिसे सस्ते-से-सस्ते दामो पर खरीदा जा सके। उनके प्रति जिम्मेदारी उद्योग के कच्चे माल के प्रति जिम्मेदारी मे ज्यादा नही समझी जाती थी।

"एकाधिकार की इस प्रकृति के प्रारम्भ से पूर्व अभी जव वाणिज्य-उद्योग वड़ी पूँजी वाले थोडी-सी वडी कम्पनियो के वजाय थोडी-थोडी पूँजी वाली छोटी-छोटी असख्य कम्पनियो के हाथ में था।" एडवर्ड वेलामी ने अपने प्रसिद्ध काल्पनिक रोमान्स 'लुकिंग वैकवर्ड' में लिखा: "श्रमिक का स्थान अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण था और मालिक के साथ अपने सम्वन्धो मे उसे काफी आज़ादी प्राप्त थी। इसके अलावा थोड़ी-सी पू जी अथवा कोई नया विचार किसी आदमी को अपना कारोवार चलाने लायक वनाने के लिए काफी था श्रमिक निरन्तर काम देने वाले वन रहे थे और इन दोनो श्रेणियो के वीच कोई पक्की विभाजक रेखा नही थी। तव मज़दूर यूनियनें अनावश्यक थी और हडतालो का तो प्रश्न ही नही उठता था। किन्तु जव थोडी पूंजी वाली छोटी कम्पनियो का स्थान विशाल पूंजी वाले सस्थानो ने ले लिया तो नजारा ही वदल गया। छोटे मालिक के लिए व्यक्तिगत मज़दूर का जो महत्व था वह वड़े कार्पोरेशन के सामने नगण्य और निश्शक्त हो गया और इसके साथ ही

ऊपर तरक्की कर मालिक बन जाने का रास्ता उसके लिए बन्द हो गया। आत्मरक्षा के लिए वह साथियो के साथ मिलकर यूनियन बनाने पर मजबूर हुआ।"

मजदूरी की दरें चूंकि पूर्णतः पूर्ति और माग के नियम के आधार पर तय होती थी इसलिए मालिको ने हरचन्द यह कोशिश की कि मजदूरो की सप्लाई किसी तरह कम न पडे। गृह-युद्ध के दौरान देश के उद्योगपतियो ने इस तरफ और ज्यादा आश्वस्त होने के लिए काग्रेस का समर्थन प्राप्त करने के हेतु पहला कदम उठाया। १८६४ में एक करार-श्रम कानून पास हुआ जिसमें यह अनुमति दी गई थी कि सम्भावित आव्रजको को पेशगी यात्रा-किराया देकर अमरीका लाया जा सकता है और पेशगी की यह रकम बाद मे उनके काम से लग जाने पर उनकी मजदूरी से काटी जा सकती है। इससे प्रोत्साहित होकर १० लाख डालर की पूंजी से अमेरिकन एमिग्रेण्ट कम्पनी बनी और मुख्य न्यायाधीश चेज, नौसेना के मन्त्री वेल्स सेनेटर सुमनरे और हेनरी वार्ड बीचर जैसे प्रमुख व्यक्तियो का समर्थन पाकर उपलब्ध मजदूरो का कोष स्थापित करके उसने विस्तृत होते हुए अर्थतन्त्र की आवश्यकताए पूरी करने का बीड़ा उठाया उसने अमरीका के निर्माताओ, रेल-कम्पनियो और अन्य उद्योग-धन्धो के लिए ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम, फ्रास, स्विट्जरलैड, नार्वे और स्वीडन से मजदूर और विशेषकर दक्ष मजदूर लाने के अपने कार्यक्रम की घोषणा की। उसके विज्ञापन मे घोषणा की गई कि वह अल्पकालीन नोटिस और युक्ति-युक्त शर्तो पर खनिज, इस्पात मजदूर, मशीन चालक, लुहार, मोल्डर और हर तरह के मिस्त्री दे सकती है।

अमेरिकन एमिग्रैण्ट कम्पनी के एजेण्ट शीघ्र ही रेल कम्पनियो, जहाज-कम्पनियो तथा बहुत-सी उद्योग कम्पनियो के एजेण्टो के साथ मिलकर शीघ्र ही करीब-करीब उसी प्रकार उद्योगो के लिए करार-बद्ध मजदूर जुटाने लगे, जिस प्रकार दो सदी पूर्व 'न्यू इग्लैड' ने प्रतिज्ञाबद्ध नौकर जुटाए थे। एक मजदूर सम्मेलन में पेश की गई भयपूर्ण रिपोर्ट में कहा गया: "ये मजदूर जब यहाँ आते है तो इनकी जेब में कुछ नही होता, फलस्वरूप वे इतनी कम मजदूरी पर काम करने को मजबूर होते है, जिससे वे अपना पेट भी अच्छी तरह नही भर सकते .....हम इन लोगो से प्रतियोगिता किसी भी प्रकार नही कर सकते।"

कैलिफोर्निया में और महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने वाली रेलवे के निर्माण मे मजदूरो की आवश्यकता चीनी कुलियो से पूरी की गई और पश्चिमी तट की बस्तियो की अपनी विशिष्ट समस्याए उठ खड़ी हुईं। मैसाच्युसेट्स में उन्हें जूता-उद्योग मे लगाने का असफल परीक्षण किया गया, यद्यपि यह परीक्षण छोटे पैमाने पर किया गया था। बोस्टन कामनवेल्थ ने जून १८७० मे उनके बारे में कहा : "वे हमारे साथ है। बादामी आखो वाले, चोटी रखने वाले, अत्यन्त मेहनती, सब परिस्थितियो में काम कर सकने वाले, उच्च नैतिकता वाले ये चीनी, जिनकी सख्या ७५ है नार्थ ऐडम्स नगर मे बहुत मेहनत से जूते बनाते है।"

समय के साथ-साथ यूरोपीय आव्रजको की संख्या शनै-शनै बढ़ती गई। १८८० मे करीब ५ लाख देश में आए और अगली दशाब्दि मे ५० लाख से अधिक अर्थात् पिछले १० वर्षो के मुकाबले लगभग दुगने। जहा से ये लोग आते थे, वे स्थान भी धीरे-धीरे बदले। ज्यादातर आव्रजक उत्तर-पश्चिमी यूरोप से नही बल्कि दक्षिण-पूर्वी यूरोप से आ रहे थे। अटलाण्टिक के आर-पार जहाज चलाने वालो मे ज्यादातर इटालियन, पोल, चेक, स्लोवाक, हुंगेरियन, यूनानी और रूसी थे जो अज्ञानी, अदक्ष निर्धन किसान थे। ये खानो, मिलो और कारखानो के लिए कभी न समाप्त होने वाले सस्ते श्रमिक कोष का काम कर रहे थे।

अमरीकी मजदूरो के अपना जीवन-स्तर उन्नत करने के प्रयत्नो को सदा आव्रजन बेकार करता रहा, किन्तु सदी की समाप्ति के समय वेतन कम रखने मे इसका प्रभाव पहले से ज्यादा दिखाई दिया। क्योंकि यूरोप से आयात करके न केवल अदक्ष मजदूरो की सप्लाई सदा बढाई जाती रही बल्कि पश्चिम मे मुफ्त ज़मीन का उपलब्ध होना शनै-शनै बन्द हो जाने से बेकारी और मन्दी के दिनो का एक और आसरा मजदूरो के हाथ से जाता रहा। लोगों के पश्चिम की तरफ बसते चले जाने का दवाव कम करने मे पहले चाहे कुछ भी अप्रत्यक्ष प्रभाव रहा हो, किन्तु अब सीमा बन्द हो जाने का मतलब था कि अमरीका के इतिहास मे एक बिल्कुल नया युग शुरू हो गया है। अवसर अब भी मिलते थे किन्तु पश्चिम में बस्तियाँ बसने के जमाने के मुकाबले बहुत थोड़े।

१८४० और १८५० के दशको में ही मजदूर यह अनुभव करने लगे थे कि उनकी काम की हालतें बिगड रही हैं किन्तु दक्ष कारीगर और मिस्त्री तब भी अपना वह स्तर कायम रख सके, जो विदेशी यात्रियो पर गहरा प्रभाव डालता था। अब जबकि काम की तलाश मे अधिकाधिक मजदूर कारखानो, मिलों और वर्कशापो में जा रहे थे तब वे अपनी पहले की आजादी बिल्कुल खो बैठे और वेतन भी पहले से कम हो गए। शहरो और कस्बो मे, जो इतनी तेज़ी से बढ़ रहे थे कि मजदूर उनमें खप नही पाते थे, साथ-साथ भीड़-भड़क्के मे रहते हुए वे वेतनो में कटौती तथा बेकारी की निरन्तर विभीषिका मे काम करते थे। कभी-कभी कुछ थोड़े से व्यक्तियो को अब भी आर्थिक सीढी पर चढने का मौका मिल जाता था—अनेक उद्योगपति मजदूरो में से ही बने—किन्तु ज्यादातर मजदूर चाहे विदेशी हो या स्वदेशी, मज़दूर की श्रेणी से ऊपर उठकर मालिक बन जाने और इस प्रकार सम्पन्न सामन्त वर्ग में शामिल हो जाने की आशा नही कर सकते थे। शिकागो के 'वर्किंगमेंस ऐडवोकेट' ने सन् १८६६ मे ही कहा था कि 'इस वृत्त में मजदूरो के घुस आने की आशा करना उनको भुलावे में डाले रखना है, जिससे उनका ध्यान अपने वास्तविक हित की बातो से फिरा रहे।"

"प्रगति तथा गरीबी" का क्रूर विरोधाभास, जिसका १८७० के दशक में हेनरी जार्ज ने उल्लेख किया, तब भी कोई नई बात नही थी और समय के साथ-साथ वह ज्यादा प्रत्यक्ष होती गई। आर्थिक विकास और विस्तार के तथ्य से इन्कार नही किया जा सकता था और इसी प्रकार राष्ट्रीय आय बढी और सामयिक दृष्टि से देश का जीवन-स्तर उन्नत हुआ। लेकिन तो भी करोडा आदमी घनी आबादी वाली गन्दी बस्तियो में अत्यन्त गरीबी की हालत मे रहते थे। उनको प्रायः सामान्य सुख-सुविधाएं भी उपलब्ध नही होती थी, जिन्हे उनका श्रम दूसरों को सुलभ कराता था। वे सिर्फ अपने परिवारो को भूख और अभाव से मुक्त रखने के लिये संघर्ष करते रहते थे। जिनमें अब भी कोई विशेष दक्षता रह गई थी, उनके लिए यद्यपि परिस्थितिया कुछ अच्छी थी, तो भी अधिकांश लोग बहुत थोड़े वेतन के लिए इतने ज्यादा घण्टो तक काम करते थे कि उनकी स्थिति वाणिज्य तथा उद्योग की सबको दिखाई देने वाली समृद्धि के साथ मेल नही खाती थी और अतएव दुःखदायी थी।

मशीनो के सूत्रपात से जब मजदूरो के काम के अधिकाधिक विभाग बन गए, और ज्यादा से ज्यादा काम अर्धदक्ष या अदक्ष श्रमिको द्वारा किया जाने लगा तब मालिक पहले ज़माने के मिस्त्रियो और कारीगरो के बजाय 'अधकचरे' आदमियो को काम पर लगाने लगे। बाहर से आने वाले मज़दूर स्थानीय मज़दूरो की रोजी के लिए खतरा पैदा कर रहे थे और थोडे-थोडे दिनो बाद आने वाले बेकारी के भूत ने कारीगरो की एक जमाने की सुरक्षा को खत्म कर दिया था। इसके अलावा जब वाणिज्य राष्ट्र-व्यापी बन गया तब विभिन्न निर्माण क्षेत्रो में प्रतियोगिता का अर्थ था कि मूल्य और वेतन अब स्थानीय परिस्थितियो के मुताबिक तय नहीं होगे। आर्थिक परिवर्तनो के फलस्वरूप जिन पर स्थानीय मालिको या कर्मचारियो का कोई बस नही होता था, घटते-बढ़ते रहते थे।

इस नए राष्ट्रीय बाजार में, उदाहरणार्थ, ट्रॉय और पिट्सबर्ग, फिलाडेल्फिया अथवा डेट्रायट में स्टोव बनाने वालो को शिकागो और सेण्ट लुई मे स्टोव बनाने वालो के साथ मुकाबला करना पडता था। पूर्व मे वेतन दर पश्चिम के वेतन दरो से बंध गए। ट्राय या सेण्ट लुई मे लोहे का साचा बनाने वाले यदि मदी के दिनो में अपने वेतनो में कटौती नही होने देना चाहते तो उन्हें केवल स्थानीय परिस्थितियो से आगे देखकर देश के अन्य भागो में अपने जैसे मज़दूरो के वेतन कायम रखने के उपायो पर गौर करना होता था।

इन नई परिस्थितियो में यह अधिकाधिक स्पष्ट हो गया कि मजदूरो को राष्ट्र-व्यापी आधार पर अपना सगठन करके राष्ट्र-व्यापी उद्योग की चुनौती का स्वयमेव मुकाबला करना होगा। इसका मतलब था कि पहले राष्ट्रीय यूनियनें बनाने की कोशिश की जाए, जिसमे किसी धन्धे के मज़दूर किसी भी तरफ से आने वाली प्रतियोगिता से अपने वेतन दरो की रक्षा कर सकें। और दूसरे मालिको के आपसी हितो के मुकाबले मज़दूरो के आपसी हितों का संगठन किया जाए। मज़दूरो के नए नेताओ ने संगठित पूंजीवाद की शक्ति का मुकाबला करने के लिए राष्ट्रीय यूनियनो, राजनीतिक मजदूर दलो, सहकारी सस्थाओ तथा अन्य श्रमिक सुधार सगठनो का एक प्रकार का सयुक्त मोर्चा बनाने का यत्न किया तब मज़दूरो की एकता सर्वत्र चर्चा का विषय बनी हुई थी।

गृह युद्ध के तुरन्त बाद के वर्षों में इस राष्ट्रीव्यापी संगठन का निर्माण करने की कोशिश करते हुए भी मजदूर औद्योगिक युग की नई ताकतो से इस प्रकार हक्के-बक्के हो रहे थे कि उन्हें कोई रास्ता सूझ नही रहा था। उन्हे विभिन्न राजनीतिक आन्दोलनो में घसीटा गया, सुधार के नये वायदों से ठगा गया और वह समाजवादी सिद्धान्त तथा वर्ग संघर्ष के क्रांतिकारी विचारो के बारे मे उठ रहे विवादो के चक्कर मे फस गया। आर्थिक कार्रवाई के मुकाबले राजनीतिक कार्रवाई के लाभो तथा व्यापक और बडी यूनियनो के मुकाबले कारीगरो की यूनियने बनाने के लाभो पर निरन्तर बहसे होती रहती थी।

अनेक बार श्रम-सम्मेलन मे विचाराधीन महीन सिद्धान्तो की परवाह न करते हुए मजदूरों ने बागडोर अपने हाथ मे ले ली। पूंजीवादी शोषण की एडी के नीचे स्वय को अधिकाधिक पिसता हुआ देखकर उन्होने उस नेतृत्व की उपेक्षा कर दी जो आर्थिक परिस्थितियो की वास्तविकताओ से आँखें मूंदे हुए था और अपने अधिकारो की रक्षा के लिए यकायक विद्रोह कर दिया। गृह युद्ध से पहले हडतालें, स्थानीय, अल्पकालीन और शातिमय होती थी किन्तु सदी के उत्तरार्ध मे उनका स्वरूप बिल्कुल बदल गया। देश को व्यापक और उग्र औद्योगिक संघर्ष का सामना करना पड़ा।

श्रमिको का एक राष्ट्रीय सगठन बनाने की दिशा में पहला कदम १८६६ में उठाया गया। कुछ यूनियन नेताओ ने जो १८३० के दशक मे इसी प्रकार के आन्दोलनो को बिल्कुल भूल चुके थे, राष्ट्रीय मज़दूर काग्रेस का अधिवेशन बुलाया जिसे वे अमरीका में "अपनी किस्म का पहला" बतलाते थे। यह काग्रेस बाल्टिमोर में की गई जिसमें विभिन्न स्थानीय यूनियनो, मजदूर सभाओं तथा राष्ट्रीय यूनियनो के ७७ प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इस सम्मेलन का घोषित उद्देश्य समस्त मजदूरो मे एक नई एकता स्थापित करना था। राष्ट्रीय मजदूर यूनियन का निर्माण करते हुए इस बात की व्यवस्था की गई कि न केवल मौजूदा ट्रेड यूनियनो के दक्ष कर्मचारी ही बल्कि अदक्ष कर्मचारी और किसान भी उसके सदस्य बन सके। अन्त में सब श्रमजीवी अपनी ताकत पर भरोसा करते हुए उठ खड़े हुए और मालिको को उनके

अधिकार कबूल करने की चुनौती देने लगे।

राष्ट्रीय मजदूर यूनियन शुरू मे ही सुधारवादी और राजनीतिक विचारो की थी। सब मजदूरो के लिए एक सामान्य कार्यक्रम बनाने का यह पहला प्रयत्न था, किन्तु इसमे अब भी गृह युद्ध से पहले का वही दिवास्वप्न दिखाई देता था कि औद्योगिक ज़माने की जुटती हुई ताकतो के बावजूद उत्पादक अपने मन चाहे समाज का निर्माण कर सकते हैं। सीमान्त समाज की स्वाधीनता और वैयक्तिकता ने १९ वी सदी के अमरीकी मजदूर के लिए, सभी साक्षियो के विपरीत होने के बावजूद यह मानना करीब-करीब असभव कर दिया कि मजदूरी कमाने वाले वर्ग का अस्तित्व स्थायी हो गया है।

राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन के नेता काम की हालतो में तुरन्त सुधार के लिए संगठित ट्रेड यूनियन दबाव जैसे व्यावहारिक लक्ष्यो में बहुत दिलचस्पी नही रखते थे। उन्होंने घोषणा की कि मजदूर आन्दोलन ट्रेड यूनियनो पर निर्भर है और हर श्रमिक से किसी न किसी ट्रेड यूनियन मे शामिल होने की अपील की। किन्तु बाल्टिमोर के सम्मेलन मे उन्होने राजनीतिक कार्रवाई को मजदरो के हितसाधन का सबसे प्रभावशाली साधन बताया और हडतालो की उन्होने तीव्र निन्दा की। राजनीतिक कार्रवाई के बजाय आर्थिक कार्रवाई करने के पक्षपाती मज़दूरो का तुरन्त ही एक राजनीतिक दल बनाने के प्रस्ताव को हराने मे तो कामयाब हो गए तो भी सम्मेलन यह प्रस्ताव पास करने मे सफल हो गया कि उपर्युक्त दल "यथा सम्भव जल्दी से जल्दी" कायम किया जाए।

"अमरीका के श्रमिको के नाम एक सन्देश" मे राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन के आम उद्देश्यो पर प्रकाश डाला गया। इसमे मुख्यत. इस बात पर बल दिया गया कि मजदूरो के लिए पहला लक्ष्य हर राज्य में ८ घण्टे का दिन प्राप्त करने का है। जैसा कि हम आगे चलकर देखेंगे इस आन्दोलन का पहले के १० घण्टे के दिन के आन्दोलन से कही गहरा उद्देश्य था और कुछ समय तक लगा कि मज़दूरो की सब गतिविधियो पर यही माग छायी हुई है। किन्तु राष्ट्रीय मजदूर यूनियन ने १८४० के दशक के आन्दोलन को पुनरुज्जीवित करते हुए उपभोक्ताओ और उत्पादकों, दोनो की सहकारी संस्थाए स्थापित करने की कोशिश की और इनके लिए आसानी से पूंजी सुलभ कराने के खयाल से मुद्रा तथा बैंकिंग के सुधार के आन्दोलनो में ज्यादा

और ज्यादा दिलचस्पी ली। सन् १८६६ में सजायाफ़्ता मजदूरो की भरती का खात्मा, अमरीकी श्रमिको के स्तर को गिरने न देनें के लिए आव्रजन को और विशेषकर पश्चिमी तट पर काम के लिए चीनी कुलियो के आव्रजन की रोक थाम, सार्वजनिक भूमि सिर्फ वास्तविक प्रवासियो को देने और राष्ट्रीय सरकार द्वारा एक श्रम विभाग की स्थापना किए जाने के अन्य लक्ष्य भी अपनाए गए।

इन मुख्यत. राजनीतिक लक्ष्यो के साथ-साथ श्रमिको के व्यापक सगठन के लिए भी अपील की गई। उद्योगों में महिलाओ का हित स्वीकार किया गया; नई यूनियन ने सिलाई करने वाली महिलाओ, फैक्ट्री मजदूरनियो तथा अन्य श्रमिक महिलाओ को व्यक्तिगत रूप से सगठित सहयोग प्रदान किया और महिला श्रमिको की यूनियन ट्राय लाण्ड्री वर्कर्स की एक मुखिया को ऐसो-सियेशन का एक सहायक सचिव बना दिया गया। नीग्रो के सगठन को भी प्रोत्साहन दिया गया—किन्तु मजदूर आन्दोलन में उनके सम्भावित योग को पहली बार स्वीकार करते हुए भी उन्हे राष्ट्रीय मजदूर यूनियन में शामिल करने के बजाय, उनसे अपनी अलग यूनियन बनाने को कहा गया।

इस नए सगठन के निर्माण से पहली बार राष्ट्रव्यापी आधार पर मजदूरों का नेतृत्व पनपा और जिन व्यक्तियो ने इनकी हरकतो मे प्रमुख भाग लिया उनमे अन्यतम विलियम एच० सिलविस थे, जिन्हे १८६८ मे इसका अध्यक्ष चुना गया। उनको अध्यक्ष चुनने वाले सम्मेलन में भाग लेने वाले मजदूर नेताओ पर टीका करते हुए 'न्यूयार्क सन' ने जब यह कहा कि "उनका नाम घर-घर मे आदमियो की जबान पर रहता है" तो वह मानो इस बात की साक्षी दे रहा था कि सारे ही देश में उन्होने कितनी ख्याति अर्जित कर ली थी।

इस समय सिलविस ४० वर्ष का, मध्यम आकार वाला मजबूत, खूबसूरत रंग का हल्की दाढी-मूछो वाला आदमी था जिसके "चेहरे और आँखो से सूझ-बूझ फूटी पडती थी।" शायद ही कोई मजदूर नेता ऐसा होगा जो ध्येय के प्रति उससे ज्यादा एकनिष्ठ, मजदूरो के लिए अपने सम्पूर्ण निजी स्वार्थ को होम कर देने वाला हो या जिसे अपने साथी कर्मचारियो की उनसे अधिक वफादारी और स्नेह प्राप्त हो। उन्होने वस्तुतः मज़दूरो के लिए स्वयं को खपा

दिया। एक बार उन्होंने कहा : "मुझे यूनियन का काम बहुत प्रिय है और मैं इसे अपने परिवार या ज़िन्दगी से भी प्यारा समझता हूँ मैं इसके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने को तत्पर हू।"

मज़दूरों को क्या नीतियां अपनानी चाहिएँ, इस बारे मे उनके विचार बहुत बदलते रहे। उनके विचार बहुत अनिश्चित तथा असंगत थे। किन्तु किसी ख़ास मौके पर उनकी टेक कुछ भी रही हो, वह बड़े उग्र होकर उसकी वकालत करते थे। एक बार उन्होंने अपने आलोचको को दुमुंही झगडालू गिरोह कहा था—किन्तु उनके सबसे तीखे बाण हमेशा नए पूंजीवादी वर्ग के लिए रिज़र्व रहते थे, जिनके बारे मे वह दृढ़ता से यह महसूस करते थे कि वे मज़दूरों का शोषण कर रहे हैं। इस वर्ग को वह पैसे के घमण्ड में चूर, अभिमानी, क्रोधी.....जिस किसी के साथ सम्पर्क में आया उसी को उड़ा देने या मुरझा देने वाला बताया।"

सिलविस एक वैगन-निर्माता का लड़का था और १८२८ में उसका अन्नोफ, पसिल्वेनिया में उसका जन्म हुआ था। जब वह अभी लड़का ही था, तब उसने स्थानीय लोहे की फाउण्ड्री में काम किया था। १८४० के दशक में किसी समय उन्होंने अप्रेण्टिसशिप का कोर्स पास करके "आजादी का चोगा" पहना था और उन्होंने एक दहाड़िये मोल्डर की नई हैसियत प्राप्त की थी। वह बढ़िया गरम कोट, सफेद कमीज़, ऊनी मोजे, मुलायम चमड़े के जूते और बढ़िया रेशमी हैट पहनते थे। फिलाडेल्फिया में और उसके आस-पास अपना कारोबार जारी रखते हुए वह स्थानीय स्टोव और हौलोवेअर मोल्डर्स यूनियन में शामिल हो गए और तुरन्त एक सक्रिय मजदूर संगठनकर्ता बन गए। सब मोल्डरों को एक ही संगठन में लाने की उनकी लगन थी और ज्यादातर उन्ही के प्रयत्नो से १८५६ में फिलाडेल्फिया में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसमें १८ स्थानीय यूनियनों के ४६ प्रतिनिधियो ने नेशनल मोल्डर्स यूनियन की स्थापना की।

गृह-युद्ध छिड़ते ही यह खत्म हो गई और सिलविस स्वयं कुछ अरसे के लिए सेना में भरती हो गए। किन्तु सन् १८६३ में वह अपने मनपसन्द काम मे फिर आ जुटे और पुनरुज्जीवित आइस मोल्डर्स इण्टरनेशनल यूनियन के अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने पूरे मनोयोग से इस संगठन का निर्माण किया और

अपने अथक उत्साह से उन्होने नए तौर-तरीको से मजदूरो का सगठन किया। देश के इस पार से उस पार आते-जाते—जबकि उन्हे रेल-किराये के लिए पैसा पास न होने के कारण इजन ड्राइवर के केबिन में बैठ जाने के लिए प्रार्थना करनी पड़ती थी एक के बाद एक शहर में वह स्थानीय मोल्डरो के ग्रुपो से मिले और उन्हे स्थानीय यूनियन बनाने में सहायता दी तथा राष्ट्रीय यूनियन का उन्हें सदस्य बनाया। १८६४ मे वार्षिक सम्मेलन के लिए लौटते हुए वह यह दम भर सके कि "एक वर्ष के अल्प काल में ही हमारी यूनियन पिद्दी से दैत्याकार बन गई है।" ५३ स्थानीय यूनियनो और कुल ७,००० सदस्यो (जो शीघ्र ८५०० हो गए) वाली आयरन मोल्डर्स इण्टरनेशनल यूनियन १८६५ तक देश भर मे सबसे मजबूत सुसम्बद्ध संगठन बन गया।

इस ज़माने में जब सिलविस इतनी अधिक यात्राए किया करते थे और न्यू इग्लैड, समुद्र तट के राज्यो, मिडवेस्ट और कनाडा मे इतने अधिक श्रमिको के साथ घनिष्ठ सम्पर्क मे आए तो वह उसे अपनी ज़िन्दगी का सबसे सुखी काल समझा करते थे। किन्तु जो थोड़ी-बहुत पूंजी उनके पास थी वह इसमें खत्म हो गई और वह मोल्डरो द्वारा दी गई तुच्छ राशियों पर निर्भर हो गए। इन दिनो का वर्णन करते हुए उनके भाई लिखते है कि वे अपने कपडों को तब तक नहीं छोडते थे, जब तक वे फटकर तार-तार नहीं हो जाते थे। जो शाल उन्होंनें अपने मृत्यु-दिवस तक पहने रखा वह छोटे-छोटे छेदो से भरा पडा था। ये छेद अनजान शहरो में मोल्डरो के, जिसका संगठन करने की वह कोशिश कर रहे थे कलछो से पिघले हुए लोहे के छिटक कर गिर जाने से हुए थे।"

सिलविस ने जिस योग्यता से सगठन किया प्रशासन भी उसी योग्यता से किया। नियत्रण प्रभावशाली ढग से राष्ट्रीय यूनियन मे केन्द्रित था, यूनियन के सब सदस्यो पर प्रति व्यक्ति टैक्स लगा हुआ था जिससे पर्याप्त बड़ा हडताल कोष स्थापित हो गया और यूनियन कार्ड जारी करने से और मज़दूर अखबारो में मजदूरो के साथ दगा करने वालो के चित्र छपने से बन्द कारखाना प्रणाली को अपनाया जाना संभव हुआ। सिलविस का सामूहिक सौदेबाजी में बहुत विश्वास था और वह हडतालो को प्रोत्साहन नही देता था किन्तु जब मजदूरो के पास हडताल के सिवा कोई चारा नही रहता था तो वह उनका

पूरी तरह समर्थन करने को तैयार रहता था । .. .."तब परिणाम इस बात पर निर्भर करता था कि कठोरतम प्रहार कौन कर सकता है ।"

१८६७-६८ के जाड़ो तक मोल्डर्स यूनियन की नीतिया सब कही सफल रही किन्तु उस कठिन मौसम मे राष्ट्रीय स्टोव निर्माता और आयरन फाउण्डर्स ऐसोसियेशन ने पूरी शक्ति से जवाबी प्रहार किया । वेतनो मे कटौती की गई और यूनियन के सदस्यों को खाली बिठा दिया गया । जब मजदूरो ने हडताल की तो मालिक इतने मजबूत हो गए थे कि उन्होने तालाबन्दी कर दी । संघर्षरत मोल्डर महीनो तक यथाशक्ति लडे किन्तु उनका हडताल कोष समाप्त हो गया और अन्त में आन्तरिक कलह ने उनके संयुक्त मोर्चे को तोड डाला और वे मालिको की शर्तों पर वापस काम पर आने लगे । सिलविस ने यूनियन को बिल्कुल नेस्तनाबूद होने से तो बचा लिया किन्तु हडताल विफल हो जाने से उसका पहले की सी शक्ति और प्रभाव जाता रहा ।

इस अनुभव से वह इतना निरुत्साहित हुआ कि वह अपना अधिक से अधिक ध्यान ट्रेड यूनियनवाद से हटाकर सामान्य श्रम-सुधारो की ओर देने लगा और इस प्रकार नई राष्ट्रीय मजदूर यूनियन में अपने कार्य के लिए व्यापक क्षेत्र पाया । वह यूनियन सगठन को, कानून द्वारा काम का दिन ८ घण्टे का कराने के आन्दोलन को, सहकारी सस्थाओ के निर्माण तथा मुद्रा सुधार को पहले की ही भाति जोर-शोर से अपना समर्थन प्रदान करने को तैयार था । अपने पहले के विचारो से पीठ फेर कर उसने अपना सारा प्रभाव इन सुधारों को राजनीतिक कार्रवाई से प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय मजदूर यूनियन की नई विचारधारा के पोषण मे लगा दिया । इसका अध्यक्ष बनने के बाद अपने पहले परिपत्र मे उसने कहा : "हमारा नारा सुधार हो . सम्पन्न सामन्तशाही मुर्दाबाद, आम जनता जिन्दाबाद ।"

राष्ट्रीय मजदूर यूनियन की बैठकों से यह साफ जाहिर हो गया कि वह राजनीतिक सुधारो की ओर ज्यादा झुकती जा रही है । जो प्रतिनिधि १८६८ के सम्मेलन मे हाजिर हुए (महान औद्योगिक प्रश्नो पर जिनके दार्शनिक और राजनीतिज्ञतापूर्ण विचारो की न्यूयार्क हैरल्ड ने बहुत तारीफ की थी) वे ८ घण्टे की लीगो, भूमिसुधार ऐसोसियेशनो, एकाधिकार विरोधी सोसाइटियो तथ अन्य अनेक राजनीतिक ध्येयो का प्रतिनिधित्व करते थे । उनमे प्रमुख दो

महिलाओ को मतदान का अधिकार देने के कट्टर समर्थक एलिजाबेथ केडी सैण्टन और सूसान बी-एन्थनी थे। उनकी उपस्थिति ने तहलका मचा दिया, क्योकि यद्यपि सिलविस और अन्य नेता महिलाओ को मताधिकार दिए जाने का समर्थन करते थे, तो भी सामान्यत प्रतिनिधिगण इतनी दूर तक जाने को तैयार नही थे। मताधिकार के हिमायती नेताओ को उन्होने सम्मेलन में केवल तभी आने देना मजूर किया जब उन्होने उन नेताओ को स्पष्ट बता दिया कि उन्हें आने देने का मतलब यह नही है कि उनके "विचित्र विचारो" का वे समर्थन करते है। तो भी हैरल्ड ने देखा कि मिस ऐन्थनी "बडे मजे से उक्सा रही थी और दढियल प्रतिनिधियो पर उसने अपनी कोई कम छाप नही छोडी।"

इसी सम्मेलन में राष्ट्रीय मजदूर यूनियन ने एक कदम उठाया जिससे स्पष्ट यह पता चलता था कि आगे चलकर यह एक तीसरा दल बन जाएगा। इसने कई राज्यो में मजदूर सुधार दलो के निर्माण को प्रोत्साहन दिया और उनसे सीधी राजनीतिक कार्रवाई करने का अनुरोध किया। ट्रेड यूनियनिस्टो ने यह देखा कि उनके हित तो ज्यादा और ज्यादा उपेक्षित होते जा रहे है और ऐसी चीजे उनका स्थान ले रही है, जिनके साथ उनका अगर सम्बन्ध है, तो बिल्कुल परोक्ष है। गृह युद्ध से पहले की मजदूर काग्रेसो का पुराना इतिहास दोहराया जा रहा है। राष्ट्रीय मजदूर यूनियनके मामले मे प्राप्त तजुर्बे मे सिर्फ इतना ही फर्क था कि उस पर सुधारवादियो का (आनन्ददायक ढंग से उकसाने वाली मिस ऐथनी के बावजूद) कब्जा उतना नही था जितना मजदूर नेताओ का जो स्वयं सुधारक बन गए थे। सिलविस इस रुझान का ज्वलन्त उदाहरण था किन्तु अन्य लोग भी जो कभी ट्रेड यूनियनवादी रहे थे १८६० के दशक की समाप्ति तक सुधार तथा राजनीतिक गतिविधियो के कम उत्साही समर्थक नही रह गए थे।

सिलविस के अध्यक्ष चुने जाने पर राष्ट्रीय मजदूर यूनियन को जो ताकत मिली वह बहुत थोडी देर रही। १८६९ में इसके वार्षिक सम्मेलन से कुछ ही पहले उनका अचानक देहान्त हो गया। मजदूर आन्दोलन पर यह प्रबल आघात था और इसने "सब श्रमिको पर निराशा का पर्दा डाल दिया। शायद ही कोई यूनियन ऐसी हो जिसने सिलविल की प्रशसा मे प्रस्ताव पास न किए

हो, और अपने यशस्वी जीवन के चरम शिखर पर पहुँचे हुए एक महान नेता की अपूर्णीय क्षति पर श्रमिको के पत्रो में असख्य अग्रलेख लिखे गए। 'वर्किंगमेंस ऐडवोकेट' काले वार्डर में प्रकाशित हुआ।

यूरोप मे इण्टरनेशनल वर्किंगमेंस ऐसोसियेशन के नेताओ से भी शोक सदेश प्राप्त हुए। यह पहला अन्तर्राष्ट्रीय सगठन था जिसके साथ सिलविल ने "गरीबी और अमीरी के बीच सघर्ष के लिए" गठबन्धन करने की कोशिश की थी। एक पत्र मे, जिस पर अन्य लोगो के अलावा कार्ल मार्क्स के भी दस्तखत थे, कहा गया कि ससार ऐसे परखे हुए चैम्पियनो की अकाल मृत्यु को, जिस पर हम सबको समान रूप से अत्यन्त शोक है, सहन नही कर सकता।"

सिलविस ने मजदूरो के लिए कितना कुछ किया इसका पता मोल्डर्स इण्टरनेशनल यूनियन के निर्माण में उनके उत्साह से और राष्ट्रीय मच पर मज़दूरो के अधिकारो के हक में उनके प्रभावशाली समर्थन से पता चलता है। उन्होने स्वयं को मज़दूरो का सच्चा प्रवक्ता बना लिया था और उनकी वाणी का आदर किया जाता था। उनका जीवन यद्यपि अल्प रहा तो भी वह देश के पहले राष्ट्रीय नेता थे।

वह यदि और ज़िन्दा रहते तो राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन का इतिहास अब से ज्यादा भिन्न होता, इसके बारे में कुछ कहा नही जा सकता। उनके जीवित रहते हुए ही यह यूनियन एक सदिग्ध राजनीतिक रेखा को छूने लगी थी और सिलविस ने सुधार के लिए इसकी शक्तियो के भटकाव को रोकने के बजाय उसे बढ़ावा ही दिया था। कुछ भी हो, इसके दिन गिने-चुने रह गये थे। सिलविस के साथी और जहाज़ बनाने का काम करने वाले कर्मचारियो की अन्तर्राष्ट्रीय यूनियन के मुखिया रिचर्ड एफ० ट्रैवलिक अब इस यूनियन के नए अध्यक्ष बन गए थे। उनकी भी दिलचस्पी शुरू-शुरू में ट्रेड यूनियनवाद से हटकर राजनीति पर केन्द्रित हो रही थी। उनकी अध्यक्षता मे राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन ने अन्तिम छलाँग लगाई और १८७२ के वार्षिक सम्मेलन में यह राष्ट्रीय मज़दूर सुधार पार्टी बन गई। एक कार्यक्रम स्वीकार किया गया, जिसमे मुख्यतः मुद्रा-सुधार पर बल दिया गया और इलिनायस के जज डेविड डेविस को अध्यक्ष नामज़द किया गया। जब डेविस ने अपना नाम वापस ले लिया तो राजनीतिक आन्दोलन बिल्कुल ठण्डा पड़ गया और उसके

ठण्डा पड़ते ही राष्ट्रीय मजदूर यूनियन के दिन भी समाप्त हो गए।

राष्ट्रीय मजदूर यूनियन यद्यपि इतनी अल्पकालीन और असफल रही तो भी उससे सबन्धित कुछ बातों पर ज्यादा रोशनी डालने की ज़रूरत है। इनमे पहली चीज़ ८ घण्टे के दिन के लिए कानून बनवाने का आन्दोलन है, जिसे १८६६ में "सबसे अहम सवाल घोषित किया और जिस पर अब भी अमरीकी श्रमिकों का ध्यान केन्द्रित है।" यह उन सिद्धान्तो पर आधारित था जो उन पुरानी युक्तियों से भी ज्यादा गहरी थी, जिनमें काम के कम घण्टों का समर्थन मजदूरो के स्वास्थ्य-सुधार चरित्र-सुधार तथा उनको शिक्षा के लिए अधिक समय प्रदान करने की दृष्टियों से किया गया था। इसके हामियों के मुताबिक ८ घटे के दिन का उद्देश्य मजदूरों के वेतन और हैसियत दोनो को बढ़ाकर समाज के वर्तमान गठन को बदलना और इस प्रकार शनै.-शनै. मालिक और मजदूर के बीच खाई को कम करते-करते "पूंजीपति और श्रमिक को एक कर देना था।"

८ घण्टे के दिन के लिए मुख्य आन्दोलनकारी बोस्टन का एक मशीन चालक तथा यूनियन का वफादार सदस्य इरा स्टीवर्ड था, जिसको यह गहरा विश्वास था कि उसके विचारो में मज़दूरो की सब समस्याओं का हितनिहित है और उन विचारों को उसे हर समय और हरेक स्थान पर प्रचारित करने से नही रोका जा सकता था, इसे वह अपना मिशन समझता था। 'अमेरिकन वर्कमैन' में एक लेखक ने लिखा; "सडक पर चलते हुए आप किसी भी दिन उससे मिलिये, उस समय यदि आप कोई और बात उससे करेंगे तो वह कन्नी काट जाएगा...किन्तु जरा काम के घण्टों की बात छेड़कर देखिए और उसकी बात सुनने की इच्छा का इज़हार कीजिए, तो वह रुक जाएगा और आपको अंधेरा होने तक अपनी बात समझाता रहेगा।"

८ घण्टे के दिन के बारे में उसने मज़दूरो की अनगिनत सभाओ में भाषण दिए, मैसाच्युसेट्स विधानमण्डल के समक्ष गवाही दी, मज़दूरों के अखबारों के लिए पैम्फ्लेट और लेख लिखे और पहले मजदूर सुधार ऐसोसियेशन की और बाद में ग्रैण्ड एट अवर लीग आव मैसाच्युसेट्स की स्थापना की। उसके विचारों ने मजदूरों के मस्तिष्क को जकड़ लिया। ८ घण्टे की लीगें सब कही कायम हो गई और राष्ट्रीय मजदूर यूनियन इसके कार्यक्रम को

अपना कर मजदूरों के काम के दिन में इस प्रस्तावित कमी में राष्ट्रव्यापी दिलचस्पी को प्रकट कर रही थी।

स्टीवर्ड का मूल सिद्धान्त स्पष्ट ही उन विचारो और आचरणो का आख्यान करता था, जिन्हे २० वी सदी में और ज्यादा व्यापक रूप में स्वीकार कर लिया गया। उसका कहना था कि काम का दिन घटा कर ८ घण्टे कर देने से वेतनो की कोई हानि नही होनी चाहिए। मजदूर १० या १२ घण्टे काम करके जो मजदूरी प्राप्त करते थे, कम से कम उतनी मजदूरी तो वे ८ घण्टे के दिन में भी मागेंगे और चूकि यह माग सर्वव्यापी होगी इसलिए मालिको के पास इससे इन्कार करने का कोई युक्तियुक्त आधार न होगा।" इसका अगर मालिक प्रतिरोध करेंगे तो उसका यही अभिप्राय होगा कि ससार में प्रबलतम शक्ति के खिलाफ यानी अवाम की आदतो, रीति-रिवाजो और विचारो के खिलाफ वे स्वय 'हडताल' की बेवकूफी करेंगे।" जब मजदूरो को खाली समय ज्यादा मिलेगा, तब वे ज्यादा आनन्द मनाने की स्थिति मे होगे, फलस्वरूप उद्योगो का माल ज्यादा तादाद मे खरीदना चाहेंगे। इस तथ्य पर बल देते हुए कि "किसी वस्तु को बनाने की लागत उसकी बनाए जाने वाली सख्या पर निर्भर करती है," स्टीवर्ड ने कहा कि निर्माताओ को अपने बाजार के विस्तार से तुरन्त लाभ होगा, क्योकि जो चीजें कभी ऐश्वर्य की निशानी रही होगी उन्हे बडी सख्या में श्रमिको को बेचा जा रहा होगा।

मुख्य बात, जिस पर स्टीवर्ड ने बल दिया, यह थी कि काम के घण्टे वेतन में कटौती किए बिना कम किए जा सकते है यह विचार एक लोकोक्ति बन गया, जिसे उसकी पत्नी का बताया जाता है

चाहे तुम प्रति वस्तु के आधार पर काम
करो या दिहाडी पर, काम के घण्टे कम
करने से तनख्वाह बढती है।

यह एक बड़ा प्रश्नचिन्ह था कि क्या मालिक इस आशा से कि उनके माल के लिए क्रयशक्ति का निर्माण होगा, कानून द्वारा प्रतिपादित ८ घण्टे के दिन के लिए वस्तुत पहले जितना वेतन देंगे या नही। किन्तु पूंजीवादी

समाज के पूर्णत. पुनरुज्जीवन के आशावादी विचारो को फैलाने में ८ घण्टे की लीगे बहुत सफल रही।

राष्ट्रीय सरकार तथा कई राज्य सरकारो को मजदूरो की माग पूरी करने के लिए कार्रवाई करने को राजी कर लिया गया। राष्ट्रीय सरकार ने १८६८ में अपने सब कर्मचारियो के लिए ८ घण्टे का दिन नियत कर दिया और ६ राज्यो ने भी ८ घण्टे के दिन को 'कानूनी' करार दिया।

किन्तु इस कानून को अमल में लाने के लिए राज्यो की कोशिशे वैसे ही एक मरीचिका सिद्ध हुई, जैसे पहले १० घण्टे के दिन के लिए वनाए गए कानून। नए कानूनो मे फिर यही अपवाद रखा गया, "जहाँ इसके विपरीत कोई विशेष करार या राजीनामा" न हो और उसे व्यर्थ करने का कोई रास्ता प्रतीत नही होता था। उस समय राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन को जो एक रिपोर्ट दी गई वह बडी हतोत्साह करने वाली है। इसमें कहा गया : 'आपकी समिति यह भी कहना चाहती है कि ८ घण्टे का कानून ६ राज्यो ने पास किया है, किन्तु जहा तक उन पर अमल का सवाल है, अगर कानून की किताबो में वह कभी दर्ज ही न होता तो भी कोई फर्क नही पडता और इस कानून को मजदूरो के साथ ठग्गी ही कहा जा सकता है।"

इन वास्तविकताओ के सामने आने पर इस आन्दोलन को कुछ अरसे के लिए जो व्यापक समर्थन मिला था, वह जाता रहा। काम के अधिकतम घण्टे निश्चित करना सामाजिक सुधारको का लक्ष्य ज्यो का त्यो वना रहा। अन्त में राज्यो ने ये कानून विना किसी अपवाद सम्बन्धी धारा के स्वीकार किए और १९३० के दशक मे काग्रेस ने अन्तरराज्यीय व्यवसाय में लगे सब कर्मचारियो के लिए ऐसा ही कानून पास किया। किन्तु १९ वी सदी के अन्तिम चौथाई हिस्से में मजदूरो ने ८ घण्टे का दिन प्राप्त करने के लिए राजनीतिक रास्ता छोड दिया और वे फिर आर्थिक दवाव पर उतर आए। १८८० और १८९० की दशाब्दियो में ८ घण्टे के दिन के लिए जो आन्दोलन किए गए उनमे यूनियनो ने पहले की मजदूर सोसाइटियो की तरह सीधी मालिकों से माग की और उस पर अमल कराने के लिए हडतालो तक का आश्रय लिया।

काम के अधिकतम घण्टो के लिए १८६० की दशाब्दि के आदोलन जब ढीले पड गए तो मजदूरों की समस्याए सुलझाने के लिए सहकारिताए वनाने

का एक नया उत्साह पैदा हुआ और राष्ट्रीय मजदूर यूनियन ने इसका पूर्णतः समर्थन किया। १८४० के दशक की अपेक्षा इस आँदोलन से ज्यादा आशाएं की गई थी। सहकारिताओ के प्रवर्तक ८ घण्टे के दिन के समर्थको की भाति यही समझते थे कि उनकी योजनाओ से समाज का नव-निर्माण हो जाएगा। हर व्यवसाय मे उत्पादको की सहकारी संस्थाएं वनाकर श्रमिको से आत्म-नियोजन की एक ऐसी प्रणाली अपनाने के लिये कहा गया, जिससे अन्ततोगत्वा वेतन-प्रणाली खत्म हो जाए, उद्योग के लाभ के न्यायपूर्ण वितरण के लिए व्यावहारिक साधन उपलब्ध हो और जो मजदूरो को पूंजी के वन्धन से विल्कुल मुक्त कर दे।

सिलविस ने आयरन मोल्डरो की सहकारी सस्थाए वनाकर स्वय इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। उनकी स्थानीय यूनियनो ने न केवल ट्राय, रोचेस्टर, शिकागो, क्लीवलैण्ड, लुईसविल और अन्य शहरो में अपनी फाउण्ड्रिया चलाई किन्तु हडताल के अपने कडवे अनुभवो के बाद राष्ट्रीय यूनियन १८६८ स्वय एक सहकारी सस्था वन गई। अपना नाम यकायक आयरन मोल्डर्स इण्टरनेशनल को-आपरेटिव ऐण्ड प्रोटैक्टिव यूनियन रखकर इसने पिट्सवर्ग मे १५,००० डालर की लागत से एक विशाल फाउण्ड्री लगाने का वडा काम शुरू किया। १८६८ में एक समय इस कार्यक्रम के प्रति सिलविस इतना उत्साही रहा कि वह इसको सफल वनाने के लिये सव कुछ न्यौछावर कर देने को तैयार प्रतीत हुआ। उसने कहा : "समय आ गया है, जव हमे हडतालो की समस्त परिपाटी को छोडकर सहकारिता को अपने सगठन का आधार तथा अपने सव प्रयत्नो का प्रमुख लक्ष्य वनाना चाहिए।"

अन्य यूनियनो ने मोल्डरो का अनुकरण किया। मशीन चालकों ने ज्वाइण्ट स्टाक आधार पर कई वर्कशाप कायम किए, मोचियो ने उत्पादक तथा उपभोक्ता दोनो की सहकारी सस्थाए वनाई, टीन की चद्दरो का काम करने वालो ने मिन्नीपोलिस में ८ कारखाने लगाए और वेकरो, मुद्रको, हैट वनाने वालो, खातियो तथा जहाज वनाने वालो ने भी ऐसी ही परियोजनाए चालू की।

कुछ समय तक तो ये सहकारी संस्थाएं सफल होती दिखाई दी, किन्तु धीरे-धीरे एक-एक करके वे फेल हो गई। व्यावसायिक समाज ने उन्हें "कम्यूनिज्म के फ्रांसीसी सिद्धान्त" वताकर उनका कडा विरोध किया और उन्हें

गला-काट प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा। किन्तु वास्तविक मुसीबत उनका अपना व्यवसाय चलाने का ढग ही था। यूनियन के अधिकारियो में प्रबन्ध कुशलता नही थी और सहकारी संस्थाएं बडी अयोग्यता से और कभी-कभी बेईमानी से चलाई जा रही थी जिससे उनकी कठिनाइयां बढ़ती चली गईं। इसके अतिरिक्त एक मूल बाधा यह थी कि उस ज़माने में जबकि किसी भी उत्पादक व्यवसाय के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी लगाना आवश्यक हो गया था, यूनियनों के पास पैसे की कमी थी और उन्हें ऋण मिलना वस्तुत असम्भव था।

इसी कारण राष्ट्रीय मजदूर यूनियन ने अपना ध्यान मुद्रा-सुधार की ओर मोडा और उसे मजदूरो की सहायता के लिए एक बुनियादी बात बताया। ऊपर से देखने पर यह आन्दोलन जो गृह-युद्ध मे चलाई गई मुद्रा के वापस लेने के प्रस्ताव से उत्पन्न हुआ था इस माग तक ही सीमित प्रतीत होता था कि गिरती हुई कीमतो को रोकने के लिए मुद्रा-प्रसार की नीति अपनाई जाए। जिन दिनो में मजदूर द्रव्य को मंहगा बनाने की माँग किया करते थे, उनके मुकाबले आज की माग एक विचित्र-सी माँग प्रतीत होती थी किन्तु मुद्रा सुधार के पीछे निहित सिद्धान्तो का महज मूल्य स्तर में परिवर्तन से कही गहरा तात्पर्य था। इस प्रश्न पर मजदूर किसानो से मिल गए, क्योकि इसमें समस्त वित्तीय और आर्थिक प्रणाली में आमूल परिवर्तन के सब्ज बाग दिखाए गए थे। ८ घण्टे के दिन और सहकारिता के समान ही मुद्रा-सुधार का आदोलन भी पूंजीवाद की जगह उत्पादको का कामनवेल्थ स्थापित करने की आशा रखता था।

नई मुद्रा-प्रणाली के लिए अपने विचार अधिकांश में १८४८ में एडवर्ड केलोग द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावो से लेकर मुद्रा सुधारको ने सार्वजनिक ऋण को ३ प्रतिशत ब्याज के बौण्डो मे तब्दील कराने का अनुरोध किया जो सोने के बजाय देश की भौतिक सम्पदा के आधार पर खडी कानूनी मुद्रा में इच्छानुसार परिवर्तनीय हो। यह ख्याल किया गया कि इस कार्यक्रम से "गैर-जिम्मेदार बैंकिंग ऐसोसियेशनो" का एकाधिकार टूट जाएगा और "ब्याज की ऊँची दर से होने वाली लूट" बन्द हो जाएगी और आर्थिक प्रणाली सोने पर निर्भर रहने के बन्धन से मुक्त हो जाएगी, जिस बन्धन के कारण "मजदूर की खून-पसीने की

कमाई पालने से लेकर कब्र तक रेहन ही रहती है।"

मजदूरों को उनके स्वाभाविक अधिकार दिलाने की यह अन्तिम अचूक दवा थी। राष्ट्रीय मजदूर यूनियन ने सुपरिचित वाक्यावलि में कहा : "इस से अनुत्पादक पूंजी तथा श्रम के बीच श्रम के उत्पादन का न्यायोचित वितरण होगा, मजदूरों को अपने श्रम का उचित मुआवजा मिलेगा और पूंजी को उचित पुरस्कार। इससे अत्यधिक श्रम की आवश्यकता भी जाती रहेगी और औद्योगिक वर्गों को सामाजिक तथा बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक समय और साधन उपलब्ध होंगे।"

एक बार फिर सिलविस जो बारी-बारी से ट्रेड यूनियनवाद, ८ घण्टे का आन्दोलन और सहकारिता में बहता रहा इस सुधार के आन्दोलन को जोर-शोर से चलाने लगा। उसने लिखा : "अमरीका में लगभग ३००० मजदूर यूनियनें हैं। हमें उन्हें सिखाना चाहिए कि जब एक न्यायपूर्ण मुद्रा-प्रणाली कायम हो जाएगी तब ट्रेड यूनियन की आवश्यकता नहीं होगी।"

किन्तु इस कार्यक्रम को अपनाने से और मुद्रा-सुधार के राजनीतिक आंदोलन में शामिल होने से ही राष्ट्रीय मजदूर यूनियन ट्रेड यूनियनिस्टों का सहयोग खो बैठी और १८७२ में एक राजनीतिक आन्दोलन का प्रयत्न करने के बाद खत्म हो गई। तो भी किसानों और मजदूरों दोनों में मुद्रा-सुधार के कट्टर पक्षपाती अब भी बचे रह गए थे और बाद के वर्षों में कानूनी टेण्डर-मुद्रा तथा परिवर्तनीय बाण्ड की मांग पर जोर देने के लिए सारे देश में स्थानीय मुद्रा सुधार पार्टियां बनीं। अन्ततोगत्वा इन दलों ने मिलकर एक राष्ट्रीय मुद्रा सुधार मजदूर दल कायम हुआ और १८७८ के मध्यवर्ती चुनावों में उसे १० लाख से अधिक वोटें प्राप्त करने तथा १४ प्रतिनिधि कांग्रेस में भेजने में सफलता मिली।

इस पार्टी द्वारा डाले गये दबाव से ग्रीन बैंक मुद्रा की और वापसी रुकने में तो सहायता मिली किन्तु जिन बुनियादी चीजों के लिए मुद्रासुधार के हिमायतियों ने आन्दोलन किया वे दरगुजर कर दी गई। १८७८ के रिजम्पशन ऐक्ट में बचे-खुचे नोट सोने में परिवर्तनीय बना दिए गए। इस कदम के उठाए जाने के बाद ग्रीन बैंक मजदूर पार्टी जिसने अस्थायी रूप से मजदूरों और किसानों को एक संयुक्त कार्यक्रम के लिए मिला दिया प्रतीत होता था, शीघ्र

लुप्त हो गई। मुद्रा-सुधार को मजदूर नेताओ का तो समर्थन प्राप्त था किन्तु इसमें शक है कि सामान्य मजदूरो में उससे कोई विशेष उत्साह पैदा हुआ हो। इसके परिणामों को वे समझ नही सकते थे। और इसका उन्होने जितना भी समर्थन किया वह इस लिए कि मौजूदा परिस्थितियो के खिलाफ वे अपना असन्तोष जाहिर करना चाहते थे तथा ऐसे किसी भी प्रोग्राम को स्वीकार करने के लिए उत्सुक थे, जो उन्हे राहत प्रदान करने का वचन देता हो।

१८७२ में राष्ट्रीय मजदूर यूनियन के खात्मे के बाद एक ऐसा नया सगठन बनाने की कोशिशें की गई, जो राजनीति से अछूता रह कर मजदूरो को फिर से ट्रेड यूनियनवाद और आर्थिक कार्रवाई के सीधे रास्ते पर ले जाए। १८७३ और १८७५ के बीच अनेक औद्योगिक काँग्रेसे की गई जिनके प्रतिनिधियो ने घोषणा की कि "आज की सब से बडी जरूरत, ८ घण्टे के दिन की, मुद्रा सुधार की या अन्य सुधार की नही बल्कि उत्पादक जनसमूह के सगठन, शक्ति सचय और सहकारी प्रयत्न की है।" इन्ही सामान्य उद्देश्यो के लिए 'इण्डस्ट्रियल ब्रदरहुड' तथा 'सौवरेन्स आव इण्डस्ट्री' नाम से दो गुप्त सोसाइटिया भी बनाई गई। किन्तु ये प्रयत्न कुछ नेताओ द्वारा मजदूरो पर ऊपर से एक प्रकार का नियंत्रण थोपने की कोशिशे ही थी और वस्तुत उन्हें पर्याप्त समर्थन प्राप्त नही था। बहस और विचार-विमर्श के लिए मच प्रदान करने के अलावा उनकी और कोई उपयोगिता नही थी।

इसके अतिरिक्त इस समय की आर्थिक परिस्थितियो ने एक बार फिर मजदूर आन्दोलन के तले से जमीन खिसका दी थी और किसी प्रभावशाली कार्रवाई के मार्ग में अलघ्य बाधाए खडी कर दी थी। १८७३ में देश में ऐसा आतक फैला कि १८३० के दशक से भी ज्यादा भीषण मन्दी का दौर-दौरा चला। गिरती हुई कीमतो, व्यवसाय के तरक्की न करने, उत्पादन और वेतनो में कटौती तथा बेकारी की वही पुरानी कहानी दोहरायी गई। खान, मिलो व कारखानो ने जैसे-जैसे अपना कारोबार घटाया या वे बन्द हो गए, वैसे ३० व्यक्ति बेकार हो गए। इस कठिन समय ने न केवल राष्ट्रीय मजदूर यूनियन तथा औद्योगिक कांग्रेसो जैसे मजदूर-एकता के अस्पष्ट प्रयत्नो को एकदम खत्म कर दिया बल्कि विद्यमान राष्ट्रीय यूनियनो को बिलुल तहस-

नहस कर दिया। वेतनो में कटौती और बढती हुई बेकारी के दारुण प्रहारो को वे उसी प्रकार नही सह सकी, जैसे ४० वर्ष पूर्व की यूनियनें जिनमे बडी आशाएँ थी। १८३७ के आतक के विध्वसात्मक परिणामो को झेलने में असफल रही।

जब संकट आया तब कोई ३० राष्ट्रीय यूनियनें थी। १८७७ मे लेबर स्टैण्डर्ड ने सिर्फ ६ की सूची प्रकाशित की और यूनियन के सदस्य-मजदूरों की कुल सख्या ३ लाख से घट कर शायद ५० हजार रह गई। एक के बाद दूसरी यूनियन का यही अनुभव रहा। 'दि नाइट्स आव सेण्ट क्रिस्पिन' जूता बनाने वालो का एक विलक्षण सगठन था, जो औद्योगिक आधार पर स्थापित किया गया था, जिसके जल्दी ही ५० हजार सदस्य बन गए और जो एक के बाद एक हडताल करके "बन्द कारखाना" पद्धति को लागू कराने में आश्चर्य-जनक रूप से सफल रहा। किन्तु जितने तेजी से यह उभरा था उतनी ही तेज़ी से बैठ भी गया और १८७८ तक बिल्कुल खत्म हो गया था। मशीन चालको और लुहारो के दो-तिहाई और टीन का काम करने वाले श्रमिको के तीन-चौथाई सदस्य खत्म हो गए। ज्यादा स्थिर नेशनल टाइपोग्रैफिकल यूनियन के भी आधे सदस्य जाते रहे और नव-निर्मित सिगार-निर्माता राष्ट्रीय यूनियन के सदस्य ६,००० से घटकर एक हजार से कुछ ही अधिक रह गए। ट्रेड यूनियनवाद बिल्कुल तो नही कुचला गया लेकिन मालिक जब इस कठिन समय का हर लाभ उठाने की चेष्टा कर रहे थे, और मज़दूर अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे, तो यह वस्तुत. भूमिगत हो गया।

गृहयुद्ध के बाद की दशाब्दि मे मज़दूर स्वयं को एक औद्योगिक समाज की नई परिस्थितियो के अनुकूल नही ढाल सके और मन्दी का सामना करने के लिए वे अन्तास्थ शक्ति प्राप्त नही कर पाए थे। इसके नेता असख्य विचार और कार्यक्रम रखते थे, किन्तु ट्रेड यूनियन गतिविधि, सुधार और राजनीति के प्रति फिसलती, बदलती मनोवृत्ति को विशाल श्रमिक समुदाय का पर्याप्त तथा व्यापक समर्थन नही मिला और न ही उमने एकता की कोई वास्तविक भावना उत्पन्न की। श्रम-सम्मेलनो की लम्बी-चौडी बहसो और मज़दूर अखबारो के लेखो और अपीलो के बावजूद मज़दूर आन्दोलन के मुट्ठी भर सक्रिय कार्यकर्ताओं तथा उनके नाम मात्र के अनुयायियो के बीच खाई बढती

हुई प्रतीत हुई।

राष्ट्रीय मजदूर यूनियन की गतिविधियो के पीछे अगर कोई निश्चित विचारधारा थी तो वह सुधार के इस सिद्धान्त पर आधारित थी कि किसी प्रकार उत्पादक आर्थिक प्रणाली को अपने कब्जे में ले ले और उसका नियत्रण करे। अब तक भी यह बात व्यापक रूप में अनुभव नही की जाती थी कि मशीन, सामूहिक उत्पादन तथा बड़े पैमाने पर पूंजी विनियोग ने मजदूरो के लिए उत्पादकों की सहकारिताओ जैसे आसान तरीको से उत्पादन के साधनो पर नियंत्रण स्थापित करना असंभव बना दिया है। सुधारक आगे देखने के बजाय पीछे देख रहे थे। स्थायी रूप से मज़दूरी कमाने वालो का एक वर्ग वस्तुत बन गया था जिसे स्वीकार करने मे मजदूर नेता अब भी हिचकिचा रहे थे। ८ घण्टे का आन्दोलन, मुद्रा-सुधार तथा सहकारिता समाज को पुनरुज्जीवित कर सकने के उपायों के बारे में मध्यम वर्ग के विचारो की उपज थे, उनका जन्म पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूरो की तात्कालिक आवश्यकताओ को वस्तुत. समझने के कारण नहीं हुआ था।

७ : उथल-पुथल का युग

१८७० के दशक की मन्दी से अमरीका के मजदूर इतिहास में एक सबसे अधिक सभ्रमित युग का आविर्भाव हुआ। कठिन जमाने की अँधियारी पृष्ठ-भूमि मे मजदूर "मालिको के क्रूर शोषण के खिलाफ" हिंसात्मक विरोध पर उतर आए। बेकारो द्वारा एक के बाद एक शहर मे प्रदर्शन किए गए जिनमें प्राय पुलिस को अपनी शक्ति से हस्तक्षेप करना पड़ता था। खनिकों की ‹ मे रक्तपात और मारकाट हुई और १८७७ में रेलकर्मचारियो के सहज विद्रोह से इतने व्यापक दगे हुए कि ऐसा लगता था, मानो देश को एक आम मजदूर विद्रोह का सामना करना पड़ रहा हो।

इन उपद्रवो के शान्त हो जाने के बाद भी मजदूरो मे अशान्ति और असन्तोष भीतर ही भीतर खतरनाक रूप से सुलगता रहा और जब १८८० के दशक मे पुन मन्दी आई जिसमे कि वेतनो में कटौती और बेकारी का सामान्य चक्र पुन चला तो इतनी अधिक हडताले हुई कि इस जमाने को ही "महान उथल-पुथल" के जमाने का नाम दिया गया। राष्ट्र को पहली बार यह अच्छी प्रकार महसूस हुआ कि औद्योगिक मजदूरो में, जो बदलते हुए अर्थतन्त्र की उपज थे, कितनी बड़ी विस्फोटक शक्ति निहित है।

यह आश्चर्य की बात नही थी कि जब ये उपद्रव हो रहे थे तो जनता और रूढिवादी व्यापारिक हितो ने महसूस किया कि देश खतरे में है। जो लोग बाहर से देश में आ रहे थे उनमें ऐसे विदेशी उग्रपन्थी भी थे जो उस समय यूरोप में व्यापक रूप से प्रचलित समाजवादी और यहाँ तक कि अराजकतावादी विचारो को अमरीका के मजदूरो पर थोप देना चाहते थे। ये लोग सुधार की धीमी प्रक्रिया के बजाय उन्हे सीधी कार्रवाई के लिए उकसाते थे। उनके प्रभाव के भय ने बेकारो के प्रदर्शनो तथा हड़तालो की अनेक रिपोर्टों को भी दूपित कर दिया था और १८८६ के हेमार्केट स्क्वेयर के दगे में यह भय बहुत बढ गया। समस्त मजदूर आन्दोलन पर उग्रता और हिंसा का लाँछन लग गया। किन्तु कम्यूनिज्म और अराजकता के खिलाफ चीख-पुकार मचाकर

कन्ज़र्वेटिव अमरीकी मजदूर की उग्रपन्थिता को बहुत बढा-चढाकर बता रहे थे। अपने वामपक्षी तत्वो के बावजूद मजदूर मूलतः रूढिवादी ही थे। पूँजीवाद का तख्ता उलटने के बजाय वर्तमान अवस्थाओ मे सुधार ही अब तक भी मज़दूरो का लक्ष्य था। १८७० और १८८० के दशको में मजदूरो के उपद्रवों के लिए विदेशी उग्रपन्थियो को जिम्मेदार ठहराते हुए उस समय के अखबारो और बाद के जमाने के अखबार भी कम वेतन और बेकारी के उन बुनियादी तत्वो की उपेक्षा कर रहे थे जो मजदूरो के असन्तोष के लिए मूलतः जिम्मेदार थे।

१८७७ की महान रेल हडताल जैसे नाटकीय विद्रोह में जो हिंसा हुई उसे इस पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए कि चिरकाल से मन्दी का दौरदौरा चल रहा था, जिनके वेतनो में कटौती की गई थी या जो बिल्कुल बेकार थे उनके कष्ट दूर करने के लिए कोई सार्वजनिक प्रयत्न नही किया गया, रेलो के, जिन पर सिर्फ मुनाफो में दिलचस्पी रखने वाले बैंकरो और महाजनो का नियन्त्रण था, बडे-बड़े मालिको का रवैया बड़ा कठोर था और अन्याय के विरुद्ध मज़दूरो के प्रतिरोध को प्रभावशाली रूप देने के लिए मज़दूरो का कोई सगठन नही था। रेलकर्मचारियो के भीतर सुलगती हुई असन्तोष की आग के खुले विद्रोह के रूप में भडक उठने के लिये उग्रपन्थी आन्दोलन की चिनगारी की जरूरत नही थी। जब वेतनो में लगातार कटौतिया किए जाने से मजदूर हताश हो गए और उन्होने कटुताभरी चुनौती देने के ख्याल से अन्धाधुन्ध हडताले कर दी तो यह आग अपने आप भभक उठी।

मज़दूरो मे अशान्ति और सघर्ष के इस युग में 'नाइट्स ऑव लेबर' और उन राष्ट्रीय यूनियनो का शनैः-शनैः विकास हुआ जो बाद में 'नाइट्स' के साथ प्रतिद्वन्द्विता करते हुए अमेरिकन फैडरेशन आव लेबर के रूप में मिलकर एक हो गए। किन्तु बुनियादी तौर से ये महत्वपूर्ण घटनाएँ उस असगठित हिंसा और उग्र आन्दोलन के सामने गौण हो गई जिनमे एक पूँजीवादी समाज के अन्तर्गत मजदूरो के बढते हुए कष्टो की छाया दिखाई देती थी। इस पूँजीवादी समाज में तब औद्योगिक सम्बन्धो में मानवीय तत्त्व की प्रायः उपेक्षा की जाती थी।

१८७३ के आतक का प्रभाव जैसे-जैसे गहरा और व्यापक होता गया वैसे-

वैसे सारे देश के शहरो मे अव्यवस्था के दृश्य दिखाई देने लगे। न्यूयार्क, शिकागो, बोस्टन, सिनसिनाटी और ओमाहा मे बेकार मजदूरो की भीड की भीड फैक्ट्रियो और कारखानो के बन्द होने से उत्पन्न असह्य परिस्थितियो के खिलाफ विरोध प्रदर्शित करने के हेतु विशाल सभाएँ करने के लिए एकत्र होने लगी। १६ वीं सदी के प्रथमार्ध के कम जटिल कृषि समाज की अपेक्षा औद्योगिक समाज मे बेकारी कही ज्यादा खतरनाक थी। बेघर, भूखे और निराश मजदूरो ने पुलिस द्वारा उनकी सभाएँ भग किए जाने की कोशिशें करने पर तितर-बितर होने से इन्कार कर दिया। स्वतन्त्र रूप से सभाएँ करने के अपने तथाकथित अधिकार की रक्षा के लिए वे जमकर लडें और अपनी माँगे पूरी करने के लिए उन्होने समाज को चुनौती दी।

इनमें सबसे विख्यात उपद्रव १३ जनवरी, १८७४ को न्यूयार्क में टाम्पकिन्स स्क्वेयर में हुआ। नगर के अधिकारियो को राहत की आवश्यकता के प्रति सजग करने के लिए बेकारो की एक सभा बुलाई गई थी। इस सभा के लिए पूर्व स्वीकृति दे दी गई थी और मेयर ने इसमे भाषण करने का वचन दिया था। इस बात का पता लगते ही कि उग्र आन्दोलनकारी सभा में भाषण करने की तैयारी कर रहे है और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सघ की अमरीकी शाखा के सदस्यो ने इस सभा के इन्तजाम मे भाग लिया है, अन्तिम क्षण सभा के लिए पुलिस का परमिट रद्द कर दिया गया। किन्तु पूर्वनिर्धारित समय पर टाम्पकिन्स स्क्वेयर मजदूरो से खचाखच भर गया। उन्हें सभा के प्रति सरकारी रवैया बदल जाने का पता ही नही था। शीघ्र ही घुडसवार पुलिस का एक दस्ता सभा-स्थल पर आ गया और बिना किसी चेतावनी के जो कोई भी पकड मे आया उसी पर अन्धाधुन्ध डण्डे बरसाने शुरू कर दिये। स्त्री-पुरुष व बच्चे जब डरकर भागे तो उनमें से अनेक कुचले गए और बीसियो निरपराध तमाशबीन पुलिस के हमले से अपना बचाव करने का प्रयत्न करते हुए जख्मी हो गए।

न्यूयार्क टाइम्स ने अगले दिन लिखा कि पुलिस ने अपने डण्डो का इस्तेमाल "अत्यधिक सख्ती से नही, बल्कि विवेक से किया है और अफसरो के आगे बढने पर भीड मे जो भगदड मची वह भी देखने लायक थी।" मजदूरो में असन्तोष के मूल कारण तथा बेकारी के बदले मे राहत पाने का जो थोडा-

बहुत अधिकार उनका था, उनकी उपेक्षा करते हुए अखबार ने यह रवैया अपनाया कि यह प्रदर्शन विदेशी उग्र-पथियो की कारस्तानी थी। इसने अपने अग्रलेख में कहा : "कल जो व्यक्ति गिरफ्तार किए गए वे सब विदेशी—मुख्यत: जर्मन या आयरिश मालूम पड़ते है। कम्यूनिज्म स्वदेश की उपज नही है।"

एक युवा मज़दूर भी था जिसने यह सबक अच्छी तरह हृदयगम कर लिया कि टाम्पकिन्स स्क्वेयर के दगे से मालूम पडता है कि ट्रेड यूनियन द्वारा उग्र-पंथियो का नेतृत्व अपनाए जाने में कितन बड़ा खतरा है। जब पुलिस भीड पर हमले कर रही थी तब यह तरुण सेम्मुअल गाम्पर्स वहाँ मौजूद था और वह एक तहखाने मे कूद कर बडी मुश्किल से अपना सिर पुलिस के डडो से बचा पाया था।

वर्षो बाद अपनी आत्मकथा मे उसने लिखा . "मैने देखा कि किस प्रकार उग्रवादिता और सनसनीवाद ने समाज की सब बातो को मज़दूर आन्दोलन के खिलाफ एकत्र कर दिया और पहले से ही उसने सामान्य, आवश्यक गतिविधियो को समाप्त कर दिया। मैने देखा कि मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व सुरक्षित रूप से उन्ही लोगो को सौपा जा सकता है जिनके हृदय और मस्तिष्क दैनिक श्रम से रोटी कमाने के अनुभव से परिपक्व हो गए हो। मैने देखा कि मज़दूरो के हित-साधन का काम मुख्यत. मजदूरों को ही करना चाहिए।"

टाम्पकिन्स स्क्वेयर के दगे और अन्य शहरो में बेकारी के प्रदर्शन के पश्चात् पूर्वी पेंसिलवेनिया की ऐन्थ्रसाइट कोयला खानो मे हिंसात्मक उपद्रवो पर लोगो का ध्यान गया। इस उद्योग के मजदूरो ने सौफ्ट कोयला खानो के मजदूरो की "माइनर्स नेशनल ऐसोसियेशन की तरह अपनी एक यूनियन बना ली थी जिसका नाम था—'माइनर्स एन्ड माइन लेबरर्स वेनेवलेण्ट ऐसोसियेशन।' यह यूनियन एन्थ्रसाइट व्यापार वोर्ड के साथ एक समझौता करने में कामयाब हुई किन्तु दिसम्बर १८७४ मे खान मालिको ने निर्धारित न्यूनतम मजदूरी की राशि में भी मनमाने ढग से कटौती कर दी। खनिक एकदम खानों से बाहर निकल आए और "लम्बी हडताल" चली। उन्होने खान मालिको को वेतनों में कटौती बहाल करने के लिये मजबूर करने की कोशिश

की । जब भूख और अभाव मजदूरो पर अपना असर दिखाने लगे और अनेक मज़दूर खानो में काम पर लौटने को विवश हो गए तो बाकी हड़तालियो तथा हडताल भंग करने वालो की रक्षा के लिए खान मालिको द्वारा बुलाई गई पुलिस में खुलकर सग्राम हुआ ।

इस उपद्रव-ग्रस्त स्थिति मे एक और बात ऐसी हो गई जिसके बारे मे यह निर्णय करना मुश्किल है कि इस लम्बी हडताल मे उसकी क्या भूमिका रही । लेकिन उस समय अखबारो मे इस आशय की सनसनीखेज रिपोर्ट छपी —कि खनिको मे 'ऐन्श्यन्ट आर्डर आव हाइबर्नियन्स नाम अथवा मौली मैगा-यर्स के अधिक लोकप्रिय नाम का एक गुप्त सगठन काम कर रहा है जिसने कोयला खानो मे आतक मचाया हुआ है और जो काम पर लौट आना चाहने वाले मजदूरो को काम पर लौट आने से रोक रहा है। इस सोसाइटी के सदस्यो पर खान मालिको को डराने-धमकाने की कोशिश करने का भी आरोप लगाया गया जैसा कि एक बार उन्होने मौली मेगायर नाम की दुर्धर्ष विधवा के नेतृत्व मे आयरिश जमीदारो को डराने-धमकाने की कोशिश की थी । इसी महिला के नाम पर उनके सगठन को मौली मैगायर कहा गया । खान मालिको को आतंकित करने के लिये उन्होने जो उपाय अपनाए, उनमें फोरमैन और सुपरिण्टेण्डेण्टो को हिंसात्मक धमकिया देना, खान की सम्पत्ति का विध्वस और विनाश तथा एकदम हत्याए कर देना शामिल था। बाद मे पता चला कि इनमें से कुछ हमले स्वय खान मालिको ने करवाए जिससे उन्हे न केवल मौली मैगायर को बल्कि सारे यूनियन सगठन को ही कुचलने का अवसर मिल जाए । पूर्वी पेंसिलवेनिया मे फैली इस हिंसा की विवेचना अव्यवस्था को दबाने के लिये उठाए गए कदमो से कम-से-कम आशिक रूप मे जरूर पुष्ट हो जाती है ।

फिलाडेल्फिया और रीडिग रेलवे के अत्यन्त कटु मजदूर विरोधी अध्यक्ष ने जिनका कई खानो पर नियन्त्रण था, इस अभियान मे पहल की । उसने जेम्स मैकपार्लन नाम के एक पिकरटन जासूस को भाडे पर रखकर उससे किसी भी कीमत पर मौली मैगायर्स की जरायम हरकतो का प्रमाण लाने के लिये कहा । स्वय को अदालत की सजा से डर कर भागा हुआ बता कर मैकपार्लन ने उनका विश्वास प्राप्त किया, उनके षड्यन्त्रो मे हिस्सा लिया और स्वयं भी

कुछ षड्यन्त्र रचाये, जिससे कि उसके आरोप सही निकले और अन्त में १८७५ की पतझड़ में वह ऐसी साक्षी जुटाने में सफल हो गया जिसके आधार पर अधिकारियो ने अनेक गिरफ्तारियाँ कराई। गवाह के कठघरे मे उसकी व अन्य सरकारी गवाहो की साक्षिया यद्यपि संदिग्ध प्रतीत होती थी तो भी उस मुकदमे मे २४ मौली मैगायर दण्डित हुए जिनमें से १० को फासी दे दी गई और बाकी को दो से ७ वर्ष तक की जेल की सजा दी गई। खानो मे शान्ति और व्यवस्था कायम हो गई। इस गुप्त सोसाइटी का अगर कुछ प्रभाव था भी तो वह इस हमले से खत्म हो गया। किन्तु इसके साथ ही खान मालिक 'माइनर्स बेनवलेण्ट ऐसोसियेशन' को तोड़ने और हडतालियो को अपनी शर्तो पर काम पर वापस लेने मे कामयाब हो गए। यह लम्बा सघर्ष मजदूरो के लिए पूर्ण विफलता में और उनकी यूनियन के वस्तुत. खात्मे के रूप मे समाप्त हुआ।

किन्तु ऐन्थ्रसाइट कोयला खानो में बेकारी के ये दगे और हिंसा १८७७ की रेल हडतालो की भूमिका थे। जिनमें ऐसी अव्यवस्था और दंगे हुए कि उन्हे संघीय सेनाओ की बदौलत ही दबाया जा सका। पहले आम जनता को मजदूरो से सहानुभूति थी। उनके वेतन मनमाने ढग से कम कर दिए गए थे, जबकि गिरे हुए मूल्य के शेयरों पर ऊँचे-ऊँचे डिविडेण्ड दिए जा रहे थे और कुछ भी हो १८७० के दशक में रेले बहुत ही अलोकप्रिय थी। न्यूयार्क ट्रिब्यून ने लिखा: कि "इस तथ्य से आँखें मूंदना मूर्खता है कि जनमत प्राय सब कही विद्रोहियो के साथ है।" किन्तु जब हिंसा अनियन्त्रित रूप में जारी रही तो सिर्फ सिविल व्यवस्था और अराजकता के बीच ही विकल्प रह गया। यद्यपि 'नेशन्स' के इस बेलाग वक्तव्य से हर कोई सहमत नही था कि हडतालियो को शुरू में ही प्रशिक्षित व्यक्तियो द्वारा आतंकित और कुचला जाना चाहिए था तो भी यह महसूस किया गया कि सरकार सार्वजनिक व्यवस्था पुन स्थापित करने की अपनी जिम्मेदारी को नही टाल सकती।

१८७७ की जुलाई के शुरू में वेतनो मे कटौती के खिलाफ हड़ताले सहज उद्भूत थी। पहली हडताल बाल्टिमोर तथा ओहायो में हुई और इसके बाद रेल कर्मचारियो की इसी प्रकार की हडताले पेंसिलवेंनिया, न्यूयार्क सेण्ट्रल

तथा एरी में हुई। अल्पकाल में ही मिसीसिपी से पूर्व की सब रेल लाइने इस हडताल से प्रभावित हुई और तब यह आन्दोलन मिसूरी पैसिफिक, सेण्ट लुई, कन्सास और नार्दर्न तथा अन्य पश्चिमी रेलों तक फैल गया। समूचे देश में रेल यातायात अव्यवस्थित हो गया और कही-कही तो बिल्कुल ठप्प हो गया। बाल्टिमोर और पिट्सबर्ग, शिकागो और सेण्ट लुई तथा सान-फ्रासिस्को में भी जब दगों ने खतरनाक रूप अख्त्यार कर लिया तो देश के सामने राष्ट्रव्यापी स्तर पर पहला औद्योगिक उत्पात फूट पड़ा। सेण्ट लुई रिपब्लिकन ने लिखा : "इसे हड़ताल कहना गलत है, यह एक मज़दूर क्रान्ति है।"

पहले पहल बाल्टिमोर और ओहायो के हड़तालियो का मार्टिन्सबर्ग, प० वर्जीनिया के अधिकारियो से सघर्ष हुआ और इन स्थानो पर शान्ति २०० सघीय सैनिक भेजे जाने के बाद ही कायम हो सकी। बाल्टिमोर मे दगे ज्यादा बड़े पैमाने पर हुए। वहा हड़तालियो ने सब ट्रेनें रोक दी, उन्हें चलने से रोका और रेलवे की सम्पत्ति पर कब्जा करना शुरू कर दिया। मैरीलैण्ड के गवर्नर द्वारा बुलाई गई मिलीशिया ने जब अपनी बारको से रेलवे स्टेशन की ओर कूच किया तो मज़दूरो और उनसे सहानुभूति रखने वालों की एक भीड़ ने उन पर ईंट-पत्थरो और डण्डो से हमला कर दिया। सेनाओ ने गोली चलाई और वह स्टेशन की ओर निकल गई किन्तु दगाइयो को खून का चसका लग गया था। उन्होने आक्रमण जारी रखा तथा स्टेशन को आग लगादी जब पुलिस और आग बुझाने वाले पहुँचे तो भीड़ ने उन्हें कुछ समय तक आग बुझाने से रोके रखा किन्तु अन्त मे वह हट गई। उपद्रव और दगे उस सारी काली डरावनी रात में होते रहे और अगले दिन सवेरे सघीय सेनाओ के आने के बाद ही वस्तुत. कुछ शाति कायम हो सकी। तब तक ६ व्यक्ति मर चुके थे और बीस से अधिक (जिनमें से तीन बाद में मर गए) सख्त घायल हुए।

इस बीच पिट्सबर्ग में इससे भी भयावह उपद्रव फूट पड़ा। वहा भी हड़तालियो ने ट्रेनें रोकी और रेलवे की सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया। यहा लोगों की सहानुभूति पूर्णत: रेल कर्मचारियो के साथ थी क्योकि पेंसिलवेनिया की नीतियो से यहा के लोग बहुत नाराज थे। स्थानीय मिलीशिया खुल्लम-खुल्ला हड़तालियो के साथ भाईचारा दिखा रही थी और उसने उनके खिलाफ

कोई कार्रवाई करने से इन्कार कर दिया। जब रेलवे की सम्पत्ति की रक्षा के लिए ६५० सैनिक फिलाडेल्फिया से पहुच गए तब जमकर लडाई हुई और सेना ने गोली चलाई। २५ से अधिक व्यक्तियो को मार डालने और इससे बहुत अधिक व्यक्तियो को जख्मी करने के बाद सेना ने इजनघर और मशीन-शाप को अपने कब्जे में ले लिया।

क्रुद्ध हडतालियो ने, जिनमें खनिक, मिल मजदूर और फैक्ट्री कर्मचारी भी आ मिले थे, आस-पास की बन्दूको की दूकानो से लूटे गए हथियारों से लैस होकर दुबारा हमला किया और सैनिको को घेर लिया। रात हो जाने पर माल के डिब्बो में आग लगा दी गई और उन्हे इजनघर में धकेल दिया गया, जिससे इंजनघर मे भी आग लग गई, सैनिक जो आग की लपटों मे घिर गए थे और धुए से जिनकी सास घुट रही थी, गोलियो की बौछारों के बीच लडते-भिडते घेरे से बाहर निकल आए और एलीघेनी नदी के उस पार चले गए।

अब ४-५ हजार व्यक्तियो की भीड के लिए, जिसमें दगाई और आवारा आ मिले थे, मैदान साफ हो गया। रेल की पटरिया उखाड़ दी गईं, सवारी तथा माल के डिब्बे तोड दिए गए और जिस चीज को नष्ट नही किया जा सका, उसमे आग लगा दी गई। कोई दो हजार डिब्बे, मशीन वर्कशाप, एक अनाज ऐलीवेटर और दो इजनघर, जिनमें १२५ इजन थे, जला दिए गए। स्वयं यूनियन डिपो में आग लगा दी गई। दंगा जब बिना रोक-टोक जारी रहा तो ज्यादा दगाइयो और जरायम लोगो ने शराब की दूकानो पर धावा बोल दिया और इस बात की परवाह किए बिना कि वे किसका सामान लूट रहे है, उनकी चीजो को लूटना शुरू कर दिया। वे फर्निचर, कपड़े और परचून का सामान भी लूट ले गए।

उस वक्त की इस घटना के एक वर्णन मे कहा गया: "एक हट्टी-कट्टी महिला सुन्दर मखमली जूतियो का एक जोड़ा अपनी बगल मे दबाकर ले जाती हुई देखी जा सकती है। एक दूसरी महिला, जिसके पास एक बच्चा भी था, आटे का एक गोल पीपा अपने पैरो से लुढकाती ले जा रही थी। एक आदमी सफेद सीसे से भरी पहियेदार गाड़ी को धकेले ले जा रहा है। लड़के बडी-बडी बाइबले लूट कर भीड़ मे से भागे चले आ रहे थे, मानों यही उनकी

लूट का हिस्सा हो और बीसियो औरतें अपनी पोशाको में आटा, अण्डे, सूखी चीजे इत्यादि भर-भर कर ले गई। पुरुषो की छतरियाँ और औरतो की खूबसूरत छतरियाँ, मास, सूअर की चरबी, कपडे, कम्बल, गोटा, किनारी और आटे के बण्डल मजबूत पुरुषो की बाहो में समेट लिये गए या जल्दी-जल्दी में बनाई गई हथ-गाडियो मे भर कर ले जाए गए।"

इस बहशियाना लूट के सप्ताहान्त तक चलते रहने के बाद ही जिसमे करीब ५० लाख से लेकर १ करोड डालर तक का नुकसान हुआ, पुलिस ने सशस्त्र नागरिको के दलो के साथ मिलकर कुछ ऊपरी व्यवस्था स्थापित करना प्रारम्भ किया। इस बीच राज्य की सारी मिलीशिया लाम पर बुला ली गई और मन्त्रिमण्डल की आपात कालीन बैठक के बाद राष्ट्रपति हेयेज़ ने अटलाण्टिक डिपर्टमेण्ट मे उपलब्ध सब संघीय सेनाओ से सकट काल का मुकाबला करने के लिए कहा। अन्त में पिट्सबर्ग मे नियमित सैनिको के पहुँचने पर ही रेलवे की सम्पति को पूर्ण संरक्षण प्रदान किया जा सका।

अखबारो की सुर्खियो और अग्रलेखो में कहा गया कि हडताल की जड मे कम्यूनिज्म घुसा हुआ था और बाल्टिमोर, पिट्सबर्ग तथा देश के अन्य भागो मे हिंसा के लिए वही जिम्मेदार है। इसे एक विद्रोह, एक क्राति, समाज को सताने की कम्युनिस्टो और आवारा लोगो की चेष्टा, और अमरीकी संस्थाओ में पलीता लगाने का एक प्रयत्न कहा गया। न्यूयार्क ट्रिब्यून ने कहा "अज्ञानी भूखे दुष्टजनो की इस भीड़ को ताकत ही दबा सकी।" टाइम्स ने हडतालियो को दगाई, नीच, शराबी, लुटेरे, धोखेबाज, चोर, आवारा गुण्डे, शोले, समाज के दुश्मन, डाकू, शैतान, बदमाश, हत्यारे और मूर्ख" कहा और हैरल्ड ने कहा कि यह भीड 'जगली जानवर थी, जिसे गोली मार दी जानी चाहिए थी।' "पिटसबर्ग लूट लिया गया—शहर पर भेडिया भीड का पूर्णत· कब्जा" और "शिकागो कम्युनिस्टो के कब्जे मे" आदि शीर्षक पढकर जनता भयभीत हो उठी।

किन्तु जैसे-जैसे सघीय सेनाए एक के बाद एक उपद्रव ग्रस्त शहरो में जाती रही वैसे-वैसे दंगे जिस प्रकार यकायक उभरे थे, वैसे ही शान्त हो गए। हडतालियो ने न केवल रेलो के संचालन मे और कोई बाधा डालने की कोशिश नही की, बल्कि धीरे-धीरे वे काम पर वापस आ गए। वे जानते थे कि वे

हार गए है। उन्हे पता था कि रेलो की हिमायत लेने वाली सरकार के सामने वे ठहर नही सकते। जुलाई के अन्त तक ट्रेनें सामान्यतः चलने लगी और हडतालें समाप्त हो गईं।

हिंसा और सामूहिक तोड-फोड़ का तकाजा था कि कानून और व्यवस्था पर सख्ती से अमल कराया जाता किन्तु हडतालो का दमन करते हुए रेल-कर्मचारियों की मूल शिकायतो को बिल्कुल भुला दिया गया। न्यूयार्क ट्रिब्यून ने, जिसने पहले स्वीकार किया था कि लोकमत ज्यादातर कर्मचारियों के साथ है, अब कहा कि जब तक स्थिति स्थिर नही हो जाती तब तक कर्मचारियो को अधिक सहिष्णुता व किफायत से काम लेना चाहिए। इसने अग्रलेख में कहा कि दो डालर ही नही बल्कि एक डालर दैनिक की मजदूरी पर जिन्दगी बसर करना असम्भव नही है और यदि रेल कर्मचारी इन वेतनो पर काम करने को तैयार नही है तो उन्हें जिन कामो को वे ठुकरा रहे है उनपर दूसरो को आने देने से रोकने का कोई हक नही है। ऐसा रवैया अखत्यार करने पर वे "सहानुभूति के नही बल्कि सजा के पात्र है।"

यह मनोवृति उस समय व्यापक रूप से फैले हुए इस दृष्टिकोण को प्रतिक्षिप्त करती थी कि उद्योगो में परिस्थितियां जैसी भी हो, मजदूरो को उन्हें शिरोधार्य करना चाहिए। प्रसिद्ध उपदेष्टा हेनरी वार्ड बीचर ने एक बार लिखा कि "ईश्वर की यह इच्छा है कि बड़े बड़े बने रहें और छोटे छोटे रहें......मै यह नही कहता कि एक डालर दैनिक की मजदूरी एक श्रमिक के जीवन यापन के लिए पर्याप्त है किन्तु यह एक आदमी के जिन्दा रहने को काफी है। हां एक आदमी और पाच बच्चो के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त नही है, अगर वह धूम्रपान और बीयर पीने की जिद करता है... ..किन्तु जो आदमी रोटी-पानी पर जिन्दा नही रह सकता वह जिन्दा रहने लायक ही नही है।"

कुछ भी हो १८७७ का जुलाई महीना अमरीका के इतिहास में बडा विक्षोभपूर्ण रहा है। इसके उपद्रवों और दंगों के दीर्घकालीन परिणाम बहुत महत्वपूर्ण रहे। व्यापारी वर्ग औद्योगिक मजदूरो की अन्तर्हित शक्ति के प्रति अभूतपूर्व रूप से सजग हो गया और मजदूरो की समस्त गतिविधियो के दमन के लिए एक आक्रामक कार्यक्रम पर उतर आया। उसने पुराने षड्यंत्र

सम्बन्धी कानूनो को पुनर्जागृत किया, मजदूरो को यूनियनो मे शामिल होने से रोकने के लिए डराने धमकाने का प्रयत्न किया, बड़ी सख्त प्रतिज्ञाएँ उनसे कराई और जहा कही भी उपद्रव की आशका हुई हडताल भजको की सेवाएँ ली। मजदूरो ने इससे यह सबक सीखा कि उन्हे एक ऐसे सगठन और प्राधिकार की जरूरत है जो हडतालो की भीड को अनियन्त्रित कार्रवाई का रूप लेने से रोके, जिससे अन्य या राज्य और संघ की सेनाओ को दमन के लिए निमंत्रण मिलता है। औद्योगिक सघर्ष के इस प्रथम दौर में जीत पूँजीवाद की रही किन्तु भविष्य के प्रति वह भयभीत हो उठा। और मजदूर हार गए किन्तु इस हार मे भी उन्हे अपने अन्दर छिपी शक्ति का नया अहसास हुआ।

१८७० के दशक में बेकारी के विरुद्ध किए गए प्रदर्शनो और रेल कर्मचारियो के विद्रोह से जो हिंसात्मक काण्ड हुए उनकी अगले दशक मे हडतालो के एक अन्य दौर मे पुनरावृत्ति हुई। किन्तु १८८६ मे हेमार्केट स्क्वेयर के दगे ने इन वर्षो के अन्य उपद्रवो की अपेक्षा जनता को अधिक भयभीत किया। इस दुखद स्थिति के लिए अराजकतावादी जिम्मेदार ठहराये गए और यद्यपि उनके हिसात्मक "काम के द्वारा प्रचार" के ढग से शिकागो के कुछ ही मजदूर प्रभावित हुए, तो भी दगे के परिणामो ने समस्त मजदूर आन्दोलन पर असर डाला। यूनियनवाद के दुश्मनो ने श्रम संगठनो को बदनाम करने के लिए इस नाटकीय घटना को खूब तूल दिया और उस पर उग्र परिवर्तनवादी क्रांतिकारी और गैर-अमरीकी होने का लाछन लगाया।

मजदूर आन्दोलन के भीतर वामपक्षी ग्रुप सदा की भाँति इस काल मे भी अपनी नातेदारियाँ बदलता रहा और नई पार्टियाँ सगठित करता रहा, जो क्रांतिकारी यूरोपीय वर्ग, जिससे ज्यादातर उसका विकास हुआ था, के ऊलजलूल विचारो को प्रतिक्षिप्त करता था। इण्टरनेशनल वर्किंगमेन्स ऐसोसियेशन की अमरीकी शाखा विदेश मे अपनी पितृ-सस्था मे फूट पड जाने के कारण, १८७८ में भग कर दी गई और अमरीका में समाजवादी ताकतो ने मज़दूरो का एक नया दल बना लिया। यह कोई महत्त्वपूर्ण नही था, इसके थोडे से सदस्यो में ज्यादातर जर्मन और अन्य यूरोपीय-जन्मा आवासी थे

किन्तु १८७७ की रेल हड़ताल में यह सक्रिय रहा, हिंसा भड़काता रहा और इसने एक आम हडताल कराने की कोशिश की ।

और ज्यादा आँतरिक झगड़ो के कारण इसके सदस्यो में शीघ्र फूट पड ई । मार्क्सवादी समाजवादियो तथा लस्सालियनो में कटुताभरी प्रतिद्वन्द्विता गई । मार्क्सवादी समाजवादी क्राँतिकारी हरकतो के लिए जिनसे अन्ततोगत्वा पूंजीवादी समाज का तख्ता पलट दिया जाता, ट्रेड यूनियनिज्म का आधार बनाना चाहते थे और लस्सालियन इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सीधी राजनीतिक कार्रवाई को ज्यादा कारगर समझते थे । इन दो ग्रुपो के अलावा एक तीसरा ग्रुप अराजकतावाद के ज्यादा परिवर्तनकारी सिद्धान्तो से खिलवाड़ कर रहा था । इन सिद्धान्तो का पाठ इस देश में जोहन मोस्ट नाम का एक व्यक्ति पढ़ा रहा था जो लम्बे कद का काली दाढी वाला एक जर्मन आव्रजक था । वह पहले समाजवादी था किन्तु १८८२ में अमरीका आकर क्राँतिकारी हिंसा का उग्र हिमायती बन गया था । रैडिकल पन्थियों ने, जो उसके ढग की अराजकतावाद के पृष्ठपोषक थे, एक इण्टरनेशनल वर्किंग पीपल्स ऐसोसियेशन की स्थापना की, जो बाद में ब्लैक इण्टरनेशनल के नाम से जानी गई और जो शिकागो में केन्द्रीय मजदूर यूनियन पर अपना नियंत्रण स्थापित करने में कामयाब हुई । जर्मन और पोलिश धातु कर्मचारियो, फर्निचर बनाने वालो और पैकिंग हाउस के कर्मचारियो में से कोई २००० इसके सदस्य थे और अपने अखबार 'अलार्म' के जरिये इसने तत्काल क्रांति का आह्वान किया ।

विदेशों में पैदा हुए हुए क्रातिकारियों की इस छोटी सी जमात की अपेक्षा कोई और सस्था अमरीकी मजदूरो का इतना कम प्रतिनिधित्व करने वाली नहीं हो सकती थी और इनके विचारों के मजदूरो के हृदयो में घर करने की सभावना कम्युनिस्टो के विचारो से भी कम थी । किन्तु इस बात का सदा खतरा रहता था कि ये अराजकतावादी कहीं अचानक हिंसा न भडका दें और शिकागो के अखबार निरन्तर उस खतरे पर बल दे रहे थे, जो उन्हें मजदूरो की उग्रता के हर प्रदर्शन में दिखाई देता था । मजदूरों की एक परेड के बारे में, जिसमें प्रत्यक्षत केन्द्रीय मजदूर यूनियन के सदस्यो ने भाग लिया, एक रेपोर्ट में कहा गया है "जलूस का नग्न रूप लाल बिल्लो तथा लाल झण्डों

से, जिनका समस्त जलूस मे खूब प्रदर्शन किया गया था, सामने आ गया।"

१८८६ में जब ८ घण्टे के दिन के पक्ष मे आम हड़ताल करने का आन्दोलन देश भर मे फैला तब शिकागो के अराजकतावादी क्रांतिकारी हिंसा के अपने सिद्धान्त का प्रचार करने के लिए हर अवसर का लाभ उठाने को तैयार थे। हड़ताल के लिए निश्चित दिन १ मई शाति से गुजर गया किन्तु दो दिन बाद शिकागो के मैक कौरमिक हार्वेस्टर प्लाण्ट मे हड़तालियों और हडताल भंजको मे सघर्ष हो गया, जिसमे पुलिस को हस्तक्षेप करना पडा और चार व्यक्ति मारे गए। यह एक ऐसा अवसर था जिसकी ब्लैक इण्टरनेशनल के सदस्य प्रतीक्षा कर रहे थे। उस रात शहर मे पर्चे बाँट कर मजदूरो को अपने मृत साथियो की मौत का बदला लेने के लिए उकसाया गया था।

इस भड़काने वाली अपील मे कहा गया · "मालिको ने अपने शिकारी कुत्ते—पुलिस भेजी है। उसने आज तीसरे पहर आपके ६ भाइयो को मार डाला। इन अभागो को उसने इसलिए मार डाला क्योकि आपके समान ही उन्होने आपके मालिको की सर्वोच्च इच्छा का अनादर करने का साहस किया था हम आपसे हथियार उठाने की अपील करते है।"

अगले दिन ४ मई की शाम को हेमार्केट स्क्वेयर में एक विरोध-सभा बुलाई गई और कोई ३ हजार व्यक्ति अराजकतावादी नेताओ के आवेशपूर्ण और भड़काने वाले भाषणो को सुनने के लिए एकत्र हुए। किन्तु इन सब प्रकार के भयो के बावजूद सभा बिल्कुल शान्ति से सम्पन्न हुई (स्वय मेयर ने इसमें भाग लिया था और सारे वातावरण को इतना शान्त पाकर वह चले गये थे) और जब ठण्डी हवाओ ने स्क्वेयर पर पानी बरसाना शुरू कर दिया तो भीड शनै-शनै छँटने लगी। वस्तुत सभा दो सौ पुलिसमैनो की टुकडी आने पर भग हो गई और उनके कप्तान ने सख्ती से बचे हुए मज़दूरो को तितर-बितर हो जाने का आदेश दिया। यकायक एक भीषण विस्फोट हुआ, किसी ने पुलिस वालो पर एक बम फेक दिया जिससे एक पुलिसमैन तत्काल मर गया। पुलिस ने एकदम गोली चलाई और मज़दूरो ने भी गोली का जवाब गोली से दिया। इस मुठभेड में कुल ७ पुलिसमैन मारे गये या साघातिक रूप से घायल हुए और कोई ६७ जख्मी हुए, ४ मजदूर मारे गए और ५० से ज्यादा घायल हुए।

बम फैके जाने की इस घटना से शिकोगो ही नही, बल्कि सारा देश क्रुद्ध हो उठा। इसका दोष तुरन्त ही अराजकतावादियो के मत्थे मढा गया और सर्वत्र यह माँग की गई कि उन्हें गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया जाए। पुलिस ने सदिग्ध व्यक्तियो की गिरफ्तारी के लिए शहर को छान मारा और अन्त में ८ सुपरिचित अराजकतावादी नेता गिरफ्तार कर लिए गए और उन पर हत्या का अभियोग लगाया गया। एक उन्मत्तता के वातावरण में, जिसमें भय और बदले की इच्छा दोनों मिली हुई थी, उन्हे शीघ्र ही दोषी करार दिया गया और उनमे से ७ को मृत्युदण्ड तथा एक को १५ वर्ष की जेल की सजा दी गई। ऐसी कोई गवाही प्रस्तुत नही की गई, जिससे सिद्ध होता हो कि बम फेंके जाने की घटना से उनका सम्बन्ध था। उन्हें उनके क्रातिकारी विचारो के कारण, तथा हिसा के लिए भड़काने के कारण, जिसे बम फेके जाने की घटना का कारण समझा गया, दण्डित किया गया। सरकारी अभियोक्ता ने अनुरोध किया . "इन आदमियो को सजा दीजिये, इन्हें दूसरो के लिए सबक लेने लायक उदाहरण बनाइये, फासी पर लटका दीजिये और तब आप हमारी संस्थाओं को बचा लेंगे .....''।

दो सजायाफ्ताओ ने सरकार से दया की याचना की, उनकी मौत की सजा आजन्म कारावास में बदल दी गई। ६ वर्ष बाद गवर्नर जॉन पीटर आल्टगेल्ड ने इन्हे उस आठवें आदमी के साथ, जिसे १५ साल जेल की सजा दी गई थी, इस आधार पर माफ कर दिया कि उनके साथ मुकदमे में न्याय नही बरता गया। इतना समय बीत जाने के बाद भी अराजकतावादियो के खिलाफ लोगो की भावनाएँ इतनी उग्र थी कि इस क्षमादान के लिए आल्टगेल्ड की सारे देश में आलोचना की गई, यद्यपि अब हर कोई यह स्वीकार करता है कि उनका यह कार्य महज न्याय का एक काम था।

हेमार्केट स्क्वेयर बमकाण्ड के साथ संगठित मजदूरो का कोई सम्बन्ध नही था और उन्होने अभियुक्तावादियो के साथ किसी किस्म की सहानुभूति रखने से तुरन्त इन्कार किया। अधिकांश कजरवेटिव अखबारो की तरह नाइट्स आव लेबर ने भी उनकी घोर निन्दा की। शिकागो में उनके अखबार ने लिखा "सारी दुनिया यह जान ले कि नाइट्स आव लेबर का डरपोक हत्यारो, गल-काटुओ और लुटेरो के दल के साथ जिन्हे अराजकतावादी कहा जाता है,

कोई सम्बन्ध, सहानुभूति या आदर का भाव नहीं है। अभियुक्तो पर जो आरोप लगाए गए उन्हें सिद्ध करने में इस्तगासे की पूर्ण विफलता को दरगुजर करते हुए नाइट्स ने उन्हें सजा देने की माँग की। उन्होंने कहा "सात आदमियों को सात वार फाँसी पर लटका देना कहीं ज्यादा अच्छा है, वजाय इसके कि हमारी जमात पर विनाशक तत्व के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध होने का कलंक लगे।"

इस प्रकार के आक्रोश का कारण स्पष्ट था मजदूरों के पूँजीवादी दुश्मन यह आरोप लगा कर कि नाइट्स आव लेवर तथा सामान्यत. यूनियनो में अराजकतावाद तथा कम्यूनिज्म की भावना घुसी हुई है, "वदनामी की इस चक्की" को मजदूर आन्दोलन के गले में लटका देना चाहते थे। भयभीत जनता इसे मानने के लिए भी तैयार थी। हेमार्केट स्क्वेयर में पुलिस दल पर किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा वम फैंके जाने से समस्त मजदूर आन्दोलन पर कालिख पुत गई। यह वात कोई मायने नहीं रखती थी कि मजदूर आन्दोलन के जिम्मेदार नेता तथा स्वयं मजदूर अराजकतावाद और कम्यूनिज्म के उतने ही खिलाफ़ थे, जितना समाज का अन्य कोई वर्ग। समस्त श्रमिक वर्ग को अपने वचाव पर विवश होना पड़ा।

ट्रेड यूनियनवाद जिस तरफ जा रहा था, उस पर इस सारी घटना का महत्वपूर्ण असर पड़ा किन्तु समग्र दृष्टि से मजदूर आन्दोलन के विकास के अध्ययन के हमारे उद्देश्य से यह हमें दूर घसीट ले गया है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है १८८० के दशक में नाइट्स आव लेवर का अभ्युदय थोड़े से रैडिकल तत्व की गतिविधियों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण था, जो मजदूर आन्दोलन में सदा मौजूद रहती थी किन्तु उसकी मूल विचारधारा पर कभी गहरा असर नहीं डाल सकी।

—:०:—

८ : नाइट्स आव लेबर का उत्थान और पतन

हेमार्केट स्क्वेयर के दंगे से १७ वर्ष पहले और महान रेलवे-हड़ताल से ८ वर्ष पूर्व उस संगठन की स्थापना के लिए पहला कदम उठाया गया था जो बाद में "नोबल ऐण्ड होली आर्डर आव नाइट्स आव लेबर कहलाया। तो भी इन दोनो घटनाओं के बीच के वर्ष, जिनमें यह अपनी शक्ति के चरम शिखर पर पहुँची श्रमिक अशाति तथा औद्योगिक सघर्ष के वर्ष थे। यद्यपि उस समय राष्ट्रीय यूनियनवाद भी धीरे धीरे फिर पनप रहा था। और सम्मुअल गाम्पर्स दृढता से उन नीतियों का पक्षपोषण कर रहा था, जो अमेरिकन फेडरेशन आव लेबर की स्थापना के साथ फलीभूत हुईं तो भी १८८० के दशक के बीच के वर्षों में अमरीकी श्रमिक का भविष्य नाइट्स आव लेबर के हाथ में प्रतीत होता था। श्रमिको का काई संगठन पहली बार इतना मजबूत प्रतीत हुआ जो उद्योग को उसी के गढ मे चुनौती दे सकता था। उस समय के एक लेखक ने दृढता-पूर्वक लिखा : "यह एक ऐसा संगठन है जिसके हाथ में अब गणराज्य का भाग्य निहित है। इसने मजदूरो में राष्ट्रीय सगठन की महान शक्ति का प्रदर्शन किया है।"

इस युग के उत्तेजनापूर्ण वातावरण में नाइट्स पर उग्र (रैडिकल) विचारो को उभारने का जिनका विदेशी आन्दोलनकारी प्रचार करते हैं, आरोप लगाया गया और हेमार्केट स्क्वेयर के दंगे ने उसकी ताकत को उतनी ही जल्दी क्षीण भी कर दिया, जितनी जल्दी वह बढी थी। किन्तु वस्तुत. नोबल ऐण्ड होली आर्डर अमरीकी परम्परा को ही निबाह रहा था और इसकी अन्दरूनी विचार-धारा राष्ट्रीय मजदूर यूनियन की विचार धारा से बहुत भिन्न नही थी। इसके नेता अन्ततोगत्वा एक औद्योगिक कामनवेल्थ की स्थापना का स्वप्न लिया करते थे जिसकी रूपरेखा तो हमेशा कुछ धुंधली होती थी किन्तु बल सदा इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सीधी कार्रवाई के बजाय शिक्षा और आन्दोलन की लम्बी प्रक्रिया अपनाने पर दिया जाता था। इस बीच नाइट्स विद्यमान आर्थिक प्रणाली के अन्तर्गत काम करने के लिये तैयार थे और शुरू-शुरू में तो उन्होने

सभी हडतालों का विरोध किया।

ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होने दक्ष, अदक्ष सभी कर्मचारियो को एक ही सगठन मे यूनियनें बनाने का प्रयत्न किया। उन्होने हमारी उदीयमान पूंजीवादी प्रणाली में औद्योगिक मजदूरो की भूमिका का विशेष महत्व स्वीकार किया और उन्हे विश्वास हो गया कि अब तक जैसा ट्रेडयूनियनवाद चला आ रहा है उसे अधिक व्यापक आधार पर बनाए गए श्रम-सगठन को अपना स्थान देना होगा। यह मनोवृत्ति कुछ हद तक बाद में आने वाले औद्योगिक यूनियनवाद की पूर्व परिचायक थी, किन्तु अलग अलग यूनियनो का एक सघ या काग्रेस बनाने के बजाय नाइट्स निरन्तर मजदूरो की एकता पर बल देते रहे और वे एक ऐसा केन्द्रीय सगठन स्थापित करने की आशा रखते थे जिसमे सब उद्योगो और व्यवसायो के मजदूर शामिल हो। मजदूरो में सर्वत्र एक व्यापक एकता का आदर्श—"एक की चोट सबकी चोट है"—बडा उच्च आदर्श था, किन्तु अगर वह पूरा हो जाता तो मजदूर वर्ग तथा सामान्य समाज के लिए उससे बडा खतरा पैदा हो जाता। अकेले एकजूट मजदूर सगठन के हाथ में शक्ति केन्द्रित हो जाने से लोकतत्रीय सस्थाओ के सामने गम्भीर सकट पैदा हो जाता।

ये सभावित आशकाएं सामने आती या न आती, नाइट्स आव लेबर को अपने उद्देश्य मे सफलता ही नही मिली। अदक्ष श्रमिको को संगठित श्रमिको के दायरे मे लाने के उनके प्रयत्न अस्थायी रूप से सफल हुए। अदक्ष मजदूरो के सगठन के बारे मे सिद्धान्त की दृष्टि से उनकी बात कितनी भी सही रही हो, वे जमाने से आगे की बात कर रहे थे। इन मजदूरो की विशाल सख्या, जो ज्यादातर विदेशो से नए नए आए हुए लोग होते थे, जाति, भाषा और धर्म की करीब-करीब अलध्य बाधाओ से अलग-थलग रहती थी। मालिक लोग संघर्ष और कटुता बढाने के हर अवसर का तत्परता से लाभ उठाते थे जिससे उनमें कभी वास्तविक सहयोग नही हो पाता था। इसके अलावा मजदूरो में सदा नवागन्तुको की बाढ सी आती रहती थी और जो लोग यूनियन की हरकतो मे जरा भी हिस्सा लेते थे उनके स्थान पर हडताल को नाकामयाब बनाने वाले सस्ते मजदूर सदा बडी संख्या में उपलब्ध रहते थे। १८८० के दशक मे अदक्ष औद्योगिक मजदूरो मे न तो एकता थी और न सौदेबाजी की

ताकत जिससे सगठित श्रमिक आन्दोलन में अपने सन्निवेश को वे उपयोगी बना पाते। मालिको के कभी ढीले न पड़ने वाले विरोध के सामने औद्योगिक यूनियनवाद का, कोयला खानो जैसे उल्लेखनीय अपवादो को छोड कर, सफलतापूर्वक विकास तब तक नही हो पाया जब तक १९२० के दशक मे आव्रजन पर अंकुश नही लगाया गया और सन् १९३० के दशक में सरकार ने श्रमिको के सगठन को सहयोग प्रदान नही किया।

परम्परागत ट्रेडयूनियनो पहले के मिस्त्रियो और शिल्पियो की प्रतिरूप के सदस्यो ने १८८० के दशक में यह बात महसूस की और अदक्ष मजदूर जितने कमजोर साबित हुए उतने कमजोर मित्रो के साथ अपने भाग्य का गठबधन करने के लिए वे अधिकाधिक अनिच्छुक हो गए। उन्होने विशुद्ध धन्धे के आधार पर अपना सगठन करके अपने हितो की रक्षा करने के लिए नाइट्स द्वारा सिखाए गए मजदूरो की एकता के पाठ को तिलांजलि दे देने की मजबूरी महसूस की। राष्ट्रीय यूनियनो ने नाइट्स आव लेबर का दृढ़ता से मुकाबला किया और अमेरिकन फेडरेशन आव लेबर नए यूनिवनवाद का प्रतीक बन गया जिसका सिर्फ अपने सदस्यों की तात्कालिक आवश्यकताओ से ही सरोकार था।

९ क्षुद्र दर्जियो ने फिलाडेल्फिया में अमेरिकन होज कम्पनी के भवन में एक सभा करके ९ दिसम्बर, १८६९ को नाइट्स आव लेबर की स्थापना की। एक स्थानीय गारमेण्ट कटर्स ऐसोसियेशन के, जिसे अपने कल्याण कार्यक्रम को जारी रखने के लिए धन की कमी के कारण स्वय को भग कर देना पड़ा था, इन सदस्यो ने एक नई ऐसोसियेशन बनाने का फैसला किया जो शुरू-शुरू में किसी भी अन्य शिल्प यूनियन से अगर कुछ भिन्न थी तो सिर्फ इसी बात में कि यह एक गुप्त संस्था थी और इसकी गतिविधियां एक लम्बे सस्कार पर केन्द्रित थी। किन्तु एक ग्रुप की दृष्टि मज़दूर सगठन के बारे मे कही ज्यादा व्यापक थी और उसके साथी सदस्य शीघ्र ही आदर्शवादी उत्साह से आकर्षित हुए। यह एक नई मजदूर एकता का स्वप्न था जिससे राष्ट्रीयता, लिग, धर्म या रग के भेदभाव के बिना राष्ट्र के सभी मजदूरो को एक ही सुगठित सगठन में शामिल करना सम्भव होता।

नाइट्स आव लेबर के संस्थापको के मन में वर्ग-सघर्ष की कोई भावना नही थी। उद्योग के दुर्ग पर हमला करने की उनकी कोई योजना नही थी, "वाजिब व्यवसाय के साथ उनका कोई संघर्ष और आवश्यक पूँजी से उनका कोई विरोध नही था।" यद्यपि सम्पत्ति के उत्पादकों को दासता और वेतन की हानि सम्बन्धी गुलामी से पूर्ण छुटकारा दिलाने की वे आशा रखते थे तो भी इस उद्देश्य की पूर्ति वर्तमान आर्थिक प्रणाली की बुराइयो को दूर कर तथा उत्पादको की सहकारी सस्थाएं स्थापित कर शनैःशनैः की जानी थी। तब यथा समय एक औद्योगिक कामनवेल्थ बनता, जिसमे व्यक्ति और राष्ट्र की महानता का पैमाना भौतिक सम्पत्ति नही, बल्कि नैतिक धरातल होता।

फिलाडेल्फिया मे सभा करने वाले ६ दर्जियो का नेता और इन विचारो का मुख्य प्रवक्ता यूरिया एस० स्टीफेन्स था वह केप मे, न्यूजर्सी में १८२१ मे पैदा हुआ और उसे पादरी बनाए जाने के ख्याल से शिक्षा दी गई। १८३७ के आतंक के बाद पढाई छोडने पर मजबूर होकर वह एक दर्जी का अप्रैण्टिस बन गया और १८४० में फिलाडेल्फिया में अपना धन्धा करने लगा। कुछ अरसे बाद उसने, वेस्ट इण्डीज़, मैक्सिको और कैलिफोर्निया का व्यापक भ्रमण किया किन्तु गृहयुद्ध से पहले वह पुन. फिलाडेल्फिया मे वापस आ गया। १८६१ मे उसने मजदूरो के युद्ध-विरोधी सम्मेलन में भाग लिया और अगले वर्ष गारमेण्ट कटर्स ऐसोसियेशन की स्थापना मे मदद दी। ट्रेड यूनियनिस्ट का हम जो अर्थ लगाते है उसमें वह कभी ट्रेड यूनियनिस्ट नही रहा, बल्कि वह यूनियनो को बहुत संकीर्ण दृष्टिकोण और सीमित दायरो वाली मानता था। अपनी धार्मिक पृष्ठभूमि के कारण स्टीफेन्स मजदूरो के विश्वभ्रातृत्व का वह नजारा अपने सामने रखता था जिसका प्रतीक नाइट्स आव लेबर का वह गुप्त संस्कार था।

वह अपने साथियो को सलाह देता . "मज़दूरो के महान् भाई-चारे के बीच मैत्री स्थापित करो, हर समझदार मजदूर की शख्सियत मे उद्योग का आदर करना सीखो, अपने किन्तु उपयोगी कारीगर का सम्मान करके जीवन पर से कपटी आवरण को हटा दो; मेल-मिलाप करके सयुक्त कार्रवाई करो ..इस भाईचारे ने जो काम अपने हाथ मे लिया है वह विश्व के अब तक के इतिहास

में सबसे महान् है......यह ईश्वर के पितृत्व के अमिट आधार और मनुष्य के भाईचारे के तज्जन्य युक्तियुक्त सिद्धान्त पर बना है...।"

उसके सब लेखो और भाषणो का यही राग था। मजदूरो की सब शाखाओ को मिलाकर एक करने को अपने अन्तिम लक्ष्य की पूर्ति के लिए उसने अलग-अलग धन्धो और व्यवसायो को संगठित करने का विचार त्याग दिया और उसने बहिष्कार और हड़ताले भी खत्म कर दी होती, जिनके बारे में वह समझता था कि इनके लाभ "आशिक तथा क्षणिक" होते है। उसके स्वप्नो में सारी मानव-जाति बसी हुई थी। उसने लिखा: "जाति, पार्टी और राष्ट्रीयता सिर्फ ऊपरी पोशाके हैं और ये विश्वजनक परमात्मा के भक्तो तथा विश्व-बन्धु मानव के सेवकों के हृदयो को एक करने में बाधक नही हैं।"

नाइट्स आव लेबर की स्थापना में स्टीफेन्स की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी और जब राष्ट्रीय आधार पर इसका सगठन किया गया तो वह इसका पहला ग्रैण्ड मास्टर वर्कमैन बना। तो भी वह इसमें ज्यादा समय तक नही रहा। वह राजनीति की ओर मुड गया, जैसे कि इस सदी के अन्य बहुत-से मजदूर नेता मुड गए थे, और मुद्रा-सुधार मे दिलचस्पी लेकर १८७८ में उसने ग्रीन बैंक टिकट पर कांग्रेस में चुने जाने का एक असफल प्रयत्न किया। इसके बाद वह नाइट्स में अपने पद से इस्तीफा देकर मजदूर आन्दोलन से बिल्कुल अलग हो गया और आर्डर के असाधारण उत्कर्ष को देखे बिना ही सन् १८८२ में चल बसा। तो भी उसका प्रभाव बना रहा। नाइट्स के अखबार "दि जर्नल आव यूनियन लेबर" ने उसकी मृत्यु की घोषणा पर लिखा. "हमारे सभी विधि-विधानो में उसके मस्तिष्क की छाप तथा वर्तमान युग की महान् समस्याओ मे उसकी पैनी दृष्टि की प्रेरणा मिलेगी।"

इस बीच नाइट्स आव लेबर के मूल फिलाडेल्फिया संगठन का बहुत धीरे-धीरे विस्तार हुआ। गोपनीयता का, जो सस्कार और समारोह की रहस्यमय अपील मे वृद्धि करने और सदस्यो को मालिको की सम्भावित बदले की कार्रवाई से बचने के लिए अपनाई गई थी, सख्ती से पालन किया गया। एक सम्भावित नए सदस्य को ग्रुप की एक सभा मे बुलाया जाता था और उसे बताया नही जाता था कि क्या मामला है, और "मज़दूरो के उत्थान" के विषय मे पूछे गए अनेक विषयो पर उसके जवाब अगर सन्तोषजनक होते थे

तभी उसे "दीक्षा" दिए जाने योग्य समझा जाता था। यह दीक्षा मौखिक शब्दो के माध्यम से दी जाती थी और बाहर वालो के पास आर्डर के अस्तित्व तक का पता लगाने का कोई तरीका नही था, उसके उद्देश्य का पता लगाना तो दूर की बात थी। सब दस्तावेज़ो और नोटिसो में सगठन का नाम ५ सितारो से जताया जाता था। अस्थायी सदस्यो की भर्ती से सगठन के विस्तार की व्यवस्था रखी गई। दर्जीगीरी के अलावा अन्य धन्धो के मज़दूर १ डालर की 'दीक्षा फीस' देकर सदस्य बन सकते थे। जब उनकी सख्या पर्याप्त हो जाती थी तो वे परस्पर मिलकर अपनी निजी सभा बना सकते थे। किन्तु दूसरी सभा वस्तुत. १८७२ में ही कायम हो सकी, जिसमें जहाज़ बनाने वाले खाती शामिल थे। इसके बाद विकास की गति बढ़ गई। अगले दो वर्षों मे फिला-डेल्फिया और उसके आस-पास कोई ८० सभाएँ बनी और १८७४ में इस क्षेत्र के बाहर न्यूयार्क में पहली सभा स्थापित हुई। इन सभाओ में से सब में अलग-अलग धन्धों के मज़दूर शामिल थे, जैसे पोशाको का कटिंग करने वाले, जहाज़ बनाने वाले, खाती. टिन, प्लेट और लोहा कर्मचारी, शाल बुनने वाले, राज, मशीन-चालक, लुहार, घरो मे काम करने वाले खाती, सगतराश और सोने के पत्रे बनाने वाले आदि।

नाइट्स के विकास में अगला कदम जो मज़दूर एकता के अतिम लक्ष्य की ओर इगित करता था—स्थानीय सभाओ के प्रतिनिधियो की ज़िला सभाए बनाना था। इनमें से पहली इकाई १८७३ में फिलाडेल्फिया मे स्थापित हुई। उससे अगले वर्ष पश्चिम पर अभियान के लिए पहले कदम के रूप मे एक सभा कामडेन, न्यूजर्सी मे और दूसरी पिट्सबर्ग में कायम हुई। शीघ्र ही ओहायो, वेस्ट-वर्जीनिया, इण्डियाना, इलिनौयस, पेंसिलवेनिया, न्यूयार्क तथा न्यूजर्सी में जिला सभाएं कायम हुईं, जिनके सदस्यो मे शिल्प मज़दूरो के अलावा दक्ष तथा अदक्ष दोनो प्रकार के श्रमिक शामिल थे।

जैसे-जैसे समय गुजरता गया, विभिन्न व्यवसायो के श्रमिको की मिश्रित सभाओ के रूप में अनेक स्थानीय सभाएँ स्थापित हुईं। खनिक, रेल कर्मचारी तथा इस्पात कर्मचारी अधिकाधिक सख्या में नाइट्स मे शामिल हुए और जहां किसी एक व्यवसाय में अलग सभा स्थापित करने के लिए पर्याप्त सदस्य नहीं थे, विशेषकर कस्बो और गावो में, वहां मिश्रित सभाए बनाने की सामान्य

परम्परा बन गई। अन्ततोगत्वा मिश्रित सभाओं की संख्या किसी एक व्यवसाय की सभाओं से ज्यादा बढ गई, और उनमे अदक्ष श्रमिको के भी शामिल होने से नाइट्स का एक अपना खास रूप सामने आया। जब १४ जिला सभाए बन गईं, जिनके करीब ९ हजार सदस्य थे तब आन्दोलन के नेताओ ने निर्णय किया कि एक राष्ट्रीय संस्था बनाने के लिए एक वृहत् सम्मेलन बुलाया जाए।

यह सम्मेलन जनवरी, १८७८ में रीडिंग, पेंसिलवेनिया में हुआ, जिसमे ३३ प्रतिनिधि शामिल हुए। लम्बे विचार-विमर्श के वाद एक सविधान स्वीकार किया गया जिसमे नाइट्स की सर्वोच्च अधिकारी संस्था के रूप में एक बृहत्सभा कायम की गई, जिसका जिला व स्थानीय सभाओ दोनों पर नियत्रण रखा गया। नया संगठन सिद्धान्तत अत्यधिक केन्द्रीभूत था किन्तु जिला सभाओ को अपने अपने क्षेत्रो मे अधिकार प्राप्त थे और संविधान में सिद्धान्ततः लिखे रहने पर भी उन पर केन्द्रीय सगठन का कभी भी कडा नियत्रण नही रहा। किन्तु आर्डर सच्चे मायनो मे, एक राष्ट्रीय संगठन बन गया, जब कि इससे पूर्ववर्त्ती कोई भी संगठन इन मायनो में राष्ट्रीय नही बन सका था। इसमे उनसे यह भी विशेषता थी कि उसकी सदस्यता, सम्बद्ध यूनियनो के जरिए न होकर वैयक्तिक आधार पर कायम रही। जो मजदूर इसके सदस्य वनना चाहते थे वे सिर्फ एक स्थानीय सभा की सदस्यता के लिए प्रार्थनापत्र देते थे, उन्हें बाकायदा दीक्षित किया जाता था, वे अपनी सदस्यता फीस देते थे, सभाओ में भाग लेते और इस प्रकार मान्यता प्राप्त नाइट आव लेबर बन जाते थे।

सदस्यता सभी मजदूरी कमाने वालो और भूतपूर्व मजदूरो के लिए खुली हुई थी (यद्यपि भूतपूर्व मजदूरो की सख्या किसी भी स्थानीय सभा में कुल सदस्यो की एक-चौथाई से ज्यादा नही हो सकती थी। सिर्फ वकील, डाक्टर, बैंकर, और जो शराब बेचते या शराब बेचकर जीवन निर्वाह करते थे, इनमें शामिल नही हो सकते थे। वाद में इन अपवादो मे स्टाक मार्केट के दलाल और पेशेवर जुआरी भी शामिल कर दिए गए। सविधान मे वाद मे की गई एक व्यवस्था मे कहा गया : "यह सम्मानीय श्रम की सब शाखाओं को एक तह मे एकत्र कर देता है।"

संविधान की भूमिका में, जिसके सामान्य सिद्धान्त पहले के इण्डस्ट्रियल ब्रदरहुड से लिए गए थे, हाल की विपज्जनक घटनाओ तथा सचित सम्पत्ति द्वारा की गई चोटो की ओर ध्यान खीचा गया था और कहा गया था "कि अगर इस पर अंकुश नही लगाया गया तो इसका अनिवार्य परिणाम श्रमजीवी मजदूरो की गरीबी और निराशाजनक अर्ध.पतन होगा।" नाइट्स ने घोषणा की कि "मजदूरो को सिर्फ एकता से ही अपने श्रम का फल मिल सकता है और यह एकता स्थापित करने के लिए ही सहकारी प्रयत्नो से औद्योगिक वर्ग की ताकत का सगठन और सचालन करने की दृष्टि से हमने * * * * * (पाच सितारो का चिन्ह) कायम किया है।"

स्वत सविधान में ही सगठित मजदूरो की बहुत सी परम्परागत मागे रखी गई थी और कुछ नए लक्ष्य सुझाए गये थे। इसमे बहुत कुछ राष्ट्रीय मजदूर यूनियन की तरह ही सहकारी सस्थाओ की स्थापना, सार्वजनिक भूमि को वास्तविक बसने वालो के लिए रिजर्व रखने, ८ घटे के दिन तथा एक अधि-कृत मुद्रा की माग की गई थी। इसने जेल के मजदूरो के लिए ठेका-प्रणाली की समाप्ति, बच्चो से मजदूरी का काम लेने पर प्रतिबन्ध, स्त्री-पुरुष दोनो के लिए समान वेतन, श्रम सम्बन्धी आकडो के लिए ब्यूरो की स्थापना, और बाद में एक सशोधन द्वारा रेलो और तार-प्रणाली पर सरकारी स्वामित्व तथा आयकर के एक क्रमिक स्केल की मांग की।

इन सब चीजो का प्रतिपादन या तो सुधारवादी था या राजनीतिक। जहाँ तक औद्योगिक कार्रवाई का ताल्लुक था, नाइट्स आव लेबर वहिष्कारो का समर्थन करता था, जो बाद में अधिकाधिक महत्वपूर्ण हो गए किन्तु हडतालो के बजाय, जिसके वह पहले बिल्कुल खिलाफ था, पच-फैसले का प्रबल समर्थन करता था। यद्यपि बहुत सावधानी से निश्चित की गई कुछ सकट की परिस्थितियो में उपयोग के लिए अन्तत एक प्रतिरोध कोष स्थापित किया गया तो भी यह व्यवस्था कर दी गई कि सचित कोष का सिर्फ ३० प्रतिशत ही सीधे किन्ही हडतालो के लिए उपयोग किया जा सकता है। ६० प्रतिशत सहकारी सस्थाओ के लिए और १० प्रतिशत शिक्षा के लिए रखा गया। नाइट्स को मानना पडा कि कभी हडताले भी जरूरी हो सकती है किन्तु वे तब तक उनका समर्थन करने को अनिच्छुक रहते थे जब तक उनका

कार्यकारी बोर्ड उस पर अपनी निश्चित मजूरी नही दे देता था। बाद में १८८४ के सशोधित संविधान में कहा गया : "हड़तालें, बहुत हुआ तो सिर्फ अस्थायी राहत प्रदान करती हैं और सदस्यो को शिक्षा, सहकारिता और राजनीतिक कार्रवाई पर निर्भर रहना और इनके जरिए मजदूरी-प्रणाली के खात्मे पर निर्भर करना सिखाया जाना चाहिए।"

फूक-फूंक कर कदम रखने के इस रवैये का आशिक कारण १८७७ की रेल हडताल में प्राप्त किए गए अनुभव थे। इन हड़तालो ने जो अव्यवस्था की स्थिति पैदा की, जिसमें फिर संघीय सेनाओ को हस्तक्षेप करना पडा, उससे नाइट्स आव लेबर के नेताओं के मन में इस प्रकार की सीधी कार्रवाई की उपयोगिता में सन्देह पैदा हो गया था। किन्तु इस समस्या का उनके पास कोई हल नही था कि अगर मालिको ने उनके प्रतिनिधियो से व्यवहार करने से इन्कार कर दिया तो पंच-फैसले को अमल में कैसे लाया जाएगा। इसलिए अपनी धारणाओ के बावजूद नाइट्स को हड़तालो में फसना पडा और जब मालिकों द्वारा स्थानीय सभाओ से बदला लिए जाने वा खतरा पैदा होता तो कार्यकारी बोर्ड उनकी सहायता करना अपना फर्ज समझता था।

हडताल के प्रश्न की तरह राजनीतिक मामलो पर भी नोबल और होली आर्डर के विचार अस्पष्ट थे। जिन सुधारो की उन्होने कल्पना की थी वे कुछ मामलो में राष्ट्रीय मजदूर यूनियन से भी आगे बढे हुए थे तो भी नाइट्स एक राजनीतिक सगठन के बजाय मुख्यतः औद्योगिक संगठन ही रहना चाहता था। यद्यपि ये लाबीग किया करते थे और समय-समय पर राजनीति में सीधा पक्षपात भी करते थे तो भी उन्होने एक मजदूर दल बनाने की कोई कोशिश नही की। १८८४ में बृहत्सभा ने घोषणा की कि "राजनीति का स्थान उद्योग से नीचे रखा जाना चाहिए", और यह स्पष्ट कर दिया कि "यह आर्डर किसी भी प्रकार अपने सदस्यो द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्रकट किए गए विचारो से बधा हुआ नही है।"

संक्षेप में नाइट्स आव लेबर की बुनियादी नीतियां शुरू में यूरिया स्टीफेन्स द्वारा प्रस्तुत नमूने पर कुछ अस्पष्ट आदर्शवादी और मानवतावादी रही और कभी-कभी वे अत्यधिक परस्पर-विरोधी मालूम पड़ती थी। नाइट्स अपने औद्योगिक स्वरूप पर जोर देते थे तो भी सामाजिक सुधारो के एक

व्यापक कार्यक्रम के लिए आन्दोलन करते थे, वे राजनीतिक कार्रवाई की अपील करते थे पर साथ ही इस बात से इन्कार भी करते थे कि राजनीति से उनका कोई सीधा सम्बन्ध है। इसके अतिरिक्त यह आर्डर यद्यपि सैद्धान्तिक दृष्टि से अधिक केन्द्राभिमुखी था, जिससे कि उस पर ये आरोप लगाए जाते थे कि इसकी नीतियाँ मुट्ठीभर नेता तानाशाही ढग से निर्धारित करते है, तो भी इसके सदस्य अपने मामले बहुत कुछ अपने ही हाथ मे रखते थे और अपनी इच्छा से कार्य करते थे।

पहली बृहत्सभा ने आगे विस्तार के लिए आधार तैयार किया। एक वर्ष बाद सदस्य सख्या ९२८७ से बढकर २८१३६ हो गई और फिर १८८१ मे घटकर १९४२२ रह गई। जो गोपनीयता पहले मालिको के हमले से सदस्यो की रक्षा करती थी, वही अब समस्त आर्डर पर बुरा प्रभाव डालने लगी। लोग इसे माली मैगायर्स जैसा ही एक और गुप्त सगठन समझने लगे और कैथोलिक चर्च इसके प्रति शंकालु और शत्रुतापूर्ण हो गया कि कैथोलिको को इसमें शामिल होने से मना कर दिया गया। फलत. आर्डर की गोपनीयता समाप्त करने के लिए कदम उठाए गए, दीक्षा की कार्रवाई में से शपथ ग्रहण उडा दिया गया और सस्कार में से सब शास्त्रीय उद्धरण निकाल दिए गए। कार्डिनल गिब्बन्स के माध्यम से, जिसे दिखाया गया कि सशोधित संस्कार मे धार्मिक सिद्धातो के खिलाफ कोई बात नही है, पोप को अपनी निन्दा वापस लेने और चर्च की रजामन्दी देने के लिए मनाया गया। गोपनीयता समाप्त करने के बाद सदस्यता फिर तेजी से बढी। १८८२ मे यह दुगनी होकर ४२००० से अधिक और अगले तीन वर्षों मे एक लाख से अधिक हो गई।

बृहत्सभा के निर्माण के एक वर्ष बाद ही १८७९ में स्टीफेन्स के अवकाश-ग्रहण के पश्चात् टेरेंस वी० पाउडरली ग्रण्डमास्टर वर्कमैन के उच्च पद पर उसका उत्तराधिकारी चुना गया। यह युवक मजदूर आन्दोलनकारी उस समय सिर्फ ३० वर्ष का था और १८४९ मे कारबॉण्डेल (पेंसिलवेनिया) मे पैदा हुआ था। वह १८२० के दशक में इस देश मे आकर बसे आयरिश कैथोलिक माँ-बाप का पुत्र था। जब वह लडका ही था, तब उसने स्थानीय रेलवे यार्ड मे स्विच टेण्डर का काम किया था किन्तु शीघ्र ही उसने मशीनचालक बनने का फैसला कर लिया। १७ वर्ष की आयु मे वह इस धन्धे मे अप्रैण्टिस बन गया

और ३ वर्ष बाद स्क्रैण्टन मे डेलावेयर ऐण्ड वेस्टर्न रेलरोड के वर्कशाप मे उसे दिहाडिये का काम मिल गया।

अगले कुछ वर्षों मे वह क्रमशः मशीनचालको व लुहारो की अन्तर्राष्ट्रीय यूनियन मे शामिल हुआ, औद्योगिक ब्रदरहुड का पेंसिलवेनिया मे सयोजक बना और १८७४ मे नाइट्स आव लेबर मे दीक्षित किया गया। कुछ समय की "खामोशी" के बाद उसने २२२ नं० की सभा बनाई और उसका मास्टर वर्कमैन बना। साथ ही नं० ५ जिला सभा का वह पत्राचारी सचिव भी रहा। मज़दूरो की राजनीति मे ज्यादा और ज्यादा दिलचस्पी लेने के कारण उसने ग्रीन बैक लेबर पार्टी की गतिविधियो मे भी भाग लिया और १८७८ मे इसके टिकट पर वह स्क्रैण्टन का मजदूर मेयर चुना गया।

पाउडरली १८८४ तक मेयर बना रहा, यद्यपि इस बीच वह नाइट्स आव लेबर का ग्रैण्डमास्टर वर्कमैन चुना जा चुका था। वह सदा विविध और बहुत से विषयो मे दिलचस्पी रखता था। उसने कानून पढा और फिर वकालत की, एक ग्राम स्वास्थ्य अधिकारी के तौर पर काम किया, एक परचूनिये स्टोर का आशिक मालिक व मैनेजर और आयरिश लैण्ड लीग का उपप्रधान बना। एक बार उसने वाशिगटन मे श्रमसाख्यिकी ब्यूरो के जो मुख्यतः नाइट्स आव लेबर के प्रयत्नो से स्थापित हुआ था, मुखिया पद के लिए असफल प्रार्थनापत्र दिया और १८९३ मे जब आर्डर की अध्यक्षता अन्तिम रूप से उसके हाथ से जाती रही तब उसे आव्रजन ब्यूरो मे एक सरकारी पद मिल गया। १९२४ तक जीवित रहता हुआ वह पहले कमीशनर जनरल और बाद मे सूचना विभाग का मुखिया रहा और तब मजदूर नेता के रूप मे उसके तूफानी जीवन को १८८० के दशक के औद्योगिक सघर्प की उथल-पुथल से बहुत दूर रहने वाली पीढी ने करीब-करीब भुला दिया।

पाउडरली एक मजदूर नेता लगता नही था। वह दुबला और औसत से कम ऊँचा था, उसके घुँघराले भूरे बाल थे, सुन्दर झुकी मूँछे थी और उसकी कोमल नीली आँखो पर चश्मा चढा रहता था। वह प्रचलित ढग के अच्छे कपडे पहनता था। उसकी सामान्य पोशाक मे डबलब्रेस्ट का सुन्दर काले कपडे का कोट, खडे कालर, सादी टाई, काली पतलून और छोटे तंग जूते शामिल थे। उसके तौर तरीके औपचारिकतापूर्ण व शिष्ट होते थे, जिनसे

प्रतीत होता था कि वह कुलीन और सस्कारी आदमी है। एक मज़दूर पत्रकार जॉन स्विण्टन ने लिखा है: "अंग्रेज उपन्यासकार पाउडरली की सी शक्ल के आदमियों को अपना कवि, नाव का खिवैया, दार्शनिक और प्रेम मे पगे नायक चित्रित करते हैं किन्तु ऐसी शक्ल के किसी आदमी को आज तक किसी ने सीग सी मज़बूत कलई वाले १० लाख मजदूरो का नेता चित्रित नही किया है।"

अपने विचारो में वह बिल्कुल अकृत्रिम, करीब-करीब दकियानूसी था। शराब के व्यसन सें मुक्त वह मयखानो के खिलाफ संघर्ष करता रहता था और शराब पीना चाहते थे उनके प्रति उसमे ज़रा भी सहिष्णुता नही थी। ने अनुयायियो मे जहा वह प्रेम और वफादारी की दोनो भावनाए उत्पन्न करता था वहां वह आसानी से मिलता-जुलता नही था और मज़दूरो की सभाओ में जाकर वस्तुत. प्रसन्न नही होता था। हसी मजाक का उसका अपना ही ढग था, जो उसके आत्मचरित सम्बन्धी लेखो से स्पष्ट है किंतु उसमे ले-दे की स्वाभाविक भावना नही थी।

ग्रैण्डमास्टर वर्कमैन का पद सम्हालने के बाद नाइट्स आव लेबर की सदस्यता के निर्माण मे उसमें घोर परिश्रम किया। वह धाराप्रवाह और अपनी बात दूसरे के हृदय में बैठा देने वाला वक्ता और अथक पत्र-लेखक था। तो भी उत्साह के इन प्रारम्भिक दिनो मे भी वह मज़दूर आन्दोलन मे विलियम सिलविस जैसे नेताओ की सी निष्ठा से सवात्मना नही जूझा। वह निरन्तर शिकायत किया करता था कि उसके अन्य कार्य उसे ग्रैण्डमास्टर वर्कमैन के पद के कार्य को पूरा समय नही देने देते और कभी-कभी आवेश-पूर्वक यह भी शिकायत किया करता था कि उसका स्वास्थ्य (जो वस्तुतः बहुत अच्छा नही था) उससे की जाने वाली आशाओ को पूरा करने लायक नही है। वह भाषण देने की सतत प्रार्थनाओ पर न केवल रोष प्रकट करता था, अपितु कभी कम न होने वाली अहंमन्यता की भावना से, वह यह आग्रह किया करता था, कि जब कभी वह भाषण दे तो उसके लिए परिस्थितिया आर्डर में उसके उच्च पद के अनुकूल होनी चाहिएँ।

'जर्नल आव युनाइटेड लेबर' मे एक बार उसने गुस्से से लिखा. "मै आमोद-विहारो (पिकनिको) मे भाषण नही दूंगा। मज़दूर सम्बन्धी प्रश्नो पर जब मै भाषण दूं तो मै चाहूँगा कि मेरा प्रत्येक श्रोता कम से कम दो

घण्टे तक मेरी बात ध्यान से सुने और इस दो घण्टे में भी मै केवल सक्षेप में ही अपनी बात कह सकूंगा। पिकनिक में जहाँ लड़के-लड़किया मिलकर शराब पीएंगे मै नही बोल सकता..... यदि मैन सुना कि मेरे पिकनिको में भाषण देने का विज्ञापन किया गया है तो मै अपराधियो के खिलाफ आर्डर के प्रशासनिक मुखिया का उपहास करने का मुकदमा चलाऊगा........"

इस अहंमन्यता की मनोवृत्ति के बावजूद और शायद इस कारण ही एक संयोजक के रूप में उसकी कुशलता से इन्कार नही किया जा सकता और इसके अतिरिक्त कैथोलिक चर्च के साथ झगडे को जिस खूबी से उसने निबटाया उसी की बदौलत कार्डिनल गिब्बन्स ने पोप से नाइट्स की हिमायत की। वह मजदूर-राजनीति का भी चतुर खिलाड़ी था और उसने एक निजी मशीन बना ली थी जिससे वह विकास और विस्तार के इन वर्षो मे बृहत्सभा पर अपना निकट नियंत्रण कायम रख सका। ऐसे भी मौके आए, जब उसने कहा कि वह इससे ज्यादा कुछ नही चाहता कि वह अपना पद किसी दूसरे को सौप दे, किन्तु इससे भी वह अपनी नीतियो के किसी भी विरोध का दृढ़ता से मुकाबला करने से बाज नही आता था, जबकि वह अपने विरोधियो पर तीव्र प्रहार करता और अपने पद के साथ दृढता से चिपका रहता।

नाइट्स आव लेबर ने अपने मूल प्रथम सिद्धान्तो मे जो आधारभूत उद्देश्य प्रकट किए थे, पाउडरली के विचार और सिद्धान्त उनसे बहुत मेल खाते थे और इनका वही आदर्शवादी, मोटे तौर से मानवतावादी और प्राय. परस्पर विरोधी क्षेत्र था। वह सीधी आर्थिक कार्रवाई के बजाय शिक्षा मे विश्वास करता था किन्तु यह सदा स्पष्ट नही होता था कि वह किस चीज के लिए आन्दोलन कर रहा है। वह बडी अस्पष्ट सामान्य सी बातें करता था जिन पर लफ्फाजी का मुलम्मा चढा होता था।

एक मौके पर उसने कहा: "नाइट्स आव लेबर पार्टी से ऊचा तथा महान है। दलगत विद्वेष और संघर्ष को देखते हुए जितना प्रतीत होता है, उससे ज्यादा उज्ज्वल इसका भविष्य है। उत्पीड़न और इजारेदारी, इन दो शैतानो के खिलाफ हमने जो जिहाद बोल रखा है, उसमे हम हर समाज, हर पार्टी और धर्म के व्यक्तियो तथा प्रत्येक राष्ट्र का सहयोग पाने के लिए प्रयत्न शील है और इस जिहाद मे हमने अपने पीछे छोड़े हुए पुल जला दिए

है, हमारा लक्ष्य समस्त ससार मे मानव के पूर्ण अधिकारो की स्थापना करना है।

सहकारिता वह साधन था, जिसके जरिये वह प्रत्यक्षत इन आदर्शवादी लक्ष्यो की पूर्ति की आशा रखता था। कभी कभी वह किसी अन्य सुधार पर ज्यादा जोर देता प्रतीत होता था। १८८२ मे उसने बृहत्सभा मे कहा : "मेरी राय मे आज का मुख्य और सबके ध्यान देने लायक प्रश्न जमान का प्रश्न .....मुझे जमीन दो, तब तुम ८ घण्टे के दिन के कानून जितने मर्जी बना ा फिर भी मै उन सब को चकमा देकर उन्हे व्यर्थ कर दू गा।" शराबखोरी वन्द करने के अपने उत्साह के कारण भी उसने इस आन्दोलन पर जोर दिया। 'रम बेचने वाले' तथा रम पीने वाले पर समय-समय पर चोट करते हुए उसने लिखा : "कभी-कभी मै सोचता हू कि यह मुख्य सवाल है।" किन्तु देर-सबेर वह इसी मान्यता पर लौट आता कि सहकारिता ही मजदूरो की समस्याओ का अंतिम हल है।

नाइट्स आव लेबर ने इन दिशाओं मे अनेक सक्रिय कदम उठाए। बहुत सी जिला सभाओ ने उपभोक्ताओ और उत्पादको दोनों किस्म की कुल मिलाकर १३५ सहकारी सस्थाएं कायम की और राष्ट्रीय संगठन ने कैनेलबर्ग (इण्डियाना) मे स्वय एक कोयला खान खरीदी और उसका सचालन किया। किन्तु ये संस्थान चाहे वे खान उद्योग मे, टीन-कनस्तर के उद्योग मे, जूता बनाने, मुद्रण या अन्य उद्योगो मे स्थापित किए गए हो उन्ही कारणो से फेल हो गए, जिनसे इस प्रकार के पहले के अधिकाश परीक्षण फेल हो गए थे। निजी उद्योग से प्रतिस्पर्धा करने, अपने उद्योगो को विस्तार करने के लिए आवश्यक पूँजी उपलब्ध करने या उनमे कुशल प्रबन्ध व्यवस्था स्थापित करने मे नाइट्स आव लेबर राष्ट्रीय मजदूर यूनियन से ज्यादा सफल नही हुआ।

इन जोखिम के कामो मे उनके कोष काफी खर्च हो गए और आर्डर की अंतिम समाप्ति मे इनकी विफलता का महत्वपूर्ण योग रहा। तो भी पाउडरली अपने इस विश्वास पर जमा रहा कि मजदूर सहकारिताओ के माध्यम से ही आत्मनियोजन स्थापित कर सकते है इसी मे उनका अतिम कल्याण निहित है।

१८८० मे उसने बृहत्सभा मे कहा · "ससार के पुरुष श्रमजीवियो और महिला श्रमजीवियों की आँखे सहकारिता पर ही टिकाई जानी चाहिएं, सहकारिता पर उनकी आशाएं केन्द्रित की जानी चाहिए. . ..कोई वजह नही कि मजदूर सहकारिता के जरिये खान, फैक्ट्री और रेलो के मालिक बन कर उनका संचालन न कर सके। सहकारिता के जरिये ही एक ऐसा समाज स्थापित किया जा सकता है जिसमे आदमी अधिक से अधिक व्यक्तियों की अधिक से अधिक भलाई करने के उद्देश्य से लोग परस्पर मिलकर काम करे और जो आदमी मेहनत करने के लिए तैयार हो उसे उसका उचित स्थान मिले। आन्दोलन की उसने क्रांति से तुलना की और जब नाइट्स इसका परित्याग कर चुके उसके बहुत देर बाद तक वह अन्ततोगत्वा सहकारी कामन-वेल्थ के निर्माण मे अपना विश्वास प्रकट करता रहा। वर्षो बाद उसने आत्मचरित "द पाथ आई ट्रोड" मे लिखा : "मेरा यह विश्वास अब भी है कि सहकारिता एक दिन अवश्य वेतन प्रणाली का स्थान लेगी।"

ये दीर्घकालीन लक्ष्य ही यद्यपि उसकी वास्तविक चिन्ता के विषय थे, तो भी आर्डर के मुखिया होने के नाते उसे काम के कम घण्टे और अधिक वेतन जैसे तात्कालिक और व्यावहारिक मामलों को जिनमे नाइट्स की स्वय अधिक दिलचस्पी थी हाथ मे लेना पडता था। इससे हड़तालो का प्रश्न उठ खडा होता था। शाँति का आदर्शवादी व्यक्ति होने के कारण पाउडरली उनका विरोध करता था। १८८३ मे उसने लिखा : "समय की पुकार हडतालो को खत्म कर देना है। यह इलाज अनुभव से मालिक और मजदूर दोनो के लिए मंहगा सिद्ध हुआ है।" बाद मे उसने शेखी बघारी : "जनरल मास्टर वर्क-मैन के पद पर १४ वर्ष के अपने कार्यकाल में मैने एक भी हडताल का आदेश नही दिया।" किन्तु १८८० के दशक के इस महत्वपूर्ण सवाल पर उसका यह रवैया ही शायद उसकी सबसे बडी कमज़ोरी थी। जब नाइट्स आव लेबर अपने प्रशासनिक मण्डल की स्वीकृति से या उसके बिना ही बार-बार हडतालो में उलझ गए तो ग्रैण्डमास्टर वर्कमैन की उन्हे सहयोग देने की जिम्मेदारी थी, जिससे वह बच नही सकता था। पाउडरली ने अपने इस विश्वास के बावजूद कि ये हडतालें व्यर्थ है, कभी कभी इन हड़तालो को साहस पूर्ण सहयोग प्रदान किया, लेकिन कही-कही उसने इतना डरपोकपना

दिखाया कि वह मालिको से कैसा भी समझौता करने के लिए तैयार हो गया। उसके ढुलमुल रवैये से प्राय: विभ्रम पैदा हो जाता था और मजदूरो का वह सयुक्त मोर्चा टूट गया जो किसी और के दृढ नेतृत्व में शायद हड़तालो को वस्तुत: सफल बना देता।

पाउडरली दिल से मानवतावादी था। वह सोचता था कि उत्पादक वर्ग को सामान्यत तत्कालीन समाज मे एक ऊँचे स्तर पर उठा लिया जाए। बाद में उसने अपनी आत्मकथा में लिखा "अगर मुझे स्वय को कोई नाम देने ा हक है तो मै समता स्थापित करने वाला कहूँगा।" तात्कालिक, अल्पकालिक उद्देश्यो के प्रति जिनमें मजदूरी कमाने वालो की हैसियत को अधिकाधिक स्वीकार करने वाले अधिकाश मजदूरो की सबसे ज्यादा दिलचस्पी थी, उसकी अधीरता का इससे अच्छा चित्रण नही हो सकता था।

अपने पद पर स्वयं रहम खाते हुए एक बार उसने लिखा "जरा सोचो तो, मै हडतालों का विरोध करता हुआ भी सदा हडताल करता रहता हूँ . ...जिन महान् चीजो के बारे मे हम अपने लोगो को शिक्षित कर रहे है उनके लिए इस जमाने की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओ मे अपनी कलम से जूझते हुए भी छोटी-छोटी बातो के लिए अपनी सारी शक्ति से लड़ रहा हू। हमारे आर्डर ने मुझे इस उच्च पद पर इसलिए रखा है क्योकि महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्नो पर ऊँची टेक लेकर मैने राष्ट्र मे सम्मान का स्थान प्राप्त किया है। तो भी हमारे आर्डर के मजदूरो ने जिस मिट्टी को वे रौदते है उसे फैंक-फैंक कर मुझे दीवार की नीव मे ही व्यस्त रखा है।"

१८८० के दशक मे जब पुन कठिन समय आया और वेतनो मे व्यापक कटौती तथा बेकारी का सामान्य चक्कर फिर चला तब नाइट्स आव लेबर ने वे हडतालें की जिससे पहले तो उसका चाम्तकारिक विकास हुआ और तब शनै. शनै. ह्रास हो गया। पाउडरली की परीक्षा हुई और वह विफल रहा किन्तु नोबल ऐण्ड होली आर्डर का उत्थान और अन्तत उसका पतन दोनो ही उन आर्थिक और सामाजिक ताकतो की वजह से हुए जिन पर उसका कोई वस नही था।

बेचैन मजदूरो ने जब माल की लागत कम करने की कोशिश करने वाले

मालिकों की ज्यादतियों का मुकाबला करना चाहा तो १८८३-८४ में फॉल रिवर में काँच मज़दूर यूनियनो, तार-कर्मचारियों, तथा सूत कातने वालों ने, फिलाडेल्फिया के जूते बनाने वालों तथा गलीचा बुनने वालो ने, पेंसिलवेनिया और हॉकिंग वैली (आहायो) के खनिकों ने और यूनियन पेसिफिक की वर्कशाप के कर्मचारियो तथा ट्राय के लोहे की ढलाई करने वालो ने हड़ताल कर दी। नाइट्स आव लेबर ने इनमे से प्रत्येक हडताल मे भाग लिया और चार हड़तालो मे प्रमुख भूमिका अदा की। सबसे महत्व की बात तो यह थी कि मालिको ने जहाँ और हडतालो को कुचल दिया वहां जिन हडतालो मे नाइट्स ने भाग लिया वे सब. एक अपवाद को छोड़ कर. सफल रही। इनमे सबसे ...त्वपूर्ण हडताल रेलवे वर्कशाप के कर्मचारियो की थी जिसने यूनियन पैसि-...क को वेतनों मे कटौती वहाल करने पर मजबूर कर दिया।

इस हड़ताल मे मज़दूरो की विजय मुख्यत. जोसेफ आर. बुकानन के दुर्धर्ष ...त्व के कारण हुई। बुकानन एक उग्र मज़दूर आन्दोलनकारी था जो १८८२ मे नाइट्स मे शामिल हुआ था। कोलोरैडो मे कभी खनिजो के अन्वेषक पद पर काम करने वाला यह व्यक्ति नए पश्चिम का प्रतीक—विशालकाय, दृढ और दब-दवे वाला आदमी था। वर्कशाप के कर्मचारियों का नेतृत्व करने मे उसकी सफलता का मुख्य कारण था......यूनियन पैसिफिक एम्प्लायीज प्रोटैक्टिव ऐसोसियेशन की स्थापना करके और बाद मे नाइट्स आव लेबर की स्थानीय सभाएं कायम करके मज़दूरो में एकता की भावना उत्पन्न करना।

यूनियन पैसिफिक की इस हड़ताल के एक वर्ष बाद तथाकथित साउथवेस्ट सिस्टम की रेलो—मिसूरी पैसिफिक, मिसूरी, कन्सास और टैक्सास तथा वाबाश की रेलो पर भी रेलवे वर्कशाप के कर्मचारियो की हडताल हुई। यकायक काम बन्द होने से इस हड़ताल के शुरू होते ही बुकानन पश्चिमी रेलवे पर नाइट्स आव लेबर की सभाओं के प्रतिनिधि के रूप मे शीघ्र घटनास्थल पर पहुँच गया और साउथवेस्ट सिस्टम के असन्तुष्ट मज़दूरो का स्थानीय सभाओं मे सगठन कर यूनियन पैसिफिक पर प्राप्त की गई सफलता को दोहराया। ट्रेन-कर्मचारियो के सहयोग से वर्कशाप के हड़ताली कर्मचारी इतना मजबूत मोर्चा कायम कर सके कि उन्होने पुन अपनी माँगें पूरी करा ली।

इन विजयो ने जो १८७७ के रेल-हड़तालो के दु खद अनुभवों के बाद

आश्चर्यजनक प्रतीत होती थी, नाइट्स आव लेवर की कीर्ति मे चार चाँद लगा दिए और उसकी प्रतिष्ठा बढने लगी, यद्यपि हडतालो मे सिर्फ स्थानीय सभाओ ने भाग लिया था। किन्तु कुछ अरसे के बाद १८८५ मे इससे भी बडी सफलता प्राप्त की गई जब नोबल एण्ड होली आर्डर की वावाश मे और ज्यादा झगडो की बदौलत समस्त साउथवेस्ट सिस्टम पर नियन्त्रण रखने वाले शक्तिशाली, चतुर और अच्छे-बुरे की परवाह न करने वाले महाजन जे गोल्ड से सीधी टक्कर हुई। वावाश रेलवे ने अप्रैल-मई मे वर्कशाप मे नाइट्स आव लेवर के सदस्य कर्मचारियो को हटाना शुरू कर दिया जो स्थानीय यूनियनो को जान-बूझ कर तोड़ने का एक प्रयत्न प्रतीत होता था। गत वर्ष मोबरली (मिसूरी) मे जो जिला-सभा आयोजित की गई थी उसने तुरन्त हडताल का आह्वान किया और राष्ट्रीय सदर मुकाम से सहायता की अपील की। प्रशासनिक बोर्ड की नीति अब भी हड़ताल के विरुद्ध थी किन्तु उसे यह मानना पड़ा कि रेल-कर्मचारियो के सगठन को इस चुनौती मे आर्डर का अस्तित्व ही दाँव पर लगा हुआ है। जब वावाश ने कर्मचारियो की छटनी करने से साफ इन्कार कर दिया तब बोर्ड कार्रवाई करने पर मजबूर हुआ। नाइट्स आव लेवर के जो सदस्य तब भी वावाश मे काम कर रहे थे, उन्हें हडताल की हिदायत की गई और साउथ-वेस्ट सिस्टम की अन्य रेलो पर तथा यूनियन पैसिफिक पर काम करने वालों से कहा गया कि वे वावाश का कोई काम न करें। मज़दूरो ने उत्साह से अपनी जिम्मेदारी निभाही। ट्रेने रोक दी गई, डिब्बे अलग कर दिए गए, इंजन बेकार कर दिए गए और समस्त साउथवेस्ट मे व्यापक विध्वसात्मक कार्रवाइयाँ हुई जिनमे कभी-कभी उपद्रव और हिंसात्मक काम भी हुए।

अपनी समस्त परिवहन-प्रणाली पर जिसे मालूम होता था, कि नाइट्स बिल्कुल बन्द कर देंगे, आए इस खतरे ने गोल्ड को समझौते पर विचार करने को मजबूर कर दिया। न्यूयार्क मे अनेक बैठकें की गई और सारा देश यह देखकर हैरान रह गया कि राष्ट्र की एक सबसे बड़ी रेल-प्रणाली के प्रबन्धक एक राष्ट्रवादी मज़दूर-संगठन के कार्यकारी बोर्ड के साथ समझौते की बातचीत कर रहे है। ऐसा पहले कभी नही हुआ था। इसके अलावा समझौता हो भी गया। जिन रेलो पर गोल्ड का नियन्त्रण था उन पर

नाइट्स आव लेबर के खिलाफ भेदभाव को खत्म करना उसने स्वीकार कर लिया और कहा जाता है कि उसने यहाँ तक कहा कि मै मजदूर यूनियनो मे विश्वास करने लगा हूँ और चाहता हूँ कि मेरे सब रेल-कर्मचारी सगठित हों। ाउडरली ने हडताल उठा ली और वचन दिया कि रेलवे अधिकारियों के ाथ आगे बात-चीत किए बिना भविष्य मे काम बन्द करने की मजूरी नही ी जाएगी।

'लुई क्रानिकल' ने आश्चर्य से कहा . "वावाश मे नाइट्स की विजय हुई । इस या अन्य किसी देश मे पहले ऐसी कोई विजय प्राप्त नही की गई।"

राष्ट्र के मजदूरो के लिए सामान्यत. गोल्ड का इस प्रकार घुटने टेक ना उस सगठन मे शामिल होने के लिए आतुर हो उठने का सकेत था, ासने स्वयं को इतना शक्तिशाली सिद्ध किया। अगले कुछ महीनो मे ाइट्स आव लेबर की स्थानीय सभाएँ इतनी अधिक सख्या मे बनी जितनी ाछले १६ वर्षो मे भी नही बनी थी। नए सदस्य ज्यादातर, रेलो, खानों था बडे पैमाने पर उत्पादन करने वाले कारखानो के अदक्ष और अर्धदक्ष ादूर बने जिससे विशेष रूप से तथाकथित मिश्र-सभाएँ ताकतवर हुई। न्तु इनमे सभी धन्धो और व्यवसायों का प्रतिनिधित्व था और कुछ ऐसे ों के लोग भी शामिल थे जो मजदूरो की श्रेणी मे नही आते थे, जैसे ासान, दूकानदार और छोटे कार्य-नियोजक। इनके अतिरिक्त हजारो हेलाएँ और नीग्रो भी आर्डर मे शामिल हुए। १ जुलाई, १८८५ तथा › जून, १८८६ के बीच स्थानीय सभाओ की संख्या १६१० से ५८९२ और स्य सख्या १ लाख से बढ कर ७ लाख से कुछ अधिक हो गई। एक ादूर अखबार के सम्पादक ने खुशी से कहा . "अब तक के सम्पूर्ण इतिहास पहले कभी ऐसा दृश्य देखने को नही मिला, जैसा कि आजकल आर्डर आव इट्स आव लेबर का कूच।"

नए सदस्यो की ऐसी भीड़ पड़ी और परेशान संयोजको ने नए सदस्य नी शीघ्रता से बनाए कि स्थिति बिल्कुल बेकाबू हो गई और कुछ देर के ए उन्हे नई सभाएँ बनाना बन्द करना पड़ा। इसमे कोई शक नही कि र्डर का विस्तार बहुत ज्यादा तेजी से हो रहा था। बाद मे पाउडरली ने ा 'कम-से-कम ४ लाख आदमी सिर्फ कौतूहलवश सदस्य बने और उनसे

नफा के बजाय नुकसान ज्यादा हुआ।" तो भी १८८६ मे ऐसा लगता था कि नाइट्स आव लेबर ने सारे मजदूर आन्दोलन की बागडोर अपने हाथ मे ले ली है और वस्तुतः वह सर्वशक्तिमान बन गई है।

नाइट्स का जो आश्चर्यजनक विस्तार हुआ था उसे अफवाह उडाने वालो ने और भी बढा-चढा कर बताया। कहा गया है कि नाइट्स के २५ लाख सदस्य और एक करोड २० लाख डालर का हडताल-कोष हो गया है। रूढिवादी समाचार-पत्रो ने आर्डर का भयपूर्ण चित्रण किया कि देश पर उसका पूर्ण प्रभुत्व स्थापित हो गया है। भविष्यवाणी की गई कि अगले राष्ट्रपति को यही नामजद करेगा और यह भी डर दिखाया गया कि यह समस्त सामाजिक व्यवस्था को उलट देगा।

'न्यूयार्कसन' में एक लेख मे कहा गया : "इस देश मे ५ आदमी ५ लाख मजदूरो के मुख्य हितो को नियन्त्रित करते है और किसी भी क्षण वे २५ लाख व्यक्तियो की आजीविका के साधन छीन सकते है। ये आदमी नाइट्स आव लेबर आव अमेरिका के पवित्र आर्डर के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य है... ..वे तार पर काम करने वाले करीब करीब हर आदमी की चुस्त उगलियो को रुकवा सकते है, अधिकाश मिलो व फैक्ट्रिओ को बन्द कर सकते है और रेलो को पगु कर सकते है। वे किसी भी तैयार माल के खिलाफ डिक्री जारी करके अपने सदस्यो को उसे खरीदने से रोक सकते है और दूकानदारो से उसका बेचा जाना रोक सकते है। वे पू जी के खिलाफ मजदूरो का मोर्चा लगवा सकते है जिसमे वे उन्हे शान्त और दृढतापूर्वक आत्मरक्षा के लिए या क्रोधपूर्ण सगठित प्रहार के लिए इच्छानुसार बचाव का या हमले का निर्देश दे सकते है।"

यह कहा गया कि इस शक्तिशाली सगठन के मुखिया के रूप मे पाउडरली मजदूरो का सर्वशक्तिमान जार बन गया है जो तानाशाही और गोपनीयता से अपने अनुयायियो पर शासन करता है। वस्तुत. वह आर्डर के अनियन्त्रित विस्तार से अभिभूत हो गया और उस पर बहुत बडी जिम्मेदारी आ पड़ी। उसने हताश होकर कहा. "मै जिस पद पर हूँ, वह १० आदमियो के लिए भी बहुत बडा है, मेरे लिए तो यह निश्चय ही बहुत बड़ा है।"

किन्तु आम लोग नाइट्स को एक सुनियंत्रित और अनुशासित सगठन

समझते थे और उनका खयाल था कि मालिकों के खिलाफ जिस किसी भा संघर्ष को यह अपना सहयोग प्रदान कर देगा वही जीत जाएगा। इस समय नाइट्स ग्राव लेबर अपनी प्रतिष्ठा के चरम शिखर पर था।

सब कही मजदूर गाते होते थे :
लाखों श्रमजीवी अब जाग रहे है—
उन्हें मार्च करते हुए देखो;
अपनी सत्ता की समाप्ति से पूर्व
अब सब आततायी काप रहे हैं।

समूहगान

ऐ नाइट्स ग्राव लेबर! किले पर चढ दौडो,
हर पडौसी के लिए समान अधिकार
और आततायी कानूनो की समाप्ति के
अपने ध्येय की खातिर सग्राम करो।

किन्तु शुरू-शुरू की विजयो की इन सभावनाओ मे ही सगठन के विघटन के बीज छिपे हुए थे। सफलता से नाइट्स का सिर फिर गया। यद्यपि जर्नल ग्राव युनाइटेड लेबर ने उस खतरे की चेतावनी दी थी कि "अत्यधिक खुशी में हमारे सदस्य कही स्वयं को अजेय न समझने लगें, और कार्यकारी बोर्ड ने आलोचनात्मक ढग से यह कहा था कि एक साथ आवश्यकता से अधिक हडतालें हो रही है, तो भी सामान्य मजदूरो ने सयम से काम नही लिया। आर्डर के विशाल संख्या मे अनियत्रित सदस्यो ने कोई अनुशासन और नियंत्रण नही माना और न कोई जिम्मेदारी की भावना दिखाई। जिसे वे उद्योग का कमजोर विन्दु समझते थे उसका पूरा लाभ उठाने की चेष्टा करते हुए मालिको पर अपनी मांगे पूरी करने के लिए दबाव डालते रहे और आर्डर से सहयोग प्राप्ति की आशा करते रहे। इस स्थिति में उन्हें एक के बाद एक पराजय का सामना करना पडा जिनसे नाइट्स वैसे ही हताश हुए, जैसे अपनी शुरू की विजयों से उत्साहित हुए थे।

पहला धक्का साउथवेस्ट सिस्टम पर रेल कर्मचायियो की एक अन्य हडताल से लगा। मिसूरी पैसिफिक और मिसूरी, तथा कन्सास व टैक्सास के रेल कर्मचारी अब भी असन्तुष्ट थे। १८८५ मे वावाश के वर्कशाप के कर्मचारियो को सहयोग देने के लिए वे भी हडसाल करने को तैयार थे और नाइट्स आव-लेबर की ताकत के मद में अगली वसन्त ऋतु मे अधिक वेतन की माग के लिए हड़ताल करने का वहाना ढूंढ़ रहे थे। जब टैक्सास और पैसिफिक रेलवे पर मज़दूरो में से एक फोरमैन को निकाल दिया गया तो न० १ जिला सभा के मास्टर वर्कमैन ने, जिसका नाम मार्टिन आयरन्स था और जो एक स्थानीय नेता था, अधिकारियो की मंजूरी की प्रतीक्षा किए विना ही तुरन्त हड़ताल का आह्वान किया। यह हडताल तेजी से टैक्सास और पैसिफिक से अन्य रेलवे लाइनो के कर्मचारियो तक फैल गई।

एक शेखीभरी अपील मे कहा गया ' "दुनिया से कह दो गोल्ड साउथ-वेस्ट सिस्टम के कर्मचारी हड़ताल पर है। हमने अपने लिए और सब कही अपने भाइयो के लिए न्याय की खातिर हडताल की है। १४००० आदमी हडताल पर हैं . ..अपनी शिकायतो का पुलिन्दा एक साथ ले आओ, सब मिलकर हडताल कर दो और तब तक उसे जारी रखो, जब तक तुम्हारी वे सब शिकायतें तुम्हारे लिए पूर्ण सन्तोषजनक ढग से हल न हो जाए। आओ हम अपने अधिकारो की माग करें और शोषको को उन्हे मानने के लिए मजबूर कर दे ...."

गोल्ड और उसके नियंत्रण में चलने वाली रेलो के अधिकारियो को, यह विश्वास कराने के लिए ऐसी ही बढी-चढी माँगो की दरकार थी कि नाइट्स आव लेबर को कुचल दिया जाना चाहिए। यह मानने का कोई कारण नही कि गोल्ड वस्तुत रत्तीभर भी यूनियनों के पक्ष मे रहा हो। १८८५ मे वह सिर्फ इसीलिए पीछे हटा था कि १८८६ मे प्रत्याक्रमण कर सके। पाउडरली ने वस्तुत. वाद मे आरोप लगाया कि यह नई हडताल टैक्सास और पैसि-फिक के प्रवन्धको ने ही उसकी इच्छा के विरुद्ध आइरन्स को मजबूर करके कर कराई। तथ्य कुछ भी हो, साउथवेस्ट रेलवे ने अब अपने पूरे हथियार इस्तेमाल करके हडताल से लोहा लिया। जब मज़दूरों ने डिब्बे पुन अलग किए, और इंजनो को नष्ट किया तब प्रवन्धको ने हडताल भजक

और पिकरटन गार्ड किराये पर भरती कर लिए तथा राज्य के गवर्नरो से सैनिक सरक्षण की अपील की। इस बार उन्होने कोई रियायत या समझौता न करने का पक्का निश्चय कर लिया था।

पाउडरली ने स्वय को एक असभव स्थिति में पाया। वह हड़ताल के पक्ष मे नही था, और उसे कराने मे उसका कोई हाथ नही था तो भी रेलवे के अधिकारियो ने उस पर अपना यह वचन तोड़ने का आरोप लगाया कि पहले विचार-विमर्श किए बिना वह किसी हडताल की मजूरी नही देगा। उसने गोल्ड को तलाश करके एक ऐसा आधार खोज निकालने का प्रयत्न किया जिसे हडताली स्वीकार कर सके। किन्तु रेलवे-बॉस का अब नाइट्स के साथ समझौते की बातचीत करने का कोई इरादा नही था और बातचीत बिल्कुल बेकार रही।

इस बीच मजदूरो को नुकसान पहुँच रहा था। गोल्ड रेल प्रणाली के ४८००० मजदूरो में से वस्तुत. सिर्फ ३००० ने ही काम छोडा और हड़तालियो की जगह काम करने वाले लोगो के साथ संघर्ष मे वे हार रहे थे। नेशन ने घोषणा की कि "वे वस्तुत आधुनिक समाज में एक नया अधिकार स्थापित करने का यत्न कर रहे है, अर्थात् उन लोगो द्वारा काम पर लगाए जाने का अधिकार जो तुम्हें नही चाहते और जो तुम्हे मुँह माँगा वेतन नही दे सकते।" "हडतालियो द्वारा अपने सिवा किसी दूसरे से काम लिए जाने के जबरन विरोध" की सर्वत्र निन्दा की गई।

अन्त में जब कि रेलवे कोई भी रियायत देने से इन्कार कर रही थी, काग्रेस की एक समिति हडताल की जाँच कर रही थी और लोकमत रेल-सर्विस भग होने से और ज्यादा कुपित हो रहा था, तब पाउडरली ने इस सारे मामले से अपना हाथ खीच लिया। नोबल ऐण्ड होली आर्डर की प्रतिष्ठा के लिए वह सघर्ष के महत्त्व को स्वीकार करता था और गोल्ड के आगे घुटने टेक देने को अनिच्छुक था किन्तु उसे हडताल को सफल बनाने का कोई रास्ता नही सूझता था। ग्रैण्ड मास्टर वर्कमैन जब अपनी जिम्मेदारी से बच निकला, तब कार्यकारी परिषद् ने भी हार मान ली और मजदूरो को काम पर लौटने का आदेश दिया। नाइट्स आव लेबर को पहली गम्भीर पराजय का सामना करना पडा और गोल्ड रेल प्रणाली के मजदूरो में उसका सगठन खत्म

हो गया।

अभी और पराजय होनी थी क्योंकि गोल्ड का अनुसरण करते हुए अन्य मालिको ने मजदूरो के हर उभार को कुचल देने और नाइट्स की कमर को स्थायी रूप से तोड देने के लिए अपनी ताकतें जुटाईं। १८८६ के उत्तरार्ध मे कोई एक लाख मजदूर श्रम-विवादो में उलझ गए और इनमे से बहुत ज्यादा हड़तालों और तालाबन्दियो मे वे विकुल असफल रहे।

नाइट्स का शिकागो स्टाकयार्ड की हडताल में सब से ज्यादा नुकसान हुआ। मामला ८ घण्टे के दिन का था और ऐसोसियेटेड मीट पैकर्स ने न केवल इस माँग को मानने से इन्कार कर दिया, बल्कि घोषणा की कि अब वे आर्डर के किसी भी सदस्य को काम पर नहीं रखेंगे। तो भी हडताल ने पैंकिंग हाउस में काम बिल्कुल ठप्प कर दिया और समझौते के कुछ आसार नजर आए। तभी अचानक और बिना चेतावनी दिए पाउडरली ने मजदूरो को काम पर लौटने का हुक्म दिया और यह धमकी दी कि अगर वे नही लौटे तो उनका चार्टर छीन लिया जाएगा। पाउडरली पर मालिको के हाथ बिक जाने तथा इस चाल में एक कैथोलिक पादरी द्वारा अनुचित रूप से प्रभावित हो जाने का आरोप लगाया गया। घटना के अपने विवरण में वह कहता है कि हडतालियो की हार निश्चित थी इसलिए उन्हें और ज्यादा नुकसान तथा सम्भावित रक्त-पात से बचाने के लिए मैने जैसा उचित समझा किया। कुछ भी हो, अपने नेताओ के डाँवाडोल रुख के कारण स्थिति पर से नाइट्स का नियन्त्रण जाता रहा। हड़ताल के विफल होने के साथ-साथ उनकी प्रतिष्ठा पर एक और असाध्य चोट लगी।

यह स्पष्ट था कि धारा का प्रभाव उलट चुका है। प्रत्येक अवसर का तुरन्त फायदा उठाने में दक्ष उद्योग के भीषण प्रत्याक्रमण ने मजदूरो की पहले की उपलब्धियाँ भी खत्म कर दी। १८८६ की जुलाई में ही लार्ड स्विण्टन ने कहा कि वर्ष के शुरू में स्वर्णिम युग जहाँ पकड में आया प्रतीत होता था वहाँ अब ऐसा लगने लगा था कि मजदूर किसी "मृगमरीचिका" से धोखा खा गए है। अब वह यह पक्का विश्वास करने लगा था कि "पैसे की ताकत ने अपने सामने किसी को खड़ा नही रहने दिया और वरिष्ठता उसने इस कदर कायम कर ली है कि कोई उसे चुनौती नही दे सकता।"

स्विण्टन ने आगे लिखा : "दुश्मन के जनरल जे गोल्ड ने साउथवेस्ट के रेलवे हड़ताल को कुचल दिया और उसके बाद सैकड़ो अन्य हड़तालें विफल हो गई। ....यूनियन के सदस्यो का नाम सर्वत्र काली सूची मे दर्ज कर दिया गया और अनेक बस्तियो में नाइट्स ग्राव लेबर के खिलाफ विशाल षडयंत्र का पता चला। हड़ताल के विरुद्ध कानूनो को तोडा-मरोडा गया। पिंकर्टन ठगो को भाडे पर एक छोटी सी सेना बना ली गई......नागरिको के सांविधानिक अधिकारो पर प्रहार किया गया, मज़दूरो की सभाए भग कर दी गई और उनके अखबारो को धमकी दी गई या उन्हें कुचल दिया गया।"

उद्योगो का हमला और फलस्वरूप हडतालो मे हार की घटनाए ही सिर्फ नाइट्स की शक्ति को घटाने वाली नहीं थी। इसके नेता अधिक से अधिक गलतिया करते प्रतीत हो रहे थे। पाउडरली ने औद्योगिक सघर्ष को कम करने तथा सहकारिताओ की ओर ध्यान मोडने की कोशिश की और वह स्वय मजदूरो का उत्तरोत्तर विश्वास खोता गया। उन्होने महसूस किया कि अब वह उनके वास्तविक हित को नही समझता और मालिको से की गई उनकी वाजिब माँगो का समर्थन नही करता।

उसकी साहस-हीनता के रवैये का एक उदाहरण वह नीति थी जो उसने तब अपनाई, जब पुनर्जीवित होती हुई राष्ट्रीय यूनियनें अमेरिकन फेडरेशन ग्राव लेबर की पूर्वज फेडरेशन ग्राव ग्रार्गनाइज्ड ट्रेड्स ऐण्ड लेबर यूनियन्स से सम्बद्ध हो चुकी थी। १८८६ मे ८ घण्टे के दिन के लिए ग्राम हड़ताल कराने की कोशिश की, जिसमे हेमार्केट स्क्वेयर के दगे की पृष्ठ भूमि सामने दिखाई दे रही थी। यद्यपि नाइट्स ग्राव लेबर ८ घण्टे के दिन का प्रबल समर्थक था, तो भी पाउडरली ने हडताल के ग्राह्वान से ग्रार्डर को अलग रखा। एक गुप्त परिपत्र मे उसने कहा कि "कोई सभा यह समझ कर कि वह हैडक्वार्टर के आदेश का पालन कर रही है पहली मई को ८ घण्टे की परिपाटी के लिए हडताल न करे क्योकि ऐसा कोई आदेश नही दिया गया और न दिया जाएगा..." इस सीधी कार्रवाई के बजाय उसने सुझाव दिया कि स्थानीय सभाएं अपने सदस्यो से ८ घण्टे के दिन पर छोटे-छोटे निबन्ध लिखवाए जो वाशिंगटन के जन्म दिवस पर अखबारो मे एक साथ छपें। तो भी अनेक जिला सभाओ ने ग्राम

हड़ताल के पक्ष में प्रस्ताव पास किए और पाउडरली द्वारा रोके जाने की परवाह नही की और जब १ मई आई तो नाइट्स के हजारो सदस्यों ने उद्योग पर अपनी मागो की छाप अकित करने के लिए राष्ट्र के कर्मचारियो की तरफ से किए गए पहले सामूहिक प्रदर्शन मे भाग लिया।

यह सफल नही हुआ। ८ घण्टे के दिन के आन्दोलन मे कोई ३,४०,००० मज़दूरो ने हिस्सा लिया और इसमें आधे से अधिक ने वस्तुत १ मई को हड़ताल कर दी किंतु २ लाख कर्मचारियो ने यद्यपि अपने मालिको से ८ घण्टे के दिन की माग मनवा ली, तो भी उनकी यह मांग-पूर्ति क्षणिक ही रही। वर्ष की समाप्ति पर बताया गया कि मालिको को अस्थायी रूप से मजबूर होकर जो रियायतें देनी पडी थी, वे उन्होने सिर्फ १५००० मजदूरो को छोड़कर शेष सबसे वापस ले ली। हेमार्केट स्क्वेयर काण्ड के बाद मज़दूरो के विरुद्ध जो भावना फैली, वह शायद इस पराजय का सबसे बडा कारण थी किन्तु नाइट्स आव लेबर द्वारा शुरू मे ही आन्दोलन का समर्थन न करना भी उसका एक महत्वपूर्ण कारण था।

१८८६ की पतझड मे नाइट्स आव लेबर का जब फिर सम्मेलन हुआ, तब भी उसको देखने से ऐसा नही लगता था कि यह अन्दर से खोखला हो चुका है जिससे इसके दिन गिने चुने रह गए है। रिचमण्ड मे आयोजित राष्ट्रीय सभा मजदूरो की सबसे प्रभावशाली सभा थी, जैसी देश मे अब तक नही हुई थी और ७०० प्रतिनिधियो का वर्जीनिया के गवर्नर ने बाकायदा स्वागत किया। किन्तु यह शक्तिशाली प्रदर्शन एक बाहरी दिखावट से ज्यादा कुछ नही था और सभा मे बोलने वालो के जोशीले भाषणो मे जिनमे उन्होने "लाखो की पीठ पर" गिरने वाले "सोने के चाबुक" की निन्दा की, कुछ खोखलापन था। इतनी ज्यादा हडतालो की विफलता, ८ घण्टे के आन्दोलन की पराजय, अधिकाश सहकारी धन्धो के दुखद परिणामो और हेमार्केट स्क्वेयर के दगे के बाद के परिणामो ने नेताओ व सदस्यो के बीच बढती हुई खाई के साथ मिलकर नाइट्स आव लेबर को पतन की उस ढलान पर डाल दिया जिस पर फिसलने से वह बाद मे रुक ही नही सका।

बहुत सी स्थानीय सभाएं तो भग ही हो गई और दक्ष कर्मचारियो की अन्य सभाएं उस आन्दोलन के पीछे हो ली जो अमेरिकन फैडरेशन आव लेबर

का रूप ले रहा था। नाइट्स नए यूनियनवाद की उभरती हुई ताकतो के साथ निर्णायक संघर्ष मे इस कदर उलझ गए कि उससे उनका पूर्णत खात्मा हो गया। ७ लाख की सदस्यता दो वर्ष मे ही २ लाख रह गई। १८९३ में यह और घटकर ७५००० रह गई। कंजर्वेटिव अखबार इस सगठन के विघटन पर खूब खुश हुए, जिसके बारे में कभी यह समझा जाता था कि गणराज्य का भाग्य उसके हाथ में है। एक सम्पादक ने चैन की सास लेते हुए कहा "आश्चर्य की बात तो यह है कि यह पागलपन इतने अरसे तक जारी रहा।"

नाइट्स आव लेबर के नेताओ ने औद्योगिक गति-विधियो के खिलाफ राजनीतिक गतिविधियो की ओर ध्यान देकर कुछ अरसे तक तो इस रुझान का मुकाबला करने की कोशिश की। पाउडरली ने मजदूरो से अनुरोध किया कि वे "उस दिन जो अमरीकी नागरिक के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण दिन है अर्थात् चुनाव के दिन" अपना तीव्र दबाव महसूस कराकर अपने हितों की रक्षा करे। १८८६ की पतझड मे एक दर्जन शहरो में राजनीतिक पदो के लिए स्थानीय मजदूर उम्मीदवारो को आर्डर ने अपना पूरा सहयोग दिया और न्यूयार्क के मेयर के चुनाव मे खुद ग्रैण्डमास्टर वर्कमैन ने हेनरी जार्ज और उसकी एकमात्र कर पद्धति के पक्ष में जोरदार प्रचार किया। क्योकि पाउडरली यद्यपि अब भी तृतीय दल आन्दोलन मे विश्वास नही रखता था फिर भी आर्थिक कार्रवाइयो में उत्तरोत्तर मिली असफलताओ से वह इतना निराश हो गया था कि वह अंतिम उपाय के रूपमे राजनीति की ओर अधिकाधिक मुडता गया। १८८९ में वह नाइट्स से अनुरोध कर रहा था, कि "हड़तालो, बहिष्कारो, ताला बन्दियो और ऐसी ही अन्य वाहियात चीजो को धत्ता बताओ और विधायक हथियार से एक ऐसी कडी चोट करने के लिए सगठित हो जाओ जिसमे कि अमरीका पर हुकूमत करने की कम्पनियो की ताकत क्षीण हो जाए।"

नाइट्स आव लेवर के खात्मे के अतिम दिनो में उसमें विद्यमान कृषि-तत्वो ने, जो किसानों को सदस्य बनाए जाने के कारण सदा उसमे मौजूद रहते थे, औद्योगिक मजदूर के प्रभाव पर स्वय छा जाना प्रारम्भ कर दिया। १८९३ मे पाउडरली को निकाल बाहर किया गया और ग्रैण्ड मास्टर वर्कमैन का उसका पद आयोवा के जेम्स आर सौवरेन ने सम्हाल लिया जिसे सिर्फ सुधारो की राजनीति मे दिलचस्पी थी।

१८९४ मे आर्डर के कार्य की व्याख्या करते हुए सौवरेन ने कहा . "मजदूरियो मे हेरफेर के प्रश्न पर इसकी दीवार नही खडी है, बल्कि वेतन प्रणाली की समाप्ति और एक सहकारी औद्योगिक प्रणाली की स्थापना इसका आधार है। जब इसका वास्तविक उद्देश्य पूरा हो जाएगा, तब गरीबी कम से कम रह जाएगी और हमारी जमीन शातिमय सुखद घरो से चिन्हित होगी।"

इन शब्दो मे सिल्विस, स्टीफेन्स के शब्दो की सुपरिचित गूंज सुनाई देती है; शायद पाउडरली ने भी ये शब्द कहे हो किन्तु सौवरेन यह भूल गया कि मजदूरी प्रणाली की विकृति उसके अन्तिम खात्मे की ओर एक कदम है और मजदूर स्वय ही आर्डर मे शामिल होने के लिए जो टूटे पडते थे, उसके अस्पष्ट और आदर्शवादी चरम लक्ष्यो की वजह से नही बल्कि इसलिए कि वे समझते थे कि मजदूरी और घण्टे से सम्बन्धित उनकी तात्कालिक मागो का यह समर्थन करने को उद्यत है। और नाइट्स आव लेबर की ताकत हो उसके सदस्यो की उग्र भावनाए थी। अब जबकि एक के बाद एक सभा इस रास्ते से विचलित हो गई, तब आर्डर पुरानी मजदूर कांग्रेस जैसी चीज ही बन कर रह गया। राजनीतिक विचारो के कुछ नेता कभी-कभी परस्पर मिलकर ऐसे कदम उठाए जाने का अनुरोध करते थे, जिनको लागू कराने मे वे सर्वथा असमर्थ थे।

अपने दुखद अन्त के बावजूद नोबल एण्ड होली आर्डर ने मजदूरो के संगठन को एक शक्तिशाली गति प्रदान की और उसकी सफलताए और विफलतायें दोनो का ही समस्त मजदूर आन्दोलन के लिए अब भी बहुत महत्व था। क्योकि नाइट्स ने मजदूरो मे वह एकता कायम कर दी थी जो उनके अभ्युदय से पूर्व बिल्कुल धुंधले रूप मे महसूस की गई थी और उन्होने उद्योग की ताकत को वह चुनौती दी जिसने मजदूरो की अन्तर्हित शक्ति को इस प्रकार सामने लाकर रख दिया जैसा पहले कभी नही हुआ था। आखिरकार २० वर्ष से भी कम समय मे सात दिहाडिये दर्जियो की एक छोटी सी गुप्त सोसाइटी से ७ लाख मजदूरो का एक व्यापक राष्ट्रीय सगठन बन जाना स्वत. एक अविश्वसनीय उपलब्धि थी।

विफलता के कई कारण रहे—सदस्यो मे गैर-जिम्मेदारी की भावना और लडखडाता नेतृत्व, ठीक ढंग से आयोजित न की गई और फलत. असफल हडतालो मे भाग लेना, सहकारी धन्धो मे, जिनकी विफलता निश्चित थी, अपनी ताकत और कोष को गवा देना और सबसे ज्यादा अदक्ष औद्योगिक मजदूरो को एक ही केन्द्रीय मजदूर सगठन मे शामिल करने की अव्यावहारिकता तथा उसके फलस्वरूप राष्ट्रीय ट्रेड यूनियनो द्वारा सहायता से हाथ खीच लेना।

अपनी अतिम निवृत्ति से पूर्व पाउडरली ने यह अच्छी तरह महसूस कर लिया था कि आर्डर अब अतिम रूप से विघटित होने वाला है और उसका ख्याल था कि इसके नेतृत्व के गुण-दोष कुछ भी रहे हो, आन्तरिक विरोधी बातो ने उसके भाग्य का सितारा डूबना अनिवार्य कर दिया था।

१८९३ में उसने लिखा : "महत्पूवर्ण और बहुत अधिक आवश्यक सुधारो का पाठ पढाते हुए भी उसे अपनी सीख से विपरीत आचरण करना पडा ! श्रम-विवादो में पहले कदम के रूप मे पच-फैसले व समझौते की वकालत करते हुए भी उसे अपने कन्धो पर पहले चोट करने की जिम्मेदारी वहन करनी पडी और जब पच-फैसले और समझौते की आशा जाती रहती तब विपक्ष से उन चीजो के लिए प्रार्थना करनी पड़ती, जो उसे सब पहले करनी चाहिए थी। हडतालो की मुखालफत करते हुए भी हम उनमें जूझे रहे। महत्वपूर्ण सुधारो की अपील करते हुए भी हमे अपना समय और ध्यान छोटे-छोटे झगडो पर देना पडा, जिससे हम एक ऐसी स्थिति में फस गए जिसमें हमे कर्मचारियो और मालिको दोनो ने बहुधा गलत समझा। राजनीतिक दल न होते हुए भी हमे राजनीतिक कार्रवाई करने जैसा रवैया अपनाना पडा......"

नाइट्स आव लेबर विफल हो गए थे। तो भी यह सच था, जैसा कि पाउडरली ने आगे कहा कि आर्डर ने देश पर अपनी गहरी छाप डाली थी और अपने खात्मे में भी वह गलत रूप में समझी जाने वाली और पद्दलित मानवता के उद्देश्यो को सामने लाने में अपनी शानदार उपलब्धियो की ओर इगित कर सकता था।

—o—

९ : अमेरिकन फेडरेशन आव लेवर (ए. एफ. एल.)

प्रश्न—तुम पहले घरेलू मामले सुधारने की कोशिश कर रहे हो ?

उत्तर—जी, हाँ, पहले मैं जिस यूनियन का प्रतिनिधित्व करता हूँ उसी के बारे में सोचता हूँ..... जिन लोगों ने मुझे अपने हितो का प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त किया है, उनके हित की बात सोचता हूँ।

चेयरमैन—मै तुमसे सिर्फ तुम्हारे अन्तिम लक्ष्य के बारे मे पूछ रहा था।

गवाह—हमारा कोई अन्तिम उद्देश्य नहीं है। हम जो दिन आता है, उसी की बात सोचते हैं। हम सिर्फ तात्कालिक उद्देश्यो के लिए—उन उद्देश्यो के लिए जो कुछ ही वर्षों मे प्राप्त किए जा सकें, सघर्ष करते हैं।

१८८५ में शिक्षा और श्रम पर नियुक्त सेनेट की समिति में अन्तर्राष्ट्रीय सिगार निर्माता यूनियन के अध्यक्ष ऐडल्फ स्ट्रासर की प्राय: उद्धृत की जाने वाली इस साक्षी में हमें उस विचारधारा का निचोड़ मिल जाता है जो ट्रेड-यूनियनों के पुनरुद्धार के पीछे विद्यमान थी और जिसने बाद में अमरीकी श्रम संघ (अमेरिकन फेडरेशन आव लेवर) के निर्माण की प्रेरणा दी। सगठित मजदूरों के नए नेताओ को सहकारी कामनवेल्थ का निर्माण करके समाज में सुधार करने की कोई तमन्ना नहीं थी। यद्यपि उन्होने अपने पूर्ववर्तियो के मानवीयतायुक्त आदर्शवादी लक्ष्यों को बिल्कुल नही त्यागा तो भी उन्हें और सब चीजो को छोड़कर "व्यावहारिक आदमी" होने का गर्व था। उनको मौजूदा औद्योगिक प्रणाली के ढाँचे में ही अपनी ट्रेड यूनियनो के अनुयायियो के लिए वेतनों, काम के घण्टो तथा काम की हालतों मे सुधार कराने की ही विशेष चिन्ता थी।

१८७० की दशक का मन्दी के अन्धकारपूर्ण दिनो में जहाँ पुरानी राष्ट्रीय ट्रेड यूनियनें करीब-करीब बिल्कुल तहस-नहस हो गई थी, तब उन्ही वर्षो में जिनमें नाइट्स आव लेवर का चामत्कारिक उत्थान हुआ, शनैः-शनैः इन

यूनियनो मे भी पुन जान आने लगी। कुछ मामलो में तो वे राष्ट्रीय मजदूर सभाओ के रूप में आर्डर मे शामिल होकर नाइट्स के साथ सम्बद्ध थी, कुछ अन्य मामलो मे वे बिल्कुल अलग रही और उन्होने अपनी पूर्ण स्वाधीनता कायम रखी। दोनो हालतो मे मजदूर आन्दोलन में उनकी भूमिका १८८० के दशक के अधिकांश भाग मे नाइट्स के सामने दबी रही। नोबल ऐण्ड होली आर्डर की प्रत्यक्ष एकता व शक्ति से प्रभावित हुई जनता यह सोच ही नही सकती थी कि भविष्य दक्ष और अदक्ष मजदूरो की अनाडी भीड के हाथ मे नही, जो पूर्णत. टेरेंस वी० पाउडरली के कहने में चलते थे, बल्कि ट्रेड यूनियनो के हाथ मे था।

इन वर्षों में राष्ट्रीय यूनियनो का इतिहास किसी निश्चित ढग का नही रहा। १८७० की दशाब्दि से बाद उनके पुनरुद्धार के समय मे काफी प्रतिद्वन्द्विता, संघर्ष और मजदूर राजनीति की सब जटिल पैंतरेबाजियाँ रही। किन्तु नए यूनियनवाद का, जो स्ट्रासर के मन मे बसी हुई थी और जिनके लिए वह तात्कालिक और व्यावहारिक लक्ष्यो पर जोर देता था, नाइट्स आव लेबर के कार्यक्रमो के विफल होने पर शनैः-शनैः एक रूप उभर आया।

मजदूर समस्याओ के प्रति यह व्यावहारिक दृष्टिकोण कोई बिल्कुल नया नही था। आधी सदी पूर्व की मूल मजदूर सोसाइटियो ने विशुद्ध शिल्पिक, धन्धे का सरक्षण और अधिक वेतन तथा काम के कम घण्टो जैसे साफ और सीधे लक्ष्यो के आधार पर संगठन बनाने पर जोर दिया था। १८६० के दशक के बाद के वर्षो और १८७० के दशक के प्रारम्भिक वर्षो की राष्ट्रीय यूनियथो ने इन्ही लक्ष्यो को सामने रखा और जब विलियम सिलविस ट्रेड यूनियनवाद के सुधारो की ओर झुका, उससे पूर्व के दिनो मे मोल्डर्स इण्टरनेशनल यूनियन के रूप में इस कार्यक्रम को तत्काल अमल मे लाने वाला भा मिल गया। फिर भी इससे पूर्व के मन्दी के जमानो मे राष्ट्रीय यूनियनो को जो दुखद अनुभव हुए थे उनको देखते हुए मजदूरो के सगठन की मूल समस्या के प्रति कई मामलो मे एक नया दृष्टिकोण अपनाया गया।

पूर्णत समाप्त होने से बच जाने वाली यूनियनो में एक अन्तर्राष्ट्रीय सिगार निर्माता यूनियन भी थी। तीन उत्साही नेताओ एडल्फ स्ट्रासर, फर्डिनेण्ड लारेल और विशेष रूप से सेम्युअल गौम्पर्स ने जब इसके पुनर्गठन

का काम हाथ मे लिया तो इसके मुट्ठीभर सदस्य रह गए थे। इन तीनों नेताओं ने इसे पुन. अपने पैरो पर खड़ा करने और ठोस व अच्छी परिपाटियाँ अपनाने का निश्चय किया। १८७५ में एक न्यूयार्क लोकल स्थापित की गई जिसका अध्यक्ष गौम्पर्स बना और १८७७ मे स्ट्रासर इंटरनेशनल का अध्यक्ष चुना गया। १८७७ मे ही कम से कम वेतन पर अधिक से अधिक श्रम कराने की नीति के खिलाफ न्यूयार्क के सिगार-निर्माताओं की हड़ताल भयानक रूप से विफल रही किन्तु इस हार ने यूनियन के नए अधिकारियो के अपने कार्य-क्रम को सफल बनाने और सिगार निर्माताओं को ऐसा संगठन प्रदान करने के, जो उनके हितों की प्रभावशाली ढंग से रक्षा कर सके, संकल्प को और मजबूत ही किया। जैसा कि गौम्पर्स ने लिखा : "काम की अच्छी हालतें प्राप्त करने के हेतु पर्याप्त शक्ति प्राप्त करने के लिये ट्रेड यूनियनवाद की स्थापना व्याव-सायिक आधार पर करना निहायत जरूरी था।"

प्रवेश फीस और चन्दे की ऊँची दरें और उनके साथ बीमारी और मौत की हालत मे लाभ प्रदान करने की एक प्रणाली अपनाई गई जिससे नई यूनियन मे स्थिरता और स्थायित्व आ सके। ब्रिटिश ट्रेड यूनियनों की परम्परा से कोष के समानीकरण का सिद्धान्त लिया गया, जिसके द्वारा किसी मजबूत वित्तीय स्थिति वाली स्थानीय यूनियन को अपने जमा कोष का कुछ हिस्सा आपदा मे फँसी किसी अन्य स्थानीय यूनियन को दे देने का आदेश दिया जा सकता था। एक अत्यन्त केन्द्रित नियन्त्रण की वजह से अन्तर्राष्ट्रीय यूनियन के अधिकारियो को सब स्थानीय यूनियनों पर वस्तुत: पूर्ण अधिकार प्राप्त था। यह इस बात की गारण्टी थी कि हड़ताल करने मे सख्त अनुशासन से काम लिया जाए और जब अधिकारियों के आदेश से कोई हड़ताल हो तो उसे पर्याप्त समर्थन मिले। सिगार मेकर्स ने उत्तरदायित्व और कार्यकुशलता पर सबसे ज्यादा जोर दिया। किसी माँग को पूरा कराने के लिये वे जहाँ सबसे प्रभावशाली हथियार का सहारा लेने के लिये तैयार रहते थे, वहाँ यह भी था कि इस हथियार का प्रयोग तभी किया जाना होता था जब हड़ताल को सफल बनाने के लिये यूनियन के पास पर्याप्त साधन हो।

गौम्पर्स ने अपनी आत्मकथा मे इन दिनो के बारे मे लिखा है : 'स्ट्रासर के प्रशासन के साथ सिगार मेकर्स और अन्य सब ट्रेड यूनियनों के लिए एक

नया युग शुरू हुआ क्योंकि हमारे काम का असर बाद में बहुत व्यापक हुआ। अमरीका की इण्टरनेशनल सिगार मेकर्स यूनियन के लिए विकास, वित्तीय सफलता और ठोस विस्तार का युग शुरू हुआ, जिसमें एक से नियम, चन्दे की ऊँची दरें, यूनियन के लाभ, यूनियन का बिल्ला, बेहतर मज़दूरी और कम काम के घण्टे कायम किए गए।"

अन्य यूनियनो ने भी ये प्रक्रियाए अपनाई विशेष कर पीटर जे. मैकगायर के कुशल नेतृत्व में ब्रदरहुड आव कारपेण्टर्स ऐण्ड जौयनर्स ने किन्तु वास्तविक पायोनियर सिगार मेकर्स ही थे जिन्होने अपना पुनर्गठन इतनी सफलता से किया कि वे नई यूनियनो के लिए आदर्श बन गए। उनके अनुभवो से यह स्पष्ट जाना जा सकता था कि वित्तीय स्थिरता और केन्द्रित अधिकार की दृढ भित्ति पर क्या कुछ किया जा सकता है। उत्पादको के स्वय-नियोजन, एक सहकारी कामनवेल्थ, या अन्य किसी दिवास्वप्न जैसी वाहियात बातें उनमें नहीं थी। दृढतापूर्वक यह कहा गया "आवश्लकता ने मजदूर आन्दोलन को सबसे ज्यादा व्यावहारिक तरीके अपनाने के लिये बाध्य कर दिया है। वे अधिक वेतन और काम के कम घण्टो के लिए सघर्ष कर रहे है .....कोई वित्तीय कार्यक्रम या कर लगाने की कोई योजना श्रम के घण्टे कम नही करा सकती।"

यह व्यावहारिक दृष्टिकोण सुधार के मध्य वर्गीय विचारो, जो अतीत मे मजदूरो को इतनी ज्यादा अन्धी गलियो में भटकाते रहे और समाजवादी सिद्धान्तो, जिन्हे नई यूनियनो के नेता इन्ही की भाँति हानिकारक समझते थे, दोनो के विरुद्ध यह एक प्रकार का विद्रोह था और। स्ट्रासर और मैकगायर दोनो समाजवादी थे। गौम्पर्स कभी उनके प्रभाव मे था। किन्तु पहले दोनो व्यक्ति समाजवादियो की प्रतिद्वन्द्विता और झगडो से ऊब गए और हमने देखा कि किस प्रकार गौम्पर्स के अपने अनुभवो ने उसे रैडिकल वाद के खिलाफ कर दिया। ऐसे किसी भी उपाय से मजदूरो की भलाई के काम मे विफलता निश्चित जानकर ये नेता पुनः दृढ संकल्प के साथ "विशुद्ध और सरल" ट्रेड यूनियनवाद की ओर लौटे। उनके मन्तव्य वर्ग के प्रति सजगता के बजाय वेतन के प्रति सजगता पर आधारित थे। आर्थिक प्रणाली को बदलने का उनका कोई विचार नही था, उसे उलटने की कोशिश करना तो दूर की बात है।

कहने का यह तात्पर्य नही कि पुनर्गठित मजदूर आन्दोलन में कोई

रैंडिकल नही थे। १८७० और १८८० की दशाब्दि के दगो और उपद्रवो में जिन क्रातिकारी तत्वो का हाथ था, वे अभी पूरी तरह खत्म नही हुए थे। मार्क्सवादी और लासालीन दोनो प्रकार के समाजवाद के अनुयायी मजदूरो को अपने अपने कैम्पो मे लाने के उनके प्रयत्नो में "अन्दर-अन्दर से पलीता लगाते रहे" और अमेरिकन फेडरेशन आव लेबर से सम्बद्ध यूनियनो के सदस्यो मे से अपने अनुयायी बनाने की चेष्टा करते रहे। किन्तु नई यूनियनो के जिम्मेदार नेताओ ने ऐसे सब तत्वो का दृढता से और सफलता से सामना किया और आर्थिक तथा सामाजिक मामलो मे उनका दृष्टिकोण अधिकाधिक रूढिवादी बनता गया।

अगर नई यूनियनो के पीछे प्रेरक शक्ति ज्यादातर इण्टरनेशनल सिगार मेकर्स रही तो सेम्युअल गौम्पर्स इसका सबसे योग्य प्रवक्ता और राष्ट्रीय सगठन का, जिसने इसके मूल सिद्धान्तो को आगे बढाया, मुख्य शिल्पी था। अमेरीकन फेडरेशन आव लेबर का वह न केवल प्रथम अध्यक्ष बना किन्तु सिर्फ एक वर्ष को छोडकर १९२४ में अपनी मृत्यु तक वह इसी पद पर बना रहा। नाइट्स आव लेबर के अध पतन पर मजदूर आन्दोलन को नई दिशा प्रदान करना और १८९० की दशाब्दि की मदियो को झेलने मे ए. एफ. एल. को सफल बनाना इस मजबूत, व्यावहारिक और दृढ मजदूर नेता का ही काम था जिसका चरित्र और सिद्धान्त पाउडरली के चरित्र और सिद्धान्त से इतने ज्यादा भिन्न थे।

गौम्पर्स १८५० में लन्दन की ईस्ट ऐण्ड बस्ती में पैदा हुआ था। डच-यहूदी जात का उसका पिता सिगार बनाता था और १० वर्ष की आयु में किशोर सेम्युअल को इस धन्धे की शिक्षा दी गई। १८६३ में जब परिवार अमरीका चला गया तो पहले तो गौम्पर्स ने न्यूयार्क की ईस्ट साइड बस्ती के एक मकान मे सिगार बनाने मे अपने पिता की सहायता की, किन्तु शीघ्र ही उसे अलग से काम मिल गया और १८६४ मे वह एक स्थानीय यूनियन मे शामिल हो गया।

उस समय के सिगार बनाने वाले कारखाने फैक्ट्री होने के अलावा राज-नीतिक और सामाजिक विचारधाराओ के स्कूल भी थे और उनका सबसे ज्यादा उत्साही विद्यार्थी लन्दन से आया हुआ यह नौजवान आव्रजक ही था जो

ब्रिटिश ट्रेड यूनियनवाद की पृष्ठभूमि का पहले से ही अच्छा जानकार था। अधेरे और धूलभरे कमरे में अपनी बेंच पर बैठ कर कुशलता से सिगार बनाता हुआ वह समाजवाद और मजदूरो से सम्बिन्धित सुधारो के बारे में अपने साथी मजदूरो की बातचीत को बडे ध्यान से सुनता रहता था। उसके साथियो मे अधिकाश यूरोप में पैदा हुए थे और उनमे से अनेक इण्टरनेशनल वर्किंगमेन्स ऐसोसियेशन के सदस्य थे। उनमें से एक मजदूरो से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाए ऊँचे स्वर में पढ़कर सुनाया करता था (बीच बीच में वह रुक कर पुन अपना काम करने लगता था, क्योकि वरना वह अपनी मजदूरी खो बैठता) और यह काम अक्सर गौम्पर्स को सौपा जाता था।

लेकिन जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि मार्क्सवादी विचारधारा को खूब पढने के बावजूद यह नौजवान सिगार निर्माता कोई सिद्धातवादी व्यक्ति नही बना, इसके विपरीत लगता है कि इसने मजदूर समस्याओ के प्रति उसके भावुकता रहित व्यावहारिक दृष्टिकोण को और पक्का कर दिया। अपने इस दृष्टिकोण को बनाए रखने मे वह शायद फर्डिनेण्ड लारेल से ज्यादा प्रभावित हुआ जो एक कठोर तबियत का स्वीडिश आवासी था और जिसे रैडिकलवाद के सब स्वरूपो का अच्छा-खासा अनुभव था। लारेल ने उसे मार्क्स और ऐंजल्स पढने के लिए तो जरूर कहा लेकिन यह चेतावनी भी दी कि उनकी सैद्धान्तिक विवेचनाओ में वह बह न जाए। उसने उसे समाजवादी दल मे शामिल होने से मना किया। गौम्पर्स को उसने कहा सैम अपने यूनियन कार्ड का अध्ययन करो और अगर कोई विचार उससे मेल नही खाए तो वह गलत है।"

इस पृष्ठभूमि के साथ गौम्पर्स, स्ट्रासर और लारेल के सहयोग से सिगार मेकर्स यूनियन के पुनर्निर्माण में जुट गया। इन दिनो के अनुभवो का सिहावलोकन करते हुए गौम्पर्स उन्हे न केवल अपने व्यावसायिक जीवन के लिए, अपितु अमरीका के मजदूर आन्दोलन के भावी पथ के लिए उत्तरदायी मानता था। जिन व्यक्तियो के साथ अनन्त विचार-विमर्श करके उसने अपने विचारो को परिपक्व किया था उनके बारे में उसने लिखा . "इस छोटे से ग्रुप की बदौलत वह उद्देश्य और पहल हमारे हाथ मे आई जिसकी अतिम परिणति वर्तमान अमरीकी मजदूर आन्दोलन के रूप में हुई.. ...हमने अमरीकी ट्रेड यूनियन का निर्माण नही किया—वह विभिन्न ताकतो और परिस्थितियो की उपज है।

किन्तु हमने वे तौर-तरीके अपनाए और कुछ बुनियादी बातें तय की जिन्होने ट्रेड यूनियनो को रचनात्मक नीतियो और उपलब्धियो का रास्ता दिखाया।"

इण्टरनेशनल सिगार मेकर्स यूनियन के पुनर्गठन के समय गौम्पर्स की आयु २९ वर्ष की थी और इस छोटी आयु से ही वह अविचलित भाव से एक ही मार्ग पर चलता रहा। सिलविस और पाउडरली के विपरीत वह अंत तक अपने लक्ष्य पर चिपटा रहा और कभी और किसी काम मे दत्तचित्त नही हुआ। वह न तो कोई सुधारक था और न कोई बडा पडित। वह ऐसे लोगो से घृणा करता था जो मजदूरो को यह बताने का दु साहस किया करते थे कि उन्हें किस मार्ग पर चलना चाहिए। जिन सिद्धान्तो को वह "औद्योगिक दृष्टि से असम्भव" समझता था उनके प्रति पूर्ण अविश्वास की भावना रखते हुए उसने स्वय श्रम-सम्बन्धी किसी सिद्धान्त पर लेक्चरबाजी देने का प्रयत्न नही किया। नैतिक प्रभाव और अन्तर्ज्ञान के बारे मे बातचीत करना उसे पसन्द न था किन्तु हर प्रश्न के प्रति उसका दृष्टिकोण सर्वथा व्यावहारिक रहता था।

उसके विचार सकीर्ण और सीमित से लगते थे और उसका कार्यक्रम निश्चित रूप से तात्कालिक अवसरवादिता का होता था। एक बार यद्यपि उसने वेतन प्रणाली की समाप्ति का कुछ अस्पष्ट शब्दो में समर्थन किया था तो भी शिल्पिक यूनियनो के दक्ष कर्मचारियो के लिए अधिक वेतन और काम के कम घण्टो से परे उसकी नजर नही गई। मुद्रासुधार भूमि-बसाव और सहकारिता जैसे रामबाण उपायो से, जिन्होने राष्ट्रीय मजदूर यूनियन और नाइट्स आव लेबर को इतना छकाया था, बिल्कुल अलग रहकर उसने मजदूर एकता का उनका लक्ष्य भी छोड दिया। गौम्पर्स का यथार्थवादी रवैया यह था कि कम से कम जहा तक दक्ष कर्मचारियो का ताल्लुक है, मजदूर आन्दोलन को अब तक की अपेक्षा अधिक दृढ और स्थायी आधार पर रखा जाए। किन्तु उसमें व्यापक दृष्टिकोण के अभाव ने समग्रत मजदूरो के हित-साधन के कार्यो मे अमेरिकन फैडरेशन आव लेबर के योगदान को बहुत सीमित कर दिया। उसने एक साथ ही एक तरफ तो ट्रेड यूनियन आन्दोलन को बिल्कुल छिन्न-भिन्न हो जाने की सम्भावना से बचा लिया और दूसरी ओर उसे उस व्यापक रूपरेखा के आधार पर जो उसके पूर्ववर्तियो का अत्यन्त आदर्शवादी स्वप्न रहा है, विकसित करने का अवसर फेक दिया।

पहले अपनी यूनियन और बाद मे अमरीकी श्रम सघ के हितो की पूर्ति मे उसका उत्साह असमाप्य लगने वाली शक्ति से और वढ गया। उसने कभी ऐसी शिकायतें नही की कि लोगो के लिए उसके पास समय नही है। गौम्पर्स अथक सगठन कर्ता व प्रशासक था, मजदूरो के सभा-सम्मेलनो में भाषण देनें के लिये समूचे देश में भ्रमण किया करता था। कभी जो "हकलाने वाला सैम" करके मशहूर था, उसने भाषण में कोई झिझक दिखाना बन्द कर दिया और अपने मन्तव्यो का खूब उत्साह से गरज-गरज कर बखान किया करता था। यह सच है कि उसके भाषण कभी कभी अस्पष्ट और उलझन भरे होते थे, क्योकि वह वस्तुत. मौखिक भापण देने मे वहुत कुशल नही था। उसका तौर-तरीका प्राय गम्भीर और पादरी का सा होता था। किन्तु अपनी नाटकीयता के स्वभाव के कारण जो बाद के एक नाटकीय मजदूर नेता की भी विशेषता थी वह मच को काबू में रखने का गुर अच्छी तरह जानता था।

प्लेटफार्म से दूर और सम्मेलन-कक्ष के बाहर गौम्पर्स मैत्रीपूर्ण, शान्त-प्रसन्न और निरभिमानी रहता था, स्वयं को एक मजदूर ही मानता था। वह बडा प्रेमी जीव और खुले दिल का आदमी था। मयखानो, थियेटर, सगीत भवनो, फैशनेबल लडकियो और अटलाण्टिक सिटी के समुद्रतट पर विहार करना पसन्द करता था। जब वह शाम को अपने कुछ मित्रो के साथ मयखाने के एक अंधेरे कमरे के सुखद वातावरण मे एक काले सिगार को अपने दाँतो मे दबाए और सामने मेज पर उठते हुए झागो वाले शराब का जाम लिए पूर्ण विश्राम की भावना के साथ एकत्र होता था। तो अपनी हैसियन को बिल्कुल भूल जाता था। उसका दूसरो के साथ मिलजुल कर भोजन करना, झिझक वाले पुराणपन्थी प्रतिद्वन्द्वि नाइट्स आव लेबर को चौंका देने वाला था। नाइट्स का जव अमरीकी मजदूर सघ के साथ सघर्ष चल रहा था, तव जारी किए गए एक पर्चे में नाइट्स ने लिखा "जनरल ऐक्जीक्यूटिव बोर्ड को गौम्पर्स को गम्भीर मुद्रा मे देखने का कभी सौभाग्य नही मिला।" सयम के उत्साही वकीलो की यह टिप्पणी अनुचित थी किन्तु इसमे शक नही कि गौम्पर्स बीयर का खूब आनन्द लेता था।

गौम्पर्स देखने में कुछ दुर्वल पाउडरली की अपेक्षा ज्यादा मजदूर नेता सा लगता था। उसका छोटा, गठीला, मजवूत शरीर, जिसकी ऊँचाई सिर्फ ५ फुट

४ इच थी उसकी इस शेखी को ठीक की सिद्ध करता प्रतीत होता था कि "गौम्पर्स बलूत की लकड़ी के बने होते है ।" इसके अतिरिक्त चौड़े मस्तक के नीचे मजबूत जबड़ा उसके चरित्र की शक्ति और दृढता को जाहिर करता था १८८० के दशक के प्रारम्भ मे उसके काले अव्यवस्थित बाल थे, झुकी हुई दरियाई घोडे की सी उसकी मूँछें थी और ठोड़ी पर कही-कही बाल थे। बाद के वर्षो में वह दाढ़ी-मूँछ मुँडा कर रहने लगा, चमकदार चश्मा उसकी काली, जल्दी-जल्दी झपकने वाली आँखो को ढके रहता था। वह अच्छी पोशाक पहनता था और प्राय महत्वपूर्ण अवसरो पर रेशमी हैट प्रिस ऐल्बर्ट लगता था। उसके तौर-तरीके शान वाले होते थे। व्यवसायपति उसके प्रति कुछ पक्षपात के ढग से उसे "बहुत भला आदमी" कहा करते थे।

बाद मे बड़े आदमियो, उद्योगपतियो, बाल-स्ट्रीट के बैंकरो, सेनेटरो और राष्ट्रपतियो के साथ मेल-मुलाकात करते हुए भी उसने मज़दूरो के साथ अपना सम्पर्क खत्म नही किया और चाहता था कि उसे इन शब्दो मे जाना जाए "जो मज़दूरो की श्रेणी से तो ऊँचा नही उठा हुआ है, किन्तु उनकी श्रेणी मे रहने का जिसे गर्व है।" वह अत्यन्त वफादार था और जिस ध्येय के लिए वह काम करता था उसके लिए अपनी सब व्यक्तिगत सुख-सुविधाओ को होम देने के लिये तैयार रहता था। निष्कलक रूप से ईमानदार गौम्पर्स गरीबी की हालत मे मरा और उसकी विधवा पत्नी को डब्लू०पी०ए० से काम मजूर करना पड़ा।

उपर्युक्त कथन के किसी अ श का भी यह अभिप्राय नही कि गौम्पर्स महत्वाकाङ्क्षी नही था। वह समझता था कि वह नेतृत्व करने के लिए ही पैदा हुआ है और अमरीकी मज़दूर सघ के अध्यक्ष पद पर वह मजबूती से चिपका रहा। उसने एक शक्तिशाली राजनीतिक मशीन तथा सुसम्बद्ध श्रम-नौकर शाही दोनो का निर्माण किया। अपनी नीतियों पर अमल कराने मे वह तानाशाही से काम लेता था और समय के साथ वृद्ध हो जाने पर भी उसने अपेक्षाकृत युवा और अधिक प्रगतिशील नेतृत्व से हार नही मानी। किन्तु सत्ता तथा सार्वजनिक पद के लिए महत्वाकाङ्क्षा रखते हुए भी उसने कभी धन या राजनीतिक पद नही चाहा। ट्रेड यूनियनवाद और ए०एफ०एल० को अपने जीवन का कार्य बनाकर पूर्णत. सन्तुष्ट था।

अपनी आत्मकथा में उसनें लिखा: "मै ट्रेड यूनियन के लिए वर्षो के अपने काम का सिंहावलोकन करता हूँ और मुझे यह समझ कर खुशी होती है कि वास्तविक ट्रेड यूनियन आन्दोलन श्रमिको को जीवन और काम का एक उन्नत स्तर प्रदान कराने के लिए एक महान साधन है।"

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय यूनियनो के मेल की तरफ जिसकी परिणति अमेरिकन फेडरेशन आव लेबर के रूप में हुई, पहला कदम १८८१ में पिट्सबर्ग में मजदूर नेताओ के एक सम्मेलन में उठाया गया। इस सम्मेलन का जिसमे ट्रेड यूनियनो तथा नाइट्स आव लेबर दोनो के प्रतिनिधि शामिल हुए, मूल उद्देश्य ऐसे ऐसोसियेशन की स्थापना करना था जिसमें सब मज़दूर शामिल हो सकें। सम्मेलन के लिए अपील मे कहा गया। "हमारी असख्य ट्रेड यूनियनें, मजदूर सभाएँ या परिषदे, नाइट्स आव लेबर तथा अन्य अनेक स्थानीय और अन्तर्राष्ट्रीय यूनियने है। यद्यपि इन सब का कार्य महान रहा है किन्तु अगर इन सबका एक सघ बना दिया जाए तो इससे भी बहुत ज्यादा काम किया जा सकता है।" किन्तु नई यूनियनवाद के पक्षपातियो तथा नाइट्स आव लेबर के नेताओ के बीच बढती हुई प्रतिद्वन्द्विता के कारण ऐसा कोई लक्ष्य प्राप्त करना असम्भव हो गया और पिट्सबर्ग के सम्मेलन से सगठित व्यवसाय और मज़दूर यूनियनो का जो सघ बना उसका अस्तित्व बहुत कम समय तक रहा।

जैसा कि हमने देखा, यद्यपि कुछ राष्ट्रीय यूनियने नाइट्स या मज़दूर सभाओ से सम्बद्ध थी वे नोबल ऐण्ड होली आर्डर के सिद्धान्तो के अधिकाधिक खिलाफ होती जा रही थी। कुछ तो उनसे बिल्कुल अलग हो रही थी और वे अपने मामलो मे दस्तंदाजी की कोशिश किए जाने पर या जिसे वे अपना अधिकार क्षेत्र समझती थी, उसमें चंचुपात किए जाने पर स्वभावत. रुष्ट होती थी। उनका रवैया कारपेण्टर्स के मैकगायर ने स्पष्ट प्रकट कर दिया। उसने कहा "जहा किसी व्यवसाय की कोई राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय यूनियन है, वहा उस व्यवसाय के कर्मचारियों को उसी के मातहत संगठित होना चाहिए .....नाइट्स आव लेबर को हस्तक्षेप नही करना चाहिए।"

तो भी नाइट्स ने हस्तक्षेप किया ही। ट्रेड यूनियनो में दक्ष श्रमिको के

महत्व और मजदूर जगत में उनकी महत्वपूर्ण स्थिति को अंगीकार करते हुए आर्डर उनकी वफादारी प्राप्त करने को उत्सुक था। उदाहरणार्थ पाउडरली ने नवगठित शिल्प यूनियन ऐमलगमेटेड ऐसोसियेशन आव आयरन, टिन ऐण्ड स्टील वर्कर्स को वचन दिया कि अगर वह नाइट्स मे शामिल हो जाए तो वह अपना पृथक अस्तित्व और अपनी निजी शासन प्रणाली कायम रख सकती है। परन्तु इस तथा अन्य सगठनो के दक्ष कर्मचारियो ने देखा कि नाइट्स के नियन्त्रण मे आने के बाद वे अदक्ष मजदूरो के स्तर पर ले आए गए है। उन्होने घोषित किया कि "अमरीका के दक्ष कर्मचारियो को भिखारी बना दिए जाने से रोकने के लिए" सब बाह्य दबावो के खिलाफ वे अपनी स्वायत्तता कायम रखेंगे।

१८८१ में पिट्सबर्ग के सम्मेलन में गौम्पर्स ने सिगार मेकर्स के एक प्रतिनिधि के रूप मे भाग लिया और वह सगठन के बारे में नियुक्त समिति का अध्यक्ष बनाया गया। यद्यपि वह वस्तुत. नाइट्स आव लेबर का सदस्य था जिसमें वह १८७० के दशक मे शामिल हुआ था, तो भी इसके मूल सिद्धान्तो का वह जो विरोध किया करता था उससे उसने प्रस्तावित नए सघ को विशुद्ध एक ट्रेड यूनियन सस्था बनाए रखने का भरसक प्रयत्न किया। लेकिन जोरदार बहस के बाद उसके प्रस्ताव गिर गए। एक प्रतिनिधि ने मच पर कहा : "हम जिस प्रकार अपना आधार बदल रहे है वह कुछ विचित्र सा प्रतीत होता है। इस कांग्रेस के बारे मे व्यापक प्रचार किया गया था कि यह मजदूर कांग्रेस है और अब हम ट्रेड यूनियनो की बात कर रहे है। नाइट्स आव लेबर को ही सघ का आधार क्यो न बनाया जाए ?" यद्यपि ऐसा किया नही गया, तो भी नए सगठन ने दक्ष तथा अदक्ष कर्मचारियो के बीच कोई भेद नही किया और सिद्धान्तत: उसमें जाति, रग या राष्ट्रीयता के भेदभाव के बिना सब मजदूर शामिल हो सकते थे।

फेडरेशन आव आर्गनाइज्ड ट्रेड्स ऐण्ड लेबर यूनियन्स नए यूनियनवाद के सीमित कार्यक्रम के प्रति मजदूरो के झुकाव में कई तरह से एक सक्रमण-कालीन दौर का प्रतीक था। यद्यपि एकता का आदर्श कायम रखा गया तो भी फैडरेशन का मुख्य लक्ष्य आर्थिक प्रणाली मे बुनियादी सुधार की अपेक्षा ऐसे तात्कालिक लाभो की प्राप्ति रखा गया जिनको मजदूर पाने में समर्थ थे। इसके

विधि सम्बन्धी कार्यक्रम में, जिसके समर्थन के लिए उसने सब मजदूर संस्थाओ से विधानमण्डल में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का आग्रह किया, ट्रेड यूनियनो के वैधानिक विलय, बच्चो से मजदूरी कराने के रिवाज की समाप्ति, कानून सम्मत ८ घण्टे के दिन का परिपालन, ठेका-मजदूर प्रणाली की समाप्ति एक से अप्रैण्टिस कानूनो की स्थापना षड्यत्र सम्बन्धी कानूनो की समाप्ति की माग की गई।

किन्तु फेडरेशन को कोई सक्रिय समर्थन नही मिला। नाइट्स के प्रतिनिधि तुरन्त उससे हट गए, और राष्ट्रीय यूनियनो मे से अधिकांश ने उनका अनुसरण किया। दूसरे वार्षिक सम्मेलन मे सिर्फ १९ तथा तीसरे में सिर्फ २६ प्रतिनिधि आए। १८८३ में गौम्पर्स उसका अध्यक्ष चुना गया किन्तु अगली बैठक में वह शामिल तक नही हुआ। स्वयं मजदूरो से सम्पर्क टूट जाने के कारण नया सगठन शीघ्र ही पुराने राष्ट्रीय मजदूर यूनियन की तरह हो गया जिसका वार्षिक सम्मेलन के अलावा और किसी तरह अस्तित्व का भान नही होता था। इसका एकमात्र महत्वपूर्ण कार्य ८ घण्टे के दिन के लिए १ मई, १८८६ को हड़ताल कराना था किन्तु जैसा कि हमने देखा, अपने इस कार्यक्रम को वह नाइट्स आव लेबर के सहयोग के बिना सफल वही बना सका।

संघ वस्तुत: १८८६ में इस दिखावे को बिल्कुल छोड़ देने वाला था। राष्ट्रीय यूनियनो के नेताओ को विश्वास हो गया कि इससे उनकी समस्याए हल होने की कोई आशा नही है। नाइट्स आव लेबर द्वारा अपने संगठन के स्वरूप पर निरन्तर किए जाने वाले आक्षेपों से, जो अपनी विजयो से गर्वोन्मत्त होकर यह कहने लगे थे कि मज़दूर आन्दोलन में स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों का कोई स्थान नही, अपने बचाव के लिए उन्होने अधिक दृढता से काम लेने का निर्णय किया। फलस्वरूप १८ मई १८८६ को फिलाडेल्फिया में राष्ट्रीय यूनियनो का एक और सम्मेलन बुलाया गया, जिसका उद्देश्य ही यह रखा गया कि "एक तत्व के निन्दात्मक कार्यो से जो खुल्लमखुला यह शेखी बघारते है कि "ट्रेड यूनियनो को नष्ट करना जरूरी है", अपने-अपने संगठनो की रक्षा की जाए।"

स्वयं सिगार मेकर्स इण्टरनेशनल यूनियन के मामलो में नाइट्स द्वारा टाँग अडाए जाने से ट्रेड यूनियनिस्टो का गुस्सा विशेष रूप से भड़क उठा। न्यूयार्क लोकल में आन्तरिक संघर्षो के फलस्वरूप, जो अदक्ष श्रमिको को शामिल

करने और समाजवाद को अग्रसर करने के प्रश्नो पर उत्पन्न हुए थे, एक विद्रोही वर्ग ने पिट्ट—सस्था से अलग होकर प्रोग्रेस्सिव सिगार मेकर्स यूनियन बना ली। स्ट्रासर ने इस कदम की कडे शब्दो मे निन्दा की और उसने विद्रोहियो को किसी भी रूप मे मान्यता प्रदान करने से इन्कार कर दिया। उन्हे वह व्यग से "किराये के मकान की गन्दगी" कहा करता था। इस स्थिति मे नाइट्स आव लेबर की ४९ वी जिला सभा सग्राम में आ कूदी। बडी उग्रता से विद्रोही यूनियन का उसने समर्थन किया और आर्डर में उसके प्रवेश के लिए आन्दोलन किया।

जव फिलाडेलफिया सम्मेलन हुआ, तब कम से कम सिद्धान्त रूप में समझौते के एक ऐसा सामान्य आधार खोज निकालने का, जिसमें नाइट्स को राष्ट्रीय यूनियनो के प्रति शत्रुता खत्म कर देने के लिए मनाया जा सकता हो, एक और प्रयत्न किया गया। मजदूर आन्दोलन के भीतर दोनों ग्रुपो के अलग अलग उद्देश्यो मे तालमेल का और उनका झगडा खत्म करने के लिए एक "सधि" का प्रस्ताव किया गया। नाइट्स से यह मान लेने को कहा गया कि वे किसी ट्रेड यूनियनिस्ट को उसकी यूनियन की रजामन्दी के विना, या ऐसे किसी भी मज़दूर को जो अपने धन्धे के लिए निर्धारित वेतन दर से कम पर काम कर रहा हो, आर्डर में शामिल नहीं करेंगे और उनसे यह भी कहा गया जिस धन्धे मे कोई राष्ट्रीय यूनियन पहले से बनी हुई हो उसमे मज़दूरो द्वारा सगठित किसी भी स्थानीय सभा का चार्टर वापस ले लिया जाए।

क्या वस्तुत. यह कोई सधि थी ? इसकी एक पक्षीय शर्ते राष्ट्रीय यूनियनो के सामने नाइट्स द्वारा घुटने टेक दिए जाने की माग प्रतीत होती थी। फिलाडेल्फिया सम्मेलन के कुछ प्रतिनिधि शायद यह समझते रहे हो कि उन्होने अपनी टेक के बारे मे एक वक्तव्य दिया है जिससे कि अगर आर्डर ने समझौते की भावना दिखाई तो वे पीछे हटने को तैयार रहेंगे। किन्तु इसमे कोई शक नही कि नए यूनियनवाद के अनुयायियो के मन मे यह एक युद्ध घोषणा थी। उनका असली उद्देश्य एक अन्य संघ के लिए राष्ट्रीय यूनियनो का समर्थन प्राप्त करना था जो नाइट्स आव लेबर से बिल्कुल अलग हो जाए और अपना सारा ध्यान दक्ष शिल्प-कर्मचारियो के हितो की रक्षा पर केन्द्रित कर दे। गौम्पर्स यह काम ५ वर्ष पहले करना चाहता था, किन्तु तब इस का

समय नही आया था । अब नाइट्स और राष्ट्रीय यूनियनो की बीच बढती हुई शत्रुता ने जो सिगार मेकर्स मे दोहरे यूनियनवाद पर सघर्ष में तीव्र रूप में सामने आई, निर्णयात्मक कार्रवाई के लिए अवसर प्रदान कर दिया ।

जो लोग बिल्कुल तोड़ा-टूटन चाहते थे, नोबल ऐण्ड होली आर्डर पूर्णत उनके हाथो मे खेल गया । जिन मामलो पर राष्ट्रीय यूनियनो के साथ उसका झगडा था, उनपर समझौता करने की कुछ इच्छा व्यक्त करते हुए भी प्रस्तावित सधि के बारे में अधिकृत रूप से कोई कार्रवाई नही की गई । हड़तालो की विफलता और हे मार्केट स्क्वेयर के दंगे की प्रतिक्रिया यद्यपि नाइट्स की स्थिति को पहले से ही कमजोर कर रहे थे, तो भी वे अपने ही कार्यक्रमो से चिपटे रहना चाहते थे और रियायत करने की कोई जरूरत महसूस नही करते थे । अक्तूबर मे रिचमौण्ड सम्मेलन मे पाउडरली ने विचार के लिए कोई सधि प्रस्तुत तक नही की । नए राष्ट्रीय व्यावसायिक जिलो की स्थापना करके राष्ट्रीय यूनियना को चुनौती दी गई, प्रोग्रेस्सिव सिगार मेकर्स को बाकायदा आर्डर में शामिल किया गया और उनके अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी विवाद को हल करने की कोई चेप्टा नही की गई ।

इसके जवाब मे राष्ट्रीय यूनियनो ने ८ दिसम्बर १८८६ को अपना फिर सम्मेलन किया और इस सम्मेलन मे उनके साथ समाप्त प्राय फेडरेशन आव आर्गनाइज्ड ट्रेड्स ऐण्ड लेबर यूनियन्स का अब भी प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ मुट्ठी भर प्रतिनिधि भी शामिल हुए । कुल मिलाकर २५ श्रमिक ग्रुपो के कोई ४२ प्रतिनिधि शामिल हुए । जिन राष्ट्रीय यूनियनो ने इसमें भाग लिया, उनमे आयरन मोल्डर्स माइनर्स ऐण्ड माइन लेबरर्स, टाइपोग्राफर्स, जर्नीमैन टेलर्स, जर्नीमैन बेकर्स, फर्निचर वर्कर्स, मैटल वर्कर्स, ग्रेनाइट कटर्स, कारपेण्टर्स और सिगार मेकर्स शामिल थी । उनके कुल सदस्य लगभग १,५०,००० थे । अब प्रतिनिधियो का एकमात्र वास्ता यह रह गया कि जिस धन्धे का वे प्रतिनिधित्व करते है उसके हितों को वे बढाए और अच्छी तरह विचार-विमर्श के बाद उन्होने इस उद्देश्य के लिए एक नया सगठन बनाया और सेम्युअल गौम्पर्स को इसका पहला प्रधान चुना । इस प्रकार अन्त मे यह अमरीकी मजदूर सघ (अमेरिकन फेडरेशन आव लेबर) बना । इसके जन्म की तारीख बाद मे पीछे १८८१ मे धकेल दी गई जबकि फेडरेशन आव आर्गनाइज्ड ट्रेड्स ऐण्ड लेबर

यूनियन्स की स्थापना हुई थी। किन्तु यद्यपि ए० एफ० एल० ने अपने पूर्ववर्ती संगठन के कोष और कागज़ात को ले लिया था तो भी दोनो ग्रुप बिल्कुल भिन्न थे और अमरीकी मज़दूर सघ का इतिहास वस्तुत. १८८६ में प्रारम्भ हुआ।

अपने जन्म की परिस्थितियो के कारण नए सगठन का पहला सिद्धान्त यह रखा गया कि "हर धन्धे की स्वायत्तता का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाए।" राष्ट्रीय स्तर पर मामले निबटाने के लिए नियुक्त की गई कार्यकारी परिषद् को उन मामलो में जो सदस्य यूनियनो के अधिकार क्षेत्र मे आते थे, हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नही दिया गया। मजदूरो मे एकता शिक्षा और नैतिक प्रेरणा के जरिये स्थापित करने का निश्चय किया गया, केन्द्रीकृत नियत्रणो के जरिये नही जैसा कि नाइट्स आव लेबर किया करते थे। फिर भी कार्य-कारिणी परिषद् के महत्वपूर्ण काम थे। यह घटक यूनियनो के लिए चार्टर जारी करती थी, और दोहरे यूनियनवाद के खात्मे के लिए जिसे सारे मज़दूर आन्दोलन के लिए खतरा उत्पन्न करने वाला समझा गया, इसे अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी सब झगडे निबटाने का हक प्रदान किया गया। एक वित्तीय कोष की स्थापना के लिए सब सदस्य यूनियनो पर प्रति व्यक्ति टैक्स लगाया गया, जिससे कि हडताल और तालाबन्दी की अवस्थाओ मे ए०एफ०एल० ठोस सहायता दे सके और सब मजदूर सगठनो का परम्परागत ढग से एक विधि सम्बन्धी कार्यक्रम तैयार किया गया। अन्त मे मजदूर सम्बन्धी कानूनो को पास कराने मे और ज्यादा प्रभाव डालने के लिए कार्यकारिणी परिषद् के सामान्य अधिकार के मातहत नगर-सगठन और राज्य सघ दोनो का निर्माण किया गया।

ज्यादा जोर निश्चित रूप से आर्थिक और औद्योगिक कारवाई पर दिया गया। आगे चलकर ए०एफ०एल० को मालिको से मान्यता प्राप्त कराने के लिये राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय यूनियनो का समथन करना पडा, सामूहिक सौदे-बाजी के समझौते किए, और ऐसी स्थिति बनाए रखी, जिसमे अन्य उपाय विफल होने पर वे प्रभावशाली ढग से हडताल कर सकें। विधि सम्बन्धी कार्यक्रम को जिसमें पुराने फेडरेशन आव आर्गनाइज्ड ट्रेड्स ऐण्ड

लेबर यूनियन्स के अधिकाश उद्देश्य शामिल थे अपने पूर्ववर्ती की नीति को स्पष्ट ही अपर्याप्त मानते हुए चोट करने की इस बुनियादी नीति के मुकाबले गौण कर दिया गया। इसके अतिरिक्त ए०एफ०एल० ने शुरू से राजनीति में सीधे भाग न लेने और किसी एक दल का समर्थन न करने का दृढ निश्चय कर रखा था। इसने किसी के राजनीतिक स्वरूप की परवाह किए बिना मजदूरो के मित्रो को पुरस्कृत करने और उनके दुश्मनो को दण्डित करने के सिद्धान्त पर काम किया।

शुरू के वर्षों में अमरीकी मज़दूर सघ पूर्णत. मानो सेम्युअल गौम्पर्स ही था। उसके वफादार साथी थे किन्तु सगठन को जीवन और दिशा उसी ने प्रदान की। बाद मे उसने इस जमाने की बाबत लिखा : "काम ज्यादा, वेतन कम और सम्मान बहुत ही कम था किन्तु इन चीजो ने उसे हतोत्साह नहीं किया। सिगार मेकर्स द्वारा प्रदान किए गए १० फुट लम्बे और ८ फुट चौड़े एक कमरे में उसने अपना हैडक्वार्टर कायम किया, जिसमें एक किचन टेबल, कुर्सियो का काम देने वाले कुछ मूंढो और टमाटर की पेटियो के बनाए गए फाइल रखने के बक्स के अलावा और कोई फर्निचर नही था। इसी कमरे से उसने उत्साह, निष्ठा और अथक परिश्रम से, नए संगठन में प्राण फूंकने का बीडा उठाया और उसके इन्ही गुणो की बदौलत यह सगठन जीवित भी रह सका। वह सारे देश मे मज़दूर नेताओ को सदा अपने हाथ से असख्य चिट्ठियां लिखा करता था, अपने आन्दोलन का प्रचार करने के साधन के रूप मे कुछ समय तक "ट्रेड यूनियन ऐडवोकेट" का सम्पादन किया; यूनियन चार्टर प्रदान करता, फीस इकट्ठी करता और रोज-मर्रा का सब काम करता था, सम्मेलनों का आयोजन करता और भाषण देने तथा सगठन करने के लिए यात्राएँ किया करता था और शनै शनै किन्तु निश्चय पूर्वक उसने अमरीकी मजदूर सघ को एक विशुद्ध कागजी सगठन से उभार कर मजदूरो के अधिकारों का उग्र और शक्तिशाली चैम्पियन बना दिया। वह समझता था कि उसके जिम्मे एक पवित्र काम है और जबसे ए०एफ०एल० अस्तित्व मे आया, तभी से ३८ वर्ष बाद अपनी मृत्यु तक यही उसका समस्त जीवन रहा।

संघ का दीर्घकालीन सघर्ष यद्यपि उद्योग की ताकतो के साथ होना था, तो भी प्रारम्भिक वर्षों मे नाइट्स आव लेबर के साथ उसके झगड़े चलते

रहे। १८८० की दशाब्दि के अन्त में और १८९० की दशाब्दि के प्रारम्भ में दोनों संगठनों में मेल कराने की और कोशिश की गई किन्तु ये भी बिल्कुल असफल रहीं। स्थिति करीब-करीब वैसी हो गई, जैसी आधी सदी बाद तब पैदा हुई जब स्वयं अमरीकी मज़दूर संघ को विद्रोही यूनियनों ने, जिन्होंने एक औद्योगिक संगठनों की कांग्रेस बना ली थी, चुनौती दी। सिद्धान्त दाव पर लगे हुए थे किन्तु प्रतिस्पर्धी नेताओं की प्रतिद्वन्द्विता और महत्वाकाङ्क्षाओं के आगे वे प्राय. महत्त्वहीन हो जाते थे।

पाउडरली कालान्तर मे राष्ट्रीय यूनियनों से पूर्णत. घृणा करने लगा। १८८९ में उसने एक साथी को लिखा : "मैं तुम से स्पष्ट कहूंगा कि राष्ट्रीय सभाएं, जितनी जल्दी खत्म हो जाएं मुझे उसकी चिन्ता नहीं है। वे औरों को हमारे पास आने से रोकती हैं और मैं उन्हें यह सलाह देने का लोभ संवरण नहीं कर सकता कि वे मैदान मे आकर अकेले काम करके दिखाएं और तब तुम देखोगे कि किस प्रकार वे कुछ थोड़े से व्यक्तियों के लाभ के लिए, जो किसी न किसी चीज़ में अगुआ बनना चाहते हैं, सगठन के चक्र को पीछे घुमाने मे भी नहीं चूकेंगे। "नाइट्स आव लेबर, उनके उद्देश्य और आकाङ्क्षाओं के बारे मे सेम्युअल गौम्पर्स भी कम व्यगबाण नही छोड़ता था। १८९७ में उसने कहा. "नाइट्स आव लेबर के साथ एकता की बात करना मूर्खता है। वे ट्रेड यूनियनों के उतने ही बड़े शत्रु है, जितना कोई मालिक हो सकता है, बल्कि उनमें बदले की भावना ज्यादा है। उन्हें युग करने या उनके साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार तक करने से कोई लाभ नहीं।" इन परिस्थितियों में मज़दूरों की एकता की सम्भावना लुप्त हो गई और धीरे-धीरे एक तरफ़ नाइट्स की शक्ति कम होती गई और दूसरी ओर अमरीकी मज़दूर संघ जोर पकड़ता गया। संघ की तरक्की चात्मकारिक नहीं रही। १॥ लाख की सदस्यता ६ वर्ष बाद सिर्फ २॥ लाख पर पहुँच सकी। इन वर्षों में सब यूनियनों पर उद्योग के उग्र प्रत्याक्रमण ने सरकार व अदालतों के आमतौर से दमनात्मक रवैये ने और अन्त में १८९३ की मन्दी के कठिन समय ने किसी भी संगठन को अपनी शक्ति बनाए रखना बहुत मुश्किल कर दिया, उसके विकास और विस्तार की तो बात ही अलग है। किन्तु गौम्पर्स अपने कार्य में दृढ़ता से लगा रहा उसने संघ को उसके तात्कालिक और व्यावहारिक

उद्देश्यो से भटकने नही दिया और १८९३ के वार्षिक सम्मेलन मे, जो कुछ अब तक हासिल किया जा चुका था, उस पर वह गर्व अनुभव कर सका।

एकत्रित प्रतिनिधियो से उसने कहा कि "पिछले प्रत्येक औद्योगिक सकट मे ट्रेड यूनियने जहा वस्तुत: कुचल दी जाती थी और उनका अस्तित्व खत्म हो जाता था, वहा मौजूदा यूनियनो ने न केवल अपनी प्रतिरोध की शक्ति, बल्कि स्थिरता और स्थायित्व का भी प्रदर्शन कर दिया है।

नए यूनियनवाद के व्यावहारिक पहलुओ को अग्रसर करने मे ए०एफ०एल० के महत्व से यह तथ्य दरगुजर नही कर दिया जाना चाहिए कि १९ वी सदी की समाप्ति और बाद के वर्षो दोनो कालो मे पुनरुज्जीवित मजदूर आन्दोलन का वास्तविक आधार राष्ट्रीय यूनियने ही रही। वे ए०एफ०एल० के बिना रह सकती थी किन्तु उनके बिना ए०एफ०एल० का कोई मतलब नही था। उनकी स्वायत्तता पूरी थी और स्थानीय यूनियनो पर जिनसे वस्तुत मजदूरो की ताकत बनती थी, उन्ही का नियंत्रण था। उनका काम स्थानीय यूनियनो की गतिविधियो का दिशादर्शन, जो व्यवसाय या उद्योग उनके अधिकार क्षेत्र में आता है, उसके जरिये यूनियन सगठन का विस्तार करना; सामूहिक सौदे-बाजी और हड़तालो मे (जिनके लिए आम रक्षाकोष के निमित्त प्रतिव्यक्ति टैक्स लगाया जाता था) यथा सम्भव सहायता देना और ए०एफ०एल० के अधिक सामान्य कार्यक्रम में हिस्सा लेना था।

समय के साथ-साथ मूल शिल्पिक यूनियनो ने अपना अधिकार क्षेत्र काफी बढा लिया और उनके नाम प्राय इस विस्तार के इतिहास को प्रतिक्षिप्त करते है। इसके बहुत से उदाहरण दिए जा सकते है किन्तु इस रुझान का प्रतीक एक उदाहरण "इण्टरनेशनल ऐसोसियेशन आव मार्बल, स्लेट ऐण्ड स्टोन पालिशर्स रबर्स ऐण्ड साय्यर्स, टाइल ऐण्ड मार्बल सेटर्स हेल्पर्स ऐण्ड टेराजो हेल्पर्स" नाम है। नए तौर तरीको और आर्थिक परिवर्तनो के कारण अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी समस्याओ का निवटारा ए०एफ०एल० के लिए अपनी स्थापना के शुरू से ही एक बड़ी समस्या बन गया।

यूनियनो का एक महत्वपूर्ण ग्रुप जो ए०एफ०एल० से सम्बद्ध नही हुआ, रेलवे ब्रदरहुडो का था। रेल कर्मचारियो का संगठन एक निराले ही ढग पर

हुआ था और शिल्पिक रूप रेखा पर आधारित होने पर भी कुछ विशिष्ट कारणो से अन्य मामलो मे दूसरे कर्मचारियो के सगठनो से भिन्न था। लोकोमोटिव इजीनियर्स का सगठन काफी पहले १८६३ में, उसके ५ वर्ष बाद रेलवे कण्डक्टर्स का, १८७३ मे ट्रेनमेन का और उसके १० वर्ष बाद फायरमैन का सगठन बना। यद्यपि इन्होने १८७७ की हड़ताल में भाग लिया था, तो भी बाद के वर्षो मे ये चारो ब्रदरहुड ज्यादा कजरवेटिव हो गए और अपने सदस्यो के खतरो से भरे काम के कारण उनके यूनियन कार्यक्रमो मे बीमा व कल्याण की अन्य बातो का विशेष महत्व रहा। अन्य रेल कर्मचारियो का स्थायी सगठन ज्यादा धीरे-धीरे विकसित हुआ। १८९० के दशक मे यूजीन वी० डेब्स द्वारा सब अमरीकी रेल कर्मचारियो की एक यूनियन बनाने की कोशिश किए जाने के बाद, जिसकी चर्चा हम आगे चल कर करेंगे, वर्कशाप कर्मचारियो, स्विचमैनो, यार्डमास्टरो, सिगनलमैनो, तार भेजने वालो तथा रेलवे और स्टीमशिप क्लर्कों की अलग-अलग यूनियनें बनाई गई और उन्हें चारो ब्रदरहुडो के स्वतन्त्र रहने के बावजूद ए०एफ०एल० से सम्बद्ध कर दिया गया।

अन्तर्राज्यीय यूनियनो द्वारा १८९० की दशाब्दि की मन्दी को झेल लेने का यह मतलब नही कि मजदूर जो चाहते थे, प्राप्त कर लेते थे, और बहुत शक्तिशाली यूनियनें मालिको के साथ समानता के आधार पर ठहर पाती थी। इस दशक में मजदूरो के वेतन कम और काम के घण्टे ज्यादा रहे और अदक्ष कर्मचारी तो मुश्किल से ही अपना गुजारा कर पाते थे। मजदूरो को अब भी सस्ती से सस्ती कीमत पर खरीदा जाने वाला माल समझा जाता था और उनका संगठित होने और सामूहिक सौदे-बाजी का अधिकार स्वीकार नही किया गया था। उद्योग चूंकि काली सूची मे नाम दर्ज करके सौगन्ध खिलाकर, तथा हड़ताल भंजको और पिकरटन जासूसो के जरिये यूनियनो की ताकत को तोड देने के लिए प्रयत्नशील था और हडतालो का सामना करने के लिये कानून व व्यवस्था के संरक्षण के नाम पर राज्य की मिलीशिया और सघीय सेनाओ को बुला सकता था इस लिए मजदूर समझते थे कि वे अब भी अत्यधिक विपरीत परिस्थियों से जूझ रहे है।

अमरीकी मजदूर संघ का ओज भविष्य के लिए आशा बंधाता था। किन्तु गौम्पर्स के आशावाद के बावजूद १८९० के दशक की लगातार मन्दी ने

राष्ट्र के मजदूरो पर बहुत बुरा असर डाला और इन वर्षों के संघर्ष में उन्हें कुछ बहुत निर्णयात्मक पराजयों का सामना करना पडा।

—:o:—

१०: होमस्टेड और पुलमैन

१८९० के दशक में मज़दूर आन्दोलन के इतिहास की खास बात यद्यपि यह रही कि अमरीकी मज़दूर सघ ने नाइट्स आव लेबर पर विजय पाई और नए यूनियनवाद की शक्ति का प्रदर्शन किया तो भी इस दशाब्दि की खूबी इसकी महान् हडतालें थी। इससे पहले कभी भी मजदूर और पूँजी में ऐसा योजनाबद्ध निजी युद्ध नही हुआ जैसा १८९२ में होमस्टेड में हुआ और न ही आम जनता औद्योगिक सघर्ष के खतरो पर पहले कभी इतनी भयभीत हुई थी जितनी दो वर्ष बाद पुलमैन की हडताल के दौरान हुई। ये दोनो हडताले १८७७ की रेल कर्मचारियों की हडताल से मुख्यत. इस बात मे भिन्न थी कि ये हडतालें विद्रोह की आकस्मिक अभिव्यक्ति के बजाय शक्तिशाली यूनियनो द्वारा की गई थी किन्तु इनमें हिंसा और रक्तपात पहले जैसा ही हुआ। १८९० के दशक मे मजदूर समस्या की गम्भीरता को इससे ज्यादा जोरदार ढग से व्यक्त नही किया जा सकता था।

इसके अलावा इन हड़तालो मे औद्योगिक श्रमिको मे व्याप्त जिस सामान्य असन्तोष का इजहार हुआ उसकी १८९० की दशाब्दि की मन्दी ज्यादा गभीर हो जाने पर राजनीतिक प्रतिक्रियाएँ हुई और पौपुलिज्म के उत्थान के रूप में शहरो की अशान्ति किसानो के विद्रोह से मिल गई। मध्य-पश्चिम के किसानो और पूर्व के मजदूरो में गठबन्धन मजबूत न हो सकने का आशिक कारण यह था कि ए० एफ० एल० सीधी राजनीतिक हरकतो में भाग नही लेना चाहता था किन्तु १८९६ में कजरवेटिव लोगो में यह भय छा गया था कि चुनाव मे पौपुलिस्टों के क्रांतिकारी सिद्धान्तो की जीत मे पूँजीवादी प्रणाली का विध्वंस हो जाएगा।

६ जुलाई, १८९२ की भोर में दो नावें शनै-शनै. होमस्टेड, पेंसिलवेनिया की तरफ मोनोगा हेला नदी के ऊपरी भाग की ओर खीच कर लाई जा रही थीं। कारनेगी इस्पात कम्पनी के स्थानीय कारखाने में हड़ताल थी। होमस्टेड

के दक्ष मजदूरो ने, जो ऐमलगमेटेड ऐसोसियेशन आव आयरन, स्टील ऐण्ड टिन वर्क्स के सदस्य थे, वेतनो मे नई कटौतियो को स्वीकार करने से इकार कर दिया था और बाकी मजदूर उनकी पीठ पर थे। इस पर कम्पनी के जनरल मैनेजर हेनरी क्लेफ्रिक ने जो कठोर हृदय और अत्यन्त मजदूर विरोधी था, तुरन्त ही सारा कारखाना बन्द कर दिया और यूनियन के साथ आगे कोई बातचीत करने से इकार कर दिया। कम्पनी की सम्पत्ति की रक्षा के लिए विशेष डिप्टी शेरिफ तैनात किए गए और कारखाने के चारो ओर तख्तों का बाड़ा लगा दिया गया, जिनके ऊपर कँटीले तार लगा दिए गए। किन्तु तालाबन्दी से बाहर खदेडे गए मजदूरो ने उन्हे यह समझकर शहर से बाहर भगा दिया कि ये तैयारियाँ हड़तालभंजको के इस्तेमाल की द्योतक है। यह फ्रिक के अधिकार को चुनौती थी जिसे उसने खुशी से स्वीकार किया। उसको ऐमलगमेटेड को सदा के लिए कुचल देने का मौका मिला था। मोनोगाहेला नदी के ऊपर जो दो नावे खीच कर लाई जा रही थी उनमें विंचेस्टर रायफलो से लैस ३०० पिकरटन जासूस थे।

इस्पात कम्पनी की यह निजी सेना जैसे ही होमस्टेड के किनारे आकर उतरने की तैयारी करने लगी वैसे ही उन नावो तथा तट के बीचे एकदम गोलियाँ चलने लगी। मजदूरो ने इस्पात की छड़ो की ओट में मोर्चे सम्हाल लिए थे और जब पिकरटनो ने कारखाने पर कब्जा करने की कोशिश की तो नदी के साथ जूझते हुए सग्राम में उन्हें पीछे धकेल दिया गया। उस दिन सारे समय, प्रात: ४ बजे से लेकर तीसरे पहर के बाद ५ बजे तक गोलियाँ चलती रही। हडतालियो ने रेलवे के सलीपरो के ढेर की आड मे एक तोप लगा दी और नौकाओ पर सीधी गोलाबारी की। जब वे उन्हे नही डुबा सके तो उन्होने तेल के पीपे नदी में उड़ेल दिए और तेल मे आग लगा दी। पिकरटन, जिनके तीन आदमी मारे जा चुके थे और इससे बहुत ज्यादा घायल हो गए थे, फँस गए। जो टग उन्हे नदी की धार पर खीच कर लाया था, वह भी उन्हे छोड गया। अब वे असहाय होकर नावो में भीड लगाए हुए थे और ये नावे किनारे से बहुत दूर थी। अत मे उन्होने सफेद झण्डी दिखा दी और आत्मसमर्पण करना स्वीकार कर लिया। शहर से सुरक्षित बाहर निकालने की गारण्टी के बदले में उन्होने अपने हथियार और गोलाबारूद सौंपना स्वीकार कर लिया।

किन्तु होमस्टेड में, जहा ७ व्यक्ति मारे गये थे, उत्तेजना बहुत फैल रही थी, जिससे आसानी से व्यवस्था पुन. स्थापित नही हो सकी। जब पिकरटन किनारे पर उतरे तो इन पर फिर हमला किया गया और पिट्सबर्ग के लिए ट्रेन पर सवार होने से पूर्व उन्हे पत्थरो और डण्डो से लैस क्रुद्ध स्त्री-पुरुषो की एक भीड को चीरकर पार आना पडा। इस प्रकार जब होमस्टेड के मज़दूर पहले दौर मे विजयी होकर कम्पनी के अगले कदम की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब इस छोटे से नगर पर एक बेचैनीपूर्ण शान्ति छा गई।

अगली घटना ६ दिन बाद घटी। तब १२ जुलाई को राज्य की मिलीशिया ने, जिसकी तादाद फ्रिक की अपील पर पेंसिलवेनिया के गवर्नर ने ८००० कर दी थी, मार्शला के मातहत होमस्टैड को अपने कब्जे मे लेने के लिए कूच किया। इस प्रकार का सरक्षण प्राप्त करके कारनेगी कम्पनी ने दूसरे कर्मचारी काम पर बुलाने शुरू कर दिए—जिनके बारे मे तालाबन्दी से वाहर निकाले हुए कर्मचारी जानते थे कि उन्हें उनका काम सौपा जा रहा है—और पिकरटनो पर हमले के लिए हडतालियो के नेताओ के खिलाफ दगे और हत्याओ के आरोप लगाने शुरू कर दिये। मिलीशिया के सरक्षण मे कारखाना फिर चालू किया गया और गैर यूनियन व्यक्तियो को ऐमलगमेटेड के सदस्यो का काम दे दिया गया। जब नवम्बर मे हडताल अधिकृत रूप से वापस ली गई तब दो हज़ार हड़तालभजक लाए जा चुके थे और होमस्टैड के ४००० मूल-कर्मचारियो मे से सिर्फ ८०० को पुन· काम पर लिया गया।

शुरू के सघर्ष के बाद एक और हिंसात्मक काण्ड हुआ। २३ जुलाई को रूस मे पैदा हुआ हुआ एक अराजकतावादी अलेग्जेण्डर बर्कमैन, जिसका हड़तालियो से कोई सम्बन्ध नही था, किन्तु जो कार्नेगी कम्पनी द्वारा पिकर-टनो का इस्तेमाल किए जाने से बहुत क्रुद्ध था, पिट्सबर्ग में फ्रिक के दफ्तर मे जबर्दस्ती घुस आया और उसकी हत्या करने की कोशिश की। फ्रिक के यद्यपि गोली भी लगी और छुरा भी लगा तो भी वह साघातिक रूप से घायल नही हुआ और हमलावर पकडा गया। हमले की योजना बर्कमैन और उसकी महिला साथिन ऐम्मा गोल्डमैन ने मिलकर बनाई थी। ऐम्मा भी "काम के जरिये प्रचार" के सिद्धान्त की कम उत्साही वकील नही थी और जैसा कि बाद में उसने अपनी आत्मकथा में बताया कि सिर्फ धन की कमी के कारण ही

वह बर्कमैन के साथ उसके मिशन पर नही जा सकी। बर्कमैन को हत्या के इरादे से हमला करने के अभियोग में २१ वर्ष की जेल की सजा मिली और १३ वर्ष बाद जेल से छूटने पर उसे ऐम्मा गोल्डमैन के साथ रूस निर्वासित कर दिया गया।

इन खतरनाक घटनाओं ने देश को १८८० के दशक की महान उथल-पुथलो से या एक दशाब्दि पूर्व की रेल हडताल से भी अधिक क्षुब्ध कर दिया। क्योकि होमस्टेड की घटना असगठित मजदूरो का आकस्मिक विद्रोह नही था, बल्कि यह एक बहुत आधुनिक कम्पनी तथा देश मे उस वक्त की सब से शक्तिशाली यूनियन के बीच एक युद्ध था। प्रत्येक विवादग्रस्त पक्ष ने कानून अपने हाथ मे ले लिया था। शिकागो ट्रिब्यून ने ७ जुलाई को अपने सारे मुख-पृष्ठ पर इस युद्ध का वर्णन छापते हुए लिखा : "यह एक ऐसा सग्राम था, जिसमे इतनी रक्त-पिपासा और साहस का प्रदर्शन किया गया, जितना किसी वास्तविक युद्ध में भी नही किया जाता।"

होमस्टेड की हड़ताल से पहले तक कारनेगी कम्पनी और यूनियन के बीच सम्बन्ध अच्छे थे और दक्ष श्रमिको के लिए ३ वर्ष का एक करार करके काम की हालतें निश्चित कर दी गई थी। इसमे इस्पात की छडो के मूल्य के अनुसार घटते-बढते वेतन दर की व्यवस्था की गई थी। कारनेगी स्वय को यूनियनो का पक्षपाती कहा करता था। कुछ वर्ष पूर्व 'फोरम' में उसने लिखा था कि मज़दूरो का अपना संगठन बनाने का अधिकार निर्माताओ के अपना संगठन बनाने से कम पवित्र नही है और उन्होने हड़ताल भंजको के उपयोग से जिन कर्मचारियो का रोजगार खतरे मे पड़ जाता था, उनके प्रतिवास्तविक सहानुभूति प्रदर्शित की। उन्होने लिखा : "जीवन की आवश्यक वस्तुओ के लिए अपनी दैनिक मजदूरी पर निर्भर करने वाले व्यक्ति से यह आशा करना कि दूसरे व्यक्ति द्वारा उसका स्थान लिए जाने पर वह चुपचाप खडा देखता रहेगा, उससे बहुत अधिक आशा करना है।" किन्तु १८९२ मे यूनियन के साथ जब पुराना करार खत्म हुआ तो कारनेगी इग्लैण्ड मे था और बातचीत पूर्णत: फ्रिक के साथ मे थी।

अगर कारनेगी घटनास्थल पर मौजूद होता तो संभवत. घटना चक्र कुछ भिन्न ही होता। तो भी यह बात सही है कि कारनेगी ने फ्रिक को खुली छूट

दे दी थी और यह नही माना जा सकता कि उसे यह पता न होगा कि उसके जनरल मैनेजर का रवैया मज़दूर-विरोधी है। वस्तुत हड़ताल के दौरान उसने एक रिपोर्टर से कहा "कम्पनी जिस तरह मामले को सुलझा रही है, उसे मेरा पूर्ण समर्थन प्राप्त है।" और ब्रिटिश राजनीतिज्ञ ग्लैडस्टोन को एक पत्र मे उसने लिखा कि उसकी फर्म ने मजदूरो के सामने उदार शर्तें रखी हैं और "वह इतनी दूर तक गई है, जितनी मै चाह सकता था।" तो भी इसी पत्र मे उसने लिखा कि अपनी शर्ते मनवाने के लिए होमस्टेड कारखाने को नए आदमियो से चलवाने का फ्रिक ने गलत कदम उठाया है। ग्लैडस्टोन को उसने लिखा · "इससे मुझे को कष्ट हुआ है वह दिन पर दिन बढ रहा है। कारखाना मानव रक्त की एक बूंद जितना भी कीमती नही है। मै चाहता हू कि सब डुबा दिया जाना तो अच्छा होता।"

तथापि नियत्रण फ्रिक के हाथ मे था और उसने हडताल भजक और पिकरटन गार्ड, जिनकी व्यवस्था वेतन की बातचीत टूट जाने से पहले ही कर ली गई थी, बुलाए ही इसलिए गए थे कि यूनियन को कुचल दिया जाए। और वह कामयाब हो गया। होमस्टेड मे तो उसका खात्मा ही हो गया और पिट्सबर्ग क्षेत्र की अन्य इस्पात मिलो मे, जहा मजदूरो द्वारा सहानुभूति में हड़ताल किये जाने पर मालिको ने तुरन्त बदला लिया था, यह यूनियन बहुत कमजोर हो गई। एमलगमेटेड ने इस्पात कर्मचारियो को सगठित करने की पुन. कोशिश की किन्तु कारनेगी कम्पनी और उसकी उत्तराधिकारी युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के निरन्तर विरोध के सामने उसकी शक्ति क्षीण ही होती गई। इसके ४० वर्ष बाद तक कोई प्रभावशाली इस्पात यूनियन नहीं बन सकी, जबकि १९३० के दशक मे औद्योगिक यूनियनवाद के पुनरुत्थान के साथ इस्पात कर्मचारियो की सगठन समिति का निर्माण हुआ।

ऐमलगमेटेड अमरीकी मज़दूर सघ के साथ सम्बद्ध था। गौम्पर्स ने हडतालियो के साथ बडी सहानुभूति दिखलाई और जिन पर पिकरटनो पर हमला करने का अभियोग था उनके बचाव के लिए धन सग्रह मे मदद की। किन्तु फेडरेशन कोई प्रभावशाली सहायता नही दे सका और गौम्पर्स की गर्वपूर्ण उक्तियो से मज़दूरो को क्या सन्तोष मिल सकता था।

कहा जाता है कि 'पिट्सबर्ग लीडर' मे उसने लिखा 'होमटेस्ड के

इस्पात कर्मचारियो ! अगर कोई गुलाब खिल रहा है तो यह तुम्हारी कृति है, अगर ससार में कोई ऐसी चमकीली चीज है जो होमस्टेड को कीमती बनाती है तो यह तुम्हारी कृति है। तुमने इस चामत्कारिक तानाशाह के आगे सिर झुकाने से इन्कार कर दिया और इसका उसने पहला जवाब यह दिया कि तुम्हें अपने सामने झुकने को मजबूर करने के लिए और अन्ततोगत्वा तुम्हे अपने शांतिपूर्ण घरो से खदेडने के लिये इस शान्तिपूर्ण नगर में भाडे के टट्टू ले आया। मुझे नही मालूम कि ६ जुलाई के उस स्मरणीय दिवस की प्रातः पहली गोली किसने चलाई किन्तु मै यह जानता हूँ कि अमरीकी जनता का हृदय होमस्टेड के बहादुर आदमियों के साथ एकता और सहानुभूति से स्पन्दित हो रहा था ! मै शाति का आदमी हूँ और शाति से प्रेम करता हूँ किन्तु मै उस महान व्यक्ति पैट्रिक हेनरी के समान हूँ, मै एक अमरीकी नागरिक की तरह पुकारता हूँ 'मुझे आजादी दो या मौत'।"

होमस्टेड मजदूर आन्दोलन के इतिहास मजदूरो के अधिकारो के लिए लडे गए एक महान् संग्राम के रूप में विख्यात हुआ और उसकी तत्काल राष्ट्रव्यापी प्रतिक्रिया हुई। इस प्रकार के औद्योगिक सग्राम का राष्ट्र के लिए क्या तात्पर्य है, इस विषय पर काग्रेस मे उत्तेजित विचार विमर्श हुआ। इलिनौयस के सेनेटर पामर ने कहा कि पिंकरटन सेना नियन्त्रित सेना की ही तरह एक विशिष्ट सेना बन गई है, मध्ययुग के सरदारो की तरह इस सेना के प्रधान सेनापति के पास एक सेना रहती है, जिसे इच्छानुसार बढ़ाया जा सकता है और जो उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहती है जो उन्हें वेतन दे सके।" और उसने कहा कि अपने रोजगार और घरो की रक्षा करने के लिए मज़दूरो को इनके आक्रमण का प्रतिरोध करने का अधिकार है। कारनेगी कम्पनी जैसे कार्पोरेशनो का उल्लेख करते हुए उसने आगे कहा "इन सम्पत्तियो के स्वामियो को भविष्य मे ऐसा समझा जाना चाहिए कि वे सम्पत्ति के स्वामी तो है किन्तु उन लोगो के तत्सम्बन्धी अधिकारो के मातहत जिनकी सेवाओ के बिना वह सम्पत्ति बिल्कुल निर्मूल्य है।"

किन्तु मजदूरो के क्षेत्र के वाहर इस प्रकार के प्रगतिशील विचारो का कोई समर्थक नही था। जो राय प्रकट की जाती थी उनमे से वहुत सी राजनीतिक दृष्टि मे प्रकट की जाती थी। डैमोक्रैटिक अखवारो ने जो

सरक्षणात्मक तटकर के विरुद्ध थे, इस अवसर का लाभ उठाकर यह दिखाने के लिए प्रयत्नशील थी कि अमरीकी मजदूरों के वेतनो की सुरक्षा के नाम पर ऊचे तटकर लगाने का दावा पेश करते हुए भी इस्पात उद्योग मजदूरिया घटा रहा है और अपने कर्मचारियो का शोषण कर रहा है। उन्होने पिंकरटन भडैतो के उपयोग की निन्दा की और तालाबन्दी के कारण बाहर निकाले हुए मजदूरो से सहानुभूति प्रकट की। कुछ रिपब्लिकन अखबारो ने तटकर का मामला उठाये जाने पर नाराज होकर डैमोक्रैटिक पार्टी के अभियोगो का खण्डन करने के लिए कारनेगी कम्पनी से अधिक नरम रुख अपनाने का अनुरोध किया। किन्तु सामान्यत· प्रेस ने यह रवैया अख्तियार किया कि यद्यपि होमस्टेड के कर्मचारी उनको दिए जाने वाले वेतनो पर काम करने के लिए तैयार नही है तो भी दूसरो को उस वेतन पर काम करने से रोकने का उन्हें कोई हक नही है। "इण्डिपेण्डेण्ट" ने कहा : "लोग जब यह कहते है कि होमस्टेड में मजदूरो ने ठीक किया तो वे अराजकतावादियो या पागलो की तरह बात करते है" इस्पात कम्पनी जिस किसी को काम पर लगाना चाहे उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करने के उसके अधिकार को स्वीकार किया गया।

'क्लीवलैण्ड लीडर' ने लिखा : "अगर सभ्यता और सरकार नाम की कोई चीज है तो हर आदमी का यह अधिकार कि वह जिसके लिए चाहे काम करे, सुरक्षित रखा जाना चाहिए और रखा जाएगा। नार्थ अमेरिकन रिव्यू में एक लेख मे जार्ज टिकनर कर्टिस ने इस बारे मे और आगे कहा : "कानून बनाने के अधिकार का पहला कर्त्तव्य मजदूर को अपनी जमात के अत्याचारो से मुक्त कराना है। व्यक्तिगत मज़दूर को अपनी आजादी अपने साथियो के नियन्त्रण में सौप कर अपनी नैतिक आत्महत्या नही करने देनी चाहिए।" मजदूर किन शर्तो पर व्यक्तिश· अपनी सेवाएँ बेच सकता है, इसका निर्णय करने के भ्रामक अधिकार की रक्षा के लिए सामूहिक सौदेबाजी के निमित्त मजदूर के दूसरो के साथ मिलने का अधिकार मंजूर नही किया गया। कजरवेटिव मालिको के मज़दूर-विरोधी रवैये को इससे अधिक स्पष्ट रूप मे व्यक्त नही किया जा सकता।

इन अन्धकारपूर्ण दिनो मे, जब नए उद्योगवाद की ताकतें मज़दूरों के

अपना संगठन बनाने और अपने अधिकारो की रक्षा करने के अधिकार को रौंद रही थी, अन्य अनेक हिंसात्मक हड़ताले हुईं। कोवूर डि एलीन (इदाहो) मे धातु-खनिको ने, बफैली (न्यूयार्क) मे स्विचमैनो ने, और टेनेसी में कोयला-खनिको ने अपने मालिको को चुनौती देते हुए हड़ताल कर दी और हर मामले मे उनकी हड़ताल राज्य की मिलीशिया के हस्तक्षेप से जबर्दस्ती भग कर दी गई। और जब मन्दी मनहूसियत के साथ घर कर के बैठ गई और बेकारो की फौज बढ़ कर ३० लाख हो गई तब श्रम-सम्बन्धी झगड़े अपने चरम शिखर पर जा पहुँचे, जिनमें १८८६ की हड़तालो से भी अधिक कोई ७॥ लाख मजदूरो ने भाग लिया। किन्तु इन सब मे से १८९४ की पुलमैन हडताल सबसे प्रमुख थी।

पुलमैन पैलेस कार कम्पनी के कर्मचारी एक मायने में अन्य सब औद्योगिक मजदूरो से भिन्न थे उन्हें एक माडल टाउन (आदर्शनगर) में रहने का सौभाग्य प्राप्त था। कम्पनी के मुखिया जार्ज एम-पुलमैन ने अपने कर्मचारियो के लिए एक बस्ती बसाई थी जिसमें एक चौराहे के इर्द-गिर्द ईंटो के साफ-सुथरे मकान थे, जहा चमकीले फूल बिछे थे तो कही हरा-भरा घास का मैदान। सारी बस्ती मे वृक्षो की छाया थी, जगह-जगह पार्क बने हुए थे, पानी के सुन्दर फव्वारे थे और जहाँ-तहाँ सुन्दर बाग-बगीचे लगाए हुए थे।" कम्पनी के अखबार के उत्साहपूर्ण शब्दो मे "पुलमैन संक्षेप मे ऐसा नगर था जहां से हर कोई भद्दी, बेमेल और हतोत्साह करने वाली चीज हटा दी गई है और आत्मसम्मान की भावना पैदा करने वाली हर चीज मुहैया की गई है।"

किन्तु जीवन की ये सुखद चीजें पुलमैन में क्या वस्तुत: "इतनी उदारता से मुहैया की गई थी ?" कर्मचारियो के पास इसके सिवा कोई चारा ही न था कि वे इस सामन्ती साम्राज्य में रहे, अपने मकान या फ्लैट कम्पनी से किराये पर लें, अपनी जरूरत का पानी और गैस कम्पनी से खरीदे, कूड़े की सफाई तथा हर दिन सड़कों पर पानी डालने की सेवाओ का खर्चा दे, कम्पनी के स्टोर से सामान खरीदें और कम्पनी के पुस्तकालय को चन्दा देकर पढने के लिए पुस्तकें ले। इस आदर्श नगर मे एक फ्लैट का किराया, जिसमे कोई नहाने का टब नही होता था और ५ परिवारो के बीच पानी का एक नल होता था, पास की बस्तियो के अपेक्षा लगभग २५ प्रतिशत अधिक था।

सार्वजनिक उपयोग की सेवाओं के लिए भी अधिक शुल्क लिया जाता था।" "जहन्नुम मे जाए", स्पष्टवादी मार्क हान्ना ने अपने साथी उद्योगपति के सामन्ती साम्राज्य के बारे मे टीका करते हुए कहा 'आदर्श—जाओ पुलमैन मे जाकर रहो और देखो कि पुलमैन उन गरीब भूखो को पानी और गैस १० फी सदी ज्यादा शुल्क पर बेच कर कितना कमाता है ?"

१८९३ मे मन्दी आने पर पुलमैन भी संकट मे पड गई और अपने ५,८०० कर्मचारियों मे से ३००० की छटनी कर देने के बाद भी उसने बचे हुए कर्मचारियो के वेतनो मे २५ से ४० प्रतिशत तक कटौती कर दी और कम्पनी के क्वार्टरो के किराए मे तदनुरूप कमी नही की। परिणाम भयकर हुए। कम्पनी द्वारा अपनी सेवाओ का खर्चा काट लेने के बाद एक कर्मचारी को मुश्किल से ही ६ डालर प्रति सप्ताह मिल पाते थे। एक मामले मे तो ऐसा भी हुआ कि एक कर्मचारी का वेतन मकान का किराया काटे जाने के बाद सिर्फ २ सेण्ट बाकी रहा। पुलमैन मैथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च के पादरी डब्लू० एच० कारवारडीन ने बताया कि "उसने यह रकम कभी ली ही नही।" एक तरफ जब ऐसी घटनाएँ घट रही थी तब भी पुलमैन कम्पनी ने डिवीडेण्ट देना जारी रखा। कारोबार की हालत सुधरने पर भी, जब कि कम्पनी ने छँटनी किए हुए कर्मचारियो मे से २००० को काम पर वापस ले लिया, वेतनो मे कटौती को बहाल करने या किराये कम करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया।

अन्त मे मई, १८९४ मे कर्मचारियो की एक समिति ने अपनी शिकायतो पर कुछ विचार किए जाने की माग की। पुलमैन ने वेतनो के हेरफेर के प्रश्न पर विचार करने से इस आधार पर इन्कार कर दिया कि कम्पनी को अब भी नुकसान हो रहा है और उसने किराये कम करने से भी इन्कार कर दिया। उसने बडे हलकेपन से यह बात कही कि कार्य-नियोजक और जायदाद-मालिक के रूप मे कम्पनी के दो रूपों का परस्पर कोई सम्बन्ध नही है। इस आश्वासन के बावजूद कि शिकायत समिति के साथ कोई भेदभाव नही किया जाएगा। इस मुलाकात के लगभग तुरन्त बाद ही इसके तीन सदस्यो को तुर-फुरत बर्खास्त कर दिया गया।

कठिनाई और कष्ट के इस वर्ष मे पुलमैन के कर्मचारियो ने अमरीकी

लवे यूनियन की स्थानीय शाखाओ मे अपना व्यापक सगठन किया। अन्य सब
जदूर-सघो से स्वतन्त्र इस नए ऐसोसियेशन की स्थापना यूजीन वी० डेब्स
एक वर्ष पहले ही एक औद्योगिक यूनियन के रूप मे की गई थी, जिसमे
ों के सब गोरे कर्मचारी शामिल हो सकते थे। शिकायत समिति के तीन
स्यो की, जो अमेरिकन रेलवे यूनियन के भी सदस्य थे, बर्खास्तगी पर
मैन के स्थानीय संगठनो ने हडताल के लिए आह्वान किया। जब कम्पनी
सब कर्मचारियो को काम से हटाकर और कम्पनी को बन्द करके हड़ताल
जवाब दिया तो राष्ट्रीय सम्मेलन से सहायता के लिए अपील की गई।
वादग्रस्त मामलो को पंच-फैसले के सुपुर्द करने की कोशिश की गई। किन्तु
झौते की इन चेष्टाओं का जब पुलमैन ने यह कह कर कि "पच-फैसले के
ए कोई मुद्दा ही नही है", टका-सा जवाब दे दिया तो अमरीकी रेलवे यूनियन
सीधी कार्रवाई की तैयारी की। २१ जून को एक प्रस्ताव स्वीकार कर उसने
ा कि अगर पच-फैसले की बात ५ दिन के अन्दर-अन्दर स्वीकार नहीं की
तो उसके सदस्यो से कह दिया जाएगा कि वे पुलमैन की किसी कार को
ा न लगाएँ।

जब यह बहिष्कार अमल मे लाया गया जो कि न केवल पुलमैन कम्पनी
बारे मे, बल्कि उसकी कारो का प्रयोग करने वाली रेलो के लिए भी था,
तुरन्त ही शिकागो आने वाली २४ रेलो के प्रशासनिक मुखियाओ के एक
जनरल मैनेजर्स ऐसोसियेशन ने, जिसका करीब ४० हजार मील लम्बी रेल
पटरियो पर नियन्त्रण था, यूनियन की चुनौती तत्परता से स्वीकार कर
। इसने आदेश दिया कि जो कोई कर्मचारी पुलमैन की कार को रेलगाड़ी
अलग करे, उसे बर्खास्त कर दिया जाए। किन्तु अमरीकी रेलवे यूनियन
सदस्य इतनी जल्दी डरने वाले नही थे। जब कभी भी किसी व्यक्ति को
मैन की कार को हाथ न लगाने के अभियोग मे बर्खास्त किया जाता था
ी ट्रेन के सब चालक काम छोड देते थे। जुलाई के अन्त तक हडताल
नी फल गई कि मध्य-पश्चिम मे हर रेलवे पर उसका प्रभाव पड़ा और
ट्र की समस्त परिवहन प्रणाली पर गम्भीर सकट उपस्थित हो गया।

रेलवे-कर्मचारियो से एक मार्मिक अपील में डेब्स ने कहा . "इस संघर्ष
देश के उत्पादक-वर्ग और पैसे की ताकत के बीच मुकाबले का रूप अख्तयार

कर लिया है । हम इस टेक पर कायम है कि मज़दूरों को अपने श्रम के फल का एक उचित हिस्सा प्राप्त करने का हक है......" किन्तु कुछ क्षेत्रो मे जहाँ हड़तालियो से सहानुभूति प्रकट की गई, मार्क हान्ना ने पुन: पुलमैन द्वारा पंच-फैसले को अस्वीकार किए जाने पर निजी रूप से अपनी नापसन्दगी जाहिर की, वहाँ कंजरवेटिव प्रेस ने दृढ़ता से जनरल मैनेजर्स ऐसोसियेशन का समर्थन किया । शिकागो हैरल्ड ने कहा : "आवश्यकता इस बात की है कि हड़तालियो को हराया जाए और न्यूयार्क वर्ल्ड ने लिखा : "यह सरकार और समाज के विरुद्ध एक संग्राम है" ।

रेल कर्मचारियो के विद्रोह का नेतृत्व करने के कारण डेब्स रातों-रात राष्ट्र-भर मे विख्यात हो गया । अमरीकी रेलवे यूनियन को बने सिर्फ एक ही वर्ष हुआ था तो भी उसके चतुर और योग्य नेतृत्व मे उसके कोई १॥ लाख सदस्य बन चुके थे, जिन की सख्या चारो रेलवे ब्रदरहुडो से अधिक थी और जो क्षीण होते जाने वाले नाइट्स आव लेवर और शनै. शनै. उदीयमान अमरीकी मज़दूर संघ, दोनो का प्रतिद्वन्द्वी था । प्रबन्धक और यूनियनें दोनो ही इस बात से डरते थे कि अगर इसने हड़ताल में सफलता प्राप्त कर ली तो औद्योगिक यूनियनवाद का सिद्धान्त जीत जाएगा और भविष्य मे फिर ऐसी ही यूनियनें बना करेंगी ।

डेब्स फ्रासीसी अल्सेशियन आव्रजको की, जो टेरे हौटे (इण्डियाना) मे आकर बस गए थे, सन्तान था । उसके पिता यहा परचून की दूकान करते थे । १८५५ में जन्म लेकर १४ वर्ष की आयु में वह एक रेलवे यार्ड मे काम करने चला गया और १६ वर्ष की आयु मे एक इजीनियर बन गया । कुछ अरसे तक वह यार्ड का काम छोड़कर एक परचूनिया क्लर्क बन गया और राजनीतिक गोटें चलाना सीखने लगा किन्तु १८७८ में वह मज़दूर आन्दोलन में लौट आया और दो वर्ष बाद २५ वर्ष की आयु मे ब्रदरहुड आव लोकोमोटिव फायरमैन का राष्ट्रीय खंजाची-सचिव और लोकोमोटिव फायरमैन्स मैगजीन का सम्पादक चुना गया । यह ज्यादातर उसके प्रयत्नो का ही परिणाम था कि अगले १२ वर्षों मे यह यूनियन एक फलता फूलता और आर्थिक दृष्टि से सुदृढ संगठन बन गया ।

. किन्तु डेब्स को इस बात की अधिकाधिक चिन्ता रहने लगी कि ब्रदरहुड

किसी से मेल ही नही रखना चाहता और इसके सदस्यों और अन्य रेल कर्मचारियो में सहयोग का नितान्त अभाव है। उसका यह विश्वास था कि राष्ट्रीय रेलो पर सब कर्मचारियो का एक ही संगठन बनाकर ही मजदूरो के इस महत्वपूर्ण वर्ग के हितो को सफलतापूर्वक बढ़ाया जा सकता है। १८९२ में उसने ब्रदरहुड आव लोकोमोटिव फायरमेन मे अच्छे खासे वेतन वाला अपना पद छोड़ दिया और अकेले ही अमरीकी रेलवे यूनियन बनाने का बीडा उठाया।

डेब्स एक चतुर और व्यावहारिक संगठनकर्ता था। वह बडा ज़ोरदार और प्रभावशाली वक्ता था और जिस बात में विश्वास रखता था उसमें सर्वस्व होम देने के लिए तत्पर रहने वाला आदर्शवादी था। जीवन भर उसे आश्चर्य-जनक सम्मान और वफादारी प्राप्त रही। पुलमैन की हडताल के दौरान उसके बारे में इतनी बुरी-बुरी और कड़वी बातें कही गईं, जितनी शायद ही किसी को कही गयी हो। उसे मज़दूर तानाशाह, मुजरिम, अराजकतावादी, पागल और प्रलापी कहा गया किन्तु कुछ समय बाद उसके विचारो की निन्दा करने वाले भी उसका सम्मान करने लगे। १८९० की दशाब्दि में एक उग्र मज़दूर नेता के रूप में या बाद में अमरीकी समाजवाद के एक प्रवक्ता के रूप में उसकी अविचल और ईमानदारी से इकार नही किया जा सकता। हमारे राष्ट्रीय जीवन मे अन्य सघर्षकारी अवाम के साथ अन्य कोई व्यक्ति इतना घुलमिल कर नही रहा और न ही कोई शोषितो का उससे ज्यादा दृढ सरक्षक रहा।

डेब्स ने एक बार अपने बहुधा उद्धृत वक्तव्य में कहा "जब तक कोई निचली श्रेणी है तब तक मेरा स्थान उसी में है। जब तक कोई मुजरिम तत्व मौजूद है, तब तक मै भी उसका एक हिस्सा हूं और जब तक कोई भी आत्मा जेल मे बन्द है तब तक मै आजाद नही हूं।"

डेब्स लम्बा और दुबला था, पुलमैन हडताल के समय ३९ वर्ष की आयु मे भी करीब-करीब गंजा हो गया था; ऊँचे माथे और निष्कपट आखों वाले डेब्स के तौर-तरीके शान्त और सरल थे। उसमे कोई ऐसी चीज थी जो न केवल विश्वास उत्पन्न करती थी बल्कि प्रेम पैदा करती थी। क्लेरेंस डैरो ने लिखा "शायद किसी समय कही, डेब्स से ज्यादा दयालु, भद्र और उदार

आदमी रहा हो. किन्तु मुझे उसका पता नही।"

डेब्स उस हड़ताल के पक्ष में नही था जो पुलमैन के कर्मचारियो की अपील पर अमरीकी रेलवे यूनियन पर लाद दी गई थी। यद्यपि इस यूनियन ने ग्रेट नार्दर्न रेलवे पर एक हडताल में आश्चर्यजनक विजय प्राप्त की थी तो भी वह जानता था कि उसका युवासंगठन अभी इतना ताकतवर नही है कि वह सयुक्त रेलवे कार्पोरेशनो से इतनी बडी टक्कर ले सके। किन्तु जब पुलमैन ने पच-फैसले की बात मानने से इन्कार कर दिया तब उसने महसूस किया कि अगर यूनियन हडताल से अलग रही तो यह पुलमैन के कर्मचारियो को धोखा देना होगा। उनका समर्थन करने के लिए बाध्य होकर भी डेब्स ने नरमी और सयम की सलाह दी। उसने रेल कर्मचारियो को हिदायत की कि वे सर्वथा शान्त रहें, रेलवे की सम्पति को कोई नुकसान न पहुँचाए और हडताल के पहले दौर में उसके इन आदेशो का सख्ती से पालन किया गया।

किन्तु जनरल मैनेजर्स ऐसोसियेशन शात हड़ताल को कैसे बर्दाश्त कर सकता था। उसने शीघ्र ही कनाडा से हडताल भंजको को बुलाना शुरू कर दिया और उन्हें गुप्त रूप से हिदायत की कि वे डाकगाडियो को पुलमैन की गाड़ियो मे जोडदें जिससे कि हडताली जब उनमें से पुलमैन की गाडिया काटेंगे तो उन पर डाक मे गडबडी करने का आरोप लगाया जा सके।

हिसा के जिस खतरे की अभी आशंका भी नही थी उसके आधार पर उसने रेल कम्पनियो के पक्के दोस्त अटार्नीजनरल ओलनी को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह ३,४०० आदमियो को, जिन्हे वस्तुत. रेल कम्पनियो ने भर्ती किया था और वही उनको भुगतान कर रही थी ट्रेनो को चलाने मे सहायता देने के लिए विशेष सहायक (डिपुटी) के रूप में काम पर रख लिया जाए। ये तरकीबें सफल हो गईं। हड़तालियों तथा डिपुटियो मे जगह-जगह संघर्ष हो गया, दगे फूट पडे और रेलवे की सम्पति को नुकसान पहुँचा। मैनेजर्स ऐसोसियेशन ने तुरन्त यह फतवा देकर कि इस प्रकार की हिंसा बेकाबू हो गई है राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड से अपील की कि वे शांति और व्यवस्था फिर से स्थापित करने के लिये संघीय सेनाए भेजें, डाक और अन्तर्राज्यीय वाणिज्य की हिफाजत करें। १५वी पदाति सेना की ४ कम्पनियां शिकागो भेजी गईं।

गवर्नर आल्टगेल्ड ने तुरन्त ही इस कदम का विरोध किया। उन्होने

राष्ट्रपति को तार दिया कि स्थिति अभी बेकाबू नही हुई है स्थानीय अधिकारी उसे सभालने में पुर्णत. समर्थ है। उन्होने कहा : "सघ सरकार से अपील उन लोगो ने की है जिनका राज्य सरकार की उपेक्षा करने मे राजनीतिक स्वार्थ है। फिलहाल हमारी कुछ रेले पगु हो गई है, इसलिए नही कि कुछ लोग बाधा डाल रहे है, बल्कि इसलिए कि रेलो को अपने कार्यमचालन के लिए आदमी नही मिल रहे......इलिनौयस राज्य के गवर्नर के रूप में आपसे अनुरोध करता हूँ कि सघीय सेनाएँ इस राज्य में सक्रिय सेवा से तुरन्त वापस बुला ली जाएँ।" किन्तु आल्टगेल्ड के विरोध की कोई सुनवाई नही हुई। उन्होने हाल में ही हेमार्केट स्क्वेयर के दंगे के अराजकतावादी मुजरिमो की सजा माफ कर दी थी और अखबारो ने उन्हें "अव्यवस्था का मित्र और चैम्पियन" बनाकर उनपर कड़े आक्षेप किए थे। क्लीवलैण्ड ने यद्यपि इससे पूर्व कांग्रेस को दिए अपने एक सदेश में वेतन सम्बन्धी झगडो की जाँच पड़ताल और पच-फैसले की अपील की थी किन्तु इस मौके पर उनकी दृष्टि व्यवस्था फिर से कायम करने की आवश्यकता से आगे नही गई। जो टेक उन्होने अपना ली थी उसकी उन्होने दृढता से वकालत की और राज्य सरकार के अधिकार हड़पने के आरोपों के बावजुद इस आधार पर सघीय सेनाओ के प्रयोग को उचित ठहराया कि डाक गाडियाँ चालू रखने की उनकी वैधानिक जिम्मेदारी है।

बताया जाता है कि उन्होने कहा . "शिकागो मे चिट्ठी यथा स्थान पहुँचाने के लिए अगर मुझे खजाने के एक-एक डालर और अमरीका के एक एक सैनिक का प्रयोग करने की आवश्यकता पडती है तो भी वह चिट्ठी जरूर पहुँचाई जाएगी।"

तो भी हड़ताल भजको, विशेप डिपुटियो और सेना के बावजूद हडताली डटे रहे और शिकागो में रेलो का तीन-चौथाई काम ठप्प हो गया। इतना ही नही, हडताल और भी फैल रही थी। पूर्व और सुदूर पश्चिम, दोनो जगह-बहुत सी लाइनो पर इंजन चालको, फायरमैनो, मरम्मत करने वालों, सिगनल देने वालो, यार्डमास्टरो तथा अन्य कर्मचारियो ने सहानुभूति मे हडताल कर दी। साथ ही हिंसात्मक कार्य भी बढ़ रहे थे। जब सघर्प तेज हो गया तो डेब्स अपनी शातिपूर्ण अपीलो से हड़तालियों को ज्यादा देर तक

संयम की डोर मे बाँधे नही रख सका। सेनाओ के सरक्षण मे जब ट्रेने चलने लगी तो क्रुद्ध भीड़ने उन्हें रोकने की कोशिश की। आवारा और गुण्डे शीघ्र ही स्थिति का फायदा उठाने लगे, जैसा कि उन्होने १८७७ की रेलवे हड़ताल में किया था। रेलवे स्टोर लूट लिए गए, माल तथा सवारी के डिब्बे जला दिए गए और अन्य सम्पत्ति को भी नुकसान पहुँचाया गया।

जैसे-जैसे अव्यवस्था फैलने लगी, पत्र-पत्रिकाओ ने हल्ला मचाना शुरू कर दिया कि समाज खतरे मे है। न्यूयार्क ट्रिब्यून ने कहा : "यह हडताल पूँजी तथा श्रम के बीच अमरीका में अब तक की सबसे बड़ी लडाई है।" सबने एक स्वर से माग की कि अन्य किसी चीज की परवाह किए बिना "इस विद्रोह को कुचल दिया जाए।" रेल कर्मचारियों तथा हडताल के लिए उकसाने वालो के बीच फर्क करने की कोशिश की गई। कर्मचारियो को "स्वार्थी, क्रूर और गुस्ताख नेताओ का शिकार" बताया गया और सब ईमानदार श्रमिको से स्वय को ऐसे "असह्य अत्याचार" से मुक्त करने की ' ील की गई। न्यूयार्क टाइम्स ने डेब्स को खुला छूटा हुआ कानून भंजक, ।नव जाति का शत्रु" बताया मौर शिकागो हैरल्ड ने कहा . "इस लापरवाह, शोर मचाने वाले दुराग्रही, निर्लज्ज शेखीखोर से छुटकारा दिलाया जाना चाहिए .."

भीड की हरकतो तथा पुलिस व सेना के साथ उसकी भिडन्त के बारे में अखबारो मे भयावह समाचार छपने लगे। वाशिंगटन पोस्ट ने अपनी सुर्खियो मे चीख-पुकार मचाई "शिकागो दाहक की टार्च की दया पर है।" लोगो के दिल पर ऐसी छाप अंकित करने की कोशिश की गई मानो सारा शिकागो क्राति और अराजकता का शिकार हो गया है। किन्तु न्यूयार्क हैरल्ड के एक सवाददाता ने इस अतिशयोक्ति पूर्ण डरावने वातावरण मे भी अपना सतुलन कायम रखते हुए ६ जुलाई को अपने पत्र मे रिपोर्ट दी कि कारोबार सामान्य गति से जारी है, दूकानो मे खरीदारो की भीड़ रहती है और "शहर के मुख्य भाग में भी भीड़, दंगे या हडताल का कोई चिह्न नही है।"

किन्तु रेल कम्पनिया तुर्प का पत्ता पहले ही खेल चुकी थी। उन्होने अटार्नी जनरल ओलनी को सीधे हस्तक्षेप करने के लिए मना लिया था और २ जुलाई को सघीय जिला अदालत के न्यायाधीश पीटर जे० ग्रौसकप से

एक निषेधादेश प्राप्त कर लिया गया, जिसमें कहा गया था कि कोई व्यक्ति अन्तर्राज्यीय व्यापार में डाक तथा अन्य रेल सामग्री के परिवहन में बाधा न डाले और रेल कर्मचारियो को अपना सामान्य कामकाज करने से मना न करे। जब सरकार और अदालतो की सारी शक्ति उसके खिलाफ लाकर खडी कर दी गई तो डेब्स हताश हो गया। कुछ अरसे तक तो उसे आम हडताल के लिए मजदूरो से समर्थन प्राप्त होने की आशा रही किन्तु अमरीकी मजदूर सघ ने उसे साफ अगूठा दिखा दिया। गौम्पर्स ने इस मामले पर मजदूरों का एक सम्मेलन बुलाने की तो मजबूरी महसूस की किन्तु वह हडताल के एकदम विरुद्ध था। वस्तुत. यह कोई आश्चर्य की बात नही थी कि जो संगठन औद्योगिक यूनियनवाद के विरोध में कायम हुआ वह अमरीकी रेलवे यूनियन को अपना सहयोग देने मे आनाकानी कर दहा था।

१३ जुलाई को गौम्पर्स ने एक वक्तव्य जारी करके कहा कि "सम्मेलन की यह राय है कि इस समय आम हडताल करना अयुक्तियुक्त, अबुद्धिमत्तापूर्ण और मजदूरो के हितो के विरुद्ध होगा। हम यह भी सिफारिश करते हैं कि अमरीकी मजदूर सघ के जिन सदस्यो ने सहानुभूति में हडताल कर रखी है वे काम पर लौट जाए और जो सहानुभूति में हडताल करने का इदादा कर रहे है उनको सलाह दी जाती है कि वे काम करते रहे।"

जब किसी तरफ से सहायता नही मिली तब डेब्स ने इस शर्त पर हडताल और वहिष्कार को वापस लेने का प्रस्ताव रखा कि कम्पनी बिना किसी भेद-भाव के सब कर्मचारियो को काम पर वापस ले ले। अदालतो का दण्डचक्र घूमते हुए रेलो को क्या चिन्ता थी। उन्होने डेब्स के शाँति प्रस्तावो को साफ ठुकरा दिया : 'अराजकतावाद को अब और प्रश्रय नही दिया जाएगा।"

न्यायाधीश ग्रासकप ने अब इन अभियोगो की सुनवाई करने के लिए जूरी बैठाई कि डाक में बाधा डालकर हडताली नेताओ ने षड़यन्त्र रचने का अपराध किया है और अदालत की हिदायत पर डेब्स तथा इसके तीन साथियों पर तुरन्त अभियोग लगा दिए गए। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, जमानत पर रिहा कर दिया गया और एक सप्ताह बाद पहले निषेधादेश का पालन न करने का अभियोग लगाते हुए अदालत की मानहानि करने के जुर्म में फिर गिरफ्तार कर लिया गया। इस बार उन्हे जेल भेज दिया गया। अन्य

निषेधादेश अलग-अलग कर्मचारियो के खिलाफ लागू किए गए और सघीय अभियोगो पर करीब २०० को गिरफ्तार कर लिया गया। इनके अतिरिक्त कई सौ को स्थानीय पुलिस ने जेलो में डाल दिया। नेतृत्व तथा दिग्दर्शन से वचित, सर्वथा हताश रेल कर्मचारियो ने व्यर्थ से प्रतीत होने वाले संघर्ष को तिलाजलि दे दी और शनै शनै. काम पर वापस आगए। २० जुलाई को सेनाएं हटा ली गईं। निषेधादेश के जरिए सरकार ने पुलमैन की हड्ताल को बिल्कुल कुचल कर पहली विजय प्राप्त की।

कुछ अरसे बाद डेब्स के खिलाफ अदालत की मानहानि के आरोप सरकिट कोर्ट में इस आधार पर पुष्ट किए गए कि हाल मे बने शर्मन ट्रस्ट विरोधी अधिनियम के मातहत हडताल के नेताओ ने अन्तर्राज्यीय व्यापार में बाधा डालने के लिए षडयन्त्र रचा। अगली वसन्त ऋतु में उच्चतम न्याया-लय ने शर्मन अधिनियम की सार्थकता पर कोई राय प्रकट किए बिना निचली अदालत के फैसले को कायम रखा। यह कहा गया, कि सघ सरकार को अन्तर्राज्यीय व्यापार या डाक के परिवहन मे किसी भी बाधा को रोकने के लिए हस्तक्षेप करने का अधिकार प्राप्त है।

डेब्स को ६ महीने के लिए वुडस्टाक, इलिनौयस की जेल भेज दिया। अदालतो की कार्रवाई ने उसे शहीद बना दिया था और अपनी सजा की समाप्ति के बाद जब वह शिकागो लौटा तो १ लाख से अधिक प्रशसको की भीड़ ने उसका तुमुल स्वागत किया। एक विशाल सभा मे, हेनरी डेमारेस्ट लायड ने उसे आज के महत्वपूर्ण लोगो मे सबसे लोकप्रिय व्यक्ति और अदालती लिंच कानूनो का शिकार" बताकर उसका स्वागत किया, जेल में रहते हुए डेब्स का यह दृढ विश्वास हो गया था कि पूंजीवाद में मजदूरो का हित-साधन असम्भव है। वह समाजवादी हो गया और तब से उसने अपना सारा जीवन उस प्रणाली के खिलाफ सघर्ष करने में लगा दिया जिसकी बदौलत मालिक अपने आदेश का पालन कराने के लिये सरकार का आह्वान कर सकते है। यह आदेश है—"हम आपको जो कुछ देना चाहते है, उसी पर काम कीजिए, वरना भूखो मरिये।" १९२६ मे अपनी मृत्यु तक वह समाज-वादी झण्डे के नीचे मजदूरो के अधिकारो के लिए निरन्तर संघर्ष करता रहा और अपने दल की तरफ से राष्ट्रपति पद के लिए ५ बार उम्मीदवार

खड़ा हुआ।

मज़दूरो तथा उनसे सहानुभूति रखने वालो ने पुलमैन हड़ताल में संघीय सेनाओ के हस्तक्षेप तथा निषेधादेशों के प्रयोग की तीव्र निन्दा की किन्तु अन्य क्षेत्रों में सरकार की नीति का जोरदार समर्थन किया गया। सेनेटे और प्रतिनिधि सभा दोनो ने राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड की कार्रवाई के समर्थन में प्रस्ताव पास किए। सार्वजनिक नेताओं ने अपने असख्य वक्तव्यो मे स्थिति को सम्हालने में दिखाई गई चतुरता के लिए राष्ट्रपति की सराहना की और कंजरवेटिव प्रेस ने "डेब्स के विद्रोह" को तत्परता से दबा देने के लिए उन्हें राष्ट्रवीर कहा। सरकार की सत्ता का सिक्का असदिग्ध रूप से जमा दिया गया था इतिहासज्ञ जेम्स फोर्ड रहोड्स ने लिखा "न्यायपूर्ण निर्णयो के लिए प्रसिद्ध इस देश मे एक वेशकीमती परिपाटी के लिए हम 'क्लीवलैण्ड और ओलनी के ऋणी है।"

शायद पुलमैन की हड़ताल का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि मज़दूरो की मांग का मुकाबला करने में अदालत के निषेधादेश से उद्योग के हाथ में आई हुई ताकत का पता चला। मजदूरो के मालिक जब इतनी आसानी से अदालतो में जाकर हड़तालो और बहिष्कारो के खिलाफ निषेधादेश प्राप्त कर सकते थे और जब सरकार विवाद ग्रस्त मामलों में ठीक और गलत का ख्याल किए बिना अपनी सब ताकत मज़दूरों के खिलाफ झोंक देने को तैयार थी तो बेचारे मज़दूरो के लिए क्या गु जायश हो सकती थी। उनके हाथ बिल्कुल बधे हुए प्रतीत हुए। निषेधादेश के जरिये हकूमत करने के खिलाफ तुरन्त एक आन्दोलन चल पड़ा और यद्यपि अमरीकी मजदूर संघ ने अमरीकी रेलवे यूनियन की हड़ताल में कोई सहयोग नही किया था तो भी इस आन्दोलन को उसने उसी दिन से मजदूरों के लिए एक मुख्य चिन्ता का विषय स्वीकार किया। १८९० की दशाब्दि की भांति सन् १९४० की दशाब्दि तक भी यह एक मुख्य विषय बना रहा।

होमस्टैड और पुलमैन की हड़तालो को जबर्दस्ती कुचल दिए जाने से मज़दूरो में असन्तोष बढ़ने लगा परन्तु उससे भी ज्यादा निराशा बेकारी ने उत्पन्न की। देश भर में "औद्योगिक फौजें" राहत की माग करने के लिए

वाशिंगटन को जाने वाली सड़को पर कूच करने लगी। इनमें सबसे प्रसिद्ध कौक्सी की फौज थी जो वस्तुत: राजधानी पहुची और ह्वाइट हाउस के लॉन में अनधिकृत प्रवेश पर उसके नेता की गिरफ्तारी के बाद उसे तितर-बितर कर दिया गया। किन्तु चिथड़े पहने गरीब मजदूरो के और भी ग्रुप कूच कर रहे थे। समस्त देश में भीड़ की कार्रवाई के निरन्तर मौजूद खतरे का सामना करने के लिए अधिकारियो को इन प्रदर्शनो को भग करने की हिदायत दी गई।

इस बीच राष्ट्र के किसानो मे भी असन्तोष बढ रहा था और विद्रोह की चिनगारी फैल रही थी। कीमते गिरते जाने से; जिसके कारण उनके द्वारा पैदा किए गए माल की आधी कीमत रह गई थी, ने भी परेशान थे। पौपुलिज्म खेतो में छा गया और जहा यह क्षोभ मध्य-पश्चिम और दक्षिण के किसानो तक ही सीमित रहा वहा पूर्व के मजदूर जो यह महसूस करते थे कि सरकार के हाथ सब जगह उनका गला दबोचने को तत्पर है, इससे आकर्षित हुए बिना न रह सके। पौपुलिज्म सगठित सम्पदा द्वारा शासन की समस्त प्रणाली को ही चुनौती देता था। बहुत कुछ जैक्सनी लोकतंत्र की तरह इसने सामान्य को वह राजनीतिक सत्ता फिर से प्राप्त कराने की कोशिश की, के बारे मे समझा जाता था कि उसे व्यापारी वर्ग ने हथिया लिया है।

पौपुलिस्ट पार्टी ने, जिसका १८९२ मे बाकायदा सगठन किया गया, इस विचार को अपना मूल आधार बना लिया कि सम्पत्ति उनकी है जो उसे पैदा करते है, और राष्ट्र के श्रमजीवी वर्ग से अपने अधिकारो की रक्षा के लिए अपील की। औद्योगिक श्रमको को इस सिद्धान्त का अनुगामी बनाने का हर सम्भव प्रयत्न किया गया। चाँदी के स्वच्छन्द और असीमित सिक्के ढालने की माँग जहाँ किसानो के असन्तोष की परिचायक थी वहाँ अन्य माँगे सर्वथा औद्योगिक थी।

पौपुलिस्ट मच से कहा गया : "शहरी मजदूरो को आत्मरक्षा के लिए सगठित होने का अधिकार नही प्रदान किया जाता, बाहर से लाए गए गरीब मजदूर उनकी मजदूरी में कटौती कराने का कारण बनते है, उन्हें गोली का शिकार बनाने के लिए किराये की टट्टू एक स्थायी सेना रखी जाती है जिसकी कानून इजाजत नही देता और तेजी से यूरोप की सी बुरी हालत होती जा रही है।" इस स्थिति का सामना करने के लिये पौपुलिस्टो ने मुद्रा व अन्य प्रकार के

सुधारो के अपने कार्यक्रम में राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन, नाइट्स आव लेबर तथा अमरीकी मज़दूर संघ की परम्परागत माँगो को भी शामिल कर लिया। उन्होने आव्रजन पर अंकुश लगाने, सरकारी परियोजनाओ पर ठेका विरोधी मज़दूर कानून पर अमल किए जाने तथा ८ घण्टे के दिन की, श्रमिक विवादों में अदालती निषेधादेशो का प्रयोग बन्द करने और "पिंकरटन प्रणाली के रूप में विख्यात भाड़े के टट्टुओ की सेना" को गैर कानूनी करार दिए जाने की माँग की।

नाइट्स आव लेबर अपनी क्षीण हुई शक्ति को पौपुलिस्ट के समर्थन में झौंक देने को तैयार थे। १८९२ के एक सम्मेलन में उसके ८२ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मजदूरो के जो ग्रुप एक ही कर लिए जाने के हेनरी जार्ज के आन्दोलन का और समाजवादी सुधारो के उद्देश्य वाली राष्ट्रीय क्लबे स्थापित करने के ऐडवर्ड बेलामी के आन्दोलन का समर्थन करते थे, वे बाकायदा पीपल्स पार्टी से सम्बद्ध हो गए। यूजीन वी० डेब्स ने, जो पुलमैन की हड़ताल की विफलता पर अब भी अफसोस किया करता था, समाजवादी बन जाने से तरोताजा होकर तहे-दिल से उस कार्यक्रम का समर्थन किया जिसके बारे में उसका विश्वास था कि वह आम लोगो को पैसे की ताकत के खिलाफ एक-जूट होने का आधार प्रदान करता है। सिर्फ अमरीकी मजदूर संघ ही सेम्युअल गौम्पर्स के प्रभाव को पुनः प्रकट करता हुआ उससे अलग रहा।

सघ के अन्दर जो समाजवादी तत्त्व थे, उनके द्वारा एक प्लेटफार्म पर, जिसमें यह माग की गई कि उत्पादन और वितरण के सब साधनों पर सब लोगो का सामूहिक स्वामित्व होना चाहिए, सघ को तीसरे मजदूर दल की स्थापना के पक्ष में करने का प्रयत्न कुछ ही समय पहले ठुकरा दिया गया था। गौम्पर्स जीता किन्तु इस प्रयत्न में १८९४ में अध्यक्ष पद के चुनाव में हार गया। यूनाइटेड माइन वर्कर्स का जॉन मैकब्राइड इस पद पर चुना गया और सघ का हैडक्वार्टर इडियानापोलिस ले जाया गया। किन्तु गौम्पर्स का सितारा कुछ ही देर तक डूबा रहा। अगले सम्मेलन मे न केवल उसे पुनः अध्यक्ष बना दिया गया, अपितु समाजवाद के खिलाफ जो टेक उसने ली थी उसका दढता से समर्थन किया गया। अमरीकी मज़दूर संघ से जब पौपुलिज्म को सहयोग देने की माँग की गई तो इसके पुनर्निर्वाचित अध्यक्ष ने संघ को राजनीति में

सीधा भाग न लेने देने का और भी दृढ निश्चय कर लिया। अमरीकी मज़दूर संघ स्वच्छन्द चाँदी की पार्टी का समर्थन करने को तैयार नही था। गौम्पर्स ने मज़दूरों के लिए अपनी सब शक्तियाँ यूनियनवाद की समस्याओ पर केन्द्रित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा "मध्यम वर्ग के मामले उनका ध्यान उनके अपने मामलो से हटाते है।"

१८९६ में जब डैमोक्रैटो ने न केवल रिपब्लिकनो को बल्कि अपनी पार्टी में मौजूद कजरवेटिव तत्वो को चुनौती देते हुए पौपुलिस्टो का कार्यक्रम अपने हाथ मे ले लिया तब भी औद्योगिक श्रमिको मे उन्हे काफी समर्थन प्राप्त रहा। दोनो पार्टियाँ मज़दूरो के वोट के महत्व को समझती थी। विलियम जेनिंग्स ब्रायन ने तो एक भाषण मे यहाँ तक कहा कि अगर वह राष्ट्रपति चुना गया तो वह गौम्पर्स को अपने मन्त्रिमण्डल का एक सदस्य बना लेगा। किन्तु उनके इस प्रस्ताव का ए० एफ० एल० के अध्यक्ष पर कोई प्रभाव नही हुआ। रिपब्लिकन हाईकमाण्ड ने, जबकि मार्क हान्ना पार्श्व से विलियम मैकिनली के आन्दोलन का सचालन कर रहे थे, एक दूसरा मार्ग अपनाया। मजदूरो के वेतनो के लिफाफो में नोटिस रखकर चेतावनी दी गई कि डैमोक्रैटिक पार्टी की जीत का मतलब होगा और ज्यादा कारखानो का बन्द होना तथा और ज्यादा बेकारी। इस प्रकार की खतरनाक भविष्यवाणियाँ कर कि "यदि ब्रायन, आल्टगेल्ड और डेब्स के नेतृत्व मे समाजवादी और क्रान्तिकारी ताकतें जीत गई तो महान् आर्थिक संकट पैदा हो जाएगा", मजदूरो को अपने पक्ष मे करने की कोशिश की गई।

अन्तत पूजीवाद की सगठित ताकतो ने, जिसका प्रतिनिधित्व रिपब्लिकन पार्टी कर रही थी, डैमोक्रैटिक झण्डो के नीचे आन्दोलन करने वाले किसानो और मजदूरो के प्रहार को पीछे धकेल दिया। मैकिनली चुन लिया गया। यह गठबधन इतना शक्तिशाली या एकजूट नही था कि एक ऐसी किसान-मजदूर पार्टी कायम की जा सकती जो आर्थिक और सामाजिक सुधारो के कार्यक्रम को सफल बना देती। सेम्युअल गौम्पर्स ने अपने सगठन को राजनीति से बाहर रखा और इस प्रकार सभवत उसे पहले के मज़दूर सगठनो की भाति दलबन्दी की चट्टान पर टकराकर टूट-फूट जाने से बचा लिया। किन्तु १७९६ के चुनावो मे उस सामाजिक व्यवस्था के रक्षक कजरवेटिवो की जीत हुई जो

हड़तालो को तोडने, पिंकरटन जासूसो के उपयोग और निषेधादेश द्वारा शासन चलाने के हामी थे।

जब १८९६ के आन्दोलन की हलचल शान्त हुई तो मजदूरो ने अपनी स्थिति का सिंहावलोकन कर उसे निराशाजनक पाया। मदी से पहले वेतनो में जो लाभ प्राप्त किए गए थे, वे सब के सब खत्म हो गये। निर्माण उद्योग के कर्मचरियो की औसत वार्षिक आय ४०६ डालर से अधिक नही थी। अत्यन्त दक्षतापेक्षी धन्धो को छोड बाकी में काम का समय ८ घण्टे से कही ज्यादा था, जब कि इसके लिए मजदूर इतने अरसे से सघर्ष करते चले आ रहे थे। काम का समय सामन्यता ५४ से ६३ घण्टे प्रति सप्ताह था। इस्पात कारखनो, कपडा मिलों और पोशाक की फैक्ट्रियो में काम के घण्टे इससे भी ज्यादा थे जहा स्त्रिया और बच्चे बहुत थोडे से पैसो के लिए इतनी देर तक काम करते थे कि काम का समय समाप्त होता दिखाई नही देता था। औद्योगिक श्रमिको के लिए कही भी आर्थिक सुरक्षा नही थी।

यद्यपि मजदूरो के सम्बन्ध में कानून बनने शुरू हो गए थे तथापि १८६० की दशाब्दि के अतिम वर्षो में राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन ने पहले पहल जो लक्ष्य रखे थे उनकी पूर्ति में भी वस्तुत. कोई प्रगति नही हुई। सघ सरकार ने श्रम सम्बन्धी आकडो के लिए एक ब्यूरो स्थापित कर दिया था और ३२ राज्यो ने भी ऐसे ही ब्यूरो कायम किए थे, एक विदेशी ठेका मज़दूर कानून बनाया जा चुका था, चीनियो को बाहर रखने के अधिनियम भी बन चुके थे और १८९८ मे राष्ट्रपति मैकिनली ने एक औद्योगिक कमीशन स्थापित करने की भी सिफारिश की। औद्योगिक गतिविधियो के कुछ पहलुओं को नियमित करने के लिए राज्य सरकारो ने भी कानून बना दिए थे और खानो व फैक्ट्रियो मे मज़दूरो की हालत सुधारने की आशा की जा रही थी। किन्तु इन मामूली लाभो के मुकाबले यूनियनो की ताकत सामान्यत कमजोर हो गई थी। वस्तुत व्यापार मे अडचन डालने के लिए सगठन बनाने पर प्रतिबन्ध के शर्मन अधिनियम को यूनियनो पर लागू करके और हड़तालो तथा बहिष्कारो को कुचलने में निरोधा देशो का इस्तेमाल करके पुराने षडयन्त्र कानूनो को फिर से सजीव कर लिया गया था।

इतना ही नही, सगठित श्रमिकों की संख्या १८८० के दशक के चरम शिखर से नीचे आ गई थी। लगभग १० लाख से घटकर ३॥ लाख के करीब रह गई थी। यद्यपि गौम्पर्स १८९३ मे गर्व पूर्वक यह कह सका कि राष्ट्रीय यूनियनें पहली बार मंदी के आघातो को सह सकी है, तो भी १८९७ में अमरीकी मजदूर सघ के सिर्फ २,५०,००० सदस्य थे और रेलवे ब्रदरहुडो तथा अन्य असम्बद्ध यूनियनो मे १ लाख सदस्य और थे। शुरू के वर्षो की अपेक्षा यह ज्यादा गठा हुआ और अधिक प्रभावशाली केन्द्र बिन्दु था किन्तु यूनियन की कुल ताकत उससे कोई बहुत ज्यादा नही थी, जितनी मजदूर १८३० के दशक में या १८६० की दशाब्दि के अंतिम वर्षों में दावा करते थे।

अदक्ष औद्योगिक मज़दूरों की विशाल सख्या असंगठित ही रही। उनके मालिक चूंकि आव्रजको की आजस्र धारा में से कितनो को ही उनके स्थान पर लगा सकते थे और सरकार तथा अदालतों से उन्हें हड़तालो को तोड़ने में पूरा सहयोग मिलता था इसलिए काम के लम्बे घण्टो, कम वेतन, और मनमानी बर्खास्तगियो से बचाव का उनके पास कोई उपाय नही था। होमस्टेड और पुलमैन दोनो हडतालो में कडी हार ने यह कटु पाठ पढ़ा दिया था कि अपने अधिकारो की रक्षा के लिए औद्योगिक श्रमिको के संगठित होने के प्रयत्नो को कुचल डालने के लिए कितनी ज्यादा ताकत जुटाई जा सकती है। मजदूरो को सामान्यत यही आशासूत्र दिखाई देता था कि ए. एफ़. एल. की छत्र-छाया मे एकत्र लाई गई पुराने ढग की ट्रेड यूनियनो को और मजबूत किया जाए।

—: ० .—

११ : प्रगतिशील युग

प्रगतिशील युग में जो १९०१ में थियोडोर रूजवेल्ट के राष्ट्रपति बनने से लेकर १६ वर्ष बाद प्रथम विश्व-युद्ध में हमारे प्रवेश तक चला, सारे अमरीका में उदारता की एक लहर व्याप गई। व्यावसायिक प्रभुत्व के प्रति लोगो का असन्तोष, जो १८९६ के अभियान में प्रकट हुआ था, ब्रायन की पराजय के साथ ठण्डा नही पड़ा था। इसने एक अधिक सामान्य तथा कम क्रान्तिकारी आन्दोलन में नई अभिव्यक्ति पायी, जिसने दोनो बड़ी पार्टियो के जरिए राजनीतिक और सामाजिक सुधार प्राप्त किए। अधिक सामाजिक न्याय प्राप्त करने का दृढ निश्चय कर राष्ट्र ने "अदृश्य सरकार" की समाप्ति तथा किसी भी प्रकार के विशेषाधिकार के खात्मे की माँग की। अगर उदार उद्देश्य पूरी तरह प्राप्त नही भी हुए तो भी अनेक क्षेत्रो में प्रभावशाली प्रगति की गई और "देश की नैतिक भावना" मजबूत की गई, जिसने इस प्रगतिशील युग को १८९० या १९४० के दशको मे विद्यमान लोकमत के मुकाबले एक विशेष स्वरूप प्रदान किया।

राष्ट्रीय स्तर पर ट्रस्टो को नियन्त्रित करने, रेलो को नियमित करने, मुद्रा-प्रणाली को सुधारने और तटकर को कम करने की भरसक कोशिश की गई और साथ ही राज्य सरकारो ने आर्थिक व सामाजिक सुधार के व्यक्तिगत कार्यक्रम लागू किए, जिनका उद्देश्य गन्दी बस्तियों की सफाई, उद्योगो में स्त्री बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा, और सामान्यतः फैक्ट्री मे काम की हालतों में सुधार करना था। १९वी सदी के स्वच्छन्द और उन्मुक्त अर्थतन्त्र की जगह सामाजिक जिम्मेदारी की भावना घर करने लगी जो उद्योगीकरण और शहरो के विकास की बढती हुई समस्याओं का सामना करने के लिए सरकारी कार्रवाई की आवश्यकता स्वीकार करती थी। इसके अतिरिक्त ये लाभ शांति और वैभव की पृष्ठभूमि में प्राप्त किए गए जिससे जीवन-स्तर काफी उन्नत हुआ। लोकतन्त्रीय पूँजीवाद में लोगो की आस्था और विश्वास, जो १८९० की दशाब्दि के मध्यवर्ती वर्षों में डगमगा गया था, उल्लासमय आशावाद के

बीच फिर जाग उठा।

इन सामान्य लाभो में मजदूरो को भी हिस्सा मिला और अन्तत. उन्हे कांग्रेस और राज्यो दोनो के सुधार-सम्बन्धी कानूनो से काफी लाभ हुआ। किन्तु फिर भी सामष्टिक दृष्टि से राष्ट्र ने इस युग में जितनी प्रगति की, उसके अनुरूप मजदूरो की एक विशाल सख्या की हालत नही सुधरी। औद्योगिक मजदूरो का वास्तविक वेतन यानी उसकी क्रय-शक्ति पहले से घट गई। इसके अलावा एक तरफ मजदूरो की बचत करने वाली मशीनो के प्रयोग से और दूसरी ओर आव्रजन के बढते रहने से मज़दूरो की बहुतायत की हालत निरन्तर बनी रही। इससे न केवल वेतन कम मिलते रहे बल्कि कर्मचारियो में असुरक्षा की भावना बढ गई जिनके सिर पर बेकारी का भूत सवार रहता था।

और नए कानून के बावजूद अधिकाश मज़दूरो की वास्तविक काम की हालतो मे चिरकाल तक कोई असली परिवर्तन दिखाई नही दिया। फैक्ट्री-नियम अब भी अपर्याप्त थे और प्राय बडे ढीले-ढाले ढग से अमल में लाए जाते थे। कोयला-खानो, इस्पात-मिलो और पैकिंग-गृहो मे, अब भी हृदय-हीनता से स्त्रियो व बच्चो से काम लेने वाली कपडा-मिलो और शहरी कपड़ा-उद्योग की फैक्ट्रियो मे जहाँ चिरकाल तक बहुत ही कम मजदूरी पर काम कराया जाता था, जीवन की कठोर परिस्थितियाँ देश द्वारा सामान्यत' उपयोग किए जाने वाले ऐश्वर्य पर एक दु खद टिप्पणी थी।

जहाँ तक स्वय मजदूर-सगठन का सम्बन्ध था, इन वर्षो के लाभ घटते-बढते और कुछ द्वयर्थक रहे। कुछ समय तक तो ,ऐसा लगा कि औद्योगिक सम्बन्धो का एक नया युग प्रारम्भ हो गया है जिसमें मजदूरो के शात रहने की प्रबल आशा है किन्तु जैसे-जैसे यूनियनो की शक्ति बढी, उद्योगो की तरफ से किए गए प्रत्याक्रमण मे और ज्यादा सघर्ष पैदा हो गए और मज़दूरो को अदालतो मे तथा कारखानो में धरना देने के काम में बडी असफलताओ का मुँह देखना पडा। सिर्फ इस काल की समाप्ति आने पर ही पहले की गई प्रगति फिर से जारी की जा सकी, जिसमे यूनियन की सदस्यता काफी बढी और सौदेवाजी की शक्ति मे भी वृद्धि हुई।

सगठित मज़दूर आन्दोलन पर प्राय. अमरीकी मजदूर सघ का ही प्रभुत्व था—आई. डब्लू. डब्लू. के अचानक आविर्भाव का उल्लेख हम बाद में करेगे—

और इसकी मुख्य चिन्ता अब भी अपनी सम्बद्ध यूनियनो के कल्याण और हैसियत की थी, जिनके सदस्य ज्यादातर दक्ष या अर्धदक्ष कर्मचारी थे। आगामी वर्षों में यह चीज़ बहुत महत्त्वपूर्ण रही। कोयला-खानो, पोशाक-उद्योग और कपड़ा-कारखानो मे ए एफ. एल. की यूनियनो का स्वरूप जहाँ औद्योगिक रहा वहाँ अन्यो में कुछ अदक्ष श्रमिक भी शामिल थे। बडे पैमाने पर उत्पादन करने वाले उद्योगो में बहुत अधिक कर्मचारी—जिनमें ज्यादातर विदेशो मे जन्मे, अज्ञानी और अमरीकी सस्कृति मे न पले हुए लोग थे—यूनियनो से बाहर ही रहे। प्रगतिशील युग में सगठित मजदूरो के कार्य पर दृष्टिपात करते हुए यह याद रखना चाहिए कि इससे राष्ट्र के सिर्फ १० प्रतिशत मजदूरो का सीधा सम्बन्ध था।

हमारे विदेश मन्त्री जोन हे ने जिसे स्पेन के साथ "हमारी शानदार छोटी-सी लडाई" कहा, उसके बाद राष्ट्रीय यूनियनो तथा मालिको के बीच सम्बन्ध इतने अच्छे रहे कि १८९८ से १९०४ तक के युग को "पूँजी और श्रम का सुहागराती जमाना" कहा जाता है। हडतालें कभी-कभी इसमे रग-भग भी कर देती थी किन्तु कम-से-कम १८९० के दशक के क्षुब्ध औद्योगिक सघर्ष के मुकाबले स्थिति में काफी सुधार था। अनेक उद्योगो में लगता था कि मालिको और मज़दूरो दोनो ने यह सकल्प कर लिया है कि वे अपनी समस्याएँ शान्ति से ही हल करेंगे। जिम्मेदार मज़दूर नेताओ को पुलमैन जैसी हडतालों के सघर्ष की निश्चित विफलता का विश्वास हो गया था और बहुत से उद्योग-पति भी हडतालो को सफलतापूर्वक कुचल दिए जाने पर भी उनके खतरनाक राजनीतिक और आर्थिक परिणामो को समझने लगे थे। सामान्यतः देश ही, पिछले अनुभवो से सबक लेकर इस बात की अधिकाधिक माँग कर रहा था कि औद्योगिक झगडे शान्त करने का कोई ऐसा उपाय निकाला जाये जिससे सार्वजनिक हित की सुरक्षा हो सके।

मजदूर समस्याओ के प्रति इस नए दृष्टिकोण का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व नेशनल सिविक फेडरेशन ने किया। पहले १८९६ में शिकागो मे इसकी स्थापना हुई थी किन्तु सदी की समाप्ति पर वह राष्ट्रीय स्तर पर काम करने लगा था और उसका उद्देश्य था कि औद्योगिक शाति रखने के संयुक्त अभियान मे श्रम,

पूँजी और जनता को एक मच पर लाया जाए। १८६० की दशाब्दि के प्रचलित रवैये के खिलाफ, जिसमें मजदूरों के सब आन्दोलनो को अराजकता समझा जाता था, इसकी स्थापना इस मन्तव्य के आधार पर हुई थी कि "सगठित मज़दूरो को यदि नष्ट करने की कोशिश की गई तो अवाम का पतन अवश्यम्भावी है" यूनियन विरोधी मालिको को भी राष्ट्रीय स्थिरता का उतना ही वडा शत्रु घोषित किया गया, जितना रैडिकल या समाजवादी मजदूर नेताओ को। नेशनल सिविक फेडरेशन न यूनियनो के निर्माण और उनके द्वारा किए गए समझौतो को मूल सिद्धान्त स्वीकार किया और मालिक और मजदूर जब कभी भी अपने झगडो को पच-फैसले के लिए सुपुर्द करने को राजी होते थे तब वह "उनके वीच ठीक प्रकार के सम्बन्ध" स्थापित करने के लिए अपनी सेवाएँ देने को उद्यत रहता था।

इस आन्दोलन के नेता थे—मार्क हान्ना और सेम्युअल गौम्पर्स और उनके साथ नेशनल सिविक फेडरेशन में प्रमुख सार्वजनिक व्यक्तियो का एक ग्रुप था। इसमें गवर्नर क्लीवलेण्ड, हारवार्ड के प्रेजीडेण्ट इलियट और आर्कविशप आयरलैण्ड जनता के, जॉन डि राकफेलर जूनियर, चार्ल्स एम. श्वाव और ऑगस्ट वेलमोण्ट मालिको के तथा युनाइटेड माइन वर्कर्स के जॉन मिचेल, मशीनचालको के जेम्स ओ' कोनेल और ग्रेनाइट कटर्स के जेम्स डकन मजदूरो के प्रतिनिधि थे। सदस्यो की सूची वडी प्रभावकारी थी और कुछ अरसे तक नेशनल सिविक फेडरेशन का जो असर रहा वह श्रम और पूँजी के सहयोग के लिए वहुत आशाप्रद था।

मालिको के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रुपो ने परस्पर स्वीकार्य राज़ीनामों के आधार पर यूनियनो से समझौता कर लिया। नेशनल फाउण्डर्स ऐसोसियेशन तथा मशीन-चालको ने अन्तर्राज्यीय एसोसियेशन के साथ करार किए गए। न्यूज़पेपर्स पब्लिशर्स ऐसोसियेशन तथा इण्टरनेशनल टाइपोग्रैफिकल यूनियन ने अनेक समझौते किए। रेलवे कम्पनियो ने ब्रदरहुडो को मान्यता दी और इनसे समझौते की वातचीत की। औद्योगिक शाति की तरफ उस प्रत्यक्ष प्रगति मे और सामूहिक सौदेवाज़ी को स्वीकार कर लेने मे नि सन्देह कुछ अपवाद भी थे। उदाहरणार्थ ऐमलगमेटेड आयरन ऐण्ड स्टीलवर्कर्स की तरफ से इस्पात उद्योग के कर्मचारियो को सगठित करने का

अंतिम प्रयत्न सर्वथा विफल हो गया जब कि युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन ने १६०१ मे की गई जबर्दस्त हडताल को कुचल दिया। इसके निर्देशक मडल ने मजदूरो की यूनियनो के विस्तार का विरोध करने के पक्ष मे गुप्त रूप से एक प्रस्ताव पास किया था। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हार थी किन्तु व्यावसायिक समझौतो की बढती हुई सख्या से, जो ए. एफ एल की नीतियो और कार्यक्रमों का परिणाम थी, ऐसा लगता था कि मालिको के आम रवैये में परिवर्तन हुआ है और इससे मजदूरों को बडा प्रोत्साहन मिला। गोम्पर्स ने खुशी से कहा : "यह वर्षों के सगठन का परिणाम है जो अब फल देने लगा है।"

इन परिस्थितियो मे यूनियनें फली-फूली और देश के अनेक हिस्सो में उन्हे नई महत्त्वपूर्ण स्थिति प्राप्त हुई। जिन धन्धो में मजदूर-हलचलो का लम्बा इतिहास रहा था, उनमे यूनियनें सबसे मजबूत थी और उन्होने लाभ भी सबसे ज्यादा प्राप्त किये। अमरीकी मजदूर सघ से सम्बद्ध यूनियनो में खनिको, मुद्रको, सिगार-निर्माताओ, खातियो, ढलाई का काम करने वालो, खलासियो, शराब खीचने वालो और मशीन-चालको की यूनियने अग्रणी रही और इनमें से प्रत्येक के सदस्यो की संख्या काफी बढी।

कीचड़ उछालने वालो का भण्डाफोड़ होने से जो इन वर्षों में औद्योगिक जीवन के हर पहलू को कुरेदते रहे थे, सौदेबाज़ी के लिये अपनी स्थिति सुधारने के मज़दूरो के प्रयत्नो के प्रति लोगो मे कुछ सहानुभूति उत्पन्न हुई। १६०२ में स्प्रिंग-फील्ड रिपब्लिकन ने लिखा : "पूँजी को सगठित मज़दूरो के साथ अपनी पटरी बैठाने का निश्चय कर लेना चाहिए। अब ये संगठन स्थायी हो गये है और कानून अब मज़दूर यूनियनो को गैरकानूनी करार देने के बजाय सम्भवत· उनका निर्माण अनिवार्य कर देगा। इस चीज को जितनी जल्दी समझ लिया जाए, उतनी ही जल्दी देश एक स्थायी औद्योगिक शान्ति की राह पर अग्रसर होने लगेगा।" कई वर्ष बाद नए प्रगतिवाद के प्रवक्ता हर्बर्ट क्रोली ने भी मज़दूरो के सगठन बनाये रखने की जोरदार वकालत की। 'दि प्रामिस आव अमेरिकन लाइफ' में उन्होने लिखा : "मजदूर यूनियनो का पक्ष लिया जाना चाहिए क्योकि मज़दूर वर्ग की आर्थिक और सामाजिक हालत को सुधारने के लिये अभी इससे अच्छी कोई मशीनरी नही बन सकी है।"

लोगो का रवैया बदल रहा है यह बात इन वर्षों की सबसे महत्त्वपूर्ण

हड़तालो मे सरकार की कार्रवाइयो से भी पता चलती थी। क्योंकि जब ऐन्थ्रसाइट कोयला खनिक १९०२ में खान मालिको के साथ एक कठिन संघर्ष मे जूझ रहे थे तब राष्ट्रति रूजवेल्ट ने राष्ट्रपति क्लीवलैंड की तरह जिन्होंने १८९४ में शिकागो में संघीय सेनाएँ भेज दी थी, अपने प्रभाव का उपयोग हड़तालियो को कुचलने मे नही, बल्कि पंच-फैसला कराने में किया। यद्यपि उनका मुख्य लक्ष्य कोयले के संभावित अकाल को रोकना था तो भी इससे मज़दूरो की उचित शिकायतो के प्रति उन्होंने अपनी आँखे नही मूँदी।

१८७० के दशक की लम्बी हड़तालो और मौली मैगायर्स के विक्षोभकारी जमाने से लेकर अब तक मजदूरो द्वारा अपनी काम की हालतो मे सुधार के लिए सघर्प किये जाने पर कोयला खानो में समय-समय पर हड़तालें हो चुकी थी। किन्तु १८९० में जब तक यूनाइटेड माइन वर्कर्स का निर्माण नही हुआ तब तक वे खान मालिको की सयुक्त शक्ति के खिलाफ एक मजबूत मोर्चा नही लगा सके। किन्तु यह नई यूनियन पेंसिलवेनिया, ओहायो, इडियाना और मिशीगन की कोयला खानो मे मज़दूरो को सगठित करने मे कामयाब हुई और एक समझौते के द्वारा, जिसमें वेतन और काम के घण्टे दोनो निश्चित कर दिये गये थे, मालिको से पूरी मान्यता प्राप्त की। इस विजय से तरोताजा होकर इसने १८९० की दशाब्दि के अन्त में पूर्वी पेंसिलवेनिया की कोयला-खानो में भी अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया।

यहाँ इसका काम ज्यादा कठिन था। यहाँ खानो के मालिको का रेलवे कम्पनियो के मातहत एक ट्रस्ट बना हुआ था और वे यूनियनो को मान्यता देने के सख्त खिलाफ थे। इसके अतिरिक्त वहाँ के मज़दूरो में पोलो, हगेरियनो, स्लोवाको, इटालियनो तथा अन्य नवागन्तुकों की इतनी बहुतायत थी कि उनको एक सूत्र मे बाँधनेवाली कोई चीज़ नही थी। एकता के इस अभाव का खान मालिको ने पूरा लाभ उठाया और उनमें आपसी झगडे बढाने की उन्होंने हरचन्द कोशिश की।

इन बाधाओ के होते हुए युनाइटेड माइन वर्कर्स ने बहुत आहिस्ता-आहिस्ता प्रगति की, किन्तु यद्यपि इस कोयला क्षेत्र में उनकी सदस्य सख्या १० हजार से भी कम थी, तो भी सन् १९०० में हड़ताल की पहली पुकार पर

उसमे इससे १० गुना लोग शामिल हुए। खान मालिक इस 'हमले' का सामना करने को तैयार थे किन्तु मार्क हान्ना ने हस्तक्षेप करके उन्हें लम्बा संघर्ष टालने के लिए राजी कर लिया। हान्ना का ध्येय पूर्णतः राजनीतिक था। १६०० मे रिपब्लिक पार्टी समृद्धि के मंच पर, रात्रि-भोज का पूरः भरा पात्र जिसका प्रतीक था, चुनाव आन्दोलन कर रही थी और कोयले की हड़ताल दल के व्याख्याताओ के राग मे स्वर भग उत्पन्न कर देती। खान मालिको ने खनिको के साथ अनिच्छा से एक मौखिक समझौता कर लिया जिसका मतलब उनकी यूनियन को मान्यता देना नही था किन्तु वेतन मे १० प्रतिशत वृद्धि कर उसकी तात्कालिक मांगो की आशिक पूर्ति करना था।

किन्तु यह एक विराम सधि थी, समझौता नही। हडतालियो का वास्तविक उद्देश्य पूरा नही हुआ था और खान मालिकों को भी जरा सी भी रियायतें दे देने का अफसोस था। अवस्था मे जब कोई वास्तविक सुधार नही हुआ तो युनाइटेड माइन वर्कर्स ने १६०२ में और मांगे रखी और इस बार खान मालिको ने निश्चय कर लिया कि किसी भी राजनीतिक दवाव से सघर्ष को स्थगित नही होने देंगे। उन्होने खनिको के नए प्रस्तावो पर विचार करने या यूनियन के साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार रखने से स्पष्ट इकार कर दिया। तब दूसरी हडताल बुलाई गई और १।। लाख खनिक काम छोड़ कर खानों से बाहर आ गए।

मजदूरो की शिकायतें बिल्कुल वाजिब थी। किसी भी पैमाने से देखने पर भी तनख्वाहें बहुत कम थी, दिन में काम के घण्टे कठिन और खतरनाक थे और बार-बार काम से हटा दिए जाने के कारण रोजगार स्थायी न रहने से मजदूर की औसत वार्षिक आय सिर्फ ३०० डालर रह जाती थी। दुर्घटनाएँ सामान्य बात थी, जिनसे १६०१ में ४४१ व्यक्ति मरे और खान मालिकों ने सुरक्षा की अधिक अच्छी व्यवस्था करने अथवा चोटो के लिए अपने कर्मचारियो को मुआवजा देने के लिए कुछ नही किया। किन्तु कम वेतन और काम की खराब हालतो से भी ज्यादा भयावह बात कम्पनी के नगरो पर नियंत्रण के द्वारा खान मलिकों द्वारा चलाई जा रही सख्त सामन्ती प्रणाली थी। बाद मे सेम्युअल गौम्पर्स ने लिखा : "मजदूरो के जन्म के समय कम्पनी के डाक्टर ही उनकी देखभाल करते थे, कम्पनी के फ्लैट या झोपड़ी मे ही उन्हें

रहना पडता था, कम्पनी की दूकानो से ही सामान खरीदना पडता था और कम्पनी के कब्रिस्तान मे ही उन्हें दफनाया जाता था।"

९ मई, १९०२ की हडताल हो जाने पर खान मालिको ने तुरन्त ही ३००० पुलिस और उसके साथ १००० विशेष डिपुटी उस क्षेत्र मे झोक दिए। और वे हडताल-भंजको को भी लाने लगे, उन्होने झूठ-मूठ ही मज़दूरो के खिलाफ हिंसा, विध्वस और दगो के आरोप गढे और राज्य की मिलीशिया से भी सरक्षण की मांग की। हड़ताल को सम्पत्ति के अधिकारो और सार्वजनिक व्यवस्था के खिलाफ एक और अराजकतावादी और क्रांतिकारी विद्रोह बता कर उसका सामना करने की योजना बनाई गई।

इस प्रकार की उत्तेजना के बावजूद हिंसा का प्रायः बिल्कुल ही आश्रय नही लिया गया। यह सामान्यत इतनी शात हडताल रही जितनी कोयला खानो मे पहले कभी नही हुई थी। मजदूर खानो के बाहर रहे और उन्होने बिल्कुल निष्क्रिय रवैया अपनाया। हडताल से उनके परिवारो को जो कष्ट झेलने पडे उसके बावजूद मजदूर डटे रहे। आखिर तक के संग्राम के लिए भी वे तैयार थे। अपनी मागे पूरी होने तक खानो से कोयला न निकालने का उनका दृढ निश्चय था।

यह एकता और व्यवस्था मुख्यत युनाइटेड माइन वर्कर्स के अध्यक्ष के कुशल सचालन और मजदूरो पर उनके अच्छे प्रभाव के कारण कायम रह सकी। १८९८ से इस पद पर जॉन मिचेल काम कर रहा था। जब वह १२ वर्ष का लडका था तभी से उसने खानो में काम करना शुरू कर दिया था। यूनियन के अत्यन्त अंधकारपूर्ण दिनो मे वह उसके साथ रहा और ज्यादातर खानो मे काम करने वाले अनेक राष्ट्रीयताओ वाले मजदूरो के सगठन स्थापित करने के कारण २८ वर्ष की ही आयु में इसका नेता बन गया। पतले और मज़बूत, अपनी भूरी आंखो और सांवले चेहरे से ईटालियन-सा प्रतीत होने वाला मिचेल नरम स्वभाव का, यहा तक कि शर्मीला था। उसकी शक्ति इस बात में निहित थी कि यूनियन की राजनीति मे तथा मालिको के साथ सम्बन्धो दोनो मे नरम रवैया रखता था और बडे मामलो को छोडकर बाकी सब मामलो पर बीच का रास्ता निकालने के लिए तैयार रहता था।

अपने सामाजिक और राजनीतिक विचारो मे उस समय का कोई दूसरा

मजदूर नेता उससे ज्यादा रूढ़िवादी नही था, पंच-फैसले को स्वीकार करने के लिये उससे अधिक उत्सुक और रैडिकलवाद और हिंसा का उससे अधिक विरोध करने वाला नही था। १६०२ में पहले उसने हडताल का विरोध किया था, ऐन्थ्रसाइट (लपट न छोडने वाला कोयला) कोयला खानो मे खनिको की हडताल के समर्थन मे बिटुमिनस (लपट छोडने वाला कोयला) खनिको की हडताल बुलाने से वह लगातार इन्कार करता रहा क्योकि बिटुमिनस खनिको ने खान मालिको के साथ एक करार पर दस्तखत कर रखे थे और किसी भी समय विवादग्रस्त मामलो को पच-फैसले के लिए एक निष्पक्ष निकाय को सौपने के लिये तैयार था। उसने सुझाव दिया नेशनल सिविक फेडरेशन ५ व्यक्तियों की एक समिति नियुक्त कर दे या आर्क बिशप आयरलैण्ड, बिशप पौटर उनकी पसन्द के एक तीसरे व्यक्ति की समिति बना दी जाए।

उसने कहा कि "अगर वे यह निर्णय देगे कि ऐन्थ्रसाइट खनिको का औसत वार्षिक वेतन इतना पर्याप्त है कि खनिक माने हुए अमरीकी स्तर तथा अमरीकी नागरिकता के अनुरूप अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकते है और उन्हे निश्चित कर सकते है तो हम अधिक वेतन और अधिक न्यायोचित काम की हालतो की अपनी माँगो को वापस ले लेगे, बशर्ते कि ऐन्थ्रसाइट खानो के मालिक अपने कर्मचारियो की आय और उनकी काम की हालतो के बारे मे इस समिति की किन्ही भी सिफारिशो को मानने का वचन दे।"

एक तरफ मिचेल का यह नरम रुख था तो दूसरी ओर खान मालिको के सख्त-दिमाग प्रवक्ता जार्ज एफ. बेअर का रवैया बडा निष्ठुरतापूर्ण था। मिचेल के प्रस्तावों पर उसका जवाब था कि "ऐन्थ्रसाइट खानो से कोयला निकालना एक व्यावसायिक कारोबार है, धार्मिक, भावुकतापूर्ण जबानी जमाखर्च नही।" वह किसी भी लागत हर यूनियन को तोडने पर आमादा था। उसने यह स्पष्ट कह देने में कभी संकोच नही किया कि किसी भी झगडे को कभी भी बाहरी ग्रुप को नही सौपा जाएगा, यूनियन से सीधी बातचीत तो दूर की बात थी। खान मालिको के पितृवत् नियंत्रणो में उसका पूर्ण विश्वास था। इस अपील के जवाब में कि अपने क्रिश्चियन कर्तव्य के नाते उसे हड़ताल खत्म करानी चाहिए, उसने उन शब्दो में अपनी स्थिति स्पष्ट की जो 'न्यूयार्क टाइम्स' को भी बहुत कुछ ईश्वर-निन्दा प्रतीत हुई।

बेअर ने पत्रप्रेषक को लिखा : "मै प्रार्थना करता हूँ, आप निराश न हो। मजदूरो के अधिकारो और हितो की रक्षा मजदूर आन्दोलनकारी नहीं बल्कि वे ईसाई व्यक्ति करेगे जिन्हें ईश्वर ने अपनी असीम बुद्धिमत्ता से इस देश की सम्पत्ति का नियंत्रण सौपा है...।"

हडताल लम्बी चलने पर जब कोयले की कमी पडी और कीमतें चढ़ने लगी तो आम लोगो को भी अधिक चिन्ता होने लगी और वे समझौते की माँग करने लगे। आम लोगो की सहानुभूति जहाँ पहले खनिको के साथ थी वहाँ कजरवेटिव अखबार खुल्लमखुल्ला उत्पादन में रुकावट के लिए मजदूरो को ही दोष देने लगे और कोयला खानो में जब कभी किसी उपद्रव की खबर मिलती तो ये उसे बहुत बढा-चढाकर छापते थे। 'जर्नल आव कामर्स' में सुपरिचित स्वर मे कहा कि जो कुछ भी हो रहा है वह "हडताल नही, विद्रोह है" और न्यूयार्क इवनिंग पोस्ट ने हडताल का दमन करने के लिए "कठोर कदमो" की माँग की।

किन्तु खान मालको ने जब समझौते की तरफ एक भी कदम नही बढाया तब लोगो का समर्थन पुनः खानकर्मचारियों के पक्ष मे हो गया। बेअर ने जब अपने "दैवीय अधिकारो" का बखान किया तो अग्रलेखो और कार्टूनो में उसकी कडी निन्दा की गई और अनेक क्षेत्रो मे दुराग्रहपूर्ण हठ-धर्मिता के लिए उसकी अधिकाधिक आलोचना की गई। किन्तु देश को मुख्य दिलचस्पी न तो खनिको मे थी और न खानमालिको में। उसे तो कोयला चाहिए था। उस समय का लोकमत शायद 'न्यूयार्क हैरल्ड' के एक कार्टून में ज्यादा अच्छी तरह व्यक्त हुआ जिसमे जनता को विध्वंस के एक ढेर पर पडा दिखाया गया था, जिसको एक सिरे से खान मालिक और दूसरे सिरे से खनिक खीच रहे थे और उसके परिचय मे कहा गया था : "पीड़ित को इससे सरोकार नही कि पहले कौन हटता है।"

राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कोयलाखानो मे शाति की इस माँग के बल को अनुभव किया। श्रम संबंधी मामलो मे उनका अपना मन्तव्य कुछ द्वयर्थक था किन्तु अब उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि खानो को चलाया जाए। सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए वह कार्रवाई करने के लिए बाध्य हुए, क्योकि जैसा कि उनके पत्र-व्यवहार से पता चलता है कि उन्हे कोयले के अकाल की राजनीतिक

प्रतिक्रिया का डर था। उनका कार्यक्रम हड़ताल को कुचलना नही, बल्कि पच-फैसले के लिए मजबूर करना था, यद्यपि खान मालिक शर्मन अधिनियम के मातहत व्यापार मे बाधा डालने के एक षड्यंत्र के रूप मे यूनाइटेड माइन वर्कर्स के खिलाफ एक निरोधादेश की माँग कर रहे थे। इस उद्देश्य के लिए राष्ट्रपति ने खानमालिकों तथा हडताली नेताओ का एक सम्मेलन बुलाया जो ३ अक्तूबर को ह्वाइट हाउस मे हुआ था।

मिचेल जहाँ राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किसी भी कमीशन के फैसले को मानने के लिए तैयार था वहाँ बेअर ने एक बार पुन: पचफैसले से कोई सरो-कार रखने से साफ इन्कार कर दिया। खनिक नेता के नरम रुख के मुकाबले उसके सख्त और अड़गेबाजी के रवैये ने राष्ट्रपति को क्रुद्ध कर दिया। बेअर ने न केवल हडतालियो पर आक्षेप किए, बल्कि राष्ट्रपति को भी इस बात के लिए गुस्से से झिडक दिया कि वह "अराजकता तथा कानून को चुनौती देने की भावना भड़काने वालो से" समझौता वार्ता करने का यत्न कर रहे हैं। सम्मेलन में बड़ा गुलगपाडा मचा। बेअर के बारे मे रूजवेल्ट ने कहा बताते हैं कि "अगर मै इस उच्च पद पर न होता तो मैने उसे शरीर के निचले भाग और गर्दन से पकड़कर खिडकी के बाहर फेंक दिया होता।"

अब भी कोई भी कोयला खानो से नही निकाला जा रहा था। हड़ताल भजको की रक्षा के लिए यद्यपि उस क्षेत्र मे १० हजार सैनिक भेज दिये गए थे तो भी कोई भी खनिक काम पर वापस नही आ रहा था। जनता अधिका-धिक बेचैन हो उठी और अनुदार अखबारो ने भी अब कहना शुरू कर दिया कि खान मालिक लोकमत का समर्थन पाने का दावा गँवा बैठे है और उन्हें यूनाइ-टेड माइन वर्कर्स के साथ बातचीत के आधार पर हडताल का निवटारा कर लेना चाहिए। 'शिकागो इवनिंग पोस्ट ने लिखा : "और जनता बहुत देर तक' प्रतीक्षा भी नही करेगी......।"

रूजवेल्ट ने और भी ज्यादा सीधा हस्तक्षेप करने का निर्णय किया। उन्होने घटना-स्थल पर सेना भेजने की गुप्त रूप मे एक योजना बनाई, जिसके कमाण्डर को यह आदेश था कि वह खान मालिको से खानो की मिल्कियत छीनकर एक रिसीवर के तौर पर उन्हें चलाए और युद्धमत्री रूट को खान मालिको के पीठ पीछे की वास्तविक ताकत जे. पी. मार्गन को यह सूचित करने के लिये भेजा कि

अगर पंचफैसले से अब भी इन्कार किया गया तो राष्ट्रपति की यह वैकल्पिक योजना है। सरकार के इस सीधे दबाव के नीचे अन्तत. खान मालिको को झुकने के लिए राज़ी कर लिया गया। उन्होने राष्ट्रपति से एक पच-फैसला आयोग नियुक्त करने की प्रार्थना की किन्तु इस स्थिति मे भी उन्होने मामले को निबटाने मे राष्ट्रपति के प्रयत्नो मे बाधा डालना बन्द नही किया और कहा कि वे आयोग मे किसी मज़दूर सदस्य को स्वीकार नही करेंगे। बातचीत तब तक अधर मे लटकी रही जब तक राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने इस अतिम अड़चन को भी ग्रैण्ड चीफ आव रेलवे कण्डक्टर्स को मज़दूरो के प्रतिनिधि के बजाय "एक प्रमुख समाजशास्त्री" की हैसियत से आयोग का सदस्य बनाकर दूर नही कर दिया। २३ अक्तूबर को ५ महीने से भी अधिक समय पश्चात् जिसमे मज़दूर अपने सकल्प पर दृढ रहे, खनिक काम पर लौट गए।

राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त आयोग ने मार्च १९०३ मे दिए गए अपने पच फैसले मे वेतनो में १० प्रतिशत वृद्धि प्रदान की, विभिन्न वर्गों के कर्मचारियों के लिए काम के घण्टे कम करके ८-९ घण्टे कर दिए और आगामी तीन वर्षों में जब तक यह पंचाट लागू रहना था, उठने वाले झगडो को निबटाने के लिए एक विशेष बोर्ड नियुक्त कर दिया। खनिको की यूनियन को मान्यता नहीं मिली। उन्हें अपने पूरे उद्देश्यों की प्राप्ति नही हुई और उन्होने पचाट को अनमने भाव से स्वीकार किया। किन्तु खान मालिको के चट्टान की तरह कठोर विरोध के सामने उन्होने वास्तव में बडे महत्त्वपूर्ण लाभ प्राप्त किए जिससे ऐन्थ्रसाइट क्षेत्र में युनाइटेड माइन वर्कर्स की स्थिति बहुत मजबूत हो गई।

२०वी सदी के शुरू में जो लाभ प्राप्त किए गए उनके, और यूनियनो की कुल सदस्य सख्या १९०० मे ८,६८,५०० से १९०४ में २० लाख हो जाने और कोयला हड़ताल मे जनता द्वारा सामान्यतः अधिक सहानुभूतिपूर्ण रुख अपनाए जाने के बावजूद संगठित श्रमिको के लिए आगे मुसीबत के दिन थे। मालिक, जो कुछ अरसे तक यूनियनो को मान्यता देते हुए से प्रतीत हुए थे, यूनियनो की बढती हुई ताकत से चौकन्ने हो गए। मूलत. नेशनल सिविक फेडरेशन द्वारा प्रस्तुत औद्योगिक शांति के कार्यक्रम को लगभग धत्ता बताकर १९०३ में वे सगठित रूप से मज़दूरो को और ज्यादा लाभ प्राप्त करने से

रोकने में लग गए।

वे 'येलो डॉग करारो'* को प्रोत्साहन देकर मजदूरो को यह वचन देने पर ही काम पर रखने लगे कि वे किसी यूनियन मे शामिल नही होगे। उन्होने आव्रजक मजदूरो मे स्वाभाविक प्रतिद्वन्द्विता को बढ़ावा दिया जिससे वे मिल कर कोई काम न कर सके, मजदूर आन्दोलनकारियो के बारे में सूचनाएँ देने के लिए मजदूर गुप्तचर रखे, जिनकी रिपोर्ट पर बाद में उन्हें तुरन्त बर्खास्त कर दिया जाता था और क्रांतिकारी विचारो वाले मजदूरो की काली सूची का आदान-प्रदान किया गया। इस नए यूनियन-विरोधी अभियान मे बडी-बडी कम्पनियाँ बहुत क्रूरता से काम ले रही थी और षड्यन्त्र सम्बन्धी अभियोगो और निरोधादेशो मे सहयोग देने के लिए अदालतो से सफलतापूर्वक अपील करके उन्होने अपनी ताकत काफी वढा ली।

मशीनरी और धातु के व्यवसाय में पहले किए गए समझौते भग हो गए क्योकि इन दोनो मे मालिको की ऐसोसियेशन अपने पहले के मजदूर विरोधी रवैये पर लौट आयी। युनाइटेड स्टेट्स स्टील कम्पनी द्वारा यूनियन मजदूरो के साथ किसी भी हालत में कोई व्यवहार रखने से इन्कार कर देने पर लोहे का ढाँचा बनाने वाले उद्योग मे खुला सग्राम छिड गया जिसमे मजदूरो ने हिंसा और डाइनामाइट का आश्रय लिया। खाद्य पदार्थ पैक करने वाले कारखानो ने एक हडताल को दबा दिया जिसमे उसके कर्मचारियो ने सामूहिक सौदेबाजी की कोशिश की थी, शिकागो की डिलीवरी फर्मो ने मान्यता के लिए टीमस्टर्स की हडताल को कुचल डालने के लिए अपनी ताकत एकजूट कर ली। करीब-करीब हर क्षेत्र में सगठित मजदूरो को धक्का सा लगता प्रतीत हुआ जबकि मालिको ने, जो कुछ वर्ष पूर्व मजदूरो के साथ सौदेवाजी के लिए उद्यत प्रतीत होते थे, अब वैसा करने से इन्कार कर दिया।

स्वत नेशनल सिविक फेडरेशन का दिल बदल गया जव उससे देखा कि व्यावसायिक समझौते एक के वाद एक टूटते जा रहे हैं तो यूनियनो के निर्माण के लिए उसका पहले का उत्साह जाता रहा। इसके मालिक-सदस्य मज़दूरो

---

* 'येलो डाग करार', कर्मचारी के साथ किया गया वह करार होता है जिसमें वह यह घोषित करता है कि वह किसी यूनियन का सदस्य नहीं है और भविष्य में भी ज्व तक वह काम करेगा, किसी यूनियन में शामिल नहीं होगा।

के प्रति अपनी मित्रता का बखान तो अब भी करते थे किन्तु उनकी शक्ति मुख्यतः समाजवाद और 'बन्द शाप'* का मुकाबला करने में लगी हुई थी। गौम्पर्स, जो समाजवाद का उनसे कम विरोधी नही था, उनके साथ काम करता रहा किन्तु उसके द्वारा नेशनल सिविक फेडरेशन के कार्यो की वकालत किए जाने पर भी औद्योगिक झगडो मे उसकी निष्पक्षता पर से मज़दूरो का विश्वास उठ गया।

सब प्रकार के मज़दूर सगठनो के विरुद्ध ये औद्योगिक सस्थान थे जिन्होने १९०३ मे एक राष्ट्रीय सम्मेलन कर नागरिको का औद्योगिक ऐसोसियेशन कायम किया। लोकमत को मज़दूरो के विरुद्ध करने मे उसकी हलचलें व प्रचार काफी सफल रहा। १९०६ मे एक सम्मेलन के बाद जिसमे मालिको के करीब ४६८ ऐसोसियेशनो के लगभग इतने ही प्रतिनिधियो ने भाग लिया, अध्यक्ष सी. डब्लू पोस्ट ने उत्साहपूर्वक बताया कि सस्था कैसी प्रगति कर रही है। उसने कहा कि "दो वर्ष पूर्व अखबार और औपदेशिक मच मज़दूरो के उत्पादन के बारे मे उपदेश झाड रहे थे। अब यह सब कुछ बदल गया है क्योकि यह देखा गया है कि विशाल श्रमिक ट्रस्ट स्वतत्र मज़दूर और सामान्य अमरीकी नागरिक को सबसे ज्यादा सताता है। लोगो की आँखें खुल गई है और अब वे सतर्क है ....."

इसी समय इससे भी ज्यादा जोर मज़दूर-विरोधी अभियान निर्माताओ के राष्ट्रीय ऐसोसियेशन ने चलाया, जिसकी स्थापना तो १८९५ मे हुई थी किन्तु सगठित श्रमिको पर वास्तविक हमले उसने १९०३ में शुरू किए। इसका नारा और युद्ध-घोष था 'ओपनशाप' अर्थात् कोई व्यक्ति यूनियन का सदस्य हो या न हो, उसे काम पाने के अधिकार की गारण्टी हो। किन्तु व्यक्तिगत स्वाधीनता के नाम पर की गई इस अपील के पीछे यूनियन की मान्यता और सामूहिक सौदेबाजी दोनो के विरुद्ध प्रच्छन्न रूप से एक तीव्र आन्दोलन चलाया जा रहा था। निर्माताओ के राष्ट्रीय ऐसोसियेशन का कहना था कि वेतन और काम की हालतों के निश्चय का एकमात्र अधिकार उद्योग को है।

---

* 'बन्दशाप' वह सस्थान होता है जिसमें मालिक सिर्फ यूनियन के सदस्यों को ही काम पर रखता है, लेकिन जब यूनियन सदस्य न मिलें तो गैर-यूनियन सदस्य को भी काम पर ले सकता है। किन्तु इसे भी काम शुरू करने से पूर्व यूनियन का सदस्य बनना पडता है।

१६०३ के वार्षिक सम्मेलन में अध्यक्ष पैरी ने प्रतिनिधियों से कहा कि चूँकि संगठित मज़दूरो के सिद्धान्त और माँगें व्यक्तिवादी सामाजिक व्यवस्था में विश्वास रखने वाले व्यक्तियो को बिल्कुल भी मान्य नही है इसलिए नरमी के रवैये का मतलब होगा अपनी बुनियादी आस्थाओ के साथ सौदेबाजी करना......"महानतम खतरा यूनियन को मान्यता देने में है।" निर्माताओ के राष्ट्रीय ऐसोसियेशन ने पहले जारी किए गए एक पैम्फलेट मे, जिसका स्कूलो, गिरजाघरों, अखबारो और औद्योगिक पत्रो तक में प्रचार किया गया, स्पष्ट यह कहा गया कि "अगर भाषण और लेखन की स्वाधीनता के बारे मे गौम्पर्स-डेब्स के आदर्शो को हावी होने दिया गया तो न तो हमारी सरकार ही टिक सकती है और न उसकी स्वतन्त्र संस्थाएँ कायम रह सकती है।"

'ओपनशाप' के सिद्धान्त का, प्राय. इतनी दृढता से समर्थन किया जाता था, जितनी विशुद्ध आर्थिक दृष्टि से जरूरत नही थी, और इसका यूनियनो को कुचलने के लिए उठाए गए अत्यन्त कठोर कदमो को दर-गुजर करने या उन्हे उचित ठहराने के लिए उपयोग किया जाता था। इसका शायद सबसे सजीव चित्रण १६१३ मे कोलोरेडो फ्युएल ऐण्ड आयरन कम्पनी के कर्मचारियो की हडताल को कुचले जाते समय देखने को मिला। इस मामले मे वास्तविक विवाद युनाइटेड माइन वर्कर्स को मान्यता देने के बारे मे था, जिसने इस क्षेत्र मे अपने प्रतिनिधि भेज दिए थे। यह रियायत देने के बजाय कम्पनी ने किराये के जासूसो, विशेष डिपुटियो और राज्य की मिलीशिया की सहायता से हड-तालियो से जमकर लोहा लिया।

कोलोरेडो के खान क्षेत्रो में खुला संग्राम महीनो तक जारी रहा और अत मे अपनी खूनी चरमावस्था पर जा पहुँचा जबकि मिलीशिया ने लुडलो मे हडतालियो की एक बस्ती पर हमला किया। काफी देर तक मशीनगनो से अन्धाधुन्ध गोलियाँ बरसाए जाने के बाद उन तम्बुओ पर, जिनमे मज़दूरो के परिवार रह रहे थे, तेल छिडक कर आग लगा दी गई। आग की लपटो से बचने के लिए स्त्री-बच्चे खान मे भाग निकले और एक अग्निकाण्ड मे ११ बच्चे और दो स्त्रियाँ जलकर या दम घुटकर मर गई। इस हत्याकाण्ड से राष्ट्र दहल उठा किन्तु फिर भी कोलोरेडो फ्युएल ऐण्ड आयरन कम्पनी ने हड़ताल

खत्म करने के लिये यूनियन से वार्ता के प्रश्न पर विचार करने से इकार कर दिया ।

कम्पनी पर राकफेलर के हितो का नियन्त्रण था और जब खानों व खनन पर प्रतिनिधि सभा की एक समिति ने हडताल की जाँच की तो जॉन डी० राकफेलर जूनियर को गवाह के रूप में मच पर बुलाया गया। उससे जब पूछा गया कि "लोगो की हत्या और बच्चो को गोली मार दिए जाने के बाद" क्या उन्होंने यह महसूस नही किया कि औद्योगिक शाति की पुन स्थापना के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिएँ, तो राकफेलर ने जवाब दिया कि "खनिको की बात मानने के बजाय उनकी कम्पनी किसी भी हद तक जाने को तैयार है। उन्होंने कहा कि हडताल का निबटारा करने का एकमात्र उपाय सब खानो का यूनियनीकरण है, किन्तु हम उसे स्वीकार नही कर सकते क्यो कि "मजदूरो के हितो में हमारी दिलचस्पी इतनी गहरी है और हमारा दृढ विश्वास है कि उस दिलचस्पी का यह तकाजा है कि कैम्प खुले कैम्प रहें और हम किसी भी हालत मे अपने अफसरो का समर्थन करेंगे।" उन्हें विशेष गुस्सा इस बात पर था कि बाहर के लोग आकर उन लोगो को उभाडने की कोशिश करें जो "अपने काम की हालतो से पूर्णत. सन्तुष्ट है।" इस बारे मे कोई आत्म-समर्पण नही किया जा सकता। राकफेलर ने कहा कि "इसी प्रकार के एक सिद्धान्त पर क्राति की लडाई लडी गई थी। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण किस्म का महान् राष्ट्रीय प्रश्न है।"

कर्मचारियो के सगठनो के निर्माण के कड़े विरोध का यह अकेला उदाहरण नही है और रोज़गार के लिए यूनियन से अलग रहने की शर्त रखने में अदालतो ने मालिको का पक्षपोषण किया।

१८९८ में कांग्रेस ने एक एर्डमैन अधिनियम पास किया था जिसमे अन्तर्राज्यीय रेलो द्वारा यूनियन की सदस्यता के कारण कर्मचारियो के खिलाफ भेद-भाव करने की मुमानियत की गई थी। १० वर्ष बाद अडेयर बनाम यूनाइटेड स्टेट्स के मामले मे सुप्रीमकोर्ट ने एर्डमैन अधिनियम की इस धारा को व्यक्तिगत स्वाधीनता तथा सम्पत्ति के अधिकार दोनो पर चोट करने वाली बता कर उसे अवैध करार दिया। १९१५ में कौपेज बनाम कसास के एक अन्य मामले में ऐसे ही एक अन्य कानून को भी सुप्रीमकोर्ट ने अवैध घोषित

कर दिया और उसके बाद वेस्ट वर्जीनिया में हिचमैन कोल ऐण्ड कोक कपनी की प्रार्थना पर दिए गए एक निरोधादेश को बहाल रखा जिसमें-युनाइटेड माइन वर्कर्स को "येलो डॉग करार" के मातहत यूनियन में शामिल न होने के लिए मजबूर किए गए कर्मचारियो को सगठित करने से मना किया गया था।

यूनियन के निर्माण में कानूनी बाधाओं की आलोचना सुप्रीमकोर्ट में भी हुई। न्यायाधीश ओलिवर वेण्डल होम्स ने इन बाधाओ से तीव्र असहमति व्यक्त की। कौपेज के मामले में उन्होने कहा "वर्तमान अवस्थाओं में एक मजदूर स्वभावत: यह समझ सकता है कि यूनियन से सम्बद्ध होकर ही वह अपने लिए एक न्यायोचित करार पा सकता है ..। अगर कोई युक्तियुक्त आदमी यह विश्वास करता है तो मुझे लगता है कि उन पार्टियो को जिनमें करार की स्वाधीनता की शुरूआत होती है, समान स्थिति मे लाने के लिए कानूनन इस पर अमल कराया जा सकता है। अन्ततोगत्वा इस प्रकार का कानून बनाना मजदूरों के हित में होगा या नही, इससे मुझे कोई सरोकार नही। किन्तु मेरा यह दृढ मत है कि अमरीका के संविधान मे इसको रोकने वाली कोई चीज़ नहीं है ..।" किन्तु सुप्रीमकोर्ट में उनके अन्य भाई उनकी युक्तियों से प्रभावित नही हुए। 'येलो डॉग' करारो को लागू करने के निर्णय तब तक कायम रहे जब तक कि १९३२ में नौरिस ला गार्दिया कानून बनने के साथ सरकार की नीति अन्तत: उलट नही गई।

यूनियनो द्वारा किए जाने वाले बहिष्कारो पर प्रत्याक्रमणों में भी अदालतो ने मालिको का साथ दिया। अमरीकी मजदूर सघ ने यूनियनों को मान्यता दिलाने मे इस हथियार को बडा कारगर पाया था। अपने सदस्यों को यह कह कर कि वे उन मालिको का माल न खरीदें जहाँ यूनियन को मान्यता नही दी गई है, बहुत-से अक्खड़ मालिकों को सीधा कर दिया गया था। इस स्थिति का सामना करने के लिए एक अमेरिकन बायकाट विरोधी ऐसोसियेशन की स्थापना की गई जो मालिकों को इस आधार पर अदालतों में जाने में सहयोग देती थी कि इस प्रकार के बहिष्कार-व्यापार में रुकावट डालने वाले षड्यन्त्र हैं और सम्पत्ति के अधिकारो की "सम्भावित आसाओं" में 'द्वेषपूर्ण' बाधा डालने के कारण उन पर निरोधादेश लागू

किया जा सकता है। दो महत्वपूर्ण मामले जिनमें ये प्रश्न उलझे हुए थे, १६०२ और १६१६ के बीच अदालतों में खिंचते रहे किन्तु जब उनका निर्णय हुआ तो दोनों में मज़दूरों की पूरी हार हुई।

१६०२ में युनाइटेड हैटर्स ने मान्यता प्राप्त करने के लिए एक स्थानीय यूनियन की हड़ताल के समर्थन में डैनबरी (कनेक्टिकट) की डी. इ. लोवे ऐण्ड कम्पनी के टोपों के खिलाफ़ एक राष्ट्रव्यापी बहिष्कार घोषित किया था। कम्पनी ने तुरन्त ही युनाइटेड हैटर्स पर शर्मन अधिनियम की धाराओं को तोड़-कर व्यापार में बाधा उत्पन्न करने के षड्यंत्र का आरोप लगा कर मुकद्दमा चला दिया और स्थानीय यूनियन के हड़ताल करने वाले सदस्यों से व्यक्तिगत: तिगुने हर्जाने का दावा किया। काफी अरसे तक कानूनी दाँव-पेंच चलते रहने के बाद १६१६ में कम्पनी की जीत हुई और उसका २,५२,००० डालर का हर्जाना स्वीकार किया गया। यूनियनों के सदस्यों का बैंकों में जो हिसाब था, वह कुर्क कर लिया गया: उनके मकानों को गिरवी से न छुटा सकने की प्रक्रिया जारी की गई किन्तु अन्त में जुर्माना राष्ट्रीय यूनियन और ए. एफ़. एल. के चन्दों से अदा कर दिया गया।

डैनबरी हैटर्स के मामले से मज़दूरों में क्रोध की लहर फैल गई क्योंकि इससे गौण बहिष्कार भी शर्मन अधिनियम की पाबन्दी के अन्तर्गत आ गए और सदस्यों से व्यक्तिगत रूप से हर्जाना लिया जा सकता था। किन्तु अमरीकी मज़दूर संघ अभी जब अदालतों की भूल-भुलैया में से अपना रास्ता निकाल रहा था तब वह स्वयं ही एक अन्य झगड़े में उलझ गया जिसके इससे भी व्यापक परिणाम हुए। १६०८ में सेण्ट लुई की बक्स स्टोव और रेंज कम्पनी के धातु पर पालिश करने वाले कर्मचारियों ने ६ घण्टे के दिन के लिए हड़ताल कर दी और सहायता की अपील की। ए. एफ़. एल. ने अमेरिकन फेडरेशनिस्ट में कम्पनी को 'हम इसका माल नहीं खरीदते' की सूची में रखकर और यूनियन के सब सदस्यों को उसके माल का बहिष्कार करने का आह्वान कर उसकी मदद की। बक्स स्टोव ऐण्ड रेंज कम्पनी तथा अमरीकी निर्माताओं के ऐसो-सियेशन दोनों के अध्यक्ष जे. डब्ल्यू. वान क्लीव ने, जो सब यूनियनों का पक्का दुश्मन था, तुरन्त ही निरोधादेश प्राप्त कर लिया, जिसमें न केवल ए. एफ़. एल. के अधिकारियों और सदस्यों को उसकी फ़र्म को "हम इसका माल नहीं

खरीदते" सूची में से निकाल देने का आदेश दिया गया बल्कि यह भी कहा गया कि धातु पर पालिश करने वालो की हड़ताल की तरफ कुछ लिख कर या मुँहज़बानी भी लोगो का ध्यान न खीचा जाए ।

ए. एफ. एल. ने अदालत के इस व्यापक आदेश को मानने से इन्कार कर दिया । गौम्पर्स ने कम्पनी का नाम यद्यपि सूची में से हटा लिया तो भी वह यह कहता रहा कि यूनियन के सदस्यो को बक के स्टोव और रसोई का सामान खरीदने को मजबूर नही किया जा सकता । इस पर उसे अदालत की मानहानि करने का अपराधी पाया गया और एक वर्ष कैद की सजा दी गई । फेडरेशन के दो अन्य अधिकारियो को भी अपराधी घोषित कर हलकी सज़ाएँ दी गई । किन्तु गौम्पर्स ने यह सजा कभी भुगती नही । वान क्लीव की मृत्यु के बाद और मूल निरोधादेश वापस ले लिए जाने के बाद भी अदालती कार्रवाई चलती रही किन्तु अन्त मे केस को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया । इसके फलस्वरूप ए. एफ एल. के नेता यद्यपि जेल जाने से बच गए तो भी उनका दण्डित किया जाना एक बडा धक्का था जिसने निरोधादेश सम्बन्धी कानून के खिलाफ मज़दूरो को पहले से भी ज्यादा उभार दिया । गौम्पर्स उस स्थिति को सहन नही कर सका जब उसके रूढिवादी, मालिको के दोस्त और मजदूर-क्राति का कट्टर दुश्मन होते हुए भी सरकार ने उस पर ऐसे आक्षेप किए मानो वह कोई क्रातिकारी या अराजकतावादी हो ।

इन तथा अन्य निर्णयो से, जिसमें मालिको को खूब खुलकर निरोधादेश दिए गए, मजदूरो को ऐसा लगा कि पुराने षड्यन्त्र विरोधी कानून, जिनके खिलाफ वे प्राय. सघर्ष करते रहे थे, फिर से जीवित किए जा रहे है । जो सिद्धान्त दाँव पर लगे हुए थे उनका १६वी सदी के प्रारम्भ के कानूनी मामलो से बहुत सादृश्य था । मजदूरो ने महसूस किया कि वे सगठन बनाने और हड़ताल करने के अपने बुनियादी अधिकारो के लिए अदालतो के खिलाफ लड़ रहे है जो यूनियन सम्बन्धी गतिविधियो को व्यापार मे बाधा डालने वाली बताकर उन पर प्रतिबन्ध लगाते हुए पूर्णत. मालिको के कैम्प मे चली गई है । एक समय स्वीकृत इस सिद्धान्त का कि हडतालो और बहिष्कारो के जरिये सम्पत्ति के अधिकारो की सभावित क्षति काम की हालतो में सुधार करने के मजदूरो के वाजिब उद्देश्य की मात्र आनुषगिक चीज है, उन परिस्थितियो में

प्रतिवाद किया जा रहा था जो यूनियनो के अस्तित्व तक को खतरे में डालने वाली प्रतीत हो रही थी।

अमरीकी मज़दूर सघ ने इन प्रतिबन्धो से कानूनी राहत पाने की कोशिश करना जरूरी समझा। यह अब भी सीधा राजनीति मे भाग नही लेना चाहता था और आर्थिक प्रणाली मे सुधार की कोशिश करने का भी उसका कोई इरादा नही था। उत्पादन के साधनो पर सरकारी स्वामित्व का अपना कार्यक्रम अपनाए जाने के फिर से रखे गए समाजवादियो के प्रस्ताव को ठुकराते हुए गौम्पर्स ने १९०३ में कहा : "आर्थिक दृष्टि से तुम्हारी बात लाभदायक नही, सामाजिक दृष्टि से तुम गलत हो, औद्योगिक दृष्टि से तुम्हारी बात असंभव है।" और गौम्पर्स के इस कथन की २१४७ वोट के मुकाबले ११२८२ वोटो से पुष्टि कर दी गई। किन्तु यूनियनो को जिन बन्धनो मे जकड़ दिया गया था उनसे किसी तरह उन्हें मुक्त करना था। सगठन बनाने, सामूहिक सौदेबाजी करने, हडताल व बहिष्कार करने तथा धरना देने के अधिकारो की रक्षा तात्कालिक चिन्ता का महत्त्वपूर्ण विषय बन गई।

इस प्रकार के उद्देश्यो के समर्थन मे ज्यादा कारगर राजनीतिक दबाव डालने की कोशिश मे पहला कदम १९०६ में उठाया गया जबकि ए. एफ. एल. ने राष्ट्रपति और कांग्रेस को एक शिकायत-पत्र प्रस्तुत किया। इसमे वे अधिकाश परम्परागत मांगें शामिल थी जो मजदूर गृहयुद्ध के बाद से पेश करते आ रहे थे और देश भर मे प्रगतिशील लोग जिन चीजो को बढावा दे रहे थे, उनकी इसमें वकालत की गई थी। किन्तु इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण मांगें थी—मजदूर यूनियनो पर शर्मन अधिनियम लागू न किया जाए और निरोधादेश से राहत प्रदान की जाए, जिसे न्यायपालिका द्वारा विधानमण्डल के हडपे जाने का प्रतीक बताया जाता था। शिकायत-पत्र मे अन्त मे कहा गया था : "हमने अपनी शिकायतें दूर करने के लिए चिरकाल तक व्यर्थ मे प्रतीक्षा की है .... अब मज़दूर आप से अपील करते है और आशा करते है कि यह व्यर्थ नही जाएगी। किन्तु अगर किसी वजह से आपने हमारी बात पर ध्यान नही दिया तो हम समर्थन के लिए अपने साथी नागरिको की अन्तरात्मा से अपील करेंगे।"

कांग्रेस ने मज़दूरो के प्रवक्ताओ की बात अनसुनी कर दी। मज़दूर जो

बिल पेश कराना चाहते थे, उन्हे दरगुजर कर दिए जाने या धत्ता बता दिए जाने पर ए. एफ. एल. ने १९०६ के कांग्रेस के चुनावो में सक्रिय भाग लिया। इसने न केवल यह अपील की कि मज़दूरो की आकाड्क्षाओ के प्रति सद्भावना रखने वाले काग्रेस के उम्मीदवारो का समर्थन किया जाए बल्कि जहाँ किसी भी दल ने कोई स्वीकार्य 'उम्मीदवार खड़ा' नही किया था वहाँ इसने एक ट्रेड्यूनियनिस्ट को खडा करने की सलाह दी। दो वर्ष बाद गौम्पर्स ने समर्थन के लिये दोनो पार्टियो के सम्मेलन से अपील की। रिपब्लिकनो ने तो उसकी पूर्णत. उपेक्षा कर दी किन्तु डेमोक्रैटो ने अपने कार्यक्रम मे निरोधादेशो को हटवाना शामिल कर लिया। तब अमेरिकन फेडरेशनिस्ट ने विलियम होवार्ड टैफ्ट का, जिनपर निरोधादेश जारी करने वाला जज कहकर आक्षेप किया जाता था, खुल्लमखुल्ला विरोध करने का अगला कदम उठाया और निश्चित रूप से विलियम जेनिंग्स ब्रायन का समर्थन किया। जब टैफ्ट चुन लिये गये और रिपब्लिकन मजदूरो की उपेक्षा करते रहे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि श्रमिको ने डेमोक्रैटो का और ज्यादा समर्थन करना शुरू कर दिया है। १९१२ के चुनावों मे यद्यपि ए. एफ. एल. टैफ्ट पर आक्षेप करता रहा तो भी रूजवेल्ट और विल्सन के बीच उसने बड़ी सावधानी से तटस्थता का रवैया बनाए रखा।

गौम्पर्स ने इन राजनीतिक पैतरेबाज़ियो की जोरदार वकालत की और कहा कि मजदूरो के दोस्तो को पुरस्कृत करने और उसके दुश्मनो को दण्डित करने की ए. एफ. एल. की जो परम्परागत नीति चली आ रही है वह इनसे किसी भी प्रकार भंग नही होती। उसके कथनानुसार यूनियनो को वर्तमान प्रतिबंधों से मुक्त करने के लिए कानून की जरूरत है और इस विषय मे रिपब्लिकनो की अपेक्षा डेमोक्रैटो का रवैया ज्यादा सहृदयता और सहानुभूति का रहा है। ए. एफ एल. के मुखिया ने १९०८ मे कहा. "इस समय एक राजनीतिक दल के समर्थन का अपने पवित्र कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए मजदूर किसी एक पार्टी की तरफदारी नही बल्कि एक सिद्धान्त की तरफदारी कर रहे है।"

विल्सन की सरकार से पूर्व इस प्रकार की राजनीतिक गतिविधियाँ सफल रही हो, यह बहुत संदिग्ध है। राज्यो के विधानमण्डलो ने अनेक ऐसे कदम उठाए जिनसे औद्योगिक श्रमिको की, विशेषकर स्त्रिओ व बच्चो की हालत

काफी सुधरी किन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है, ये कदम सगठित मजदूरो के राजनीतिक दबाव के वशीभूत होकर नही बल्कि इस प्रगतिशील युग में सामाजिक दायित्व की भावना से प्रेरित होकर उठाए गए थे। ये मानवता की दृष्टि से उठाए गए थे। मजदूरो के अधिकारो—यूनियन की मान्यता और सामूहिक सौदे-बाजी—से उतना सरोकार नही था जितना एक औद्योगिक-समाज के सामान्य पहलुओ से, जो इतनी अधिक गरीबी, बीमारी और जुर्मो को प्रश्रय देता है।

इसके अलावा मजदूर यद्यपि इन सुधारो के समर्थक थे तो भी ए. एफ. एल. और गौम्पर्स की विचारधारा के अनुसार उनकी उन्हें बहुत चिन्ता नही थी। राज्य के प्रति शंकालु गौम्पर्स मजदूरो के हितो की रक्षा के लिए सरकार पर निर्भर नही रहना चाहता था। उद्योग मे स्त्री व बाल मजदूरो की रक्षा के लिए वह कानून बनाए जाने का पक्षपाती था किन्तु वह नही चाहता था कि यूनियन के सदस्यों के लिए काम के घण्टे और वेतन कानून द्वारा निश्चित किए जाएँ। उसकी राय मे मजदूरो की काम की सामान्य हालतो मे सुधार का एकमात्र उपाय सगठित श्रमिको का आर्थिक दबाव था। राज्य से उसकी यही आकाक्षा थी कि वह इस प्रकार का दबाव डालने का मजदूरो का अधिकार स्वीकार करें।

वस्तुत अनुदार औद्योगिक नेताओ मे स्वच्छन्द अर्थव्यवस्था का ए. एफ. एल. के मुखिया से बड़ा हिमायती और कोई न था। १९१५ मे अमरीकन फेडरेशनिस्ट के एक अग्रलेख मे गौम्पर्स ने इसकी जोरदार वकालत की और जिस वाक्यावली का उसने इस्तेमाल किया वह १९३० के दशक की राजनीतिक बहसो के प्रकाश में सुपरिचित सी प्रतीत होती है।

उसने सवाल किया . "हम किधर भटके जा रहे हैं ? अगर कपास के लिए कोई बाजार नही है तो कपास उगाने वाले कानून की माँग करते है। अगर वेतन कम है तो उसके लिए कानून या कमीशन का इलाज प्रस्तुत किया जाता है। इस मनोवृत्ति का परिणाम सिवाय इसके और क्या हो सकता है कि लोगो का नैतिक चरित्र कमजोर हो जाए। जहाँ अपने जीवन को अधिक से अधिक सुखी बनाने के किए जिम्मेदारी वहन करने की इच्छा का अभाव है वही एक दृढ, ओजस्वी मेहनत मांगने वाली आजादी और सकल्प शक्ति नही

रह सकती...हम अमरीका के मजदूरो के जीवन, आचरण और आजादी की छानबीन, और नियम के लिए सरकार के हाथ में ज्यादा ताकत नही सौंपना चाहते।"

तो भी इस प्रगतिशील युग में किए गये आर्थिक और सामाजिक सुधार महत्त्वपूर्ण थे और प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उससे मजदूरो को बहुत लाभ पहुँचा। १९१२ तक कोई ३८ राज्यो मे बाल-श्रम के सम्बन्ध मे कानून पास किए गए, जिनमें काम पर रखते समय बच्चो की आयु, उनके लिए काम के घण्टे और उनके स्वास्थ्य तथा सुरक्षा की देखभाल के नियम तय कर दिए गए और २८ राज्यो में महिला श्रमिको के लिए काम के अधिकतम घण्टे नियत कर उन्हे सरक्षण प्रदान किया गया। १९१५ तक कम-से-कम ३५ राज्यो मे मजदूरो के लिए मुआवजे के कानून बना दिए गये जिनमे औद्योगिक दुर्घटनाओ की हालत मे अनिवार्य मुआवजे की व्यवस्था थी। ये उत्तरवर्ती कदम प्राय: अपर्याप्त थे और उन पर सदा कारगर ढग से अमल नही होता था तो भी ये खानो व कारखानो में मजदूरो के स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के लिए मालिको की जिम्मेदारी निश्चित करने में महत्त्वपूर्ण प्रगति के द्योतक थे।

सामान्य अधिकतम घण्टे का कानून पास करने की भी शुरूआत हुई। राज्यो द्वारा इस प्रकार का कानून बनाए जाने की मॉग पर, जो १८४० और फिर १८६० के दशक में खूब जोरो से उठाई गई थी मजदूरो ने उतना जोर नहीं दिया था, जितना इस पहले के जमाने में दिया गया था। काम के घण्टे कम करने के लिए यूनियनो ने कानून के बजाय सामूहिक सौदेवाजी पर ज्यादा निर्भर किया। किन्तु मजदूर आन्दोलनो की वजह से नही वल्कि प्रगतिशीलता की भावना से कोई २५ राज्यों ने इस जमाने में ऐसे कानून वनाए जिनके द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के हित मे पुरुषो व स्त्रियो दोनो के लिए काम के घण्टे सीमित कर दिए गए। अधिकतम घण्टो के पहले कानून से ये कानून इस चीज में वहुत भिन्न थे कि "विशिष्ट करारो" को मुक्त रखने की धारा अंतिम रूप से निकाल दी गई। राज्यो के काम के घण्टो से सवन्धित कानून पहली वार अमल मे लाए जा सके।

शुरू में अदालतो ने मजदूर सम्वन्धी अधिकाश कानूनो को पास होने से रोक दिया था। उनकी दलील थी कि राज्य अपनी पुलिस-सत्ता का उपयोग

इस हद तक नही कर सकती कि या तो वह मालिक के सम्पत्ति के अधिकार मे दस्तंदाजी करे या अपनी इच्छानुसार कैसा भी करार करने की मज़दूर की व्यक्तिगत स्वाधीनता मे बाधा डाले। सन् १९०५ में लोकनर बनाम न्यूयार्क केस मे, जिसमे बेकरी कर्मचारियो के लिए काम के अधिकतम घण्टो के नियमन को अवैधानिक करार दिया गया था, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि १४वे संशोधन की उचित प्रक्रिया सम्बन्धी धारा में दी गई स्वाधीनता की गारण्टी से इस प्रकार का कानून बनाए जाने पर प्रतिबन्ध है। किन्तु अदालत ने शनै-शनै: वैधानिक सरक्षणो की अधिक उदार व्याख्या करनी शुरू कर दी और अन्त मे उसने पुरुषो व स्त्रियो दोनो के लिए काम के अधिकतम घण्टो के नियमन को उचित ठहराया और मजदूरो को मुआवजा दिए जाने के नए कानून को भी स्वीकार कर लिया। किन्तु इसके बाद जब न्यूनतम वेतन सम्बन्धी कानून बनाने की कोशिश की गई तब सुप्रीम कोर्ट मे इस प्रकार के कानून की वैधानिकता के बारे मे बराबर वजन के दो मत हो गए और सात राज्यों मे जिस रूप मे ये कानून पास किए गये उसकी वैधानिकता सदिग्ध बनी रही। यह मामला फिर १९२३ तक निर्णय के लिए नही आया और तब ऐडकिन्स बनाम चिल्ड्रन्स हौस्पिटल के मामले मे कोर्ट ने यह फैसला दिया कि वेतनों पर पाबन्दियाँ करार की स्वाधीनता से मेल नही खाती। यह निर्णय १९३७ तक कायम रहा जब कि सुप्रीम कोर्ट ने अन्तत. यह स्वीकार कर लिया कि रोजगार की वर्तमान परिस्थितियो मे करार की स्वाधीनता एक काल्पनिक चीज है और वह काम के घण्टे या वेतन निश्चित करने के बारे मे मजदूर की व्यक्तिगत स्वाधीनता की किसी भी प्रकार रक्षा नही करती।

सामान्यत औद्योगिक कर्मचारियो के पक्ष मे राज्यो के कानून यद्यपि वृद्धावस्था की पेंशन और बेकारी के बीमे के मामले में समकालीन यूरोपीय परीक्षणो से अब भी बहुत पीछे थे फिर भी रूज़वेल्ट और टैफ्ट के प्रशासन मे उन्होने पर्याप्त उपलब्धियाँ हासिल की। जैसा कि कहा जा चुका है, राष्ट्रीय स्तर पर सन्तोष नही किया जा सकता था। १९०६ में ए० एफ० एल० ने जो शिकायत-पत्र प्रस्तुत किया था उस पर लगता था कि प्रतिनिधि-सभा और सेनेट दोनो मे विरोधी रुख रखने वाली समितियो ने विचार करना सदा के लिए मुल्तवी कर दिया था। यूनियन की सुरक्षा के लिए इसमें सुझाई गई

सामान्य बातो को कानूनी रूप देने में कोई प्रगति नही हुई। जैसा कि अनेक मामलो में की गई कार्रवाई से जाहिर हुआ, शर्मन अधिनियम के अन्तर्गत निरोधादेश और यूनियनो का उत्पीडन मजदूरो के दुश्मनो के हाथ में उत्तरोत्तर शक्तिशाली हथियार बनते चले गए। १६१० मे चुनी गई डैमोक्रैटिक प्रतिनिधि-सभा का रवैया मजदूरो के प्रति अधिक अनुकूल रुख का पहला संकेत था। अन्त मे सरकारी कार्यो मे ८ घण्टे के दिन का कानून पास किया गया, "औद्योगिक स्थिति मे असन्तोष के मूल कारणो की जाँच के लिए" एक औद्योगिक सम्बन्ध आयोग स्थापित किया गया और एक श्रम-विभाग की स्थापना की व्यवस्था की गई जिसका उद्देश्य विशेष रूप से मजदूरो के हितो को बढावा देना था। किन्तु राष्ट्रीय सरकार द्वारा अधिक व्यापक कानून बनाए जाने का जहाँ तक सवाल है, वास्तविक मोड बिन्दु सन् १६१२ के चुनाव तक नही आया।

विल्सन ने "नई स्वाधीनता" मे मालिको और कर्मचारियो के आपसी सम्बन्धो के बारे मे प्रचलित कानूनो को "गए-बीते और असम्भव" बताकर उनकी निन्दा की। कांग्रेस मे उनके उद्‌घाटन भाषण में ऐसा कानून बनाने की आवश्यकता पर और बल दिया गया जो न केवल मज़दूरों के जीवन को सुरक्षा प्रदान करने वाला, उनके काम की हालतो में सुधार करने वाला और काम के युक्तियुक्त और सह्य घण्टे नियत करने वाला हो, बल्कि उन्हे "अपने हित मे कार्य करने की स्वाधीनता" देने वाला भी हो। उन्होने प्रतिवाद किया कि इस प्रकार के कानून को 'वर्गीय' कानून कहा जा सकता है और बताया कि वे समस्त लोगों के हित मे है। अपनी स्थिति की इस प्रकार से वकालत किए जाने पर मजदूरों को खुशी हुई और विश्वासपूर्वक वे यह आशा करने लगे कि निरोधादेशो और षड्यन्त्र सम्बन्धी अभियोगो के बारे मे सुधार करने वाले कुछ कानून पास होगे जिनके लिए वे चिरकाल से असफल प्रयत्न करते आ रहे थे। गौम्पर्स ने कहा "हम अब जंगल मे नही भटक रहे। अब हम सिर्फ पौध लगाने की मौसम मे नही है, हम फसल काटने की मौसम में है।"

कुछ अरसे तक तो यह आशावाद फलीभूत होता दिखाई दिया। १६१४ मे कांग्रेस ने लेटन अधिनियम पास किया जिसने पहले के ट्रस्ट विरोधी कानूनो को मजबूत किया और मजदूरो के अधिकारो से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण

धाराएँ शामिल की। इसमे विशेष रूप से घोषित करते हुए कि "मनुष्य का श्रम सौदे की वस्तु नही है," कहा गया कि ट्रस्ट विरोधी कानून में किसी बात का यह अर्थ नही लगाया जाना चाहिए कि वह यूनियन बनाने से मना करता है, यूनियनो को अपने वाजिब कार्य करने से "कानूनन" रोकता है या उन्हे वाणिज्य में बाधा डालने वाला गैरकानूनी साँठ-गाँठ समझता है। इससे भी बढ कर इसमे मालिको और कर्मचारियो के झगड़े मे निरोधादेश का प्रयोग गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, "बशर्ते कि सम्पत्ति के अधिकार की अपूरणीयक्षति को जिसकी पूर्ति के लिए कानून मे कोई पर्याप्त व्यवस्था नही है, रोकने के लिए निरोधादेश जारी करना जरूरी न हो।"

गौम्पर्स ने इस कानून को मजदूरो का 'महाधिकार-पत्र' कहकर और सगठन करने, सामूहिक सौदेबाजी करने, हडताल करने, बहिष्कार करने, और धरना देने के मज़दूरो के अधिकारो की अंतिम गारण्टी कहकर इसका स्वागत किया। नए कानून की प्रभावशालिता के बारे मे अन्यो की राय भिन्न थी। वाल स्ट्रीट जर्नल ने यद्यपि काग्रेस को .."मज़दूर अधिपति द्वारा अपना अगूठा झुकाए जाने की प्रतीक्षा करते हुए डरपोक कायरो की समवेत भीड" बताया तो भी अनेक अखबारो के अग्रलेखो मे, और राजनीतिक नेताओ तथा कुछ मज़दूर प्रवक्ताओ के वक्तव्यो मे भी यह बताया गया कि क्लेटन अधिनियम की सावधानतापूर्ण शब्दावली जाहिर करती है कि मजदूरों ने वस्तुतः कोई नए अधिकार प्राप्त नही किए है और निराधादेशो को वाकई गैरकानूनी घोषित नही किया गया है। किन्तु गौम्पर्स इन सब व्यावहारिक व्याख्याओ की उपेक्षा कर उसे मजदूरो की एक महान् विजय कहता रहा और इस खुशखबरी को सर्वत्र फैलाता रहा। शायद अपनी अब तक की नीतियो का औचित्य ठहराने और ए एफ. एल की प्रतिष्ठा के निर्माण के लिए वह यूनियनो द्वारा 'सिद्धान्तत. प्राप्त की गई पूर्ण स्वाधीनता में किसी भी सन्देह को मानने के लिए तैयार नही था।

किन्तु जिन्हें शका थी, वे शीघ्र ही ठीक साबित हो गएँ क्लेटन अधिनियम जब अदालत की कसौटी पर कसा गया तो उसमे दी गई गारण्टी मृग मरीचिका ही सिद्ध हुई। ट्रस्ट विरोधी कानूनो से यूनियन की काल्पनिक मुक्ति में छलछिद्र निकाले गए, निरोधादेश के उपयोग के बारे मे की गई व्यवस्थाओं की इस

ढंग से व्याख्या की गई कि वस्तुतः कोई राहत न मिले। 'मजदूर कोई सौदे की वस्तु नही हैं', इस सिद्धान्त का बखान कायम रहा और लोगो का रवैया तवदील करने मे वस्तुतः इसका महत्त्व था किन्तु मालिक-कर्मचारियो के सम्बन्धो पर उसका कोई क्रियात्मक प्रभाव नही हुआ।

तो भी विल्सन की हुकूमत में मजदूरो ने पर्याप्त लाभ प्राप्त किए और क्लेटन अधिनियम की बाद में की गई व्याख्याओ के बावजूद इन वर्षों में संगठित मजदूर अनेक मोर्चो पर आगे बढ रहे थे। तीन महत्त्वपूर्ण मामलो पर उन्हे विधानमण्डल का सहयोग प्राप्त हुआ। १९१५ में ला फोलेट सीमेस ऐक्ट पास होने से नाविको की भरती मे बहुत सी गडबडियाँ दूर हो गयी और अमरीकी व्यापारिक जहाजो में डेक पर काम करने वाले लोगो की हालत में अपरिमित सुधार हुआ। अगले वर्ष ऐडम्सन ऐक्ट द्वारा सब अन्तर्राज्यीय रेल-कर्मचारियो के लिए ८ घण्टे का दिन तथा ड्योढा ओवरटाइम नियत करके काम के कम घण्टो की रेल-कर्मचारियो की माँग पूरी कर दी गई और १९१७ में यूरोपीय आव्रजको की साक्षरता की परीक्षा के लिए काग्रेस द्वारा बनाया गया कानून आव्रजन को मर्यादित करने की नीति की ओर जिसकी मजदूर इतने अरसे से माँग कर रहे थे, पहला कदम था।

मजदूर यूनियनो का विकास नई सदी की पहली दशाब्दि मे १९०४ मे जारी किए गए औद्योगिक प्रत्याक्रमण से अस्थायी रूप से रुक गया था। अमरीकी मजदूर सघ के सदस्यो की संख्या १९०५ में घट गई और अगले ५ वर्ष तक उतनी ही रही। १९१० में इसके सदस्यो की सख्या ६ वर्ष पूर्व १६,७६,००० के मुकाबले सिर्फ १५,६२,००० थी। किन्तु १९१० और १९१७ के बीच ए. एफ. एल. के ८ लाख नए सदस्य बने और ट्रेड यूनियनो के सदस्यों की कुल सख्या ३० लाख हो गई। सदी के प्रारम्भ के मुकाबले यह करीब चौगुनी थी।

अन्य समयो की भाति इस समय में भी यूनियनो में शामिल होने की प्रेरणा सिर्फ सामूहिक सौदेबाजी के जरिये आर्थिक स्थिति सुधारने की आशा से ही नही मिली 'मुझे अधिक सुरक्षा प्राप्त होगी, मेरे साथ अच्छा वर्ताव होगा और मनमाने अनुशासन से मुझे सरक्षण मिलेगा', इस प्रकार की आशाएँ भी

बहुत महत्त्वपूर्ण थी किन्तु व्यक्तिगत रूप से मजदूरो की यह प्रच्छन्न अभिलाषा भी रही कि औद्योगिक समाज मे वह अपनी वैयक्तिक कीमत तथा महत्त्व को और बढ़ाए। मशीने मजदूर को उस प्रक्रिया में अधिकाधिक एक पुर्जा मात्र बनाती जा रही थी जिस पर मजदूर का कोई प्रभाव या नियत्रण नही था। कम्पनी-कारोबार मे जब वैयक्तिक सम्पर्क बिल्कुल जाता रहा और प्रबन्धक कर्मचारियो से बहुत दूर-दूर रहने लगे तो मजदूर की वैयक्तिक हैसियत और खत्म हो गई। वह मजदूर यूनियन जैसे सार्थक सामाजिक सगठन में सदस्य बनकर सन्तोष पा सकता था जो उसे हजारो व्यक्तित्वहीन कर्मचारियो के बीच प्राप्य नही था। इस प्रगतिशील युग मे किसी ग्रुप की गतिविधियो में भाग लेने की इच्छा बहुत प्रबल थी। इस जमाने मे सामाजिक क्लबो, निवासो और भ्रातृमण्डलो का तेजी से विकास हुआ। यूनियने, जिनमें भ्रातृनिवासो की कुछ विशेषताएँ शामिल थी, सामूहिक सौदेबाजी के लिए सहयोग देने के अलावा इस दूसरी आवश्यकता को भी पूरा करती थी।

कुछ भी हो यूनियनो की सदस्य सख्या में वृद्धि दोनो प्रकार से हुई, पुरानी यूनियनो के सदस्य बढे तथा नई यूनियनें कायम हुईं। युनाइटेड माइन वर्कर्स के ३,३४,००० सदस्य हो गए थे और वह देश मे सबसे शक्तिशाली यूनियन थी। इमारती व्यवसाय मे यूनियन सदस्य, जिनमे खाती, पेण्टर, राज और मिस्त्री शामिल थे, ३ लाख से अधिक थे और सगठित श्रमिको मे एक महत्त्वपूर्ण योग पोशाक कर्मचारियो की यूनियन का हुआ था।

न्यूयार्क के शर्टवेस्ट (कमर तक की कमीज) बनाने वालो मे "२० हजार के विद्रोह" से इस उद्योग में यूनियन सम्बन्धी गतिविधियो को बहुत प्रोत्साहन मिला। १६०६ की पतझड में यह हडताल मजदूरो से बहुत थोडी मजदूरी पर अत्यधिक काम लिए जाने वाली दूकानो मे असह्य परिस्थितियो को इतने सनसनीखेज ढग से सामने लाई कि लोगो की सहानुभूति पूर्णत हड़तालियो के पक्ष मे हो गई। इण्टरनेशनल लेडीज गारमेण्ट वर्कर्स के नेतृत्व में 'बन्दशाप' के अलावा वे अपनी सब माँगे मनवाने मे कामयाब हुए। किन्तु यह हडताल अगले वर्ष होने वाले एक अन्य संघर्ष की भूमिका थी। यह संघर्ष चोगा व सूट उद्योग मे पैदा हुआ, जहाँ काम की हालतें और भी ज्यादा खराब थी। ये ज्यादातर असगठित थे किन्तु इन्टरनेशनल लेडीज गारमेण्ट वर्कर्स यूनियन ने इसका नेतृत्व

किया। लुई डी. ब्रैण्डीज़ की, जो बाद में सुप्रीम कोर्ट के सह-न्यायाधीश बने, मध्यस्थता में पुन: एक अनुकूल समझौता कर लिया गया। पोशाक कर्मचारियो ने न केवल अपनी वेतन और घण्टे की माँगें मनवाली बल्कि मालिको से एक 'दस्तूर' भी मनवा लिया जिसके मातहत भावी झगड़ो को शाति से निबटाने के लिये एक मशीनरी कायम कर दी गई। इण्टरनेशनल लेडीज गारमेण्ट वर्कर्स देश की एक सबसे मजबूत तथा अध्यवसायी यूनियन बन गई। इसमे ज्यादा-तर आव्रजक लोग थे और उनमे भी स्त्रियो की संख्या अधिक थी। इसका दृष्टिकोण कुछ-कुछ समाजवादी था और उसे अपने व्यक्तिगत सदस्यो के कल्याण की बहुत चिन्ता थी।

पुरुषो के कपडे बनाने वाले कर्मचारियो की मुख्य यूनियन चिरकाल तक युनाइटेड गारमेण्ट वर्कर्स रही। १९१४ मे आन्तरिक झगड़ो की वजह से इसके अधिकाश सदस्य ए. एफ. एल. से अलग हो गए और उन्होने अपनी एक स्वतंत्र यूनियन ऐमलगमेटेड क्लोदिंग वर्कर्स बनाली। इस यूनियन की शक्ति भी शनै.-शनै. बढ़ती रही और उद्योग के सब बडे केन्द्रो मे यह निर्माताओ के साथ समझौते करने में कामयाब रही। इण्टरनेशनल लेडीज गारमेण्ट वर्कर्स यूनियन की तरह यह भी सिद्धान्तत. समाजवादी थी किन्तु इसकी दैनिक नीति रचना-त्मक व उदार नेतृत्व के मातहत मालिको से उत्तरोत्तर अधिक सहयोग करने की थी।

युनाइटेड माइन वर्कर्स, इण्टरनेशनल लेडीज़ गारमेण्ट वर्कर्स यूनियन और ऐमलगमेटेड क्लोदिंग वर्कर्स औद्योगिक यूनियने थी, जिनके सदस्यो में उन सब उद्योगो के कर्मचारी शामिल थे जिनका वे प्रतिनिधित्व करती थी। किन्तु ये मज़दूर सगठन के सामान्य नियम की अपवाद ही रही। इस्पात, मोटरगाड़ी, कृषि-मशीन बिजली का सामान, सार्वजनिक उपयोग की वस्तुओ, तम्बाकू तथा मास पैक करने के उद्योगो मे कोई जरा भी महत्त्व की यूनियन नही थी। देश के आर्थिक विकास में जो उद्योग महत्त्वपूर्ण बनते जा रहे थे, और जिनमे अधिकाश औद्योगिक कर्मचारी काम कर रहे थे, वे इन वर्षो की मज़दूर हलचलो से अप्रभावित रहे क्योकि इन हर नियत्रण रखने वाले कार्पोरेशन यूनियनो के सख्त खिलाफ थे और इतने शक्तिशाली थे कि उनके कर्मचारियो को संगठित करने के हर प्रयत्न की विफलता निश्चित थी।

सामूहिक उत्पादन के इन उद्योगो मे मजदूरो के लिए कम वेतन और काम के अधिक घण्टे बने रहना ही इस प्रगतिशील युग में मजदूरो की उपलब्धियो के एकसार न होने का सबसे बडा कारण था। इस वक्त के सामाजिक कानूनो ए. एफ. एल की यूनियनो के दक्ष कर्मचारी सदस्यो की वेतन-वृद्धि और यूनियनो के प्रति जनता के रुख और नीति मे परिवर्तन का हर्षोत्पादक रिकार्ड · असंगठित औद्योगिक कर्मचारियो की, जिनकी सख्या अब भी कुल मजदूरो की ६० प्रतिशत थी, विशाल भीड़ की दु खदायी परिस्थितियो के कारण बहुत आकर्षक दिखाई नही देता था।

१२ : वाम-पक्षियों का गर्जन-तर्जन

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय यूनियनो में मजदूर जहाँ उस आर्थिक प्रणाली को स्वीकार करने के लिए सामान्यत. इच्छुक थे जिसके अन्दर वे शनै -शनैः किन्तु निश्चित रूप से लाभ प्राप्त करते प्रतीत हो रहे थे, वहाँ इस प्रगतिशील युग में ट्रेड यूनियनो से बाहर के मजदूरो मे गहरे असन्तोष की चिन्ताजनक लहरे हिलोरे ले रही थी। औद्योगिक लाइनो पर या सब मजदूरो को शामिल करने वाली यूनियनो के निर्माण की, जैसी कि नाइट्स आव लेबर थी, नए सिरे से माँग की जाने लगी, समाजवाद के अनुयायियो की ताकत बढी, और उन्होंने एक प्रभावशाली राजनीतिक दल बनाने के प्रयत्न दुगने जोर से शुरू कर दिए। विस्तृत होते जाने वाले अर्थतन्त्र में उठाए गए लाभ में अपना हिस्सा प्राप्त करने के हेतु सीधी कार्रवाई के लिए असगठित मजदूरो मे क्रान्तिकारी आन्दोलन पनपने लगा।

रूजवेल्ट ने सन् १९०६ मे कुछ आतंकित होकर हेनरी कैबट लाज को एक पत्र में लिखा "मजदूर बहुत अभद्र है और कोई नही कह सकता कि यह असन्तोष कहाँ तक फैलेगा। पिछले ६-८ वर्षो मे मजदूरो मे समाजवादी और क्रान्तिकारी भावना बढी है और मजदूर नेता अपना नेतृत्व छिन जाने के भय से इस या उस का राग आलापते फिरते है।"

जिस जमाने में देश की भावना स्फूर्तिमान विश्वास की हो और लोगो की सामान्यत इतनी तरक्की होने जा रही हो उसमे, क्रातिकारी भावनाओ का उभार कुछ असगत-सी बात लगती है। किन्तु यह इस बीज का सीधा परिणाम था कि अदक्ष मजदूरो के हितो की किस हद तक उपेक्षा की जा रही थी। ए. एफ. एल. ने जब औद्योगिक सगठन की उपेक्षा की और हर क्रान्तिकारी आन्दोलन का उसने वैसे ही दृढता से मुकाबला किया जैसा स्वयं उद्योग का तो असन्तोष के शोले और भी जोर से भडके। क्रान्तिकारी हलचलो के लिए, जिनका उद्देश्य, वेतन-प्रणाली की तुरन्त समाप्ति और पूँजीवाद का पूर्ण विनाश था, एक उपयुक्त आधार मिल गया। कुछ समय

तक लगा कि यह आन्दोलन समस्त मजदूर-आन्दोलन की स्थिरता और रूढि-वादिता को खतरा पैदा कर देगा। इसमे सबसे अग्रणी था 'इण्डस्ट्रियल वर्कर्स आव दि वर्ल्ड'।

पश्चिम मे खनिक, काष्ठ श्रमिक और फसल काटने वाले खानाबदोश इस नई ऐसोसियेशन की स्थापना के लिए पूर्व के असगठित कर्मचारियो का प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व के समाजवादी ग्रुपो से मिल गए। आई डब्लू. डब्लू. ने इस बात को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया कि श्रमिको और मालिको के बीच मेल खाने वाली कोई चीज है। ए. एफ एल. और समस्त ट्रेड यूनियनवाद की नीतियो पर घोर आक्षेप करते हुए उन्होने मज़दूरो को उत्पादन की मशीनो पर अपना अधिकार कर लेने के लिए आह्वान किया।

'उचित दिन के काम के लिए उचित दिन का वेतन' के रूढिवादी नारे के बजाय उनके घोषणा-पत्र मे यह नारा दिया गया: "हमें अपने झण्डे पर 'वेतन प्रणाली का उन्मूलन' यह क्रान्तिकारी नारा अकित करना चाहिए। पूंजीवाद का खात्मा करना मज़दूरो का ऐतिहासिक मिशन है।"

आई. डब्लू. डब्लू (इण्डस्ट्रियल वर्कर्स आव दि वर्ल्ड) का जन्म १९०५ में शिकागो मे एक गुप्त सभा में हुआ जिसमे मजदूर आन्दोलन के सब क्रान्तिकारी और विद्रोही तत्त्व शामिल हुए। ये उग्र पश्चिमी खनिक, विभिन्न विचारो के समाजवादी, औद्योगिक यूनियनवाद के हिमायती और सीधी कार्रवाई के अराजकतावादी व्याख्याता अपने मतभेद दूर करके पूंजीवाद पर सीधा हमला करने के लिए एक हो गए। बाद की घटनाओ ने यह सिद्ध किया कि ए. एफ. एल. के कार्यक्रम और तौर-तरीकों से घृणा करने के अलावा वे अन्य किसी बात मे एक नही थे। किन्तु इस वर्ग सघर्ष को अपना प्रारम्भिक कार्य-बिन्दु स्वीकार करके उन्होने एक ऐसे आर्थिक सगठन की स्थापना की जिसका उद्देश्य मजदूरो की अन्तिम मुक्ति के लिए राजनीतिक व औद्योगिक दोनो मचो पर काम करना था।

आई. डब्लू. डब्लू. के पीछे सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रुप वेस्टर्न फेडरेशन आव माइनर्स का था। पहले कभी यह ए. एफ एल. से सम्बद्ध था किन्तु मजदूरो के ध्येय के साथ दुर्बल पूर्व की गद्दारी से कुपित होकर १८९७ मे उससे अलग

हो गया था। सीमान्त की स्वतन्त्र और प्राय: कानून को न मानने की भावना में सराबोर इन खनिकों ने पश्चिमी राज्यों की सोना, चाँदी, सीसा और ताम्बे की खानों मे हड़तालें कीं और १९०३-१९०४ मे कोलेरेडो के क्रिपल क्रीक क्षेत्र मे खान मालिकों के खिलाफ खुला सग्राम छेड दिया। उन्होंने हड़ताल-भंजकों को लाए जाने का कड़ा विरोध किया। मालिकों ने उसका जवाब स्थानीय रक्षा-समितियों और राज्य की मिलीशिया को बुला कर दिया। दोनों पक्ष जब हिंसा पर उतर आए तो संघर्ष में सुरंगें फटने लगी, ट्रेनों को नष्ट किया गया, भीड़ द्वारा उपद्रव होने लगे, जहाँ-तहाँ लोग मारे जाने लगे, गिरफ्तारियाँ हुई, लोग जेल भेजे गए और खनिकों की सभाओं पर मशीनगनें चलाई गईं। १३ महीने तक रुक रुक कर लड़ाई होने के बाद हडताल अन्त में कुचल दी गई और रक्षा-समिति के सदस्यों, नगर-अधिकारियों, पुलिस तथा मिलीशिया ने क्रिपल क्रीक मे थोडी-बहुत व्यवस्था कायम की।

इस हार के बाद वेस्टर्न फेडरेशन आव माइनर्स ने महसूस किया कि वे अकेले कामयाब नही हो सकते। पश्चिमी राज्यो मे सब औद्योगिक कर्मचारियों को एक औद्योगिक यूनियन में लाने के लिये यह पहले ही वेस्टर्न लेबर यूनियन और बाद में अमेरिकन लेबर यूनियन कायम कर चुका था। अब फेडरेशन के नेता इससे भी व्यापक संगठन बनाने को तैयार थे। शिकागो सम्मेलन की अपील का उन्होंने आशाजनक जवाब दिया। इसी सम्मेलन मे आई. डब्लू. डब्लू. का निर्माण हुआ। इस सम्मेलन मे आए २०० सदस्यों में से उनके प्रतिनिधि सिर्फ ५ थे किन्तु २७,००० पश्चिमी खनिकों का प्रतिनिधित्व करने के कारण उस सम्मेलन मे भाग लेने वाली वह सबसे तगड़ी यूनियन थी।

प्रतिनिधि भेजने वाला अन्य बडा ग्रुप समाजवादियों का था। वर्किंग मेन्स पार्टी का स्थान बहुत पहले सोशलिस्ट लेबर पार्टी ने ले लिया था। एक ओजस्वी व्याख्याता और निबन्ध लेखक, जिसे 'समाजवादी पोप' कहा जाता था, डेनियल डि लियोन के प्रभुत्वशाली नेतृत्व में ए. एफ. एल. की दब्बू और निर्जीव कही जाने वाली नीतियों के खिलाफ एक दशाब्दि से खुला संग्राम किया जाता रहा था। व्यक्तिगत रूप से गाली गलौज में प्रवीण डि लियोन ए. एफ. एल. को "हवा के थैले और रेत की रस्सी के बीच की चीज" कहा

और गौम्पर्स को जब तब "मजदूरों को धोखा देने वाला," "एक जाल में फँसा ठग" और "वाल स्ट्रीट का चिकना औजार" कहा करता था। किन्तु समाजवादी कैम्प में एकता सम्भव नहीं थी और १६०० में इसके सदस्यों में फूट पड़ जाने से अन्य अनेक पार्टियां बन गईं जो किसी न किसी रूप में समाजवादी विचारों पर बल देती थीं। इस वर्ग ने, जिसे सिर्फ सोशलिस्ट पार्टी के नाम से पुकारा जाता था, अपने किसी भी पूर्ववर्ती की अपेक्षा अपना ज्यादा प्रभाव डाला और प्रगतिशील युग के राष्ट्रपति के चुनावों में यूजीन वी डेब्स के नेतृत्व में उसने भारी संख्या में वोट प्राप्त किए। सोशलिस्ट लेबर पार्टी तथा सोशलिस्ट पार्टी में स्वभावतः संघर्ष रहता था किन्तु इसकी वजह से नेताओं का शिकागो आना नहीं रुका।

यद्यपि अमेरिकन लेबर यूनियन, यूनाइटेड मैटल वर्कर्स और यूनाइटेड ब्रादरहुड ऑव रेलवे एम्पलायीज समेत अन्य स्वतंत्र रैडिकल यूनियनों का सम्मेलन में प्रतिनिधित्व था तो भी आई. डब्लू. डब्लू. की स्थापना के लिए संगठनों के बजाय व्यक्ति मुख्य रूप से जिम्मेदार थे और उनके विभिन्न व्यक्तियों के संघर्ष से सम्मेलन में जान आ गई थी। डिलियोन और डेब्स के अतिरिक्त सम्मेलन में आए अन्य प्रतिनिधियों में वेस्टर्न फेडरेशन आव माइनर्स के विलियम डी. हेवुड, एक बड़ी, काली दाढी वाले कैथोलिक पादरी फादर टी. जे. हैगर्टी जो अमेरिकन लेबर यूनियन के मुखपत्र के सम्पादक और औद्योगिक यूनियनवाद के प्रबल हिमायती थे, समाजवादी विद्वान् तथा इण्टरनेशनल सोशलिस्ट रिव्यू के सम्पादक ए. एम. साइमन्स, यूनाइटेड मेटल वर्कर्स के महामंत्री चार्ल्स ओ. शेरमान, यूनाइटेड ब्रीवरी वर्कर्स के रैडिकल नेता तथा इसके जर्मन भाषा के पत्र के सम्पादक विलियम ई. ट्राउटमान और एक तेजस्वी, अविचल, ७५ वर्ष की छोटे कद की घुँघराले सफेद बालों वाली, राखी रंग की दयालु आँखों वाली मदर जोन्स नाम की एक महिला, शामिल थी। आन्दोलनकारी के रूप में इस महिला के उत्साह ने उसे करीब आधी सदी तक मजदूरों के मोर्चे की अगली पंक्ति में रखा।

इन विविध और आकर्षक व्यक्तियों में सबसे ज्यादा ध्यान हेवुड पर जाता था। विशालकाय, झुके कन्धों वाला, दैत्याकार, एक आँख जाते रहने से डरावना-सा प्रतीत होने वाला 'बिग बिल' हेवुड सीमान्त भावना का शक्ति-

शाली और आक्रामक प्रतीक था। वह चरवाहा, मकान बनाने वाला और खनिक रह चुका था किन्तु सदी की समाप्ति तक सिल्वर क्रीक (इदाहो) की खाने छोड़ कर मजदूरो और सोशलिस्ट पार्टी का सक्रिय सगठनकर्ता बन गया था। "आदिमकालीन स्वभाव का गट्ठर" कलाए जाने वाला हेवुड हिसा को मजदूर संघर्ष का आवश्यक अग मानता था। वह स्पष्टत. सीधी कार्रवाई के पक्ष मे था। आइ. डब्लू डब्लू. को पहला सम्मेलन बुलाने के लिए कहे जाने पर हेवुड ने उसमें भाषण देते हुए उसे "मजदूरो की महाद्वीपीय काग्रेस" बतलाया और शुरू से ही उसने यह स्पष्ट कर दिया कि उसे वास्तविक दिलचस्पी भुलाए-बिसराए अदक्ष श्रमिको और विशेपकर पश्चिम के खानाबदोश मजदूरो—"आवारा" और "जीवट वाले लांछित" लोगो का संगठन करने मे है। हेवुड ने ऊँचे स्वर मे कहा : "हम मजदूरो के विशाल समुदाय तक पहुँच कर उन्हें एक अच्छे जीवनस्तर तक लाने के लिए भरसक कोशिश कर रहे है।"

हेवुड को छोड़कर सम्मेलन के अन्य प्रतिनिधि आई. डब्लू. डब्लू. मे अपने बहुत थोडे से ही अनुयायियो को शामिल करा सके। वे सिर्फ अपना ही प्रतिनिधित्व करते थे और श्रम संबन्धी नीति पर उनका व्यक्तिवादी रुख सम्मेलन की बहस के रोमांच मे बेमेल प्रतीत होता था। इसे 'अमरीकी मजदूरो का विभाजन' (अमेरिकन सेपरेशन आव लेबर) कहकर इसका खुला विरोध करने के बावजूद वे आइ. डब्लू. डब्लू. के सामान्य कार्यक्रम पर सहमत हो गए।

गौम्पर्स वामपक्षियो की इन चालों से और फिर से एक ऐसा मजदूर सगठन कायम करने की कोशिश से, घृणा करता था जिसकी वह "हेत्वाभास-पूर्ण हानिकारक और प्रतिक्रियावादी" कहकर घोर निन्दा किया करता था। उसने विशेश रूप से अपने पुराने शत्रु डि लियोन पर प्रहार किया जिसके बारे में वह आशा करता था कि उसके अनुयायी आई डब्लू. डब्लू. में शामिल होने वाले अन्य लोगों का 'आत्मा को आनन्द प्रदान करेंगे"। उसने लिखा "इस प्रकार बाहर से ट्रेड यूनियनो के प्रहारकर्त्ता और हिंसात्मक हड़ताल करने वाले और "अन्दर से छेद करने वाले" फिर हाथ मिला रहे है, 'डाकुओ' और 'कंगारूओ' का अपने अपने शिकार पर खुश होकर परस्पर गले मिलने का क्या ही सुखद दृश्य है।"

उसका यह विश्वास कि ये विचित्र साथी ज्यादा देर तक साथ-साथ काम नही कर सकते, शीघ्र ही सच्चा निकलता दिखाई दिया। दलबन्दी और विवाद से आइ. डब्लू. डब्लू मे करीब-करीब तुरन्त ही फूट पड गई। १६०६ के सम्मेलन मे अपेक्षाकृत अधिक नरम तत्वो, जिनमे मुख्य सोशलिस्ट पार्टी के लोग थे और सीधे क्राति कर देने के हामियो में सघर्ष पैदा हो जाने से सब दक्षिण-पन्थी इस सगठन से अलग हो गए। अगले वर्ष स्वयं वेस्टर्न फेडरेशन आव माइनर्स इससे अलग हो गया और आइ. डब्लू डब्लू के सदस्य ६००० से भी कम रह गए और १६०८ मे राजनीतिक या आर्थिक कार्रवाई के बुनियादी मामलें पर अतिम सघर्ष छिड गया। पहली नीति के समर्थक ग्रुप का नेता डि लियोन और दूसरी नीति के समर्थक ग्रुप का नेता ट्राडटमान था। किन्तु सम्मेलन मे निर्णायक तत्त्व पश्चिमी विद्रोहियो—"ओवर आल्स ब्रिगेड" का एक प्रतिनिधिमण्डल था जो माल के डिब्बो में सवार होकर शिकागो आया था और जिसे सैद्धान्तिक विवादो में जरा भी दिलचस्पी नही थी।

इस दल ने डि लियोन के अनुयायियो को बाहर निकाल दिया, जिन्होने तुरन्त एक दूसरा सम्मेलन बुलाकर एक नया संगठन बना लिया और तब वह शिकागो सविधान को अपनी इच्छानुसार बदलने लगा। राजनीति के अस्त्र का प्रयोग करने का ख्याल बिल्कुल छोड दिया गया। सीधी आर्थिक कार्रवाई से पू जीवाद को उलट देने का लक्ष्य रखा गया। सिद्धान्त और व्यवहार दोनो मे क्राति-कारिता को, हडताल, विध्वस और हिंसा को अपना कर आई. डब्लू. डब्लू ने मजदूरो के दुश्मनो के साथ शाति कभी भी स्वीकार न करने की प्रतिज्ञा की।

अब यह घोषणा की गई कि सभी व्यवसायो की एक बडी यूनियन बना-कर ही मजदूर वर्ग सघर्ष में तगडा मोर्चा ले सकते है। ए. एफ़. एल. ने मजदूरो के साथ दगा किया है और वह मालिको के पूर्ण प्रभुत्व में है।

आइ. डब्लू. डब्लू. के सदस्य गाते "उन्हे बाध दो"

पुराने ए. एफ एल. के भाइयो से हमारी कोई लडाई नही
किन्तु हम तुमसे कहते है कि जो तथ्य हम तुम्हे बताएँ
उन पर तुम अक्ल से सोचो

तुम्हारी कारीगरी एक प्रकार की सम्पत्ति के लिए
सरक्षण है ।
क्या तुम देखते नही कि तुम अपनी दक्षता
खो रहे हो
मशीनो में सुधार तुम्हारी दक्षता और औजारों
को हर लेगा
और किसी दिन तुम भी सामान्य गुलामो में
शामिल हो जाओगे
हम जो बातें कह रहे है उनके बारे में हमे
पूर्ण विश्वास है
तब उस रास्ते पर चलने से क्या लाभ ? जिस पर
चल कर तुम जीत नही सकते

उन्हे बांध दो, उन्हे बांध दो, यही जीत
का मार्ग है
संघर्ष छिडने तक मालिको को कोई
सूचना मत दो
तोपचियो, हडतालभंजको और ऐसे ही लोगो
को कोई मौका मत दो
आपको जरूरत है 'एक बडी यूनियन' और
'एक बडी हडताल' की

किसी भी समय और कही भी हड़ताल करने के अधिकार को छोड़ने से इन्कार करने वाली आइ. डब्लू. डब्लू ने मजदूर समझौतो को पसन्द नही किया। वेतनो और काम के घटो के लिए आए दिन के सघर्ष आक्रमण की सिर्फ पहली पंक्ति थी, अन्तिम प्रहार के लिए डेक साफ रखनी जरूरी थी। औद्योगिक यूनियनो को "पुराने खोल के भीतर नए समाज का ढांचा" प्रदान करना था और पूंजीवादी समाज में "मालिक वर्ग के हितो की देखभाल के लिए तैनात सिर्फ एक समिति" का स्थान मज़दूरो की सरकार को लेना था।"

आई॰ डब्लू. डब्लू॰ सबसे ज्यादा अपील पश्चिम के खनिको, निर्माण कार्यो मे लगे मजदूरो, काष्ठ-श्रमिकों और खानाबदोश कृषि मजदूरो को करती थी जिनको राजनीतिक कार्रवाई मे कोई दिलचस्पी नही थी। क्योकि उन्हें वोट हासिल नही था। कम वेतन पाने वाले, गृहहीन, अविवाहित, एक काम से दूसरा काम करने वाले, समाज के सामान्य बंधनो से ज्यादातर अलग ये लोग समझते थे कि वे उनका शोषण करने के उद्देश्य से ही बनाई गई एक आर्थिक प्रणाली के शिकार है। वे "आकाश मे लटके बन के" काल्पनिक स्वप्न के लिए नही बल्कि उत्पादन के साधनो के प्रत्यक्ष स्वामित्व के लिए हड़ताल करने, हिंसात्मक कार्य करने और खुला सग्राम करने के लिए तैयार थे। इस्पात मिलो, खाद्य-पदार्थ पैक करने के कारखानो और कपडा मिलों मे आव्रजक मजदूरो को भी उन्होने अपना अनुयायी बना लिया। आइ॰ डब्लू. डब्लू. इनकी सहायता के लिए सदा तत्पर रहती थी। यह ग्रुप पश्चिम के विद्रोहियो की तरह सख्त और लडने-मरने को सदा तैयार नही रहता था। पूर्व के फैक्ट्री कर्मचारियो ने आइ. डब्लू. डब्लू. कार्यक्रम के क्रांतिकारी फलितार्थों को अनिवार्यतः स्वीकार नही किया था। फिर भी वे अपनी हडतालों मे आइ॰ डब्लू. डब्लू. द्वारा दिए गए सहयोग के लिए कृतज्ञ थे।

आइ डब्लू डब्लू. के सदस्य कभी भी बहुत ज्यादा नही रहे, अपने उच्चतम शिखर पर भी उनकी संख्या शायद ६० हज़ार से ज्यादा नही हुई। कई लाख यूनियन कार्ड जारी किए गए किन्तु कभी-कभी काम पर आने वाले लोग ज्यादा दिन तक सदस्य नही रहते थे। जैसा कि पहले कहा जा चुका है आइ. डब्लू. डब्लू. का महत्त्व उसके क्रांतिकारी नेतृत्व मे था। इसके सदस्य जिन्हें पश्चिम मे वौवली कहा जाता था प्राय. हिंसा का स्वागत करते, लडाई को लडाई के लिए पसन्द करते प्रतीत होते थे और विवादग्रस्त मामलो की युक्तियुक्तता की बहुत परवाह किए बिना उन्होने कानून और व्यवस्था की ताकतो से लोहा लिया। सान डियागो ट्रिब्यून ने १९१२ में गुस्से से लिखा. "उनके लिए फाँसी भी बहुत दुरुस्त चीज़ नही है। बेहतर है, वे मर जाएँ क्योकि मानव अर्थतंत्र में वे बिल्कुल बेकार है, वे सृष्टि का मलबा हैं जिसे विस्मृति के गड्ढे में लुढका कर अन्य किसी विष्ठा की भाँति सड़ने के लिए छोड़ देना चाहिए।" किन्तु इस वर्ग के मज़दूरो के बिना, चाहे वे कितने ही

झगड़ालू हो, 'पश्चिम' इतनी तेजी से विकास नही कर सकता था। भद्दा और भारी काम वही करते थे; लकड़ी काटते थे, फसल काटते थे, खाने खोदते थे। और उनके विचार कितने भी गलत रहे हो, समाज के विरुद्ध उनका अन्धा संघर्ष उनके लिए कितना भी निराशाजनक रहा हो, उनमें वह उत्साह और जोश था जो आकर्षण और रोमाच पैदा करने वाला था।

इनकी भावना आइ. डब्लू. डब्लू के गीतो मे अभिव्यक्त होती थी जो यूनियन की सभाओ व फसल शिविरो मे और धरना देने के समय गाए जाते थे: "क्या तुम एक वौबली हो?" "मालिको को अपनी पीठ से उतार फैको", "उन पर लाल रंग पोत दो" "हम क्या चाहते है?" "लाल झण्डा" और "हालेलुजा मैं आवारा हूँ।"

> ओह! मै अपने मालिक को पसन्द
> करता हूँ
> वह मेरा अच्छा दोस्त है
> और यही कारण है कि मै
> फैक्टरी पर धरना देता हुआ भूखो
> मर रहा हूँ।
> हालेलुजाह! मै एक आवारा हूँ
> हालेलुजाह! आवारा हूँ
> हालेलुजाह हमे पुनर्जीवित
> करने के लिए एक हैण्ड-आउट दो।

आइ. डब्लू डब्लू की तरफ से उत्तर-पश्चिम की खानो में, लकडी के कारखानो मे, निर्माण शिविरो मे, प्रशान्तसागर के तटवर्ती डिब्बा बन्द करने के कारखानो, पूर्वी कपड़ा मिलो, मध्य पश्चिम की इस्पात व पैकिंग सयन्त्रो में तथा स्ट्रीटकार कर्मचारियो, खिडकी साफ करने वालो और खलासियो की हड़ताल कराई गई। आइ. डब्लू. डब्लू. के नेता और विशेष कर 'बिग बिल' हेवुड जो वेस्टर्न फेडरेशन आव माइनर्स के हट जाने पर भी आइ. डब्लू. डब्लू. से अलग नही हुआ, कही भी, किसी भी समय असगठित कर्मचारियो की

सहायता करने को तत्पर रहते थे। वे हड़ताल सम्बन्धी गतिविधियो का संचालन करते थे, धरना देने वालो मे शामिल होते थे, मजदूरो के परिवारों को सहायता प्रदान करते थे और इतने अन्धे जोश के साथ संगठन करते और आन्दोलन करते थे कि उसके सामने ए. एफ. एल. के तौर तरीके बिल्कुल मुर्दा प्रतीत होते थे।

जब स्थानीय अधिकारियो ने आइ डब्लू. डब्लू. की हरकतो का दमन करने की कोशिश की और इसके नेताओ को जेल भेज दिया तो वल्ला-वल्ला (वाशिंगटन) से लेकर न्यू वेडफोर्ड (मैसाच्युसेट्स) तक "भाषण स्वातन्त्र्य" के लिए लडाइयाँ फूट पडी। जैसे ही किसी शहर मे गिरफ्तारियो की खबर मिलती थी, वैसे ही वौवली सैकड़ो की सख्या मे अपने वैधानिक अधिकारो का उपयोग करने तथा पुलिस को चुनौती देने के लिए वहाँ पहुँच जाते थे। जब पहली टुकड़ी को जेल भेज दिया जाता था तो दूसरी उसका स्थान ले लेती थी। अन्त मे परेशान अधिकारियो को समाज पर इतना अधिक दबाव महसूस हुआ कि उनके पास अपने कैदियो को छोड देने के सिवाय कोई चारा नही रहा। वौवली अपनी जीत से मदमाते जेल से छूटकर आते और आन्दोलन करने, धरना देने और अपने अधिकारो के लिए संघर्ष करने को पुन तैयार रहते थे।

वौवलियो द्वारा कराई गई सबसे ज्यादा चामत्कारिक हड़ताले और लड़ाइयाँ पश्चिम में हुईं किन्तु उनकी एक सबसे बडी विजय १६१२ में लारेंस (मैसाच्युसेट्स) की कपड़ा मिल के कर्मचारियो की हडताल मे हुई। किन्तु पूर्व में सीमान्त की हिंसा के घुस आने के भय के बावजूद यह हडताल बहुत ही अनुशासनपूर्ण रही। इस केस मे आइ. डब्लू. डब्लू. ने कर्मचारियों के लिए जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के महत्त्व को समझा और व्यवस्था कायम रखने के लिए भरसक कोशिश की। क्रांतिकारी हलचलो के सब विचार तात्कालिक उद्देश्य के सामने गौण कर दिए गए। अन्य यूनियनो से कोई सहयोग न पाने के कारण जो पूर्वी शहरो में उनके पदाक्रमण से क्षुब्ध थी, लारेंस मे आइ. डब्लू. डब्लू. के नेताओ ने अपनी सारी शक्ति हडतालियो का संयुक्त मोर्चा बनाये रखने मे लगाई जिसने अन्ततोगत्वा मालिको को

घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया।

लारेंस कपड़ा मिलों के ३०००० कर्मचारियो के, जिन में करीब आधे अमेरिकन वूलेन कम्पनी में काम करते थे, वेतनो में कटौती हड्ताल का कारण बनी। इन कर्मचारियो की जिनमें ज्यादातर इटालियन, पोल, लिथुआनियन और रूसी थे, औसत साप्ताहिक आय ६ डालर से कम थी—और मिलें पूरे समय चल रही थी। कम वेतन और काम के लम्बे घण्टो के अलावा अत्यधिक दबाव और तनातनी की अवस्थाओ मे काम की गति तेज करने के लिए एक प्रीमियम प्रणाली चालू की गई थी। वेतनो में कटौती अंतिम तिनका सिद्ध हुई। १२ जनवरी, १६१२ को कुछ मजदूरो ने सम्मिलित विरोध मे, जिसमें शीघ्र ही २० हजार स्त्री-पुरुष शामिल हो गए, एक साथ वाकआउट कर दिया और टाउनहाल की खतरे की घटिया बज उठी।

मिलो मे कुछ यूनियन सदस्य भी थे। कुछ थोड़े से ए. एफ. एल. से सम्बन्धित यूनियन यूनाइटेड टैक्सटाइल वर्कर्स से सम्बन्ध रखते थे और १००० के करीब आइ. डब्लू. डब्लू. के सदस्य थे। बाकी सब असगठित थे। हड्ताल की संभावनो को देखते हुए आइ डब्लू डब्लू. के सदस्यो ने अपने हैडक्वार्टर से सहायता पाने के लिए आदमी भेज दिए थे और सामान्य प्रशासनिक बोर्ड के एक सदस्य जोसेफ जे ऐट्टर लारेंस दौड़े। आए शीघ्र ही आइ. डब्लू. डब्लू. का एक अन्य नेता आर्तुरो गियोवान्निती भी उससे आमिला। इन दोनो व्यक्तियो ने हड्ताल का नियंत्रण तुरन्त ही अपने हाथ मे ले लिया। इसका पूर्ण यथार्थवादी आधार पर सगठन किया और कड़ा अनुशासन लागू कर दिया। ऐट्टर ने हड़तालियों को सगठित रखने के लिए बडी-बडी सभाएँ की, कारखानो पर धरना दिए जाने की व्यवस्था की और इस बात का ध्यान रखा कि दुःख मे पड़े जरूरतमन्द परिवारो को, जिनकी आय का स्रोत हड्ताल के कारण एकदम सूख गया था सहायता प्रदान की जाए। वस्तुतः सहायता देने का यह कार्य उसके लिए सबसे वडा सिर दर्द था क्योकि शहर की ८५००० की आवादी मे से आधे से अधिक या तो हड्ताली थे या उनपर आश्रित व्यक्ति। सप्लाई के वितरण, सूप की किचन चलाने और अन्य सहायता देने के लिए प्रत्येक पृथक् राष्ट्रीय ग्रुप के लिए अलग-अलग आम समितियां वना दी गई।

कानून भग की पहली घटना शहर के बहुत से भागो में लगाए गए डायनामाइटो की खोज थी, जो अखबारो मे मोटो-मोटी सुर्खियो में जनता को आतकित करने के उद्देश्य से छापी गई। आइ. डब्लू डब्लू. पर तुरन्त ही अपने आतंकवादी तरीके अपनाने का आरोप लगाया गया और हडतालियो के प्रति लोगो मे जो कुछ थोडी सी-सहानुभूति थी वह क्रोध में बदल गई। न्यूयार्क टाइम्स ने अपने अग्रलेख मे लिखा . "जब हडताली डायनामाइट का प्रयोग करने को उद्यत है तो वे मानवीयता का एक ऐसा शैतानी अभाव दिखा रहे है, कि उन्हे, जब तक वे पश्चात्ताप न करलें धर्म का सुख प्रदान नही किया जाना चाहिए।"

हडतालियो ने तुरन्त ही विरोध प्रदर्शित किया और कहा कि डायनामाइट उन्होने नही लगाए। बाद की घटनाओ ने उन्हें पूर्णत. सच्चा साबित किया। हड़ताल समाप्त होने से पूर्व यह सिद्ध हो गया कि एक स्थानीय उद्योगपति ने हडतालियो को और विशेपकर आइ. डब्लू. डब्लू. को बदनाम करने के लिए डायनामाट लगा दिए थे और इस दुरभिसधि मे मिल मालिको के निकट सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति भी शामिल थे। इस षड्यत्र में शामिल होने के अभियोग मे अमेरिकन वूलेन कम्पनी के मुखिया की गिरफ्तारी के साथ अत्यधिक कजरवेटिव अखबारो ने भी झूठ-मूठ के बमकाण्डों में मजदूरो को फँसाने की कोशिशो की कडी निन्दा की। आयरन ऐज ने लिखा . "यह सामान्यत मालिको के हितो के साथ दगा करना है।" और न्यूयार्क इवनिंग-पोस्ट ने इसे "पूँजीवाद का एक ऐसा अपराध बताकर जो मजदूर यूनियनो द्वारा कभी भी किए गए खराब से खराब काम से भी ज्यादा बढा-चढा है", इसकी निन्दा की।

इस बीच अमेरिकन वूलेन कम्पनी ने, जो मजदूरों की माँगों पर विचार करने से अब भी इन्कार कर रही थी, अपनी मिलो को फिर से चालू करने की कोशिश की। उसके इस कदम से हडतालियो तथा पुलिस मे हिंसात्मक सघर्प हो गया जिसमे एक इटालियन महिला को गोली दाग कर मार डाला गया। अधिकारियों ने तुरन्त मार्शल ला लागू कर दिया, सार्वजनिक सभाओ और बातचीत को रोकने के लिए मिलीशिया की २२ कम्पनियाँ सड़कों पर गश्त लगाने के काम पर तैनात कर दी गई और ऐट्टर तथा

गियोवान्नित्ती को हत्या मे शरीक होने के अभियोग मे गिरफ्तार कर लिया गया।

इन घटनाओ से न तो हडताल समिति और न आइ. डब्लू. डब्लू प्रतिहिंसा के लिए भड़की और न ही हड़ताल को सफल बनाने का उनका सकल्प ढीला पडा। ऐट्टर और गियोवान्नित्ती की गिरफ्तारी के बाद "बिग बिल" हेवुड ने चार्ज ले लिया और अपनी निजी तथा आइ. डब्लू डब्लू की क्रातिकारी नीतियो के बावजूद वह शात प्रतिरोध के रुख पर जोर देता रहा। इस सयम के साथ मजदूर डटे रहे। काम पर लौटने की इच्छा रखने वाले मजदूरो को मिलीशिया जो संरक्षा प्रदान करती थी उसके बावजूद हडताली मजदूरो की एकजूटता भग नही हुई। एक मिल को देखने के बाद एक अखबार के रिपोर्टर ने लिखा: "कताई के कक्ष में हरेक पटा चल रहा था, हर तरफ मशीनो की आवाज आ रही थी; तो भी कोई भी कर्मचारी काम पर नही था और कोई भी मशीन सूत का एक भी तकुआ नही ले सकी।"

किन्तु हडतालियो के भरण-पोषण का काम अधिकाधिक कठिन हो गया और फरवरी के शुरू में समिति ने एक योजना बनाई जिसके दो उद्देश्य थे— एक तो तात्कालिक आवश्यकताओ की पूर्ति और दूसरी उनके प्रति नाटकीय ढंग से जनता का ध्यान खीचना। अन्य शहरो में मजदूरो से सहानुभूति रखने वालो से कहा गया कि वे हड़तालियो के बच्चो को अस्थायी आश्रय प्रदान करे। इस अपील का तत्काल असर हुआ और कई सौ बच्चे अन्य शहरों में भेज दिए गए। इस कदम के परिणामो से भयभीत होकर जिसकी युनाइटेड टैक्सटाइल वर्कर्स के मुखिया ने "आन्दोलन को चालू रखने, आइ. डब्लू. डब्लू. के प्रचार को बढाने वाला" बताकर सबसे ज्यादा निन्दा की। लारेंस के अधिकारियो ने कहा कि अब और ज्यादा बच्चो को शहर से नहीं जाने दिया जाएगा। जब हडताल समिति ने बच्चो का एक अन्य ग्रुप बाहर भेजने की कोशिश की तो पुलिस ने ऐसी परिस्थितियो मे हस्तक्षेप किया जो अन्य किसी भी चीज की अपेक्षा हड़तालियो के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने में ज्यादा सफल हुई।

बच्चो की देख-भाल का काम अपने हाथ में लेने वाली फिलाडेल्फिया की

महिला समिति की एक रिपोर्ट मे कहा गया : "स्टेशन को पुलिस और मिलीशिया ने घेर लिया था ।जब जाने का समय आया तो दो-दो की लम्बी कतार लगाए बच्चे पास खडे अपने माता-पिताओ की देख-रेख मे व्यवस्थित ढंग से ट्रेन में चढने के लिए तैयार हुए, तभी पुलिस ने दरवाजे के दोनो तरफ तैनात होकर अपने दाएँ-बाएँ अन्धाधुन्ध डण्डे बरसाने शुरू कर दिए । बच्चों का कोई खयाल नही रखा जिनके बारे मे यह डर था कि कही वे भगदड में कुचले जाकर मारे न जाएँ । माताओ और बच्चो को सामूहिक रूप से धकेला गया और जबर्दस्ती घसीटकर एक सैनिक ट्रक मे लाद दिया गया, उसमे भी उन्हे डण्डों से पीटा गया और भयभीत स्त्री-बच्चो की चीख-पुकार की कोई परवाह नही की गई ।

हडताल मे शायद यह एक मोड-बिन्दु सिद्ध हुआ । देश के प्रत्येक हिस्से से [illegible] की जो बाढ आई उसे न तो लावेल के अधिकारी ही सह सके और न मिल मालिक । हडतालियो पर और हमले हुए और गिरफ्तारियाँ भी हुई—दो महीने की हडताल में २९६ गिरफ्तारियाँ हो चुकी थी—किन्तु जब धरना देने वाले डटे रहे तो अमेरिकन वूलेन कम्पनी ने आखिरकार पराजय स्वीकार कर ली और १२ मार्च को जो पेशकश की, उसमें मजदूरो की करीब-करीब सब माँगे स्वीकार कर ली गई । वेतन ५ से २५ प्रतिशत तक बढा दिए गए, सवाया ओवर टाइम निश्चित किया गया, प्रीमियम प्रणाली में उचित फेर-[illegible] किया गया और हडतालियो को फिर से काम पर लगाते हुए कोई भेद-न करने का वचन दिया गया । लारेंस कामन में आयोजित एक विशाल सभा मे हेवुड ने इस पेशकश को स्वीकार करने की सलाह दी और मिल कर्मचारी काम पर लौटने को राजी हो गए ।

अतिम घटना ऐट्टर और गियोवान्नित्ती पर चलाया गया मुकदमा था । कुछ समय तक तो लगा कि उनके मामले की निष्पक्ष सुनवाई नही होगी और हत्या मे शामिल होने का उन पर जो अभियोग लगाया गया है, उसको सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रमाण न होने पर भी उन्हे सजा दे दी जाएगी । आइ. डब्लू. डब्लू. ने ६०,००० डालर एकत्र करके एक बचाव समिति कायम की और लारेंस के मजदूरो ने यह घोषणा कर कि अगर जेल के दरवाजे नही खोले गए । तो वे मिल के दरवाजे बन्द कर देंगे, १५,००० की सख्या मे एक दिन की साकेतिक हडताल कर दी । अतिम फैसले मे दोनो व्यक्तियो को निर्दोष घोषित

किया गया और रिहाई के बाद खुशी से नाचती हुई भीड़ ने उनका स्वागत किया। ये लोग समझते थे कि लारेंस कपडा मिल के कर्मचारियों की हड़ताल को सफल बनाने में इनका नेतृत्व कम जिम्मेदार नही है।

मुकदमा खत्म होने से पूर्व दोनो अभियुक्तो ने जूरी के सामने वक्तव्य दे कर अपनी स्थिति स्पष्ट की, जिसमें उन्होने आइ. डब्लू. डब्लू. के क्रातिकारी उद्देश्यों को स्पष्ट स्वीकार किया और कहा कि वे पुलिस से नही डरेंगे। गियोवान्नित्ती का, जो अपने अधिकार से ही एक कवि थे और जिनकी क्रातिमय कविताएँ बहुत ही पद्यावलियो में पाई जाती है, भाषण बडा ओजस्वी और मार्मिक था।

उन्होने कहा. "मै आप से साफ कहता हूँ कि इस कामनवेल्थ तथा अमरीका में अन्य किसी भी स्थान पर पहली जो भी हड़ताल फूट पडेगी और जहाँ कही भी जोसेफ जे-एट्टर और आर्तुरो गियोवान्नित्ती के काम, मदद और सूझबूझ की जरूरत होगी, वही हम किसी धमकी या भय की परवाह किए बिना दुबारा जाएँगे। हम फिर से अपने विनम्र प्रयत्नो की ओर, ससार के मजदूरो की शक्तिशाली सेना के अज्ञात व गलत रूप मे समझे जाने वाले योद्धाओ के बीच, लौट जाएँगे जो अतीत की छाया और अधिकार मे मे मानव जाति की स्वतत्रता के और इस भूमण्डल पर हर स्त्री-पुरुष के लिए प्रेम, भाईचारा व न्याय की स्थापना के निर्दिष्ट उद्देश्य की ओर बढने की कोशिश कर रहे है।"

आइ डब्लू डब्लू. ने लारेंस में आश्चर्यजनक विजय प्राप्त की। कपड़ा कर्मचारियो मे इस की सदस्य सख्या रातो-रात १८,००० हो गई और इस नए जीवन से उसके और भी विकास की संभावना दिखाई देने लगी। हड़ताल मे इसके आक्रामक तौर-तरीको के भावी विकास को लेकर ए. एफ एल. में हलचल मच गई और इससे भी ज्यादा व्यापारी वर्ग मे अमरीकी मजदूरों में क्रान्तिकारी सिद्धान्तो के संभावित प्रसार का भय व्याप गया। 'सर्वे' में एक लेख में कहा गया: "क्या हम आशा करे कि सम्मानपूर्वक खेल खेलने के बजाय, अथवा स्पष्टत. अव्यवस्थित ढग के दंगे कराने के बजाय, जिनसे निबटना हम खूब अच्छी तरह जानते है, मजदूर एक सूक्षम अराजकतावादी विचार-

धारा के वशीभूत हो जाएँगे जो 'सीधी कार्रवाई,' 'हड़तालों के जरिए मजदूरों के हाथ में सत्ता लाने,' 'आम हड़ताल' और 'हिंसा' जैसे अजीब-अजीब सिद्धान्तों को दिमाग में ठूँसकर कानून और व्यवस्था के बुनियादी विचार को चुनौती दे रही है ? .... हम समझते है कि सम्पत्ति और जीवन की पवित्रता के बारे में हमारी सादी विद्यमान नैतिकता इसमें दाँव पर लगी हुई है ।"

ये भय शीघ्र ही वेबुनियाद सिद्ध हुए । आइ. डब्लू. डब्लू. अपनी शक्ति और प्रभाव के उच्चतम शिखर पर पहुँच चुकी थी । जैसा कि पुराने नाइट्स आव लेवर के साथ हुआ इसकी महानतम विजय भीषण पराजयो और पतन की पूर्व परिचायक थी जिससे कुछ ही वर्षों मे इसका वस्तुत: खात्मा हो गया । आइ. डब्लू. डब्लू. इतना ज्यादा क्रान्तिकारी था कि वह अमरीकी मजदूर की मूलत: रूढ़िवादी ताकतों का समर्थन प्राप्त नही कर सकता था और इसके प्रचार की तीव्रता के वावजूद क्रान्ति के रूप में इसकी सफलता के बारे में सन्देहशील था । यह सिर्फ इसी बात मे सफल हुआ कि इसने लोगो में हिंसा का इतना ज्यादा भय उत्पन्न कर दिया कि लारेंस के अपेक्षाकृत शान्तिमय तौर तरीको से भी वह दूर नही हुआ ।

अगली महत्त्वपूर्ण हडताल, जिसमें आइ. डब्लू डब्लू. ने भाग लिया इसका पतन कराने वाली सिद्ध हुई । पैटर्सन (न्यूजर्सी) के रेशम के कारखानो मे १६१३ मे गड़बड हुई और वौवलियो के अन्य नेताओ के अलावा एट्टर तथा हेवुड ने इसमे पुन प्रमुख भाग लिया । यह संघर्ष बहुत लम्बा और कटुतापूर्ण रहा । पैटर्सन के अधिकारी आइ. डब्लू डब्लू, के क्रातिकारी खतरे को मटियामेट कर देने के लिए कृतसकल्प थे और आइ० डब्लू० डब्लू० समझता था कि इस हडताल के परिणाम पर इतना कुछ निर्भर करता है कि वह हार नही मान सकता । हड़तालियो को किसी भी बहाने गिरफ्तार कर लेने मे, प्रतिरोध करने पर उन्हें डण्डे मार-मार कर वेहोश कर देने में और उनकी धरना देने वाली पक्ति को छिन्न-भिन्न कर देने में पुलिस ने अत्यन्त बदनामी पूर्ण पाशविकता से काम लिया फिर भी हडताल जारी रही । रेशम कर्मचारियो के लिए जिन अन्य लोगो की सहानुभूति प्राप्त की गई उनमे हार्वार्ड मे शिक्षित नौजवान क्रातिकारी जॉन रीड भी था जिसने 'टेन डेज दैंड शूक द वर्ल्ड' (वे दस दिन जिन्होने दुनिया को दहला दिया) पुस्तक लिखी और जिसे क्रेमलिन की

दीवार के पार्श्व में दफनाया गया। पैटर्सन में दृश्य का वर्णन करते हुए उसने लिखा कि मैं "उन प्रमुदित व्यक्तियो को कभी नही भूल सकता जिन्होने शहर की गैर-कानूनी पाशविकता को प्रसन्नता से चुनौती दी और हँसते-गाते जेल गए।" किन्तु ५ अत्यन्त कष्टकारी महीनो के बाद, उनके कोष खत्म हो जाने और अपने परिवारो की बढती हुई जरूरत ने हडतालियो को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। आइ० डब्लू० डब्लू० को पराजय स्वीकार करनी पडी।

बाद के वर्षो में वौबलियो ने छोटी-छोटी बीसियो हडतालें की और स्थानीय यूनियनो के टूटने तथा खानाबदोश निर्माण कर्मचारियों तथा कृषि मजदूरों के संस्था मे आते-जाते रहने से उनकी सदस्य सख्या बहुत घटती-बढती रहती थी। अनेक मामलो में अधिकारियो से मुठभेड़े हुईं और पश्चिमी राज्यो मे हडतालो को किसी भी प्रकार और किसी भी लागत पर कुचल डालने की प्रवृत्ति बढती गई। उदाहरणार्थं ऐवट्ठ (वाशिंगटन) में जो खुलकर लड़ाई हुई उसमें नगर अधिकारियो ने जब बन्दरगाह मे उतरने के लिए एक नाव पर सवार होकर आए वौबलियो पर गोली चला दी तो सात व्यक्ति मारे गए।

१९१४ में यूरोप में युद्ध छिड़ जाने पर आइ० डब्लू० डब्लू० ने युद्ध के खिलाफ एक निश्चित रुख अख्त्यार किया। उस वर्ष इसके सम्मेलन में पास किए गये एक प्रस्ताव मे कहा गया : "हम औद्योगिक सेना के सदस्य औद्योगिक स्वाधीनता के बजाय अन्य किसी भी उद्देश्य के लिए लडने से इन्कार कर देंगे।" तीन वर्ष बाद जब अमरीका मित्रराष्ट्रो की तरफ से युद्ध मे शरीक हुआ तब सी इसने अपना रवैया नही वदला और वर्ग सघर्ष को तिलाजलि देकर युद्ध को राष्ट्रीय प्रयत्नो मे सहयोग देने से इन्कार कर दिया। पूँजीवाद के खिलाफ सघर्ष को जारी रखने मे मजदूरो के हित को सरकार द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय हित से ऊपर समझा गया। सरकार को तो आइ० डब्लू० डब्लू० मालिक वर्ग की एक समिति से ज्यादा नही समझता था। वट्ठे (मोन्टैना) में धातु के खनिकों की और उत्तर-पश्चिम में इमारती लकड़ी के कर्मचारियो की नाजुक हडतालो ने युद्ध-प्रयत्नो मे काफी वाधा डाली किन्तु वौवली यही कहते थे कि वे महत्त्वपूर्ण उद्योगो मे पलीता लगाने की कोशिश नही कर रहे- बल्कि कर्मचारियो के लिए काम की हालते सुधारने की कोशिश कर रहे है।

सार्वजनिक प्रतिक्रिया यह हुई कि लोग आइ० डब्लू० डब्लू० को देशभक्ति रहित, जर्मन पक्षपाती और गद्दार कहकर उसकी निन्दा करने लगे। युद्धोन्माद के वातावरण में लोगो की भावनाएँ सब कही "साम्राज्यी विल्हेल्म के योद्धाओं" के खिलाफ खूब उभार दी गई। और मालिको ने भी यह देखकर कि अब उनके लिए आइ० डब्लू० डब्लू० को हमेशा के लिए कुचल देने का मौका है। अखबारों के उत्साहपूर्ण सहयोग से उन सुलगते शोलों पर तेल छिड़कने का हर सम्भव प्रयत्न किया। शिकागो ट्रिब्यून ने लिखा: "पश्चिम में आइ० डब्लू० डब्लू० का गुस्सा दिलाने वाला उभार विद्रोह से कम नहीं है।" क्लीवलैण्ड न्यूज़ ने लिखा: "देश जब युद्ध में ग्रस्त है तब आइ० डब्लू० डब्लू० के सदस्यों को एकमात्र जेलखाने की दीवारों के पीछे ही कमरा दिया जा सकता है।"

इन भावनाओं ने मूर्त रूप भी ग्रहण किया। १९१७-१८ मे एक के बाद एक राज्य ने जरायम सिंडिकलिज्म (हड़तालो के जरिये सत्ता हथियाने का प्रयत्न) कानून पास किए जिनमे आइ० डब्लू० डब्लू० को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया और इन कानूनो के अन्तर्गत असंख्य गिरफ्तारियाँ की गईं। राष्ट्रीय सरकार ने भी राजद्रोह और जासूसी अधिनियम पास किए। युद्ध-प्रयत्नो में बाधा डालने के अभियोगो में संघीय अधिकारियो ने आइ० डब्लू० डब्लू० के १६० सदस्यों को सजा दिलाई। शिकागो के लिए सामूहिक मुकदमे में हेवुड तथा ९४ अन्य व्यक्तियों को राजद्रोह का अभियुक्त ठहराया गया और उन्हे २० साल तक की जेल की सजाएँ दी गईं। सरकार के खिलाफ षड्यन्त्र करने के अभियोग कई मामलो में इतने लचर थे कि हंसी आती थी किन्तु देशभक्ति का जोश प्रथम विश्व युद्ध में प्राय. भाषण और सभा की स्वतंत्रता के वैधानिक अधिकारों के खयाल से संयत नही हो पाता था।

जब अधिकारियों ने बहुत तत्परता से कार्रवाई नही की तो लायलटी लीग और स्थानीय सुरक्षा समितियाँ प्रायः ही कानून और व्यवस्था को अपने हाथ में ले लेती थी अनेक शहरो में क्रूरता से डण्डे बरसाये गए, घोड़ो को पीटने के चाबुक लगाये गये! ऐसे कई केस हुए जिनमें आइ० डब्लू० डब्लू० के आन्दोलनकारियो को पकड़कर अव्यवस्थित भीड़ ने लिंच कर दिया। जुलाई, १९१७ में बिसबी (एरिजोना) मे कोई १२०० हड़ताली खनिको को

जिनमें से आइ. डब्लू. डब्लू. के सदस्य वस्तुत' आधे से भी कम थे, स्थानीय लायल्टी लीग के कहने पर नगर अधिकारी द्वारा तैनात एक पुलिस पार्टी ने जबर्दस्ती शहर से निकाल दिया। उन्हें पशुओ की गाड़ियो में भरकर राज्य की सीमा के बाहर ले जाया गया और रेगिस्तान में छोड़ दिया गया। जब भोजन और पानी के बिना उन्हें ३६ घण्टे हो गये तब संघीय अधिकारियो ने उन्हें बचाया तथा कोलम्बस (न्यू मैक्सिको) के एक नजरबन्दी शिविर मे ले गए।

युद्ध के इन वर्षो में आइ. डब्लू. डब्लू. की शक्ति ज्यादातर उसके अपने कथनानुसार "वर्ग सघर्ष के कैदियो" का बचाव करने की कोशिशों मे लगी रही। इसमें सफलता न मिलने के कारण यह शीघ्र ही नेता-विहीन हो गया और अन्ततोगत्वा हेवुड स्वयं जमानत की परवाह न करता हुआ रूस भाग गया। स्वत. संगठन भग नही हुआ—बाद में इसमें पुनः कुछ ताकत-सी भी आई—किन्तु युद्ध-पूर्व की अपनी आतंककारी शक्ति को यह फिर कभी प्राप्त नही कर सका।

पश्चिम की बदलती हुई परिस्थितियों ने, जिनमे खेतो में मशीनो का अधिक उपयोग किया जाने लगा था और मोटर परिवहन का वहुत विकास हो गया था, खानाबदोश कर्मचारियो की संख्या कम कर दी थी और यही आइ. डब्लू. डब्लू. के सबसे महत्त्वपूर्ण सदस्य थे। वहुत से क्रातिकारी समाजवादियो को १९१९ मे थर्ड इण्टरनेशनल की शाखा के रूप में आयोजित कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी ओर खीच लिया। अन्त मे आइ. डब्लू डब्लू. में जो बचे, वे पुराने नेताओ के अभाव मे बहुत कम उग्र रह गए। अव उत्पादन के साधनो पर कब्जा करने के लिए क्रातिकारी साधन अपनाने के वजाय इन पर प्रशासनिक नियत्रण स्थापित करने की तैयारी पर वल दिया जाने लगा। युद्ध के वाद 'न्यूयार्क वर्ल्ड' के एक रिपोर्टर ने वेकारी पर आयोजित एक सम्मेलन की वावत लिखा : "वौवलियों ने क्राति, वर्ग-चेतना, शोषण या पूंजीवादी प्रणाली को अनिवार्यतः उलटने की वात नही कही, वल्कि 'निर्वाध उत्पादन' और 'औद्योगिक प्रक्रियाओ मे समन्वय' की वातें कही .." १९२० की दशाब्दि के मध्य तक पुराना लड़ाकू आइ. डब्लू. डब्लू. एक कहानी वन चुका था।

आइ डब्लू. डब्लू की सदस्यता या उसकी अनियमित हड़तालो की गतिविधियो के बजाय मज़दूर आन्दोलन पर उसका प्रभाव ज्यादा महत्त्व की बात थी। पश्चिम की खानो, काष्ठ-गृहो और कभी कभी पूर्व के कारखानो मे काम की हालतो में सुधार के प्रत्यक्ष परिणामो के अलावा इस क्रातिकारी आन्दोलन ने विशेषत अदक्ष श्रमिको की विशाल सख्या की अत्यन्त जरूरी आवश्यकताओ पर लोगो का ध्यान केन्द्रित किया और औद्योगिक यूनियनवाद को एक नई गति प्रदान की जिसकी ए. एफ. एल. भी बिल्कुल उपेक्षा नही कर सकता था। वर्ग सघर्ष के क्रातिकारी सिद्धान्त ने कम-से-कम कुछ समय के लिए रूढिवादी मजदूर नेताओ की शिथिलता को झकझोर दिया जो परम्परागत ट्रेड यूनियनवाद की सीमाओ से परे देखना ही नही चाहते थे।

तो भी आइ डब्लू. डब्लू अपने उद्देश्य मे विफल रहा। वर्ग सघर्ष भडकाकर वेतन-प्रणाली खत्म करने के अपने लक्ष्य में उसने उससे ज्यादा प्रगति नही की, जितनी नाइट्स आव लेबर ने शिक्षा और आन्दोलन के अपने हलके कार्यक्रम के जरिए की थी। अमरीकी मजदूरो की एक बहुत बड़ी सख्या आइ. डब्लू. डब्लू. की विचारधारा के मूलत उतनी ही खिलाफ थी, जितने उनके मालिक या सामान्यत मध्यम वर्ग। अमरीकी मज़दूर सघ, जो अपने क्रातिकारी प्रतिद्वन्द्वी को बदनाम करने या उस पर चोट करने का कोई मौका नही चूकता था, मज़दूर आन्दोलन पर अपना प्रभुत्व जमाये रहा और क्राति-कारी यूनियनवाद ने कामकाजी यूनियनवाद के मुकाबले कोई वास्तविक प्रगति नही की। आइ डब्लू. डब्लू. वामपक्षीय भावनाओं की नाटकीय अभिव्यक्ति थी किन्तु इसका कोई अनुयायी नही बना। अमरीकी मज़दूर को यह विश्वास नही कराया जा सका कि श्रमिको का ऐतिहासिक कार्य पूँजीवाद का खात्मा कर देना है।

—o:—

१३ : प्रथम विश्व-युद्ध और उसके बाद

आगामी युद्ध की छाया जब अमरीका पर पडने लगी और घटनाएँ तेज़ी से देश को यूरोपीय युद्ध की ओर घसीट ले चली तो अमरीकी मज़दूरो के सामने एक गम्भीर समस्या आ खड़ी हुई। क्या यह ऐसा युद्ध है जिसमे मज़दूरो का कोई हित दांव पर लगा हुआ है ? क्या युद्ध-प्रयत्नो में सहयोग दिया जाए अथवा मजदूर राष्ट्रीय-सकट का लाभ उठाकर अपने वर्ग के हितो को बढावा दें ? आइ. डब्लू. डब्लू. ने १९१४ मे इन विकल्पो में से अपना चुनाव कर लिया था और उस पर वह दृढता से कायम रहा। समाजवादियो में दो मत हो गए और यूजीन वी डेब्स अपने मन्तव्यो के मुताबिक इसे पूँजीवादियो का युद्ध कहकर इस पर आक्षेप करता रहा और जेल चला गया। किन्तु अमरीकी मज़दूर सघ ने, राष्ट्र के बहुत अधिक मज़दूर जिसके साथ थे, सरकार और उसके युद्ध-प्रयत्नो के प्रति पूर्ण वफादारी की घोषणा की और उस पर अमल किया। मज़दूरो के प्रमुख प्रवक्ता के रूप में गौम्पर्स से बढ़कर देशभक्ति किसी सार्वजनिक नेता ने नही दिखाई और न ही कोई विल्सन सरकार का उससे बडा वफादार निकला।

लडाई शुरू होने से पूर्व सगठित श्रमिक पहले किसी भी समय की अपेक्षा ज्यादा ताकतवर थे और राष्ट्रीय अर्थतंत्र में पहली बार अपनी भूमिका के बारे में उन्होने सरकार से मान्यता हासिल की थी। औद्योगिक सम्बन्धो पर कमीशन की रिपोर्ट में मजदूरो मे असतोष का कारण बहुत कुछ उनके सगठन के अधिकार को न मानना बताते हुए औद्योगिक झगडो के निबटारे के लिए ट्रेड-यूनियनवाद को एक आवश्यक सस्था स्वीकार किया गया था। क्लेटन ऐक्ट ने ट्रस्ट विरोधी कानूनो के अन्तर्गत यूनियनो को उत्पीडन से प्रत्यक्षत मुक्त कर दिया था और राष्ट्रपति विल्सन ने बहुत से अवसरो पर मज़दूरो के लिए अपनी मित्रता का इज़हार किया था और घोषणा की थी कि भविष्य मे कोई भी राष्ट्रपति सगठित मजदूर अन्दोलन की कभी उपेक्षा नही कर सकेगा।

इसके अलावा १९१६ मे जब काग्रेस ने ऐडम्सन ऐक्ट पास किया था तब

मज़दूरों की यह जीत श्रम सम्बन्धो के क्षेत्र में सरकारी अधिकार क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण विस्तार की प्रतीक थी। यह सच है कि कांग्रेस ने यह ऐक्ट रेलवे हड़ताल के आसन्न खतरे को देखते हुए, जिससे राष्ट्र के युद्ध प्रयत्नो में बाधा पहुँचती, यह ऐक्ट पास किया था और रेलवे ब्रदरहुडो द्वारा अपनाए गए तौर-तरीको पर काफी व्यापक रोष था। किन्तु तो भी सरकार द्वारा मजदूरो के हितो की रक्षा करने का दायित्व अपने ऊपर ले लेना बहुत महत्त्वपूर्ण बात थी।

सत्ता और ज़िम्मेदारी दोनो की भावनाओ के साथ लगभग तीस लाख मजदूरो के प्रवक्ताओ ने युद्ध के प्रति मजदूरों का रुख निश्चित करने का काम अपने हाथ मे लिया। यह मामला युद्ध छिडने से लगभग १ मास पूर्व, किन्तु जब युद्ध बहुत निकट प्रतीत होता था, एक सम्मेलन मे उठाया गया था, जिसमें ७९ अन्तर्राज्यीय यूनियनो, रेलवे ब्रदरहुडो और ए एफ. एल. की कार्यकारिणी के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सम्मेलन की समाप्ति पर इन्होंने "शाति और युद्धकाल मे अमरीकी मज़दूरो का मन्तव्य" शीर्षक से एक वक्तव्य जारी किया जिसमे देश के जर्मनी से सीधा युद्ध में उलझने पर सब मज़दूर सगठनो के पूर्ण सहयोग का वचन दिया गया था।

यह कोई बिना शर्त प्रतिज्ञा नही थी। सगठित मज़दूरो का सकल्प था कि हाल के वर्षों में जो लाभ प्राप्त किए जा चुके है, युद्धकाल में भी उनकी रक्षा की जाए और विल्सन सरकार के समर्थन का वचन देते हुए भी इसने अपनी नव-प्राप्त हैसियत को पूर्ण मान्यता दिए जाने का आग्रह किया। सरकार से माँग की गई कि वह मजदूरो का सहयोग यूनियनो के माध्यम से ही प्राप्त करे और राष्ट्रीय-रक्षा से सम्बन्धित सब बोर्डो मे उन्हे प्रतिनिधित्व दिया जाए। मजदूरो को सगठित होने के अधिकार का प्रयोग करने की छूट दी गई और सब प्रकार से सयम रखने की बात स्वीकार करते हुए भी उन्होने हड़ताल के हथियार को छोड देने की बात नही मानी। जिस प्रकार के उद्देश्यो के लिए राष्ट्र युद्ध मे कूदने को तैयार हो रहा था, उन्हें देखते हुए मज़दूरो के असहयोग के लिए इन शर्तो को आवश्यक बताया गया।

मज़दूर नेताओ ने कहा कि "इस गणराज्य की सुरक्षा के साथ ही लोकतंत्र के आदर्श बँधे हुए है। यह एक ऐसी विरासत है जो हमारी जनता ने इस देश मे आज़ादी को जीवित रखने के लिए सघर्ष करने वाले अपने पूर्वजो से

हासिल की है—एक ऐसी विरासत जिसे कायम रखना है और आगे आने वाली हर पीढ़ी को पूर्ण शक्ति और उपयोगिता के साथ प्रदान करना है।"

सरकार इस आधार पर मजदूरों के साथ सहयोग करने को तैयार थी और युद्ध में हमारे वास्तविक प्रवेश के बाद उसने औद्योगिक सम्बन्धो में हड़तालो को रोकने की नीति पर चलने का प्रयत्न किया। अमरीकी मजदूर सघ के साथ किए गए समझौतो में सब सरकारी करारो में ट्रेड यूनियन स्टैण्डर्ड को लागू करने की व्यवस्था की गई। सब उपयुक्त सरकारी एजेंसियो में मज़दूरो के प्रतिनिधि नियुक्त कर दिए गए और गौम्पर्स को राष्ट्रीय रक्षा-परिषद् के परामर्शदाता आयोग का सदस्य बना दिया गया। नवम्बर, १९१७ में ए. एफ. एल. के सम्मेलन मे राष्ट्रपति ने कहा : "जब हम स्वाधीनता के लिए लड़ रहे है तो हमे अन्य बातो के अलावा यह भी देखना है कि मज़दूर स्वतत्र हो..... ।"

किन्तु १९१७ में औद्योगिक शाति कायम रखना बहुत आसान नही रहा। युद्ध काल की खरीदारी के कारण जब कीमते चढ़ी और उसके हिसाब से मज़दूरी की दर नही बढी तो मज़दूरो मे असन्तोष पैदा हो गया और वेतन में वृद्धि की आम माँग की जाने लगी। जब ये पूरी नही की गई तो युद्ध-पूर्व की अपेक्षा भी अधिक बडे पैमाने पर हड़तालें होने लगी। १९१७ की समाप्ति से पूर्व ही इनकी सख्या ४,४५० तक जा पहुँची जिनमें १० लाख से अधिक मज़दूरो ने भाग लिया।

बहुत-सी हड़ताले आइ. डब्लू. डब्लू. ने कराई। इसके क्रान्तिकारी नेतृत्व में उत्तर-पश्चिम के काष्ठ-गृहो मे, प्रशान्त महासागर के तट पर जहाजी घाट के कर्मचारियो में और ऐरिजोना की ताम्बे की खानों में खतरनाक हड़ताले हुई। किन्तु मज़दूरो में यह असन्तोष सिर्फ उसके क्रान्तिकारी तबके तक ही सीमित नही था। ए. एफ. एल. से सम्बन्धित बहुत-सी रूढिवादी और देशभक्त यूनियनों ने भी युद्धकाल में माँगें रखना और उनकी पूर्ति के लिए हड़ताल करना, जिनसे रक्षा-उद्योगों के उत्पादन मे गम्भीर अड़चन पैदा हुई, उचित समझा।

१९१८ के शुरू में इस स्थिति से समुद्रपार युद्ध सामग्री की सप्लाई खतरे मे पडती प्रतीत हुई। श्रम सम्बन्धी झगड़ो को यद्यपि वेतनो मे हेर-फेर के

लिए विशेष बोर्डो के जरिये और राष्ट्रपति विल्सन द्वारा अगस्त, १९१७ में नियुक्त कमीशन की मध्यस्थता से हल करने की कोशिशे की जाती रही तो भी सरकार ने आवश्यक औद्योगिक उत्पादन को कायम रखने के लिए और ज्यादा हस्तक्षेप की ज़रूरत महसूस की। सगठित मजदूरो के प्रति सरकार की मित्रता और समय की माँग दोनो का यह तकाज़ा था कि हडतालो को बलपूर्वक दबाने के बजाय मज़दूरो का सहयोग प्राप्त करने की नीति अख्त्यार की जाए। फलस्वरूप एक युद्ध-श्रम सम्मेलन बोर्ड में मजदूरो और प्रबन्धको दोनो के प्रतिनिधि नियुक्त किए गए जब उसने सर्वसम्मति से भविष्य के लिए श्रम-सम्बन्धो के बारे में अपनाए जाने वाले सिद्धान्त तय कर दिए तब अप्रैल, १९१८ मे इसकी सिफारिश पर राष्ट्रपति ने एक नेशनल वार लेबर बोर्ड कायम किया जिसे उन सब औद्योगिक झगडो के निबटारे के लिए, जिन्हे और किसी उपाय से हल न किया जा सका हो, एक अन्तिम अपीलीय न्यायालय का काम करना था। इसमे ५-५ प्रतिनिधि मज़दूरो और मालिको के रखे गए और दो सयुक्त चेयरमैन रखे गए जो जनता का प्रतिनिधित्व करते थे। ये थे भूतपूर्व राष्ट्रपति टैफ्ट और औद्योगिक सम्बन्धो के कमीशन के भूतपूर्व चेयरमैन फ्रैंक पी. वालश। कुछ समय बाद फ्रैंक फर्टर की अध्यक्षता मे वार लेबर पालिसीज बोर्ड की एक और एजेंसी कायम की गई। जिसने युद्ध-सम्बन्धी उद्योगो मे वेतन और काम के घण्टो से सम्बन्धित विभागीय मज़दूर नीतियो मे समन्वय करने के लिए क्लियरिग हाउस का काम किया।

नेशनल वार लेबर बोर्ड ने जिन आम सिद्धान्तो पर काम किया वे मज़दूरो के प्रति सरकार की नई नीति के प्रतीक के रूप मे बहुत महत्त्वपूर्ण थे। ये न्यू डील के अन्तर्गत बाद मे बनने वाले श्रम-कानूनो का पूर्वाभास भी देते थे। युद्ध-काल मे अब और हडताले तथा तालाबन्दियाँ नही होंगी इस आम वायदे के प्रत्युत्तर मे विल्सन सरकार वस्तुत मजदूरो की सब परम्परागत माँगो की पूर्ति मे उन्हें सहयोग देने को तैयार थी। "निर्वाचित प्रतिनिधियो" के जरिये सगठित होने और सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार को निश्चित रूप से स्वीकार किया गया मालिक इसमें कोई कटौती नही कर सकते थे और न ही उसे प्रदान करने से इन्कार कर सकते थे। यूनियन अथवा ओपन-शाप के बारे में सब मौजूदा समझौते युद्ध-पूर्व की स्थिति के आधार पर कायम रखने, ८ घण्टे के

दिन का यथासम्भव पालन करने, उद्योगो में काम करने वाली महिलाओ को समान कार्य के लिए समान वेतन देने का निश्चय किया गया और सामान्य मजदूरो समेत सब श्रमिकों का जीवनयापन के लायक जिससे मजदूर और उसका परिवार स्वास्थ्य तथा उपयुक्त सुख-सुविधाओ के वातावरण में अपनी जिन्दगी बसर कर सके, वेतन प्राप्त करने का हक पूर्णत स्वीकार कर लिया गया।

इन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राजीनामो के साथ हडतालें कम होने लगी और जो झगडे उत्पन्न भी होते थे, उनका जल्दी ही निबटारा कर दिया जाता था। इनसे युद्धोत्पादन के कार्य में कोई विशेष रुकावट उत्पन्न नही हुई इसलिए संकट काल के लिए आवश्यक मनुष्यशक्ति रिज़र्व में रखने, अनिवार्य पच-फैसले और हड़ताल विरोधी कानूनो जैसे सख्त कदम उठाने की जरूरत ही नही पडी। मजदूरो ने अपनी इच्छा से जो करार किया था उसमें अपने से सम्बन्धित शर्तों का उन्होने पूर्णत पालन किया और युद्ध मत्री बेकर ने एक बार तो यह भी कहा कि "मजदूर पूँजीपतियो की अपेक्षा अपने वचन का अधिक अच्छी तरह पालन कर रहे है।"

मजदूरो के प्रमुख प्रवक्ता के रूप में गौम्पर्स हर सभव तरीके से युद्ध-प्रयत्नों में सहयोग देता रहा और ए. एफ. एल. को हमारी विदेशनीति मे पूर्णतः एकात्म करने में सफल हुआ। उसने सब शातिवादियो और सदिग्ध जर्मन पक्षपाती ग्रुपो की कड़ी आलोचना की और शाति के लिए समाजवादियो के आन्दोलन के मुकाबले में श्रमिको व लोकतन्त्र के लिए अमरीकी गठ-बन्धन (अमेरिकन अलाएन्स फॉर लेबर ऐण्ड डिमोक्रेसी) नाम मे एक सगठन कायम किया और अमरीकीवाद की जोर-शोर से हिमायत की। राष्ट्रपति विल्सन ने उसे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा : "उसके देशभक्तिपूर्ण साहस, उसकी व्यापक दृष्टि और क्या करना है उसके बारे मे उसकी राजनीतिज्ञतापूर्ण सूझ का मै कायल हूँ।" १९१८ की पतझड में गौम्पर्स अन्तर-मित्रराष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में भाग लेने के लिए विदेश चला गया और शाति-वार्ताओं के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय श्रम कानून कमीशन के एक सदस्य के रूप मे वह पेरिस मे मौजूद था।

श्रम नीति की झांकी मजदूरो के युद्धकालीन लाभों तथा यूनियनवाद

के विकास में देखी जा सकती थी। वेतन धीरे-धीरे बढ़ते रहे जब तक कि वे निर्माण, परिवहन तथा कोयला खानों में १००० डालर से अधिक नही हो गए और १९१९ मे यूनियनो की सदस्य संख्या १९१६ से १० लाख से अधिक कुल ४१,२५,००० हो गई। जब सरकार ने रेलो का नियंत्रण अपने हाथ मे लिया तो जो मान्यता पहले सिर्फ रेलवे ब्रदरहुडो को मिली हुई थी वह वर्कशाप के कर्मचारियो, यार्ड के कर्मचारियो, पटरी का रख-रखाव करने वाले कर्मचारियो, रेलवे क्लर्कों तथा तार भेजने वालो को भी प्राप्त हो गई। जिन उद्योगो मे यूनियनवाद तरक्की नही कर पा रहा था, उनमें खाद्यपदार्थों को पैक करने वाले कर्मचारियो, नाविको, बन्दरगाह पर माल चढ़ाने-उतारने का काम करने वाले कर्मचारियो, विद्युत्, कर्मचारियो यथा मशीन-चालकों मे महत्त्वपूर्ण प्रगति की गई। युद्ध ने महान् अवसर ला खडे किए थे और अमरीकी मजदूरो ने उनका अधिक से अधिक लाभ उठाया।

युद्ध की समाप्ति ने एकदम नई परिस्थितियाँ पैदा कर दी। युद्धकालीन प्रतिबन्ध हटा दिए जाने और नेशनल वार लेबर बोर्ड जो लगाम लगाए रखता था, सरकार द्वारा उन्हें हटा दिए जाने के बाद श्रमिक और उद्योगपति अपने ऐतिहासिक सघर्ष को अनिवार्यत. फिर से शुरू करने के लिए सन्नद्ध हो गए। युद्धकालीन नाजुक सधि खत्म हो गई थी। मजदूरो का न केवल युद्ध-काल में प्राप्त किए गए लाभो को कायम रखने का बल्कि अपने लिए और ज्यादा अधिकार प्राप्त करने का दृढ निश्चय था और उद्योग भी स्वय को सरकारी नियत्रण से मुक्त करने, यूनियनवाद को और प्रगति करने से रोकने तथा अपनी शक्ति का फिर से प्रदर्शन करने के लिए कम कृतसकल्प नही थे। १९१९ मे जब पहले किसी भी समय की अपेक्षा बड़े पैमाने हर हड़तालें फूट पड़ी तो इन दोनो विरोधी पक्षो मे से किसी ने कोई कसर नही रखी। उस वर्ष राष्ट्रव्यापी हड़तालें हुई और राष्ट्र के पुनः शातिकालीन स्थिति में आने की सारी प्रक्रिया पर चौथाई सदी बाद की तरह सीधा और खतरनाक प्रभाव डाला।

इन में से बहुत से झगड़ो का तात्कालिक कारण वेतन था। वस्तुओ के मूल्यों मे युद्धकालीन वृद्धि १९१९ मे भी बे-रोक-टोक जारी रही—रहन-सहन

का खर्चा अन्ततः युद्ध-पूर्व के स्तर से दूना हो गया—और मजदूर, यद्यपि अब भी उन्हें ऊँची तनख्वाहें मिल रही थी, उसका कष्ट महसूस करने लगे। किन्तु वेतनो में हेर-फेर के मुकाबले यूनियन सुरक्षा का मूल प्रश्न आसानी से हल नहीं होता था। बहुत से मालिक वेतन सम्बन्धी माँगो को पूर्णतः या आशिक रूप में स्वीकार करने के लिये तैयार थे किन्तु सामूहिक सौदेबाजी के विस्तार में उन्हे अपने निजी व्यापार के प्रबन्ध पर खतरा दिखाई दिया। उन्होंने यूनियन प्रवक्ताओ को मान्यता देने से इन्कार कर दिया और युद्ध के दबाव में आकर जो रियायतें दी गई थी वे ज्यादातर वापस ले ली गई।

यूनियन मान्यता के प्रश्न का महत्त्व विल्सन सरकार द्वारा युद्ध के बाद एक मामले में प्रबन्धको और मज़दूरो के बीच मतभेद दूर करने की कोशिशो के फलस्वरूप सामने आया। विरामसधि के बाद श्रम सम्बन्धी झगडो का निबटारा करने वाली विविध एजेंसियाँ तुरन्त खत्म कर दी गईं, किन्तु जब हड़तालो की सख्या बढने लगी तो राष्ट्रपति ने एक राष्ट्रीय औद्योगिक सम्मेलन बुलाया, जिसमें इस बार मज़दूर, उद्योग और जनता के प्रतिनिधि थे और उससे आशा की कि यह श्रम सम्बन्धी शाति का कोई आधार ढूँढ सकेगा। सामूहिक सौदेबाजी के स्वरूप और जो उसके अपने कर्मचारी नही है उन व्यक्तियो या व्यक्ति समूहों के प्रति मालिक के दायित्व के बारे में तुरन्त ही बुनियादी मतभेद खड़े हो गए। मजदूरो के प्रतिनिधियो ने राष्ट्रीय यूनियनों की मान्यता हासिल करने के एकमात्र उपाय के रूप मे "बिना किसी भेदभाव के संगठन करने के अधिकार" का आग्रह किया और जब जनता के प्रतिनिधियो ने, जिनमे किसी प्रकार जॉन डि रोकफेलर जूनियर और युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के चेयरमैन ऐल्बर्ट एच ग्रे भी शामिल हो गए थे, इस रियायत को न देने मे उद्योग का साथ दिया तो सम्मेलन भग हो गया।

- इस बीच १९१९ मे हड़तालो की सख्या और स्वरूप जनता को अधिकाधिक भयभीत करने लगा। उन्होंने महसूस किया कि ये हडतालें न केवल शांतिकालीन अवस्था में लौटने मे बाधक बन रही है बल्कि अमरीकी संस्थाओ की स्थिरता को सकट में डाल रही है। बहुत से लोगो के रवैये पर रूस मे बोल्शेविक क्राति हो जाने से कम्यूनिज्म के प्रसार के उन्मादपूर्ण भय

का भी असर पडा था। वस्तुत १९१९ में हुई हडतालों के प्रति लोकमत के निर्माण मे कम्यूनिज्म के भूत के डर ने प्रमुख भाग लिया। अमरीका में अव्यवस्था उत्पन्न करने में मास्को की काल्पनिक भूमिका का हिस्टीरिया लोगो में फैल जाने के कारण ज्यादातर जनता यही समझने लगी कि अधिकांश हडताले क्रेमलिन के सीधे आदेश पर कम्युनिस्टों ने ही करायी है। बोल्शेविज्म को समस्त मजदूर अशाति का कारण बनाने की भयपूर्ण धुन में मजदूरों के वाजिब अधिकार और उनकी उचित शिकायतें भुला दी गई। मालिको ने सब हडतालियो को कम्युनिस्ट बताने का निरन्तर आन्दोलन करके जनता के उस भय का पूरा लाभ उठाया। युद्ध से उत्पन्न बडी-बडी आशाओ के बाद मजदूरो ने सब कही अपने आप को प्रतिरक्षात्मक स्थिति मे पाया, उन्हें अपनी विद्यमान स्थिति को कायम रखना मुश्किल हो रहा था, उसमें सुधार की तो दूर की बात थी।

जनता के रवैये के लिए कुछ उपयुक्त आधार भी थे। कम्युनिस्ट इण्टर-नेशनल विश्व-क्राति का पाठ-पढाती थी और उसके अनुयायी अमरीका मे भी थे। १९१९ में बनी स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी मे मजदूर आन्दोलन के बहुत से क्रातिकारी तत्त्व, जो पहले आई डब्लू. डब्लू से सम्बद्ध थे, और अन्य वामपक्षी ग्रुप शामिल हो गए थे। इसके सदस्य अनेक यूनियनों मे चोरी-छिपे दाखिल हो गए, उनका प्रभाव उनकी वास्तविक सख्या के अनुपात से कही ज्यादा था, अनेक हडताले कराने में उनका हाथ था और हिंसात्मक कार्यों के लिए वे लोगो को भडकाते थे। किन्तु जैसा कि पहले होता आया था, भयभीत जनता को मजदूरो की हड़तालो से—१८७७ में रेल हडतालो, पुलमैन हडताल और १९०२ की कोयला हडताल—जब समाज पर क्राति-कारी खतरा दिखाई देता था तो कम्युनिस्ट प्रभाव को बहुत बढा-चढा कर बताया जाता था।

इसके अलावा समस्त मजदूर आन्दोलन पर बोल्शेविज्म के कलक का टीका लगाने का रूढिवादी मालिको का प्रयत्न वास्तविकता से बहुत दूर था। ए. एफ एल के नेता भी कम्युनिज्म के उतने ही उग्र विरोधी थे, जितना राष्ट्रीय निर्माता सघ का प्रशासनिक निकाय। कम्युनिस्टो के खिलाफ जिहाद बोलने वालो में जो इस जमाने में उन्मादपूर्ण असहिष्णुता उत्पन्न करने में

सहायता दे रहे थे, गौम्पर्स उनमें सबसे आगे था । वस्तुतः बोल्शेविज्म पर लगातार आक्षेप करके मजदूर आन्दोलन को क्रातिकारी और विध्वंसक हरकतो के उद्योग के आरोपो से मुक्त करने का उसका प्रयत्न एक प्रकार से स्वय को ही नुकसान पहुँचाने वाला सिद्ध हुआ । जिस गैर-जिम्मेदारी से उसने कम्युनिस्टो के खतरे को बढा-चढा कर बताया, उससे सामाजिक सघर्ष बढने के बारे मे जनता का भय बढ गया और फलस्वरूप वह हडतालो का बलपूर्वक दमन करने की माँग करने लगी ।

कुछ भी हो, हड़ताल की हलचलो के बारे मे अखबारी रिपोर्टों से, अग्रलेख की टिप्पणियो से, कार्टूनो और सार्वजनिक नेताओ के वक्तव्यो से, सबसे यह जाहिर होता था कि जैसे समय गुजरता जाता है, मजदूरो के प्रति जनता का रवैया कठोर हो गया है । प्रगतिशील जमाने की अधिक सहानुभूतिपूर्ण भावना हवा हो गई और उसका स्थान राष्ट्रपति विल्सन की 'नई स्वाधीनता' की समस्त कल्पना के खिलाफ प्रतिक्रियावादिता ने ले लिया। मजदूर जब अधिक वेतन की माँग कर रहे थे तो इस बात की मजाक उड़ायी जाती थी कि फैक्ट्री मजदूर काम करने अपनी कारो मे जाएँगे । अपने लिए रेशमी कमीजें और अपनी पत्नियो के लिए रेशमी जुराबें खरीदेंगे ! एक अखबार ने लिखा कि हड़तालो की जीवन के हर क्षेत्र के लोग सपाट निन्दा कर रहे हैं । दूसरे ने कहा कि राष्ट्र एकमात्र उसी बडी यूनियन को सहन करेगा, "जिसका चिन्ह सितारे और धारियाँ होगी ।"

आर्थिक और सामाजिक स्थिरता के नाम पर हड़तालो के दमन की राष्ट्रीय नीति अपनाए जाने की लोग ज्यादा जोर से माँग करने लगे । लिटररी डाइजेस्ट ने बताया कि १९१९ की समाप्ति तक एक के बाद एक हडताल विफल हो रही थी क्योकि लोकमत की शक्ति मजबूती से और निश्चित रूप से मालिको के पक्ष में और मजदूरो के विरोध में संघीय, राज्यीय तथा स्थानीय पुलिस के हस्तक्षेप के पक्ष मे हो गई थी ।

युद्धोत्तर काल मे लोकमत को क्षुब्ध करनेवाली पहली हड़ताल, फरवरी १९१९ में सिएटल में हुई जिसे आम हड़ताल का नाम दिया गया था । यह कोई बहुत महत्त्वपूर्ण हड़ताल सिद्ध नही हुई किन्तु हिंसा की जिस पृष्ठभूमि

को लेकर यह पनपी और सब मजदूरों को उसमें शामिल करने की कोशिशों से ही राष्ट्र इतना चिन्तित हो गया कि उस पर बोल्शेविज्म से प्रेरित होने के आरोप लगाए जाने लगे।

यह हड़ताल सिएटल में जहाजी घाट के कर्मचारियों द्वारा अधिक वेतन की माँग किए जाने के कारण हुई। जब उनके मालिकों ने इस माँग को एकदम ठुकरा दिया तो मजदूरों ने काम छोड़ दिया। इस समय सिएटल में केन्द्रीय मजदूर समिति पर जेम्स ए. डंकन नाम के एक ऐसे आक्रामक और क्रांतिकारी आन्दोलनकर्ता का नियंत्रण था, जिसने आइ. डब्लू. डब्लू. द्वारा समस्त उत्तर-पश्चिम में पैदा किए गए कटुतापूर्ण औद्योगिक संघर्ष के फलस्वरूप सत्ता प्राप्त की थी। वह ए. एफ. एल. की रूढिवाद मजदूर नीतियों का मुखर विरोधी था। उसने युद्ध में हमारे प्रवेश का सख्त विरोध किया था। उपद्रव खड़ा करने का अवसर पाकर उसने सिएटल में सब कर्मचारियों को हड़ताल का आह्वान किया। ६०,००० ने उसका साथ दिया और ५ दिन तक शहर का औद्योगिक जीवन करीब-करीब ठप्प रहा और नागरिकों को अधिकांश सामान्य सेवाओं से वंचित रहना पड़ा।

आम हड़ताल अमरीका में एक नई चीज थी और उत्तर पश्चिम तथा समस्त देश में लोकमत के बढ़ते हुए विरोध ने इनमें शामिल होने वाली यूनियनों को यह महसूस करा दिया कि इस प्रकार के तौर-तरीकों से वे जनता की सम्पूर्ण सहानुभूति खो रही हैं। उन्होंने केन्द्रीय मजदूर समिति से अपने सहयोग का हाथ खींच लिया और हड़ताल का कचूमर निकल गया। किन्तु इस बीच मेयर ओल हैन्सन के इस सनसनीखेज वक्तव्य को राष्ट्र के समाचार-पत्रों ने बड़ी मोटी-मोटी सुर्खियों में छापा कि यह समस्त घटना बोल्शेविकों का षड्यन्त्र थी जिसे सिर्फ उसके साहसपूर्ण उपायों से ही कुचला जा सका है।

इससे भी ज्यादा क्षुब्धकारी हड़ताल कुछ महीने बाद बोस्टन पुलिस की हुई। अपने कम वेतन और काम की अन्य हालतों से, जिन्हें वह अन्यायपूर्ण समझती थी, असन्तुष्ट होकर पुलिस ने एक यूनियन बना ली थी, जिसे बोस्टन सोशल क्लब कहा जाता था और ए. एफ. एल. से चार्टर दिए जाने की माँग की। पुलिस कमिश्नर कर्टिस ने तत्काल यह घोषणा कर दी कि किसी भी पुलिसमैन को यूनियन में शामिल नहीं होने दिया जाएगा और यूनियन में

शामिल होने वाले ऐसे १६ व्यक्तियों को मुअत्तिल कर दिया और यूनियन की गतिविधि जारी रहने पर उनका स्थान लेने के लिए स्वयसेवको की भर्ती शुरू कर दी। इस प्रकार की अनधिकृत और मनमानी कार्रवाई से क्रुद्ध होकर पुलिस ने मामला अपने हाथ मे ले लिया और ६ सितम्बर को उसने अचानक हड़ताल कर दी। उस रात बोस्टन में पुलिस का संरक्षण बिल्कुल भी नही रहा और उसके घबराए नागरिक परेशान थे, कि जाने क्या अपराध और हिसात्मक कार्य हो जाएँ। इन परिस्थितियो मे गुण्डो ने काफी दगे किए भी किन्तु ऐसी आम अव्यवस्था नही फैली, जितनी आशंका थी। अगले दिन स्वयसेवको तथा स्टेट गार्डो ने पुलिस का काम सम्हाल लिया और पूर्ण व्यवस्था फिर से कायम हो गई।

अत्यधिक जटिल विवादग्रस्त मामलो का निबटारा इतना आसान नही था। हड़ताल की जिम्मेदारी के लिए और स्वयसेवक दल को जिसे इसी प्रकार के आपात काल मे सेवा के लिए बनाया गया था, तुरन्त ही ड्यूटी पर तैनात न कर सकने के लिए आरोप-प्रत्यारोप लगाए गए। पुलिस कमिश्नर और मेयर मे विवाद चल रहा था। पुलिस कमिश्नर ने जहां उन शिकायतो पर विचार करने से इन्कार कर दिया, जिनके कारण हड़ताल हुई थी या जिन लोगो ने इसमे भाग लिया था उन्हे पुन अपने पदो पर वहाल करने से मना कर दिया था, वहाँ मेयर ने हड़तालियो से काफी अधिक सहानुभूति दिखाई और आरोप लगाया कि सारे मामले को ठीक तरह से नही सम्हाला गया। ए एफ एल. के अधिकारियो ने आरोप लगाया कि पुलिस कमिश्नर को विवाद हल करने के बजाय मजदूरो को बदनाम करने की कोशिश करने मे ज्यादा दिलचस्पी है और वस्तुतः उन्होने स्वयं पुलिस को हड़ताल के लिए भड़काया है।

पुलिस के समर्थन में चाहे कुछ भी कहने की कोशिश की गई हो, लोगो ने सामान्यत. अपने पद से अलग होने के लिए उसकी निन्दा की और उन्हे फिर से काम पर लेने में पुलिस कमिश्नर कर्टिस की इन्कारी का समर्थन किया। "सभ्यता के खिलाफ अपराध" यह थी हड़ताल पर राष्ट्रपति विल्सन की तीखी टिप्पणी और एक भावी राष्ट्रपति ने इसके लिए इसमे भी ज्यादा कड़े शब्द इस्तेमाल करके राष्ट्रव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। गौम्पर्स ने

मैसाच्युसेट्स के गवर्नर कालविन कूलिज से पुलिस कमिश्नर को हटाने की प्रार्थना की। उन्होने इन्कार कर दिया। उनका सक्षिप्त तार था "सार्वजनिक सुरक्षा के खिलाफ हडताल करने का किसी को, कही भी, किसी समय कोई अधिकार नही दिया जा सकता।" जनता इस प्रकार की भावनाओं पर खुश थी, बोस्टन की पुलिस को पुनः काम पर नही लिया गया और कूलिज ह्वाइट-हाउस के पथ पर अग्रसर हो चले।

यद्यपि सिएटल की आम हडताल और बोस्टन की पुलिस हड़ताल पर सारे राष्ट्र का ध्यान गया तो भी ये स्थानीय मामले ही थे। राष्ट्रीय और उद्योग-व्यापी परिणामों की दृष्टि से इस्पात और कोयला उद्योगो में हड़तालें उनसे कही ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी। १६१६ की परिस्थितियो में उन्हे विफल कर दिया गया किन्तु उनसे औद्योगिक सघर्ष के एक नए नमूने की जो दूसरे विश्व युद्ध के बाद काफी तेज़ हो गया, झाँकी मिली। इस्पात की हडताल विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण थी। अगर यह हडताल सफल हो जाती तो १६२० के दशक का समस्त मजदूर इतिहास बिल्कुल दूसरे प्रकार का होता। किन्तु हडताल के दमन के फलस्वरूप अगले १८ वर्ष तक इस बुनियादी उद्योग मे मज़दूरो का प्रभावशाली संगठन स्थगित हो गया।

इस्पात मिलो मे काम की हालतो से सर्वत्र असन्तोष फैला हुआ था और मजदूर नेता जो यह कहा करते थे कि अगर मजदूर अपनी शिकायतो पर कुछ गौर किए जाने की आशा करते है तो उन्हें यूनियन बनानी होगी, उसकी उनसे पुष्टि होती थी। युद्धकालीन प्रगति के बावजूद वेतन कम रहे और रहन-सहन का खर्चा निरन्तर बढते जाने से वे और भी पिछडते जा रहे थे। आधे से अधिक मजदूरो के लिए काम के घण्टे सप्ताह के छहो दिन अब भी १२ और सप्ताह मे काम के औसत घण्टे ६६ से कुछ ही कम थे। अधिकाश कर्मचारी बाहर से आए हुए अलग ग्रुपो के लोग थे और उनकी रहन-सहन की हालत अधिक सुख-सुविधापूर्ण जीवन के वायदे पर, जिससे आकर्षित होकर वे इस 'अवसरो के देश' मे आए थे, एक कटु विडम्बना थी।

अन्य उद्योगो मे मजदूरो ने जो संगठनात्मक प्रगति की, वैसा इस्पात उद्योग में कोई उदाहरण न था। १६०१ और १६१० में पुरानी ऐमलगमेटेड ऐसोसियेशन आव आयरन, स्टील ऐण्ड टिन वर्कर्स की हडतालो के दमन के

बाद से इन उद्योगो मे यूनियन बनाने के और प्रयत्न नही किए गए। । यद्यपि ऐमलगमेटेड का अस्तित्व अब भी था, तो भी यह एक छोटी सी शिल्प यूनियन रह गई थी जिसे अदक्ष मजदूरो के विशाल समुदाय से कोई सरोकार नही था।

हड़ताल की ओर पहला कदम १९१८ की गर्मियो में उठाया गया, जबकि इस्पात उद्योग पर अधिकार क्षेत्र वाली २४ यूनियनो के प्रतिनिधियो की एक सगठन समिति बनाई गई। इसका उद्देश्य न केवल मिलो में काम की हालतों में सुधार करना बल्कि यूनियन मजदूरो द्वारा इस कुंजी उद्योग को हथियाना भी था। इसके लिए अनुप्राणित करने वाला व्यक्ति था विलियम जेड. फौस्टर, जो सीधी आर्थिक कार्रवाई का क्रातिकारी प्रवक्ता था, जिसने औद्योगिक सघर्ष में अपने प्रारम्भिक अनुभव आइ. डब्लू. डब्लू. में रहकर प्राप्त किए थे और जो बाद में एक प्रमुख कम्युनिस्ट बन गया। उसकी संगठन शक्ति कमाल की थी और ऐसोसियेटेड यूनियन समिति के सचिव-कोषाध्यक्ष के रूप में "अमरीका के इस्पात कारखानो में सगठन के लिए" एक विशाल अभियान करने का काम उसके सुपुर्द कर दिया गया।

इस्पात कारखानो मे संगठित श्रमिको की सख्या एक वर्ष के अन्दर ही एक लाख हो गई और युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के चेयरमैन गैरी के साथ एक श्रमिक समझौते के लिए वार्ता चलाने की कोशिश की गई। जब उसने इस प्रार्थना की बिल्कुल उपेक्षा कर दी तो एक हड़ताल-मत लिया गया और इस्पात कर्मचारियो की तरफ से यूनियन समिति ने सामूहिक सौदेबाजी, ८ घटे के दिन और वेतनो मे वृद्धि की माँग की। इन मॉगो पर विचार के के लिए बातचीत करने के और प्रयत्नो का गैरी ने असंदिग्ध शब्दो मे टका-सा जवाब दिया, "हमारा कार्पोरेशन और उसकी सहायक सस्थाएँ यद्यपि वे इस प्रकार मजदूर यूनियनो को मुँह नही लगाती, उनके साथ कोई विचार-विमर्श करने से इन्कार करती है।" तब १२ सितम्बर को हडताल करने का बाकायदा निश्चय कर लिया गया और महीने के अन्त तक कई राज्यो मे ३,५०,००० व्यक्तियो ने काम छोड़ दिया।

इस्पात-उद्योग विश्व में सबसे शक्तिशाली पूँजीवादी ताकत—इस चुनौती का सामना करने को उद्यत थी और हड़ताल तोडने के दृढ सकल्प मे उसे

स्थानीय, राज्य और यहाँ तक कि संघीय अधिकारियों का भी पूर्ण सहयोग मिला। हज़ारों हड़ताल-भंजक विशेषकर नीग्रो ले आए गए। मिलों में के भिन्न-भिन्न प्रकार के विदेशी तत्त्वों के बीच दुश्मनी और जातीय वैर-भाव पैदा करने के लिए मज़दूर गुप्तचर रखे गए, और स्थानापन्न गार्डो, स्थानीय पुलिस, राज्य की पुलिस ने धरना देने वालों की पंक्तियों को तहस-नहस कर दिया और नागरिक-स्वाधीनता के कानूनों की परवाह न करते हुए हड़तालियों की सभाएँ भंग कर दीं। अनेक बस्तियों में मार्शल ला लगाकर हिंसा पर काबू पाने का यत्न किया गया, मेजर जनरल वुड की कमान में गैरी (इण्डियाना) में सेनाएँ भेजी गईं किन्तु फिर भी हड़ताल खत्म होने तक कोई २० व्यक्ति मारे गए, जिनमें १८ मज़दूर थे।

इस्पात कम्पनियों ने मज़दूरों को हतोत्साह करने और लोकमत को यह विश्वास कराने के लिए यह सब काण्ड अमरीकी पूँजीवाद को उलट देने के लिए मास्को में पकाया हुआ एक षड्यन्त्र है, अखबारों में इश्तिहारों के जरिये धूँआधार प्रचार करना शुरू कर दिया। उन्होंने घोषणा की कि हड़ताल-श्रमिकों और मालिकों के बीच नहीं बल्कि क्रान्तिवादियों और अमरीका के बीच है। यह सफल नहीं हो सकती क्योंकि "आई. डब्लू. डब्लू. वाद या अन्य कोई भी वाद हो जो, संविधान को फाड़ डालना चाहता है, अमरीका बोल्शेविज्म के 'लाल' शासन का कभी हामी नहीं बनेगा।" यह अफवाह भी उड़ाई गई कि "हड़ताल को भड़काने में तोड़-फोड़ करने वालों" का भी हाथ है जो औद्योगिक प्रगति को रोकने की आशा करते हैं।

इन परिस्थितियों में इतनी ज्यादा उत्तेजना और विवाद उत्पन्न हुआ कि प्रोटैस्टैण्ट चर्चों के संगठन इण्टर चर्च वर्ल्ड मूवमेण्ट ने हड़ताल की पड़ताल करने के लिए एक जाँच कमीशन नियुक्त किया। इसको ऐसे शैतानीपूर्ण षड्-यन्त्रों का कोई प्रमाण नहीं मिला, जिनका इस्पात कम्पनियों ने पता लगाने का दावा किया था और कहा कि मज़दूरों के विद्रोह को "बोल्शेविज्म की निराधार उत्तेजना की चकाचौंध" के बजाय औद्योगिक इतिहास के प्रकाश में देखना ज्यादा लाभदायक है। किन्तु हड़ताल के क्रांतिकारी अराजकतावाद और कम्यु-निस्टी पहलुओं पर बार-बार दिया गया जोर फौस्टर के वामपक्षी विचार

इस्पात कर्मचारियों के प्रति आम जनता की सहानुभूति को खत्म करने में सफल हो गए, यद्यपि मिलो में काम की कठोर हालतो के विषय में जो तथ्य सामने आए थे, उनका किसी ने प्रतिवाद नही किया था। जनता बोल्शेविज्म को सक्रिय मानने के लिए तैयार बैठी थी। इसी तथ्य को कि इस्पात कर्मचारियो में से इतने ज्यादा लोग 'पूर्व-मध्य यूरोप के हुंकी' स्पेनिशिया इटालियन 'डैगी' और 'बौप' थे। इस बात का पर्याप्त प्रमाण मान लिया गया कि वे अमरीका-विरोधी, क्रांतिकारी और मास्को द्वारा नियन्त्रित है।

हड़ताल समिति को इस प्रचार का सफलतापूर्वक मुकाबला करने का कोई उपाय नज़र नही आया। संयोजक यूनियनो ने अपना समर्थन वापस ले लिया, ए. एफ. एल. ने फौस्टर के नेतृत्व को अस्वीकार कर दिया और स्वयं हड़तालियो मे निराशा छाने लगी। फलस्वरूप नवम्बर के आखीर में यूनियन समिति ने इण्टरचर्च कमीशन से मध्यस्थता करने के लिए कहा और झगड़े को समाप्त करने के लिये उसकी किसी भी योजना को स्वीकार करने को उद्यत हो गई। गैरी ने किसी भी शाति-प्रस्ताव पर ध्यान देने से इन्कार कर दिया। उसने कहा : "हड़ताली चाहते हैं—बन्दशाप, सोवियत, सम्पत्ति का जबरन वितरण...मामला है ही कोई नही।" हड़ताल खिचती रही किन्तु निराश मजदूर अब काम पर लौटने लगे। जनवरी १९२० में नेताओ ने हार मान ली। हड़ताल वापस ले ली गई और इस बीच जिन मजदूरो के नाम काली सूची में दर्ज नही किए गए थे, वे एक भी रियायत पाये बिना काम पर लौट आए।

इण्टरचर्च कमीशन ने अपनी अन्तिम रिपोर्ट मे लिखा कि "यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन इतना विशाल है कि ३००००० मजदूर उसे परास्त नही कर सकते। इसके पास इतनी ज्यादा फालतू नकदी है, अन्य व्यवसायो मे इसके इतने अधिक दोस्त है, स्थानीय व राष्ट्रीय सरकारी अफसरो का उसे इतना अधिक सहयोग प्राप्त है, प्रेस और उपदेश मच जैसी सामाजिक सस्थाओ पर उसका इतना ज्यादा प्रभाव है, और हमारे प्रदेश पर अत्यधिक फैला होने पर भी वह इतना पूर्ण केन्द्रीय नियन्त्रण कायम रखे हुए है—कि उसे अनेक विचारो और आशंकाओ वाले और विभिन्न 'वजन की जेबो वाले' बहुत ज्यादा बिखरे हुए मजदूर अपेक्षाकृत दुर्बल नेतृत्व में कभी नही

हरा सकते।"

अगर मज़दूरों को अन्य बड़े पैमाने के उद्योगो में यूनियनें बनानी थीं, जिनमें उनके यूनियन बनाने पर प्रतिबन्ध था तो इस्पात उद्योग मे संगठन करना उनके लिए निर्णायिक बात थी। व्यावसायिक और वित्तीय वर्ग ने ओपनशाप और औद्योगिक यूनियन के बीच निर्णयात्मक सघर्ष के रूप में सन् १९१६ की हडताल के महत्त्व को पूर्णतः समझ लिया था। यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन का भरपूर साथ दिया गया। जे. पी. मार्गन ने गेरी की इस बात का पूर्ण समर्थन किया कि वह यूनियनो से कोई सरोकार नही रखेगा। मजदूरों की माँग पर विचार करने तक से इन्कार कर देने का औचित्य जताने के लिए बोल्शेविज्म के हौए का सफल प्रयोग किया गया। हड़ताल का परिणाम यह हुआ कि न केवल पुनः १२ घण्टे का दिन कायम हो गया बल्कि देश के सबसे महत्त्वपूर्ण उद्योग मे अनियन्त्रित पितृ-भाव और यूनियन-विरोधिता कायम हो गई।

इस्पात की हड़ताल समाप्त होने से पूर्व ही बिटुमिनस कोयला खानो में हड़ताल हो गई। यूनाइटेड माइन वर्कर्स ने युद्ध-काल मे खान-मालिको के साथ एक करार किया था और १९१६ में कीमतें चढने के बाद वेतनो में हेर-फेर किए जाने की माँग की, जो सन् १९१७ के बाद से बढाई नही गई थी। उसने वेतनो में ६० प्रतिशत वृद्धि की और ईंधन के लिए युद्ध-कालीन आवश्यकता समाप्त हो जाने के कारण बढी हुई बेकारी का सामना करने के लिए ३० घण्टे के सप्ताह का प्रस्ताव किया किन्तु मालिको ने खनिको की माँगों पर, जो वस्तुत बहुत ज्यादा थीं न केवल विचार करने से इन्कार कर दिया, बल्कि इस बात पर जोर दिया कि चूँकि युद्ध अभी बाकायदा समाप्त नहीं हुआ है, इसलिए पुराना करार ही कायम रहेगा। तब एक नवम्बर से हड़ताल का आह्वान किया गया, जिसमे ४,२५,००० श्रमिको ने भाग लिया।

कोयले की खानो मे काम रुक जाने से राष्ट्रीय अर्थतन्त्र को जो नुकसान हो सकता था, जैसा कि १९१६ से पहले और बाद में भी अन्य अवसरों पर देखने में आया, उससे आम जनता को बडी बेचैनी हुई। सरकार पहले ही यह चेतावनी दे चुकी थी कि कोयला-उद्योग के बारे मे एक युद्धकालीन कानून के

मातहत यह हड़ताल गैर-कानूनी होगी। न केवल यूनाइटेड माइन वर्कर्स बल्कि सामान्यत. सभी अमरीकी मज़दूर यह देख कर स्तब्ध रह गए कि जो विल्सन सरकार कभी उनके प्रति मैत्रीपूर्ण रुख रखती थी, उसी ने अब इण्डियानापोलिस की सघीय जिला अदालत के जज ऐल्बर्ट बी. ऐण्डर्सन से निरोधादेश प्राप्त करने का सख्त कदम उठाया। इस आदेश के द्वारा यूनियन अधिकारियो को आगे कोई हड़ताल-सम्बन्धी गतिविधि करने से मना कर दिया गया और उन्हें हड़ताल का आदेश रद्द कर देने को कहा गया।

मज़दूर यह समझते थे कि सरकार ने यह वचन दे रखा है कि वह हड़तालो का दमन करने के लिए अपने युद्धकालीन अधिकारो का उपयोग नही करेगी इसलिए अब उसके हस्तक्षेप करने पर विरोध का तूफान खडा हुआ। ए. एफ. एल. ने निरोधादेश को "क्रोध उत्पन्न करने वाली कार्रवाई" और "न्याय और स्वाधीनता की नीव पर प्रहार करने वाला" कह कर उसकी निन्दा दी। उसने खनिको से अपील की कि वह सरकारी दबाव के आगे झुके नही, और सघर्ष जारी रखने की हालत में उन्हे अपने पूर्ण सहयोग का वचन दिया।

१६१६ मे यूनाइटेड माइन वर्कर्स का कार्यवाहक अध्यक्ष एक ४० वर्षीय मजदूर नेता था, जो युद्धकाल मे यूनियन का मुख्य सांख्यिक था और जिसको जनता बिल्कुल नही जानती थी। किन्तु जॉन एल लेविस अपने एक कार्य से घर-घर चर्चा का विषय बन गया। उसने हडताल वापस ले ली। यद्यपि उसने निरोधादेश के लिए राष्ट्रपति विलसन की तीव्र निन्दा की तो भी वह ए. एफ. एल. की उग्रतापूर्ण सलाह को मानने के लिए तैयार नही था, और यद्यपि बाद के वर्षों में उसका यह कार्य बड़ा अस्वाभाविक सिद्ध हुआ, उसने घुटने टेक देने की सलाह दी। मजदूरो के नेतृत्व के इस पहले दौर मे लेविस ने पत्र-प्रतिनिधियों के समक्ष कहा : "हम अमरीकी है, अपनी सरकार मे हम नही लड सकते।"

स्वयं खनिको ने, जो एक असाधारण बात लगती थी, उसका आदेश मानने से इन्कार कर दिया। हडताल का आदेश रद्द कर दिए जाने के बावजूद वे खानो में काम करने नही गए। इससे पूर्व कि उन्हें लौटने के लिए मनाया जा सके, वाशिंगटन में और बैठकें हुई और एक राजीनामा हुआ जिसमें मालिको ने वेतनो में तुरन्त १४ प्रतिशत वृद्धि करना स्वीकार कर लिया और वेतन

सम्बन्धी तथा अन्य विवादग्रस्त मामलो का अंतिम निबटारा एक विटुमिनस कोल कमीशन के हाथ में सौंपना मान लिया। अतिम फैसले के अनुसार वेतनो में २७ प्रतिशत वृद्धि की गई जो खनिको की मूल माँग से करीब आधी थी किन्तु उसमे ३० घण्टे के सप्ताह की दूसरी माँग की बिल्कुल उपेक्षा कर दी गई।

हडताल सरकारी कार्रवाई से खत्म हुई। यद्यपि खनिको ने काफी लाभ प्राप्त किए, किन्तु महत्त्वपूर्ण प्रश्न निरोधादेश के कानून का प्रयोग करना था। एक महत्त्वपूर्ण परिपाटी कायम कर दी गई थी। किन्तु सरकार का आदेश मानने की उत्सुकता जाहिर करके लेविस ने दिखा दिया कि ए. एफ. एल. के नेताओ की अपेक्षा वह इस चीज को ज्यादा अच्छी तरह समझता था कि हडतालो को दमन करने मे लोकमत कहाँ तक जाने को तैयार था। इस्पात की हडताल के बारे में जितना रोष व्यक्त किया गया था, अब कोयला खनिको की हडताल मे, जिससे जाडे आने पर देश के समक्ष ईधन का संकट उपस्थित हो गया था, उससे भी ज्यादा रोष प्रकट किया जा रहा था।

राष्ट्रपति विल्सन ने कोयला हडताल को "नैतिक और कानूनी दोनो दृष्टियो से गलत" घोषित किया। काग्रेस ने उनके कथन की पुष्टि की, देशभर के समाचार-पत्रो के अग्रलेखो मे निरोधादेश प्रयोग की सराहना की गई। 'चैम्बर्सबर्ग पब्लिक ओपीनियन' की टिप्पणी थी . "न तो खनिकों को और न अन्य किसी संगठित अल्पसख्यक वर्ग को देश को आर्थिक व सामाजिक विनाश में ढकेलने का कोई हक है......मजदूर तानाशाही भी उतनी ही खतरनाक है, जितनी पूँजीवादी तानाशाही।" फिलाडेलफिया पब्लिक लेजर ने कहा : "जब मजदूरो के विशाल सगठन देश का गला पकड़कर किसी उद्योग के मालिको को अपनी माँगें मानने के लिए मजबूर करने को जान बूझ कर राष्ट्रव्यापी योजना बनाते है तब वे गैरकानूनी षड्यन्त्र रचते है। और शिकागो डेली न्यूज़ ने साफ-साफ लिखा . "लोग औद्योगिक सघर्ष से थक गए है। अब वे अपनी रक्षा करने के लिए कटिबद्ध है।"

निस्सन्देह बोल्शेविज्म का प्रश्न फिर उठाया गया सेनेटर पायनडेक्सटर ने कहा कि "अराजकतावादी और हत्यारे कम्युनिस्टो" के प्रति सरकार ने जो जरूरत से ज्यादा नरमी दिखाई है, यह हड़ताल उसी का नतीजा है। इस

समझौते के बाद न्यूयार्क ट्रिब्यून ने कहा कि अन्ततोगत्वा सरकार ने जो दृढ़ नीति अपनायी वह एक उदाहरण भी है और चेतावनी भी। "रूस मे इसका डका बजा दो, मास्को की गलियो पर इसकी घोषणा कर दो और स्वदेश में सब विध्वंसकारियो के मन मे इसे पैठा हो।"

यद्यपि १९१९ की हड़तालो से मजदूरो को बहुत धक्का लगा और उन्होने समझा कि विल्सन सरकार ने उन्हें धोखा दिया है और उनके मन में उससे वितृष्णा पैदा हुई तो भी यूनियनो द्वारा युद्धकाल में की जाने वाली प्रगति रुकी नही। पराजयो के बावजूद मज़दूरों का जोश ठण्डा नही हुआ था। अनेक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रो में वह वेतन बढवाने में कामयाब हुआ और यूनियनों की सदस्य सख्या बढती रही। ए एफ. एल. से सम्बद्ध ११० यूनियनो मे से मशीन-चालको, संचालनकार्य से इतर रेलवे कर्मचारियो, टैक्सटाइल कर्मचारियों और जहाज़ी नाविको की यूनियनो ने महत्त्वपूर्ण लाभ प्राप्त किए और खाना व कपडा जैसे उद्योगो में अदक्ष और अर्धदक्ष दोनो प्रकार के कर्मचारियो का संगठन किया जा रहा था।

तो भी ए एफ. एल. के सामने कठिनाइयाँ बढ़ती गई। व्यावसायिक यूनियनवाद के अपने कार्यक्रम पर अमल करने में जिस सरकारी सहयोग की उसने आशा की थी, उसकी जगह निरोधादेश कानून का फिर से आश्रय लिया जाने लगा और फलस्वरूप उसपर ज्यादा आक्रामक तरीके अपनाने के लिए दबाव पड़ने लगा। किन्तु सघ के नेताओ ने अब भी किसी राजनीतिक कार्रवाई में भाग लेने से इन्कार कर दिया और मजदूर दल की स्थापना के नए सुझाव को ठुकराते हुए ए. एफ. एल. के परम्परागत गैर-राजनीतिक उद्देश्यो की नीति पर पुन: बल दिया। १९१९ के एक सम्मेलन मे "मज़दूरो के एक नए अधिकार-पत्र की घोषणा की गई जिसमें यूनियन को मान्यता दिए जाने, जीवन-यापन के लायक वेतन दिए जाने और निरोधादेशों के प्रयोग को मर्यादित करने की माँग की गई किन्तु इससे आगे जाने से फेडरेशन ने इन्कार कर दिया।

परिस्थितियो ने इस प्रकार के कार्यक्रम को पहले से भी कठिन बना दिया। अगले वर्ष की समाप्ति से पूर्व ही देश में यकायक भारी मन्दी आ गई। युद्धकाल मे जो व्यावसायिक तेजी आई थी, उसके युद्ध के बाद ठप्प हो

जाने से कीमते लुढक पड़ी, कारोबार फेल हो गए, उद्योगो ने तरक्की करनी बन्द कर दी। सब जगह वेतनो मे कटौतियाँ हुई और बड़े पैमाने पर बेरोजगारी फैली। १९२१ के मध्य ग्रीष्म तक ५० लाख व्यक्ति बेकार हो गए। उद्योग ने इन परिस्थितियो का तुरन्त लाभ उठाकर यूनियनों के खिलाफ अपना जिहाद तेज़ कर दिया। निरोधादेश और गिरफ्तारियो ने नाविको की एक हड़ताल तोड़ दी और बाद में मजदूरो की जो काली सूची बनाई गई उससे इस यूनियन की ताकत युद्ध काल की अपेक्षा २० प्रतिशत से भी कम रह गई। खाद्य पदार्थ पैक करने के उद्योग के कर्मचारियो की इतनी बुरी हार हुई कि उद्योग पुन. ओपनशाप पर आ गया और १९२२ में रेलवे वर्कशाप के कर्मचारियो को, जिनपर सब ओर से आक्षेप किए जा रहे थे और भी बुरी तरह मात खानी पड़ी।

यह हड़ताल तब हुई जब कि १९२० में रेलो का स्वामित्व फिर से निजी हाथों में सौप दिए जाने पर कर्मचारियो के साथ सम्बन्ध निश्चित करने के लिए नियुक्त रेलवे लेबर बोर्ड ने युद्ध-काल में किए गए समझौते मसूख कर दिए, ओवरटाइम खत्म कर दिया और वेतनो में कुल ६ करोड डालर की कटौती का अधिकार दे दिया। वेतनो में इस कटौती का रेलवे बदरहुडो पर कोई प्रभाव नही पडा। और पटरी की देखभाल करने वाले कर्मचारियो ने पञ्चफैसला स्वीकार कर लिया किन्तु वर्कशाप कर्मचारियो की ६ शिल्प यूनियनो के सदस्य बोर्ड द्वारा मालिको के दबाव के आगे प्रत्यक्षतः झुक जाने से क्रुद्ध हो गए। हड़ताल का आह्वान किया गया और १ जुलाई १९२२ को वर्कशाप के ४००००० कर्मचारियो ने काम बन्द कर दिया।

उन्हे शुरू से ही कठिनाई का सामना करना पड़ा। रेलवे लेबर बोर्ड ने हड़ताल को गैरकानूनी घोषित कर दिया। ब्रदरहुडो ने रेलो को चलाने मे मालिको को सहयोग देने का प्रस्ताव किया। राष्ट्रपति हार्डिंग ने डाक में कोई हस्तक्षेप करने के खिलाफ चेतावनी दी और लोगो की सहानुभूति सर्वथा कर्मचारियो के खिलाफ हो गई। लोकमत शायद इस तथ्य से सबसे अच्छी तरह प्रकट हुआ कि विशेष गार्डो और मिलीशिया के संरक्षण में लाए गए हडताल भंजको मे सैकडों कालेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी थे। किन्तु यही इति नही थी। १ सितम्बर को जब हड़ताल कैसे भी विफल होने को थी तो अंतिम

प्रहार सरकार ने किया। अटार्नी जनरल डौहर्टी ने शिकागो मे सघीय जिला अदालत के जज जेम्स एच. विल्करसन से एक निरोधादेश ले लिया जिसे "अब तक के किसी श्रम-विवाद में लिया गया सबसे व्यापक निरोधादेश" कहा जाता था।

इसमें किसी भी प्रकार का धरना देने, हडताल के सम्बन्ध मे सभाएँ करने, जनता के नाम वक्तव्य जारी करने, हड़ताल जारी रखने के लिए यूनियन कोष खर्च करने तथा इसके संचालन के लिए नेताओ द्वारा किसी भी सचार साधन के प्रयोग पर पाबन्दी लगा दी गई। किसी को भी "पत्रो, तारो, टेलीफोनो या मुँह से कोई शब्द निकाल कर भी हड़तालियों को मदद देने की और मजाक उड़ा कर, प्रार्थना करके, युक्ति-प्रत्युक्ति करके, आग्रह करके, प्रलोभन देकर अथवा अन्य किसी भी प्रकार से किसी को काम करना बन्द करने की प्रेरणा देने की इजाजत नहीं दी गई।" डौहर्टी का किसी भी लागत पर हड़ताल को तोड देने का इरादा था। उसने प्रेस प्रतिनिधियो को कहा "मै जब तक और जिस हद तक अमरीकी सरकार की तरफ से बोल सकता हूँ, तब तक और वहाँ तक मै प्राप्त शासनाधिकार का उपयोग देश की मजदूर यूनियनो को ओपनशाप नष्ट करने से रोकने के लिए करूँगा।"

इस कठोर कदम से देश भर में तीव्र विवाद छिड गया। न केवल मजदूरो से सहानुभूति रखने वाले अखबारों ने बल्कि अन्य बहुत से अखबारो ने भी बहुत से मामलों में शायद दलीय भावना से प्रेरित होकर निरोधादेश को सर्वथा अनधिकृत और भाषण-स्वातंत्र्य पर कुठाराघात बताया। 'न्यूयार्क इवनिग पोस्ट' ने लिखा कि यह हड़ताल की आसन्न विफलता को इसी दृष्टि से देख रहा था कि यह बहुत उचित ही है किन्तु यह नियमो के प्रतिकूल "कमर से नीचे किया गया प्रहार" है। "नेवार्क न्यूज" ने निरोधादेश को "मुँह बन्द करने वाला कानून" बताया और न्यूयार्क वर्ल्ड ने इसे "एक भद्दा कदम" कह कर इसकी निंदा की। दूसरी ओर कंजरवेटिव रिपब्लिकन अखबारो ने सरकार की नीति का पक्ष-पोषण करने की कोशिश की। न्यूयार्क ट्रिब्यून, फिलाडेल्फिया इन्क्वायरर, द बोस्टन ट्रान्सक्रिप्ट और शिकागो डेली न्यूज़ ने यह कहा कि यह निरोधादेश कितना भी व्यापक हो, लेकिन समस्त रेल-परिवहन को खतरे में डालने वाले वर्कशाप कर्मचारियो की कानून का पालन न करने की प्रवृत्ति से ज्यादा

व्यापक नही है। मज़दूरो के दुश्मनो की ओर से अंतिम शब्द शायद मैन्यू-फैक्चरर्स रिकार्ड ने कहे। इसने कहा कि निरोधादेश कर्मचारियो को सिर्फ इस बात का हुक्म देता है कि वे "अव्यवस्था के साथ अपना व्यभिचारपूर्ण सहवास बन्द कर दे।"

रेलवे वर्कशाप के कर्मचारियो के लिए सरकार का हस्तक्षेप अंतिम तिनका था। उन्होने अलग-अलग रेलो से अलग-अलग समझौता करने के बाल्टीमोर और ओहायो के प्रेजीडेण्ट विलर्ड के प्रस्ताव को उत्सुकतापूर्वक लपक लिया और जितना अच्छा समझौता वे कर सकते थे, उन्होने किया। कुल रेलवे लाइनो के मित्रतापूर्ण रुख के कारण वे कोई २,२५००० कर्मचारियो के लिए अपना यूनियन सगठन कायम रख सके, किन्तु १,७५,००० को कम्पनी यूनियनो मे शामिल होना पडा। सरकारी हस्तक्षेप ने पलडा मालिको के पक्ष में कर दिया था और रेलवे मजदूरो को एक भीषण आघात सहना पडा।

१९२१-२२ की मन्दी में सारा मजदूर आन्दोलन क्षीण होता गया और जब निरोधादेश कानून का बल पाकर पूँजीपतियो का जवाबी हमला जोर पकड़ने लगा तो वह बेकारी के पस्त हिम्मत कर देने वाले प्रभाव के कारण अपनी रक्षा के लिए पर्याप्त शक्ति नही जुटा सका। कुछ यूनियनें बिल्कुल कुचल दी गई, अन्यों को भारी नुकसान उठाना पडा। युद्ध से मजदूर बहुत सगठित होकर निकले थे, अपने लाभों को बढाने का उनका दृढ सकल्प था और उसे विश्वास था कि मैत्रीपूर्ण सरकार की सरक्षा मे वह सब अमरीकी मजदूरो के जीवन-स्तर को उन्नत कर सकेगा। किन्तु १९२० और १९२३ के बीच यूनियनो की समग्र सख्या ५० लाख से कुछ अधिक की चरम सख्या से घट कर लगभग ३५ लाख रह गई।

— ० —

१४ : मज़दूर पीछे हटे

१९२२ से १९२९ के ७ वर्षो में उत्पादन बढा, आर्थिक शक्ति और ज्यादा केन्द्रित हुई, राष्ट्रीय आय बढ़ती रही और अर्थतंत्र मे १९वी सदी के स्वच्छन्द कारोबार के सिद्धान्त पर वापस आ गए। सरकार पर ज्यादातर उद्योगपतियो का प्रभुत्व था और युद्ध-पूर्व के प्रगतिशील लोगो ने आर्थिक और सामाजिक सुधारों की जो पगडण्डी तैयार की थी उस पर आगे कोई प्रगति नही हुई। समृद्धि और ऊँचे उठते हुए स्टाक मार्केट, सट्टा और हर गराज मे दो कारे, इन्ही सब बातो का महत्त्व प्रतीत होता था। अपनी स्थिति से सन्तुष्ट लोगो ने १९२८ में राष्ट्रपति हूवर की यह विश्वासपूर्ण घोषणा खुशी से स्वीकार कर ली कि "अमरीका मे हम लोग गरीबी पर अतिम विजय प्राप्त करने के इतने निकट आ गए है जितना किसी देश के इतिहास में लोग पहले कभी नही आ सके।"

१९२० की दशाब्दि "आश्चर्यजनक वेहूदगी" का जमाना भी थी। नौजवान पीढी ने विद्रोह कर दिया था। शराव की गैर-कानूनी दूकानो, मदिरा के तस्कर व्यापार और गिरोह बाध कर जुर्म करने का बोलवाला था। अखबारो की सनसनीखेज़ ढंग से खबरे देने की प्रवृत्ति से लोगो का ध्यान एक लाख डालर इनाम की लडाइयो, बहुत दूरी की लम्बी दौड़ो, स्कोप्स मंकी ट्रायल, लिण्डबर्ग की अटलाण्टिक के आर-पार की उड़ान और स्नानसौन्दर्य प्रतियोगिताओ पर टिका रखा था। अमरीका का सारा नज़ारा ही सजीव, रंगीन और रोमाचक था।

देश के कोई ३ करोड़ गैर-कृषि जीवी मजदूरो ने इस राष्ट्रीय विकास मे अपना पूर्ण योग दिया और सामान्यत. इस बढ़ती हुई समृद्धि में हाथ वॅटाया। वेतन वढे और यद्यपि हर गराज मे कारो की वात एक सुदूर स्वप्न ही रही तो भी खाना, मकान और कपडे के खर्च के बाद अब मज़दूर की जेब में पहले किसी भी समय की अपेक्षा ज्यादा पैसा बच रहा था। मोटरे, वैक्यूम क्लीनर, कपडा धोने की मशीने और विजली के रेफ्रिजरेटर किश्तो में खरीदने की

भव्वड़ मे मज़दूर भी सामान्य जनता के साथ शामिल थे। और मनोरंजन तथा आमोद-प्रमोद के लिए १० अरव डालर के खर्च में उनका भी अपना हिस्सा था। कभी-कभी स्टाकमार्केट में भी उन्होने पैसा लगाया और विलियम ग्रीन ने वालस्ट्रीट की विनियोग फर्म हैलर्स स्टुअर्ट ऐण्ड कम्पनी के लिए "मजदूर और उसका पैसा" विषय पर ब्राडकास्ट भी किया।

एक उत्साही फ्रासीसी यात्री आन्द्रे सीगफ्रिड ने १६२७ मे लिखा . "एक मज़दूर को संसार के अन्य किसी भी प्रदेश की अपेक्षा अमरीका में कहीं ज्यादा पैसा मिलता है और उसका जीवनस्तर वहुत ही उन्नत है। यह फर्क जो युद्ध से पहले भी दिखाई देता था, तब से वहुत बढ गया है और अब पुराने और नए महाद्वीप में मुख्य फर्क वन गया है...।"

अमरीकी नज़ारे पर समग्रत: दृष्टिपात करने पर वास्तव में यह दिखाई देता था कि अधिकाधिक मज़दूर मध्यम वर्ग में शुमार होते जा रहे हैं। अब जब कि उन्हें न केवल ऊँची तनख्वाहें मिल रही थी, जिनकी वदौलत वे कभी स्वप्न सी दिखाई देने वाली सुख-सुविधाओ का उपभोग कर रहे थे, अपितु काम के घण्टे कम हो जाने से जीवन के अन्य पहलुओ का आनन्द लेने को उन्हें खाली समय भी अधिक मिल रहा था। तब मज़दूरो की पहले के समान कोई अलग श्रेणी नज़र नही आती थी। उनके मनोरंजन और आमोद-प्रमोद अधिकाधिक राष्ट्रव्यापी ढंग के होते चले गए। देश की सड़को पर हर रविवार को जो मोटरें निकल पड़ती थी, सिनेमाओ में हर सप्ताह जो विशाल भीड़ लगती थी, रेडियो प्रसारण सुनने के लिए जितनी संख्या में लोग एकत्र होते थे, वे सब अधिक एकरस समाज के उद्भव के प्रतीक थे। अगर फैक्ट्री कर्मचारी वही कपड़े नही पहनते थे जो ज्यादा वेतन पाने वाले लोग पहनते थे तो भी उनके डिजाइन एक से होते थे। समाजशिक्षा के सदी पुराने स्वप्न की लगभग पूर्ति में मज़दूरो के लड़के-लड़कियाँ महान् राजकीय विश्वविद्यालयों में पढने जाते थे। बीसियो तरीकों से मज़दूर आम लोगो के रीति-रिवाजो और आकाङ्क्षाओं को अपना रहे थे। सामाजिक लोकतत्र ने अमरीकी जीवन-पद्धति के रूप में एक नई सार्थकता प्राप्त कर ली प्रतीत होती थी।

आव्रजन में कटौती कर दिए जाने से इस प्रक्रिया में सहायता मिली। औद्योगिक मज़दूर की हालत सदैव खराव रहने का एक बड़ा कारण हर पंव

अज्ञानी, दरिद्र और अदक्ष आव्रजको का आगमन रहा है। १९२० के दशक के मध्य में कोटा पद्धति अपना लिए जाने से, आव्रजको की सख्या ५० लाख वार्षिक से गिरकर १॥ लाख वार्षिक रह गई। इसका न केवल मजदूर की आर्थिक दशा पर बल्कि सामाजिक अवस्था पर भी गहरा असर पड़ा। परम्परागत फालतू मजदूरो का आगमन बन्द कर दिए जाने से प्रगति के नए रास्ते खुल गए। जरूरी नही कि ये रास्ते मजदूरो को मालिक वर्ग मे ले जाने वाले हो तो भी इससे हमारे विकासमान समाज में उसका स्थान अधिक सुरक्षित हो गया।

किन्तु १९२० की दशाब्दि में इस बात की ज्यादातर उपेक्षा कर दी गई कि मजदूरो के बीच इन भौतिक और सामाजिक लाभो के वितरण में अब भी बहुत विषमता से काम लिया जाता था जैसा कि देश भर में समृद्धि के इस वितरण मे विषमता दिखाई देती थी। आर्थिक विस्तार से उत्पन्न बाहुल्य की इस दावत मे अनेक तबको के मजदूरों को शामिल होने का न्यौता नही दिया गया और जिन मजदूरो को वेतन-वृद्धि से सबसे ज्यादा लाभ हुआ था वे भी यह महसूस करते थे कि इस समृद्धि में मिलने वाला उनका हिस्सा उद्योग-पतियो के मुनाफो के मुकाबले अनुपात की दृष्टि से बहुत कम है।

इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि बेकारी को देश-निकाला नही दिया जा सका। कई क्षेत्रो में वह बहुत ज्यादा थी। तकनीकी प्रगति के कारण जो उद्योग को अपेक्षाकृत कम मजदूरो से अधिक सामान पैदा करने में निरन्तर सहायता दे रही थी, बहुत से बुनियादी उद्योगो में वेतन भोगी मजदूरो की सख्या बहुत घट गई। सिर्फ सड़क बनाने के काम में, कपडा उद्योग, रबड उद्योग और बिजली का सामान बनाने वाले कारखानो में ही नई मशीनो और मजदूरो की बचत करने वाले यन्त्रो के उपयोग से विद्यमान उत्पादन को बनाए रखने के लिए २५ से ६० प्रतिशत मजदूरो की छँटनी कर दी गई। हिसाब लगाया गया कि निर्माता उद्योगो, रेलवे और कोयला खानो में वर्तमान उत्पादन को कायम रखने के लिए ३२,७२,००० कम मजदूरो की आवश्यकता है और उनमें उत्पादन की जो वृद्धि हो रही है उसके लिए सिर्फ २२,६९,००० अतिरिक्त मजदूर चाहिएँ। इस प्रकार इन उद्योगों में १० लाख मजदूर घट गए। व्यवसाय और सेवाओ में नए अवसरो के कारण स्थिति कुछ सम्भली किन्तु फिर भी १९२० की दशाब्दि में बेकारी निरन्तर बनी रही जिसकी मात्रा

मनुष्य-दिवसों के हिसाब से मज़दूरों की कुल उपलब्धि की १० से १३ प्रतिशत रही। १९२८ मे कम से कम २० लाख मज़दूर बेकार थे।

इन परिस्थितियों में मज़दूर को अपने काम के बारे में असुरक्षा की जो भावना होती थी उसकी काम से लगे रहने पर ऊँचे वेतनो से पूरी भरपाई नहीं होती थी। मिडलटाउन का अध्ययन कर के लिण्ड्स इस परिणाम पर पहुँचे कि मज़दूरों के जिन परिवारो से उन्होंने साक्षात्कार किया था, वे यद्यपि समृद्धवर्ग के थे तो भी उन्हें बेकार हो जाने का डर हमेशा सताता रहता था। वेतन और घण्टो की अपेक्षा काम की स्थिरता में उन्हें ज्यादा दिलचस्पी थी। रोजगार के सम्बन्ध में आँकड़े कुछ भी कहते हों, जिस आदमी का काम छूट जाता था उसे अपनी अल्प-बचत सर्वथा समाप्त हो जाने से पूर्व ही कोई और काम तलाश करने की कोशिश करनी पड़ती थी, जिसकी संभावना बहुत कम होती थी।

आम मज़दूरों के बजाय जहाँ तक सगठित मज़दूरों की स्थिति का सवाल है, १९२० के दशक में उनकी दशा विरोधाभास से परिपूर्ण थी। राष्ट्रीय समृद्धि के हर पिछले युग में इसका जो रिकार्ड रहा है उसके विपरीत मज़दूर आन्दोलन ने अब क्षति ही उठाई। बड़े पैमाने के उद्योगो मे अदक्ष मज़दूरों को संगठित करने में न केवल कोई प्रगति नही की गई बल्कि वर्तमान ट्रेड यूनियनों की सदस्य संख्या भी घटती चली गई। हमने देखा कि १९२१ में मन्दी के फलस्वरूप अमरीकी यूनियनो की कुल सदस्य सख्या ५० लाख से कुछ अधिक से घटकर लगभग ३६ लाख रह गई। किन्तु इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह थी की आगामी वर्षो मे वे इस क्षति को पूरा नही कर सकी। १९२९ में वैभव के शिखर पर यूनियनो के कुल सदस्य ३४,४३,००० रह गए थे। यह सख्या १९१७ के बाद के किसी भी वर्ष से कम थी।

अच्छा समय जारी रहने के सुखद वातावरण मे और जो काम पर लगे हुए थे उनकी तनख्वाहें बढ़ते रहने पर लोगो को इस बात की कोई परवाह प्रतीत नही होती थी। काम की असुरक्षा ने भले ही कुछ कर्मचारियों को मालिकों की इच्छा के विपरीत यूनियनों में शामिल होने से रोका हो किन्तु उनमे से बहुत से प्रत्यक्षत. यह महसूस करते थे कि यूनियन अब पहले की

तरह जरूरी नही रही है। वे यह सोचते थे कि जब वेतन का लिफाफा खुद-बखुद ज्यादा मोटा होता जा रहा है, गरीबी पर अंतिम विजय की तरफ हमारे कदम तेजी से बढ़ रहे है और बहुतायतपूर्ण जीवन निश्चित रूप से आया जान पड़ता है तब हड़तालो और सामूहिक सौदेबाजी के लिए अन्य प्रकार के आन्दोलन करने से क्या लाभ ?

इन दिनों के शान्त वातावरण में मजदूरो के पास यह देखने का कोई साधन नही था कि क्षितिज पर एक और मन्दी उभर रही है जो १८३०, १८७० और १८९० के दशको की मन्दी से भी अधिक भीषण और चिर-स्थायी होगी, जिसमें १॥ करोड़ असहाय मजदूर स्वय को सड़को पर प्रक्षिप्त, कोनों पर सेब बेचते हुए, सूप के लिए लाइन लगाते और रोटी प्राप्त करने के लिए लगाई गई पक्तियो मे भीड़ करते पाएँगे। किन्तु इसकी घुमडती छाया ने १९२० के दशक की "सुनहरी चमक" को शीघ्र ही बुझा दिया और मजदूरो की स्थिति का प्रच्छन्न दुर्बलता को आश्चर्यजनक रूप से जाहिर कर दिया। नई आर्थिक व्यवस्था के यकायक ढुलक जाने से जहाँ सारे देश को क्षति पहुँची वहाँ मन्दी का सबसे ज्यादा प्रभाव एक बार फिर मजदूरो पर पड़ा।

१९२१ की संक्षिप्त मन्दी के बाद जो आर्थिक उत्थान आया उसमे उद्योग ने यह निश्चय कर लिया कि वह मजदूरो को युद्ध के दौरान प्राप्त की गई स्थिति को पुनः हासिल नही करने देगा। १९१९ ने पुनरुज्जीवित किए गए यूनियन विरोधी आन्दोलन को तेज कर दिया गया और ओपनशाप पद्धति को जारी रखने पर नए सिरे से जोर दिया जाने लगा। सिद्धान्त रूप से ओपन-शाप का अब भी इससे ज्यादा कुछ मतलब नही था कि मालिक को किसी भी मज़दूर को काम पर रखने का हक है चाहे वह यूनियन का सदस्य हो या न हो। किन्तु १९०० के प्रारम्भ की तरह इसका न केवल यह तात्पर्य था कि यूनियन सदस्यों के साथ प्रायः दुभात की जाती थी बल्कि किसी भी यूनियन को मान्यता देने से इन्कार कर दिया जाता था, भले ही अधिकाश मजदूर उसके सदस्य क्यो न हो। कहने का मतलब यह है कि ओपनशाप मालिक और कर्मचारी के सम्बन्धो में सामूहिक सौदेबाजी की सारी प्रक्रिया से इन्कार करने का एक मान्य तरीका बन गया।

यूनियनों के खिलाफ आन्दोलन को तेज करने के लिए १९२० के दशक में देश भर मे ओपनशाप ऐसोसियेशने बनाई गई, जैसी कि उद्योगों के प्रत्याक्रमण के पहले अवसरो पर बनाई गई थी। न्यूयार्क में मालिको के ऐसे ५० ग्रुप, मैसाच्युसेट्स में १८, कनैक्टिकट में २०, इलिनोयस में ४६, ओहायो में १७ और मिशीगन में २३ ग्रुप बनाए गए। स्थानीय वाणिज्य मण्डलों, निर्माता एसोसियेशनो और नागरिक सगठनो ने इस आन्दोलन को और मजबूत किया तथा उनके पीछे नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स, नेशनल मैटल ट्रेड्स ऐसोसियेशन और लीग फार इण्डस्ट्रियल राइट्स की ताकत लगी हुई थी। इन युद्धोत्तरकालीन वर्षो में अभिवृद्ध राष्ट्रीयता के कारण उत्पन्न प्रेरणा से इन विभिन्न ऐसोसियेशनो द्वारा १९२१ मे शिकागो में आयोजित एक सम्मेलन में ओपनशाप को बाकायदा 'अमरीकी योजना' नाम दिया गया। परिश्रमी व्यक्तिवाद के परम्परागत मूल्यो की विध्वसक समूहवाद की विदेशी विचार-धारा से तुलना की गई। अमरीकी योजना के प्रवर्तको ने घोषित किया: "प्रत्यके व्यक्ति अपने कल्याण की योजना स्वय बनाए और अपने सगठन की जजीरो से बँधकर अपना नुकसान न करे।"

यूनियनों के भ्रष्ट नेतृत्व और रुपया-पैसा एँठे जाने के किसी भी सकेत का मजदूरो और आम जनता दोनो को यह विश्वास दिलाने में पूरा लाभ उठाया गया कि उन्हे सामूहिक सौदेबाजी के कल्पित लाभो के नाम पर धोखा दिया जा रहा है। और १९२० के दशक के तूफानी दिनो मे कुछ यूनियनो मे भ्रष्टाचार और रुपये-पैसे की ठगी के उदाहरण मिल भी गए। न्यूयार्क, शिकागो और सानफ्रासिस्को के मकान-निर्माण उद्योगो और सर्विस उद्योगो मे यूनियन के नेताओ और मालिको के बीच गैर-कानूनी साँठगाँठ, मजदूर नेताओं द्वारा रुपये-पैसे की छीना-झपटी और सीधे रिश्वतखोरी के मामलो का भण्डाफोड किया गया। कुछ मामलो में अपराधी गिरोहों ने जब यह देखा कि चोरी से शराब बेचने के बजाय ज्यादा मुनाफे के अवसर उन्हें उपलब्ध है तो वे यूनियनो मे दाखिल हो गए और धमकियो तथा हिसा के बल पर मालिको और कर्मचारियो दोनो की हजामत बनाई। किन्तु मजदूर यूनियनो पर अनुदार व्यक्तियो द्वारा जो आक्षेप किए जा रहे थे उनमे भ्रष्टाचार और समाज विरोधी हरकतो के इक्के-दुक्के

उदाहरणों तथा बहुत अधिक यूनियनो में उत्तरदायित्वपूर्ण नेतृत्व के सामान्य नजारे के बीच कोई फर्क नही किया गया। जब मजदूर नेताओं को क्रांति के खिलाफ षड्यन्त्र करने वाले बोल्शेविक कहकर बदनाम करना बन्द कर दिया गया था तब उन्हें अपनी निजी सत्ता और सम्पत्ति के लिए हर सम्भव तरीके से यूनियन के सदस्यो का लाभ उठाने वाले क्रूर लुटेरे कहा जा रहा था।

नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स के अध्यक्ष जॉन इ. एड गर्टन ने १९२५ में बडे आलंकारिक शब्दो में कहा : "मजदूरो के महल से दिखाई देने वाले मन्दिर, जिनके सुनहरी कलश समस्त राष्ट्र में अपनी दिव्य आभा से चमकते है, और हर वर्ष लोभ के रत्नजटित हाथों से मजदूरों की जेब से निकाले गए और बाद में मोटी-मोटी तनख्वाहों के रूप में बाँटे गए करोड़ो डालर ऐसी दासता की दयनीय कहानी कह रहे है, जैसी इस देश ने पहले कभी नही देखी।" राष्ट्र के कर्मदाताओ (मालिकों) को "मजदूरों की कलाइयों को जकड़ने वाली हथकड़ियों को तोड़ने और अपने कर्मचारियों को मजदूरों के दोस्त के प्रच्छन्न वेष में फिरने वाले स्वार्थी लुटेरों के झूठे नेतृत्व" से मुक्त करने का कर्तव्य निभाने के लिए बुलाया गया।

यूनियनो का विरोध करने और ओपन-शाप प्रचलित करने के लिए सिर्फ प्रचार का ही आश्रय नही लिया गया। बहुत से मालिक अपने कर्मचारियो पर यूनियन में शामिल न होने की शर्त लादते रहे, अपने कारखानों में भेदिये रखते रहे, अवांछनीय यूनियन सदस्यों की काली सूची का विनिमय करते रहे और मजदूरो को काम पर रखने में खुल्लमखुल्ला अत्यन्त भेद-भाव अपनाते रहे। यह आतंक और जोर जबर्दस्ती की पुरानी कहानी थी और जब इन सब साव-धानियो के बावजूद कोई उपद्रव हो जाता था तो उपद्रवियो को पीटने के लिए सख्त कदम उठाए जाते थे और अबुद्धिमत्तापूर्ण हड़तालो को स्थानीय अधि-कारियों के सरक्षण मे हड़तालभंजक लाकर कुचल दिया जाता था।

उदाहरणार्थ कोयला खानों में यूनियनो को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। अपने सदस्यो में फूट और दलबन्दी हो जाने से वह स्वयं को मालिकों के हमले से बचाने में असमर्थ हो गई। कोयला एक रुग्ण उद्योग था. शक्ति के अन्य साधनों के साथ प्रतियोगिता में पिछड़ जाने के कारण देश की आम समृद्धि में हिस्सा नहीं बटा सका और खान मालिको ने मजदूरों पर कसर

निकाल कर उत्पादन की लागत कम करने की समस्या को हल करने का दोहरा निश्चय कर रखा था। खनिको के साथ वेतन सम्बन्धी विद्यमान समझौतो को भंग करने की उन्होने कोशिश की और उत्पादन को केन्द्रीय बिटुमिनस खानो से हटाकर वेस्ट वर्जिनिया, केण्टकी, टेनेस्सी और अलाबामा जैसे राज्यो की यूनियन रहित खानो मे ले जाने लगे जहाँ वे वेतनो और काम के घण्टो के बारे मे यूनियनो की अडगेबाजी से मुक्त होकर काम कर सकते थे। यह यूनियनों के लिए और भी ज्यादा खतरनाक बात थी।

यूनाइटेट माइन वर्कर्स के सामने कठिन समस्या आ खडी हुई। यूनियन विहीन कोयला खानों मे जब हड़तालें फूट पडी तो सहायता की बार-बार माँग की गई। अब दुविधा यह थी कि क्या यूनियन सहानुभूति मे केन्द्रीय विटुमिनस कोयला खानो मे हडताल करके अपने करारो को भग करे अथवा चुपचाप निष्क्रिय होकर बैठ जाए और यूनियन विहीन खानो मे हालत बिगडने दे और अन्ततोगत्वा सम्पूर्ण उद्योगो को हानि पहुँचने दे। जॉन एल. लेविस ने करार के समझौतो के पालन का आग्रह किया। उसने ऐसी किमी भी हडताल को सहायता देने से इन्कार कर दिया जिसके लिए यूनियन-ने मजूरी न दी हो और यूनियन-विहीन खानो की समस्या को दक्षिण मे मज़दूरो का संगठन कर और उन्हें अनुशासित नियंत्रण मे लाकर हल करने का सुझाव रखा।

उसका कार्यक्रम फेल हो गया। युनाइटेड माइन वर्कर्स ने यद्यपि खानमालिको के साथ और भी समझौते किए तथा उनका पालन किया तो भी यूनियन वाली कोयला खानो मे उसकी शक्ति क्षीण होती गई और यूनियन विहीन खानो मे संगठन करने में कोई प्रगति नही हुई। यूनियन के एजेण्टो का जिस तरह से स्वागत हुआ वह अतिथि-सत्कार की परम्परा के प्रतिकूल था। उन्हें बदनाम किया गया कम्पनी द्वारा नियंत्रित खानो के शहर से खदेड दिया गया, सशस्त्र गारद ने उन्हें पीटा और कभी-कभी उनकी हत्या भी कर दी गई। हड़तालो की सख्या बढने और अव्यवस्था फैलने से खान वाले कुछ शहरो मे वस्तुत. गृह-युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई, जिससे हिंसा, गोलाबारी और हत्याओ का बोल-बाला था।

यूनाइटेड माइन वर्कर्स के अधिक क्रातिकारी तत्त्व इस बात पर बहुत क्रुद्ध थे कि लेविस ने गैर-यूनियन खनिको की सहायता के लिए आम हड़ताल क्यो

नही बुलाई। उन्होने इस नीति के खिलाफ, जो उनके मत मे असगठित मजदूरों से दगा कर रही थी और स्वत' यूनियन को नष्ट कर रही थी, असन्तोष पैदा करने मे मदद दी। उसके अपने लेफ्टिनेण्टों ने विद्रोह कर दिया और यूनियन के सदस्यो ने भी गैर कानूनी हड़ताले की। जब लेविस ने बदले मे अपने विरोधियो को कम्युनिस्ट कह कर उन पर तीव्र आक्षेप किए, अपने आदेश को पूर्णतः शिरोधार्य किए जाने का आग्रह किया और अनधिकृत हड़ताल कराने वाले स्थानीय नेताओं को यूनियन से निकाल दिया तो यूनियन के सदस्यों मे व्यापक असन्तोष फैला जो यह समझते थे कि करारो को कायम रख कर लेविस यूनियन-विरोधी खान मालिको के सामने सिर्फ घुटने टेक रहा था।

इस कठिन समय मे लेविस ने यूनियन का नियन्त्रण अपने हाथ से नही जाने दिया किन्तु इसमें बुरी तरह फूट पड़ गई थी और खान क्षेत्रो मे उसका वह प्रभाव नही रहा जो पहले था। खान मालिक पहले की राष्ट्रीय हडतालो मे प्राप्त किए गए लाभों मे कटौती करने मे कामयाब हो गए और गैर-यूनियन खानो में जो पस्त-हिम्मती पैदा हुई वह केन्द्रीय बिटुमिनस कोयला खानो के क्षेत्र में भी फैल गई। १६२२ मे यूनाइटेड माइन वर्कर्स ने अपनी शक्ति ५ लाख सदस्यो की बना ली थी जो समस्त कोयला खनिको की ७० प्रतिशत थी। इसके पतन की कहानी इससे ज्यादा स्पष्ट रूप से और कैसे बताई जा सकती है कि आगामी १० वर्षो मे उसके सदस्य सिर्फ १,५०,००० रह गए।

कोयला खानो मे या अन्यत्र कही भी मालिको के यूनियन-विरोधी अभियान का मुकाबला करने मे मजदूर सरकार या अदालतो से कोई सहायता अथवा समर्थन पाने की आशा नही कर सकते थे। यूनियन मे शामिल न होने की शर्त पर काम देने (येलो डॉग) के करारो को, जो दक्षिण की कोयला खानो मे व्यापक रूप से प्रचलित थे, अब भी वैध करार दिया गया; यूनियन सदस्यों के साथ भेद-भाव को दूर कराने का कोई कानूनी उपाय उपलब्ध नही था और अदालतो के एक के बाद एक निर्णयो ने निरोधादेश कानून के खिलाफ क्लेटन ऐक्ट की कल्पित सुरक्षितताओं को सर्वथा अवैध ठहरा दिया।

सन् १६२१ के प्रारम्भ मे डूप्ले प्रिंटिंग प्रेस बनाम डीयरिंग केस मे सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया कि कानून सहानुभूति में की जाने वाली हड़तालो की इजाजत नही देता और वाणिज्य में रुकावट डालने का षड्यंत्र करने के अभि-

जाता था उक्त नतीजा निकाले जाने का विरोध किया और कहा कि कर्मचारी व्यक्तिगत रूप से मालिको के साथ समानता के आधार पर करार कर सकने की स्थिति में नही है और विशेषतः कठोर तथा लालची मालिको की चाल-बाजियो के शिकार है। सहकारी न्यायाधीश होम्स ने भी असहमति प्रकट की और अदालत द्वारा "करार की आजादी के सिद्धात" के एकपक्षीय समर्थन की तीव्र आलोचना की।

यद्यपि सरकार और अदालतें दोनो सिद्धान्त रूप से मजदूर यूनियनो की उपयोगिता को स्वीकार करती थी और राष्ट्रपति हार्डिंग ने भी यह घोषणा की थी कि मज़दूरो का संगठन करने का अधिकार प्रबन्धको अथवा पूंजी के अधिकार से "जरा भी कम नही है" तो भी वे जिन गतिविधियो के लिए यूनियने बनाई गई थी उन पर लगातार अंकुश लगाते जा रहे थे। १९२० के दशक मे इन दमनात्मक नीतियो का एक अपवाद १९२६ में रेलवे लेबर ऐक्ट का पारित और स्वीकृत होना था। इस ऐक्ट में "बिना किसी दस्तदाजी, प्रभाव या जोर-जबर्दस्ती के" रेल कर्मचारियो मे यूनियन बनाए जाने की व्यवस्था थी और रेलो मे श्रम सम्बन्धी सब झगडो के निबटारे के लिए एक विशेष मशीनरी नियुक्त की गई। इस कानून की प्रामाणिकता की घोषणा करते हुऐ सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि "अगर चुनाव की स्वतत्रता मे हस्तक्षेप करके आवेदन को व्यर्थ कर दिया गया तो कर्मचारियो की तरफ से की गई सामूहिक कार्रवाई की वैधानिकता एक मजाक बन जाएगी। किन्तु रेल कर्म-चारियो के जो अधिकार स्वीकार किए गए, उन्हें १९३० के दशक तक अन्य कर्मचारियो को प्रदान नही किया गया।

यूनियन की गतिविधियो पर कानूनी अकुश लग जाने और अदालतो के विरोधी निर्णयो के समक्ष संगठित मजदूरो ने १९०६ की भाँति, जब उन्होने "शिकायत-पत्र" प्रस्तुत किया था, पुन. यह महसूस करना शुरू कर दिया कि अगर मजदूरो को मलिको के यूनियन विरोधी अभियान मे कार्य की स्वाधीनता प्राप्त करनी है तो अधिक सीधा राजनीतिक दबाव डालना होगा। सुप्रीम कोर्ट का रवैया अब और भी स्पष्ट हो जाने पर एक मजदूर दल की स्थापना का अभियान, जोर पकडने लगा जो पहले-पहल १९१९ में, जबकि "श्रमिको

का अधिकार-पत्र" तैयार किया गया था, शुरू हुआ था। ए एफ. एल. भी किसी-न-किसी प्रकार की सगठित राजनीतिक कार्रवाई के लिए डाले जाने वाली दबाव का पूरी तरह सामना नही कर सका।

यह आन्दोलन पहले १९२२ में सामने आया जबकि कृषि, श्रम व अन्य उदार ग्रुपों के कोई १२८ प्रतिनिधियो ने शिकागो मे एकत्र होकर 'प्रगतिशील राजनीतिक कार्रवाई के लिए सम्मेलन" का निर्माण किया। शक्तिशाली इण्टरनेशनल' ऐसोसियेशन आव मशीनिस्ट का एच. जोन्स्टन इस आन्दोलन का प्रमुख व्यक्ति था। रेलवे ब्रदरहुडो ने, जो पुराने नेशनल लेबर बोर्ड के प्रतिबन्धो और निरोधादेश कानून के पुनरुज्जीवन से कराह रही थी, इसका जोरो से समर्थन किया और १८ राष्ट्रीय यूनियनो, ८ राज्य श्रम सघो, मध्य-पश्चिम की कई किसान पार्टियो, महिलाओ की ट्रेड यूनियन लीग और समाजवादियो ने भी इसका समर्थन किया। दो वर्ष बाद जब रिपब्लिकन और डेमोक्रैट दोनो पार्टियो ने अत्यन्त अनुदार कालविन कूलिज और जॉन डब्लू. डेविस को अपना उम्मीदवार चुना तो इन प्रगतिशील तत्त्वो ने एक तीसरे स्वतंत्र उम्मीदवार विस्कौसिन के ला फौलेट का नाम प्रस्तुत किया। इस शर्त पर कि राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति पद के अलावा जिसके लिए मोण्टाना के सेनेटर ह्वीलर को उम्मीदवार बनाया गया, अन्य किसी पद के लिए कोई उम्मीदवार खडा नही किया जाएगा। ला फोलेट ने नामजदगी स्वीकार कर ली और प्रगतिशील राजनीतिक कार्रवाई के लिए सम्मेलन ने १९२४ मे बाकायदा चुनाव-आन्दोलन शुरू कर दिया।

आन्दोलन का मच, जिससे यह घोषणा की गई कि देश के सामने मुख्य प्रश्न निजी एकाधिकार द्वारा सरकार और उद्योग पर नियन्त्रण स्थापित कर लेने का है, ज्यादातर युद्ध-पूर्व के प्रगतिशील सिद्धान्तो का ही अवशेष था। इसमे राष्ट्र की जल-शक्ति तथा रेलो पर सार्वजनिक स्वामित्व की, राष्ट्रीय सम्पदा के सरक्षण की, किसानो को सहायता दिए जाने, साधारण आमदनी पर टैक्स कम किए जाने, सरकारो मे कमी करने तथा श्रम-सम्बन्धी कानूनो में त्रुटियाँ दूर करने की माँग की गई। कहा गया कि "श्रम-सम्बन्धी झगडो में हम निरोधादेश को खत्म कर देने के हक मे है", सगठित होने, अपनी पसन्द के प्रतिनिधियो के जरिये सामूहिक सौदेबाजी करने और बिना किसी रोक-

टोक के सहकारी उद्योगो के सचालन के किसानो और औद्योगिक मजदूरो के अधिकार की घोषणा करते है।"

अमरीकी मजदूर सघ पहले "प्रगतिशील राजनीतिक कार्रवाई के लिए सम्मेलन" का विरोधी था किन्तु जब दोनो बड़ी पार्टियो ने मजदूरों की माँग की उपेक्षा कर दी, तब इसने ला फौलेट की उम्मीदवारी का समर्थन कर अभूतपूर्ण कदम उठाया। इसकी कार्यकारी परिषद् ने कहा कि रिपब्लिकन और डैमोक्रैटिक दोनो परिषदो ने "मजदूरो की इच्छा का अनादर" किया है और वे "नैतिक रूप से दिवालिया हो गई है जो हमारे देश और उसकी सस्थाओ के लिए सकट व खतरे की बात है।" बड़ी पार्टियो पर इस आक्षेप के वावजूद ए. एफ. एल. ने १६२४ के प्रगतिशील तत्त्वो के साथ मिलने वहुत सावधानी से काम लिया। युद्ध-पूर्व के वर्षो की राजनीतिक हलचलों में अपनायी गई अपनी नीति के अनुरूप ही गौम्पर्स ने यह स्पष्ट कर दिया कि ए. एफ. एल सिर्फ इसी आन्दोलन में "मजदूरो का मित्र" होने के नाते ला फौलेट का समर्थन करने के लिए वचनवद्ध है, वह तीसरे दल की स्थापना का विचार नही रखता। मजदूरो को निरोधादेश जैसे कानूनो से मुक्त करने के लिए विधान की आवश्यकताओं को स्वीकार करते हुए भी उसने यह कह कर कि "हम सरकार को जीवन की समस्याओ का समाधान नही मानते", "स्वैच्छिकता" में पुन. अपना विश्वास प्रकट किया।

इन शर्तों और सफाई के वावजूद ए. एफ. एल के वहुत से नेताओ ने कार्यकारी परिषद् का निर्णय मानने से इन्कार कर दिया। कार्पेण्टर्स यूनियन के जॉन एल. लेविस तथा विलियम हचिसन ने कूलिज का समर्थन किया और मुद्रण-कर्मचारी यूनियन के जार्ज एल. वेरी अन्तिम क्षण जान. डब्लू डेविस की तरफ हो गए। यद्यपि ए. एफ. एल. ने अपनी परम्परागत नीति को छोड़ खुल्लमखुल्ला एक तीसरे दल के राष्ट्रपतीय उम्मीदवार का समर्थन किया था तो भी उसने यह काम पूरे मनोयोग से नही किया और चुनाव-आन्दोलन के लिए सिर्फ २५ हजार डालर एकत्र किए गए।

ला फौलेट को करीब ५० लाख वोट मिले जो रिपब्लिकन और डैमोक्रैटिक दोनो पार्टियो की रूढिवादिता के खिलाफ लोगो के असन्तोष को खूब अच्छी तरह जाहिर करता था। किन्तु उसके सिर्फ अपने राज्य-

विस्कौसिन ने ही उसका साथ दिया। मजदूरों के वोट उसे पर्याप्त संख्या में नही मिले और प्रगतिशील तत्त्वों की विफलता मज़दूरो की विफलता समझी गई। सिएटल टाइम्स के वाशिंगटन स्थित संवाददाता ने लिखा कि "इस वर्ष का क्रान्तिकारी आन्दोलन संगठित मज़दूरो का अपने प्रशासनिक निकायो के जरिये राजनीतिक कार्रवाई करने का पहला प्रयत्न है। इस की विफलता ने आगामी अनेक वर्षो के लिए इस बात की सम्भावना खत्म कर दी है कि मज़दूर राष्ट्रपति पद के लिए तीसरी पार्टी के उम्मीदवार का समर्थन करेंगे। न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून ने चुनाव-परिणामो का विश्लेषण करते हुए लिखा : "मज़दूरो का वोट जैसी कोई चीज़ नही थी" और वाशिंगटन स्टार ने यह माना कि "इस देश के मजदूर परम्परागत पार्टियो के खिलाफ विद्रोह में शामिल नही हुए।" अधिक सक्षेप और बोल-चाल की भाषा में फिलाडेल्फिया बुलेटिन ने सिर्फ यह कहा कि "राजनीति में मजदूरो का प्रवेश व्यर्थ सिद्ध हुआ"।

ए. एफ एल. भी चुनाव के बारे में प्रत्यक्षतः इसी नतीजे पर पहुँचा। इसने बड़ी तत्परता से प्रगतिशील राजनीतिक कार्रवाई के लिए सम्मेलन से अपने सहयोग का हाथ खीच लिया और तीसरी पार्टी का फिर से विरोध करने लगा। सारा आन्दोलन ठप्प हो गया। बाद के वर्षो मे मज़दूर यद्यपि निरोधादेशो से राहत पाने के लिए जोर देते रहे तो भी इसके बाद राजनीति में कोई और सीधी कुदान नही भरी गई। जब समाजवादियो के वोट भी बहुत कम हो गए तो शेष देश के समान मज़दूर भी रूढिवादी राजनीतिक ढाँचे को स्वीकार करने के लिए उद्यत प्रतीत हुए जो न्यूडील के आने तक राष्ट्रीय रंग-मंच का स्वरूप निर्धारित करता रहा।

१९२४ मे इस असफल अभियान के बाद ही ए. एफ. एल. का पितामह सेम्युअल गौम्पर्स ७४ वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधार गया। बाद के वर्षों में उसके लिए काम चलाना मुश्किल हो गया था। किन्तु ४० वर्ष पूर्व जब फेडरेशन की स्थापना हुई थी तभी से जो सत्ता उसे प्राप्त थी उसे स्वयं उसके हाथ से मौत ही छुड़वा सकी। १९२१ मे जब लेविस अध्यक्ष पद के लिए खड़ा हुआ था तब क्षणिक तौर पर उसके हाथ से नियन्त्रण जाता प्रतीत हुआ था किन्तु इस अवि-वेकपूर्ण विद्रोह को अन्यो की भाँति उसने दबा दिया। संगठित श्रमिकों का वह

सर्वमान्य नेता था और इस क्षेत्र मे उसका कोई वास्तविक प्रतिद्वन्द्वी नही था। ए. एफ. एल. की सफलताएँ और विफलताएँ दोनो ही उसकी रूढिवादी व्यावहारिक विचारधारा को ही जिसे उसने निरंतर कायम रखा था, ज्यादातर प्रतिक्षिप्त करती है।

उसकी मृत्यु पर मजदूरो ने ही नही उद्योगपतियो ने भी शोक प्रकट किया। अखबारो में जो अग्रलेख निकले वे इस विषय में दिलचस्प टिप्पणियो से परिपूर्ण थे कि उसकी नरम नीतियो ने कितना विश्वास प्राप्त कर लिया था और उन्हे राष्ट्र के मजदूरों की अधिक क्रातिकारी प्रवृत्तियो की रोकथाम करने वाला स्वीकार किया गया था। कहा जाता है कि गौम्पर्स विशुद्ध अपने व्यक्तित्व के बल पर ट्रेड यूनियनवाद को एक सीधे गैर-राजनीतिक मार्ग पर ले गया और श्रम तथा पूँजी के बीच की खाई को पाटने की निरन्तर कोशिशो के लिए सामान्यतः उसकी सराहना की गई। उसकी मृत्यु अमरीका के लिए एक क्षति बतायी गई, मुख्यतः इसलिए कि उसके जाने के बाद ए. एफ एल में फूट पैदा होने की सम्भावना पैदा हो गई थी, जिसमें उग्रतावादी तत्त्व सत्तारूढ हो सकते थे।

किन्तु फेडरेशन का नया अध्यक्ष जब विलियम ग्रीन को चुना गया तो व्यापारिक समाज ने चैन की साँस ली। क्योंकि ग्रीन भी श्रमिक-राजनीति में रूढिवादिता का हामी था और उसके बारे में यह विश्वास प्रेस को तत्काल दिए गए उसके एक वक्तव्य से और भी गहरा हो गया। इस वक्तव्य में उसने कहा: "गौम्पर्स ने ट्रेड यूनियनवाद के जिन बुनियादी सिद्धान्तो का इतनी योग्यता से प्रतिपादन किया है उन पर चलते रहने का मेरा दृढ निश्चय है।" देश ने तुरन्त यह अनुभव किया कि ए. एफ एल. के परम्परागत कार्यक्रम के समाजवादी हो जाने या तीसरी पार्टी की स्थापना के पक्ष में हो जाने का कोई खतरा नही है। ग्रीन के चुनाव पर एक प्रतीकात्मक टिप्पणी करते हुए 'रिचमण्ड टाइम्स डिस्पैच' ने लिखा: "उसके नेतृत्व में मजदूर सुरक्षित है। पूँजी को डरने का कोई कारण नही है और जनता का यह सौभाग्य है कि नागरिको के इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रुप का प्रवक्ता विलियम ग्रीन है।"

ग्रीन का जन्म कोशोक्टन (ओहायो) मे १८७३ में हुआ था। बहुत से अन्य अमरीकी मजदूर नेताओ की तरह वह एक दूसरी पीढी का अमरीकी,

एक वेल्श आव्रजक का पुत्र था और जब लड़का ही था तभी अपने पिता की तरह ओहायो की कोयला खानो मे काम किया करता था। यूनाइटेड माइन वर्कर्स मे शामिल होने के बाद वह १६०६ मे एक उप-जिला यूनियन का अध्यक्ष चुना गया और धीरे-धीरे सगठित मजदूरो की उच्च परिषद् की सीढी पर चढ़ता चला गया। ओहायो मे खनिको के नेता के नाते ट्रेड यूनियन प्रतिनिधि के रूप में उसे राज्य विधान मण्डल मे भेजा गया और तब अपनी निष्ठापूर्ण सेवाओ के पुरस्कार के रूप मे यूनाइटेड माइन वर्कर्स का सचिव कोषाध्यक्ष चुना गया। १६१३ मे जब गौम्पर्स ने निश्चय किया कि ए एफ एल. की कार्यकारी परिषद् मे खनिको का प्रतिनिधित्व होना चाहिए तो उसकी नजर ग्रीन पर गई और उसे ८वाँ उपाध्यक्ष नियुक्त कर दिया। जब मृत्यु ने उनसे ऊपर के अधि-कारियो को एक-के-बाद-एक हटा दिया तब ग्रीन धीमे-धीमे ऊपर उठ कर तीसरा उपाध्यक्ष बन गया। लेविस का समर्थन पाकर इस पद से वह ए. एफ. एल. की अध्यक्षता की चोटी पर पहुँच गया।

१६२४ मे वह कोई विलक्षण व्यक्तित्व प्रतीत नही होता था। उसमे गौम्पर्स, मिचेल या लेविस के शक्तिशाली नाटकीय गुण नही थे। शात-गम्भीर—युवावस्था मे रविवार को लगने वाले धार्मिक स्कूल में वह पढाया करता था और शुरू मे उसका पादरी की ट्रेनिग लेने का इरादा था—वह गौम्पर्स की तरह लडको के साथ शराब नही पीता था। उसका नशे से परहेज रखना टेरेंस पाउडरली की याद दिला देता था। श्रममत्री परकिन्स ने बाद में उसे "अत्यन्त मृदु और नम्र स्वभाव का व्यक्ति" बताया और कहा कि उसका स्थूल शरीर, गोल, हास्यविहीन चेहरा, कोमल वाणी और शान्त मुद्रा कोई बहुत आकर्षक व्यक्तित्व नही बनाती थी किन्तु उसमे चुम्बकीय शक्ति कमाल की थी। एल्क, आड फैलो और मेज़न (विशिष्ट जनसमुदाय) सभी उसे अपना समझते थे। उसके आनन्दप्रद भले तौर-तरीको और सामान्य मैत्रीभाव ने उसे लोकप्रिय बना दिया था। अपनी असदिग्ध ईमानदारी, सदाचार और यूनियन मजदूरो के हितो के प्रति परिश्रमपूर्ण निष्ठा के लिए भी उसका आदर किया जाता था।

यूनाइटेड माइन वर्कर्स मे अपने अनुभवो के फलस्वरूप १६१७ मे ग्रीन ने स्वय को पूर्णत औद्योगिक यूनियनवाद का पक्षपोषक घोषित किया था और

यह भी एक कारण था जिससे लेविस ने उसे अपना समर्थन प्रदान किया था। ग्रीन ने कहा था : "शिल्प के बजाय उद्योग को इकाई मानकर मजदूरों का संगठन करने से उसमें ज्यादा पूर्णता आती है, अधिक सहयोग हो पाता है... यह ज्यादा और ज्यादा स्पष्ट होता जा रहा है कि अगर अदक्ष श्रमिको को कम वेतनो पर लम्बे घण्टो तक काम करने को मजबूर किया जाता है तो उससे दक्ष श्रमिको के हितो पर भी खतरा निरन्तर बना रहता है।" किन्तु नए पद पर आकर उसने यह सब भुला दिया। औद्योगिक यूनियनवाद के बजाय शिल्प-यूनियन ही ए एफ. एल. की बुनियादी नीति रही और बडे पैमाने पर उत्पादन करने वाले उद्योगों के अदक्ष कर्मचारियो की यूनियनो को मान्यता दिलाने का १९२० की दशाब्दी में कोई वास्तविक प्रयत्न नही किया गया।

स्वय को गौम्पर्स के समान ही रूढिवादी सिद्ध करने के प्रयत्न मे ग्रीन ए. एफ. एल. की नीति मे परिवर्तित परिस्थितियो के अनुरूप तब्दीलियो की सभावित आवश्यकता को स्वीकार करने में अपने पूर्ववर्ती से ज्यादा उत्सुक प्रतीत नही हुआ। वह स्वैच्छिकता के उस विचार का समर्थन करता रहा जिसकी गौम्पर्स ने "मजबूत, स्फूर्तिमान, परिश्रममय स्वाधीनता" पर जोर देते हुए इतनी दृढ़ता से वकालत की थी, और जिसकी स्वयं राष्ट्रपति हूवर भी वकालत कर सकते थे। अन्ततोगत्वा १९३२ मे ही, जब कि मन्दी के प्रभाव ने ए. एफ. एल के अनेक सिद्धान्तो को छिन्न-भिन्न कर दिया था, ग्रीन ने वृद्धावस्था के लिए पेंशन और बेकारी का बीमा जैसे रूपो में सरकार के हस्तक्षेप का विरोध करना बन्द किया।

ए एफ. एल. की अगर भीरुता ने नही तो रूढिवादिता ने १९२० केदशक मे मालिको के यूनियन-विरोधी अभियान के मुकाबले समस्त संगठित मजदूरो को कमज़ोर कर दिया। किन्तु यूनियनो के निर्माण मे 'येलो डॉग' करार और निरोधादेश ही केवल-मात्र बाधक नही थे। उदारता के कारण भी मजदूर आन्दोलन को क्षति पहुँच रही थी। उद्योग जहाँ एक तरफ आक्रामक ढग से ओपन-शाप को लागू कर रहे थे, वहाँ उन्होने मजदूरो के लिए अनेक कल्याण-कार्यक्रमो पर भी अमल किया। इन्होने काम की हालतो को इतना अच्छा बना कर यूनियनवाद को हतोत्साह करने का यत्न किया कि मजदूर यूनियनो

को लाभदायक मानना ही बन्द कर दें, साथ ही मजदूरों और प्रबन्धकों में निकट सहयोग के ज़रिये उत्पादन तथा औद्योगिक कार्य-कुशलता बढ़ाई।

इसके बाद से उद्योगों ने औद्योगिक प्रबन्ध मे "वैज्ञानिकन" की प्रक्रिया से प्रति-मजदूर उत्पादन मे बहुत अधिक वृद्धि करने, मजदूरों की आवश्यकता कम करने और सामान्यतः टैकनिकल स्तर को उन्नत करने की कोशिश की। प्रगतिशील युग मे फ्रेडरिक डब्लू. टेलर द्वारा बनाए गए एक कार्यक्रम को व्यापक रूप मे स्वीकार किया जाने लगा। समय तथा गति सम्बन्धी अध्ययन, काम की मात्रा के विचार का विकास, हिस्सों को जोड़कर तैयार माल की उत्पादन वृद्धि और कर्मचारियों के साथ सम्बन्धों मे "वैज्ञानिक" हेरफेर, इन विषयों पर सब कही परीक्षण किए जाने लगे। उत्पादन की लागत कम करने की सतत धुन में युद्धोत्तर काल मे "टेलरवाद" पर और भी ज्यादा व्यापक ध्यान गया। औद्योगिक कार्यकुशलता के इस कार्यक्रम में ट्रेडयूनियनवाद का कोई स्थान नहीं था, किन्तु मालिक ऐसी किसी स्थानापन्न चीज़ की आवश्यकता महसूस करते थे जो उद्योग और मजदूर के आपसी हित के हक मे सहयोगपूर्वक काम करते हुए 'एक बड़े परिवार' की भावना को उत्पन्न करने मे सहायक हो। उनका ख्याल है कि यह चीज उन्हें, कारखाना परिषदों, कर्मचारियों के प्रतिनिधित्व की योजनाओं तथा विशेष रूप से कम्पनी यूनियनों के रूप में प्राप्त हो गई है। १९१४ मे लुडलो की हड़ताल के बाद जिसकी परिणति खूनी हत्याकाण्ड मे हुई, इस कार्यक्रम को अपनाने में कोलैरेडो फ्युएल एण्ड आयरन कम्पनी ने पहल की। रॉकफेलर सस्थानों ने युनाइटेड माइन वर्कर्स को मान्यता देने से इंकार कर दिया था और उसकी जगह एक कम्पनी यूनियन की स्थापना की थी जिसका उद्देश्य संगठित मज़दूर आन्दोलन के साथ किसी प्रकार के साहचर्य के खतरनाक परिणामों के बिना ही एक 'औद्योगिक लोकतन्त्र' की व्यवस्था करना था। रॉकफेलर के परीक्षण का अन्य बहुत से कार्पोरेशनों ने अनुकरण किया। युद्धकाल में १२५ ने किसी न किसी प्रकार की कम्पनी यूनियन कायम की और युद्ध के बाद के वर्षों में ओपन-शाप अभियान के कारण बाहर की यूनियनों के स्थान पर मालिकों द्वारा नियंत्रित यूनियनों की स्थापना की परिपाटी पर और ज्यादा जोर दिया जाने लगा। १९२६ तक कम्पनी यूनियनों की सख्या ४०० से अधिक हो गई थी जिनके १३,६९,००० अथवा ए.एफ एल.

से सम्बद्ध यूनियनों के सदस्यो के करीब ५० प्रतिशत सदस्य थे।

कर्मचारियो का प्रबन्ध करने वालो ने जब मजदूर समस्या का और अध्ययन किया (युद्ध के बाद पहले ५ वर्षो में इस विषय पर लगभग ३००० पुस्तके छपी) तब कम्पनी यूनियनो के कार्य को मजबूत करने और उनके प्रति मज़दूरों की निष्ठा प्राप्त करने के लिए और भी कदम उठाए गए। बीसियो और उसके बाद सैकडो कार्पोरेशनो ने मुनाफे में हिस्सा बँटाने वाली योजनाएँ चालू की, कम्पनी के शेयरो के रूप में बोनस दिए या अन्य तरीको से कम्पनी की गति-विधियो में मज़दूरो की सीधी आर्थिक दिलचस्पी पैदा करने की कोशिश की। १९२८ मे अनुमान लगाया गया कि १० लाख से अधिक मजदूरो ने, जिन कम्पनियो मे वे काम कर रहे थे, उनके एक अरब डालर से ज्यादा कीमत के शेयर खरीद रखे थे। ग्रुप बीमा पालिसियाँ भी जारी की गई, जो कर्मचारी द्वारा नौकरी बदल लिए जाने पर जब्त हो जाती थी, और १९२६ तक इस तरह की योजनाओं के अन्तर्गत कोई ५० लाख मजदूरो का बीमा किया गया। साथ ही बुढ़ापे मे पेंशन देने के कई कार्यक्रम चालू किए गए, स्वास्थ्य अच्छा रखने में सहायता देने के लिए मुफ्त औषधालय खोले गए, और कर्मचारियो के लिए कैन्टीनो तथा भोजनालयो की व्यवस्था की गई। कम्पनी यूनियनो के कर्मचारी विभागो के निर्देशन में कारखानो के कर्मचारियो के लिए पिकनिक, क्लब, नृत्य, खेल आदि मनोरंजक कार्यक्रमो की व्यवस्था की गई और सैकडों पत्र-पत्रिकाएँ मज़दूर और प्रबन्धक के बीच सद्भावना तथा मैत्रीपूर्ण मानवीय सम्बन्धों का गुणगान कर रही थी।

कल्याणकारी पूँजीवाद के विस्तार की कोई सीमा नही थी और यह काम की हालत सुधारने तथा अप्रत्यक्ष रूप से कर्मचारी की आमदनी बढाने मे बहुत हद तक सफल हुआ। तो भी सारा कार्यक्रम कार्पोरेशन के सचालक के नियंत्रण के आधीन था और इन परिस्थितियो में कर्मचारियो का प्रतिनिधित्व असली रूप नही ले पाया। यह कोई महत्त्वहीन बात नही थी कि जिन कम्पनियों ने मजदूरों के कल्याण-कार्यक्रमो की जितनी अधिक उदारता से व्यवस्था की उनकी बुनियादी नीति उतनी ही ज्यादा यूनियन विरोधी थी। अगर समृद्धि की जगह उनकी मन्दी आ जाए तब कल्याणकारी पूँजीवाद और विशेषकर शेयरों में हिस्सा देने का उसका कार्यक्रम कितनी जल्दी ढह सकता है, यह उस समय अनुभव

नही किया गया था। कम्पनी यूनियनो का शायद ही कोई सदस्य इस बात को समझता हो कि यूनियन-मान्यता तथा वास्तविक सामूहिक सौदेबाजी के लाभो के बदले मे जो कृपा उन्हें मिल रही है उससे वे अपने मालिको पर कितने निर्भर हो गए है।

यह सबक १९२० में सीखा गया, किन्तु इस बीच कल्याणकारी पूँजीवाद ने अनेक विजयें प्राप्त की। नेशनल एसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स की ओपन-शाप समिति के चेयरमैन एस. बी. पेक ने कहा : "यह बात ताल ठोक कर कही जा सकती है कि अधिकाश यूनियनो की सदस्य-सख्या घटने और अपने और अपने सदस्यो को एकजूट रखने मे अनुभव की जाने वाली उनकी महान् कठिनाइयो का एकमात्र कारण यह है कि मालिक और विशेषकर जिन्हें कभी 'अन्तरात्मा रहित कार्पोरेशन' कहा जाता था, मजदूरो के कल्याण के लिए यूनियनो से ज्यादा काम कर रहा है।" ७६वी काँग्रेस की शिक्षा और श्रम-सिमिति ने १९२६ में रिपोर्ट दी कि यूनियनवाद का मुकाबला करने में एन. ए एम. ने इतना अच्छा काम किया है कि वह "समृद्धि के वर्षो में अपने प्रयत्नो के फल के शातिमय उपभोग" का सरजाम कर सका।

वास्तविक ट्रेड यूनियनो के दमन और कम्पनी-यूनियनो तथा कल्याण-कारी पूँजीवाद के लाभो के जरिए कर्मचारियो की वफादारी प्राप्त करने के दुधारे कार्यक्रम के फलस्वरूप न केवल ए. एफ. एल. की सदस्य-सख्या में कमी हुई, बल्कि देश मे इतनी औद्योगिक शाति कायम रही, जितनी अनेक वर्षों से नही रही थी। इसका यह मतलब नही कि हड़ताले हुई ही नही। उदाहरणार्थ दुखी कपडा मिल कर्मचारियो ने निरन्तर हडतालें की, जमकर मोर्चा लिया और हिसा और रक्तपात भी हुआ। गैस्टोनिया और मेरियन (नार्थ कैरोलिना) और एलिजाबेथन (टेनेसी) जैसे दक्षिण के कारखाना-नगरो मे हडतालियो और राज्य की सेनाओ के बीच मठभेडों मे बहुत-से लोग मारे गए। किन्तु समग्र चित्र श्रम-विवादो की सख्या घटते जाने का रहा। युद्धकाल मे औसतन ३००० से अधिक हडताले प्रति वर्ष होती थी, जिनमें १० लाख से अधिक मजदूरो ने भाग लिया होता था। १९२० के दशक के मध्य तक ये सख्याएँ आधी रह गई। दशाब्दी के अन्त में हडतालो की वार्षिक सख्या ८०० के करीब रह गई, जिनमें कोई ३ लाख कर्मचारियो ने या समस्त श्रमिक-संख्या

के एक प्रतिशत से कुछ अधिक ने भाग लिया था।

अमरीकी मजदूर सघ ने मजदूरो मे फिर से उग्रता पैदा करने के बजाय मजदूर-मालिको मे सहयोग को प्रोत्साहन देने का हर सम्भव प्रयत्न किया। औद्योगिक सघर्षो को टालने में प्रमुख सेवा के लिए १९३० में ग्रीन को रूजवेल्ट मैमोरियल ऐसोसिएशन का स्वर्णपदक दिया गया, जिसे उसने गौरवपूर्ण भावना से स्वीकार किया। ए एफ एल. कम्पनी यूनियनो को तो सहन नही कर सकता था किन्तु कल्याणकारी पूँजीवाद की अन्य बहुत सी बातो को इसने चुपचाप स्वीकार कर लिया। दक्ष श्रमिकों की मांग के फलस्वरूप वेतन-दरो मे होने वाली वृद्धि मे उसके अपने सदस्य जो लाभ उठा रहे थे उससे सन्तुष्ट होकर ए. एफ एल ने यूनियन की गतिविधियो में विस्तार करने का कोई प्रयत्न नही किया। १९२० के दशक की समाप्ति पर सगठित मजदूर आन्दोलन भी हमारे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र मे अन्य किसी भी तत्त्व के समान सुनिश्चित आर्थिक प्रगति के वायदे को आसानी से स्वीकार करता प्रतीत हो रहा था।

यह कहा जाता है कि १९२० के दशक मे राष्ट्र के मजदूरो के वेतन जिस तेजी से बढे, उतने अन्य किसी दशक में नही। १९२१ और १९२८ के बीच वार्षिक आय वस्तुत. बढ कर ११७१ डालर से १४०८ डालर हो गई। वास्तविक क्रय शक्ति के मायनो में यह वृद्धि २० प्रतिशत से अधिक हुई क्योंकि रहन-सहन की लागत मे आय की वृद्धि के अनुरूप बढ़ोतरी नही हुई थी।

किन्तु वास्तविक वेतन-और उनमे वृद्धि की रफ्तार दोनो ही बहुत ऊँची-नीची रही। न्यूयार्क मे ईंट की चिनाई करने वालो के लिए १९२० से १९२८ के बीच प्रतिघण्टा वेतन दर १.०६ डालर से बढ़कर १.८७ डालर हो गई और अखबार के कम्पोजीटरो की ९२ सेण्ट से बढकर १.२० डालर किन्तु बिटुमिनस खनिको के वेतन की दर ८३ सेण्ट से घट कर ७३ सेंट और कपडा मिलो मे म्यूल-स्पिनर्स के लिए ८३ सेण्ट गिरकर ६३ सेण्ट रह गई। १९२० के दशक के लाभ ज्यादातर दक्ष श्रमिको और यूनियन सदस्यों को मिले। करोड़ो मजदूर परिवारो की वार्षिक आय १९२९ मे भी १००० डालर से भी कम थी।

काम के घण्टो का जहाँ तक सम्बन्ध है, स्थिति मे आम सुधार हुआ। सामान्यत: ८ घण्टे का दिन था और अनुमान लगाया गया कि सदी के प्रारम्भ के बाद से काम के घण्टो मे १५ से ३० प्रतिशत तक कमी हो गई थी। किन्तु जब उपलब्ध आँकड़ो का विश्लेषण किया जाता है तो बड़ी विषमता दिखाई देती है। मकान बनाने के व्यवसाय में औसत सप्ताह जहाँ ४३.५ घण्टे का था वहाँ इस्पात मिलो में वमन भट्टी के कर्मचारियो से अब भी सप्ताह में ६० घण्टे काम लिया जा रहा था।

अन्य वर्षो की भाँति इन वर्षो मे भी मज़दूरी की दर तथा काम के घण्टो के अलावा अन्य बातो ने भी राष्ट्र के मज़दूरो की खुशहाली पर प्रभाव डाला। औद्योगिक प्रक्रियाओ मे तेज़ी आ जाने से मेहनत और स्नायविक खिचाव बढ गया जिसमें मशीनें चलाने वाले और हिस्सो को जोड़कर तैयार माल बनाने वाले मज़दूरो को निरन्तर काम करना पड़ता था। बहुत से फैक्टरी कर्मचारियों के लिए व्यक्तिगत दक्षता से काम लेने के बजाय पूर्ण यान्त्रिक प्रक्रिया अपनाया नीरसता उत्पन्न करने वाला था, जिसकी भरपाई सदा ही अधिक वेतन र काम के कम घण्टो से नही हो पाती थी। यद्यपि उद्योगीकरण के इतिहास मे यह कोई नई बात नही थी, तो भी १९२० के दशक मे यह बहुत महत्त्व रखती थी।

मशीन के मार्च के साथ-साथ मज़दूर के सिर पर काम छूट जाने के भय की तलवार लटकी रहती थी। फलस्वरूप देश के औद्योगिक श्रमिक सुरक्षा और खुशहाली की उस मंजिल को प्राप्त करने से अभी बहुत दूर थे जो संगठित श्रमिकों का लक्ष्य थी। सामाजिक आँकड़े भले ही दूसरी तसवीर पेश करें, जो लाभ प्राप्त किए गए थे उनके खो जाने का बडा खतरा था, विशेषकर इसलिए कि जो कल्याणकारी पूँजीवाद द्वारा प्रदान किए गए थे, उनके जारी रहने के बारे मे किसी करार का संरक्षण प्राप्त नहीं था। वास्तविक सामूहिक सौदेबाज़ी के स्थान पर मज़दूर प्रबन्धक सहयोग को स्वीकार करके जिस हद तक सगठनात्मक शक्ति तथा उग्र ट्रेड यूनियनवाद की बलि दे दी गई थी वहाँ तक मज़दूरो ने अपने हितो की रक्षा करने के लिए मुश्किल से प्राप्त की गई अपनी शक्ति पर गंभीर रूप से कुठाराघात किया था। वे पूर्णरूप से मालिक द्वारा उनके साथ अच्छा व्यवहार करते रहने की इच्छा और सामर्थ्य पर निर्भर

रह गए।

१९२९ मे शेयर बाजार के यकायक ढुलक जाने के बाद जब शनै.-शनैः देश मे मन्दी आई, तब यही स्थिति थी। कहानी बहुत परिचित है। शेयरों मे से जब अरबों डालर की कीमत उड़ गई तो राष्ट्र के विश्वास को धक्का लगा। चिल्ला-चिल्ला कर कहा गया कि स्थिति बुनियादी तौर से मजबूत है और हमारी औद्योगिक प्रणाली में दरारे जैसे-जैसे चौडी होती गई व्यवसाय धीरे-धीरे ठप्प होता गया और सारा ढांचा ढुलकता प्रतीत हुआ। यह मन्दी आर्थिक चक्र मे एक और ऐतिहासिक मोड़ थी, किन्तु इससे पहले की अन्य किसी मंदी की अपेक्षा, समाज पर ज्यादा प्रभाव पडा'।

मन्दी समाप्त होने से पहले कृषि-उपज की कीमते अपने पिछले स्तर से ४० प्रतिशत गिर गई थी। निर्यात पहले के अधिकतम स्तर से एक-तिहाई गिर गया था, औद्योगिक उत्पादन करीब-करीब आधा हो गया और कम्पनी उद्योगो की बैलेंस शीट मे ५ अरब ६५ करोड़ डालर का घाटा दिखाया गया। तीन वर्षों मे ८२,८८,५०,००००० डालर की राष्ट्रीय आय गिर कर ४०,०७,४०,००,००० डालर रह गई। इसमे भी ज्यादा बडी और ज्यादा विपज्जनक बात यह हुई कि बेकारी १९३० की समाप्ति तक ७० लाख से ऊपर जा पहुँची और अन्य दो वर्षों मे १॥ करोड़ हो गई।

किन्तु ये आँकडे इस भीषण मन्दी का धुँधला-सा ही चित्र प्रस्तुत करते है। इसने लाखो मध्यमवर्गीय परिवारो को जिस कंजूसी और बचत के लिए मजबूर किया, निम्न आय वर्ग के लोगो को जो कष्ट उठाने पड़े और बेकार मजदूरों और उनके परिवारो पर विधाता ने जो क्रूर उपहास खेला उसको ये आँकडे चित्रित नही कर सकते। रोटी के लिए लगी कतारे, असख्य शहरो के आस-पास आवारा लोगो के जंगल, जिन्हें कटाक्षपूर्वक हूवरविल कहा जाता था और काम-धन्धे की निराशाजनक तलाश मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने वाले पुरुषो और युवको की सेना गरीबी का खातमा करने वाले युग की चमकती मृगमरीचिका पर एक विषादमय टिप्पणी थी।

मन्दी के कारण जब उत्पादन मे कटौती और सामान्य व्यापार ठप्प हो गया और उससे बहुत से कारखाने, खानें व वर्कशाप एकदम बन्द हो गए तो

देश के मजदूर असहाय से खड़े देखते रहे। १९३० के प्रारम्भ मे वाशिंगटन में कई सम्मेलन किए गए जिनमें उद्योगपतियो ने वेतन और रोज़गारो को कायम रखने का वचन दिया। मज़दूरो ने सहज विश्वास के साथ ये वायदे स्वीकार कर लिए। शेष देश की तरह उन्हें भी यह विश्वास नही होता था कि समृद्धि यकायक गायब हो गई है और उन्हें अब भी आशा थी कि स्थिति शीघ्र ही फिर संभलने वाली है। किन्तु वेतन दरो का पालन कराने के लिए बड़े पैमाने के उद्योगो—इस्पात, मोटर, बिजली का सामान आदि मे—सामूहिक सौदे-बाज़ी के कोई समझौते नही थे। वेतनो के चेको मे पहले तो धीरे-धीरे कटौती की गई और फिर यकायक उनके स्थान पर बर्खास्तगी के नोटिस आ गए।

समृद्धि के सुखद दिनो मे वेतन वृद्धि के स्थान पर जो आनुषंगिक लाभ प्रदान किए गए थे उन्हें वापस लेने के लिए जब मालिक बाध्य हो गए तो कल्याणकारी पूँजीवाद का सारा कार्यक्रम ही छिन्न-भिन्न हो गया। मुनाफे में हिस्सा देने की योजनाओ, शेयरो की मिल्कियत कर्मचारियो को भी देने की तजवीजो, औद्योगिक पेंशनो और मज़दूरो के स्वास्थ्य तथा मनोरजन सम्बन्धी परियोजनाओ को तुरत-फुरत तिलांजलि दे दी गई। छटनी के लिए परिस्थितियो ने मजबूर कर दिया था, किन्तु बहुत से मामलो मे यह छटनी मजदूरो के हितो को बलि देकर की गई, जबकि साधारण शेयरो पर अब भी पूरा लाभाश दिया जा रहा था। कम्पनी यूनियनें अपने सदस्यो के हितो की रक्षा करने मे बिल्कुल असमर्थ थी। कल्याणकारी पूँजी का आश्रय एक भ्रम साबित हुआ।

संगठित मज़दूर बिल्कुल पस्त-हिम्मत हो गए लगते थे। राष्ट्रीय यूनियनों ने स्थिति मे सुधार कराने के लिए सरकार पर कोई सीधा दबाव डालने की चेष्टा तक नही की और कल्याणकारी पूँजीवाद के सामने प्रत्यावर्तन मे उनकी शक्ति इतनी क्षीण हो गई थी कि राष्ट्रव्यापी बेकारी के सामने से आर्थिक ढंग मे सम्मिलित कार्रवाई कर सकने का सवाल ही नही था। हड़तालें कम से कम हो रही थी और १९३० मे उनकी संख्या इतनी कम रही कि उन सब में २ लाख से भी कम श्रमिको ने भाग लिया। १९३३ तक संगठित श्रमिको की कुल सख्या ३० लाख से भी कम रह गई, दूसरे शब्दो में १९१७ के स्तर पर आ गई।

कई तरह से मन्दी के इन वर्षों की सबसे आश्चर्यजनक बात बेकारी के आँकड़े शनैः-शनैः बढ़ने और रोटी के लिए लगी कतारें लम्बी होते जाने पर भी औद्योगिक मजदूरो की उपेक्षा-वृत्ति थी। जिस आर्थिक प्रणाली ने उन्हे इस प्रकार ठग लिया था उसके प्रति उनमें कोई विद्रोह की भावना नही थी। १८७७ की भद्दी रेल-हड़तालों या १८९४ के डेब्स के विद्रोह जैसी कोई घटना नही घटी। पार्क एवेन्यू के ड्राइग रूमो और वाल स्ट्रीट के दलालो के कार्यालयो में तो "आगामी क्रांति" की काफी चर्चा रहती थी किन्तु स्वयं बेकार इतने उत्साहहीन और निर्जीव थे कि उन्हे इसमें कोई दिलचस्पी नही थी।

१९३२ की ग्रीष्म-ऋतु में 'हार्पर्स' में लिखते हुए जार्ज सोल ने बताया कि बुद्धिजीवी लोगों का स्पष्ट सम्मान जहाँ क्रातिकारी कैम्प की ओर जा रहा था और कम्युनिज्म में उनकी दिलचस्पी-बढ़ रही थी, वहाँ मजदूरो में इस प्रकार का कोई रुझान देखने में नही आया। उसने लिखा : "ठीक है, कि अवाम बहुत निराश हालत में हैं किन्तु उनके जरा भी कुपित होने का कोई सकेत नही मिला है। वे बस घर मे बैठते है और दारूबन्दी को कोसते है .. रिपब्लिकन सरकार की तरह सम्पत्ति की वापसी के बजाय किसी कठोर कदम की प्रतीक्षा नही कर रहे।" इसी पत्र में एक अन्य लेख में एलमर डेविस ने भी "जिन नीतियो से गरीबी का उन्मूलन किया जाना था उन पर अमल किए जाने से अपने रोजगार व अन्य सब कुछ गँवा देने वाले व्यक्तियों द्वारा स्थिति को चुपचाप स्वीकार कर लिये जाने पर" आश्चर्य से टिप्पणी की।

एक अप्रत्याशित अवसर ऐसा आया था, जब लिटररी डाइजेस्ट के शब्दो में ग्रीन ने ए. एफ. एल में भाषण देते हुए 'अपने मृदु स्वभाव' को छोड़कर ओहायो खान में जहाँ वह कुदाल चलाया करता था, कोयला गिरने जैसी गरजपूर्ण आवाज में वाग्बाणो की झडी लगायी। ताली बजाते हुए श्रोताओ से उसने कहा कि रोज़गार बढाने के लिए अगर स्वेच्छा से कम काम का दिन और कम काम का सप्ताह नही अपनाया गया, "तो हम किसी न किसी जोर-ज़बर्दस्ती से इसे प्राप्त करेंगे।" रिपोर्टरो ने जब उससे पूछा कि जोर-जबर्दस्ती से उसका क्या मतलब है तो उसने तुरन्त कहा कि उनका अभिप्राय आर्थिक ताकत से है। किन्तु मज़दूरो की उग्रता के इस अस्पष्ट संकेत से भी बेचैनी फैल गई। बोस्टन ट्रासक्रिप्ट ने पूछा : 'औद्योगिक सघर्ष के लिए क्या यही

समय है ?" "हड़ताल के तरीकों से उद्योग को मजबूर करने" के किसी भी ख्याल पर वाशिंगटन पोस्ट ने सख्त अफसोस जाहिर किया। हैरल्ड ट्रिब्यून ने फतवा दे दिया कि ग्रीन "स्नायविक आघात" से पीडित है।

किन्तु यह विक्षोभ अमरीकी मजदूर संघ की सामान्यतः सावधानतापूर्ण मनोवृत्ति मे एक अपवाद था। १६३२ के अन्त तक भी बेकारी-बीमे का सख्त विरोध करते हुए इसने, मन्दी को दूर करने या बेकारी कम करने के लिए सरकार से इससे ज्यादा ठोस कार्रवाई की माँग नही की कि कम काम का सप्ताह लागू कर रोजगार बढाने के उसके कार्यक्रम को अपना कर "उद्योग मे स्थिरता" लाए।

प्रेस ने इस रवैये की तारीफ की। क्लीवलैण्ड प्लेन डीलर ने लिखा: "आज मजदूर धैर्यवान और आशावान है......पहले की कभी कोई मन्दी मजदूर संघर्ष से इतनी मुक्त नही रही। बेकारी ने उसे परेशान किया, बन्द कारखानो ने उसकी रोजी छीन ली। किन्तु अत्यन्त कठिनाई के समय में भी मजदूरों ने अपनी उत्कृष्ट नागरिकता और सबल अमरीकी जीवट का प्रदर्शन किया। मजदूर सलाम किये जाने के पात्र है।" रोजगारो के स्थान पर इस उदारतापूर्ण सलाम से क्या मजदूर सन्तुष्ट हो गए यह विवादास्पद है। फिलाडेल्फिया रिकार्ड ने प्लेन डीलर की अपेक्षा ज्यादा यथार्थ रुख अख्त्यार करते हुए कहा कि बेकारी बीमे के खिलाफ फेडरेशन का मन्तव्य एक भयानक मजाक है। उसने पूछा, "भूखे मरने की आजादी ? क्या ग्रीन इसी के लिए संघर्ष कर रहा है ?"

सरकार और मजदूर संगठनो की निष्क्रियता के परिणाम हर गुजरते महीने के साथ राज्य या निजी व्यक्तियों की खैरात पर गुजर करने वाले बेकार मजदूरो की संख्या मे वृद्धि के रूप मे स्पष्ट परिलक्षित हो रहे थे। उपलब्ध काम को अधिक से अधिक लोगो मे फैला देने के शेखी भरे अभियान का इसके सिवाय कोई परिणाम प्रतीत नही हुआ कि मजदूरो की आय तो कम हो गई किन्तु जो बेकार हो गए थे, उन्हे काम मिलने का कदाचित् ही कोई अवसर आता था।

कुछ राज्यो ने काम की हालतो मे सुधार करने के लिए कानून पास करने की कोशिश की। कई जगह मजदूरो को मुआवजा दिए जाने के नए कानून पास

किए गए । १४ राज्यो ने बुढापे की पेशनें मंजूर की और विस्कौसिन ने मज़दूरों के लिए बुनियादी अधिकार निश्चित करके और वेकारी का बीमा चालू करके एक नया मार्ग प्रशस्त किया । मार्च, १९३२ के प्रारम्भ में कांग्रेस द्वारा नोरिस-ला गार्दिया ऐक्ट पास किए जाने के साथ संगठित मज़दूरो ने सामान्यत: एक बहुत महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की । इस कानून ने अन्ततोगत्वा सरकार की यह नीति घोषित कर दी कि मजदूरो को मालिको के हस्तक्षेप के बिना संगठन बनाने की पूरी स्वाधीनता होनी चाहिए, 'येलो-डॉग' करार गैर-कानूनी घोषित कर दिए गए और सघीय न्यायालयो के लिए श्रम सम्बन्धी विवादो मे कुछ निश्चित परिस्थितियों को छोडकर निरोधादेश जारी करने से रोक दिया गया। यद्यपि कम से कम कांग्रेस के एक सदस्य ने खडे होकर कहा कि यह बिल "मास्को की दिशा में एक लम्बा कदम है" तो भी प्रतिनिधि सभा और सेनेट दोनो जगह इसे तगडा समर्थन मिला और आम जनता ने भी इसका समर्थन किया । न्यू डील की मजदूर-नीतियो की तरफ मार्गदर्शन करने में नोरिस-ला गार्दिया ऐक्ट ने चाहे कितना भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया हो, तो भी इससे राष्ट्र के मज़दूरो की तात्कालिक समस्याएँ हल नही हुई । इससे वेकारी का कोई समाधान नही हुआ ।

१९३२ की ग्रीष्म ऋतु में जब परिस्थितियाँ अपने चरम शिखर पर पहुँची तब राष्ट्रपति के चुनाव-आदोलन ने मन्दी का भली-भांति सामना करने में हूवर सरकार की असफलता के खिलाफ राजनीतिक विरोध प्रकट करने का पहला व्यावहारिक मौका प्रदान किया । डैमोक्रैटिक उम्मीदवार फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने देश के विशाल मजदूर-समुदाय और "आर्थिक पिरामिड की तली मे विद्यमान विस्मृत व्यक्ति" के लिए अपनी सहानुभूति स्पष्टत प्रकट की । उन्होंने प्रत्यक्ष सहायता दिये जाने की परम आवश्यकता पर बार-बार जोर दिया और वेकारी-बीमे की जोरदार वकालत की । तो भी ए. एफ. एल. ने राष्ट्रपति के चुनाव में अपनी निष्पक्षता की घोषणा कर दी । उसने हूवर या रूजवेल्ट में से किसी के भी पक्ष मे समर्थन की घोषणा करने से इन्कार कर दिया । इसमें कोई शक नही कि १९३२ में रूजवेल्ट को जो भारी बहुमत मिला, उसमे औद्योगिक मज़दूरो का बड़ा हाथ था, यद्यपि ए. एफ. एल ने उनके चुनाव मे सीधे कोई हिस्सा नही लिया था ।

चुनाव आन्दोलन की समाप्ति के वाद मजदूर-समस्याओ के वारे में और कोई घटना नही घटी। ए. एफ. एल. ने ३० घण्टे के सप्ताह तथा सरकारी काम-काज वढ़ाने की माँग की, अन्त में उसने वेकारी के वीमे को भी समर्थन दिया। किन्तु इस प्रकार के उपाय अपनाने के लिए कोई ठोस कदम नही उठाया गया। देश के अन्य लोगो की भाँति मजदूर भी इस चीज की प्रतीक्षा कर रहे थे कि नए राष्ट्रपति क्या करते है ?

— :o: —

१५ : न्यू डील

"......वेकार नागरिकों की एक विशाल सख्या के समक्ष जीवन-यापन की विषम समस्या मुँह बाए खड़ी है और इतनी ही विशाल संख्या नगण्य पारिश्रमिक पर काम कर रही है। कोई मूर्ख ही समय की अन्धकारपूर्ण परिस्थितियो से इन्कार कर सकता है......हमारा सबसे बड़ा पहला काम लोगो को काम पर लगाना है।"

मार्च, १६३३ में जब रूज़वेल्ट पदारूढ़ हुए तो उनके आन्दोलित कर देने वाले उद्घाटन भाषण में राष्ट्रीय संकट का सामना करने के लिए कुछ करने का वचन दिखाई दिया जिससे समस्त राष्ट्र मे आशा और विश्वास की नई भावना का सचार हुआ। अन्ततोगत्वा सरकार कृषि, श्रम तथा उद्योग को वह सहायता देने को उद्यत हुई, सिर्फ जिससे ही हमारा विगड़ा हुआ अर्थतंत्र दुरुस्त हो सकता था। जब राष्ट्रपति ने भावपूर्ण शब्दों में घोषणा की : "एकमात्र चीज़ जिससे हमें डरना है वह स्वयं डर ही है" तो देश ने महसूस किया कि उसे वह नेतृत्व मिल गया जिसके बिना वह मन्दी के गहरे दलदल में निःसहाय होकर धँसता जा रहा था।

रूज़वेल्ट के तात्कालिक कार्यक्रम में लोगों को काम देने के वायदे के अलावा सीधा मज़दूरो के लिए और कुछ नही था। वेकारी और बुढापे के वीमे के साथ सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने का प्रश्न विचाराधीन था किन्तु जब वह पदारूढ़ हुए तो वागनर ऐक्ट और फेयर लेबर स्टैण्डर्ड्‌स ऐक्ट जैसे श्रम सम्बन्धी कानूनो की, जो राष्ट्रीय पुनरुत्थान प्रशासन की संहिता में लिखे गए, कल्पना भी नहीं की गई थी। उनका शनैः-शनैः समय की आवश्यकता के अनुसार निर्माण हुआ। किन्तु तो भी न्यू डील* (नया वर्ताव) की उभरती हुई विचारधारा में मज़दूरो के अधिकारो के प्रति वुनियादी जागरूकता और सहानुभूति प्रच्छन्न रूप में विद्यमान थी।

---

* न्यू डील : सरकार के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का वुनियादी तौर से पुनर्मूल्यांकन, जिनका दूरगामी और सामान्यतः समाज में उदारता लाने वाला प्रभाव हो।

. इतिहास में पहली बार एक राष्ट्रीय सरकार ने औद्योगिक मजदूरो के कल्याण-कार्य को सरकार का उत्तरदायित्व कबूल किया और इस सिद्धान्त पर काम किया कि एक पूँजीवादी समाज में श्रम और पूँजी के बीच उपयुक्त सतुलन कायम करने के लिये सगठित पूँजी के साथ समान आधार पर सिर्फ सगठित श्रम ही खडा हो सकता है। अब से पहले मजदूर यूनियनो को बर्दाश्त किया जाता था, अब से उन्हे प्रोत्साहन दिया जाने लगा।

इस प्रकार न्यू डील का आगमन मजदूर आन्दोलन के इतिहास मे एक महत्त्वपूर्ण विभाजक रेखा साबित हुआ। युगो पुरानी परम्पराएँ तहस-नहस हो गई, नई और गतिशील ताकतें उभरी। हमारे इतिहास के पिछले किसी भी काल की अपेक्षा मजदूरो ने ज्यादा लाभ प्राप्त किए और मजदूरो की आर्थिक व राजनीतिक दोनो प्रकार की ताकत अपरिमित रूप से बढ गई। एक सदी के सघर्ष, कठिनाइयो और पराजयो की परिणति मजदूरो के ऐतिहासिक उद्देश्यो की पूर्ण उपलब्धि की सम्भावना में होती प्रतीत हुई।

मजदूरो के प्रति न्यू डील की नीति जिस कल्पना पर आधारित थी, उसे सगठित करने के उनके अधिकार की मान्यता के रूप में नोरिस-ला गार्दिया ऐक्ट में पहले ही लिखित रूप दे दिया गया था। रूजवेल्ट सरकार ने जब अन्तर्राज्यीय वाणिज्य का नियमन करने के लिए काग्रेस के कुछ सदिग्ध अधिकार पर आधारित राष्ट्रीय औद्योगिक पुनरुत्थान अधिनियम के आर्थिक नियत्रण का समूचा परीक्षण किया तो प्रसिद्ध या कुछ क्षेत्रो की धारणा के मुताबिक बदनाम—खण्ड ७ (ए) मे सगठन बनाने के इस अधिकार को अमली रूप देने के लिए पहला कदम उठाया गया।

मजदूरो के हितो का समर्थन करने के लिए यह महत्त्वपूर्ण कदम। अत्यन्त जटिल चालो का अन्तिम परिणाम था। १९३३ के मार्च महीने में सेनेटर ब्लैक तथा प्रतिनिधि सभा के कौनेरी ने बेकारी दूर करने के उद्देश्य से काम को फैलाने के लिए ३० घण्टे के सप्ताह की ए. एफ. एल की माँग की पूर्ति के लिये कांग्रेस में एक बिल पेश किया। रूजवेल्ट को इस बिल की उपयोगिता में तब तक सन्देह था जब तक उसमे वेतनो की दर कायम रखने की कोई व्यवस्था नही कर दी जाती। इसलिए राष्ट्रपति की तरफ से श्रममंत्री पर्किन्स ने इसमें

कुछ सशोधनो का सुझाव दिया जिससे काम के घण्टे कम होने के साथ-साथ न्यूनतम वेतन भी निश्चित हो जाते। नए बिल मे अन्तर्हित-नीति १८६० के दशक मे इरा स्टीवर्ड द्वारा प्रस्तुत विचारधारा से बहुत भिन्न नही थी। सिर्फ यही फर्क था कि काम के घण्टे घटाये जाने के साथ वेतनो मे वृद्धि के बजाय इसमें वेतनो के स्थिरीकरण की बात कही गई थी। इससे आगे जाने का अभी कोई विचार नही था। श्रममंत्री पर्किन्स ने लिखा है कि "अप्रैल, १९३३ में जब मैने राष्ट्रपति से बातचीत की तब वे राष्ट्रीय पुनरुत्थान अधिनियम के बारे में उतने ही अबोध थे, जितना कोई बच्चा हो सकता है।"

न्यूनतम वेतन के विचार का व्यापारी वर्ग ने तीव्र विरोध किया और मजदूरो ने भी कोई बहुत उत्साह से उसका समर्थन नही किया। मन्दी की समस्या को इतने सीमित ढग से हल करने की बजाय दोनो पक्षो ने इस बात पर बल दिया कि सरकार अपनी दृष्टि और ऊँची करके अधिक व्यापक कार्य-क्रम तैयार करे। यूनाइटेड स्टेट्स चैम्बर आव कामर्स ने प्रस्ताव किया कि वाणिज्य को ट्रस्ट-विरोधी कानूनो से मुक्त किया जाए और अपनी भलाई का मार्ग उसे स्वयं ढूँढने दिया जाए। मजदूरो के प्रवक्ता के रूप में जॉन एल. लेविस ने कहा कि कोयला खानो मे जहाँ पर वह उत्पादन, मूल्य तथा वेतनो पर नियंत्रण की माँग करते रहे है उसे समस्त उद्योगो पर लागू किया जाए। कांग्रेस के अन्दर और बाहर ऐसी बीसियो योजनाओ पर अधिकाधिक दिल-चस्पी ली गई, राष्ट्रपति के सलाहकारों की कई स्वतन्त्र टोलियाँ विशिष्ट कदमों का रूप निश्चित करने मे लग गई। किन्तु कोई वास्तविक प्रगति नही की जा सकी और राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने हस्तक्षेप का निर्णय किया। ब्लैक-कौनेरी बिल से सरकार का समर्थन वापस लेकर, जिसमे कि उनकी दिलचस्पी पहले ही बहुत कम थी राष्ट्रपति ने अपने सलाहकारो को एक सामान्य कार्यक्रम तैयार करने का निर्देश किया और कहा कि जरूरत हो तो वे तालाबन्द कमरे में भी बैठें किन्तु कोई न कोई सर्वसम्मत निर्णय जरूर हो जाना चाहिए।

अन्तिम रूप से स्वीकार की गई और राष्ट्रीय औद्योगिक पुनरुत्थान अधि-नियम में शामिल की गई योजना के अनुसार उद्योग को अपनी प्रतियोगिता के तौर-तरीके खुद ईजाद करने की इजाजत दे दी गई किन्तु साथ ही उद्योग को दी गई इस खुली छूट के बदले में मजदूरो को आवश्यक सरक्षण प्रदान किए

गए। नए कानून के खण्ड ७ (ए) मे, जो आशिक रूप मे १९२६ के रेलवे मजदूर अधिनियम से लिया गया था, कहा गया था कि औद्योगिक संहिताओ में निम्न तीन महत्त्वपूर्ण व्यवस्थाएँ होनी चाहिएँ : कर्मचारियो को सगठन बनाने और अपनी पसन्द के प्रतिनिधियो के जरिये सामूहिक सौदेबाजी का अधिकार होना चाहिए, उसमें मालिक कोई बाधा, रोक या जबर्दस्ती न करे; रोजगार के इच्छुक किसी व्यक्ति को कम्पनी यूनियन में शामिल होने को मजबूर न किया जाए और अपनी पसन्द के मजदूर सगठन में शामिल होने से रोका न जाए, और मालिक वर्ग काम के अधिकतम घण्टो, न्यूनतम वेतन तथा काम की अन्य हालतो के बारे मे राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत नियमो पर अमल करे। नए कानून को अगर समग्र दृष्टि से देखा जाए, तो इसमे चैम्बर आव कामर्स के कार्यक्रमों की बातो, यूनियनो की मान्यता के लिए मजदूरो की परम्परागत माँग तथा ब्लैक-कौनेरी बिल की कुछ सशोधित व्यवस्थाओ का एक ही व्यापक कानून में समावेश कर लिया गया और इस व्यापक योजना मे एक अलग मुद्दे के अन्तर्गत ३,३०,००,००,००० डालर के खर्च का एक विशाल सार्वजनिक कार्यक्रम और जोड दिया गया।

राष्ट्रीय औद्योगिक पुनरुत्थान अधिनियम जिस रूप में जून, १९३३ में पास हुआ उसका उद्देश्य राष्ट्रपति के शब्दो में "लोगो को पुन. काम पर लगाना था।" इसका लक्ष्य अनुचित प्रतियोगिता तथा संकटकारी अधिक उत्पादन को रोक कर उद्योग को उचित मुनाफा दिलवाना तथा काम के घण्टे कम करके उपलब्ध रोजगार को अधिक से अधिक श्रमिको में बाँट कर मजदूरो को जीवन यापन के लायक मजदूरी दिलवाना था। रूजवेल्ट ने इस कानून को "अमरीकी कांग्रेस द्वारा तब तक पास किए गए किसी भी कानून से अधिक महत्त्वपूर्ण और दूरगामी बताया।"

इससे पूर्व सुप्रीमकोर्ट इसे अन्तत. गैर-कानूनी ठहराती यह कानून आन्तरिक खिचाव और दबाव से ही मृतप्राय हो गया और न्यू डील के प्रारम्भिक जोश का ऐसा शिकार बना जिस पर सामान्यत: किसी ने आँसू नही बहाए। किन्तु फिर भी मजदूरो के लिए इसके परिणामो ने रूजवेल्ट के वक्तव्य को काफी हद तक उचित सिद्ध किया। कानून को अमल में लाते हुए उसमें जो त्रुटियाँ दिखाई दी उनके बावजूद काँग्रेस की कार्रवाई के द्वारा प्राप्त सामूहिक सौदे-

बाजी की गारण्टी और वेतनो तथा काम के घण्टो पर नियन्त्रण इतने अग्रिम कदम थे जितने औद्योगिक सम्बन्धो में आज तक किसी सरकार ने नही उठाए थे और एन. आर. ए. की जब अन्य धाराएँ असांविधानिक घोषित कर दी गईं तब भी इन कदमो को पीछे नही हटाया गया। न्यू डील ने खण्ड ७ (ए) के छिन्न-भिन्न तारो को पुन: सावधानी से वागनर ऐक्ट तथा फेयर लेबर स्टैण्डर्ड्स एक्ट के रूप में एकसूत्र में बाँध दिया। रूज़वेल्ट के शासन मे औद्योगिक मज़दूरो के हितो की रक्षा करने में की गई इस प्रगति से पीछे हटने का प्रश्न ही नही था।

जून १९३३ में एन. आर. ए. का सारे देश में सोत्साह स्वागत किया गया। यह सच है कि 'मैन्युफैक्चरर्स रिकार्ड' जैसे कंजरवेटिव अखबार ने, जो मजदूरो को दी गई किसी भी रियायत को लाल-पीली आँखों से देखता था, तुरन्त यह टिप्पणी की: "मजदूर आन्दोलनकारी........ इस देश मे एक मजदूर तानाशाही कायम करने की कोशिश कर रहे है।" किन्तु आलोचना का यह राग नए पुनरुत्थान कार्यक्रम की हर्षमय स्वीकृति के समवेत स्वर में खो गया। अपने प्रारम्भ की उज्जवल अरुणिमा में एन. आर. ए. देशभक्तिपूर्ण वक्तव्यो और लोकप्रिय प्रदर्शनो के साथ जनरल ह्यू जॉन्सन के गतिशील नेतृत्व में अमल मे आना शुरू हुआ। सहिता की स्वीकृति के सकेत के रूप में इस पार से उस पार समस्त प्रदेश में "नीली चीलो" का गर्वपूर्वक प्रदर्शन किया जा रहा था।

मज़दूरो ने खण्ड ७ (ए) का उल्लासपूर्वक स्वागत किया। विलियम ग्रीन ने कहा : "समस्त राष्ट्र में दसियो लाख मज़दूर अपने जीवन में पहली बार औद्योगिक स्वाधीनता का चार्टर ग्रहण करने के लिए खड़े हुए।" मन्दी की उत्साहहीनता मे से रातोरात असख्य यूनियनें उठ खड़ी हुईं। कानून के सर-क्षण पर भरोसा करते हुए सगठनकर्त्ता ठप्प पड़ी हुई स्थानीय शाखाओ की क्षीण हुई शक्ति को फिर से एकत्र करने मे, नई यूनियनें बनाने मे और जिन स्थानो पर उन्हे नही जाने दिया जाता था उनमें जाकर यूनियन बनाने में जुट गए। कोयला खानों में खान के गड्ढो पर गाडे गये तख्तो पर लिखा था : "राष्ट्रपति चाहते हैं कि आप यूनियन में शामिल हो।" स्वयं मजदूरो

ने बहुत स्थानो पर हैड क्वार्टर से ए. एफ. एल. के प्रतिनिधि के आगमन की प्रतीक्षा नही की अपितु अपनी स्थानीय यूनियनें खुद बना ली और तब पितृ-संगठन से चार्टर प्राप्त करने के लिए अर्जी दे दी। इस समय मजदूरो में जैसी हल-चल फूट पड़ी वैसी पहले कभी दिखाई नही दी सिवाय शायद तब के, जब कि आधी सदी पूर्व नाइट्स आव लेबर का नाटकीय विकास हुआ था।

अक्तूबर मे जब ए. एफ. एल. का वार्षिक सम्मेलन हुआ तब अध्यक्ष ग्रीन ने विश्वासपूर्वक यह घोषणा की कि एक अनधिकृत गिनती से जाहिर होता है कि १५ लाख नए सदस्य बने जिससे एक दशाब्दी की क्षति पूरी हो गई और सदस्यो की कुल सख्या ४० लाख के करीब जा पहुँची। तब वह १ करोड़ सदस्यो का और अन्ततः ढाई करोड सदस्यो का स्वप्न लेने लगा।

सबसे ज्यादा सदस्य तथाकथित औद्योगिक यूनियनो में बने, विशेषकर उनमें जिनको मन्दी मे भारी नुकसान का सामना करना पडा था। कुछ ही महीनो मे यूनाइटेड माइन वर्कर्स ने ३ लाख सदस्यो की भरपाई कर ली और केण्टकी और अलाबामा के भूतपूर्व गैर-यूनियन कोयला क्षेत्रो मे नए समझौते किए गए, इण्टरनेशनल लेडीज गारमेण्ट वर्कर्स यूनियन के १ लाख सदस्य बढ़ गए, न्यूयार्क तथा देश के अन्य भागो में उठाकर ले जाए गए कारखानो में जो क्षति उसने उठाई थी उसकी भरपाई हो गई और ऐमलगमेटेड क्लोदिंग वर्कर्स ने ५०,००० की नई भर्ती से पहले की क्षति की भरपाई कर ली। किन्तु यही इति नही थी। खण्ड ७ (ए) की स्फुरणा के अन्तर्गत ए. एफ. एल. "बड़े पैमाने के उद्योगो मे असगठितो का सगठन बनाओ" के नए नारे के साथ उस प्रदेश पर भी छापा मारने को तैयार प्रतीत हुआ जिससे पहले उसे दूर रखा गया था। मोटर उद्योग मे करीब १ लाख मजदूरो का, इस्पात मे ९०,०००, लम्बरयार्ड और आरा मिलो में ९०,००० तथा रबड उद्योग में ६०,००० मजदूरो का सगठन किया गया।

किन्तु शीघ्र ही यह पता चला कि असगठित मजदूरो में यह तीव्र हलचल बहुत खतरनाक आधार पर स्थित थी और अध्यक्ष ग्रीन की गर्वोक्ति १६ आने उचित नही थी। औद्योगिक यूनियनवाद के प्रति ए एफ एल. की परम्परागत शंकालु मनोवृत्ति ने, जो मजदूर आन्दोलन पर अपना नियंत्रण कायम रखने के

पुराने ढग की शिल्प-यूनियनो के नेताओं के दृढ-निश्चय से और प्रवल हो गई थी, बडे पैमाने के उद्योगो में मजदूरो को औद्योगिक आधार पर सगठित करने के किसी भी अभियान को खण्डित कर दिया। जब तक अधिकार क्षेत्र सबन्धी समस्याओ का निबटारा नही कर लिया गया और इस्पात, मोटर व रबड़ उद्योगो में नए यूनियन सदस्यो को आहिस्ता-आहिस्ता विद्यमान यूनियनो मे खपा नही लिया गया तब तक ए. एफ. एल. से सीधे सम्बद्ध तथाकथित सघीय यूनियनो के निर्माण का ढंग ही स्वीकार किया गया। १९३२ और १९३४ के बीच के फेडरेल यूनियनो की संख्या ३०७ से १७९८ हो गई। किन्तु इस प्रकार के सगठनो से अदक्ष मजदूरो की वास्तविक आवश्यकताएँ पूरी नही हुई और बड़े पैमाने के उद्योगो मे बढी हुई हलचल बहुत शीघ्र ही घटने लगी।

विफलता के इन प्रमाणो के कारण ए. एफ. एल के अन्दर अधिक प्रगतिशील नेता तौर-तरीको मे परिवर्तन की जोरदार माँग करने लगे। उन्होने असगठित मजदूरो को यूनियनो मे लाने के लिए अधिक जोरदार अभियान किया तथा मोटर, इस्पात, रबड, ऐल्युमीनियम तथा रेडियो उद्योग में तुरन्त ही औद्योगिक यूनियन चार्टर दिए जाने की माँग की। जब ए. एफ. एल. के रूढिवादी शासको ने इन माँगो को ठुकरा दिया तो शिल्प यूनियनो तथा औद्योगिक यूनियनो के हामियो के बीच वढती हुई खाई ने मजदूर वर्ग में फूट पैदा कर दी। इसके महानतम अवसर के समय इसकी एकता नष्ट हो गई। विद्रोही मजदूरो ने उन परिस्थितियो में, जिनका हम आगे चलकर उल्लेख करेंगे, अपनी निजी औद्योगिक संगठन समिति (कमेटी आव इण्डस्ट्रियल आर्गनाइजेशन) वना ली और मजदूर इतिहास मे एक नए अध्याय का सूत्रपात हुआ।

इस बीच पुरानी यूनियनो ने भी यह देखा कि स्वाधीनता के लए चार्टर से जो ऊँची-ऊँची आशाएँ उन्होने वाँधी थी वे और सघर्ष किए विना पूरी नही होगी। एन. आर. ए. की औद्योगिक सहिता को स्वीकार किये जाने तक सब मालिको को राष्ट्रपति क पुनः कार्यनियोजन समझौते का पालन करने की हिदायत की गई, जिसमे ४९ घण्टे के सप्ताह की, १५ डालर साप्ताहिक या ४० सेण्ट प्रति घण्टा न्यूनतम वेतन की व्यवस्था की गई थी और १६ वर्ष से कम आयु के बच्चो से काम लेने पर पाबन्दी लगाई गई थी। तव वाणिज्य सगठनो ने ज्यादा स्थायी समझौतो की रूप-रेखा तैयार की जिनमें यह माना

गया कि मजदूरो के हितो की रक्षा हर उद्योग में एक श्रम सलाहकार बोर्ड करेगा। किन्तु अन्ततोगत्वा इन वाणिज्य संगठनो ने सामान्यत. स्वतंत्र रूप से कार्य किया और स्थायी नियमो के निर्माण मे कर्मचारियो का वस्तुतः कोई हाथ नही था। अधिकाश समझौतो में ४० घण्टे का सप्ताह, तथा १२ से १५ डालर साप्ताहिक न्यूनतम वेतन निश्चित किया गया किन्तु अन्ततः जहाँ राष्ट्र के ९५ प्रतिशत औद्योगिक मजदूरो को यह सरक्षण प्रदान किया गया वहाँ अन्य मामलो मे उनके अधिकारो की उपेक्षा कर दी गई। सामूहिक सौदे-बाजी के बारे मे सरक्षण या तो निश्चित रूप से स्वीकार नही किए गए या धीरे-धीरे उनमे कटौती कर दी गई। उदाहरणार्थ मोटर निर्माता अपने करार में एक ऐसी धारा रखवाने मे सफल हो गए जिससे वे "व्यक्तिगत योग्यता के आधार पर" अपने कर्मचारियो को छाँट सके, काम पर बनाए रख सकें या तरक्की दे सकें। इस प्रकार के सिद्धान्त से कोई इन्कार नही कर सकता किन्तु यूनियन विरोधी मालिको को इससे किसी भी सुविधाजनक बहाने पर यूनियन सदस्यो के साथ भेदभाव करने का साधन मिल गया। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने बाद में आदेश किया कि खण्ड ७ (ए) की व्याख्या किसी कोड (सहिता या करार) में शामिल न की जाए। उन्होने कहा कि मालिक जिस किसी को भी काम पर लगाना चाहे उसके इस अधिकार में यह बाधा नही डालता किन्तु कर्मचारी को यूनियन मे शामिल होने से रोकने के एक उपाय के रूप मे इस अधिकार का इस्तेमाल करने से स्पष्ट रोकता है।

जब उद्योगो मे फिर से जान आने लगी और भयभीत मालिक मन्दी की अधेरी गुफा से सतर्कतापूर्वक बाहर निकल रहे थे तो उत्पादन को नियन्त्रित करने तथा कीमतें निश्चित करने के बारे में प्रबन्धको को दी गई खुली छूट के बदले मजदूरो को प्रदान की गई रियायतों पर और ज्यादा रोष प्रकट किया गया। 'आयरन एज' ने इसे 'सामूहिक दण्ड-प्रहार" कह कर इसके खिलाफ चेतावनी दी और 'स्टील' ने कहा कि संगठित मजदूर जब अपने "दाँत निपोर रहे हैं" तब ओपनशाप को कायम रखने की हर कोशिश की जानी चाहिए। ए. एफ. एल. के १,००,००,००० सदस्यो की भयजनक सभावनाओ को देखते हुए 'कमर्शियल एण्ड फाइनेंशियल क्रानिकल' ने कहा कि तब देश में "एक ऐसा संगठित संघटन अथवा वर्ग होगा जो राज्य से भी ज्यादा शक्तिशाली

होगा। इसका मतलब होगा स्वाधीनता की समाप्ति और अन्त में सब कही उत्पीड़न फैल जाएगा......।" इन भयानक चेतावनियों पर कान न देकर कुछ मालिकों ने संहिताओं की मजदूर सम्बन्धी व्यवस्थाओं का पालन करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया और अन्यो ने अक्षरो का नही तो भावना का उल्लंघन करने का हर सभव प्रयत्न किया।

खण्ड ७ (ए) के स्पष्ट इरादे का उल्लंघन करने का एक मुख्य हथियार कम्पनी यूनियन था। कर्मचारियो के इस प्रकार के सगठनो में शामिल होने के लिए मजबूर तो नहीं किया जा सकता था किन्तु इसे वाछनीय बनाने के लिए मालिको को हर किस्म का दबाव उन पर डालने की छूट प्राप्त थी और यह काम इतने प्रभावशाली ढंग से किया गया कि कम्पनी यूनियनो में सदस्य सख्या शीघ्र १२,५०,००० से २५,००,००० हो गई। एन. आर. ए. ने यह कह कर कि सरकार ने "किसी विशेष प्रकार के सगठन का समर्थन नही किया है", न केवल इस प्रकार की यूनियनो पर अपनी प्रच्छन्न स्वीकृति प्रदान की बल्कि सामूहिक सौदेबाज़ी में उन्हें आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रदान कर उन्हे प्रोत्साहन भी प्रदान किया। जब किसी कारखाने में कोई राष्ट्रीय यूनियन अधिकाश मजदूरो को अपना सदस्य बना लेती थी, तब भी उसे समस्त मजदूरो का प्रवक्ता स्वीकार नही किया जाता था और प्रबन्धक मज़दूरो के अन्य किसी भी वर्ग मे व्यवहार कर सकते थे। कानून की इस व्याख्या की मजदूरो ने यह कह कर आलोचना की कि इससे सामूहिक सौदेबाजी का समस्त सिद्धान्त ही बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है। एन. आर. ए की बहुत भद्दे ढंग से मजाक उडाई गई और कहा गया कि नीली चील एक गिद्ध में परिवर्तित हो गई है।

जब औद्योगिक सघर्ष अपने पुराने ढर्रे पर फिर तेज हो चला तो एन आर. ए ने स्वय को दो अग्नियो के बीच पाया . एक तरफ बहुत से मालिकों का इन्कारी का रवैया था और दूसरी ओर मज़दूरों की उग्रतापूर्ण मांगें थी। बढते हुए औद्योगिक झगड़ो को निवटाने के लिए पहले एक राष्ट्रीय मजदूर बोर्ड, तब कुछ उद्योगों में विशेष बोर्ड और अन्त मे जुलाई, १९३४ मे एक राष्ट्रीय मज़दूर सम्बन्ध बोर्ड कायम किया गया। उन्हें न तो प्रबन्धकों का विश्वास प्राप्त हुआ और न मजदूरो का और ये प्राय. एन. आर. ए. के विरुद्ध काम करते प्रतीत हुए। राष्ट्रीय मज़दूर सम्बन्ध बोर्ड महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तो पर

जोर देता था। इसके द्वारा बहुमत-प्रतिनिधित्व, गुप्त चुनाव और वास्तविक सामूहिक सौदे-बाजी का समर्थन तथा इसके साथ ही कम्पनियो के प्रभुत्व में स्थापित यूनियनो को मान्यता देने से इन्कार ने इसी नाम से बाद में स्थापित किए गए बोर्ड की नीतियो के लिए आधार प्रदान किया। मूल एन. एल. आर. बी. (नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड) के कार्य मे एन. आर. ए. (नेशनल रिकवरी ऐडमिनिस्ट्रेशन) से रुकावट पडती थी और उसके पास अपने निर्णयो को कार्यान्वित करने के लिए कोई अधिकार नही था।

अपने अधिकारो की रक्षा के लिए मजदूरो को हडतालो का अधिकाधिक आश्रय लेना पडा। १९३३ के उत्तरार्द्ध में हडतालो की सख्या एकदम बढ गई। ६ महीने में ही इतनी हडताले हुई, जितनी १९३२ के सम्पूर्ण वर्ष मे; और अगले वर्ष उनकी सख्या १८५६ तक जा पहुँची। करीब १५ लाख मजदूरो ने—कुल मजदूरो के करीब ७ प्रतिशत ने इनमे भाग लिया। इस्पात, मोटर, कपडा उद्योगो, प्रशान्त सागर के तट के बन्दरगाहो के गोदी कर्मचारियो मे, उत्तर-पश्चिम के काष्ठ कर्मचारियो में और बीसियो अन्य उद्योगो मे हडतालो की या तो धमकी दी गई या वस्तुत १९२० के दशक के समान बडे पैमाने पर हडताले फूट पडी। इनमे से बहुत-सी हडताले वेतन-वृद्धि के लिए थी किन्तु ः से बहुत काफी कम से कम एक तिहाई यूनियन-मान्यता के लिए थी।

इस अशान्ति को दूर करने के लिए सरकार ने यथासभव सब कुछ किया। विशेष सलाहकार बोर्ड तथा मध्यस्थता कमीशन कायम किए जिन्होने हडतालियो को पुन काम पर लौटाने की कोशिश की और सम्बन्धित उद्योगो में हालतो की छानबीन की गई। इस्पात तथा मोटर कारखानो मे हडतालो को अतिम क्षण राष्ट्रीय पैमाने पर फैलने से रोका गया, सानफ्रासिस्को में सक्षिप्त आम हडताल के बाद मध्यस्थता के जरिये गोदी कर्मचारियो की हडताल का निबटारा किया गया। किन्तु मजदूर सरकार की नीति के बारे में असन्तुष्ट और शकालु होकर ही काम पर वापस गए।

सबसे गम्भीर और हिसात्मक हडताल कपडा कर्मचारियो की रही। मालिको ने व्यापक रूप से नियमो का उल्लघन किया और काटन कोड अथारिटी ने उन्हें लागू करने की कोई कोशिश नही की। १३ डालर की न्यूनतम वेतन दर में कमी किए बिना ३० घण्टे के सप्ताह की; मजदूरो को अतिरिक्त

वेतन दिए बिना उन पर काम का ज्यादा बोझ डालने की परम्परा की समाप्ति, तथा यूनाइटेड टैक्सटाइल वर्कर्स को मान्यता दिये जाने का योग करते हुए अगस्त, १९३४ में मिल कर्मचारी सामूहिक रूप से कारखानो से बाहर निकल आए। मैसाच्यूसेट्स में १,१०,००० ने, रहोड आइलैण्ड मे ५०,००० ने, जार्जिया में ६०,००० ने और अलाबामा में २८,००० ने काम बन्द कर दिया। महीने की समाप्ति तक २० राज्यो में कोई ४-५ लाख स्त्री-पुरुष मजदूरो ने हडताल कर दी। तब तक के मजदूर इतिहास में यह अकेली सबसे बड़ी हडताल थी। दक्षिण में जहाँ "उडन दस्ते" एक मिल से दूसरी मिल में जाकर मजदूरो को हडताल करने या धरना देने का आह्वान कर रहे थे, पुलिस तथा नगर अधिकारियो के साथ अनिवार्यतः भिडन्तें हुई। सघर्ष जब अपनी चरम सीमा पर था तो ८ राज्यो में कोई ११००० रक्षक दल के सैनिक व्यवस्था कायम रखने के लिए हथियार-बन्द होकर तैनात थे।

राष्ट्रपति रूजवेल्ट के हस्तक्षेप करने और उद्योग मे परिस्थितियो का अध्ययन करने के लिए एक नए कपड़ा मजदूर सम्बन्ध बोर्ड की नियुक्ति का वचन दिए जाने के बाद ७ सितम्बर को यूनियन नेताओ ने हडताल वापस ले ली। क्या यह नीतिमय प्रत्यावर्तन था या आत्म-समर्पण ? इस बारे मे राये भिन्न थी और कपड़ा कर्मचारियो को काम पर लौटने का आदेश देने के लिए श्रम-नीति के निर्माताओ की प्रशसा भी की गई और आलोचना भी की गई। किन्तु यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि उद्योग मे वास्तविक शाति स्थापित नही हुई। मालिक यूनियन सदस्यो के साथ भेद-भाव करते रहे, दक्षिण के नगरो मे लौटने वाले हडतालियो को मिलो मे घुसने से रोक दिया गया और मजदूरो मे और ज्यादा पस्त-हिम्मती फैली।

एन. आर. ए. के प्रारम्भिक दिनो मे मजदूरो ने जो लाभ प्राप्त किए थे व लुप्त होते प्रतीत हुए। कोड की व्यवस्थाओ को स्वीकार करने के लिए या सही सामूहिक सौदे-बाजी को कार्यान्वित करने के लिए अनिच्छुक मालिको की हठधर्मिता ने, हड़ताल के निवटारो मे मजदूरो के हितो की रक्षा करने मे सरकार की विफलता ने और बड़े पैमाने के उद्योगो मे कर्मचारियो के उनके प्रभावशाली संगठन के लायक समर्थन प्रदान करने मे ए. एफ. एल. की असमर्थता अथवा अनिच्छा ने मिलकर मजदूरो की बडी-बडी आशाओ पर तुषार-

खण्ड ७ (ए) में मजदूरो को जो संरक्षण प्रदान किए गए थे, इस फैसले से सब खत्म हो गए। किन्तु रेलवे लेबर ऐक्ट में एक संशोधन से वे रेल कर्मचारियो को निश्चित रूप से प्राप्त हुए और अन्य कर्मचारियो को भी उन्हें ज्यादा निश्चित रूप में प्राप्त कराने का आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था। बहुत शीघ्र ही, यहाँ तक कि मार्च १९३४ में उन त्रुटियो को दूर करने के लिए सेनेटर वागनर ने बिल पेश किया जिन के कारण उद्योग कम्पनी यूनियनों की स्थापना करके और अन्य किसी ग्रुप से सामूहिक सौदेबाजी से इन्कार करके उद्योग मजदूरो की ताकत को पंगु बनाए दे रहे थे। वर्तमान कानूनो की और परख करने की राष्ट्रपति की दलील पर उन्होने अस्थायी रूप से अपना यह बिल वापस ले लिया था किन्तु १९३५ के शुरू में इसे फिर पेश किया। एन. आर. ए. के असाविधानिक घोषित होने के ठीक ११ दिन पहले यह सेनेट में पास हो चुका था।

वागनर बिल का मजदूरो ने प्रबल समर्थन किया और एन. आर. ए. का खात्मा हो जाने से स्वभावत. ही प्रतिनिधि सभा द्वारा इसे शीघ्र स्वीकार कर लिए जाने की माँग तेज हो गई। ग्रीन ने असाधारण रूप से उग्र मुद्रा में कांग्रेस की एक समिति के समक्ष गवाही देते हुए कहा : "मुझे आप से यह कहने में कोई संकोच नही है कि अमरीकी मजदूरो की आत्मा जाग उठी है, वे सामूहिक रूप से सौदेबाजी करने का कोई न कोई तरीका निकालेंगे...मजदूरों का भी इस दुनिया में कोई स्थान होना ही चाहिए। जब तक वागनर बिल को कानून नही बनाया जाता और उस पर अमल नहीं किया जाता तब तक हम मजदूरों से निरन्तर धैर्य रखने के लिए न तो कह सकते है और न कहेंगे।"

इस बिल के निर्माण में रूजवेल्ट का कोई हाथ नही था और मंत्री पर्किन्स तथा रेमण्ड मोले दोनो की साक्षी के मुताबिक जब उनके सामने इसका खुलासा किया गया तो उन्होने इसे बहुत पसन्द नही किया। यह सेनेटर वागनर का ही काम था। किन्तु जैसा कि मोले ने बताया है एन. आर. ए. के खात्मे के बाद राष्ट्रपति ने "अपने हाथ फैला दिए" और यकायक इसका स्वागत किया। मजदूरो को बिल्कुल पिसने नही दिया जा सकता था और जहाँ तक सामूहिक सौदेबाजी का सम्बन्ध है, वागनर बिल खण्ड ७ (ए) की व्यवस्थाओ

को फिर अधिक शक्तिशाली रूप में कानूनी रूप देने के लिए एक अच्छा साधन था। सरकारी समर्थन के कारण बिल प्रतिनिधि सभा में शीघ्र पास हो गया और ५ जुलाई को रूज़वेल्ट ने इस पर हस्ताक्षर कर दिए।

यद्यपि वागनर ऐक्ट या जिसे सरकारी तौर पर नेशनल लेबर रिलेशन्स ऐक्ट (राष्ट्रीय मज़दूर सम्बन्ध अधिनियम) कहा जाता था, मे निहित सामान्य नीति एन. आर ए. खण्ड ७ (ए) मे मौजूद थी तो भी नए कानून में यह बहुत स्पष्ट था कि मजदूरो के प्रति सरकार की नीति में बुनियादी परिवर्तन हुआ है। न केवल औद्योगिक सम्बन्धो में उन्मुक्तता के पुराने विचारों की उपेक्षा की गई बल्कि रूज़वेल्ट सरकार ने सगठन बनाने का मजदूरों का अधिकार स्वीकार करते हुए यह ज़रूरी नही समझा कि एन. आर. ए. की तरह इसके बदले प्रबन्धको को भी रियायतें दी जाएँ। उद्योग चाहे कुछ भी दावे पेश करे, उनके मुकाबले मज़दूरो की सौदेबाज़ी की ताकत को मज़बूत करने और फलस्वरूप उन्हे राष्ट्रीय आय का अधिक हिस्सा प्राप्त कर सकने लायक बनाने की दृष्टि से यह तैयार किया गया था। इसके पीछे औचित्य यह था कि हमारे उद्योग-प्रधान समाज में सिर्फ सरकार के समर्थन से ही मज़दूर प्रबन्धको के साथ समान आधार पर खडे हो सकते थे और समय आ गया था जब पलड़े को, जो हमेशा उद्योग के पक्ष में बहुत झुका रहता था, मजदूरो के पक्ष मे झुकाया जाता। वागनर ऐक्ट में जिन अनुचित तौर-तरीको पर प्रतिबन्ध लगाया गया था, वे सब मालिको पर लागू होते थे और यूनियनों पर उसमें कोई प्रतिबन्ध नही लगाया गया था।

रूज़वेल्ट ने घोषणा की कि कानून का उद्देश्य मज़दूरो और प्रबन्धको के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना है, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने इसका एकपक्षीय होना स्वीकार किया। उन्होने कहा: "मज़दूर की आजादी को नष्ट कर सकने वाले तौर-तरीको की रोकथाम करके इस कानून के दायरे में आने वाले प्रत्येक मजदूर के लिए चुनाव और कार्य की वह स्वतंत्रता प्राप्त करने की कोशिश की गई है जो न्यायत: उसकी है।"

इस प्रकार की आजादी की गारण्टी करने के लिए न केवल मज़दूर के संगठन करने के अधिकार पर ही स्पष्ट जोर दिया गया बल्कि मालिको की तरफ से सब प्रकार के हस्तक्षेप की स्पष्ट मनाही कर दी गई। मज़दूर को

अपने अधिकार का प्रयोग करने से रोकना अथवा उसके साथ जोर-जबर्दस्ती करना, किसी मजदूर संगठन की सहायता के लिए उसे धन देना या किसी संगठन को अपने प्रभुत्व में लाने की कोशिश करना, काम पर रखने या काम से हटाने में भेदभाव करके यूनियन की सदस्यता को प्रोत्साहन देना या हतोत्साहित करना अथवा सामूहिक सौदेबाजी से इन्कार करना मालिको के लिए अनुचित तौर-तरीके घोषित कर दिये गए। इसके अतिरिक्त यह विधान कर दिया गया कि किसी निर्दिष्ट यूनिट मे चाहे वह मालिक, शिल्प या कारखाना यूनिट हो, सामूहिक सौदेबाजी के लिए अधिकांश कर्मचारियो द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों को ही समस्त कर्मचारियो के लिए सौदेबाजी का अधिकार होगा। अर्थात् नए कानून ने कम्पनियों द्वारा प्रभावित यूनियनो को, जो एन. आर ए के मातहत फल-फूल रही थी, गैर-कानूनी बना देने और सच्चे यूनियनवाद को प्रोत्साहन देने का पक्का निश्चय कर लिया।

वागनर ऐक्ट का प्रशासन तीन सदस्यो के एक नए नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड के हाथो मे सौप दिया गया और कौन सी यूनिट सौदेबाजी कर सकती है, इसका निश्चय करने का और उन चुनावो का निरीक्षण करने का, जिनमें कर्मचारी मालिको से व्यवहार के लिए अपने विशिष्ट प्रतिनिधि चुनते थे, उसे एकमात्र अधिकार प्रदान किया गया। बोर्ड श्रम सम्बन्धी अनुचित तौर-तरीको के खिलाफ शिकायते सुन सकता था और जहाँ उसे ये शिकायते वाजिब मालूम देती वहाँ "बन्द करो और बाज आओ" आदेश जारी कर सकता था और अपने आदेशो पर अमल कराने के लिए अदालतो से दरख्वास्त कर सकता था। एन. एल. आर. बी. को वेतन और काम के घण्टो के बारे में होने वाले विवाद के गुणावगुण से अथवा काम की हालतो पर असर डालने वाले अन्य किसी मामले से कोई सरोकार नही था। उसका काम तो सिर्फ सामूहिक सौदेबाजी को क्रियात्मक दृष्टि से प्रोत्साहन देना और उसे आसान बनाना था।

इस प्रशासनिक एजेन्सी के अर्ध-न्यायिक कार्यो का स्पष्टीकरण करते हुए राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कहा : "यह साफ-साफ समझ लिया जाना चाहि कि श्रम सम्बन्धी झगडो मे यह मध्यस्थ अथवा मेल कराने वाले का काम करेगा। इस अधिनियम के मातहत मध्यस्थता का काम श्रममत्री ।

श्रम-विभाग की मेल कराने वाली सर्विस का ही रहेगा......यह बहुत महत्त्व-पूर्ण है कि न्यायिक कार्य और मध्यस्थता के कार्य मे घुटाला न किया जाए। बीच के समझौते का, जो मध्यस्थता का सार है, कानून की व्याख्या अथवा परिपालन मे कोई स्थान नही है।"

वागनर ऐक्ट के पारित होते समय उसे व्यापक समर्थन मिला। व्यापारी वर्ग मे से पुराणपन्थी तत्त्व के कानून ने एकतरफा होने की आलोचना की, खुल्लमखुल्ला घोषणा की कि इसके अन्तर्गत यूनियनें गैर-जिम्मेदार हो जाएँगी और प्रबन्धको के नियंत्रण पर उसे खतरा जान वे उस पर बहुत भयभीत थे। किन्तु लोकमत ने उन दिनो मजदूरो की आकाक्षाओ के प्रति बार-बार सहानुभूति दिखाई। यह आम भावना और विश्वास था कि प्रबन्धको को हानि पहुँचने पर भी मजदूर सरकार का संरक्षण पाने के हकदार है और वे अपने नए अधिकारो का दुरुपयोग नही करेंगे।

नए कानून के अग-प्रत्यग कैसे भी हो इसके परिणाम बहुत दूरगामी थे। क्लेटन ऐक्ट, नोरिस-ला गार्दिया ऐक्ट और नेशनल इण्डस्ट्रियल रिकवरी ऐक्ट मे सगठन करने के मजदूरो के अधिकार को अक्षुण्ण रखने की भावना आखिरकार साकार हुई। मजदूर अपनी गतिविधियो मे रुकावट डालने वाले कानूनी बन्धनो से छुटकारा पाने के लिए एक सदी से अधिक समय तक लडे थे। इसने साजिश सम्बन्धी कानूनो व येलो-डॉग करारो पर अमल करने के खिलाफ, आजादी की उस अदालती व्याख्या के विरुद्ध, जो वस्तुत: व्यक्तिगत मजदूर की आजादी को कुण्ठित करती थी, और निरोधादेशो के मनमाने उप-योग के खिलाफ सघर्ष किया था। वागनर ऐक्ट ने यूनियन सम्बन्धी गति-विधियो पर न केवल पिछली सब रुकावटें हटा दी, बल्कि मजदूरो की आर्थिक शक्ति के पूर्ण सगठन के लिए मालिको द्वारा किसी प्रकार का हस्तक्षेप किए जाने के मार्ग मे काफी बाधाएँ खड़ी कर दी।

किन्तु नए कानून के पूरे लाभ उठाने के लिए संघर्ष करना अभी बाकी था। बहुत से मालिक जहाँ इस कानून की व्यवस्थाओ को स्वीकार करने और ईमानदारी से अपने कर्मचारियो के साथ सामूहिक सौदेबाजी करने के लिए तैयार थे, वहाँ कुछ मालिक यूनियनो के इतने सख्त

खिलाफ थे कि उन्होने किसी भी कीमत पर अपना प्रतिरोध जारी रखने का निश्चय कर रखा था। अनेक क्षेत्रो में मजदूरो को अपना सगठन बनाने के लिए उतने ही घोर विरोध का सामना करना पडा जितना पहले करना पड़ता था। सरकार की गारण्टियो के बावजूद जब बहुत-सी कम्पनियो ने यूनियनों को मान्यता प्रदान नही की तब उसे हासिल करने के लिए मजदूरों को पुन. हडताल का आश्रय लेना पडा।

सामूहिक सौदेबाजी के लिए नई कानूनी आवश्यकताओं की पूर्ति से इन्कार करने के लिए प्रायः यह बहाना किया जाता था कि वागनर ऐक्ट असाविधानिक है। अपने वकीलो से यह सलाह पाकर कि सुप्रीमकोर्ट इस कानून को अन्तर्राज्यीय व्यापार पर, जिस पर इस कानून की व्यवस्थाएँ आधारित है कांग्रेस के अधिकार से परे बता कर निश्चित रूप से असाविधानिक घोषित कर देगी, यूनियन-विरोधी मालिको ने कानून का उल्लघन करने में कोई सकोच नही किया और नेशनल लेबर रिलेशन्स ऐक्ट द्वारा इस कानून पर अमल को रोकने के लिये बीसियो निरोधादेश प्राप्त करने की अर्जियाँ दी। उन्होने मजदूरो के विरुद्ध एक अभियान शुरू किया, जिसका उद्देश्य इस्पात, मोटर, रबड तथा बडे पैमाने के अन्य उद्योगो में यूनियनो के निर्माण को रोकना था। कम्पनी यूनियनो पर अब भी उन्होने अपना नियन्त्रण कायम रखने की कोशिश की। यूनियन सम्बन्धी हरकतो का कोई भी प्रमाण हासिल करने के लिए, स्वय मजदूरो में परस्पर अविश्वास और सन्देह के बीज बोने के लिए और जिनको आन्दोलनकारी कहा जा सके उनसे छुटकारा पा सकने के लिये आवश्यक जानकारी प्रदान करने के लिए मजदूर जासूस और भडकाने वाले एजेण्ट रखे गए। कुछ मामलो में अधिक जोर-जबर्दस्ती के तरीको से यूनियन की सदस्यता को अनुत्साहित करने के लिए मारपीट करने वाले दल रखे गए, बाहर से आए सगठनकारियो को पीटा गया, शहर से भगा दिया गया और धमकी दी गई कि अगर वे फिर कभी लौटकर आए तो उनकी खैर नही है।

१९३३ और १९३७ के बीच औद्योगिक सम्बन्धो में कानूनी और साविधानिक अधिकारो की कितनी अवहेलना की गई यह ला फौलेट नागरिक स्वाधीनता समिति की रिपोर्ट मे बडे खौफनाक रूप मे प्रकट हुआ। इस

रिपोर्ट की पहली किश्त में जो दिसम्बर, १९३७ में प्रकट की गई, बताया गया कि कोई २,५०० कम्पनियाँ (सूची अमरीकी उद्योगों की नीली किताब-सी प्रतीत होती थी) औद्योगिक जासूसी में विदग्ध एजेंसियों से चिरकाल से मजदूर-जासूस किराये पर ले रही थी। पिंकर्टन ऐण्ड बर्न्स एजेंसीज़, रेलवे ऐण्ड आडिट इन्स्पैक्शन कम्पनी और कार्पोरेशन्स आग्ज़िलियरी कम्पनी जैसी फर्मों के रिकार्डों से पता चला कि उन्होने विचाराधीन तीन वर्ष की अवधि में यूनियन सम्बन्धी गतिविधियो के बारे में रिपोर्ट देने, कर्मचारियो में असन्तोष बढाने और मज़दूर संगठनो के काम में सामान्यत: बाधा डालने के लिए ३,८७१ एजेण्ट प्रदान किए। अपनी गुप्त हलचलो के लिये इन एजेण्टों ने व्यक्तिश: ९३ यूनियनो से सम्पर्क कायम किया और एक-तिहाई पिंकर्टन जासूस यूनियन के अधिकारी बनने मे सफल हो गए। यह भी बताया गया कि कुछ चुनीदा कम्पनियो ने १९३३ से १९३६ तक गुप्तचरो, हड़ताल-भजको और शस्त्रास्त्रो पर ९४,४०,००० डालर खर्च किए। अकेले जनरल मोटर्स कार्पोरेशन ने ही ८,३०,००० डालर का बिल चुकाया।

ला फौलेट कमेटी ने निष्कर्ष निकाला कि "जनता औद्योगिक जासूसी की इस चुनौती को दरगुज़र नही कर सकती। इसके ज़रिये प्राइवेट कम्पनियाँ अपने कर्मचारियो पर प्रभुत्व जमाए रहती है, उनको सावंधानिक अधिकारो से वचित रखती हैं, अव्यवस्था और फूट उत्पन्न करती है तथा सरकार की सत्ता तक को व्यर्थ कर देती है।"

इसी समिति ने जब १९३७ की लिटल स्टील स्ट्राइक की छानबीन की तो औद्योगिक संघर्ष के लिए एकत्र हथियारो का प्रकट हो जाना औद्योगिक जासूसी से भी ज्यादा स्तब्धकारी था। यंग्सटाऊन शीड ऐण्ड ट्यूब कम्पनी के पास ८ मशीनगनें, ३६९ रायफलें, १९० शाटगनें और ४५० रिवाल्वर, ६९५० कारतूस और ३००० गैस-कारतूसो समेत १०९ गैस-बन्दूकें थी। रिपब्लिक स्टील कार्पोरेशन के पास भी इतने ही शस्त्रास्त्र थे बल्कि इसके अलावा उसने ७९,००० डालर की आँसू और रोग गैस खरीद रखी थी और अमरीका मे उसे इस गैस का सबसे बड़ा खरीदार बताया गया था। कानून का पालन कराने वाली सरकारी एजेंसियों के पास भी इतनी गस नही थी। ला फौलेट ने कहा कि इन दो कम्पनियों के अस्त्र-शस्त्र "एक छोटे युद्ध के लिए

पर्याप्त होंगे।"

यूनियनवाद का विरोध करने के लिए औद्योगिक तौर-तरीको का एक और खास बदनाम उदाहरण प्रकट हुआ। पहले-पहल रेमिंगटन रैण्ड कम्पनी ने उसे ईजाद किया था और तब मोहाक वैली फार्मूला के नाम से नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स ने इसका व्यापक प्रचार किया। इस फार्मूले की रूपरेखा यह थी, कि इसमें यूनियन के सब सगठनकर्त्ताओ को खतरनाक आन्दोलनकारी बताकर उन्हें बदनाम करने का, कानून और व्यवस्था के नाम पर समाज को मालिको के पक्ष में करने का, सभाएँ भंग करने के लिए स्थानीय पुलिस की सेवाएँ लेकर हड़तालियो को आतकित करने का, गुप्त रूप से "वफादार कर्मचारियो" का संगठन कर "काम पर लौटने" के आन्दोलनों को प्रोत्साहित करने का और हडताल वाले कारखाने को फिर से चालू करते हुए रक्षा समितियो की स्थापना करने का बाकायदा एक अभियान शुरू किया गया। मोहाक वैली फार्मूले का अन्तर्हित उद्देश्य यूनियन नेताओ को विध्वंसक बताकर और यह धमकी देकर लोकमत का समर्थन प्राप्त करना था कि अगर स्थानीय व्यावसायिक हित खड़े-खडे देखते रहे और उन्होने क्रान्तिकारी आन्दोलनकारियों को, वैसे मालिको के साथ सहयोग के लिए उद्यत और उत्सुक कर्मचारियों पर हावी होने दिया तो वे सम्बद्ध उद्योग को उस इलाके से उठा ले जाएँगे।

ला फौलेट समिति द्वारा प्रकट की गई इस साक्षी मे औद्योगिक सघर्ष की अब तक छिपाकर रखी गई कुछ बातें सामने आ गई। अत्यधिक कंज़रवेटिव अखबारो ने भी, यह कहते हुए भी कि समिति की छानवीन एक-तरफा रही है और उसकी रिपोर्ट मे अतिशयोक्ति से काम लिया गया है, यह तसलीम किया कि इस स्थिति पर चुप नहीं रहा जा सकता और उन्होने मजदूरो की नागरिक स्वाधीनताओं की रक्षा की वकालत की। इस रहस्योद्घाटन ने अनेक कम्पनियों को यह विश्वास कराने में, कि जो तौर-तरीके अब जमाने के लायक नही रहे उन्हें छोड़ देने में ही अक्लमन्दी है, बहुत महत्त्वपूर्ण काम किया।

इस बीच मजदूर इस यूनियन विरोधी अभियान का अपने ही उग्र तौर-तरीकों से सामना कर रहे थे। जिस अवधि में वागनर ऐक्ट के मूल सिद्धान्त दांव

पर लगे रहे उस सबमे औद्योगिक अशाति व्यापक रूप से जारी रही। १९३७ में हडतालो की सख्या १९३४ से भी ज्यादा जा पहुँची। कुल ४७२० हडताले हुईं, जिनमे २० लाख श्रमिको ने भाग लिया।

अशान्ति की इस नई लहर की चरम परिणति जब जनरल मोटर्स के कारखाने मे "बैठे रहो" हडताल के रूप में हुई तब भी वागनर ऐक्ट की सांविधानिकता का निर्णय नही हुआ था, किन्तु सुप्रीम कोर्ट ने अन्ततः १२ अप्रैल, १९३७ को कार्रवाई की। अनेक निर्णयो में, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड बनाम जोन्स ऐण्ड लाफलिन स्टील कम्पनी के मामले मे दिया गया, इस कानून की पुष्टि की गई। न्यू डील और सगठित मज़दूरो के लिए यह एक चामत्कारिक विजय थी और अदालत के रवैये में परिवर्तन की परिचायक थी जिसने वर्ष के शुरू में राष्ट्रपति रूज़वेल्ट द्वारा मज़दूरो के पुनर्गठन के मामले पर शुरू किए गए सघर्ष को नाटकीय ढग से परिणति पर पहुँचा दिया। अन्तर्राज्यीय वाणिज्य पर प्रभाव डाल सकने वाले श्रम-सम्बन्धो के नियमन को वाणिज्य धारा के अन्तर्गत स्पष्टतः कांग्रेस के अधिकार क्षेत्र में घोषित किया गया और इस दलील को कि ऐक्ट की व्यवस्थाएँ मालिक या कर्मचारी के अधिकारो पर आघात करती है, एकदम ठुकरा दिया गया।

एन एल. आर बी बनाम जोन्स ऐण्ड लार्फलिन के केस में मुख्य न्यायाधीश हजेज़ ने ४ के विरुद्ध ५ न्यायाधीशो का निर्णय सुनाते हुये कहा कि "जिस प्रकार वादी को अपने व्यवसाय का संगठन करने और उसके लिए अपने अफसर और एजेण्ट चुनने का अधिकार है, उसी प्रकार कर्मचारियों को भी कानून-सम्मत उद्देश्य के लिए संगठित होने तथा अपने प्रतिनिधि चुनने का हक है। आत्म-सगठन और प्रतिनिधि-निर्धारण के अपने अधिकार को मज़दूरो द्वारा स्वतन्त्रता से उपयोग किए जाने से रोकने के लिए भेदभाव और जोर-जबर्दस्ती का व्यवहार योग्य विधायक प्राधिकार द्वारा निन्दनीय है। बहुत साल पहले हम मजदूर सगठनो का औचित्य जता चुके है। हमने कहा था कि वे समय की आवश्यकताओ के कारण सगठित है, अकेला कर्मचारी मालिक से व्यवहार करने मे असहाय है, साधारणत. वह अपने तथा अपने परिवार के जीवन-यापन के लिये दैनिक मजदूरी पर निर्भर करता है; यद्यपि

मालिक मजदूर को उसकी समझ के मुताबिक उचित वेतन देने से इन्कार करता है, तो भी मजदूर काम छोड़ने में असमर्थ है और मनमाने तथा अनुचित व्यवहार का प्रतिरोध करता है; और यूनियन मजदूरो को मालिक के साथ समानता के आधार पर व्यवहार करने का अवसर प्रदान करती है . .. ।" नेशनल रिलेशन्स लेबर बोर्ड का सिक्का बैठ जाने के बाद यह अन्त में उस हालत में आया जब कानून को प्रभावशाली ढग से अमल मे ला सकता था । इसने इस धारा,का व्यापक भाष्य किया कि मालिक द्वारा मजदूरो को अपने अधिकारो के प्रयोग मे बाधा डालना, रोकना या जोर-जबर्दस्ती करना श्रम सम्बन्धी अनुचित कार्य है । न केवल येलो डाग करार, काली सूची में नाम दर्ज करना और अन्य प्रकार के स्पष्ट भेद-भाव मूलक कार्यों को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया बल्कि मजदूर-गुप्तचरो के उपयोग और यूनियन विरोधी प्रचार की मनाही कर दी गई। कम्पनी-प्रभावित यूनियने भग कर दी गई, यूनियन शाप और बन्द-शाप दोनो को कायम रखा गया और शान्तिपूर्ण धरने मे हस्तक्षेप करना वर्जित कर दिया गया ।

श्रम सम्बन्धी अनुचित तौर-तरीको के जितने मामले बोर्ड के सामने आए उनमें से अधिकाश का निबटारा वस्तुत: यह ख्याल रखते हुए किया गया कि उद्योग के हितो को नुकसान न पहुँचे । यह निस्सन्देह सच था कि प्राय सर्वथा अनुचित आरोप लगाए जा सकते थे और प्रबन्धक मजदूरों द्वारा अनुचित तरीके अपनाए जाने की कोई शिकायत नही कर सकते थे किन्तु प्राय शत्रुतापूर्ण प्रेस ने जिसने मजदूरो के प्रति कल्पित पक्षपात के लिए बोर्ड पर आक्षेप करने का कोई मौका हाथ से नही जाने दिया जैसा चित्र खीचा, एन. एल. आर. बी का रिकार्ड उससे बिल्कुल भिन्न रहा ।

१९३५ से १९४५ तक ३६००० मामले जिनमे अनुचित तौर-तरीके बरतने के आरोप लगाए गए थे और कर्मचारियो के प्रतिनिधित्व से सम्बन्धित ३८,००० मामले हाथ में लिए गए । इनकी सम्मिलित सख्या मे से २९.५ प्रतिशत बिना कोई कार्रवाई किए वापस ले लिए गए, ११.९ प्रतिशत को प्रादेशिक डायरेक्टरो ने बर्खास्त कर दिया, ४६.३ प्रतिशत में अनौपचारिक प्रक्रियाओ मे आपस में समझौता करा दिया गया और सिर्फ १५.६ प्रतिशत मामलो में अधिकृत सुनवाई की आवश्यकता पडी । बाद के इन मामलों मे किए गए फैसलो के

फलस्वरूप कोई २००० कम्पनी यूनियनें भंग कर दी गई और जहाँ मालिक असली यूनियन सदस्यों के खिलाफ भेदभाव करने के दोषी पाए गए उनमें ६० लाख डालर के बकाया वेतन दिलाने के साथ ३ लाख कर्मचारी काम पर बहाल कराये गए।

अनुचित तौर-तरीको के इस्तेमाल की शिकायतो की सुनवाई करने और शिकायत ठीक पाई जाने पर "बन्द करो और बाज आओ" आदेश जारी करने के अलावा नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड ने १९३५ से १९४५ तक के अरसे मे सामूहिक सौदे-बाजी की अधिकारी यूनियन का निश्चय करने के लिये कोई २४००० चुनाव कराए जिनमें ६० लाख मज़दूरो ने भाग लिया। इन चुनावो में से सी. आइ. ओ. ने ४० प्रतिशत, ए. एफ. एल. ने ३३.४ प्रतिशत, स्वतन्त्र यूनियनो ने १०.५ प्रतिशय चुनाव जीते; १६.१ प्रतिशत चुनावो में सौदे-बाज़ी के लिए कोई भी यूनियन नही चुनी गई। यह ध्यान रहे कि बोर्ड को वेतन और काम के घण्टो से सम्बन्धित झगड़ो से कोई सरोकार नही था, किन्तु जिन मामलो को हाथ में लेने का उसे अधिकार था उनमे इसकी गतिविधियों ने औद्योगिक सम्बन्धो को स्थिरता प्रदान करने में बहुत सहायता दी।

संगठन करने और सामूहिक सौदेबाज़ी के लिए मज़दूरो के अधिकार को दिया गया सरक्षण न्यू डील के अन्तर्गत सामान्यत. अपनाई गई मजदूर पक्षपाती नीति का सबसे महत्त्वपूर्ण दौर था। एक बार अपने रास्ते पर चल पड़ने के बाद रूज़वेल्ट सरकार यूनियन के विकास को प्रोत्साहन देने तथा हमारे राष्ट्रीय अर्थतंत्र के विकास मे मज़दूरो का बुनियादी रोल स्वीकार करने में पिछली अन्य किसी भी सरकार से आगे निकल गई। परन्तु न्यू डील के अन्तर्गत वागनर ऐक्ट मज़दूरो की सहायता करने तथा औद्योगिक श्रमिको की सुधरी हालत में योग देने वाला अकेला कदम नही था।

राष्ट्रपति ने अपने पद पर आरूढ़ होने के बाद शुरू से ही जो इस बात पर बल दिया कि बेकारी और राहत की बुनियादी समस्याओं से सीधे निबटने का सरकार का उत्तरदायित्व है, उसने राष्ट्र के मज़दूरो की आवश्यकताओ के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैये को स्पष्ट जाहिर कर दिया जो अमरीकी लोकतन्त्र के अत्यन्त प्रगतिशील सिद्धान्तों के अनुरूप था। नेशनल इण्डस्ट्रियल रिकवरी ऐक्ट में शामिल सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम का उद्देश्य उद्योगो मे प्राण

फूँकना था किन्तु सिविलियन कंजरवेंशन कोर तथा फेडरेल एमर्जेंसी रिलीफ ऐडमिनिस्ट्रेशन दोनो का सीधा उद्देश्य बेकारो की विशाल सैन्य को राहत प्रदान करना था। ये मानवीय आवश्यकताओं की महत्त्वपूर्ण समस्या के प्रति एक नए दृष्टिकोण के प्रतीक थे जो राष्ट्रपति हूवर के दृष्टिकोण से बहुत भिन्न था। राष्ट्रपति हूवर प्रत्यक्ष राहत को व्यक्ति की पहल करने की क्षमता और आत्म-सम्मान को चोट पहुँचाने वाली समझ कर उसका चिरकाल तक विरोध करते रहे। रूजवेल्ट प्रशासन ने जब तक उद्योग पुनः समर्थ होकर रोजगार के लिए अधिक अवसर प्रदान न कर सके तब तक बेकारों की समस्या को और सरकारी सहायता की आवश्यकता को समझने में अधिक यथार्थवादिता से काम लिया।

यह बात एक और कार्यक्रम से भी प्रकट हुई जिसकी परिणति वर्क्स प्रोग्रेस ऐडमिनिस्ट्रेशन के रूप में हुई। इस एजेंसी की स्थापना न केवल बेकारो की सहायता करने के लिए, अपितु उन्हें काम देने के लिए भी हुई, जिससे वे अपने आत्म-सम्मान की रक्षा कर सकें। पुनरुत्थान की धीमी प्रगति और १९३७ मे आई मन्दी के कारण सरकार इस कार्यक्रम मे इतनी ज्यादा उलझ गई जितनी पहले कल्पना भी नही की गई थी। तो भी संभावित किफायत की अपेक्षा मजदूरो की खुशहाली को ज्यादा महत्त्वपूर्ण समझा गया और अत्यधिक खर्चा करने की समस्त आलोचनाओ के बावजूद प्रशासन अपने मार्ग पर दृढ़ रहा। एक और ज्यादा दूरगामी कदम जिसे रूजवेल्ट "अपने प्रशासन का आधार-स्तम्भ" मानते थे, सामाजिक सुरक्षा अधिनियम था, जिसमें बेकारी का बीमा, बुढापे का बीमा तथा जरूरतमन्दो के लिए अन्य प्रकार की सहायता की व्यापक व्यवस्था की गई थी। जैसा कि हमने देखा, इस कानून में निहित सिद्धान्त का ए. एफ. एल. ने तब तक विरोध किया जब तक १९३२ के सम्मेलन में बेकारी के बीमे पर अपनी परम्परागत नीति को उसने उलट नहीं दिया। तब इसने सरकारी कार्रवाई का समर्थन किया। लेकिन राष्ट्रपति के अपने हित ने सामाजिक सुरक्षा के अभियान को बहुत प्रभावशाली ढंग से पुष्ट किया। मन्त्री पर्किन्स ने लिखा: "उनकी अपनी समझ से यह उनका अपना कार्यक्रम था।"

सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के सर्वोत्तम उपायो का रूजवेल्ट ने १९३३ के प्रारम्भ मे अध्ययन करवाना शुरू किया; अपने कथन के अनुसार "पालने

से लेकर कब्र तक" के बीमे के बारे में उन्होने इस वाक्यांश के इग्लैण्ड में प्रचलित होने से बहुत पहले ही अपने सलाहकारो के साथ निरतर बातचीत की थी और समस्त कार्यक्रम को चलानें के ढग के बारे मे विभिन्न विचारो में सामंजस्य पैदा करने के लिये अपने मंत्रिमण्डल में एक आर्थिक सुरक्षा समिति नियुक्त की। १६३४ में एक प्रस्तावित बिल "अवश्य पारित किए जाने वाले" बिलो की सूची मे रखा गया और जब काग्रेस ने उस वर्ष उस पर कोई कार्रवाई नही की तो राष्ट्रपति ने अगले अधिवेशन मे इसको स्वीकार किए जाने का फिर आग्रह किया। तब अगस्त, १६३५ में अतिम कार्रवाई की गई और सामाजिक सुरक्षा अधिनियम भारी बहुमत से स्वीकार कर लिया गया।

नए कानून के तीन मुख्य अग थे : पहले मे बेकारी का मुआवजा राज्यो के जरिये देनें की व्यवस्था की गई। इसके लिए सघीय स्तरो के मुताबिक बीमा कार्यक्रम को अपनाने वाले हर राज्य को राष्ट्रीय वेतन-मात्रा कर मे ६० प्रतिशत छूट दी गई। दूसरे भाग मे सीधे सघ सरकार द्वारा प्रशाशित बुढ़ापे की बीमा-योजना की व्यवस्था की गई जिसके लिए सरकार ने मालिको और कर्मचारियो दोनो पर समान टैक्स लगाकर एक कोष स्थापित करने का निर्णय किया। इस कोष का प्रारम्भ मज़दूरो के एक प्रतिशत वेतन से धीरे-धीरे तीन प्रतिशत तक पहुँचाने का उद्देश्य रखा गया, तीसरे भाग में जरूरतमन्दों के लिए अन्य सहायता का प्रबन्ध वृद्धो और अन्धो के लिए, पराश्रित बच्चो तथा अपंगु व असमर्थ लोगों के लिए राज्यो को अनुदान देकर करने का निश्चय किया गया और माताओ और बच्चो की स्वास्थ्य सेवाओ, शिशु-कल्याण कार्य, अक्षमो के पुनर्वास तथा सामान्य सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सघीय कोष से अनुदानो की व्यवस्था की गई।

कई वर्गों के कर्मचारियो को शामिल न करने के कारण सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम का क्षेत्र सीमित रहा, कल्याण के मद मे इसकी अदायगियाँ किसी भी स्तर से बहुत उदार नही थी और "पालने से कब्र तक" के बीमे के, जिसकी चर्चा करना रूजवेल्ट को बहुत पसन्द था; लक्ष्य से अभी यह बहुत कम था। जिन देशो ने चिरकाल से ज्यादा व्यापक योजनाएँ बना ली थी, उनसे अमरीका अभी बहुत पीछे था किन्तु जिस राष्ट्र में आर्थिक व सामाजिक मामलो में सरकार के हस्तक्षेप न करने का विचार इतने अरसे तक बहुमूल्य रहा, उसके लिए

यह नया कानून एक युग-प्रवंतक घटना थी। सामाजिक सुरक्षा को उद्योग, श्रम और जनता का सहयोग मिलना इस बात का महत्त्वपूर्ण संकेत था कि आर्थिक परिस्थितियो के दवाव ने मंदी के बाद से लोगो के रवैये में किस प्रकार परिवर्तन कर दिया है।

ग्रीन ने लिखा : "इन वर्षों के अनुभव ने दिखा दिया कि सकट की विपज्जनक हालत ने सरकार को वह जिम्मेदारी और कार्य संभालने को मजबूर कर दिया जिन्हे निजी प्रयत्न की चीज और सरकारी दायरे के बाहर समझा जाता था। लोगो की ओर से कार्य करने वाली राष्ट्रीय सरकार जरूरतमन्दो और बेकारो की देख-भाल करने को मजबूर हो गई।"

बेकारी और सामाजिक सुरक्षा के लिए सीधी राहत प्रदान करने के अलावा न्यू डील मे मजदूरो की काम की हालतों मे भी सुधार करने का यत्न किया गया जिसका पहले-पहल प्रयत्न एन. आर. ए. के नियमो की वेतन तथा काम के घण्टो सम्बन्धी व्यवस्थाओ मे किया गया था। जब राष्ट्रीय औद्योगिक पुनरुत्थान अधिनियम (एन आर. ए.) को असांविधानिक घोषित कर दिया गया तब इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए तुरन्त अन्य उपाय अपनाने की कोशिश की गई। इस दिशा मे पहला कदम 'वाल्श-हीले पब्लिक कण्ट्रैक्ट्स ऐक्ट' पास करना था जिसके द्वारा सरकार ने माल की सप्लाई करने वाले सब ठेकेदारो के कर्मचारियो के लिए ४० घण्टे का सप्ताह और न्यूनतम वेतन निश्चित कर दिए किन्तु इस कदम का क्षेत्र स्पष्ट ही सीमित था और वास्तविक प्रश्न यह था कि न केवल एन. आर. ए. के खिलाफ, बल्कि राज्यों द्वारा न्यूनतम वेतनो के लिए बनाए गए कानूनो के खिलाफ भी जो वैधानिक आपत्तियाँ उठाई गई है उन्हे दूर करने के लिए कौनसा अधिक व्यापक कदम उठाया जाए। मत्री पर्किन्स ने समस्या को नए ढग से हल करने की कोशिश की किन्तु सुप्रीम कोर्ट का रवैया एक अलघ्य बाधा प्रतीत हुआ।

१९३६ के अभियान में यह भी मामला रखा गया। रिपब्लिकनों ने राज्यो के कानूनो द्वारा अथवा अन्तर्राज्यीय समझौतो के जरिये न्यूनतम वेतन निश्चित करने का समर्थन किया किन्तु डैमोक्रैटो ने घोषणा की कि वे "संविधान के अन्तर्गत ही" राष्ट्रीय कानून बनाने की कोशिश करते रहेंगे। किन्तु १९३७ के प्रारम्भ में जब सुप्रीम कोर्ट में लडाई जीत ली गई तभी रूजवेल्ट ने अधिकतम

घण्टों, न्यूनतम वेतन और करीब-करीब आखिरी मिनट में जोड़े गए बाल श्रम की समाप्ति की, जिसका विधान पहले एन. आर. ए. के नियमो में करने की कोशिश की गई थी, व्यवस्था करने का बिल पेश करने के लिए हरी झण्डी दे सके।

'फेयर लेबर स्टैण्डर्ड्स बिल' का (जिस नाम से यह मशहूर हुआ) जोरदार विरोध किया गया जो अंशत. अदालती संघर्ष से उत्पन्न मनमुटाव का प्रतीक था और पहले मजदूरो ने भी इसका एक स्वर से समर्थन नही किया। ए. एफ. एल. के बहुत से रूढ़िवादी नेता वेतनो के बारे में कानून बनाने के अब भी विरुद्ध थे। उन्हें डर था कि न्यूनतम वेतन अधिकतम वेतन बन कर न रह जाएँ और ग्रीन ने अपने ख्याल से सरकार के प्रस्तावो में महत्त्वपूर्ण कमियों के खिलाफ मजबूती से मोर्चा लिया। जब ए. एफ. एल. और एन. ए. एम. के प्रवक्ताओ का संदिग्ध गठबन्धन हो गया तो न्यूडील के कानूनो पर अमल ज्यादा कठिन हो गया।

रूजवेल्ट ने कांग्रेस को दिए गए अपने भाषणो तथा देश के साथ सलापो, दोनो मे बिल के महत्त्व पर बार-बार बहुत जोर दिया। मई, १९३७ मे उन्होने कहा कि "एक आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी लोकतन्त्र बाल-श्रम के औचित्य को सिद्ध नही कर सकता, मज़दूरो के वेतनो मे कटौती करने या काम के घण्टे बढाने का कोई उपयुक्त आर्थिक कारण नही बता सकता।" किन्तु मजदूरो के साथ न्याय करने के अलावा प्रस्तावित बिल की व्यवस्थाओ का इसलिए भी समर्थन किया गया कि उसे राष्ट्र की क्रयशक्ति को बनाए रखने तथा उसे मजबूत करने का एक आवश्यक साधन समझा गया।

इस दृष्टि से ऊँचे वेतनो का महत्त्व कोई नया विचार नही था। मज़दूर सदा से यह कहते आए थे कि जब मज़दूरो को इतना पर्याप्त वेतन मिलेगा कि वे अपने उद्योगो का तैयार माल खरीद सकें तभी हमारी आर्थिक प्रणाली सफलतापूर्वक कार्य कर सकती है। इस सिद्धान्त का निदर्शन १८२७ में ही मैकेनिक्स यूनियन आव ट्रेड ऐसोसियेशन ने, वेतन, खपत और उत्पादन पर दिए गए एक वक्तव्य में कर दिया था। किन्तु इस युक्ति ने बहुत ही धीमे प्रगति की और १९३० के दशक के प्रारम्भ मे इसे आहिस्ता-आहिस्ता ही स्वीकार किया जा रहा था जब कि अब यह सामान्य-सी बात समझी जाती है। ऊँचे

वेतनों के पक्ष में क्रयशक्ति के सिद्धान्त का सदा इस प्रत्युक्ति से विरोध किया जाता रहा कि ऊँचे वेतन उत्पादन की लागत को बढाकर तैयार माल के लिये बाज़ार को सीमित कर देते है और फलस्वरूप उत्पादन की गति को मन्द कर देते हैं।

१९३७ की ग्रीष्म ऋतु मे जब कांग्रेस ने फेयर लेबर स्टैण्डर्ड्स बिल पर कार्रवाई नही की तो रूज़वेल्ट ने पुनः एक व्यापक मोर्चे पर अभियान शुरू कर दिया और नवम्बर में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाकर उन्होने इसे शीघ्र स्वीकार किए जाने की माँग की।

उन्होंने कहा : "सामान्य औद्योगिक परिस्थिति में मन्दी लाने वाले तत्त्वो के खिलाफ अगर हमें वेतनों में वृद्धि और राष्ट्र की क्रयशक्ति को कायम रखना है तो मैं समझता हूँ कि समग्र देश कांग्रेस द्वारा कार्रवाई की आवश्यकता को महसूस करता है। मन्दी के समय में बाल-श्रम का शोषण और गरीब-से-गरीब मजदूरो के वेतनो मे कटौती तथा काम के घण्टो में वृद्धि का क्रयशक्ति पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है। यदि हम अमरीकी उद्योगो की उत्पादन-क्षमता को बढ़ाने के लिए उद्योगपतियो को प्रोत्साहन देते है तो देश को अन्ततोगत्वा क्या मिलेगा जब तक कि हम इस बात की व्यवस्था न करें कि हमारे मजदूरो की आमदनी भी इतनी बढ जाए कि तैयार माल का अधिक उत्पादन भी बाजारो में खप सके।"

लगातार विलम्ब, मजदूरो की आपत्तियाँ दूर करने के लिए बिल के मसविदे मे हेरफेर किए जाने तथा अत्यधिक सरकारी विलम्ब के सामने आखिर विरोध ने घुटने टेक दिए। जून, १९३८ में फेयर लेबर स्टैण्डर्ड्स बिल पास हो गया। इसने २५ सेण्ट प्रति घण्टे की न्यूनतम मजदूरी निश्चित की जिसे सात वर्ष में ४० सेण्ट कर देने का निर्देश किया, ४४ घण्टे का सप्ताह नियत किया गया जिसे तीन वर्ष में ४० घण्टे का कर देने को कहा गया और अन्तर्राज्यीय वाणिज्य में बिकने वाला माल तैयार करने वाले उद्योगो मे १६ वर्ष से कम आयु के बच्चो को काम पर रखने की मुमानियत कर दी। वह आन्दोलन, जिसका बीज एक सदी पूर्व मजदूरो की १० घण्टे के दिन की माँग के साथ पड़ा था, अब फल ले आया था। वेतन तथा काम के घण्टों पर राज्य ने सीधा इतना व्यापक नियंत्रण स्थापित कर लिया, जिसे मन्दी से पहले सभव भी नही

माना जा सकता था। यह उतनी ही महत्त्वपूर्ण घटना थी जितनी सामूहिक सौदेबाजी को सरकार का समर्थन। स्वच्छन्द अर्थ तंत्र के सिद्धान्तों का, जिनका सेम्युअल गोम्पर्स और विलियम ग्रीन जैसे मजदूर नेताओं ने भी अत्यधिक रूढ़िवादी पूँजीपतियों की अपेक्षा कम दृढ़ता से समर्थन नहीं किया, कोई और इतना प्रत्यक्ष उल्लंघन नहीं कर सकता था। किन्तु अब अधिकतम घण्टे और न्यूनतम वेतन के कानून को अधिकांश लोगों ने आवश्यक समझ कर सामान्यतः स्वीकार कर लिया था।

सरकार ने मजदूरों के हितों का समर्थन करना शुरु कर दिया था और ऐसे ही अदालतों ने भी। जिन मामलों में वागनर ऐक्ट, सामाजिक सुरक्षा और फेयर लेबर स्टैण्डर्ड्स ऐक्ट को वैध करार दिया गया, उनमें अदालतों के पहले के निर्णयों को उलट दिया गया था और इसने न्यू डील की नीतियों पर स्वीकृति की अंतिम मुहर लगा दी। जब सुप्रीमकोर्ट ने यह कहा कि "जब कोई नियमन अपने विषय की दृष्टि से युक्तियुक्त हो और समाज के हित में अपनाया गया हो" तब उसे ५वें या १४वें संशोधन की उचित कानूनी प्रक्रिया वाली धारा का उल्लंघन करने वाला नहीं माना जा सकता, तब यह विचार छोड़ दिया गया कि यूनियन-सदस्यता को प्रभावित करने वाले अथवा न्यूनतम वेतन निर्धारित करने वाले कानून करार की स्वाधीनता की सांविधानिक गारण्टी का हनन करते हैं।

इसके अतिरिक्त अदालतों ने अब यूनियनों को ट्रस्ट-विरोधी कानूनों के अन्तर्गत मुकद्दमा चलाए जाने से मुक्त कर दिया और शनैः-शनैः हड़ताल, बहिष्कार तथा धरना देने के अधिकार को स्वीकार करके अन्य प्रतिबन्धात्मक नीतियों को उलट दिया। प्रगतिशील युग में भी जहाँ मजदूरों ने यह देखा कि उनके कथित गारण्टी प्राप्त अधिकारों को भी सुप्रीमकोर्ट बार-बार काट रही है वहाँ अब उनकी स्थिति अनुकूल निर्णयों से निरन्तर पुष्ट की जा रही थी। उदाहरणार्थ थौर्न हिल बनाम अलाबामा के एक मशहूर केस में शांतिपूर्ण धरना देने को संविधान के अन्दर गारण्टी प्राप्त भाषण-स्वातन्त्र्य का उचित प्रयोग घोषित कर दिया गया।

वस्तुतः सुप्रीम कोर्ट यहाँ तक चली गई कि १९४५ में 'हण्ट बनाम क्रम्बोच' के मामले में उसने बहुमत से यूनियन को अत्यन्त जटिल परिस्थितियों

में उस फर्म के खिलाफ बहिष्कार के अधिकार को उचित ठहराया जो इस निर्णय के फलस्वरूप खत्म ही हो गई। न्यायाधीश जैक्सन को इस केस ने मजदूरों के प्रति अदालतों की नीति की महत्त्वपूर्ण समीक्षा करने का अवसर प्रदान किया।

अपनी जोरदार विमतसूचक टिप्पणी में उन्होंने कहा : "इस निर्णय के साथ मजदूर आन्दोलन एक पूरा चक्कर घूम गया है। मज़दूरों ने चिरकाल तक संघर्ष किया है, सघर्ष खतरनाक और घृणापूर्ण रहा है किन्तु अब मज़दूरो को सिर्फ इसलिए अपनी आजीविका से वंचित नही किया जा सकेगा कि उनके मालिक यूनियनो का विरोध करते है और वे समर्थन करते हैं। मज़दूरों ने अन्य अधिकार भी प्राप्त किए हैं, जैसे-बेकारी का मुआवजा और बुढ़ापे की पेंशन और सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण और अन्य सब लाभों का आधार यह मान्यता प्राप्त कर ली है कि उनका समर्थन प्राप्त करने का अवसर सिर्फ व्यक्ति के लिए ही चिन्ता का विषय नही है, बल्कि एक ऐसी समस्या है जिसका जीवित रहने के इच्छुक सब सगठित समाजो को सामना करना है और उस पर विजय प्राप्त करनी है। यह अदालत अब एक यूनियन के इस दावे को पुष्ट कर रही है कि सिर्फ इसलिए कि यूनियन अपने मालिक से घृणा करती है, उसे अपने मालिक को आर्थिक जगत मे भाग न लेने देने का अधिकार है। यह अदालत कर्मचारियो को उनके नियत्रण के आर्थिक क्षेत्र मे वही मनमाना प्रभुत्व प्रदान कर रही है जिसके बारे में मज़दूर चिरकाल से दृढतापूर्वक और उचित ही यह कहते आ रहे है कि वह किसी आदमी को नहीं मिलना चाहिए।"

न्यायाधीश जैक्सन के विचारों में कुछ भी सार्थकता हो और कभी कभी मजदूरों द्वारा अपने अधिकारो के स्वेच्छाचारी प्रयोग के कारण बाद में कुछ भी समस्याएं खडी हुई हो, मजबूत यूनियनों के विकास को प्रोत्साहन देने, और वैसे भी संगठित मज़दूरो की स्थिति को मजबूत करने के न्यू डील के सामान्य कार्यक्रम की १९३० की दशाब्दी के मध्य में राष्ट्र ने आमतौर से सराहना ही की। जनता की राय जानने के लिए बार-बार जो सर्वे किया गया उसमें १९३३ और १९३८ के बीच कांग्रेस द्वारा उत्तरोत्तर पास किए गए

मज़दूर सम्बन्धी कानूनो के प्रति लोगो का दृढ समर्थन ही प्रकट हुआ।
राष्ट्रपति रूज़वेल्ट का इस समय यह विश्वास प्रकट करना निस्सन्देह उचित ही था कि अधिकाश लोग इस बात पर प्रसन्न ही है कि "हम धीरे-धीरे मजदूरो को अधिक अधिकार दिला-रहे है और साथ ही उनपर ज्यादा जिम्मेदारियाँ भी डाल रहे है।"

इन वर्षो मे निरन्तर जारी रहने वाली और विशेषकर १९३७ की हड़तालो ने यह स्पष्ट ज़ाहिर कर दिया कि औद्योगिक सम्बन्धो के बारे मे कोई अन्तिम समाधान प्राप्त नही हुआ है और न्यू डील की मजदूर-पक्षपाती नीतियों की शीघ्र ही ज़ोरदार प्रतिक्रिया होने वाली है। किन्तु मज़दूरो के उपद्रवो तथा वागनर ऐक्ट में सशोधन की अधिकाधिक माँग किये जाने पर भी रूज़वेल्ट का यह विश्वास दृढ बना रहा कि यूनियनो की बढ़ी हुई ताकत से कुछ समय बाद अधिक औद्योगिक स्थिरता आ जाएगी। सामूहिक सौदेबाज़ी के सिद्धान्त में उनका पूर्ण विश्वास था। उन्होने कहा कि "इसे हमेशा के लिए औद्योगिक सम्बन्धो की नीव बने रहना है।" वह मजदूरो को न केवल उनके लाभ कायम करने मे बल्कि उनमे और वृद्धि करने के लिए भी सहयोग देने के लिये तत्पर थे।

१९४० में इण्टरनेशनल ब्रदरहुड आव टीम्स्टर्स के सम्मेलन में एक महत्त्वपूर्ण भाषण देते हुए उन्होने कहा : "सिर्फ आजाद प्रदेश पर आज़ाद यूनियनें पनप सकी है। जब इस प्रकार के सम्मेलन मे मज़दूर आजादी के साथ सम्मिलित होते है तो यह इस बात का प्रमाण है कि अमरीकी लोकतन्त्र में कोई बिगाड नही आया है, इसे आजाद बनाए रखने के हमारे दृढ संकल्प का यह एक प्रतीक है।"

उनकी राय में मजदूरो को अब भी बहुत-सी तकलीफे थी और वे समझते थे कि अधिक जिम्मेदार नेताओ का उभरना लाज़िमी है जिससे उतने ही जिम्मेदार प्रबन्धको के साथ अधिक सहयोग सम्भव हो सकेगा। जब एक बार उन्हे यह चेतावनी दी गई कि होश्यार ! यूनियनें बहुत ताकतवर हो सकती है तो उन्होने जवाब दिया बताते है, "बहुत ताकतवर, किस चीज़ के लिए ?" उनका मत था कि उनकी शक्ति बड़े व्यवसाय की शक्ति से सन्तुलन स्थापित करने वाली सिद्ध होगी। मजदूरो और स्वतन्त्र मज़दूर यूनियनो के

अत्यधिक महत्त्व में उनका विश्वास डिगने वाला नही था।

न्यू डील कार्यक्रम का बुनियादी महत्त्व इस बात में नही था कि मज़दूरो ने तात्कालिक लाभ प्राप्त किए या क्या हानियाँ उठाईं, बल्कि इस मान्यता में था कि मज़दूरों की काम की हालतों का सारा प्रश्न अब मालिकों व कर्मचारियों का ही मामला नही है अपितु सारे समाज का है। लोकतन्त्रीय पूँजीवाद जीवित रहने की आशा मुश्किल से ही कर सकता था, जब तक कि मज़दूरों की विशाल सेना को सम्मिलित प्रयत्नो के ज़रिये वह आजादी और सुरक्षा न मिल जाती जिस की वे एक औद्योगिक समाज में व्यक्तिगत रूप से रक्षा करने में असमर्थ थे। न्यू डील की नीति मजदूर-पक्षपाती ज़रूर थी किन्तु यह चिरकाल से मालिको के पक्ष में झुके चले आ रहे पलडे को बराबर करने के लिए मजदूर-पक्षपाती बनाई गई थी। इसका उद्देश्य मुख्यत. मजदूरों की भलाई करना था किन्तु साथ ही इसका यह विश्वास भी था कि इनकी भलाई मे ही सारे देश की भलाई निहित है।

—.o.—

१६ : सी. आई. ओ. का अभ्युदय

सगठित मज़दूर न्यू डील के जमाने में जहां इतने निश्चित लाभ प्राप्त कर रहे थे, वहाँ इसमें आपस की फूट ने इसकी पहले की सापेक्षिक एकता को ध्वस्त कर दिया। ए. एफ. एल. में औद्योगिक बनाम शिल्प यूनियन पर विवाद से जब विद्रोही उठ खड़े हुए और उन्होने औद्योगिक संगठन समिति (सी. आई. ओ) कायम कर ली तो निरन्तर प्रतिद्वन्द्विता के लिए आधार तैयार हो गया जिसने कुछ हद तक तो यूनियनो के विकास को प्रोत्साहन दिया किन्तु आन्तरिक झगड़ो के कारण मज़दूरो की शक्ति को छितरा भी दिया।

इन विवादग्रस्त मामलो की तुलना उन मामलो से की जा सकती है जब आधी सदी पूर्व ए. एफ. एल. ने नाइट्स आव लेबर को चुनौती दी थी। क्या यूनियन संगठन मुख्यत: दक्ष कर्मचारियो के हित में चलाया जाए या उसका उद्देश्य अदक्ष कर्मचारियो के विशाल समुदाय को भी प्रभावशाली ढंग से शामिल करना भी होना चाहिए? नाइट्स ने इस समस्या को सर्व-निवेशी यूनियन बनाकर हल करने की कोशिश की किन्तु आर्थिक परिस्थितियो ने ए एफ. एल. के नये यूनियनवाद का पक्ष लिया। जिसमे ज्यादा अनुशासित शिल्पो पर ज़ोर दिया गया था। १८८० की दशाब्दि में औद्योगिक यूनियन-वाद का किसी भी रूप मे सफलता पूर्वक विकास नही किया जा सका क्योकि अदक्ष कर्मचारियो की जिनकी सख्या आव्रजन के कारण फिर-फिर बढ़ती रहती थी, सौदे-बाजी की क्षमता बहुत तुच्छ थी। किन्तु १९३० की दशाब्दि की परिवर्तित आर्थिक परिस्थितियो ने सर्वथा औद्योगिक यूनियनो के निर्माण को महत्त्व तथा व्यावहारिकता दोनो पर बल दिया। बड़े पैमाने के उद्योगो में असगठित कर्मचारियो की आवश्यकताओ की पूर्ति में विफलता ने मज़दूर आन्दोलन को बहुत कमज़ोर कर दिया था और अब सरकारी समर्थन के कारण तथा आव्रजन कम हो जाने से सौदे-बाजी की सम्भावित क्षमता काफी बढ जाने के कारण उन्हें सगठित करने का पहले किसी भी समय की अपेक्षा

अधिक अच्छा अवसर उपलब्ध था।

किन्तु ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. के आपसी झगडे में जिसमें दोनों वर्ग सत्ता-प्राप्ति के लिए जद्दो-जहद कर रहे थे और उनके नेताओ में प्रतिद्विन्द्विता बढ रही थी शिल्प यूनियनवाद अथवा औद्योगिक यूनियनवाद का विवाद अधिकाधिक गौण हो गया। इन विवाद ग्रस्त मामलो का स्थान राजनीति की भीषण पैंतरे-बाजियो तथा महत्वाकाङ्क्षी व्यक्तियो की भिड़न्त ने ले लिया।

ग्रीन ने लिखा: "सब मजदूरो की हालत को बेहतर बनाने के हमारे सामान्य प्रयत्नों के बीच एक आदमी आगे आया जिसके कुछ और ही उद्देश्य थे। व्यक्तिगत महत्वाकाङ्क्षा से भरपूर इस व्यक्ति ने अपना नेतृत्व ठुकरा दिए जाने के बाद लोकतंत्रीय प्रक्रिया को धत्ता बता दिया। उसने द्वित्व और फूट की आवाज़ उठाई, ऐसी आवाज़ जो एकता का बहाना करती हुई भी विध्वंस के लिए प्रयत्नशील थी, लोकतंत्रीय आदर्शों की घोषणा करते हुए भी तानाशाही स्थापित करना चाहती थी।"

बदले में लेविस ने ए. एफ. एल. के 'अड़चनकारी' रवैये और इसके नेताओ की अन्ध रूढ़िवादिता पर तीव्र प्रहार किए। फेडरेशन के संगठन सम्बन्धी प्रयत्नो को उसने "अनवच्छिन्न विफलता के २५ वर्षो" का प्रतीक बताया और इसके अध्यक्ष पर आरोप लगाया कि या तो वह राष्ट्रीय अर्थतंत्र की वर्तमान परिस्थितियों को समझने मे अथवा समय की मांग के अनुसार कार्य करने में असमर्थ है। १९३६ में जब ये शाब्दिक कंकड, एक दूसरे पर फैंके जा रहे थे तो लेविस ने रिपोर्टरो से कहा: "बेचारे ग्रीन पर मुझे अफसोस है। मैं उसे अच्छी तरह जानता था। वह चाहता है कि "ओ टैम्पोरा ओ मोरेस" के मन्द-मन्द गान में उसका साथ दू।"

औद्योगिक यूनियनवाद के अभियान को अपने हाथ मे लेकर और ए. एफ. एल. के शासकवर्ग को सीधी चुनौती देकर लेविस ने स्वयं को अमरीका में अब तक का सबसे आक्रामक और आकर्षक मजदूर नेता ज़ाहिर किया। न्यू डील के प्रारम्भिक दिनो मे युनाइटेडमाइन वर्कर्स की सदस्य संख्या को १॥ लाख से बढ़ा कर ४ लाख तक पहुँचा देने में उसने जो

चामत्कारिक सफलता प्राप्त की उस पर सारे राष्ट्र का ध्यान गया। "फौर्चून" पत्रिका ने चिढ़ कर टिप्पणी की "वह सारे मज़दूर आन्दोलन जितना शोर करता है।" और कुछ समय बाद यह शोर कान के पर्दे फाडने लगा। इस समय मे लेविस के प्रति आम लोगो के रवैये की यह विशेषता थी, कि दुश्मन हो या दोस्त, हर कोई उसे सदा अत्यधिक बढ़े-चढे रूप में प्रस्तुत करता था। या तो उसे बे-मिसाल नायक बताया जाता या घृणित शैतान।

फिलिप मर्रे ने जो उनके बाद सी. आई. ओ. का अध्यक्ष बना, कहा कि कम्यूनिज्म के साथ सयुक्त मोर्चे के दिनो में वह "समस्त अमरीका में अपना सानी नही रखता था" अर्ल ब्रोडर ने उसे न केवल महानतम अमरीकी मज़दूर नेता ही बल्कि "विश्व लोकतत्र का एक नेता" बताया और ह्यू लोग उसकी इससे ज्यादा बडी प्रशंसा नही कर सका कि उसे "मज़दूरो का लोह्यू ग" बताया। दूसरी ओर निन्दा का स्वर युद्ध के दिनो में अपने उच्चतम शिखर पर पहुँचा। १९४३ में जब "फौर्चून" ने इस विषय में लोकमत का सर्वे किया कि अमरीका में सबसे हानिकारक व्यक्ति कौन है तो ७० प्रतिशत लोगो ने अपनी पर्चियो पर जॉन एल. लेविस का नाम लिखा।

लेविस की पारिवारिक पृष्ठभूमि और प्रारम्भिक जीवन दोनों का ही मज़दूर आन्दोलन से निकट सम्बन्ध रहा। विलियम ग्रीन के समान उसके माता-पिता भी वेल्स की खानो मे काम करने वाले लोगो में से थे और जब १८७५ में उसके पिता अमरीका चले आए तो उनका परिवार ल्यूकास (आयोवा) के एक छोटे से कोयला-नगर में आकर बस गया। यहाँ आकर लेविस के पिता शीघ्र नाइट्स आव लेबर में शामिल हो गए। जॉन लेविस का जन्म १८८० में हुआ और १२ वर्ष की आयु में खानो में काम करने लगा। एक किशोर तथा युवक की आयुओं में अनेक राज्यो की खानो में बेचैनी से घूमते-फिरते रहने के बाद १९०९ में उसने मजदूर-राजनीति में पदार्पण किया। पनामा (इलिनौयस) में पहले युनाइटेड माइन वर्कर्स की स्थानीय शाखा का अध्यक्ष चुने जाने के बाद वह यूनियन का राज्य विधायक ऐजेण्ट बना, उसके बाद ए. एफ. एल. का क्षेत्रीय प्रतिनिधि और अनन्तर क्रमश: युनाइटेड माइन वर्कर्स का मुख्य सांख्यिक, प्रथम उपाध्यक्ष और अन्त में अध्यक्ष चुना गया। जैसा कि हमने देखा कि १९१९ के कोयला सकट में जब उसने सरकार

के खिलाफ खान-मजदूरों की हड़ताल कराने से इन्कार कर दिया था तो उसका नाम राष्ट्र के पत्रो में मोटी-मोटी सुर्खियो में छापा गया था। बाद के वर्षों मे जब कोयला खानो के मालिकों ने उसकी यूनियन पर चोटें की, क्रांतिकारी तत्त्वो ने उसके नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह कर दिया और युनाइटेड माइन वर्कर्स की ताकत घटती चली गई तो लेविस को रक्षात्मक संघर्ष मे जूझना पड़ा। एन. आर. ए. द्वारा प्रदान किए गए अवसर का उसने स्वयं को और अपनी यूनियन को उबारने में जिस तत्परता से लाभ उठाया उसने पहले-पहल यह दिखा दिया कि उसमे कितनी चतुराई, अवसर से लाभ उठाने की योग्यता और साथ ही चुनौती भरा साहस है जिसने उसे एक राष्ट्रीय नेता बना दिया।

१९३३ के बाद जब वह उद्योग-जगत को दृढ़ता से चुनौती देते हुए ("वे मेरे नितम्ब और जाँघो पर हमला कर रहे है......मे बहुत खुशी से उनके प्रहारो का जवाब दूँगा") मजदूर आंदोलन में अपने दुश्मनो को बदनाम करते हुए, अपने आक्रमण की भूमि में परिवर्तन के अनुसार, गठजोड़ करते और उन्हे तोड़ते हुए और अपनी महत्वाकांक्षाओ की पूर्ति के लिये सरकार को चुनौती देते हुए अपने तूफानी जीवन-पथ पर बढ़ा चला जा रहा था तो अमरीका के लोग राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के अलावा अन्य किसी सार्वजनिक व्यक्ति को उससे ज्यादा नही जानते थे। उसके द्वारा कभी पूछे गये एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिये असंख्य लेख लिखे गये " मुझ को प्रेरणा देने वाली क्या चीज है ? क्या वह सत्ता है, जिसके पीछे मै पागल हूँ, या में दूसरे रूप मे सेण्ट फ्रांसिस हूँ, या और कुछ ?" जॉन लेविस क्या था—एक कुदरती ताकत, एक कुशल स्वांग-रचियता, एक निष्ठावान नेता या एक आत्माभिमुखी अवसरवादी ?...... अगर इसका उत्तर था—सेण्ट फ्रासिस तो स्वाँग इससे ज्यादा परिपूर्ण नही हो सकता था। व्यग्य-चित्रकारो को मजदूरो के इस शक्तिशाली हिमायती के आगे की ओर निकले हुए जबड़ो, क्रुद्ध त्यौरियों और घनी, खड़ी भ्रूहो को चित्रित करने मे बड़ा मज़ा आता था।

उसके जीवन की कष्टदायक घुमरघेरी मे कोई ऐक-सी विचारधारा नही थी। एक बार उसने "रचनात्मक औद्योगिक राजनीतिज्ञता" के लिये हर्बर्ट हूवर की प्रतिभा की बहुत सराहना की थी, १९३६ में उसने न्यू डील ने

आतुरता से आलिंगन किया और अपने प्रभाव का पूरा वज़न रूज़वेल्ट के पलड़े मे डाल दिया और ४ वर्ष बाद राष्ट्रपति से नाटकीय ढंग से अलग हो कर वेण्डल विल्की के चुनाव के प्रश्न पर सी. आई. ओ. की अध्यक्षता को दाँव पर लगा दिया। अनिश्चित स्वभाव के इस व्यक्ति के लिए, जिसका एकमात्र निश्चित लक्ष्य प्रायः जॉन एल. लेविस का स्वार्थ ही प्रतीत होता था, राजनीति और मजदूर आन्दोलन में "अब यह, अब वह, अब यहाँ, अब वहाँ" ये मामूली बाते थी। वह उन्मुक्त और नियन्त्रित अर्थतंत्र मे से किस में विश्वास करता था, यह पता करना मुश्किल है किन्तु इसमे कोई शक नही कि अपने में उसका सदा विश्वास रहता था।

१६३६ और १६३७ में उसके साथ राष्ट्रीय समस्याओं पर बातचीत करने के लिए इण्टरव्यू लेने आने वालों से वह औद्योगिक लोकतत्र के बारे में बड़ी शान से बातचीत किया करता था किन्तु इस शब्द का अभिप्राय कभी स्पष्ट नही कर सका। सिर्फ इतना प्रत्यक्ष हुआ कि मौजूदा आर्थिक पद्धति को उलटने या उसमें गड़बड़ करने की कोशिश करने का उसका कोई विचार नही है। उसका कोई दीर्घकालीन कार्यक्रम या अतिम लक्ष्य नही था और इस दृष्टि से उसकी नीति टेरेंस वी. पाउडरली अथवा नाइट्स आव लेबर के सुधारवादी उत्साह के बजाय सेम्युअल गौम्पर्स और ए. एफ. एल. की परम्परागत अवसरवादिता से मिलती थी। वह समझता था कि मजदूरो को सरकार के मामलो में ज्यादा हिस्सा लेना चाहिए किन्तु तीसरे दल की स्थापना के उसके विचारो के पीछे प्रेरक शक्ति इस प्रकार के किसी निश्चित कार्यक्रम की पूर्ति उतनी नही थी, जितनी जॉन एल. लेविस को आगे बढ़ाने की इच्छा। मजदूरों के भविष्य के बारे में पूछे जाने पर उसके उत्तर अस्पष्ट और शब्द-जाल मात्र होते थे। एक प्रश्नकर्त्ता रिपोर्टर से उसने कहा: "ऐसा चित्र खींचना अबुद्धिमत्तापूर्ण होगा जिससे कल के हमारे दुश्मन भयभीत हो जाएँ और न ही मै कल के मजदूर आन्दोलन के इरादो की शुद्धता और प्रशासनिक भद्रता की गारण्टी कर सकता हूँ।"

मंच पर सार्वजनिक सभाओ मे और रेडियो पर लेविस ऐसी नाटकीयता का प्रदर्शन करता था जो बरबस जनता का ध्यान खींचती थी। नाटक रचने की अपनी योग्यता को वह खूब जानता था (एक बार उसने कहा था: "मेरा

जीवन बस एक मंच है") और वह एक-से आत्मविश्वास के साथ कभी मज़ाक उड़ाता, कभी निन्दा करता, कभी धमकी देता और कभी उपदेश देता था। अपने महत्त्व के प्रति उसकी चेतना बड़ी शानदार थी।

यूनाइटेड माइन वर्कर्स का सगठन करने और सी. आई. ओ. के निर्माण करने में उसने बडे पराक्रम का परिचय दिया। मजदूर उसके बहुत ऋणी थे। किन्तु सत्ता की उसकी अतृप्त भूख ने ट्रेड यूनियन की एकता को भंग करने में मदद दी और दूसरे विश्व-युद्ध में सरकार को दी गई उसकी चुनौती जनता की सहानुभूति को, जो न्यूडील के प्रारम्भ में मज़दूरों को प्राप्त थी खो बैठने का एक बडा कारण बनी। किन्तु जनता की सहानुभूति प्राप्त करने में अथवा मज-दूरों का सहयोग हासिल करने मे उसने कुछ भी क्षति उठाई हो, लेविस की उपेक्षा नही की जा सकती थी। अपनेख निकों के ठोस समर्थन से जो उसके ताना-शाही नियत्रण को स्वीकार करने के लिए तैयार थे, क्योकि उसने उन्हें प्राप्तियाँ करायी थी, वह मज़दूर-राजनीति में एक प्रमुख भाग अदा करता रहा।

ए. एफ. एल. की लडखडाती नीतियो के प्रति असन्तोष, जिसने लेविस को औद्योगिक यूनियनवाद का नेतृत्व करने का मौका दिया, १९३४ में सान फ्रांसि-स्को में फेडरेशन के वार्षिक सम्मेलन में अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। कपड़ा, इस्पात, रबड़ तथा मोटर उद्योगो में मज़दूरो द्वारा यूनियनो को तिला-जली दिए जाने के कारण सघीय चार्टरो की बजाय औद्योगिक चार्टर दिए जाने की माग ज्यादा जोर पकड़ने लगी। ए. एफ. एल. के अन्दर औद्योगिक यूनियनो के नेताओ ने उस नीति की निन्दा की जिसमे नई यूनियनो को मौजूदा शिल्प यूनियनो के अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी दावों के आगे गौण कर दिया गया। उन्होने दृढ़ता से अपना यह विश्वास दोहराया कि अकेली उद्योग-व्यापी यूनियनो में दक्ष व अदक्ष सभी प्रकार के मजदूरो का संगठन ही सामूहिक उत्पादन के उद्योगों में मज़दूरो की आवश्यकताएं पूरी कर सकता है।

पुराने ढग के शिल्प-यूनियन नेताओ ने यह बात नही मानी। उनके सामने जब यह तथ्य रखा गया कि पिछले वर्षो में मौजूदा औद्योगिक यूनियनो की सदस्य संख्या १३० प्रतिशत बढ गई है जबकि शिल्प यूनियनो में सिर्फ १० प्रति-शत सदस्य ही बढे हैं तो उन्होने इसका यही अर्थ लगाया कि नए औद्योगिक चार्टर देने में जिनकी असन्तुष्ट वर्ग माग कर रहा है, कितना खतरा है, उन्होंने कहा कि

परम्परागत कार्यप्रणाली में भिन्नता लाने से ए. एफ. एल. द्वारा डाली गई नींव हिल जाएगी। यह बात पुन. कही गई कि अपनी-अपनी "राष्ट्रीय और अन्त-र्राष्ट्रीय यूनियनों में जहाँ अधिकार-क्षेत्र कायम कर दिया गया है, मजदूरो को लाए बिना उनका सफलतापूर्वक संगठन नही किया जा सकता।"

सान फ्रासिस्को में यह विवाद दोनों पक्षो के नरम लोगों के समझौता-प्रयत्नों से अस्थायी रूप से हल हो गया। यह मान लिया गया कि मोटर, रबड, सीमेण्ट, रेडियो और ऐल्यूमीनियम उद्योगो में यूनियनो के लिए चार्टर दिए जाएगे और इस्पात उद्योग मे सगठन करने के लिये जोरदार अभियान शुरू किया जाएगा किन्तु विद्यमान शिल्प-यूनियनो के अधिकार पूर्णतः सुरक्षित रखे जाएगे और अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी सब विवाद एक कार्यकारिणी परिषद् को सौंप दिए गए और परिषद् मे औद्योगिक यूनियनो के प्रतिनिधियो को शामिल कर उसका विस्तर कर दिया गया।

असन्तुष्ट वर्ग के लिए कम से कम यह आंशिक सफलता और मजदूरो के लिए आशामय शकुन था। किन्तु बाद के वर्षो में इस समझौते का पालन करने के लिये कुछ नही किया गया। वस्तुतः ए. एफ. एल. के नेता अपने शिथि-लतापूर्ण रूढिवाद से जागे नही थे। शिल्प-यूनियन के नेताओ ने विशेषकर इमारती व्यवसाय में, औद्योगिक यूनियनवाद की आवश्यकता को स्वीकार नहीं किया था। मज़दूर आन्दोलन के आधार को चौड़ा करने में उन्हें अब भी अपने हाथ में विद्यमान सत्ता के छिन जाने का खतरा दिखाई देता था। जिस कार्य-क्रम के बारे में कहा जाता था कि वे मान गए हैं, उसे अमल में लाना वे स्थ-गित ही करते रहे। १६३५ में अटलाण्टिक सिटी में फेडरेशन का अगला सम्मेलन बड़े पैमाने के उद्योगो मे यूनियनों के मामले मे बढते हुए उत्साह-हीनता के वातावरण की पृष्ठ-भूमि मे हुआ जिसमें कार्यकारिणी परिषद् की यह रिपोर्ट पढ़ी गई कि "इस्पात उद्योग में हम संगठन का अभियान शुरू करना उचित नही समझते।"

लेविस कार्रवाई की मांग करता हुआ अटलाण्टिक सिटी आया। उसके लिए इस्पात उद्योग मे स्थिति विशेष रूप से चिन्तनीय थी। इस उद्योग की कोयला खानो में, जहाँ हालत बहुत खराब थी, उसने मजदूरों का संगठन बनाने में सफलता प्राप्त की किन्तु उसका विश्वास था कि नई यूनियन के किले की

तब तक रक्षा नहीं की जा सकती जब तक इस्पात कर्मचारी भी संगठित न हों। औद्योगिक यूनियन के पक्षपाती अन्य नेताओं के साथ उसका इस बार पक्का विश्वास था कि वह कार्यकारिणी को या तो अपने वायदे पूरे करने के लिए मजबूर कर देगा...या...।

सम्मेलन की प्रस्ताव समिति ने अपनी बहुमत रिपोर्ट और अल्प-मत रिपोर्ट में मामला न्यायोचित ढंग से सम्मेलन में रखा। बहुमत रिपोर्ट मे घोषणा की गई कि "शिल्प के आधार पर संगठित सब यूनियन के कार्य-क्षेत्र सम्बन्धी अधिकारों की रक्षा करना चूँकि ए एफ. एल. का मुख्य उत्तरदायित्व है इसलिए औद्योगिक चार्टर फेडरेशन और उससे सम्बन्ध शिल्प-यूनियनों के बीच सदा से चले आ रहे समझौतों को तोड़ देंगे। अल्प-मत रिपोर्ट में आग्रह किया गया था कि किसी भी उद्योग में जहाँ अधिकांश मजदूरों द्वारा किया गया काम एक से अधिक शिल्प-यूनियन के अधिकार क्षेत्र में आता है वहाँ औद्योगिक संगठन ही मजदूरों को स्वीकार्य होगा या वही उनकी आवश्यकताओं को भली-भाँति पूर्ण कर सकेगा।"

इस कटु विवाद के एक तरफ थे—प्रारम्भ में औद्योगिक यूनियनवाद वकालत करने के बावजूद गौम्पर्स द्वारा छोड़ी गई नीतियों का सावधानी से पालन करने वाला विलियम ग्रीन; कठोर तथा कड़ा प्रहार करने वाला खातियों का मुखिया विलियम एल हचिसन जिसका सब कर्मचारियों को अपनी निजी यूनियन के सुविधाजनक दायरे मे रखने का दृढ़ संकल्प था, ड्राइवरों का लड़ाकू नेता डेनियल जे. टोबिन जो सामूहिक उत्पादन के उद्योगो में काम करने वाले अदक्ष मज़दूरों को घृणा से "गन्दगी" कहा करता था; फोटो-ब्लाक बनाने वालो का मैथ्यू वोल, जिसकी रूढ़िवादिता पुराने और समाप्त प्रायः नेशनल सिविक फेडरेशन के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में किए गए कामों से प्रकट होती थी; और ए. एफ. एल. के धातु-व्यवसाय विभाग के मुखिया ज्ञान और गरिमायम जॉन पी फ्रे। ये लोग औद्योगिक यूनियनवाद का अपनी सारी शक्ति से सामना करने के लिये तैयार रहते थे।

लेविस विद्रोहियों के नेता थे और उस ज़माने के अत्यन्त प्रगतिशील तथा जोरदार मजदूर नेताओं का उनको समर्थन प्राप्त था। इनमें थे—टाइपोग्रैफ़िकल यूनियन के शान्त, प्रभावशील मुखिया और अल्पमत रिपोर्ट के वास्तविक लेखक

चार्ल्स पी. होवार्ड; कुछ संकोचशील और मृदु स्वभाव वाले किन्तु अत्यन्त योग्य और यूनाइटेड माइन वर्कर्स में लेविस के अत्यन्त गहरे दोस्त फिलिप मर्रे; लिथुआनिया में पैदा हुए दर्जियों के नेता सिडनी हिलमैन जिसके शान्त तौर-तरीकों के नीचे भारी स्नायु-शक्ति और महत्त्वाकाङ्क्षा एकत्र थी और जिसने हाल में पहले की स्वतंत्र ऐमलगमेटेड क्लोदिंग वर्कर्स यूनियन को ए. एफ एल. में शामिल कराया था, और एक अत्यन्त चतुर ट्रेड यूनियनिस्ट और उग्र इण्टरनेशनल लेडीज़ गारमेण्ट वर्कर्स के अध्यक्ष डेविड डुबिन्स्की।

इन सरदारों के बीच ए. एफ. एल. की नीति पर बहस कई दिन तक जारी रही। सम्मेलन मे आरोप-प्रत्यारोपों से मामला तूल पकड़ गया। इसकी चरम अवस्था तब पहुँची जब लेविस ने उन तौर-तरीकों पर चलते हुए जिसका परिणाम नई यूनियनो के लिए शरदृऋतु की धूप में मुरझाती घास की तरह मरने के समान हुआ" पिछले सम्मेलन मे किए गए वायदो से मुकर जाने पर तीव्र आक्षेप किए।

उसने गरज कर कहा . "सानफ्रांसिस्को में उन्होने मुझे लुभावने शब्दों मे भ्रष्ट कर दिया किन्तु अब मैं यह जान कर कि उन्होने मुझे भ्रष्ट कर दिया है, क्रुद्ध हूँ और मै प्रतिनिधि बोल समेत अपने भ्रष्टकारियो के अंग-अंग को तार-तार कर देने के लिए तैयार हूँ। मेरा यह कथन निस्सन्देह अलंकारिक है।" उसने प्रतिनिधियों से अपील की कि वे अपने कम भाग्यशाली भाइयो की खुशहाली में योग दें, मैसिडोनिया से आने वाली उनकी चीख-पुकार पर ध्यान दें. असंगठितो का संगठन बनाएँ और मानवता के उद्देश्य की पूर्ति के लिए फेडरेशन को अब तक का सबसे महान साधन बनाएं। और उसने गम्भीरता से यह चेतावनी भी दी कि अगर उन्होने यह अवसर हाथ से जाने दिया तो मज़दूरो के दुश्मनों का हौसला बढेगा "और शक्तिशालियो की खाने की मेजों पर शराब का खूब दौर-दौरा चलेगा।"

अपने ज़ोरदार भाषण, अपीलो और चेतावनियों के बावजूद लेविस प्रतिनिधियो को परम्परागत नीतियो में परिवर्तन करने की आवश्यकता का बोध नही करा सका। आलंकारिक रूप में भी अंग-अंग काटे जाने की धमकी ने अधिकांश प्रतिनिधि अप्रभावित ही रहे। मैसिडोनिया की समस्त चीख पुकार पर उन्होने अपने कान बन्द कर रखे थे। शक्तिशालियो के भोज में

शराब के दौर-दौरो के चित्रण से वे विक्षुब्ध नही हुए । जब अंतिम वोट लिया गया तो औद्योगिक यूनियनवाद का कार्यक्रम १०,६३३ के मुकाबले १८०२४ वोट शिल्प यूनियनो के पक्ष में दिये जाने से पराजित हो गया ।

इसके कुछ ही देर पश्चात् एक ऐसी घटना घटी जो इस नाजुक वोट के समय पैदा हुई फूट की प्रतीक थी इसका विवरण कुछ धुंधला सा है । किन्तु कार्यविधि के बारे में और विवाद होते रहने पर हचिसन ने सभा की शिष्टता को भंग कर लेविस को एक ऐसा शब्द कहा जिसे दर्शको ने "गंवारू" की सज्ञा दी । खनिको के सरदार ने इसका जवाब अपने २२५ पौण्ड के वजन की पूरी ताकत से एक थप्पड मार कर दिया जो खातिगो के उतने ही विशालकाय जार के जबडे पर तड़ाक से बजा । गुत्थमगुत्था होने वाले इन दोनो सरदारो को अलग कर दिया गया और सौभाग्य से सब के बीच खुल कर लडाई होने से बच गई किन्तु इस झगडे से भी दोनो कैम्पो की, जिनमे मजदूर बँटे हुए थे, जल्दी भड़क उठने वाली भावनाए शान्त नही हुई ।

ए. एफ. एल. सम्मेलन के तुरन्त बाद औद्योगिक यूनियनवाद के पक्षपातियो ने अमली कार्रवाई पर विचार करने के लिये एक सभा की । ये लोग ऐसा कोई निर्णय मानने को तैयार नही थे जिससे सामूहिक उत्पादन के उद्योगो मे प्रभावशाली सगठन बनाने का काम दुबारा स्थागित हो जाए इसलिए ६ नवम्बर, १६३५ को उन्होने अपनी निजी औद्योगिक सगठन समिति (कमेटी फ़ार इण्डस्ट्रियल आर्गनाइजेशन) के निर्माण के लिए पहला कदम उठाया । मूलत: इसमें लेविस, होवार्ड, हिलमैन और डुब्रिस्की, युनाइटेड हैटर्स के कैप और मिलिनरी विभाग मैक्स जारिस्की, युनाइटेड टैक्सटाइल वर्क्स के टामस एफ. मैकमोहन माइन, मिल ऐण्ड स्मेल्टर वर्क्स के टामस एच. ब्राउन और औयलफ़ील्ड गैसवेल ऐण्ड रिफाइनिंग वर्कर्स के हार्वे सी फ्रेमिंग थे । यह घोषणा की गई कि एक स्वतंत्र सगठन स्थापित करने के बजाय समिति का इरादा ए एफ एल के ढाचे के अन्तर्गत ही काम करना है । इसका काम सामूहिक उत्पादन के उद्योगो मे "आधुनिक सामूहिक मोदेबाजी" को स्वीकृति और मान्यता दिलाने की कोशिश करने के लिए "शिक्षात्मक और परामर्शात्मक था ।" किन्तु इस प्रकार के वक्तव्यो के बावजूद सी आई. ओ के नेताओं पर ग्रीन ने तुरन्त ही ए. एफ. एल. सम्मेलन के बहुमत निर्णय के खिलाफ जाने

का आरोप लगा दिया। उसने बार-बार कहा कि उनका एकमात्र उद्देश्य अपने दृष्टिकोण को स्वीकार कराना है। लेविस ने इसका उत्तर कार्यकारिणी परिषद् को और ज्यादा चुनौती देकर दिया।

२३ नवम्बर को उसने ग्रीन को लिखा : "प्रिय महोदय और भाई! आज की तारीख से मै ए. एफ. एल. के उपाध्यक्ष पद से इस्तीफा देता हूँ।"

सी. आई. ओ ने तुरन्त ही अपने संगठन अभियान की योजनाएँ बनाना शुरू कर दीं और जनवरी, १९३६ के प्रारम्भ में और ए. एफ. एल. का कार्यकारिणी में अंतिम बार इस्पात, मोटर, रबड़ तथा रेडियो में औद्योगिक चार्टर दिए जाने की की पुरानी माँग दोहराई किन्तु पुराने नेताओं में कोई फूट नहीं पड़ी। नयी कमेटी के आक्रामक तौर-तरीको का ए. एफ. एल. में शिल्प यूनियनों की जमी हुई स्थिति पर क्या असर होगा इससे भयभीत कार्यकारिणी के सदस्यो ने सी. आई. ओ को तुरन्त भंग किए जाने का आदेश जारी कर उस भय को दूर करना चाहा। उन्होने आरोप लगाया कि यह विद्रोह फैलाना है और "कुछ थोड़े से स्वार्थी व्यक्तियो" के हित-साधन के लिए प्रतिद्वन्द्वी संगठन कायम किया गया है।

अगले कुछ महीनो तक ए एफ. एल. तथा सी. आई. ओ के नेताओं में भीषण रोष भरा विवाद चलता रहा और मजदूरों में फूट की खाई चाड़ी होती चली गई। ग्रीन ने विद्रोहियो को वापस लाइन मे लाने के लिए कभी उन्हे मनाने की कोशिश की और कभी धमकियाँ दी। किन्तु लेविस अक्खड़ता से अपने ही रास्ते पर चलता रहा। अन्त में ग्रीष्म ऋतु की समाप्ति के दिनो मे ए. एफ. एल. की कार्यकारिणी ने तब तक सी.आई.ओ. से सम्बद्ध हुई १० यूनियनों को मुअत्तिल कर दिया। किन्तु लेविस ने अनुशासन के आगे सिर झुकाने के बजाय यह कहा कि कार्यकारिणी ने अनधिकृत काम किया है। ग्रीन के अभियोगो के उत्तर मे उसने एक बार कहा : "मै उसकी धमकियों से उतना ही डरता हूँ जितना उसके वायदो मे मेरा विश्वास है।" जब १९३६ मे टम्पा (फ्लोरिडा, में ए. एफ एल. का सम्मेलन हुआ तो सी. आई. ओ. यूनियनो के प्रतिनिधि गैर-हाज़िर रहे। इसके बदले मे ए. एफ एल. ने भारी किन्तु वेकार बहुमत से यह निर्णय किया कि ये यूनियनें तब तक मुअत्तिल रहे "जब तक मनमुटाव दूर न हो जाए और कार्य-

कारिणी के मत के अनुसार उचित शर्तों पर उसमें हेरफेर न कर लिया जाए।"

सी. साई. श्रो. अपने संगठन कार्यक्रम पर आगे बढता रहा। इस्पात, मोटर, कांच, रबड़ तथा रेडियो उद्योगो की नई यूनियने मूल सदस्यो में शामिल हो गईं। इससे और ज्यादा भयभीत होकर ए. एफ. एल. ने पुनः इस आन्दोलन की यह कह कर निन्दा की कि यह मजदूर संघ के समस्त आकार को ही नष्ट किए दे रहा है और इसके नेताओ पर यूनियन सम्बन्धी ध्येय के साथ गद्दारी करने का आरोप लगाया। मार्च, १९३७ मे इस्पात तथा मोटर उद्योग दोनो में सगठन स्थापित करने के आन्दोलन से उत्पन्न राष्ट्रीय रोमांच के बीच कार्यकारी परिषद ने समस्त सी. आई. ओ. यूनियनो को ए एफ. एल. के राज्य तथा नगर-संघो से निकाले जाने का आदेश देने का निर्णयात्मक कदम उठाया।

१९३७ की समाप्ति के दिनो में पुनः दोनो कैम्पो के नरम नेताओ के प्रभाव मे शाँति का कोई आधार ढूँढ़ने के लिए विलम्बित प्रयत्न किए गए। किन्तु उनकी विफलता निश्चित थी। ए. एफ. एल. ने प्रस्ताव किया कि मूल सी आई. ओ. यूनियनें ए. एफ. एल. में लौट आएँ और इसकी नई यूनियने ए. एफ. एल. की यूनियनो में मिल जाएँ। सी. आई. ओ. ने मांग की कि उसकी समस्त यूनियनो को जिनकी संख्या अब तक ३२ हो गई थी मतदान के पूर्ण अधिकार के साथ शामिल किया जाए। प्रत्येक सगठन किसी भी प्रस्तावित विलय में प्रभुत्व पाने की चेष्टा कर रहा था और दोनो संगठनो में से किसी के भी नेता ऐसी कोई रियायत देने को तैयार नही थे जिससे वे मिल कर काम कर पाते। औद्योगिक यूनियन बनाम शिल्प यूनियन अगर कभी इनमें विवाद का विषय था भी तो अब नही रहा था। अब तो सत्ता के लिए होड़ लग रही थी। मजदूरो का कल्याण ज़िद्दी स्वार्थी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए आयोजित प्रतिद्वन्द्विताओ पर बलि चढा दिया गया।

अनेक प्रेक्षको की राय में यही वह समय था जब लेविस ने सीमा से आगे बढ कर 'खेल' खेला, वरना शायद वह सयुक्त मज़दूर आन्दोलन का नियंत्रण अपने हाथ में ले सकता था। क्योकि सी. आई. ओ. के सदस्य ए. एफ. एल. से ज्यादा हो गए थे। १९३७ की समाप्ति के समय इसके ३७ लाख सदस्य थे

जबकि ए. एफ़. एल. के ३४ लाख थे और विलय की कुछ भी शर्तें होती पुनर्गठित ए. एफ़. एल. पर औद्योगिक यूनियनो का हावी होना लाज़िमी था। किन्तु सी. आई. ओ. की बढ़ती हुई ताकत से लेविस यह समझ बैठा कि वह जिम्मेदारी ओढ़े बिना इससे भी ज्यादा बड़ी विजयें प्राप्त कर सकता है और जिद्दीपन से अपने ही मार्ग पर चलता रहा। मज़दूरों की एकता को फिर से कायम करने के लिए ऐसा स्वर्णावसर फिर कभी नही आया।

१९३७ के पतझड़ में इन शांतिवार्ताओ की विफलता के बाद ए. एफ़. एल. ने लेडीज गारमेण्ट वर्कर्स को छोड़ कर जो शीघ्र ए. एफ़. एल. मे लौट आई, सी. आई. ओ. की बाकी सब सदस्य यूनियनो को निकालने के कार्यकारी परिषद् के निर्णय पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी। तब मई, १९३८ में लेविस और उसके लेफ्टिनेण्टो ने पहले जो सिर्फ एक सगठन समिति थी उसे औद्योगिक सगठनो की एक स्थायी कांग्रेस बना देने के लिए अंतिम कदम उठाया। समझौते के लिए अब तक के कदम सिर्फ औपचारिकताएं ही थीं। मज़दूरो के घर में फूट पहले ही पूर्णता को पहुँच चुकी थी।

सी. आई. ओ. औद्योगिक यूनियनवाद का विकास करता रहा और अदक्ष मज़दूरो के विशाल समुदाय के हितो की रक्षा करता रहा किन्तु वस्तुत: ए. एफ एल से यह बहुत भिन्न नही था। इस पर जो आक्षेप किये जा रहे थे और कम्यूनिज्म को प्रोत्साहन देने का जो आरोप लगाया जा रहा था, उसके बावजूद बुनियादी सिद्धान्तो के मामले मे यह अपने पितृ-सगठन से कम रूढ़िवादी नही था। शिल्प यूनियनवाद के पहले के विरोधियो—नाइट्स आव लेबर, सोशलिस्ट ट्रेड ऐण्ड लेबर अलाएंस और आई. डब्लू. डब्लू. से विपरीत सी. आई ओ. लोकतत्रीय पू जीवाद के विद्यमान ढाचे के अन्दर पूर्णत: सामूहिक सौदेबाजी के जरिये मज़दूरो का हित-साधन करने के लिए वचन-बद्ध था। यह राजनीतिक कार्रवाई पर ए. एफ़. एल. से अब तक की अपेक्षा ज्यादा जोर देने को तैयार था किन्तु मजदूर सम्बन्धो के नियमन मे सरकार जो रोल अदा कर रही थी यह उसी का स्वाभाविक परिणाम था हमारी राजनीतिक पद्धति में परिवर्तन करने के लिए कोई क्रांतिकारी माँग नही की गई।

सी. आई. ओ. की रचना भी ए. एफ़. एल से बहुत भिन्न नहीं थी; सिर्फ यही भिन्नता थी कि इसमे विशेष विभाग नही थे। ए. एफ़. एल. ने बहुत

पहले ही बिल्डिंग ऐण्ड कन्स्ट्रक्शन ट्रेड्स डिपार्टमेण्ट, मैटल ट्रेड्स डिपार्टमेण्ट रेलवे एम्पलायीज डिपार्टमेण्ट तथा यूनियन लेबल ट्रेड्स डिपार्टमेण्ट कायम करने की आवश्यकता महसूस कर ली थी, किन्तु सी. आई. ओ. की बड़ी यूनियनें चूंकि औद्योगिक थी इसलिए उसे इस प्रकार के विभाजनो की जरूरत नही थी। किन्तु इसने ए. एफ. एल. के राज्य मजदूर संघो और नगर केन्द्र-संगठनो के अनुरूप इसने राज्य तथा नगर औद्योगिक यूनियन परिषदें कायम की। सदस्य यूनियनो के साथ व्यवहार करते हुए सी. आई. ओ. का अधिकार ए. एफ. एल. की अपेक्षा व्यवहार में अधिक व्यापक पाया गया और स्थानीय यूनियन मामलो में इसकी कार्यकारी परिषद् ने ज्यादा बार हस्तक्षेप किया।

सामान्यतः कहा जाए तो सी. आई. ओ. यूरोपीय मजदूरो की कक्षागत परम्पराओ के बजाए अमरीकी मजदूर की संस्थापित परम्पराओं के ज्यादा अनुरूप था। मजदूर आन्दोलन पर इसके स्तब्धकारी प्रभाव का मुख्य कारण यह था कि यह अदक्ष मजदूरों की आवश्यकताओं के प्रति ए. एफ. एल. से ज्यादा सजग था और उनकी पूर्ति के लिए ज्यादा सक्रिय तथा आक्रामक साधनों से काम लेता था।

औद्योगिक यूनियनवाद के लिए सी. आई ओ. के जोरदार अभियान का, जो १९३५ मे ए. एफ. एल. की विलम्बकारी चालो के तुरन्त बाद प्रारम्भ कर दिया गया था, तत्काल राष्ट्रव्यापी असर हुआ। सामूहिक उत्पादन के उद्योगो में मजदूरो की विशाल संख्या इसी की प्रतीक्षा कर रही थी और उन यूनियनों में जो उनकी आवश्यकताएँ पूरी करती थी और संघीय यूनियनो के भेद-भावकारी नियन्त्रणों से मुक्त करती थी उनके झुण्ड के झुण्ड शामिल हो जाते थे। सी. आई ओ. के नए हैडक्वार्टर से जब सगठनकर्ता खनिकों, दर्जियो व अन्य कर्मचारियो की सहानुभूति रखने वाली यूनियनो के चन्दो से संस्थापित कोष का आश्रय लेकर सगठन करने के लिये निकल पड़े तो उनका उत्साह से स्वागत किया गया। लेविस, मर्रे, हिलमैन और दुबिस्की के स्फूर्तिमय चतुर नेतृत्व में दिन-दूनी रात चौगुनी प्रगति होने लगी।

राष्ट्र के इस्पात मजदूरो में सी. आई. ओ. का मुख्य अभियान जून, १९३६ में इस्पात कर्मचारियो की संगठन समिति (स्टील वर्कर्स आर्गनाइजिंग कमेटी) की स्थापना से प्रारम्भ हुआ। मर्रे के निर्देशन में इसने जब समाप्तप्राय

ऐमलगमेटेड ऐसोसियेशन आव आयरन, स्टील ऐण्ड टिन वर्कर्स को अपने हाथ मे लिया, पिट्सवर्ग, शिकागो और वरमिंघम में जिला-कार्यालय स्थापित किए और शीघ्र ही उसके ४०० सगठनकर्ता मैदान मे आ गए जो पेसिलवेनिया, ओहायो, इलिनॉयस और अलावामा के इस्पात नगरो में यूनियन का साहित्य वितरित करते थे, जन सभाएँ आयोजित करते और घर-घर जाकर मजदूरो को यूनियन में शामिल होने के लिये राजी करते थे। अन्य उद्योगो मे १५०० डालर वार्षिक के न्यूनतम वेतन के मुकावले इसमें वेतन औसतन ५६० डालर जितना कम होने के कारण उन्हे अपने प्रचार के लिए उपजाऊ भूमि मिल गई। इस्पात उद्योग जिसका यूनियन-विरोधी दुराग्रह होमस्टेड से लेकर १६१६ की विशाल इस्पात हड़ताल तक चला आया था, इस नई चुनौती के महत्त्व को पूरी तरह समझता हुआ इसका सामना करने को तैयार था। देश भर के समाचार पत्रो मे पूरे पृष्ठ के विज्ञापन निकलवा कर आयरन ऐण्ड स्टील इस्टिट्यूट ने कहा कि कर्मचारियो के प्रतिनिधित्व की कम्पनी की अपनी योजनाएँ मजदूरो की आवश्यकता को पूर्णतः पूरी कर देती है और सी. आई. ओ उन्हे अपनी यूनियन मे मिलाने के लिए जोर-जवर्दस्ती कर रहा है, तथा क्रातिकारी और कम्यूनिस्ट प्रभाव पुन: सक्रिय हो रहे हैं।

लेविस ने राष्ट्रव्यापी रेडियो-प्रणाली पर इस्पात उद्योग के इस प्रचार-युद्ध का जवाब दिया और न केवल इस्पात उद्योग को वल्कि समस्त उद्योगो को यह चेतावनी दी कि औद्योगिक श्रमिकों की यूनियन वनाने के सी. आई. ओ. के आन्दोलन को कोई नही रोक सकता।

दिग्दिगन्त मे उसने चिल्ला कर कहा. "कोई भी, चाहे वह आर्थिक 'जार' हो या गन्दा भाडे का टट्टू, मानवीय भावनाओ के इस शक्तिशाली उभार के, जो अव औद्योगिक लोकतत्र की स्थापना और इसके प्राप्य फलो में हिस्सा वँटाने के लिए आतुर ३ करोड मजदूरो के हृदयो में घनीभूत हो रहा है, विरुद्ध अपनी ताकत को आजमा ले। वह पागल या मूर्ख है जो यह समझता है कि मानवीय भावनाओ की इस नदी को रुकावटो की मनमानी वाधाएँ खडी करके वाँधा जा सकता हे या रोका जा सकता है।"

कुछ ही महीनो के अन्दर जिस उद्योग ने यूनियनवाद को इतनी वार पछाड़ा था, स्वय को अव रक्षात्मक पेतरे पर पाया। हज़ारो मज़दूर स्टील

वर्कर्स आर्गनाइजिंग कमेटी (इस्पात मजदूर सगठन समिति) मे शामिल होने के लिये एकत्र होने लगे। बहुत से मामलो में भूतपूर्व कम्पनी यूनियनें रातो-रात नई यूनियन की स्थानीय शाखाओ में बदल गईं और जब प्रबन्धको ने महँगाई के मुताबिक वेतन वृद्धि का वचन देकर उन पर अपगा नियन्त्रण रखने की कोशिश की तो उनके सदस्यो ने इन समझौतों को स्वीकार करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। १९३६ की समाप्ति तक एस. डब्लू. ओ. सी. १ लाख से अधिक सदस्यो की कोई १५० यूनियन इकाइयाँ स्थापित करने पर गर्व कर सकती थी। यह मान्यता तथा सामूहिक सौदेबाजी की मांग करने के लिये पर्याप्त शक्तिशाली हो गई थी, और यदि इस्पात उद्योग मजदूरो की मांगों पर ध्यान देने से इन्कार कर दे तो राष्ट्रव्यापी हडताल करा सकती थी।

किन्तु अभी जब हडताल के लिए तैयारियाँ जारी ही थी तब १ मार्च, १९३७ को एक अप्रत्याशित और नाटकीय घोषणा की गई। लेविस तथा यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के निदेशक मण्डल के चेयरमैन माइरोन सी. टेलर के बीच कुछ समय से जो गुप्त वार्ता हो रही थी उसके फलस्वरूप एक समझौता हो गया था जिसमें "बिग स्टील" ने एस. डब्लू. ओ. सी. को अपने सदस्यों के लिए सौदे-बाजी का एजेण्ट स्वीकार किया, १० प्रतिशत वेतन-वृद्धि प्रदान की तथा ८ घण्टे का दिन और ४४ घण्टे का सप्ताह स्वीकार किया। कम्पनी ने टैकनिकल दृष्टि से यद्यपि अब भी 'ओपन-शाप' नीति कायम रखी तो भी यह यूनियनवाद की एक महान् विजय थी और ऐसी विजय जिसका दृष्टात सगठन मजदूर आन्दोलन के समस्त इतिहास में नही मिलता था। सी. आई. ओ. के हमले में एक किला फतह हो गया था और यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन द्वारा घुटने टेक दिया जाना सामान्यत. सामूहिक उत्पादन के सभी उद्योगो में नए मजदूर सम्बन्धों के प्रतीक के रूप में प्रकट हुआ।

ख़याल किया जाता था कि "बिग स्टील" ने बैंक मालिको के दबाव मे आकर घुटने टेक दिए, जिन्होने वागनर ऐक्ट के पास हो जाने के बाद से ही अब साफ-साफ यह देख लिया था कि दीवार पर क्या लिखा है? कम्पनी के अधिकांश कर्मचारी (किन्तु वस्तुतः इसके मुख्य अंग कारनेगी इलिनोयस स्टील कम्पनी के अधिकाश कर्मचारी) जब एस. डब्लू. ओ. सी. के झण्डे तले जमा हो गए थे तब उन्होंने भांप लिया था कि मजदूर हडताल कर देंगे और यह भी

ऐसे समय जबकि कम्पनी अपनी पुरानी उत्पादन-गति पर फिर से अभी आई ही थी और नए आर्डर कम्पनी की किताबो में जमा हो रहे थे । जिस कार्पोरेशन ने कभी यूनियन मजदूर के खिलाफ अपनी अमिट विरोध की घोषणा की थी उसे शाति से उस सम्मान को स्वीकार करने के लिये मना लिया गया जिसका अब सफलता से मुकाबला नही किया जा सकता था। प्रबुद्ध आत्म-कल्याण की भावना ने कठोर विद्वेष पर विजय पाई।

१०० से अधिक स्वतन्त्र कम्पनियो ने यूनाइटेड स्टेट्स स्टील के नेतृत्व का अनुकरण किया । मई तक एस. डब्लू. ओ. सी. के ३ लाख से अधिक सदस्य हो गए किन्तु अब भी कुछ महत्त्वपूर्ण किले फतह करने बाकी रह गए थे। 'लिट्ल स्टील' कही जाने वाली कम्पनियो—रिपब्लिक, यग्सटाउन शीट ऐण्ड ट्यूब, इनलैण्ड स्टील एण्ड बेथलहेम ने एस. डब्लू. ओ. सी. से समझौता करने से इन्कार कर दिया और यूनियन के इससे ज्यादा दबाव का सामना करने के लिये अपनी शक्तियाँ जुटानी शुरू कर दी। इसके कठोर, प्रतिक्रियावादी, भयानक रूप से यूनियन विरोधी अध्यक्ष टाम. एम. गर्डलर के नेतृत्व मे मोर्चेबन्दी की रेखाएँ खीच ली गई।

एस. डब्लू. ओ. सी. की तरफ से इसका जवाब था—हडताल का आह्वान और मई तक 'लिट्ल स्टील' के कोई ७५००० मज़दूर अपनी यूनियन को मान्यता दिलाने के लिये एक साथ काम छोडकर बाहर आ गए। कम्पनियो ने डटकर मोर्चा लिया और इस्पात नगरो पर उनके सख्त नियंत्रण के कारण वह सफल भी रहा। आतक तथा हिंसामय जोर-जबर्दस्ती के अभियान को मजबूत करने के लिए नागरिको की समितियाँ बनाई गई, स्थानीय पुलिस तथा स्पेशल डिपुटियो के सहयोग से 'काम पर वापस जाओ' आन्दोलन सगठित किये गए और धरना देने वालो पर किये गए हमलो से यूनियन के मुख्य कार्यालयो पर आँसू गैस छोडने, हडतालियो के नेताओ की गिरफ्तारी से और हडताल-भजको की रक्षा के लिये मिलीशिया के उपयोग से शनैः-शनैः मज़दूरो की हिम्मत टूट गई।

बीस के करीब इस्पात नगरों में हिंसा भडक उठी और रिपब्लिक स्टील कम्पनी के दक्षिण शिकागो वर्कशाप में खूनी संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। ३० मई को ३०० व्यक्तियो की धरना-पक्ति को पुलिस ने रोक

लिया, कुछ ईंट-पत्थर फैंके गए और पुलिस ने गोली चला दी। निहत्ये मजदूर लाइन छोड-छोड कर गोलियो की बौछारो से बचने के लिये भाग पड़े किन्तु उनमें से १० सड़क पर मरे पाये गये और १०० से अधिक जख्मी हुए। उपद्रव मे करीब २० सिपाही भी जख्मी हुए, किन्तु कोई ऐसा नही था, जिसे सख्त जख्मी कहा जा सके।

"स्मृति दिवस के हत्याकाण्ड ने", जैसा कि यूनियन मजदूरों ने इसे एक बार कहा था, हडतालियो के पक्ष में लोगो की व्यापक सहानुभूति उत्पन्न कर कर दी। बाद की तहकीकात ने, जिसमे घटना की ली गई फिल्मो का सावधानी से अध्ययन भी शामिल था, स्पष्ट जाहिर कर दिया कि हमले के लिए मजदूरों ने कोई उत्तेजना प्रदान नही की किन्तु स्वयं इस्पात-नगरो में लोगो की भावना अब भी घोर यूनियन विरोधी थी और उनके समर्थन से इस्पात कम्पनियो की स्थिति इतनी मजबूत हो गई थी कि मजदूर टिक नही पाए। प्रचार, ताकत और आतक ने हडताल तोड़ दी और सी. आई. ओ. को पहली हार का सामना करना पड़ा।

किन्तु 'लिटल स्टील' के लिए भी यह विजय अन्ततः कड़वी ही साबित हुई। ४ वर्ष बाद नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड ने सम्बन्धित कम्पनियो को तत्कालीन यूनाइटेड स्टील वर्कर्स आव अमेरिका को मान्यता देने का, हडताल में भाग लेने अथवा यूनियन की सदस्यता के कारण काम से हटाए गए सब कर्मचारियो को वापस काम पर लेने का और सामूहिक सौदेबाजी को स्वीकार करने का हुकम दिया गया। मजदूरो के दबाव का अन्तिम क्षण तक दृढता से मुकाबला करने वाली 'लिटल स्टील' को अन्ततोगत्वा सरकार के हस्तक्षेप के आगे झुकना पड़ा। तब—१९४१—तक सी. आई. ओ. ६ लाख इस्पात-कर्मचारियो को सगठित करने मे कामयाब हुई और करीब-करीब समस्त उद्योग मे यूनियन-करार सम्पन्न किए गए।

इस बीच मोटर उद्योग में इससे भी नाटकीय और हिंसामय क्रांति हो गई थी। एन. आर. ए. के सूत्रपात और १९३४ की अविवेकपूर्ण हड़तालो की विफलता के बाद से इसके कर्मचारियों मे बडा असन्तोष था। प्रति घण्टा वेतन-दर ऊँची होने के बावजूद समय-समय पर काम से हटा दिए जाने के कारण औसत

वेतन १००० डालर से भी कम बैठता था जबकि एक और शिकायत असेम्बल करने वाले कर्मचारियो से जल्दी काम कराने की थी। उस कर्मचारी के लिए, जिसे सामने से गुजरते चेसिस पर एक पहिया ही लगाना होता था, एक फेण्डर जडना होता था या सिर्फ तक बोल्ट ही कसना होता था, भारी दबाव मे काम करने का खिंचाव कभी-कभी असह्य हो उठता था। किन्तु सम्मिलित विरोध से इन परिस्थितियो मे सुधार कराने के हर प्रयत्नो को प्रबन्धको ने दबा दिया। मोटर उद्योग ने अपनी जासूस-प्रणाली इतनी व्यापक बना रखी थी कि यूनियन की हल चल प्रारम्भ होने से पूर्व ही अवरुद्ध नजर आती थी।

तो भी यूनियनो के निर्माण का काम रुका नही। मूलत. ए. एफ एल. रा स्थापित सघीय यूनियनो का विलय करके यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स स्थापना की गई, और इसके संगठनकर्ता बहुत सक्रिय थे। काम अब भी धीरे चल रहा था। फेडरेशन के विलय-समर्थन से अधिक असन्तुष्ट होकर नई यूनियन १९३६ मे ए. एफ. एल. से अलग होकर सी. आई. ओ. में मिल गई। होमर एस. मार्टिन इसका अध्यक्ष चुना गया और नए जोश के साथ सगठन अभियान फिर प्रारम्भ किया गया जिसके फलस्वरूप अन्ततोगत्वा देश की सबसे बडी यूनियन यूनाइटेड ऑटोमोबाइल, एयर क्राफ्ट ऐग्रिकल्चरल इम्प्लिमेण्ट वर्कर्स का निर्माण हुआ।

मार्टिन नौजवान और आदर्शवादी था, कार्यकर्ता या यूनियन सदस्य के रूप मे उसे कोई अनुभव नही था। मिसूरी में एक छोटे से कालेज से स्नातक होने के बाद वह बैप्टिस्ट गिरजे में दाखिल हुआ और १९३२ में कन्सास सिटी के एक उपनगरीय छोटे गिरजाघर में पादरी बन गया। मजदूर के प्रति उसकी प्रकट सहानुभूति के कारण उसे शीघ्र अपने काम से हटना पडा। तब उसने शेवरोलेट फैक्ट्री में काम कर लिया और वहाँ धर्म-प्रचारक के से उत्साह के साथ यूनियनवाद का प्रचार करने लगा। वहाँ से उपद्रवकारी घोषित करके काम से निकाल दिए जाने के बाद उसने अपना सारा समय यूनियन के कार्य मे लगाया और सघर्षरत यू. ए. डब्लू. का उपाध्यक्ष बन गया। सहृदय, शात और ऐनक लगाने वाले मार्टिन ने, जिसे शक्ल-सूरत और तौर-तरीको में वाई. एम. सी. ए. का सचिव जैसा बताया जाता था, अध्यक्ष चुने जाने के बाद यूनियन का नियत्रण अपने हाथ में ले लिया और उसमें नई भावना भरी।

अपनी अनुभव की कमी को वह अपने जोश मे पूरा कर देता था। उसकी प्रेरणास्पद अपीलो से, जो यूनियन की सभाओ को बहुत कुछ पुराने ढंग की धार्मिक पुनर्जागरण सभाओ मे बदल देती थी, प्रभावित होकर मोटर कर्मचारी अधिकाधिक संख्या मे यूनियन में शामिल हुए।

सन् १९३६ की ग्रीष्म ऋतु में इक्की-दुक्की हड़ताले हुई और पतझड़ के आखिरी समय तक कोई ३०००० की ताकत वाली यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स उद्योग दिग्गजो—जनरल मोटर्स, क्रिसलर और फोर्ड—से मान्यता की माँग मन्जूर कराने के लिये लोहा लेने को तैयार थी। "हम खदेड़े जाना नही चाहते, "हम नही चाहते कि हम पर कोई जासूसी करे" यह मजदूरो की नई रट थी। किन्तु कम्पनियाँ वागनर ऐक्ट को चुनौती देती हुई अभी कोई रियायत देने को तैयार नही थी। जब मार्टिन ने सामूहिक सौदेबाजी पर जनरल मोटर्स के अधिकारियो से सम्मेलन करने के लिये कहा तो उपाध्यक्ष विलियम एस. कुण्डसेन ने सिर्फ यह कहा कि अगर मज़दूरो को कुछ शिकायतें है तो उन्हें वे स्थानीय कारखाना प्रबन्धकों से निबटा लेनी चाहिएँ। यूनियन ने इसका जवाब हड़ताल से दिया जो जनवरी, १९३७ में फ्लिण्ट (मिशीगन) में कम्पनी के फिशर बाडी प्लाण्ट मे प्रारम्भ हुई और तब धीरे-धीरे डेट्रायट, क्लीवलैण्ड, टोलेडो और देश के अन्य स्थानो पर फैल गई। १,५०,००० कर्मचारियो मे से १,१२,००० के हड़ताल में भाग लेने से जनरल मोटर्स में उत्पादन ठप्प हो गया।

यह हड़ताल ससार में अपने निराले ढग की थी। फ्लिण्ट मे इसने 'बैठे रहो' का रूप ले लिया। इस क्रांतिकारी तरीके का पहले भी उपयोग किया गया था, विशेषकर ऐकरोन के रबड़ कर्मचारियो में किन्तु इसका व्यापक रूप मे इस्तेमाल वस्तुत. पहलेपहल जनरल मोटर्स में ही किया गया। मोटर कर्मचारियो ने कारखाना खाली करने से इन्कार कर दिया। वे अपनी काम करने की बेंचो पर बैठे रहे। यह कोई हिंसात्मक कार्य नही था, बल्कि शांत प्रतिरोध था जो इस कारण दुगना प्रभावशाली था कि इस प्रकार की हड़ताल को, कर्मचारियो को कारखाने से जबर्दस्ती निकाल कर ही तोड़ा जा सकता था।

फ्लिण्ट और पास के डेट्रायट मे बहुत उत्तेजना फैली जनरल मोटर्स के प्रबन्धकों तथा कम्पनी द्वारा प्रवर्तित कथित वफादार कर्मचारियो के ऐसो-

सियेशन ने बैठे रहो हडताल को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों पर गैरकानूनी हमला बताकर हड़तालियो को तुरन्त निकाल बाहर करने की माँग की। मार्टिन ने इसके जवाब मे आरोप लगाया कि जनरल मोटर्स मजदूरों के सम्पत्ति अधिकारो पर हमला करना चाहता है।

उसने माँग की · "आज संसार मे आदमी के काम करने के अधिकार से ज्यादा पवित्र और कौन सा सम्पत्ति का अधिकार है। इस सम्पत्ति अधिकार मे अपने बच्चो व परिवार का भरण-पोषण, भूख को दरवाजे से दूर रखना शामिल है। यह अमरीकी गृहस्थ की आधारशिला है,· अमरीका मे सबसे पवित्र, सबसे बुनियादी सम्पत्ति सबन्धी अधिकार है।"

सी. आई. ओ. ने पहले हडताल को आशंका की दृष्टि से देखा और 'बैठ-रहो' के प्रति उसमे उत्साह नही था। इस्पात उद्योग के संगठन कार्य मे जिसकी सफलता को औद्योगिक यूनियनवाद के समस्त कार्यक्रम के लिए बुनियादी चीज समझ जाता था, अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण मोटर उद्योग मे हड़ताल उसके लिए बडी परेशानी पैदा करने वाली थी। किन्तु समर्थन से इन्कार नही किया जा सकता था और सी. आई. ओ. ने जनरल मोटर्स के कर्मचारियो की मदद के लिए यथासभव सब कुछ किया। लेविस ने कहा, "आप लोग निस्संदेह ऐसा वीरतापूर्ण संघर्ष कर रहे है जैसा किसी औद्योगिक विवाद मे हडतालियो ने पहले कभी नही किया। अमरीका की सारी जनता का ध्यान आप पर केन्द्रित है। . ..."

उसके इस वक्तव्य का अन्तिम अंश निस्सन्देह सच था और तब और भी ज्यादा सच हो गया जब फ्लिण्ट मे हिंसा फूट पड़ी और हडतालियो ने 'अधिकृत' कारखानो से टस से मस न होने का दृढ-संकल्प दिखाया। यद्यपि कड़ाके की सर्दी मे कारखाने को गरम रखने की व्यवस्था काट दिए जाने का भी कोई असर नही हुआ। जब पुलिस ने फिशर बाडी प्लाण्ट न० २ मे घुसने की कोशिश की तो उस पर मजदूरो ने जो कुछ हाथ मे आया वही फैंककर मारा जैसे काफी के प्याले, शराब की बोतलें, लोहे की ढिबरियाँ, मोटरो के भारी दरवाजो के कब्जे आदि। जब पुलिस ने लौटकर आँसू गैस के बमों से हमला किया तो हडतालियो ने कारखाने के पानी के पाइप से उन पर पानी की तेज बोछार डालकर बदला लिया। अन्त में पुलिस को जल्दबाजी मे उस संघर्ष

से पीछे हटना पड़ा जिसे प्रसन्न मज़दूरो ने "दौड़ते साँड़ों की लड़ाई" का नाम दिया।

हड़ताल को जारी रहते हफ्ते पर हफ्ता बीतता चला गया और जनरल मोटर्स के कर्मचारी 'बैठे-रहो' हड़ताल पर दृढ रहे। उनके लिए रसद धरना-पंक्तियो के जरिये पहुँचाई जा रही थी। अनुशासन बहुत कड़ा था। उस समय के एक यूनियन संगठनकर्ता ने इस घटना का विवरण इस प्रकार लिखा : "अत्यन्त तेज़ प्रकाश से दीप्तिमान इस विशाल कारखाने मे हडतालभजको तथा अन्य अनधिकृत प्रवेशको को घुसने से रोकने तथा इमारत व उसके अन्दर की चीज़ों की रक्षा के लिए अन्दर व बाहर दोनो तरफ से रक्षा की कड़ी व्यवस्था की गई थी। इन हड़तालियो ने कम्पनी के साँचो की विशेष रूप से रक्षा की। कारखाने के अहाते मे किसी को शराब लाने की अनुमति नही दी गई, कारखाने के अन्दर धूम्रपान की सख्त मनाही थी। कारखाने के अन्दर ४५ व्यक्तियो को पुलिस की तरह चौकसी करने का काम सौंपा गया था, उनकी ज़बान ही कानून था।"

अब कम्पनी तथा फ्लिण्ट अलाएस दोनो ने यह माँग की कि पुलिस के असफल रहने पर हडतालियो को कारखाने से बाहर निकालने के लिए राज्य की मिलीशिया बुलाई जाए। किन्तु मिशीगन के गवर्नर मर्फी ने, जिसे हड़ताली ऑटोमोबाइल कर्मचारियो से सहानुभूति थी और निश्चित रूप से होने वाले रक्तपात का डर था, यह कदम उठाने से इन्कार कर दिया। किन्तु अन्त में जनरल मोटर्स ने अदालत से आदेश प्राप्त किया जिसमे हड़ताली मजदूरो को हुक्म दिया गया था कि वे ३ फरवरी को तीसरे पहर तीन बजे तक कारखाना खाली कर दें वरना उन्हे कैद और जुर्माने की सजा भुगतनी पडेगी। किन्तु हड़ताली अब भी अविचलित रहे। उन्होने गवर्नर को तार दिया : "हम मज़दूरो को 'बैठे-रहो' हडताल करते हुए एक महीने से ज्यादा हो गया है, जिस बीच जनरल मोटर्स कार्पोरेशन को कानून का पालन कर सामूहिक सौदेबाजी में भाग लेना चाहिए था। चूँकि हम निहत्थे है इसलिए हथियार बन्द मिलीशिया, शेरिफ या पुलिस को लाने का मतलब निहत्थे लोगों का खून करना होगा... हमने कारखाने मे बैठे रहने का ही निश्चय किया है।"

यह समझते हुए कि हड़तालियों के इस वक्तव्य का क्या अभिप्राय है,

मर्फी ने हवड-दवड़ में एक शाति सम्मेलन बुलाया। जॉन एल. लेविस डेट्रायट भागा गया और उपाध्यक्ष कुण्डसेन से वार्ता शुरू कर दी जिसे गवर्नर मर्फी ने लेविस से बातचीत करने को मना लिया था। किन्तु ३ फरवरी का प्रात.काल बिना कोई समझौता हुए ही आ गया। कारखानो में बैठे रहो हड़ताल करने वालो की सुरक्षा के लिए बाडे लगा दिये गए थे, वे लोहे की ढिबरियो और दरवाज़ों के कब्जो से लैस थे और हलकी कपडे की नकाब देकर प्रत्याशित आँसू तथा उलटी की गैस से सुरक्षित कर दिये गए थे। घिरे हुए सयत्रो से बाहर सहानुभूति रखने वाले हजारो मजदूरो और महिलाओ की आपातकालीन ब्रिगेड के सदस्य परस्पर भिड रहे थे, जबकि ट्रको पर लगाये गए लाउडस्पीकरों से "एकता हमेशा के लिए" का नारा बुलन्द किया जा रहा था।

नियत समय आया और गुज़र गया। गवर्नर मर्फी ने राष्ट्रीय रक्षक दल को अदालत के आदेश पर अमल करने का हुक्म देने से इन्कार कर दिया। बढते हुए दबाव के बावजूद वह ऐसा कदम नही उठाना चाहता था जिससे न जाने कितने बडे पैमाने पर हिंसा फूट पडती।

अगले दिन गवर्नर मर्फी के साथ राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने भी बातचीत जारी रखने की प्रार्थना की और लेविस कुण्डसेन-वार्ता फिर प्रारम्भ हो गई जिसमें जनरल मोटर्स तथा हडतालियो दोनो के अन्य प्रतिनिधियो ने भी भाग लिया। पूरे एक सप्ताह तक जब तक कि हडताली अपने किले के अन्दर दृढता से डटे रहे, सम्मेलन चलता रहा और अन्त में श्रान्त और क्लान्त गवर्नर यह घोषणा कर सका कि समझौता हो गया है। जनरल मोटर्स ने यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स को अपने सदस्यो के लिए सामूहिक सौदे-बाजी के एजेण्ट स्वीकार करना, हडतालियो के खिलाफ निरोधादेश की कार्रवाई को रद्द करना, यूनियन सदस्यो से साथ किसी किस्म का कोई भेदभाव न करना और काम जल्दी कराये जाने तथा अन्य प्रकार की शिकायतो पर विचार करना मंजूर कर लिया।

यह यूनियन की पूरी विजय नही थी। यू. ए. डब्लू. ने जनरल मोटर्स के सभी कर्मचारियो के लिये एकमात्र सौदेबाज़ी के अधिकार की, एक-से न्यूनतम वेतन तथा ३० घण्टे के सप्ताह की माँग की थी। किन्तु "बिग स्टील" के साथ एस. डब्लू. ओ सी. के समझौते की तरह एक और यूनियन विरोधी किले पर कब्जा कर लिया गया था। समस्त मोटर उद्योग के पूर्ण यूनियनीकरण की

तरफ संगठित मजदूरों ने पहला कदम उठा लिया था। बैठे-रहो हड़ताल की वैधानिकता या नैतिकता के बारे में कुछ भी कहा जाए, इसके परिणाम इसकी प्रभावशालिता के साक्षी थे।

जनरल मोटर्स में मोटर कर्मचारियों की सफलता से देश के सब हिस्सों में यूनियनों द्वारा बैठे-रहो हडताल करने का रिवाज फैल गया। क्रिसलर कार्पोरेशन के कर्मचारियों ने शीघ्र ही इसका अनुगमन किया और जनरल मोटर्स में ४४ दिन की बैठे-रहो हडताल के मुकाबले मे यहाँ कुछ ही दिनों की बैठे-रहो हडताल में वे यूनियन को मान्यता दिलाने तथा जनरल मोटर्स के जैसी ही सामूहिक सौदे-बाज़ी का समझौता प्राप्त करने में सफल हुए। मोटर कम्पनियों में वस्तुत. सिर्फ फोर्ड ही और चार वर्ष तक यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स के सगठन करने के प्रयत्नों का सफलतापूर्वक मुकाबला करती रह सकी।

मज़दूरों के इस नए हथियार का प्रभाव अन्य उद्योगों पर भी पडा। सितम्बर, १९३६ और जून १९३७ के बीच लगभग ५ लाख मजदूरों ने बैठे-रहो हडतालें की। रबड, काँच व कपडा कर्मचारी अपनी बैंचों पर बैठे रहे। वूलवर्थ के हडताली क्लर्क अपने काउण्टरों के पीछे बैठे रहते और गाहकों से कोई पूछताछ नही करते थे, पाई (एक प्रकार का पकवान) पकाने वालों, ऐनक बनाने वालो, पोशाक बनाने वालो और बगलों के चौकीदारों ने बैठे-रहो हडताल कर दी। इस तरह की सबसे लम्बी हडताल फिलाडेल्फिया में १८०० बिजली कर्मचारियों की थी। इसमें दो नव-विवाहित पुरुषों की सुहागरातों के दिन गुजर गए और ६ अन्य विवाहित कर्मचारियों की पत्नियों ने अपने घर लौटते हुए पतियों का नव-जात शिशुओं से स्वागत किया।

समस्त देश में जब मजदूरों ने यूनियन-विरोधी मालिकों को 'सीधा' करने के लिये इस उग्र तरीके को अपनाया तो वे विद्रोह का एक गीत बडे उत्साह से गाते थे :

जब वे किसी यूनियन सदस्य को. काम से हटा दें
तब बैठ जाओ! बैठ जाओ!

भले ही वे उसे बर्खास्त कर दे, पर वे उसे वापस लेंगे
बैठ जाओ ! बैठ जाओ !
जब तेजी से काम करने को कहा जाए तो अपने अंगूठे चटका दो
बैठ जाओ ! बैठ जाओ !
जब मालिक बात नही करे तो चलो नही
बैठ जाओ ! बैठ जाओ !

इन हडतालो ने लोगो मे रोष उत्पन्न कर दिया। सम्पत्ति के अधिकारों पर इतने निधड़क आक्रमण की अनुदार-पंथी अखबारो ने जी खोल कर निंदा की और किसी भी क्षेत्र मे बैठे-रहो हड़ताल का समर्थन नही किया गया। अप्टन सिक्लेयर ने कैलीफोर्निया से भले ही यह लिखा हो कि "७५ वर्षों से बडे उद्योगपति अमरीकी लोगो पर बैठे हुए थे अब इस प्रक्रिया को उलटते देख कर मुझे खुशी है।" किन्तु मजदूरो से सहानुभूति रखने वालो मे से भी शायद ही किसी ने इस भावना की दाद दी हो। ए एफ एल. ने साफ-साफ विरोध किया और यद्यपि सी. आई. ओ. ने इसका समर्थन किया तो भी बैठे रहो हडताल के आम प्रयोग के लिए अधिकृत स्वीकृति कभी नही दी गई। गरमागरम और कटुतापूर्ण बहस के बाद सेनेट ने निश्चय किया कि ऐसी हडतालें "गैर-कानूनी और सार्वजनिक नीति" के खिलाफ हैं और अदालतो ने भी उन्हें अन्ततः निजी सम्पत्ति पर अतिक्रमण बतला कर कानून के खिलाफ घोषित कर दिया।

१९३७ के प्रथमार्ध मे इस बैठे-रहो हड़ताल ने यद्यपि बड़ी उथल-पुथल मचाई तो भी यह अस्थायी चीज साबित हुई और जितनी जल्दी इसे स्वीकार किया गया उतनी ही जल्दी इसे छोड़ भी दिया गया। यूनियनवाद-विरोधी गढो मे मान्यता के लिए संघर्ष करने और मालिको द्वारा वागनर ऐक्ट की व्यवस्थाओ का पालन करने से इन्कार किए जाने से उत्पन्न कटुता के कारण ही नए और अधीर यूनियन सदस्यो ने इस प्रकार की हड़ताल को शीघ्रता से अपनाया था। जब वागनर ऐक्ट पर अमल कराया गया और एन. एल. आर. बी. ने सामूहिक सौदे-बाजी की इकाइयो के लिए चुनाव करवाने का अधिकार प्रदान किया तो बैठे-रहो हडतालो का परित्याग कर दिया गया।

किन्तु इससे पूर्व ही १९३७ की हड़तालो ने लोकमत को काफी क्षुब्ध कर दिया था और मजदूरों को बैठे-रहो के कारण लोक-निंदा सबसे ज्यादा सहनी पडी। गैल्पपील की रिपोर्टों से जाहिर हुआ कि जिन लोगो से पूछ-ताछ की गई। उनमे से अधिकाश ने मजदूरो के इस नए हथियार का विरोध किया जब कि ७० प्रतिशत ने यह कहा कि यूनियनो पर अंकुश लगाने के लिए नए कानून बनाने की जरूरत है। बैठे-रहो हडतालें उससे ज्यादा गैर-कानूनी नही थी जितनी उद्योग द्वारा एन. एल. आर. बी. 'के बन्द करो और बाज आओ' आदेशो को मानने से इन्कार कर देना किन्तु इससे जो आशंका और भय उत्पन्न हुआ वह आसानी से शान्त नही हुआ।

तथापि समस्त १९३७ मे सी. आई. ओ. की गतिविधियों का तात्कालिक प्रभाव था समस्त सम्बद्ध यूनियनो के लिए अत्यधिक लाभो की प्राप्ति। जहाँ इस्पात और मोटर उद्योगो मे प्राप्त नाटकीय विजयें सामूहिक उत्पादन के उद्योगो पर आम चढाई के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण फल थे वहाँ अन्य घटनाए भी घटी, जिन्होने मजदूर-जगत मे क्राति लाने मे अपना भाग अदा किया। अन्यो के अलावा रबड कर्मचारियो रेडियो और बिजली कर्मचारियो, लकडी का काम करने वालो और गोदी कर्मचारियो मे सगठित अभियानों के जरिये शक्तिशाली यूनियनो का निर्माण हुआ। सिडनी हिलमैन के कुशल प्रबन्ध मे नई कपड़ा कर्मचारी संगठन समिति का अभियान इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था कि यह बहुत-सी दक्षिणी मिलो मे संगठन कायम करने मे सफल हुई जब कि ए. एफ. एल. वहाँ कोई भी प्रगति करने मे कामयाब नही हुआ था। यूनियन के हजारो सदस्य उन कम्पनी नगरो मे बनाए गए, जहाँ पहले मजदूर सगठनकारियो को आने का साहस भी नही हुआ था और एक वर्ष के अन्दर ही यूनियन ने समस्त उद्योग मे सामूहिक सौदे-बाजी के सैंकडो समझौतो पर दस्तखत किए।

सन् १९३७ मे सी आई. ओ. की वास्तविक शक्ति से भी महत्त्वपूर्ण बात संगठित मजदूरो के लिए सामान्यत. वह व्यापक आधार था जो इसके अभियान ने अन्तत: प्राप्त किया था। उस समय इसके सदस्यो में ६ लाख खनिक, ४ लाख मोटर कर्मचारी, ३,७५,००० इस्पात कर्मचारी, ३ लाख टैक्सटाइल कर्मचारी, २५०,००० महिला पोशाक कर्मचारी, १,७६,००० कपड़ा कर्मचारी, तथा एक लाख कृषि व पैकिंग कर्मचारी थे। सी. आई. ओ. ने अदक्ष कर्म-

चारियो की औद्योगिक यूनियने सफलतापूर्वक बना ली थी और ए. एफ. एल. द्वारा पोषित शिल्प यूनियनवाद की संकीर्ण सीमाग्रो को भग कर डाला था। इसने रंग, लिग अथवा राष्ट्रीयता का कोई खयाल किए विना आव्रजको, नीग्रो और महिलाओ सभी का स्वागत किया, जैसा कि ए. एफ. एल. ने कभी नही किया था।

इसके अलावा सी. आई. ओ. का प्रभाव समस्त मजदूर मोर्चे पर फैला हुआ था। जैसा कि पहले कहा जा चुका है ए. एफ. एल. ने शीघ्र ही यह भाँप लिया कि वह अदक्ष कर्मचारियो की उपेक्षा नही कर सकता जब कि उसके प्रतिद्वन्द्वी ने उनका सगठन करने में इतनी प्रगति की है। किन्तु ऐसा उसने सर्वात्मना कभी नही किया। मशीन और हिस्से को जोडने के काम मे तरक्की हो जाने से दक्ष, अर्धदक्ष और अदक्ष कर्मचारियो के बीच विभाजक रेखा इतनी धुँधली हो गई थी कि ए एफ एल की बहुत सी यूनियनो मे ये सब शामिल थे। जैसा कि हमने कोयला खनिको और पोशाक उद्योग के कर्मचारियो में सगठन के विकास पर दृष्टिपात करते हुए देखा फेडरेशन मे औद्योगिक यूनियनें सदा रही किन्तु इस्पात मोटर तथा सामूहिक उत्पादन के अन्य उद्योगो मे जो कुछ हासिल कर लिया गया था उसको देखकर ए एफ एल को यूनियन बनाने के सब अवसरो का लाभ सी आई ओ को उठाने से रोकने के लिये अपने निज के सगठन का विस्तार करने की आवश्यकता महसूस हुई। हजारो कर्मचारी जिनकी दक्षता औद्योगिक यूनियनो मे आम मजदूरो की दक्षता से किसी कदर ज्यादा नही थी, इस प्रकार की बहुशिल्पीय या अर्ध-औद्योगिक ए एफ. एल यूनियनो मे शामिल हुए—जैसे मशीन चालको, ब्वायलर निर्माताओ, मास काटने वालो, भोजनालय कर्मचारियो, तसला उठाने वाले तथा अन्य सामान्य मज़दूरो तथा ड्राइवरो की यूनियनें। पहले से ज्यादा मेहनत से काम करते हुए जहाँ कही संभव हुआ, नए सदस्य भर्ती किए, अगरचे उसका विकास इतना नाटकीय नही हुआ जितना सी. आई ओ का, तो भी ए एफ एल. के सदस्यो की सख्या भी काफी बढी। बहुत-सी यूनियनो के ए एफ एल मे से निकल कर प्रतिद्वन्द्वी सी. आई. ओ. मे चले जाने पर भी जैसा कि हमने देखा, १९३७ के अन्त मे ए एफ एल. के १९३३ की अपेक्षा १० लाख अधिक सदस्य थे।

ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. दोनो ही एक दूसरे से मुकाबले की भावना से अपनी ताकत बढ़ाते रहे। ए एफ. एल ने इस होड़ मे औद्योगिक यूनियनें बनानी शुरू कर दी और सी. आई. ओ ने शिल्प-यूनियनो के निर्माण मे संकोच नही किया। जब मजदूर नेताओ ने अधिकाधिक यह महसूस कर लिया कि संगठन बनाने के लिये कोई एक फार्मूला नही है और काम की विभिन्न परिस्थितियां के कारण यूनियन संबन्धी समस्याओ पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है तब पुराने प्रश्नो पर विवाद, जिनके कारण मजदूर आन्दोलन मे फूट पडी थी सिर्फ खयाली विवाद ही रह गए। सामूहिक उत्पादन के उद्योगो मे जहाँ अधिकाश औद्योगिक यूनियनें सी आई ओ की थी और ए एफ एल मे अब भी शिल्प यूनियनो का अनुपात ज्यादा था, वहाँ पुराने भेद प्राय. छिन्न-भिन्न हो गए और दोनो सगठन, एक-दूसरे के साथ अधिक समता प्राप्त करते हुए सब आगन्तुकों का स्वागत करने को तैयार थे।

इन घटनाओ का एक दु.खद परिणाम दोनो प्रतियोगी यूनियनो मे अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी झगडो का होना था। ए एफ एल. के खाती सी. आई. ओ के लकड़ी पर काम करने वालो से झगड पड़े, सी आई ओ के मोटर कर्मचारी ए. एफ एल के मशीनचालकों से जूझ पडे। गोदी कर्मचारियो, टैक्सटाइल मजदूरो, बिजली कर्मचारियो, खाद्य सामान पैक करने वाले कारखानो के कर्मचारियो तथा खुदरा क्लर्कों मे ए एफ एल तथा सी. आई ओ के सदस्य अन्धाधुन्ध भिड पडे। यूनियन पर हमला करने, हडतालियो की जगह काम करने और आपस मे धोखेबाजी के आरोपों से आकाश गुंजायमान हो उठा। इस आपसी विवाद की कटुता प्राय. श्रम-पूंजी के झगड़ो से भी बढ़ जाती थी। दोनो संगठनो के एक-दूसरे पर द्वेषपूर्ण आक्षेप और ए एफ. एल. अथवा सी. आई. ओ के अन्दर कभी-कभी होने वाले सघर्ष अनेक बार उद्योगों पर मजदूरो के आक्षेपो से ज्यादा उग्र होते थे। सिर्फ अधिकार-क्षेत्र के मामले पर ही बार-बार हडतालें होने लगी जिससे उनसे सबसे निकट रूप से सम्बद्ध मजदूरों की और सामान्यत. समस्त संगठित मजदूर आन्दोलन की अपार क्षति हुई।

अपनी-अपनी यूनियनो के लिए मान्यता प्राप्त करने के हेतु ए एफ एल. और सी आई. ओ अपने सघर्ष मे नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड को भी घसीट लाए। इस एजेंसी का लक्ष्य इस बात के लिए निष्पक्षता से चुनाव कराना था

कि कौन-सी यूनियन कर्मचारियों की तरफ से सामूहिक सौदेबाजी करने की हकदार है किन्तु इसके काम मे उद्योग द्वारा नही बल्कि मज़दूरों द्वारा किए गए आक्षेपो से बार-बार रुकावट पड़ी। दोनो मजदूर कैम्पो मे इसकी सख्त आलोचना हुई, यही बात शायद उसकी निष्पक्षता के सफल होने का सबूत थी किन्तु इस प्रकार की आलोचना से उन लोगो को मसाला मिल गया जो इस पर अपने अधिकार-क्षेत्र का उल्लंघन करने और उद्योग-विरोधी भावना जाहिर करने के व्यापक आधार पर इस पर चोट कर रहे थे। मजदूरो का आन्तरिक कलह न केवल उनकी अपनी शक्ति को खत्म कर रहा था बल्कि यूनियनो को मान्यता दिलाने के लिए स्थापित सरकारी एजेंसी के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न कर रहा था।

१९वी सदी के मज़दूर नेताओं का एकता का उज्जवल स्वप्न बिखर गया। यह कहा जा सकता है कि अगर मजदूर आन्दोलन में बहुत ज्यादा एकता होती तो ज्यादा केन्द्रीभूत प्राधिकार और तानाशाही नेताओ द्वारा जो शायद लोकतंत्री प्रक्रियाओ की उपेक्षा कर देते, मजदूरो पर राष्ट्रव्यापी नियंत्रण का खतरा उत्पन्न हो जाता। मज़दूरों के संगठन में विविधता इस खतरनाक संभावना के विरुद्ध एक आश्वासन है। फिर भी सगठित मज़दूर की स्थिति अपने या लोकमत के दृष्टिकोण से इतनी सबल नही थी, जितनी कि हो सकती थी, बशर्ते कि शिल्प बनाम औद्योगिक यूनियनवाद पर मूल झगडे मे अथवा बाद मे ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. के विलय के प्रयत्नो मे समझदारी से काम लिया गया होता। १९३० की दशाब्दी की समाप्ति पर यह व्यापक रूप से अनुभव किया जाने लगा कि जब तक फिर से अधिक एकता स्थापित नही हो जाती तब तक सगठित मज़दूर जिम्मेदारी से काम नही कर सकते जो कि, अगर उन्हे हमारी आर्थिक प्रणाली की स्थिरता को कायम रखने और सामाजिक लोकतंत्र का आधार व्यापक करने में अपना पूरा भाग अदा करना है, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

१७ : मज़दूर और राजनीति

न्यू डील के आगमन के साथ ही राजनीति मे मज़दूरो के रोल का नया महत्त्व सामने आया। औद्योगिक सम्बन्धों में जब सरकारी हस्तक्षेप इतने व्यापक स्तर पर हुआ, तब मजदूरो की आकांक्षाओ के प्रति सहानुभूति रखने वाले राष्ट्रीय-प्रशासन तथा कांग्रेस को शासनारूढ़ रखना पहले से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया। जब सेम्युअल गौम्पर्स न्यूनतम वेतन, बुढ़ापे की पेंशन तथा बेकारी के बीमे का उन्हें "लोगो की नैतिक शक्ति को क्षीण करने वाला" बता कर विरोध किया करता था, उन दिनो में ए. एफ. एल. की लाबी हरकतो से पूर्ण किए जाने वाले उद्देश्यो से अब राष्ट्र के मज़दूरों की आवश्यकता पूरी नही होती थी। विशेषकर नई औद्योगिक यूनियनें न्यू डील कानूनो द्वारा प्रदान किए गए संरक्षण पर निर्भर करती थी। फलतः वे वाशिंगटन में मज़दूर-पक्षपाती सरकार कायम रखने के लिए यथाशक्ति सब कुछ करने को उद्यत थी।

किन्तु राजनीति मे पहले से अधिक भाग लेने के इस स्पष्ट रुझान का सिर्फ यही कारण नही था कि नए मज़दूर-कानूनो को प्रभावशाली ढग से अमल कराने की इच्छा थी। रूज़वेल्ट कार्यक्रम मे निहित बड़े मामलो को लोग ज़्यादा समझ रहे थे। मज़दूर सामान्यतः महसूस करते थे कि न्यू डील अमरीकी लोकतन्त्र मे प्रगतिशील ताकतो का प्रतिनिधित्व करता है जो जनसामान्य के हित मे लोकप्रिय सरकार की जैक्सन के दिनो की परम्परा को निबाह रहा है। न्यू डील का समर्थन करते हुए लोकतन्त्रीय पूँजीवाद के सब फलितार्थ स्वीकार किए गए। मज़दूर औद्योगिक कामनवेल्थ या एक समाजवादी राष्ट्र की बात नही सोचते थे। इसका उद्देश्य हमारे आर्थिक और सामाजिक जीवन में उन परिस्थितियो को लाना था जिनमे स्वतन्त्र व्यवसाय-प्रणाली अधिक-से-अधिक सामाजिक न्याय के साथ काम कर सके।

यह स्वाभाविक ही था कि इस राजनीतिक हलचल में सी. आई. ओ. ए. एफ एल. से ज़्यादा उग्र रहती। इसकी उदार और विद्रोही भावना को, जो

औद्योगिक यूनियनवाद की वकालत मे इसकी खास बात रही, सामाजिक सुधारो की प्रगति में काम मे लाया गया। यद्यपि मज़दूरो के दोस्तो को पुरस्कृत करने और इसके दुश्मनो को दण्डित करने की पुरानी परिपाटी का वस्तुत: तिलांजलि नही दी गई तो भी इस नीति को कार्यरूप देने मे सी. आई. ओ. बहुत आगे तक बढ़ गया। ए. एफ. एल. के विपरीत, जो राष्ट्रपति के चुनावो मे निष्पक्षता अपनाए रहा, यह राष्ट्रपति रूज़वेल्ट का जोरो से समर्थन करने को तैयार था।

ए एफ एल. की मजबूती से जभी शिल्प यूनियनो की अपेक्षा सी. आई. ओ की सदस्य औद्योगिक यूनियनें भी यह ज्यादा अच्छी तरह समझती थी कि किस हद तक सभी मज़दूर सरकार पर निर्भर हो गए है। मन्दी के अनुभव ने उन्हे विश्वास करा दिया था कि राष्ट्र के आर्थिक जीवन पर अभी और नियन्त्रणो की आवश्यकता है।

सामूहिक उत्पादन के उद्योगो के बारे मे लेविस ने लिखा कि "सगठन करने के अधिकार की गारण्टी के साथ इस प्रकार के उद्योगो मे यूनियनें स्थापित की जा सकती है किन्तु दूसरी ओर उनके सदस्य मज़दूरो के लिए बेहतर जीवन-स्तर, काम के कम घण्टो, और रोजगार की सुधरी हुई हालतो की तब तक आशा नही की जा सकती जब तक आर्थिक आयोजन, मूल्य, उत्पादन तथा मुनाफा-नियन्त्रण के लिए कानूनी या अन्य व्यवस्थाएँ नही कर दी जाती। इन बुनियादी परिस्थितियो के कारण औद्योगिक मजदूरो के सामने यह स्पष्ट है कि मज़दूर आन्दोलन को न केवल आर्थिक क्षेत्र मे बल्कि राजनीतिक क्षेत्र मे भी स्वय को सगठित कर अपना प्रभाव डालना चाहिए...।"

इस कार्यक्रम को आगे बढाने के लिए सी. आई. ओ के नेताओ ने १९३६ मे मजदूरो की एक नान-पार्टिजन लीग कायम की और न्यूयार्क मे एक अमरीकी मज़दूर दल कायम किए जाने का समर्थन किया। इन कदमो का मुख्य उद्देश्य रूज़वेल्ट को जिताना था और इसके लिए ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. यूनियन का सहयोग प्राप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया गया। नान-पार्टिजन लीग का पहला अध्यक्ष ए. एफ. एल. से सम्बद्ध प्रिंटिंग प्रेस यूनियन का जार्ज एल-बेरी था। किन्तु बहुत-से राज्य मज़दूर-सघो तथा सदस्य यूनियनो ने जहाँ लीग से सहयोग किया, वहाँ ए. एफ. एल. का

अधिकृत तौर पर उससे कोई सम्बन्ध नहीं था। कार्यकारी परिषद् राजनीतिक मामलो पर विभक्त हो गई। रिपब्लिकन लेबर कमेटी के अध्यक्ष विलियम हुचेसन तथा डैमोक्रैटिक लेबर कमेटी के अध्यक्ष डेनियल टोबिन थे ग्रीन ने यद्यपि स्वत: रूज़वेल्ट का समर्थन किया, तथापि उन्होने आर्थिक क्षेत्र मे सी॰ आई॰ ओ. को द्वैध आन्दोलन बताने के समान राजनीति मे नान-पार्टिज़न लीग को द्वैध आन्दोलन बताकर उसकी निन्दा की।

किन्तु सी॰ आई. ओ॰ तथा नई औद्योगिक यूनियनों की स्थिति के बारे मे कोई सन्देह नहीं था। नान-पार्टिज़न लीग के अभियान-कोष में भारी चन्दे दिए गए। अकेले यूनाइटेड माइन वर्कर्स ने ही ५ लाख डालर दिए और लेविस ने न्यू डील के असदिग्ध समर्थन का आह्वान किया। उसने कहा : "अब तक अन्य किसी भी राष्ट्रपति की अपेक्षा रूज़वेल्ट के शासन मे मजदूरो ने ज्यादा लाभ प्राप्त किए है। स्पष्ट ही मजदूरो का यह कर्त्तव्य है कि आगामी चुनाव मे वे रूज़वेल्ट का १०० प्रतिशत समर्थन करें।"

डैमोक्रैटो ने मज़दूरो के समर्थन की अपील की थी और उनके लिए इसकी आशा करना उचित भी था। रूज़वेल्ट प्रशासन ने मन्दी से उत्पन्न समस्याओ को प्रत्यक्षत: हल करने की कोशिश की और लोगो को वापस काम पर लगाने, वेतन बढ़वाने तथा यूनियनो के सगठन के प्रति मुख्य रूप से अपनी चिन्ता प्रदर्शित की। डैमोक्रैटिक मंच से वायदा किया गया, "हम मज़दूर की और मज़दूरी कमाने वाले और उपभोक्ता के रूप मे उसके अधिकारो की रक्षा करते रहेंगे।" रिपब्लिकनो ने भी संगठन करने के अधिकार की रक्षा करने का वचन दिया किन्तु उनका न तो पिछला रिकार्ड और न सामान्य रवैया इस बात का विश्वास दिला सकता था कि मजदूरो के व्यापक लक्ष्यो को उनसे वह समर्थन प्राप्त होगा जो उसे न्यू डील के अन्तर्गत प्राप्त रहा है।

१९३६ का चुनाव-संघर्ष बडा कड़ा रहा। अमरीकी समाज मे जो मत-विभेद उत्पन्न हो गए थे उन्होने पार्टी लाइन की परवाह नही की और एक वर्ग को दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया जैसा कि उसके बाद से नही हुआ था जब कि ४० वर्ष पूर्व पोपुलिज्म ने प्रभुत्व-सम्पन्न व्यावसायिक वर्ग के रूढ़िवादी शासन को चुनौती दी थी। भूतपूर्व राष्ट्रपति हूवर तथा लिबर्टी लीग ने जहां आरोप लगाया कि सरकार "सर्वोर्णतावाद,

समाजवाद और फासिज्म के विदेशी सिद्धान्तो को अमरीकी समाज में स्थान दे रही है", वहाँ रूज़वेल्ट ने भी यह प्रत्यारोप लगा कर कि "आर्थिक अविपति" सरकार को अपने मामलो का सिर्फ एक पुछल्ला समझते हैं, कम तेज़ी से प्रत्याक्रमण नही किया। उन्होने कहा कि "सगठित पूँजी की सरकार" संगठित भीड़ की सरकार से कम खतरनाक नही है।

१९३६ का चुनाव जीतने में ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. दोनों मज़दूर-सगठनो के सदस्यो के वोटो ने रूज़वेल्ट की बडी मदद की। पुनरुत्थान और सुधार के एक सजीव कार्यक्रम के प्रति राष्ट्रव्यापी सहयोग में मज़दूर देश के अन्य उदार तत्त्वो के साथ मिल गए थे। मज़दूर औद्योगिक सम्बन्धो तथा सामाजिक सुरक्षा की नई व्यवस्था के अलावा किसानो को राहत दिए जाने और व्यावसायिक सुधारो का भी समर्थन कर रहे थे; यह आर्थिक पुनरुत्थान के एक कार्यक्रम का भी जो वर्धमान व्यावसायिक हलचल तथा ज्यादा कृषि-आय मे प्रतिक्षिप्त हो रहा था, वैसा ही समर्थन कर रहे थे जैसा बेकारी कम करने और वेतन बढ़ाए जाने का।

नौन-पार्टिज़न लीग की चुनाव-अभियान सम्बन्धी हलचलें और न्यूयार्क में अमरीकी मज़दूर दल द्वारा रूज़वेल्ट के पक्ष मे प्राप्त किए गए वोट राजनीति मे मजदूरो की सीधी कारंवाई के महत्त्व को ज़ाहिर करते प्रतीत होते थे। सी आई ओ. ने एक व्याापक विधि-सम्बन्धी कार्यक्रम बनाया और नौन-पार्टिज़न लीग ने उद्देश्यो की एक नई घोषणा करते हुए कहा कि भावी चुनावो मे वह इस बात का प्रयत्न करेगी कि मज़दूरो का तथा अन्य प्रगतिशील विधि-विधानो का समर्थन करने का वचन देने वाले उम्मीदवारो की ही नामज़दगी हो और वही चुने जाएँ। वह ऐसे हर किसी प्रगतिशील ग्रुप के साथ काम करने को तैयार थी 'जिसका उद्देश्य उदार और मानवतावादी कानून बनवाना हो।"

नौन-पार्टिज़न लीग ने अगले कुछ वर्षों मे पेंसिलवेनिया में डैमोक्रैटिक पार्टी पर नियन्त्रण स्थापित करने की कोशिश करते हुए न्यूजर्सी की राजनीति मे सक्रिय भाग लेते हुए, और डेट्रायट मे मज़दूर-प्रशासन स्थापित करने के आन्दोलन का समर्थन करते हुए कई राज्यो मे स्थानीय चुनाव लड़े। न्यूयार्क मे अमरीकी मजदूर दल ज्यादातर सिलाई-मज़दूरो की यूनियन के समाजवादी विचारो वाले सदस्यो का था, किन्तु इसे मजदूरो के बाहर उदार विचार

वाले बहुत से अन्य लोगो का भी समर्थन मिला, जिससे वह १९३७ में मेयर ला गार्दिया के पुर्ननिर्वाचन में ५ लाख वोट प्राप्त कर सका। राष्ट्रीय स्तर पर न्यू डील संबन्धी कानूनो का, सुप्रीम कोर्ट के पुनर्गठन के लिए राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के कार्यक्रम का और इन्ही के अनुरूप अन्य सुधार-कार्यक्रमो का समर्थन•किया जाता रहा। नान-पार्टिज़न लीग १९३८ के काँग्रेस के चुनावो मे कूद पड़ी और न्यू डील के समस्त विरोधियो को हराने और पार्टी लेबल की परवाह किए विना अपने अनुयायियो को जिताने की उसने पूरे जोर से कोशिश की।

१९३० की दशाब्दी के आखिरी हिस्से की इस राजनीतिक गतिविधि में एक महत्त्वपूर्ण भाग सिडनी हिलमैन ने अदा किया, यद्यपि सन् १९४४ में सी. आई. ओ. की राजनीतिक कार्रवाई समिति के निर्माण के साथ उसने और भी महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया। मज़दूर और प्रबन्धको के बीच "रचनात्मक सहयोग" का जबर्दस्त समर्थन करते हुए वह मज़दूरो से व्यापक पैमाने पर राजनीति में भाग लेने का भी अनुरोध किया करता था जिससे उपरोक्त सहयोग को संभव बनाने के लिए बुनियादी हालात पैदा किए जा सकें। शायद ही कोई और यूनियन राजनीतिक दृष्टि से इतनी जागरूक हो जितनी उसकी ऐमलगमेटेड क्लोदिंग वर्कर्स यूनियन। कभी-कभी जिसे "सामाजिक सुधार करने वाले" यूनियन नेतृत्व का अवतार कहा जाता था और एक साथ ही अत्यन्त व्यावहारिक तथा आदर्शवादी हिलमैन उस वक्त का एक अत्यन्त कुशल मज़दूर नेता था जो यह विश्वास करता था कि अमरीका में एक व्यापक दृष्टिकोण वाले समाज का निर्माण किया जा सकता है।

१९३८ के एक यूनियन सम्मेलन में उसने कहा : "कल के स्वप्नो की पूर्ति कर लेने के बाद अब हमें भविष्य के नए स्वप्नो की पूर्ति मे लग जाना चाहिए जहाँ कोई वेकारी नही होगी और हर स्त्री-पुरुष आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित तथा राजनीतिक दृष्टि से स्वतत्र होगा।"

इस समय में मज़दूरो द्वारा राजनीति में नॉन-पार्टिज़न लीग से भी ज्यादा सक्रिय भाग लेने के प्रश्न पर बहस की गई। मज़दूर दल बनाने का पुराना सवाल, जो अतीत में अनेक बार उठाया जा चुका था, फिर उठाया गया। लीग को कुछ क्षेत्रो मे एक ऐसे आन्दोलन का सभावित केन्द्रविन्दु समझा गया जिसमें मज़दूरों, किसानों तथा अन्य उदार तत्त्वो को एक मंच पर जुटाया जा

सके और तब जो या तो डैमोक्रैटिक दल की मशीन पर कब्जा कर ले या अगर वांछनीय हो तो एक तीसरा स्वतंत्र दल बना ले।

किन्तु इन विचारों ने कोई वास्तविक प्रगति नहीं की। ए. एफ. एल. तो इनमें से किसी से कोई वास्ता ही नही रखना चाहता था और सी. आई. ओ. ने भी आर्थिक सुरक्षा के लिए एक रचनात्मक कार्यक्रम की बार-बार पुकार मचाते हुए भी स्वतंत्र राजनीतिक कार्रवाई का समर्थन नही किया। तीसरा दल स्थापित करने के आन्दोलन के बारे में अतीत के अनुभव इस दिशा में और परीक्षण करने के लिए उत्साह को भंग कर देते थे और कुछ भी हो मज़दूरो के प्रति न्यू डील के मित्रतापूर्ण रवैये ने इसे अवांछनीय बना दिया था। मज़दूर ग्रीन के इस कथन की पुष्टि कर रहे प्रतीत होते थे कि मजदूर कोई वर्ग य जमात नही है किन्तु राष्ट्र के इतने अधिक विभिन्न हितो वाले लोगो का एका अंग है कि मज़दूर दल की कोई वास्तविक सार्थकता नही हो सकती। समस्त १९वी सदी की तरह समाजवाद या अन्य किसी विध्यात्मक विचारधारा में सामान्य विश्वास जैसी कोई परस्पर एक सूत्र में पिरोने वाली चीज नहीं थी। किन्तु मज़दूर अगर यह समझें कि वे अपने मूल उद्देश्यो के प्रति समर्थन पाने के लिए बड़े दलों पर और विशेषकर डैमोक्रैटिक पार्टी पर पर्याप्त प्रभाव नहीं डाल पा रहे हैं तो तीसरे दल के निर्माण का खतरा पृष्ठभूमि में सदा बना रहता था।

तीसरी पार्टी बनती या न बनती, रूढ़िवादी और न्यू डील विरोधी ताकते १९३० की दशाब्दी के आखिरी दिनों मे मज़दूरो द्वारा डाले जाने वाले राजनीतिक दबाव के असर पर अधिकाधिक भयभीत हो उठी। इन प्रभावों का मुकाबला करने के लिये सी. आई. ओ. के कार्यक्रम को क्रांतिकारी और अमरीका और अमरीका विरोधी घोषित किया गया। आरोप लगाए गए कि नौन-पार्टिज़न लीग पर पूरी तरह वामपक्षियों का नियन्त्रण है जो उसे कम्युनिस्ट दिशा में ले जा रहे हैं। नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स तथा मालिको के अन्य ग्रुपो ने इस प्रकार के आक्षेपो के लिए हर अवसर का लाभ उठाया। अनेक यूनियन-विरोधी ग्रुपो द्वारा प्रचारित किए गए एक पर्चे का ध्यानाकर्षक शीर्षक था : "सी. आई. ओ. मे भरती होवो और सोवियत अमरीका के निर्माण

में सहायता दो।" नान-पार्टिज़न लीग तथा अमरीकी मज़दूर दल के सक्रिय नेताओं पर, जिनमें हिलमैन और लेविस को भी शामिल किया गया, कम्युनिज्म के साथ सहानुभूति रखने और मास्को से निर्दिष्ट नीतियो पर अमल करने की इच्छा रखने के आरोप लगाए गए।

कुछ घधकते शोले थे भी जहाँ सी. आई. ओ. के विरोधियो को धुएँ के घने बादल दिखाई देते थे। मजदूर आन्दोलन मे क्रांतिकारी तत्त्व हमेशा मौजूद रहते थे और अतीत में जिनका प्रतिनिधित्व शिकागो-अराजकतावादियों, वामपक्षी समाजवादियो तथा आई. डब्लू. डब्लू. ने किया था, वे अब सामान्यत. कम्युनिस्ट कैम्प मे भरती हो गए थे। उनका मजदूर मोर्चा पहले ट्रेड यूनियन एजुकेशन लीग था जिसे १६१६ मे इस्पात हड़ताल की विफलता के बाद विलियम जेड फौस्टर ने कायम किया था और बाद मे ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग हो गया जिसकी स्थापना १० वर्ष बाद ए. एफ. एल से स्वतंत्र रूप मे औद्योगिक यूनियनवाद का विकास करने के लिये की गई थी। १६३० की दशाब्दी के मध्य मे मास्को पार्टी की लाइन बदल जाने से, जिसके बाद कम्यु-निस्ट फासिज्म के खिलाफ संयुक्त लोकतत्रीय मोर्चे का समर्थन करने लगे, द्वैध यूनियनवाद का परित्याग कर दिया गया और अन्दर से तोड़-फोड करने के पुराने समाजवादी तौर-तरीकों पर लौट आए। कम्युनिस्ट औद्योगिक यूनियनवाद को प्रोत्साहन देने की भरसक कोशिश कर रहे थे और सी. आई ओ. तथा उसकी राजनीतिक संस्थाओं पर नियंत्रण स्थापित करने अथवा कम से कम उस पर हावी हो जाने की आशा कर रहे थे।

सी. आई. ओ. तथा नान-पार्टिजन लीग का निर्माण करने मे लेविस ने उनके अनुभवो तथा संगठन-प्रतिभा का लाभ उठाने मे संकोच नही किया। उसे हर क्षेत्र से मदद की जरूरत थी। उसने कहा: "हमारे पास जो कुछ है, हमें उसी से काम करना है।" यद्यपि वह यह अच्छी तरह समझता था कि कम्युनिस्ट नई यूनियनो का उपयोग अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए करेंगे तो भी वह सोचता था कि जब तक औद्योगिक यूनियनवाद को आगे बढ़ाने मे वे उसे सहयोग दे रहे हैं तब तक वह उनकी राजनीति की उपेक्षा कर सकता है। इस आतिथ्य के फलस्वरूप कम्युनिस्टों अथवा उनके अनुयायियो ने कुछ यूनियनो में और यहाँ तक कि सी. आई. ओ. की उच्च परिषदो मे भी

महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिए। वामपथी और रूढ़िवादी वर्ग जब सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष करने लगे तो यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स में सदा कलह रहने लगा और कम्युनिस्टो से सहानुभूति रखने वाले लोग इलैक्ट्रिकल रेडियो ऐण्ड मशीन वर्कर्स, ट्राँसपोर्ट वर्कर्स, मैरिटाइम यूनियन, दि स्टेट, काउण्टी ऐण्ड म्युनिसिपल वर्कर्स, दि फर ऐण्ड लैदर वर्कर्स और वुड वर्कर्स आव अमेरिका यूनियनो पर अपना नियत्रण स्थापित करने में बहुत कुछ सफल हो गए। ससदीय तौर-तरीको तथा सगठन सम्बन्धी कार्यों में उनके उत्साह तथा अध्यवसाय ने और स्थानीय चुनावो में गुण्डो के आतंककारी दलो द्वारा डाले गए दबाव ने उन्हे अपनी वास्तविक संख्या के अनुपात से कही ज्यादा प्रभाव प्रदान कर दिया था।

अधिकाश यूनियन सदस्यों की, चाहे वे ए. एफ. एल. से सम्बद्ध हों या सी. आई. ओ से, बुनियादी रूढ़िवादिता तथा वफादारी का पहले से ज्यादा अब कोई सवाल नही था। किसी यूनियन के नेताओ के कम्युनिस्ट होने का यह मतलब नही था कि इसके सदस्य कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा को मानते है, बल्कि सिर्फ यही था कि वे किसी के भी ऐसे निर्देश को मानने को तैयार है जिससे कोई परिणाम हासिल हो। जिस प्रकार २५ वर्ष पूर्व क्रांति-विरोधी मज़दूरो ने आई. डब्लू. डब्लू. के संगठनकर्त्ताओ की सहायता स्वीकार की थी, उसी प्रकार १९३० की दशाब्दी के हडताली मजदूर कम्युनिस्टो की सहायता स्वीकार करने को तैयार थे। सी. आई. ओ. का हाई कमाण्ड कम्यु-निस्टो पर अविश्वास करता था क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि वे पार्टी के हित को सबसे आगे रखते है किन्तु जब तक वे मज़दूरों के लक्ष्यो की प्राप्ति में सहयोग देने के लिए उद्यत थे तब तक वह उनकी सहायता का लाभ उठाता रहा। अगर लेविस उनके साथ निकट गटबन्धनपूर्वक नही तो कभी-कभी बहुत खतरनाक रूप से उनके साथ सहयोगपूर्वक काम करता प्रतीत होता था तो सी. आई. ओ. के अन्य नेता मर्रे और हिलमैन उनके प्रभाव को मिटाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे। वे यह अच्छीतरह महसूस करते थे कि मजदूर आन्दोलन मे कम्युनिस्टो का पुट चाहे कितना भी थोडा हो तो भी वह इतना अधिक आबद्ध और अनुशासित था कि वह लोकतन्त्रीय यूनियन-वाद के लिए सदैव एक ख़तरा बना रहता था।

संयुक्त मोर्चे के कार्यक्रम के एक अंग के रूप में वामपक्ष रूज़वेल्ट और न्यू डील को जो राजनीतिक सहयोग देने को तैयार था, उसने मज़दूर क्षेत्र में और ज्यादा विभ्रम पैदा कर दिया। न्यू डील विरोधी ताकतो ने रूजवेल्ट को कम्युनिस्टो के समर्थन का पूरा-पूरा लाभ उठाकर उनकी तथाकथित समाजवादी और क्रातिकारी नीतियो पर चोटें की। किन्तु यद्यपि राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने कम्युनिस्टो के समर्थन का प्रतिवाद किया तो भी उन्हे सगठित मजदूरो की ज़रूरत बनी रही। इसलिए यह उनके बहुत हित मे ही था कि कम्युनिस्टो को निकाल बाहर करने के लिए, क्रातिकारी अल्पमत पर प्रभाव जमाए रखने के लिये और राष्ट्र की प्रगतिशील ताकतो द्वारा स्वतंत्र रूप से अपनी नीतियो का पृष्ठपोषण कराने के लिए एक पर्याप्त शक्तिशाली संयुक्त आन्दोलन हो। इन्हीं विचारो को लेकर उन्होंने १९३७ से ही लगातार ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. में मेल की आवश्यकता पर बल दिया और १९३९ मे एक बार पुन: दोनो सगठनो से अपने मतभेद दूर करने की कोशिश करने का आग्रह किया।

रूज़वेल्ट के आग्रह पर उस वर्ष शाति वार्ता पुन: प्रारम्भ की गई और ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. के प्रतिनिधियो ने परस्पर मिलने का यत्न किया। जैसा कि हमने देखा शिल्प यूनियनवाद बनाम औद्योगिक यूनियनवाद चिरकाल से अपनी यथार्थता खो चुका था किन्तु पिछले वर्षो के सघर्ष से सत्ता प्राप्ति की होड तेज़ हो गई थी। लेविस ने ए. एफ. एल., सी. आई. ओ. तथा रेलवे ब्रदरहुडो के विलय का एक महत्त्वाकाङ्क्षी प्रस्ताव रखा। यह अव्यावहारिक था, क्योकि ब्रदरहुडो को ऐसी योजना में जरा भी दिलचस्पी नही थी और लेविस पर तुरन्त ही दयानतदारी से काम न करने का आरोप लगाया गया।

ए. एफ एल. का जवाबी प्रस्ताव था कि सी. आई. ओ की यूनियनें फिर से अपने पितृ-संगठन मे शामिल हो जाएँ किन्तु उनके परिवर्धित अधिकार क्षेत्र को स्वीकार नही किया जाएगा। इस प्रस्ताव पर कोई निश्चित उत्तर दिए बिना लेविस ने बैठक स्थगित कर दी किन्तु शीघ्र ही उसने यह कहना शुरू कर दिया कि ए. एफ. एल. के नेताओ की, जो "शासन या विनाश" की नीति अपना रहे हैं, अड़गेबाजी के रुख के कारण शाति असम्भव है।

सचाई यह थी कि कोई भी पक्ष रियायत देने को तैयार नही था। मजदूरों मे एकता की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए भी ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनो ने अपने-अपने स्वार्थों को प्रमुखता दी। ग्रीन "शाति के लिए अपनी अदम्य इच्छा" को प्रकट करता रहा किन्तु यह शांति उसकी अपनी शर्तों पर होनी चाहिए थी। लेविस ने यह कहते हुए कि "हमें अपने आन्दोलन का विस्तार करना होगा", शायद ज्यादा स्पष्टवादिता से काम लिया।

मजदूरो की आन्तरिक कठिनाइयाँ, चाहे वे साम्यवादियो के षड्यन्त्रों से उत्पन्न हुई हो या अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी झगड़ो के कारण; १६३६ में दूर नहीं हुई। किन्तु इस बीच विश्व के रगमच पर घटित अधिक महत्त्वपूर्ण घटनाओ की मजदूर और राष्ट्रीय राजनीति दोनों पर अनिवार्य प्रतिक्रिया हुई। रूस और जर्मनी ने अगस्त में अपना प्रसिद्ध करार किया और उसके बाद पोलैण्ड पर हिटलर के आक्रमण से यूरोप युद्ध में कूद पड़ा। इस बीच अमरीका को इस बात का खतरा बढ़ रहा था कि फासिज्म के खिलाफ लड़ाई में कही वह भी न घसीटा जाए और लोगो का ध्यान घरेलू समस्याओ से हट कर ज्यादातर विदेशनीति से सम्बन्धित मामलो पर केन्द्रित हो गया। देश इस अहम प्रश्न पर नाजुक दृष्टि से विभक्त हो गया कि क्या मित्र राष्ट्रों को सहायता देने से युद्ध को अपने तट से दूर रखा सकता है; या हमें, अपनी शाति की रक्षा के लिए युद्ध से अलग रहने की नीति अख्त्यार करनी चाहिए।

ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ दोनो संगठनो द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों के जरिये मजदूरो ने युद्ध में शामिल होने का पुरजोर विरोध किया, किन्तु वे मित्र-राष्ट्रो की सहायता करने और राष्ट्रीय रक्षा-व्यवस्था को मजबूत करने की रूजवेल्ट की नीति का समर्थन करने को तैयार थे। किन्तु आबादी के अन्य वर्गों के समान यूनियन के सदस्यों मे भी इस प्रश्न पर अलग-अलग मत थे। हालाँकि कम्युनिस्ट पार्टी की लाइन सयुक्त लोकतन्त्रीय मोर्चे से हटकर एकदम विषैले पृथकतावाद की हो गई थी। रूजवेल्ट प्रशासन की पहले जितनी जोर से पैरवी की जाती थी, अब उतने ही जोर से उसकी निंदा की जाने लगी। इसलिए १६४० के आते-आते यह सवाल बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया कि मजदूर किसे वोट दें। इन परिस्थितियों में सारे राष्ट्र का ध्यान इस बात पर गया कि

लेविस क्या करता है, किन्तु उसने एक विचित्र और अकल्पनीय रोल अदा करना पसन्द किया।

१९३६ मे रूजवेल्ट के पुनः राष्ट्रपति चुने जाने के बाद लेविस बडी शेखी से यह समझने लगा था कि डैमोक्रैटो की महान् विजय सिर्फ इसी लिए नही हुई कि उन्हें मजदूरो के वोट मिले किन्तु इस लिए कि ज्यादातर लेविस के कारण उन्हें मजदूरो के वोट मिले। इस मन्तव्य के अनुसार सी. आई. ओ. तथा नान-पार्टिजन लीग ने न्यू डील को बचा लिया था। फलस्वरूप रूजवेल्ट पर यह सीधा दायित्व आ गया था कि वे सी. आई. ओ. की नीति से पूर्णतः सहमत होकर इस राजनीतिक ऋण से उऋण हो। सफलता से लेविस का दिमाग़ इतना फिर गया था कि वह यह समझने लगा था कि राष्ट्रपति को उसके निर्देशो का पालन करना चाहिए और १९३७ के प्रारम्भ में जनरल मोटर्स के अन्दर बैठे-रहो हड़ताल के दौरान उसने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी।

लेविस ने रिपोर्टरो से कहा कि "६ महीने तक जनरल मोटर्स के आर्थिक अधिपतियो ने अपने पैसे और शक्ति का उपयोग इस प्रशासन को उखाड फेंकने की कोशिश में किया। प्रशासन ने सहायता मांगी और मजदूरो ने वह प्रदान की। अब इन्ही आर्थिक अधिपतियों के दाँत मजदूरों पर है। इस देश के मज़दूर आशा करते है कि प्रशासन हर कानूनी तरीके से उनकी मदद करेगा और जनरल मोटर्स मे मजदूरो को सहयोग देगा।"

यह एक अभिमान भरा वक्तव्य था और रूजवेल्ट ने यह समझे जाने पर रोष व्यक्त किया कि वे किसी रूप में सी. आई. ओ. से वचनबद्ध है। मोटर उद्योग में शाति स्थापित करने में, जिसे वे सार्वजनिक हित में समझते थे, उन्होंने सी. आई. ओ. को कोई दस्तंदाजी नही करने दी और अतीत मे लेविस के साथ उनका जो निकट सहयोग रहा था, उसके बारे मे उन्होने कोई राजनीतिक सौदे-बाज़ी करने से इन्कार कर दिया। राष्ट्रपति की इस अप्रत्यक्ष भर्त्सना से आहत होकर सी. आई. ओ. के नेता ने अपने मन में एक गाँठ बाँध ली और जब एस. डब्लू. ओ. सी. तथा लिटल स्टील कम्पनियो के बीच भयानक सघर्ष मे रूजवेल्ट ने एक बयान मे कहा "दोनो जहन्नुम मे जाएँ" तो यह गाँठ और भी सख्त हो गई। दूसरी बार दी गई इस झिड़की पर विचार करने के

बाद लेविस ने मजदूर दिवस पर रेडियो से भाषण देते हुए इस्पात की हड़ताल के दौरान मजदूरो की मृत्यु और उनके जख्मी होने का उल्लेख किया और राष्ट्रपति पर पुन आक्षेप किए।

उसने प्रवचनात्मक वाणी में कहा : "जिसने मजदूर की मेज़ पर भोजन किया है और जिसे मज़दूर के घर मे शरण दी गई है उसे यह शोभा नही देता कि जब मज़दूर और उनके दुश्मन घातक सघर्ष मे जूझ रहे हों तब वह एक से जोश और सूक्ष्म निष्पक्षता से दोनो की निन्दा करे।"

किन्तु रूज़वेल्ट और लेविस के बीच बढती हुई उस खाई का एक और भी पहलू था। सी आई ओ जब निरन्तर विजय प्राप्त करती रही और लेविस की प्रसिद्धि बढती रही तो उसके मन में राजनीतिक महत्त्वाकाक्षाएँ जागने लगी। १९३९ के अन्त में या १९४० के शुरू मे जब रूज़वेल्ट के तीसरी बार राष्ट्रपति बनने की संभावना चर्चा का विषय बनी हुई थी तब लेविस राष्ट्रपति के पास एक प्रस्ताव लेकर गया। फ्रासिस पर्किन्स ने यह किस्सा एक बातचीत का विवरण देते हुए बताया जिसमे रूज़वेल्ट ने उसे तथा ए. एफ. एल. की ड्राइवर-यूनियन के डेनियल टोबिन को बताया कि लेविस ने तीसरी बार राष्ट्रपति चुने जाने के मार्ग में आने वाली सब बाधाओं पर विजय पाने का क्या उपाय सुझाया था।

श्रीमती पर्किन्स ने रूज़वेल्ट को उद्धृत करते हुए, जिन्होंने लेविस की बात का उल्लेख किया, बताया "राष्ट्रपति महोदय! मैने सब बातो पर गौर किया है और अब मै आपके सामने विचारार्थ एक सुझाव रखता हूँ। आपके टिकट पर उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार अगर जॉन एल. लेविस हो तो ये सब आपत्तियाँ हवा हो जाएँगी। एक शक्तिशाली मज़दूर नेता के कारण न केवल आपको मजदूरो के वोट मिलने निश्चित हो जाएँगे, बल्कि उदारपन्थी लोगो में तीसरे कार्यकाल के बारे मे जो शंकाएँ है, वे भी मिट जाएँगी।"

यह सुझाव राष्ट्रपति को जँचा नही। उन्होने इसकी उपेक्षा कर दी। किंतु इस घटना का एक और भी विवरण दिया जाता है जिसकी सच्चाई शायद संदिग्ध है। इसके अनुसार लेविस ने रूज़वेल्ट से प्रस्ताव किया कि "राष्ट्र में दो सबसे प्रमुख व्यक्ति होने के नाते" उनका टिकट दुर्जेय होगा और राष्ट्रपति ने स्पष्ट पूछा, "जॉन तुम कौन-सा स्थान लोगे?"

अपूर्ण महत्त्वाकांक्षा ने लेविस की राजनीतिक टेक निश्चित करने में चाहे कुछ भी भाग अदा किया हो, १९४० तक उसने अपना यह दृढ़ मत बना लिया कि रूज़वेल्ट अब औद्योगिक लोकतन्त्र के महान् चैम्पियन नही रहे जिनके समर्थन में चार वर्ष पूर्व उसने समस्त मज़दूरो का आह्वान किया था। अब उसने सरकार पर मज़दूरो के ध्येय के साथ दगा देने और मंत्रिमण्डल अथवा नीति का निश्चय करने वाली किसी सरकारी एजेंसी मे मज़दूरों को प्रतिनिधित्व देने से इन्कार करने का आरोप लगाया। जनवरी मे 'यूनाइटेड माइन वर्कर्स के एक सम्मेलन मे उसने बड़े नाटकीय ढग से राष्ट्रपति के साथ अपने सब पूर्व-सम्बन्ध तोड़ लिए। उसने अचम्भित श्रोताओ से कहा : "अगर डैमोक्रैटिक नेशनल कमेटी को मजबूर करके रूज़वेल्ट की पुन: नामज़दगी कर दी गई तो मुझे विश्वास है कि उन्हें अपमानजनक हार खानी पड़ेगी।"

लेविस एक खतरनाक खेल खेल रहा था। उसका मार्ग यह प्रतीत होता था कि डैमोक्रेटिक पार्टी को सर्वथा एक मजदूर दल में परिवर्तित करने मे, जिसमे वह खुद रूजवेल्ट का सम्भावित उत्तराधिकारी हो, असफल रहने के बाद उसका यह विचार हो गया था कि मज़दूरो की नान-पार्टिज़न लीग को एक तीसरी पार्टी के रूप में विकसित किया जाए जो १९४४ में उसकी राजनीतिक महत्त्वकांक्षाओ की पूर्ति का साधन बने। सी. आई ओ के अन्य नेताओ के साथ झगड़े और वामपक्षी तथा कम्युनिस्ट ग्रुपो के साथ उसके निकट सम्बन्धो में यही सारा मामला उलझा हुआ था। इसका सम्बन्ध उस टेक से भी था जो उसने विदेश नीति के बारे मे अपनाई थी। क्योंकि यूरोप में युद्ध छिड़ने के बाद लेविस पृथकतावादी कैम्प में चला गया था और मित्र राष्ट्रों को सहायता देने के समस्त कार्यक्रम का सरोष विरोध करने लगा। किन्तु व्यक्तिगत विद्वेष तथा राजनीतिक निराशा के बजाय विदेश नीति किस हद तक उसके रूज़वेल्ट के पक्ष को छोड़ देने के लिए जिम्मेदार थी, यह शायद ऐसा सवाल है जिसका स्वयं लेविस भी ईमानदारी से कोई जवाब नही दे सकता था।

कुछ भी हो, १९४० का चुनाव आन्दोलन जैसे-जैसे अग्रसर हुआ, उसने खुल्लमखुल्ला रूज़वेल्ट का विरोध किया। उसने कहा कि न्यू डील आर्थिक पुनरुत्थान के कार्य में बिल्कुल विफल रहा है, बल्कि मन्दी को लम्बी खीचने के

लिए एकमात्र यही जिम्मेदार है। कुछ समय तक तो उसने यह ज़ाहिर नही किया कि उसके द्वारा रूज़वेल्ट के विरोध का मतलब क्या रिपब्लिकन उम्मीद-वार वेण्डल विल्की का समर्थन है ? किन्तु २५ अक्तूबर को उसने रेडियो पर जो भाषण किया उससे उसकी स्थिति के बारे में रहा सहा संदेह दूर हो गया। इस भाषण का समय इस दृष्टि से बहुत सावधानी से चुना गया था कि उसका नाटकीय प्रभाव हो।

लेविस ने कहा : "मै समझता हूँ, राष्ट्रपति रूजवेल्ट का तीसरी बार चुना जाना प्रथम दर्जे की राष्ट्रीय बुराई होगी। अब वह लोगों की पुकार नहीं सुनते। मै समझता हूँ कि देश की आवश्यकताओं की दृष्टि से वेण्डल विल्की का चुनाव अपरिहार्य है। मै मज़दूर स्त्री-पुरुषों को उन्हें वोट देने की सिफारिश करता हूँ......।

"यह स्पष्ट है कि राष्ट्रपति रूज़वेल्ट तीसरी बार तब तक नहीं चुने जा सकते जब तक उन्हे मज़दूर स्त्री-पुरुषो के वोट अत्यधिक संख्या में प्राप्त न हो। इसलिए अगर वह फिर चुन लिए जाते है तो मै समझूँगा कि सी. आई. ओ. के सदस्यो ने मेरी सलाह और सिफारिश को ठुकरा दिया है। इसे मैं अपने प्रति अविश्वास का मत समझूँगा और नवम्बर में सी. आई. ओ. के अध्यक्ष पद से हट जाऊँगा।"

किन्तु मज़दूर स्त्री-पुरुषों ने अपनी राय लेविस को नही बनाने दी। पिछले वर्षो की भाँति १९४० में भी मज़दूरो के वोट थाली में रखकर नही दिए जा सकते थे। सी आई. ओ के अध्यक्ष की चेतावनी को दरगुजर कर उसके बहुत से साथियो ने खुल्लमखुल्ला डैमोक्रैटिक उम्मीदवार का समर्थन किया और एक के बाद एक यूनियन ने तीसरे कार्यकाल के पक्ष में प्रस्ताव पास किए। ए. एफ. एल. के अधिकाश नेताओ और यूनियनों ने भी राष्ट्रपति रूज़वेल्ट का समर्थन किया और इसमें कोई सदेह नही कि पिछले दो आम चुनावो की भाँति इस चुनाव मे भी मज़दूरों के वोट ने रूज़वेल्ट को जिताने में बहुत महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया। खान वाले इलाको मे भी जहाँ लेविस के आदेश का आँख मूँद कर पालन किया जाता था, पता चला कि यूनाइटेड माइन वर्कर्स तक के सदस्यो ने राष्ट्रीय राजनीति मे उसकी सलाह मानने से इन्कार कर दिया।

लेविस की घोषणा के सुस्पष्ट विरोध में चुनावों के बाद ग्रीन ने घोषणा

की कि मज़दूर स्त्री-पुरुषो ने रूजवेल्ट को इसलिए वोट दिया क्योंकि वे यह विश्वास करते है कि "वह सामाजिक न्याय तथा आर्थिक स्वाधीनता के मित्र और चैम्पियन है।"

लेविस जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ गया था। मज़दूरो द्वारा निर्देश का पालन किए जाने के प्रश्न पर सी. आई. ओ. की अध्यक्षता को दाँव पर लगा कर वह न केवल राजनीतिक क्षेत्र से विल्कुल वाहर चला गया वल्कि जिस संगठन का निर्माण करने के लिए उसने इतना त्याग किया उसका नियंत्रण भी उसने छोड़ दिया क्योंकि अगले सम्मेलन में सी. आई. ओ. की अध्यक्षता से निवृत्त होने की उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। मज़दूरों की सभाओं में वह अब भी एक शक्तिशाली प्रभाव डालने मे समर्थ था किन्तु उसके चामत्कारिक जीवन का एक अध्याय समाप्त हो गया था। क्योंकि वाद की अपनी गति-विधियो में उसने जो भी चुनौती भरी स्वाधीनता और नाटकीयता प्रदर्शित की, और युद्धकाल मे तथा उसके वाद एक हड़ताली नेता के रूप मे उसने जो कुछ भी उत्तेजना पैदा की, उस सवके वावजूद वह सी. आई. ओ. के अध्यक्ष के समय की सत्ता और प्रतिष्ठा को फिर प्राप्त नहीं कर सका।

वेशक वह युनाइटेड माइन वर्कर्स का मुखिया वना रहा और जहाँ तक यूनियन मामलो का सम्वन्ध है उसके सदस्य जहाँ लेविस गया, उसका अनुगमन करते रहे। यह एक हास्यास्पद भाग-दौड़ रही। लेविस ने उन्हें शीघ्रता से सी. आई. ओ. से निकाल लिया और फिर समय रहते ए. एफ. एल. मे ले गया। खनिको को अपनी स्थिति का ठीक-ठीक पता भी न था। लेविस ने स्वयं निश्चय कर साथियों या अनुयायियो के विचार को धत्ता बता दिया। १९४७ के अन्त में खनिको ने स्वयं को फिर अकेला अनजाने मार्ग पर भटकता पाया जव कि उनका अस्थिरमति सरदार दूसरी वार ऐसे झटके के साथ ए. एफ. एल. से वाहर आ गया जो उसके अपने लिये भी आश्चर्यजनक था। युनाइटेड माइन वर्कर्स के प्रधान कार्यालय मे रिपोर्टरो को वुला कर ४ इंच लम्वे तथा दो इंच चौड़े कागज के पुर्जे पर नीली पेंसिल से लिखा एक सन्देश दिखाया गया जिसमें कहा गया था: "ग्रीन, ए. एफ. एल.। हम अलग होते है। लेविस १२।१२।४७"

१९४० में सी. आई. ओ. का नया अध्यक्ष एस. डब्लू. ओ. सी. के संगठन

अभियान का हीरो और युनाइटेड माइन वर्कर्स में इतने वर्षों से लेविस का सुयोग्य और वफादार लेफ्टिनेण्ट फिलिप मर्रे चुना गया। उसकी पृष्ठभूमि ग्रीन और लेविस दोनो से इस बात मे बिल्कुल मिलती थी कि उसका परिवार भी ब्रिटिश कोयला खानो मे काम करता था। किन्तु स्वयं मर्रे का जन्म १८८६ मे लकाशायर (स्काटलैण्ड) मे हुआ था और १६ वर्ष का हो जाने पर ही वह अमरीका आया। तब उसने खानो मे काम करने की पारिवारिक परम्परा निबाही। दो वर्ष बाद प्रबन्धको के साथ उसे पहली कठिनाई भुगतनी पडी और एक हडताल मे भाग लेने के कारण उसका काम छूट गया। उसने लिखा कि "तब से मुझे इस बारे मे कोई सन्देह नही रहा कि मुझे अपने जीवन मे क्या करना है।"

१९१६ में वह युनाइटेड माइन वर्कर्स के जिला नं० ५ का अध्यक्ष चुना गया और ४ वर्ष बाद अन्तर्राज्यीय यूनियन का उपाध्यक्ष चुना गया। वह एक अत्यन्त योग्य प्रशासक और संगठनकर्ता के रूप मे मशहूर था किन्तु उसकी प्रसिद्धि का इससे भी बड़ा कारण शायद यह था कि दुर्दिन हो या सुदिन, उसने अपने मुखिया द्वारा निर्धारित नीति का सदा निष्ठापूर्वक समर्थन किया। सामाजिक सुधार के व्यापक विचारो में उसने कोई दिलचस्पी नही दिखाई किन्तु उसका यह पूर्ण विश्वास था कि किसी भी प्रकार के व्यवसाय के साथ यह ज़रूरी है कि मज़दूर को अच्छा वेतन पाने का हक हो। उसके मत में इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए मज़दूर सगठन और सामूहिक सौदेबाजी ज़रूरी थे।

शान्त और स्वयं को प्रकाश में न लाने वाले मर्रे को चिरकाल तक लेविस की छाया से अधिक नही समझा जाता था। किन्तु जब वह सी. आई. ओ. का अध्यक्ष बन गया तब उसने स्वय को ऐसा दृढ विचारों और अत्यन्त स्वाधीन प्रकृति का व्यक्ति ज़ाहिर किया कि वह अपने लिए एक अलग मार्ग बना सका और उस पर चल सका। भले ही उसके कारण उस व्यक्ति के साथ उसके सम्बन्ध टूट गए जिसकी वह सबसे ज्यादा कद्र करता था और जिसके प्रति बाद मे भी वह गहरा आदर व्यक्त करता रहा। जैसा कि समय ने दिखाया, मर्रे में वह खूबियाँ थी जिन्होने उसे एक दृढ आस्थाओ वाला मज़दूर नेता ज़ाहिर किया जो अपने साथियो की महान् व्यक्तिगत वफ़ादारी भी प्राप्त कर सका।

अपनी स्वतंत्रता का पहला और अप्रत्याशित प्रदर्शन उसने तब किया जब सी. आई. ओ. का अध्यक्ष बनने के लिये उसने यह शर्त रखी कि सम्मेलन कम्युनिज्म तथा अन्य सब विदेशी विचारधाराओ की निन्दा का एक प्रस्ताव पास करे। वामपक्ष के साथ लेविस ने गुपचुप रूप से जो सम्बन्ध बना रखे थे उसके कारण मर्रे रिकार्ड साफ करने पर आमादा था। उसका इरादा सभी कम्युनिस्टों और उनके अनुयायियों को सगठन से निकाल देने का नही था और न ही वह यह चाहता था कि कम्युनिस्टो के अत्यधिक पीछे पड़कर मजदूर आन्दोलन को नुकसान पहुँचाया जाए। किन्तु वह कम्युनिज्म के सख्त खिलाफ था और सी. आई. ओ. को उसने विध्वंसक राजनीतिक हरकतो का मोर्चा बनाने देने से इन्कार कर दिया। इसी स्वतंत्र भावना के साथ उसने पृथकतावाद को ठुकरा दिया जिसका लेविस और कम्युनिस्ट दोनो उपदेश दे रहे थे। युद्ध में अमरीका के प्रवेश का वह अब भी विरोधी था किन्तु रूजवेल्ट की विदेश-नीति तथा रक्षा-कार्यक्रम का समर्थन करने को उद्यत था। यह उसका अपना निर्णय था। एक वर्ष बाद उसने सी. आई. ओ. के सम्मेलन में कहा "जिन बातो की मैने सिफारिश की उनको मैने अन्दर या बाहर के किसी ग्रुप के दवाव के कारण नही अपनाया था। आप जानते है मै ऐसा व्यक्ति हूँ जो व्यक्तियो अथवा ग्रुपो द्वारा दवाव डाले जाने का विरोधी हूँ। मै मनुष्य के रूप मे अपने व्यक्तिगत चरित्र का भरोसा करता हूँ।"

१९४० के चुनाव के पश्चात् देश सामान्यत: राष्ट्रीय रक्षा के कार्यक्रम का मजबूती से समर्थन करने लगा। रूजवेल्ट प्रशासन ने मित्रराष्ट्रो की सहायता के लिए एक-के-बाद एक जो कदम उठाए विशेष कर उधार पट्टे पर सहायता की व्यवस्था वह राष्ट्र के समक्ष सर्वाधिक महत्त्व का विषय बन गया। पृथकता और हस्तक्षेप के समर्थको के बीच और ज्यादा मनमुटाव हो गया परन्तु हमारी अपनी सुरक्षा का इतजाम करने की आवश्यकता से बिल्कुल शाति-वादियो के अलावा और कोई इन्कार नही कर सकता था। विदेशो से अधि-काधिक मात्रा मे आने वाले युद्ध-सामग्री के आर्डरो ने आर्थिक पुनरुत्थान को ऐसी गति प्रदान की जो न्यू डील भी प्रदान नही कर सका था और रक्षा कार्यक्रम की मांगो ने समस्त आर्थिक मोर्चे पर उत्पादन को और भी ज्यादा

प्रोत्साहन दिया। अमरीका ने युद्ध में घसीटे जाने का तात्कालिक खतरा महसूस किया किन्तु इस बीच वह अभूतपूर्व समृद्धि का आस्वादन करने लगा था।

मजदूरो ने कई तरीको से इन घटनाओ का प्रभाव महसूस किया। उत्पादन वृद्धि से बेकारी तेजी से घटी जो रूज़वेल्ट प्रशासन के यथासभव सब कुछ किए जाने पर भी ऊँचे स्तर पर कायम थी और इससे वेतन दरो मे भी बढोत्तरी हुई। रक्षा उद्योगो में दक्ष मज़दूरो की बढ़ती हुई माँग से मज़दूर बाजार मे एक नई परिस्थिति उत्पन्न हुई जो १० वर्षों से चली आ रही परिस्थितियो से बहुत भिन्न थी। अप्रैल, १९४० और दिसम्बर, १९४१ के बीच कृषि से इतर धन्धो में लगे लोगो की संख्या ३५० लाख से बढ़ कर ४१० लाख से अधिक हो गई और मजदूरी की दर सामान्यत. २० प्रतिशत बढ गई। रक्षा कार्यक्रम के लिए बुनियादी, जल्दी नष्ट न होने वाले सामान के उद्योगो मे औसत आमदनी २९·८८ डालर से बढ कर ३८·६२ डालर साप्ताहिक हो गई। युद्ध अमरीकी उद्योग की रक्षा करने आया था और ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनो के सगठित मजदूरो ने युद्धकालीन धन्धे के बढ़ते हुए मुनाफो मे पर्याप्त हिस्सा बँटाया।

मज़दूर अमरीका को "लोकतत्र का महान् शस्त्रागार" बनाने मे पूर्ण सहयोग देने के लिए उद्यत थे किन्तु १९२० की दशाब्दी की पराजयो और धक्को को याद करके इस बात का आग्रह भी कर रहे थे कि न्यू डील के अन्तर्गत प्राप्त लाभो पर कोई आँच नही आनी चाहिए। इतना ही नही, उन्होंने तो यूनियन मान्यता और सामूहिक सौदेबाज़ी के विस्तार का अभियान चलाने के अपने अधिकार पर जोर दिया और जब युद्धकालीन परिस्थितियो में महँगाई तेज़ी से बढी तो मज़दूरों की क्रयशक्ति को बनाए रखने के लिए और ज्यादा वेतन वृद्धि की माँग की। उद्योग फल फूल रहे थे और यूनियनों की ताकत बढ रही थी, फलस्वरूप प्रबन्धको और मज़दूरो मे हमारे विकासमान अर्थ तत्र मे अपने रोल को लेकर और सघर्ष के लिए मंच तैयार हो गया। १९४१ का वर्ष मजदूर इतिहास मे एक बड़ा विक्षोभ और हलचल पूर्ण वर्ष रहा।

अधिकाश मामलो मे मज़दूर युक्तियुक्त तथा रचनात्मक नीतियो पर चल

रहे थे और उद्योग ने सामूहिक सौदेबाजी के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए, वेतन, काम के घण्टों तथा काम की हालतो के बारे मे परस्पर लाभदायक समझौते करके उनका आधे रास्ते स्वागत किया। लिटस स्टील कम्पनियो तथा यूनाइटेड स्टील वर्कर्स आव अमरीका मे अन्तत. समझौता हो गया और हेनरी फोर्ड ने अपनी यूनियन विरोधी नीतियो को एकदम उलट कर यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स को मान्यता देने और उसे 'बन्द शाप' भी प्रदान करने के एक करार पर दस्तखत कर दिए। किन्तु औद्योगिक संघर्ष को टालने के लिए की गई ये प्रगतियाँ शीघ्र ही नए झगड़े उत्पन्न होने से तिरोहित हो गईं। कुछ मामलो में ये झगड़े यूनियनो की अत्यधिक और अनधिकार माँगों के कारण उत्पन्न हुए तो अन्य मामलों मे नई औद्योगिक व्यवस्था के परिणामो को स्वीकार करने से इन्कार करने वाले मालिको के दुराग्रह के कारण उत्पन्न हुए।

यूनियनों की बढ़ती हुई शक्ति को भूत मानकर कुछ कम्पनियों ने न केवल वेतन सम्बन्धी नई माँगें स्वीकार करने से ही इन्कार कर दिया, बल्कि हर तरह से मजदूरों के पख बाँध देने की कोशिश की। इस ग्रुप ने यूनियन मान्यता के बारे मे और रियायतें देने से इन्कार कर दिया, बन्द शाप को लोकतन्त्र-विरोधी और अमरीका विरोधी बताकर उसकी आलोचना की और जहाँ कही सभव हुआ सामूहिक सौदेबाजी की कानूनी आवश्यकताओ की अवहेलना की। कभी-कभी उन्होने अपनी यूनियन-विरोधी हरकतो पर यह कहते हुए कि उनका उद्देश्य सिर्फ औद्योगिक उत्पादन को निर्बाध बनाए रखना है, देशभक्ति का मुलम्मा चढाने की भी कोशिश की।

राष्ट्रीय रक्षा की आवश्यकताओ ने वस्तुत. मजदूरो की माँगो के प्रति जनता को अधीर बना दिया और मजदूरो मे व्यापक आन्तरिक झगडों के कारण भी उनके ध्येय को कोई सहायता नही मिली। प्रतिद्वन्द्वी नेताओ के रोष भरे आरोप-प्रत्यारोपो ने अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी हड़तालो तथा यूनियनो में ठगी तथा भ्रष्टाचार के कुछ मामलों के भण्डाफोड़ ने बढ़ते हुए राष्ट्रीय सकट में मज़दूरो की जिम्मेदारी की भावना पर से लोगों का विश्वास डिगा दिया और यह सही है कि कुछ नई विद्रोही यूनियनें अपने हज़ारो नए रंगरूटों मे अनुशासन नही रख पाईं। मालिको के प्रति उनके झगड़ालू बर्ताव और वेतन वृद्धि तथा

अन्य रियायतों पर उनके हठ ने अनेक मौको पर औद्योगिक शाति को उसी प्रकार भंग किया जिस प्रकार प्रतिक्रियावादी व्यवसाय की यूनियन-विरोधी नीतियो ने।

१९४१ में श्रम सम्बन्धी झगडो की संख्या सिर्फ १९३७ के एक अपवाद को छोड़कर पिछले किसी भी वर्ष से ज्यादा थी। मोटर उद्योग, जहाज़ घाट, परिवहन, मकान-निर्माण, कपड़ा, इस्पात व खान उद्योगो में हड़तालें हुईं। शायद ही किसी उद्योग में काम न रुका हो और जिसने कम से कम कुछ समय के लिए उत्पादन मे रुकावट न डाली हो। राष्ट्र के लगभग ८·४ प्रतिशत मजदूरो ने उन हडतालो में भाग लिया। और काम के २,३०,००,००० मनुष्य-दिवसो की हानि हुई।

कई हडताले साम्यवादियो ने भड़काई थी। जब तक जर्मनी ने रूस पर हमला नही कर दिया, तब तक पार्टी लाइन मित्र-राष्ट्रो के सहायता देने के सख्त खिलाफ रही और राष्ट्रीय रक्षा के कार्यक्रम में पलीता लगाने के लिए क्रातिकारी वामपथियो ने कोशिश की। जून, १९४१ के बाद एक बार फिर इस नीति में रातो-रात परिवर्तन हुआ। कम्युनिस्टो द्वारा भडकाई गई हडतालो ने, जिन्हे रोकने की जिम्मेदार मजदूर नेताओ ने भरसक कोशिश की, इस वर्ष के प्रथमार्ध में मज़दूर-उपद्रव भडकाने में कम भाग नही लिया।

इन हडतालो से रक्षा-कार्यक्रम को ठेस पहुँचने की आशका के कारण मार्च, १९४१ मे ही एक राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड (नेशनल डिफेंस मीडिएशन बोर्ड) की स्थापना की गई। यह एक त्रिपक्षीय निकाय था जिसमें मजदूरो, प्रबन्धको तथा जनता के प्रतिनिधि थे। इसे रक्षा-उद्योगो में मध्यस्थता अथवा पचफैसले के जरिये झगडो को हल करने का अधिकार दिया गया। इसके अधिकारो में किए गए निर्णयो पर अमल कराने का अधिकार शामिल नही था। इसलिए यद्यपि बहुत-से मामलों में वह औद्योगिक शाति स्थापित करा सका तो भी कई महत्त्वपूर्ण अवसरो पर ज्यादा कठोर कार्रवाई की ज़रूरत पडी।

इंगलवुड, कैलिफोर्निया में वैमानिक कर्मचारियो की हडताल के कारण बातचीत के ज़रिये समझौता कराने से पूर्व ही युद्ध के महकमे ने नार्थ अमेरिकन ऐवियेशन प्लाण्ट को अपने कब्जे में ले लिया और कीर्नो, न्यूजर्सी में

जब फेडरल शिप बिल्डिंग ऐण्ड ड्राई डाक कम्पनी ने यूनियन की सदस्यता को कायम रखने के प्रस्तावित समझौते को मानने से इन्कार कर दिया और जहाजी घाट के मजदूरो ने हडताल कर दी तो नौसेना विभाग ने उसे अपने नियंत्रण मे ले लिया। किन्तु श्रम सम्बन्धी झगडों तथा राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड की मुसीबतो दोनो की चरम अवस्था एक कोयला हडताल में पहुँची जिसने उत्पादन में इतनी गम्भीर अड़चन उत्पन्न की कि सम्पूर्ण रक्षा कार्यक्रम को ही खतरा पैदा हो गया।

इस्पात उद्योग द्वारा चलाई जाने वाली तथाकथित "अधिकृत" कोयला खानों में यूनियन शाप की स्थापना का प्रश्न मुख्यत विवादास्पद था। प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड यूनियन करारो मे इस प्रकार की मांग को शामिल कराने की प्राथमिकता के बारे मे दुविधा मे रहा और १९४१ की पतझड़ में जब खान का यह झगडा कार्रवाई के लिए उसके सामने रखा गया तो उसने यूनियन शाप को करार का आधार स्वीकार करने से इकार कर दिया। फलस्वरूप लेविस ने बोर्ड की उपेक्षा कर दी और राष्ट्रपति रूजवेल्ट की इस अपील के बावजूद कि देश का एक वफादार नागरिक होने के नाते उसे देश की सहायता करनी चाहिए, उसने २६ अक्तूबर को "अधिकृत" कोयला खानो में हड़ताल का आह्वान किया और करीब-करीब समस्त इस्पात उद्योग को बन्द कर देने की धमकी दी।

लेविस द्वारा सरकार को दी गई चुनौती का कोयला खनिकों के अधिकारों की रक्षा से ज्यादा महत्त्व था। लेविस मजदूरो की एक नाटकीय विजय से अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने का यत्न कर रहा था और एक स्पष्टवक्ता पृथकतावादी के रूप मे विदेशी मामलो में समस्त रूजवेल्ट कार्यक्रम के प्रति अपना विरोध प्रकट कर रहा था। उसने १९४० मे राजनीतिक क्षेत्र में रूजवेल्ट का विरोध किया था और अब एक वर्ष बाद वह उन्हें आर्थिक क्षेत्र में चुनौती देने के लिए तैयार था। यूनियन शाप के लिए संघर्ष को सत्ता की कसौटी बना लिया गया और देश की आवश्यकताओ तथा अपने तौर-तरीको के प्रति सार्वजनिक विरोध की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए लेविस अपने मनमाने रास्ते पर जाने को उद्यत था।

हडताल का आह्वान किए जाने के तुरन्त बाद रूजवेल्ट ने रेडियो पर यह

घोषणा की कि देश को कोयला प्राप्त करना ही होगा और "मजदूर नेताओ की एक अल्प किन्तु खतरनाक सख्या द्वारा डाले जाने वाली स्वार्थपूर्ण बाधाओ से राष्ट्रीय उत्पादन मे रुकावट नही आने दी जा सकती।" इस बात के संकेत मिले कि वह अततः हडताल-विरोधी कानून को स्वीकार करने के लिए तैयार हो गए हैं, जिसका कांग्रेस मे पहले से ही प्रस्ताव किया जा रहा था। किन्तु इस बीच लेविस युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के माइरन सी. टेलर से समझौतावार्ता कर रहा था, जिसमे यह तय हो गया कि प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड यूनियन शाप के मामले पर फिर विचार करेगा, किन्तु कोई भी पक्ष उसके फैसले को मानने के लिए बाध्य नही होगा। लेविस को विश्वास था कि देश को तत्काल कोयले की आवश्यकता होने के कारण अब उसकी मांगें स्वीकार करनी होगी और उसने जब तक बोर्ड इस मामले पर पुनर्विचार करे तब तक के लिए हड़ताल उठा ली।

बोर्ड ने १० नवम्बर को अपना फैसला दिया और ६—२ मतों से यह यूनियन शाप के खिलाफ गया। इसकी रिपोर्ट के खिलाफ सिर्फ बोर्ड मे सी. आई. ओ. के दो सदस्यो ने ही मत दिया, जबकि प्रबन्धकों, जनता और ए. एफ. एल. के सब प्रतिनिधियो ने रिपोर्ट का समर्थन किया। अधिकृत कोयला खानों में ५३००० मज़दूरो में से ६५ प्रतिशत पहले ही युनाइटेड माइन वर्कर्स के सदस्य थे किन्तु यह कहा गया कि यूनियन शाप सामूहिक सौदेबाजी की चीज है, वह सरकार के आदेश से स्थापित नही की जा सकती और प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड के लिए २,५०० मजदूरों को उनकी इच्छा के विरुद्ध यूनियन में शामिल होने के लिए मजबूर करना उचित नही होगा।

एक सिद्धान्त दांव पर लगा हुआ था और लेविस तथा राष्ट्रपति के बीच भिडन्त अनिवार्य प्रतीत हुई। खनिको के नेता ने विरामसधि की अवधि के पश्चात् फिर से हड़ताल कराने का आदेश वापस लेने से इन्कार कर दिया और सी. आई. ओ. ने अपने नेताओ में पारस्परिक कलह के बावजूद लेविस का समर्थन किया। प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड में इसके प्रतिनिधियो ने तुरन्त त्यागपत्र दे दिया और उस समय चल रहे एक सम्मेलन के प्रस्ताव में लेविस के पक्ष का समर्थन किया गया। दूसरी ओर रूजवेल्ट ने यह घोषणा की कि सरकार किसी भी हालत में यूनियन शाप स्थापित करने का आदेश जारी नही

करेगी, कर्मचारियों और इस्पात कम्पनियो के बीच और वार्ता किए जाने का आग्रह किया और साथ ही समझौता न होने की सूरत में खानो पर सरकार द्वारा कब्जा कर लिये जाने की तैयारी की। इस समय काग्रेस तटस्थता सम्बन्धी कानून में सशोधन पर विचार कर रही थी और अपने विदेश सबन्धी कार्यक्रम के लिए काग्रेस के उन सदस्यो का समर्थन प्राप्त करने के लिए, जो यह महसूस कर रहे थे कि राष्ट्रपति मज़दूरो के प्रति बहुत नरम हैं, राष्ट्रपति ने यह वायदा किया कि लेविस चाहे कुछ भी करे, कोयला खानो से निकाला जाएगा। "सरकार इसके लिए कृतसंकल्प है।"

इसके बाद एक सप्ताह तक समझौता वार्ताओं का दौरदौरा रहा। देश समझौते के लिए पुकार रहा था किन्तु यूनियन शाप के मामले पर न तो खनिक और न ही इस्पात कम्पनियाँ टस से मस हुईं। १७ नवम्बर को हड़ताल फिर शुरू हो गई। अधिकृत खानो में मजदूरों ने अपने औजार रख दिए और अन्य क्षेत्रो में सहानुभूति मे की गई हड़तालो से काम बन्द करने वाले मजदूरो की सख्या शीघ्र ही २,५०,००० हो गई। राष्ट्रीय सकट के तेजी से चरम अवस्था में आ जाने से इस्पात उद्योग के हाथ-पाँव बँध गए थे। बताया जाता है कि रूज़वेल्ट अन्तत ५० हजार सैनिको को खानो पर कब्जा करने का आदेश देने को तैयार हो गए और स्थिति प्रति घण्टे अधिक तनावपूर्ण होती गई। तब यकायक और अप्रत्याशित रूप से २२ नवम्बर को हड़ताल वापस ले ली गई। लेविस ने तीन व्यक्तियो के न्यायाधिकरण द्वारा यूनियन शाप के मामले पर किए गए पच फैसले को स्वीकार करने का राष्ट्रपति का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। इस अधिकरण में तीन व्यक्ति नियुक्त किए गए, लेविस, युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के अध्यक्ष फेयरलेस और निष्पक्ष सदस्य के रूप मे युनाइटेड स्टेट्स कान्सिलियेशन सर्विस के जॉन आर. स्टीलमैन।

क्या लेविस ने घुटने टेक दिए थे? उसके यकायक इस कदम के उठाने का रहस्य था अधिकरण मे तीसरे व्यक्ति की स्थिति। स्टीलमैन मजदूरों का दोस्त था और बताया जाता है कि उसे यूनियन शाप के प्रति सहानुभूति थी। खनिको के सरदार को विश्वास था कि उसका निर्णय क्या होगा और बाद की घटनाओ ने उसका यह विश्वास सत्य सिद्ध कर दिखाया। रूजवेल्ट ने हार मान ली थी। नए पंच-फैसला न्यायाधिकरण की नियुक्ति का वास्तविक

अभिप्राय प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड को मसूख करना और लेविस की माँग को स्वीकार करना था। हडताल वापस ले ली गई, कोयला खानो से निकाला जाने लगा किन्तु सरकार की सत्ता का निधड़क उल्लघन किया गया। गम्भीर राष्ट्रीय संकट ने राष्ट्रपति को यह विश्वास करा दिया था कि रक्षा कार्यक्रम को अब और खतरे मे नही डाला जा सकता, भले ही उसका मतलब लेविस की इच्छा-पूर्ति करना हो। लेकिन यह जो परिपाटी कायम हुई इसके आगे चलकर बडे गम्भीर परिणाम हुए।

कोयले की हडताल से जनता मे मज़दूरो के विरुद्ध भावना जोर पकड़ने लगी। यह भावना तभी से देश भर मे छाने लगी थी जब रक्षा उद्योगों में इससे पहली हडताले प्रारभ हुईं। वर्ष के प्रथमार्ध की हड़तालो ने और खासकर उन्होंने, जो साम्यवादियो ने भडकाई थी, आशंकित युद्ध के लिए तेज़ी से हथियारबन्द होते हुए राष्ट्र को कुपित कर दिया था। अखबारो के अग्रलेखो, राष्ट्रीय नेताओ के वक्तव्यो और लोकमत सग्रहो, सभी में मज़दूरो के प्रति सख्त होता हुआ रवैया ज़ाहिर हुआ। काग्रेस के अन्दर और उसके बाहर यूनियनो की ताकत को कम करने और औद्योगिक उत्पादन में और रुकावटों के खिलाफ लोकहित की रक्षा के लिए नए कानून की माँग की जाने लगी। कोयला हडताल और लेविस द्वारा राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड तथा राष्ट्रपति की सत्ता को चुनौती दिए जाने के भयावह दृश्य ने इस कार्य को तेज़ कर दिया। २२ राज्यो मे विभिन्न सख्तियों के मज़दूर-विरोधी कानून बनाए जा चुके थे और यूनियनो पर अंकुश लगाने के कोई ३० बिल काग्रेस में रखे गए।

कोयला हडताल और अन्य मजदूर-अव्यवस्थाओ पर, जिनमें बाल-बाल बची रेलवे हड़ताल भी शामिल थी, अनिश्चितता की पृष्ठभूमि मे प्रतिनिधि सभा ने ३ दिसम्बर को इनमे से एक मज़दूर-विरोधी बिल १३६ के विरुद्ध २५२ मतों से पास कर दिया। इसके द्वारा रक्षा उद्योगो में बन्दशाप को लेकर या अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी झगड़ो के कारण कोई भी हड़ताल करने पर पाबन्दी लगाने की बात कही गई थी, जब तक कि ३० दिन के शात वातावरण के बाद सरकार की निगरानी मे कराए गए चुनावो मे बहुसख्यक मजदूर उस हड़ताल के पक्ष मे मत न दे। बिल की ग्रीन ने 'उत्पीड़न का साधन' कह कर निन्दा

की। मरें ने कहा कि "अमरीकी लोकतंत्र में इससे ज्यादा विध्वंसक बिल कभी तैयार नही किया गया।" ऐसा लगा कि सेनेट इसकी धाराओं मे कुछ संशोधन कर दे।। और राष्ट्रपति अपेक्षाकृत नरम कानून पास करने के पक्ष मे थे लेकिन इसमें कोई शक नही रह गया था कि शीघ्र ही कोई न कोई ऐसा बिल पास किया जाएगा जो रक्षा-तैयारियों में बाधा डालने वाली अनवच्छिन्न हड़तालों के "राष्ट्रीय संकट" का सामना कर सके।

देश कुपित था। मजदूरो के दोस्तो ने भी इस डर से कि यूनियनो के खिलाफ लोकमत के रोष के कारण वागनर ऐक्ट में दिए गए मूल अधिकारों मे ही कोई कटौती न कर दी जाए, ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. के नेताओं को ज्यादा नरमी से काम लेने की सलाह दी। 'न्यू रिपब्लिक' ने अपने अग्रलेख में लिखा : "इस देश में यूनियन आन्दोलन अब एक बच्चा नही रहा जिसे संरक्षण की जरूरत हो। यह वयस्क हो गया है और एक जिम्मेदार वयस्क की तरह काम करे। इसके लिए यह जरूरी है कि यह भी उसी सामाजिक अनुशासन द्वारा नियन्त्रित हो जिससे शेष समाज नियन्त्रित है।"

१९४१ में जनता की इस प्रतिक्रिया के कारण यह पेण्डुलम किस सीमा तक मजदूरों के खिलाफ जाता इसका पता लगाना मुश्किल है क्योंकि नई घटनाएँ नाटकीय शक्ति के साथ बीच मे आ कूदी। ७ दिसम्बर को ही, जब कि पंच-फैसला न्यायाधिकरण ने कैप्टिव कोयला खानो मे लेविस को यूनियन-शाप प्रदान करने की घोषणा की थी और प्रतिनिधि सभा द्वारा पास किया गया हड़ताल-विरोधी बिल सेनेट मे विचारार्थ उपस्थित था, जापान ने पर्ल हार्बर पर हमला किया। राष्ट्र ने स्वयं को युद्ध-ग्रस्त पाया।

—:o:—

१८ : दूसरा विश्व-युद्ध

पर्ल हार्बर पर आक्रमण ने रातो-रात ऐसी राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा कर दी जैसी देश ने पहले कभी नही देखी थी। प्रशान्त महासागर में युद्ध छिड़ जाने से और जर्मनी तथा इटली द्वारा करीब-करीब तुरन्त ही युद्ध-घोषणा कर दिए जाने के बाद राष्ट्रीय रक्षा की परम आवश्यकता के अलावा सब कुछ भुला दिया गया। युद्ध से अलग रहने और युद्ध में कूद पड़ने के हामियों में वाद-विवाद का तुरन्त अंत हो गया, राजनीतिक मतभेद दफना दिए गए और मज़दूर नेताओ ने सम्मिलित रूप से राष्ट्रीय ध्येय के प्रति अपनी पूर्ण वफ़ादारी का वचन दिया। लेविस ने कहा : "जब राष्ट्र पर हमला किया गया है तब प्रत्येक अमरीकी को उसकी रक्षा में जुट जाना चाहिए। और सब बातें गौण हो गई है ....।"

देश-भक्ति का यह सुन्दर जोश सदैव इस ऊँचे स्तर पर कायम नही रहा। यद्यपि जर्मनी और जापान के साथ लड़ाई की सम्पूर्ण अवधि में अमरीकी समाज के सब वर्गों ने युद्ध-प्रयत्नो में निरन्तर सहयोग दिया किन्तु जब युद्धकालीन अर्थतंत्र राष्ट्र जीवन के सामान्य संतुलन को बिगाड़ता प्रतीत हुआ तो उद्योग, मज़दूर तथा किसान में से प्रत्येक ने एक साथ अपने हितो की रक्षा करने का प्रयत्न किया। यूनियन-सुरक्षा, सरकारी एजेंसियो में प्रतिनिधित्व तथा वेतन और कीमतो के आपसी सम्बन्धो के बारे में मज़दूरो को चिन्ता होनी स्वाभाविक थी। उन्होने अपनी युद्ध-पूर्व की शक्ति और प्रभाव को कायम रखने का दृढ़-निश्चय कर रखा था। हड़ताले हुईं, विशेषकर लेविस द्वारा बुलाई गई हड़ताले, जिन्होने कुछ अरसे के लिए सैनिक साज-सामान की सप्लाई को गंभीर रूप से खतरा उत्पन्न कर दिया।

तो भी मज़दूरो से सम्बन्धित समग्र तसवीर बहुत अनुकूल रही। यूनियन के जिम्मेदार नेताओ ने हड़तालो की संख्या कम-से कम रखने की कोशिश की और जब वे हो ही जाती थी तो उत्पादन मे कम-से-कम रुकावट आने देने के खयाल से मजदूरो को काम पर लौटाने की कोशिश करते थे। कोयला हड़तालो

को शामिल करके भी हडतालो के कारण कुल उपलब्ध मनुष्य-दिवसो के ·१ प्रतिशत काम की ही हानि हुई जो उस समय के बाद से जब से इस सम्बन्ध में आँकड़े उपलब्ध है, शायद १६२६ और १६३० को छोड़कर सबसे अच्छा रिकार्ड था। इन हड़तालों मे १६४२ से लेकर १६४४ तक के सम्पूर्ण अरसे में एक दिन प्रति मज़दूर से अधिक काम का नुकसान नही हुआ।

किन्तु वस्तुतः उत्पादन को हडतालों से ज्यादा खतरा मज़दूरो की कमी, उनके स्थानान्तरण और गैरहाजिरी के कारण था, जो युद्धकालीन परिस्थितियों का स्वाभाविक परिणाम थी। असैनिक रोजगार बढ़ कर ५,३०,००,००० की संख्या पर जा पहुँचे जिनमे ६०,००,००० स्त्रियाँ थी जिन्होने ज्यादातर सेना में गए हुए सैनिको का स्थान लिया था किन्तु कुछ क्षेत्रों मे दक्ष कर्मचारियो के लिए नाजुक आवश्यकता बनी रही, यद्यपि उसे पूरा करने के लिये हर सम्भव प्रयत्न किया गया। मनुष्य-शक्ति आयोग ने मजदूर प्राथमिकताओ और अनिवार्य सैनिक भरती के स्थगन की जटिल प्रणाली तैयार की किन्तु ऐसे मौके आए जब स्थल सेना व नौ सेना के रगरूट भरती करने वाले अफसरो का भय और अखबारों की अतिशयोक्तिपूर्ण सुर्खियाँ यह दर्शाती प्रतीत होती थी कि स्थिति बिल्कुल बेकाबू है।

१६४४ में रूज़वेल्ट ने एक राष्ट्रीय सेवा अधिनियम की सिफारिश करने की भी आवश्यकता महसूस की जिससे औद्योगिक कर्मचारियो को सेना मे जबरन भरती कर सकना सम्भव होता। किन्तु काग्रेस ऐसा कदम उठाना नही चाहती थी और शीघ्र ही लडाई का रुख उत्तरोत्तर अधिक अनुकूल होते जाने के कारण ऐसे उग्र कदम का परित्याग कर दिया गया। मजदूरों पर ऐसे सख्त नियन्त्रण लगाए बिना ही युद्ध समाप्त हो गया।

लड़ाई छिडने से काफी पहले आर्थिक नीतियाँ निर्धारित करने वाली, सरकारी एजेंसियो मे मजदूरो ने अपने प्रतिनिधित्व के अधिकार पर बल दिया था जो राष्ट्रीय सकट के कारण आवश्यक हो गया था। कुछ समय तक तो प्रशासन इस विषय में यूनियनों की सम्पूर्ण आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए अनिच्छुक जान पड़ा और मजदूरो ने बार-बार शिकायत की कि नीति-निर्धारण के स्तरों पर उसकी उपेक्षा की जा रही है। किन्तु ए. एफ. एल तथा सी. आई. ओ. के इस प्रकार के सतत दबाव के फलस्वरूप युद्धकालीन अर्थतंत्र के संचालन

में मज़दूरों को अन्तत प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान की अपेक्षा अब ज्यादा सरकारी मान्यता मिल गई और यह उनके नए प्रभाव का ज्वलन्त निदर्शन था।

सन् १९४१ में सिडनी हिलमैन ने, जिसे राष्ट्रपति ने इसलिए चुना था क्योंकि वह "जॉन लेविस तथा विल ग्रीन के बिल्कुल बीच का समझा जाता था" विलियम एस. कुण्डसेन के साथ उत्पादन प्रबन्ध कार्यालय मे सह-निदेशक का काम किया। जब इस एजेंसी की जगह डोनाल्ड एम. नेल्सन की अध्यक्षता में युद्ध-उत्पादन बोर्ड कायम हुआ तो अनेक श्रम-सलाहकार समितियाँ कायम की गईं और मजदूरो के प्रतिनिधियों ने उपाध्यक्ष का काम किया जिनके जिम्मे मनुष्य शक्ति की ज़रूरतें पूरी करने और मजदूरो द्वारा उत्पादन बढाए जाने का काम सुपुर्द था। १९४२ मे चालू किए गए युद्ध-उत्पादन अभियान के दौरान जहाज, विमान, टैंक और गोला-बारूद बनाने मे, जिसकी देश को सख्त जरूरत थी और भी ज्यादा सहयोगात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिये सम्पूर्ण देश भर के रक्षा उद्यगो मे मज़दूर-प्रबन्धक समितियाँ भी कायम की गईं। इन समिनियो का कुछ क्षेत्रो में विरोध किया गया। नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स के अध्यक्ष ने एक बार कहा: "उद्योगो के प्रबन्धक ही जब हमारी आर्थिक प्रणाली को भली भाँति चला रहे है, तब यह नया परीक्षण क्यों ?" किन्तु मालिको व मज़दूरो के सम्मिलित रूप से उत्पादन बढाने तथा छोटी-मोटी शिकायतें दूर कराने के लिए सहायता देने में ये वस्तुत: बहुत मूल्य-वान सिद्ध हुईं। एक वर्ष के अन्दर-अन्दर युद्ध-सामग्री बनाने वाले कारखानों मे, जिनमे ४० लाख कर्मचारी काम कर रहे थे, ऐसी १९०० समितियाँ स्था-पित हो गईं और इनकी संख्या बाद में ५००० तक जा पहुँची।

मजदूरो को युद्ध मनुष्य-शक्ति आयोग की मज़दूर-प्रबन्धक नीति समिति में भी प्रतिनिधित्व प्राप्त था। मूल्य-प्रशासन तथा असैनिक प्रतिरक्षा कार्यालय दोनो में श्रम-नीति समितियाँ थी तथा ए. एफ. एल. और सी आई. ओ. के अध्यक्ष ६ आदमियो के आर्थिक स्थिरीकरण बोर्ड पर काम कर रहे थे। युद्ध-प्रयत्न के निचले स्तरो पर मूल्य तथा राशनिंग बोर्डों में यूनियन सदस्य नियुक्त किए गए, असैनिक प्रतिरक्षा कार्यक्रम के विस्तार में उन्होने भाग लिया और युद्ध-पीड़ित लोगो को राहत प्रदान करने मे प्रभावशाली रोल अदा किया।

किन्तु इनमें किसी भी पद से कही ज्यादा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय युद्ध-श्रम बोर्ड में मज़दूरो का प्रतिनिधित्व था, जो औद्योगिक सम्बन्धो पर प्रभाव डालने वाले सम्पूर्ण युद्ध-कालीन कार्यक्रम के लिए एक बुनियादी चीज थी। इस एजेंसी को न केवल मज़दूरो तथा प्रबन्धकों के बीच झगड़े तय करने का काम सौंपा गया बल्कि वेतन और काम के घण्टो पर सामान्य नियंत्रण रखने को भी कहा गया। इसका इतिहास समस्त युद्ध-काल में ज्यादातर वही रहा जो मज़दूरो का।

युद्ध-श्रम बोर्ड की उत्पत्ति मजदूरो और व्यावसायिक नेताओ के एक सम्मेलन से हुई जो राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने काग्रेस के सामने पेश यूनियन विरोधी कानून को टालने और संभावित हडतालो को कम करने के उद्देश्य से युद्ध-कालीन सहयोग का एक आधार स्थापित करने के लिये पर्ल हार्बर काण्ड के लगभग तुरन्त बाद बुलाया था। १७ दिसम्बर, १९४१ को वाशिंगटन मे इसकी बैठक हुई और लम्बे विचार-विमर्श के बाद एक त्रि-सूत्री कार्यक्रम पर समझौता हो गया। ये तीन सूत्र थे : युद्ध के दौरान कोई हडताल और तालाबन्दी न हो, औद्योगिक विवाद शाति से निबटाए जाएँ तथा जिन झगडो का कोई हल न निकल सके उन्हें निबटाने के लिए एक श्रम-बोर्ड कायम किया जाए। इस बैठक में यूनियन सुरक्षा के बुनियादी मामले पर, जिसके कारण राष्ट्रीय प्रति-रक्षा मध्यस्थता बोर्ड भग हो गया था, मज़दूरो तथा प्रबन्धको के बीच कोई समझौता नही हो सका। तब इति गतिरोध को जबर्दस्ती रूज़वेल्ट ने यह आग्रह करके दूर किया कि यह सवाल नए युद्ध श्रम-बोर्ड द्वारा हल किए जाने के लिये छोड दिया जाए।

तब जनवरी, १९४२ में एक सरकारी आदेश से यह बोर्ड कायम कर दिया गया। यह त्रिपक्षीय था और इसमे १२ सदस्य थे—४ प्रबन्धको के, ४ मज़दूरो के और ४ आम जनता के। इसका अध्यक्ष प्रतिरक्षा मध्यस्थता बोर्ड के भूतपूर्व मुखिया विलियम एच. डेविस को बनाया गया। बाद मे इसी अनुपात में वैकल्पिक प्रतिनिधि तथा सह-सदस्य और शामिल कर लिए गए। मूलतः बनाए गए युद्ध-श्रम बोर्ड का मुख्य काम युद्ध मत्री द्वारा प्रमाणित किए जाने के बाद हल न होने वाले ऐसे किसी भी औद्योगिक झगड़े को अपने हाथ मे लेना था जो "युद्ध के सफल सचालन में सहायता देने वाले कार्यो मे रुकावट पैदा कर

सकता हो ।" इसके निर्णय उद्योग तथा मज़दूर दोनो के लिए अनिवार्यतः मान्य कर दिए गए ।

युद्ध-श्रम बोर्ड को दिए गए अधिकारो का वास्तविक अभिप्राय युद्धकाल में सामूहिक सौदेबाज़ी की सामान्य प्रक्रिया को स्थगित कर देना था । मज़दूरो ने अपने हितो की रक्षा के लिए हड़ताल का अन्तिम उपाय के रूप में प्रयोग का परित्याग कर दिया और काम और रोज़गार की शर्तें तथा हालात अन्ततः बोर्ड तय करता था । इसके अलावा बोर्ड के निर्णय त्रिपक्षीय निर्णय होते थे जिसमें प्रबन्धको तथा मज़दूरों के सहमत न हो सकने पर अन्तिम राय स्वभावतः जनता के प्रतिनिधियो की चलती थी ।

युद्ध-श्रम बोर्ड का १९४२ में शुभ-आरम्भ हुआ जब इसने सदस्यता बनाए रखने के तथाकथित समझौतो में यूनियन सुरक्षा के प्रश्न का समाधान किया । न तो वन्द शाप ही और न यूनियन शाप ही लागू की गई । यूनियन के सदस्यो अथवा बाद में यूनियन में शामिल होने वालो के लिए यह जरूरी कर दिया गया कि उनकी तरफ से किए गए करार के एक अंग के रूप मे करार के कायम रहने तक वे यूनियन के सदस्य बने रहें और अगर किसी समय उनका यूनियन-रिकार्ड अच्छा नही रहा तो उन्हे अपने काम से हटाया जा सकता था । युद्ध-श्रम बोर्ड मे प्रबन्धकों के प्रतिनिधियो ने इस व्यवस्था का विरोध किया और उन्होने कभी भी इसे पूर्णतः नही माना, किन्तु जब बोर्ड के फैसले में यह व्यवस्था कर दी गई कि यूनियन मे शामिल होने के बाद १५ दिन के अन्दर-अन्दर कोई कर्मचारी अपने किसी हित को नुकसान पहुँचाए बिना यूनियन से अलग हो सकता है तो उन्होने चुपचाप इस व्यवस्था को स्वीकार कर लिया । एक बार तय हो जाने पर सदस्यता को कायम रखने के सिद्धान्त का सारे युद्धकाल मे पालन किया गया । अन्त में यह कोई ३० लाख कर्मचारियो पर अथवा यूनियन समझौतो मे समाविष्ट मज़दूरो के लगभग २० प्रतिशत हिस्से पर लागू कर दिया गया ।

औद्योगिक शांति में इस आश्वासन से ज्यादा और कोई चीज योग नही दे सकती थी कि यूनियन सुरक्षा और व्यक्ति के काम की स्वतन्त्रता दोनो की हिफाज़त की जाएगी और इस बुनियादी मामले पर युद्ध-श्रम बोर्ड की नीति का सीधा परिणाम यह हुआ कि १९४२ में हड़तालें कम हो गई । वर्ष की

समाप्ति पर ए. एफ. एल. के वार्षिक सम्मेलन मे अध्यक्ष ग्रीन ठीक ही यह दावा कर सका कि मजदूरो ने "पहले किसी भी समय की अपेक्षा निरन्तर, निर्बाध उत्पादन का शानदार रिकार्ड रखा है।" और इस रिकार्ड को राष्ट्र के सभी सिविल तथा सैनिक नेताओ ने स्वीकार किया। सम्मेलन को भेजे गए एक सन्देश में रूजवेल्ट ने कहा कि युद्ध-प्रयत्नो में मजदूरो का सहयोग अपनी कहानी आप कह रहा है—"यह बड़ा शानदार है।"

किन्तु शीघ्र ही यूनियन सुरक्षा से भी अधिक कठिन समस्या आ खडी हुई। युद्धकाल में चीजो के दाम बढने से उसके अनुरूप वेतनो मे हेर-फेर की माँग की जाने लगी। युद्ध-श्रम बोर्ड ने इस मामले को पहले व्यक्तिगत आधार पर हल करने की कोशिश की और जहाँ परिस्थितियों को देखते हुए उचित जान पड़ा वहाँ वेतन-वृद्धि की अनुमति भी दी। किन्तु मुद्रा-प्रसार के रुख पर सरकार बहुत चिन्तित थी और अप्रैल, १६४२ मे आर्थिक स्थिरता बनाए रखने की कोशिश में उसने मूल्य और वेतन स्थिरीकरण का एक व्यापक कार्यक्रम अपनाया। युद्ध-श्रम बोर्ड के लिए कोई ऐसा फार्मूला निकालना जरूरी हो गया जो वेतन दरो मे आम वृद्धि को रोकने की बुनियादी आवश्यकता और जहाँ उचित प्रतीत हो वहाँ वेतनो में वृद्धि के बीच समन्वय करे। रूज-वेल्ट ने इस प्रश्न पर कोई विशिष्ट निर्देश नही किया क्योंकि यह महसूस किया गया कि वेतनो को बिल्कुल अवरुद्ध कर देना अव्यावहारिक होगा। इसलिए यह बोर्ड पर छोड़ दिया गया कि वह वर्तमान अनौचित्यों और एक निश्चित स्तर से कम वेतनो को मद्दे-नजर रखते हुए यथाशक्ति उत्तम ढग मे वेतनों मे स्थिरता स्थापित करे।

युद्ध-श्रम बोर्ड के लिए इस विषय में एक सामान्य नीति निर्धारित करने का पहला अवसर तब आया जब लिटल स्टील कम्पनियो के कर्मचारियो ने जुलाई मे १ डालर प्रतिदिन की वेतन-वृद्धि की माँग की। लम्बी सुनवाई के बाद यह तय किया गया कि कोई भी वेतन-वृद्धि जनवरी, १६४१, जबकि मूल्य अपेक्षाकृत स्थिर थे तथा मई १६४२ के जबकि मुद्रा प्रसार विरोधी कार्यक्रम अमल मे लाया गया था, बीच के समय मे बढ़ी हुई महँगाई के बराबर होनी चाहिए। ब्यूरो आव लेबर स्टैटिस्टिक्स की मूल्य तालिका के आधार पर (जिसे बाद में उपभोक्ता मूल्यसूचक अक कहा गया) यह

१५ प्रतिशत के बराबर थी। इस आनुपातिक वृद्धि के कारण लिटल स्टील के कर्मचारियों को उनकी एक डालर की माँग के मुकाबले ४४ सेण्ट दैनिक की वेतन-वृद्धि प्रदान की गई।

यही तथाकथित लिटल स्टील फार्मूला था। वेतन-सम्बन्धी सभी विवादो को हल करने मे बाद मे युद्ध-श्रम बोर्ड ने यही बुनियादी कसौटी अपनाई। यह इस धारणा पर अपनाई गई थी कि स्थिरीकरण कार्यक्रम से "मूल्य और वेतनो में दु:खद होड़ समाप्त हो जाएगी" जो पहले १९४१ में शुरू हुई थी। अगर इस धारणा का आधार मज़बूत होता तो वेतन सम्बन्धी झगड़ो को निवटाने का बोर्ड का काम अपेक्षाकृत आसान होता। किन्तु मूल्य सख्ती से स्थिर नही रखे जा सके और बोर्ड को अपने फार्मूले में महँगाई के आशा से अधिक बढ जाने के कारण निरन्तर हेर-फेर करना पड़ा।

लिटल स्टील फार्मूले को शीघ्र ही सरकारी आदेश से अन्य जगहों पर भी लागू कर दिया गया था, जहाँ वेतन सम्बन्धी विवाद उत्पन्न नही हुए थे। अक्तूबर, १९४२ में आर्थिक स्थिरीकरण अधिनियम पास हो जाने के बाद युद्ध-श्रम बोर्ड को मुद्रा-प्रसार विरोधी कार्यक्रम के एक अंग के रूप में समस्त उद्योगो मे वेतन-वृद्धि को लिटल स्टील के फार्मूले के मुताबिक प्रति घण्टे की दर से वेतन पाने वालो के लिए १५ प्रतिशत तक सीमित रखने का आदेश दिया गया। इसमें सिर्फ उन्ही उद्योगो को अपवाद माना गया जहाँ बहुत शोचनीय और अनुचित हालात विद्यमान थे। इसलिए युद्ध के शेष दिनो के लिए बोर्ड के दो स्पष्ट काम रहे: विवादो को निबटाना और ऐच्छिक वेतन समझौतो को स्वीकृति प्रदान करना। इन दोनो वर्गो में लिटल स्टील फार्मूलो की सभी वेतन-वृद्धियो के लिए अधिकतम सीमा निश्चित कर दी गई।

मजदूर सामान्य स्थिरीकरण के कार्यक्रम का समर्थन करने को तैयार थे और जब तक मूल्यो को प्रभावशाली ढंग से बढने से रोका जा सके तब तक उनका लिटल स्टील फार्मूले से कोई झगड़ा नही था। किन्तु मुद्रा प्रसार की वेगवती धारा को रोकने के लिए बनाए गए बाँधो मे जैसे-जैसे दरारे पड़ती गईं, इसको कार्यान्वित करने से रोष बढता गया। १९४३ के शुरू तक उपभोक्ता मूल्य सूचक अक लिटल स्टील फार्मूले के समय ११५ से बढ़कर १२४ तक पहुँच चुका था और यूनियनों का तो यह कहना था कि मूल्यों में

वास्तविक वृद्धि तालिका में दिखाई गई वृद्धि से कही ज्यादा हुई है। मजदूर अनुभव करने लगे कि उन्हे महँगाई की मार सहने के लिए मजबूर किया जा रहा है जबकि किसान व अन्य उत्पादक उससे लाभ उठा रहे है।

सरकार ने इस स्थिति के खतरे को महसूस किया किन्तु वेतन मे वृद्धि करने के बजाय उसने कीमतें गिराने का प्रयत्न किया। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अप्रैल में अपना प्रसिद्ध "मूल्य-रोको" आदेश जारी किया और एक उचित मूल्य-वेतन सम्बन्ध को कायम रखने की हर संभव कोशिश की गई। ये नियंत्रणकारी कदम अपेक्षाकृत ज्यादा सफल रहे। इसके बाद १९४४ के अन्त तक उपभोक्ता मूल्य सूचक अक सिर्फ एक प्वाइट बढ़ा और अगस्त, १९४५ में भी १२९ से ज्यादा नही था किन्तु सच्चाई यह थी कि यद्यपि मूल्यो पर अंकुश लगा दिया गया था तो भी उन्हे गिराया नही जा सका था रहन-सहन की लागत लिटल स्टील फार्मूले के अन्तर्गत प्रदान की गई वेतन-वृद्धि से काफी ज्यादा ही रही।

इन घटनाओ के फलस्वरूप, १९४३ में मजदूर अधिकाधिक बेचैन हो गए और पिछले १२ महीनो में औद्योगिक शाति का असाधारण रिकार्ड स्थिर नही रह सका। वर्ष की समाप्ति से पूर्व ही हुई हड़तालो में करीब २० लाख मजदूरो ने काम बन्द किया, जिनकी संख्या १९४२ से दुगनी थी और ४१,८३,००० मनुष्य-दिवसों के मुकाबले कुल १,३५,००,००० मनुष्य-दिवसों की हानि हुई। यद्यपि यह अब भी कुल कार्यकाल के सिर्फ १.७ प्रतिशत से कुछ ही ज्यादा था तो भी यह स्थिति में गम्भीर बिगाड़ आ जाने का ही सूचक था।

ये हड़तालें ज्यादातर असन्तुष्ट मज़दूरो द्वारा की गई स्थानीय हड़तालें थी जिनके लिए ए. एफ एल. अथवा सी. आई. ओ. के नेताओ ने मज़ूरी नही दी थी। विवादग्रस्त मामलो को हल करने मे युद्ध-श्रम बोर्ड के अत्यधिक विलम्ब से अधीर होकर अथवा छोटी-मोटी शिकायतो पर जिनके समाधान से मजदूर सन्तुष्ट नही थे, उत्तेजित होकर मज़दूर प्रायः लगाम स्वयं अपने हाथ मे ले लेते और यकायक काम छोड़ देते थे। युद्धकालीन परिस्थितियों ने यह खिचाव और तनाव और बढा दिया। अन्य परिस्थितियो मे जिन्हें बहुत तुच्छ-सी बात समझा जाता, उन पर जोर से रोष प्रकट किया गया। लम्बे समय

तक भारी दबाव में काम करने के कारण और युद्धकालीन बस्तियों में रहते हुए, जहाँ की भीड़-भाड़ से आदमी आसानी से उत्तेजित हो जाता था, अगर स्त्री-पुरुष कभी अपनी शिकायतों पर विचार करने में प्रबन्धकों की कथित असफलता के खिलाफ विरोध प्रकट करने के लिए अपने औजार रख देते थे या मशीनो पर काम करना छोड़ देते थे तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। कभी-कभी ये हड़तालें मजदूरों की "यकायक भड़की हुई संक्षिप्त हड़तालो" से अधिक कुछ नही होती थीं। जब मजदूर एक बार अपने अधिकार जताकर अपनी भाप निकाल देते थे तो झगड़े शीघ्र निबट जाते थे और उत्पादन बिना किसी गम्भीर रुकावट के फिर प्रारम्भ हो जाता था।

इन सक्षिप्त और अनधिकत हड़तालो में एक अपवाद १९४३ की ग्रीष्म ऋतु मे लेविस द्वारा कराई गई कोयला-हड़ताले थी। ये सरकार की वेतन नीति तथा युद्ध श्रम बोर्ड के अधिकार को चुनौती थी जिनके गम्भीर और व्यापक परिणाम हुए।

अप्रैल मे जब युनाइटेड माइन वर्कर्स तथा खान मालिको मे वार्षिक करार को फिर से नया करने का सनय आया तब लेविस ने वेतन सम्बन्धी नई माँगें रखी। ये कोई तुच्छ माँगें नही थी। उसने ५,३०,००० खनिकों के लिए दो डालर दैनिक वेतन वृद्धि की और इसके अलावा जमीन के नीचे सफर करने के लिए एक द्वार से दूसरे द्वार पर जाने की दर से वेतन दिए जाने की माँग की। इस झगडे को युद्ध-श्रम बोर्ड ने अपने हाथ मे लिया। लेविस ने इसकी सत्ता को मानने से इन्कार कर दिया। उसने इसे "पक्षपातपूर्ण" और "बुरा" बता कर इसकी निन्दा की और इसकी सुनवाई का उसने चुनौती भरा बायकाट किया। उसने जता दिया कि अगर उसकी माँगे स्वीकार नही की गई तो कोई समझौता नही होगा और एक बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति पैदा हो जाएगी। बेशक वह युद्ध-काल में हड़ताल नहीं कराएगा किन्तु 'खनिक करार के अभाव में कोयला खान-मालिकों की सम्पत्ति पर पदाक्रमण करने के इच्छुक नही है।"

यूनाइटेड माइन वर्कर्स के सदस्यो को इससे आगे और किसी निर्देश की प्रतीक्षा नही थी। जब उन्होने ३० अप्रैल को मौजूदा करार की अवधि बाकायदा समाप्त हो जाने से पहले ही काम छोड़ना शुरू कर दिया तो देश के सामने

कोयला-उत्पादन ठप्प हो जाने का सकट उपस्थित हो गया जो अधिक लम्बा चलने पर युद्ध के सम्पूर्ण अर्थतन्त्र पर विपज्जनक प्रभाव डाल सकता था। संकट १९४१ की पतझड़ से भी ज्यादा गम्भीर था और रूजवेल्ट ने विवश होकर इस पूर्ण और विनाशकारी हड़ताल को टालने के लिए कदम उठाए। उन्होने कोयला खानों पर सरकार की जब्ती का आदेश जारी किया और दो मई को रेडियो पर खनिकों से काम पर लौट जाने की अपील की।

करार सम्बन्धी वार्ता के भंग होने का पूर्ण उत्तरदायित्व युनाइटेड माइन वर्कर्स के नेताओ के कन्धों पर डाला गया। राष्ट्रपति ने कहा कि लेविस मजदूरों द्वारा हड़ताल न करने की प्रतिज्ञा में भागीदार था और औद्योगिक झगडो को शातिपूर्वक निबटाने वाले युद्ध-श्रम बोर्ड से कोई वास्ता न रखने से इन्कार करके वह सरकार की सत्ता को चुनौती दे रहा है। रूजवेल्ट ने खनिको से सहानुभूति प्रकट की और जो चीजे उन्हे खरीदनी पड़ती थी उनकी कीमतें गिराने का वायदा किया। किन्तु उन्होने मजदूरो को यह भी याद दिलाया कि जो कोई व्यक्ति कोयला निकालने से इन्कार करता है वह युद्ध-प्रयत्न मे बाधा डाल रहा है, अमरीकी योद्धाओ व नौसैनिको के जीवन से खेल रहा है और सब लोगो की भावी सुरक्षा को खतरे में डाल रहा है। उत्पादन जारी रखना ही होगा। खानें गृह-मन्त्री द्वारा पुराने करार के अन्तर्गत चलायी जाएँगी किन्तु युद्ध श्रम-बोर्ड जो नया समझौता मंजूर करेगा उसे अतीत से लागू किया जाएगा। अन्त में रूजवेल्ट ने कहा कि "कल कोयला खानो पर सितारो व धारियो वाला झण्डा लहराएगा। मै आशा करता हूँ कि प्रत्येक खनिक उस झण्डे के नीचे काम कर रहा होगा।"

रूजवेल्ट ने अपील निकाली और कुछ ही दिनो मे खनिक वापस काम पर आगए, किन्तु इसलिए नहीं कि राष्ट्रपति ने अपील की थी। राष्ट्रपति के रेडियो-भाषण से सिर्फ २० मिनट पहले लेविस ने १५ दिन की अस्थायी सधिकी (जो बाद में ३० दिन की कर दी गई) घोषणा कर दी थी जिस बीच सेक्रेटरी आइक्स के साथ सहयोग से एक नए करार के लिए कोशिश की जानी थी। उसने आत्मसमर्पण नहीं किया था, वह पीछे भी नहीं हटा था। उसने अपनी कोई भी माँग वापस लिए बिना सिर्फ एक अस्थायी राहत प्रदान की थी।

विवाद अगले ६ महीने तक चलता रहा, जिसमें कभी काम रोक दिया

जाता था और कभी अस्थायी विराम-संधि कर ली जाती थी। अन्त में खानें इस आशा से निजी मालिको को सौंप दी गईं कि अब और सरकारी हस्तक्षेप के बिना उनके तथा यूनियन के बीच एक समझौता हो सकता है किन्तु समझौते की प्रस्तावित शर्तों को युद्ध-श्रम बोर्ड ने लिटल स्टील फार्मूले के विरुद्ध बतला कर अस्वीकृत कर दिया। लेविस ने किसी भी समय बोर्ड की सत्ता को, अथवा कोयले के उत्पादन में सार्वजनिक हित को स्वीकार करने में ज़रा सी भी इच्छा नही दिखाई। अक्तूबर के आखिर मे अंतिम संकट आ पहुँचा जबकि चौथी बार ५ लाख खनिकों ने अपने औजार रख दिए और लेविस की मूक वाणी का अनुसरण कर खानो से दूर रहे। सरकार ने खानो पर पुनः कब्जा कर लिया और इस बार सैक्रेटरी आइक्स को सिर्फ तब तक के लिए जब तक कि खानो पर सरकारी अधिकार रहता है, विशेष वेतन समझौता करने के लिये कहा गया। किन्तु यह समझौता भी युद्ध-श्रम बोर्ड द्वारा मंजूर किया जाना था।

मूलतः दाँव पर लगे मामलो को जनता बहुत पहले ही भूल चुकी थी और तसवीर बहुत अधिक झमेले वाली हो गई थी। खनिको तथा खान मालिकों में, खनिको और सरकार के बीच तथा युद्ध-श्रम बोर्ड और गृहमंत्री के मध्य भी बार-बार संघर्ष हुए किन्तु लेविस अब भी स्थिति का स्वामी था। कोयले की अनिवार्य आवश्यकता के होते हुए भी उसकी कठोर और गुह्य टेक ने संघर्ष के अन्य सभी पहलुओ को गौण कर दिया था। मामले पर कोई निश्चित रुख अख्त्यार न करने तथा कठोर कार्रवाई न करने के लिए राष्ट्रपति की व्यापक आलोचना की गई किन्तु आम जनता की राय में सारा दोष लेविस का था। अन्य मजदूरो को यद्यपि कोयला-श्रमिको से सहानुभुति थी और कीमतें कम रखने मे विफलता को नाटकीय ढंग से जाहिर करने के कारण वे हड़ताल का स्वागत भी करते थे तो भी उनके प्रवक्ताओ ने लेविस की आलोचना की। सी. आई ओ. की कार्यकारिणी ने युद्ध-श्रम-बोर्ड के प्रति उसके रवैये की तथा "अमरीका के राष्ट्रपति के खिलाफ उसके निजी और राजनीतिक दोषारोपणो" की खुल्लमखुल्ला निन्दा की।

खानो पर दूसरी बार कब्जा किए जाने के बाद लेविस और सैक्रेटरी आइक्स मे अन्ततः एक समझौता हो गया। यह एक बड़ा जटिल समझौता

था। ज्यादातर खान के एक द्वार से दूसरे द्वार तक की यात्रा के भुगतान को शामिल करके और खनिको के काम के घण्टे बढ़ाकर उनके वेतनो में १'५० डालर प्रतिदिन की वृद्धि की गई। चूँकि बुनियादी वेतन दर के लिए लिटल स्टील फार्मूले की नाममात्र को रक्षा कर ली गई थी इसीलिए युद्ध-श्रम-बोर्ड ने अनमने भाव से उसे स्वीकार कर लिया था। तो भी लेविस ने सरकार को मजबूर कर दिया था और भले ही उसने इतना कुछ प्राप्त न किया हो, जितना दावा करता था तो भी उसकी यह एक महान् विजय प्रतीत होती थी। इसके अलावा नए समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए जाने के बाद ही उसने खनिको को काम पर लौटने का हुक्म दिया।

लेविस कठोर बनकर अपनी टेक पर अड़ा रहा। पर्ल हार्बर से ऐन पहले की पूर्व हड़ताल के समान अब भी उसने बार-बार यही कहा कि राष्ट्रीय संकटकाल को खनिको के शोषण का बहाना नही बनाया जा सकता। वेतन वृद्धि की उनकी माग को सिर्फ एक न्याय की बात कहा गया जो कोयला-उत्पादन अथवा राष्ट्रीय-रक्षा की किसी भी धारणा से ऊँची चीज समझी गई। स्वयं खनिक लेविस के आदेशों का बिना आनाकानी पालन करते थे। जब लेविस उन्हें काम करने के लिये कहता था तो वे काम करते थे, जब वह उन्हें घर पर रहने या मछली पकड़ने जाने को कहता तो वे घर पर रहते थे या मछली पकड़ने चले जाते थे। वे अपनी यूनियन के अध्यक्ष का आदेश मानते थे, अमरीका के राष्ट्रपति का नही।

जब कभी भी इन खनिकों ने हड़ताल की, तब लोकमत के क्रोध की बौछारो का उनके रवैये पर कोई प्रभाव नही पड़ा। रहन-सहन के खर्चे में वृद्धि से जो उनके वेतनों से बहुत आगे निकल गई थी, तग आकर, कठिन और खतरनाक ढग का परिश्रम करते हुए और यह अच्छी तरह महसूस करते हुए कि अतीत में प्राप्त किए गए सब लाभ उन्होने संघर्ष से प्राप्त किए है, एक दूसरे से छितरे हुए कोयला-नगरो मे लोकमत के सीधे प्रभाव से अछूते ये खनिक अनुभव करते थे कि उनकी हड़ताल बिल्कुल जायज है चाहे उससे अन्य सब उद्योगो के लिए निहायत जरूरी उत्पादन रुक जाता हो।

१९४३ की वसन्त के आखिरी दिनो और ग्रीष्म ऋतु में जब यह कोयला-

विवाद जारी था तब युद्ध प्रयत्न पर आए इस खतरे पर तथा अन्यत्र काम रुक जाने की आशंका पर जहाँ स्थिति बेकाबू होती दीख रही थी, लोगों के रोष ने मजदूरो के विरुद्ध एक शक्तिशाली लहर चला दी। जून में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने घोषणा की कि खनिको का रवैया "असह्य" है और गैर-लड़ाकू सेवा के लिए भरती की आयु बढाने का प्रस्ताव किया जिससे उन्हे सेना मे भरती किया जा सके और चेतावनी दी कि "कोयला-हडतालों ने बहुत अधिक अमरीकी जनता में रोष और नाराज़गी उत्पन्न कर दी है।" राष्ट्रपति का यह अन्तिम कथन शायद वास्तविकता से कुछ कम ही था। अखबारों ने करीब-करीब एक स्वर से कोयला खानो मे देश भक्ति-हीन मज़दूर नेताओ की निन्दा की और अन्य क्षेत्रो में हडतालो के विस्तार को उन्होने युद्ध-प्रयत्नो में मज़दूरो के पूर्ण सहयोग की गारण्टी के लिए की गई हडताल न करने की प्रतिज्ञा का भंग बताया।

किन्तु मज़दूरो के अत्यधिक बहुमत ने जिस प्रकार हडताल-न-करने की प्रतिज्ञा निबाही और जिम्मेदार मजदूर नेताओ ने गैर-कानूनी हड़तालो को रोकने के लिए जिस कदर कोशिशें की उन्हें देखते हुए ये आक्षेप लगाना ठीक नहीं है। अखबार मज़दूरो की उचित शिकायतो का कभी उल्लेख नही करते थे। किन्तु साथ ही कोयला हडतालो के अलावा तस्वीर के कुछ ऐसे भी पहलू थे जिनसे यूनियनो की नीतियो के बारे में लोकमत की आलोचना को बल मिलता था और मज़दूरो पर वे अकुश लगाने की माँग तेज़ कर दी गई जो १६४१ में स्थगित कर दिए गए थे।

यह सही है कि युद्धकाल में यूनियनो ने अपने सदस्यो के हितों की रक्षा के लिए अनेक बार मनमाने ढग से काम किया। काफी अरसे से कुछ यूनियनो मे श्रम को बचाने वाले यत्र लगाने अथवा लागत कम करने के अन्य उपाय अपनाने का विरोध करके मज़दूर-इजारेदारियो का निर्माण करने या उन्हें बनाए रखने की प्रवृत्ति पैदा हो गई थी। "फैदर बैडिंग" के कुछ उदाहरण (फैदर बैडिंग वह प्रक्रिया होती है जिसमे यूनियनें अतिरिक्त कर्मचारी रखे जाने का आग्रह करती है, जबकि उनकी वस्तुतः जरूरत नही होती) या दर्शक, जिनका काम सिर्फ स्वार्थपूर्ण यूनियन विशेषाधिकारो की रक्षा करना होता था, कई व्यवसायो मे बदनाम थे। अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी हडतालों और यूनियनो के आपसी

झगड़ो का जिनसे काम ठप्प हो जाता था, सारा नुकसान प्रबन्धकों और आम जनता को उठाना पडता था, यद्यपि उन पर इनका कोई बस नही था। इन हडतालो से मजदूरो के इस या उस गुट के स्वार्थपूर्ण उद्देश्यो की ही सिद्धि होती थी। और अन्त में जनता इस बात पर अत्यधिक चिन्तित हुए बिना न रह सकी कि मजदूर इस बात की कोई गारण्टी नही दे सके कि आवश्यक जन-सेवाओ में, जिन पर समस्त समाज का जीवन अवलम्बित है, हड़ताल करके जान-बूझ कर रुकावट नही डाली जाएगी, यद्यपि युद्ध के कारण उन जन-सेवाओ का जारी रहना राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गया था।

यूनियनो की गैर-जिम्मेदारी के हर मामले का यूनियन विरोधी मालिक अधिक-से अधिक लाभ उठाते थे और उद्योग-व्यापी हड़तालो के खतरे को बढ़ा-चढा कर पेश करते थे। संगठित मजदूर भी यह आशा नही कर सकते थे कि लोकमत का उचित ध्यान रखने में इसकी कमियो, गलतियो और विफलताओ का उसके विरोधी लाभ नही उठाएँगे। किन्तु सामूहिक समझौतो के परिपालन की संख्या यद्यपि वस्तुत. बढ रही थी तो भी इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि युद्धकाल में मजदूर कभी-कभी राष्ट्रीय हितो के प्रति कठोर अवहेलना दिखाते थे। कुछ भी हो, १९४३ में देश का मूड काग्रेस और विधान-सभाओ में ऐसे कानून बनाए जाने के नए अभियान के रूप में प्रकट हुआ जिनसे हडतालो तथा मजदूरो की अन्य ज्यादतियो से जनता की रक्षा हो सके। इस अभियान का इतना व्यापक समर्थन किया गया कि उने सिर्फ नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स या यूनाइटेड स्टेट्स चैम्बर्स आव कामर्स के अक्खड़ व्यक्तियो का काम कह कर आसानी से टाला नही जा सकता था।

काग्रेस में प्रस्तुत प्रतिबन्धात्मक बिलो में से सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि-सभा के स्मिथ तथा सेनेटर कौनाली द्वारा पेश किया गया बिल था। इसको शक्तिशाली समर्थन प्राप्त हुआ और कोयला-हड़तालो से उत्पन्न उत्तेजना में जून में प्रतिनिधि-सभा तथा सेनेट मे निर्णायक बहुमत से आनन-फानन मे पास कर दिया गया। बिल में सर्वप्रथम युद्ध-श्रम बोर्ड को विधिसम्मत सत्ता प्रदान की गई। श्रम-विवाद को हल करने मे इस बोर्ड के असफल रहने की दशा में

राष्ट्रपति को ऐसे किसी भी कारखाने अथवा उद्योग को अपने कब्जे में लेने का अधिकार प्रदान किया गया जहाँ उत्पादन रुकने से युद्ध-प्रयत्नो को खतरा उत्पन्न होता हो और इसके बाद जो कोई व्यक्ति हड़ताल करे या हडताल के लिए उकसाए उसके लिए जरायम सजाओ की व्यवस्था की गई। जब सरकार हस्तक्षेप करना आवश्यक नही समझती थी तब हडताल पर इतने कठोर प्रतिबन्ध लागू नही होते थे। किन्तु उन्हें ३० दिन तक शाति रखने की अवधि से रोका जाता था जिसके दौरान हडताल के बारे में नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड सब सम्बन्धित मज़दूरो का वोट लेता था। अन्त में स्मिथ-कौनाली ऐक्ट ने राजनीतिक आन्दोलन कोषो में यूनियनो द्वारा दिए जाने वाले समस्त चन्दो पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

इस बिल पर शीघ्रता से लिया गया वोट युद्ध-काल में किसी भी हडताल के विरुद्ध जन-सामान्य के तीव्र रोष का परिणाम था और जॉन एल. लेविस के दम्भपूर्ण तौर-तरीको ने इस अग्नि में आहुति का काम किया। यद्यपि युद्ध-काल मे औद्योगिक उत्पादन की रक्षा व्यवस्था करने की जरूरत थी तो भी कांग्रेस इस दिशा मे आवश्यकता से कही अधिक बढ गई। इसने बिल मे जरायम दण्ड की व्यवस्था करके हडताल-न-करने की प्रतिज्ञा का मज़दूरो द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए परिपालन की उपेक्षा कर दी और विचित्र बात तो यह है कि अन्य परिस्थितियो में इसने हडताल-मत लिए जाने की व्यवस्था की जिससे मज़दूर हडताल-न-करने के अपने दायित्व से मुक्त हो गए। अर्थात् यूनियनों पर अनुशासन उनके स्वीकृत अधिकार के प्रयोग पर पाबन्दी लगाकर स्थापित करने का यत्न किया गया, यद्यपि उन्होने स्वयं युद्ध-काल में अपने इस अधिकार का प्रयोग न करने का वचन दिया था और सामान्यत: उसका वे पालन भी कर रही थी। ए. एफ. एल. ने तीखेपन से कहा : कि इस बिल का जन्म "कांग्रेस के प्रति क्रियावादी सदस्यो की घृणा और ईर्ष्या से हुआ है" और मर्रे ने उसकी बात का समर्थन करने वाले सी. आई. ओ. के एक सम्मेलन में कहा कि "देश मज़दूरों और उनके अधिकारो पर राष्ट्र के इतिहास में अब तक के सबसे कुटिल और सतत प्रहार को देख रहा है।"

राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने स्मिथ-कौनाली बिल पर अपने निषेधाधिकार का प्रयोग किया। उन्होने गैर-ज़िम्मेदार यूनियनवाद के खिलाफ सतर्कता की जरू-

रत को स्वीकार करते हुए इसकी कुछ धाराओ को मंजूर कर लिया किन्तु वे ३० दिन की शांति रखने की अवधि और हड़ताल के बारे में मत लेने की व्यवस्था के खास तौर से विरुद्ध थे। उन्होने कांग्रेस को यह समझाने की कोशिश की कि यह बिल सरकार के हडताल न होने देने के कार्यक्रम के, जिसका यूनाइटेड माइन वर्कर्स की मनमानी टेक के बावजूद सामान्यतः मजदूरो ने समर्थन किया है, बिल्कुल विपरीत जाता है और इससे औद्योगिक शांति होने के बजाय मजदूरो मे बेचैनी बढ़ेगी। किन्तु उस समय की मूड में कांग्रेस ने उनकी आपत्तियो पर कोई ध्यान नही दिया और उनके निषेधाधिकार को रद्द कर दिया। न्यूयार्क टाइम्स ने इस ऐक्ट को जिसे सरकारी तौर पर युद्ध-श्रम-विवाद अधिनियम कहा जाता था, "ठीक तरह से बिना सोचे-समझे जल्दबाजी मे पास किया गया विभ्रमपूर्ण कानून बताया" किन्तु इसके बाद युद्ध की समाप्ति तक यह कायम ही रहा।

स्मिथ-कौनाली ऐक्ट ने युद्ध-श्रम बोर्ड को कानूनी सत्ता प्रदान की थी और मजदूरो में अशाति को देखते हुए, जो नए कानून से मुश्किल से ही दूर हुई थी, इसने औद्योगिक झगड़े निबटाने के अपने काम को अधिकाधिक कठिन पाया। जब सब यह स्वीकार करते थे कि जीवन के रहन-सहन का खर्चा बढ गया है तब लिटल स्टील फार्मूले की सीमाओ से आगे वेतन-वृद्धि की मजदूरों की माँग का मजबूत आधार था। इस चीज़ को कोयला हड़ताल में किए गए अंतिम समझौते को स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रच्छन्न रूप से, भले ही अनिच्छा से स्वीकार कर लिया गया था। बोर्ड मे प्रबन्धको के प्रतिनिधियो ने कहा कि अगर कोई घोषित सरकारी नीति को उलटना चाहे तो उसे सिर्फ ज़ोरो से हड़ताल करने की जरूरत है और लेविस की माँग पर की गई कारंवाई को मजदूरो का तुष्टीकरण और स्थिरीकरण कार्यक्रम का बलिदान बताया। लेकिन सचाई यह थी कि वेतनो और कीमतो के बीच खाई ने मजदूरो के जीवन स्तर को गम्भीर क्षति पहुँचाई थी जब कि बाकी देश युद्ध-कालीन समृद्धि के उच्च स्तर का उपभोग कर रहा था।

इसके अलावा १९४४ में एक मामला ऐसा हुआ, जब सरकार युद्ध-श्रम बोर्ड के कार्य-क्षेत्र से बाहर के एक श्रमविवाद को हल करने के लिए लिटल

स्टील फार्मूले से आगे वढ गई तो भी यह इसकी नीतियों पर प्रभाव डाले विना न रह सकी। यह थी धमकित रेलवे हड़ताल जो रेलवे लाइनों पर सरकार द्वारा कब्जा कर लिये जाने के वाद वाल-वल वच गई।

युद्ध अथवा शातिकाल में रेलवे मजदूर सम्वन्धो पर १९२६ का संशोधित रेलवे मजदूर ऐक्ट लागू होता था जिसमें कहा गया था कि अगर राष्ट्रीय मध्य-स्थता वोर्ड के तत्त्वावधान में मध्यस्थता अथवा पंच-फैसले से कोई श्रमविवाद हल न हो सके तो उस पर राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त एक विशेष आपातकालीन वोर्ड द्वारा विचार किया जाना चाहिए और ३० दिन की शाति रखने की अवधि में कोई हड़ताल नही होनी चाहिए। १९४३ की पतझड में वेतनो मे हेरफेर के प्रश्न पर रेलवे मजदूरो और प्रवन्धको के विभिन्न दृष्टिकोणों में समझौता कराने के लिए उठाए गए प्रारम्भिक कदमो की विफलता के वाद राष्ट्रपति ने वाकायदा एक आपातकालीन वोर्ड नियुक्त किया। इसने वस्तुत. रेलवे यूनियनो की माँगे पूरी कर दी किन्तु इसके लिटल स्टील फार्मूले की परिधि को लाँघ जाने के कारण आर्थिक स्थिरीकरण कार्यालय ने इसे नामजूर कर दिया। तव रेलवे मजदूरो ने वोट लेकर ३० दिसम्वर से हड़ताल करने का निश्चय किया।

राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने तुरन्त प्रस्ताव किया कि आपात वोर्ड और आर्थिक स्थिरीकरण के वीच एक पंच के रूप में सारा मामला अंतिम और अवश्य पालनीय निर्णय के लिए उन्हे सुपुर्द कर दिया जाए। रेलवे के सचालन-कार्य मे असम्वद्ध दो यूनियनो ने यह प्रस्ताव मंजूर कर लिया किन्तु लोकोमोटिव फायरमेन, रेलवे कण्डक्टर्स तथा स्विचमेन्स यूनियन ने इसे नामंजूर कर दिया। उन्होंने अपने हडताल के नोटिस वापस लेने से इन्कार कर दिया। तव सरकार ने तुरन्त ही रेलवे लाइनो की जब्ती का आदेश जारी कर दिया और उस पर अमल किया। रूजवेल्ट ने कहा. "युद्ध प्रतीक्षा नही कर सकता और मैं प्रतीक्षा नही कर सकता क्योंकि अमरीकियो का जीवन और अमरीका की दांव पर लगी हुई है।"

मामला तूल पकड़ने से पहले राष्ट्रपति के हस्तक्षेप को स्वीकार करने वाली यूनियनो के लिए पचफैसले की घोषणा कर दी गई। आर्थिक स्थिरी-करण कार्यालय के वजाय आपात वोर्ड की वात रखी गई और राष्ट्रपति ने

लिटल स्टील फार्मूले से अधिक वेतन वृद्धि को इस आधार पर उचित ठहराया कि वे ओवर टाइम तथा छुट्टियों की तनख्वाह के जिसके रेल कर्मचारी हकदार हैं, बदले दी गई है। इन रियायतो से अपनी मांगें सर्वांश मे पूरी होते देख राष्ट्रपति के हस्तक्षेप को अस्वीकार करने वाली तथा स्वीकार करने वाली दोनो ही प्रकार की यूनियनो ने पचफैसले को स्वीकार कर लिया और पहले प्रकार की यूनियनो ने अपने हड़ताल के नोटिस वापस ले लिये। रेल-सर्विस में वस्तुतः कोई रुकावट नही हुई थी और १८ जनवरी, १९४४ को रेलवे लाइनें सक्षिप्त सरकारी नियंत्रण के बाद निजी मालिको को लौटा दी गई।

किन्तु जब रेल-मजदूरो और कोयला खनिको ने पर्याप्त वेतन वृद्धियां प्राप्त कर ली चाहे वे यात्रा-समय अथवा अवकाश-वेतन के रूप मे ही दी गई हों तो युद्ध-श्रम-बोर्ड मजदूरो को मांगें पूरी करने के लिए आनुषगिक लाभ देने को मजबूर हो गया। इस समय तक देश के सभी मजदूरो को लिटल स्टील फार्मूले के अन्तर्गत अधिकतम वेतन-वृद्धि मिल चुकी थी और जहां तक प्रति घण्टे वेतन की दर का प्रश्न है, यह यद्यपि कायम रही तो भी इन रियायतो से मज़दूर ज्यादा तादाद मे पैसा घर ले जाने लगे। इनमे सवेतन छुट्टियाँ, सफर के समय और भोजन के समय के लिए भत्ता, बोनस तथा प्रोत्साहन भुगतान और पालियो मे तब्दीली के कारण वेतनो मे हेर-फेर शामिल था। उसके अलावा यह फैसला देकर कि स्वास्थ्य और बीमा कोष के बारे मे सामूहिक सौदेबाज़ी उचित है और उसकी समीक्षा की जरूरत नही है, युद्ध-श्रम-बोर्ड ने और भी अप्रत्यक्ष वेतन-वृद्धियों के लिए रास्ता खोल दिया। ये आनुषंगिक लाभ युद्ध-काल मे औद्योगिक अशांति को दूर करने में बड़े सहायक रहे और इन्होने वे हडतालें नही होने दी जो कीमतें बढती जाने की हालत में लिटल स्टील फार्मूले को पत्थर की लकीर मानकर कार्यान्वित करने से अवश्य ही भडक उठती। किन्तु कार्यनियोजन के तौर-तरीको मे एक बिल्कुल नई परिपाटी डालने में सहायक होने के कारण इनका ज्यादा स्थायी महत्त्व था। उदाहरणार्थ सवेतन छुट्टी अमरीका के औद्योगिक कर्मचारियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण नई चीज़ थी और अधिकाधिक व्यापक क्षेत्रों मे उसे स्वीकार किया गया। इसके अतिरिक्त युद्ध-श्रम बोर्ड की नीतियों ने कई अन्य तरीकों से भी देश के मज़दूरो की स्थिति को सुधारने का काम किया। उसने

सभी मज़दूरो को समान कार्य के लिए समान वेतन दिए जाने की व्यवस्था की, एक जैसे या एक ही कारखानो मे काम करने वाले मज़दूरो के बीच वेतन की विषमता को दूर करने का यत्न किया और ज्यादा एकसार वेतन-नीतियाँ निर्धारित कराने मे अपने प्रभाव का उपयोग किया।

युद्ध-श्रम बोर्ड ने युद्धकाल में अपना उत्तरदायित्व निबाहते हुए २ करोड़ मज़दूरों के लिए कोई ४,१५,००० ऐच्छिक वेतन समझौते मंजूर किए और इतने ही मजदूरो के लिए २०,००० विवादग्रस्त मामलो में स्वय द्वारा किए गए निर्णयो पर अमल कराया। यह एक विशाल और श्रम साध्य काम था जिसका कोई पूर्व उदाहरण नही था और यद्यपि मामले निबटाने में देरी के लिए बोर्ड की प्राय. आलोचना की जाती थी तो भी १९४३ के बाद आए विशाल कार्य को देखते हुए इसने बड़ी कुशलता से अपना काम किया।

विवादग्रस्त मामलो मे न तो सरकारी आदेशो ने और न स्मिथ-कौनाली ऐक्ट ने सीधे अपने निर्णयो को कार्यान्वित करने के लिए बोर्ड को कोई अधिकार प्रदान किया। किन्तु जब इसकी अपनी सत्ता और अन्य एजेंसियो की मार्फत डलवाया गया दबाव प्रभावहीन सिद्ध होता था तब बोर्ड राष्ट्रपति को युद्ध के काम के किसी भी कारखाने की जब्ती सिफारिश कर सकता था और फलस्वरूप अपने आदेश मनवाने के लिए सीधा दबाव डाल सकता था। किन्तु विवादग्रस्त पक्ष इस चीज़ की नौबत आने दिए बिना ही सामान्यतः बोर्ड के निर्णयो को स्वीकार कर लेते थे। सिर्फ ४० मौको पर ही राष्ट्रपति को कारखानो की जब्ती का आदेश जारी करना पड़ा—२६ बार यूनियनो द्वारा बोर्ड के आदेशो को चुनौती दिए जाने के कारण और २३ बार मालिकों की अडगेबाजी के कारण। और सिर्फ एक मौका ऐसा आया जबकि बोर्ड के निर्णय को न तो यूनियन ने माना और न प्रबन्धको ने।

मालिकों की तरफ से दी गई चुनौती का सबसे नाटकीय उदाहरण मौण्टगुमरी वार्ड कम्पनी का था जिसने इस आधार पर युद्ध श्रम बोर्ड का अधिकार क्षेत्र स्वीकार करने से इन्कार कर दिया कि मेल आर्डर के धन्धे का युद्ध-प्रयत्नो से सीधा कोई सम्बन्ध नही है। जब इसने सी. आई. ओ. की एक यूनियन को अपने कर्मचारियो के लिए सामूहिक सौदेबाजी का एजेण्ट स्वीकार करने के आदेश को मानने से इन्कार कर दिया तो रूज़वेल्ट ने

कम्पनी कारखाने को जब्त कर लिए जाने का आदेश दिया और औद्योगिक एकता बनाए रखने के सरकारी कार्यक्रम की अविवेकपूर्ण अवहेलना के लिए इसके अफसरो की खुल्लम-खुल्ला आलोचना की। कम्पनी के अध्यक्ष सिवेल एवरी ने जिसका यूनियनो के प्रति रवैया उसके इस कथन से जाहिर है कि 'बन्दशाप और सविधान परस्पर असगत है', कम्पनी की सम्पत्ति पर कब्जा करने के सरकारी अधिकार को मानने से दृढता से इकार कर दिया। मामला हल होने से पहले देश को यह विचित्र दृश्य देखने को मिला कि कारखाने पर कब्जा करने वाली सेनाओ के दो कद्दावर सैनिको ने एवरी को सशरीर उसके कार्यालय से हटा दिया।

उद्योग ने युद्ध-श्रम बोर्ड की आलोचना की कि वह लिटल स्टील फार्मूले पर ज्यादा सख्ती से अमल नही करा सका और ऐसी रियायते दी जो अनुचित वेतन-वृद्धियो के बराबर हैं। मजदूरो ने इस पर एक बिल्कुल विपरीत आधार पर आक्षेप किए। उन्होने कहा कि यह लिटल स्टील फार्मूले की अत्यधिक सख्त व्याख्या करके मूल्यवृद्धि पर पर्याप्त गौर करने को अनिच्छुक है। आम जनता यह कहती थी कि सुनवाई करने तथा आदेश जारी करने मे बोर्ड द्वारा की जाने वाली देरी ही मजदूर-अशाति और अनावश्यक हडतालों के लिए जिम्मेदार है। किन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि त्रिपक्षीय श्रम पंचाट के इस महत्त्वपूर्ण परीक्षण का समग्र रिकार्ड सफलता का रिकार्ड रहा है। हडतालो की सख्या युद्ध-पूर्व की अपेक्षा एक-तिहाई पर रही, युद्ध के पश्चात् बोर्ड के नियत्रण भग हो जाने के बाद तक स्थिरीकरण कार्यक्रम जितना समझा जाता था उससे कही अधिक अच्छी तरह चलता रहा, और मजदूरों के अधिकारो की सहानुभूतिपूर्वक रक्षा की गई। वस्तुत: युद्ध-श्रम बोर्ड द्वारा सदस्यता कायम रखने की वकालत, अवकाश के वेतन, स्वास्थ्य तथा बीमा कोष और महिलाओ के लिए समान वेतन के बारे में इसकी रजामन्दी और मूल्यो के स्वरूप के बारे मे इसके आम सर्वेक्षणो का राष्ट्रव्यापी प्रभाव सभी मजदूरो के लिए प्राप्त किए गए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण दीर्घकालीन लाभ थे।

अब भी सौदेबाज़ी की उपयुक्त इकाई का चुनाव करने वाले तथा मालिको के अनुचित तौर-तरीको से यूनियनो की रक्षा करने वाले नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड के ऊपर थोपे गए वार लेबर बोर्ड (युद्ध-श्रम-बोर्ड) के प्रभाव ने

औद्योगिक सम्बन्धो में सरकार की महत्त्वपूर्ण भूमिका को और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बना दिया। सगठित मजदूर बहुत शक्तिशाली हो गए थे किन्तु वे अपनी ताकत को बनाए रखने के लिये पहले किसी भी समय की अपेक्षा अब सरकार पर ज्यादा निर्भर करते थे। यूनियनो के नेता यह अच्छी तरह महसूस करते थे कि मज़दूरो की न केवल युद्धकालीन स्थिति, बल्कि शातिकाल में उनकी भावी स्थिति भी ज्यादातर इस बात पर निर्भर करती है कि वाशिंगटन में मजदूरो के प्रति क्या रवैया अपनाया जाता है। एक सहानुभूति-पूर्ण प्रशासन को जारी रखने के लिए देश भर में यूनियन सदस्यो द्वारा राजनीतिक कार्रवाई किए जाने का महत्त्व न्यू डील के दिनों की अपेक्षा भी अब ज्यादा हो गया था।

इसलिए जब १९४४ में पुनः राष्ट्रपति के चुनाव का समय आया तो राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के पक्ष में तथा काग्रेस के उन उम्मीदवारो के पक्ष में, जिनसे यह आशा की जा सकती थी कि मजदूरो द्वारा १९३३ के बाद से प्राप्त किए गए लाभो को वे युद्ध के बाद भी कायम रखने का समर्थन करेंगे, मजदूरो की तरफ से नए सिरे से अभियान शुरू कर दिए गए। स्मिथ-कौनाली ऐक्ट के पास हो जाने से निश्चय ही ऐसा लगता था कि यदि मज़दूरो ने वस्तुत निर्णायक राजनीतिक प्रभाव नही डाला तो १९१९ का अनुभव दोहराया जा सकता है। यद्यपि ए. एफ. एल ने अपनी परम्परागत निष्पक्षता को कायम रखते हुए १९४४ के चुनाव आन्दोलन मे भाग नही लिया तो भी इसकी पहले से भी अधिक घटक यूनियनो ने रूज़वेल्ट का समर्थन किया और इनके पुर्नार्निर्वाचन के लिए काम किया। सी आई. ओ. ने रूज़वेल्ट के चौथी बार राष्ट्रपति चुने जाने का अधिकृत रूप से समर्थन ही नही किया बल्कि उन्हें मज़दूरो के वोट दिलवाने के स्पष्ट उद्देश्य के साथ एक राष्ट्रव्यापी राजनीतिक कार्रवाई समिति का निर्माण किया।

१९४२ के मध्यावधि चुनावो में प्रगतिशील तथा मजदूर-पक्षपाती ताकतो द्वारा उठाई गई क्षति के फलस्वरूप इस कदम का निर्णय सी. आई. ओ की कार्यकारिणी ने गत ग्रीष्म ऋतु मे ही कर लिया था। अध्यक्ष सिडनी हिलमैन के स्फूर्तिमान निर्देशन में सी. आई. ओ. की राजनीतिक कार्रवाई समिति ने, यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स के नए अध्यक्ष आर जे. टामस जिसके

कोषाध्यक्ष थे, मज़दूरो को उनकी राजनीतिक जिम्मेदारियो के प्रति सजग करने, कांग्रेस के सदस्यो के मज़दूर-सम्बन्धी रिकार्ड प्रचारित करने और प्रगतिशील तत्त्वो को वहुमत दिलाने के लिए मजदूरो के भारी रजिस्ट्रेशन को प्रोत्साहन देने के लिए द्वार-द्वार खटखटाने के एक राष्ट्रीय अभियान की योजना बनाई। राष्ट्रीय संगठन द्वारा रूज़वेल्ट का तो विशिष्ट रूप से समर्थन किया गया किन्तु कांग्रेस के सदस्यों का समर्थन करने में स्थानीय शाखाओं को अपनी समझ के अनुसार उचित कदम उठाने की छूट दे दी गई।

राजनीतिक कार्रवाई समिति का खर्चा शुरू के दौर मे ६,७०,००० डालर के यूनियनो के चन्दे से दिया गया। राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार नामज़द हो जाने के बाद ये कोष अवरुद्ध कर दिए गए और बाद में स्मिथ-कौनाली ऐक्ट की संभावित सजाओ से बचने के लिए व्यक्तिगत चन्दो का ही आश्रय लिया गया। मतदाताओ को घरो से बाहर निकालने के लिए द्वार-द्वार जाकर उन्हे प्रेरित करने का काम बहुत महत्त्वपूर्ण था किन्तु राजनीतिक कार्रवाई समिति ने करोड़ो पर्चे, पैम्फलेट आदि छपवाकर उन्हे वितरित करने का भी काम किया। इनकी प्रभावशालिता दोस्त व दुश्मन सभी ने स्वीकार की। टाइम्स की सक्षिप्त पर जोरदार टिप्पणी थी "गत एक पीढी मे इतना साफ राजनीतिक प्रचार पहले कभी नही किया गया।" पर्चो में इस बात पर बल दिया गया था कि देश के सामने पहला और मुख्य काम धुरी राष्ट्रो पर विजय प्राप्त करना है, और तब युद्ध के बाद के वर्षो में सामाजिक सुधार का एक व्यापक कार्यक्रम रखना है जिसमें पूर्ण रोज़गार, उचित वेतन, मजदूर और किसान के अधिकारो की रक्षा, पर्याप्त आवास व्यवस्था, युद्ध-क्षेत्र मे देश की सेवा करके लौटे हुए लोगो की सहायता तथा सामाजिक सुरक्षा शामिल थी। इन उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए सीधी राजनीतिक कार्रवाई के निमित्त राजनीतिक कार्रवाई समिति सी. आई. ओ. यूनियन के सदस्यो का ही नही बल्कि सभी मजदूर यूनियनो का सहयोग प्राप्त करने के लिए तत्पर थी।

१९४३ मे की गई हड़तालो की पृष्ठभूमि मे इस आन्दोलन ने रूढिवादियो तथा यूनियन-विरोधी व्यवसायियो मे चिन्ता और भय उत्पन्न कर दिया। राजनीतिक कार्रवाई समिति ने स्पष्ट यह वायदा कर दिया था कि उसका तीसरा दल बनाने का कोई इरादा नही है किन्तु राजनीतिक क्षेत्र पर मज़दूरो के हावी

हो जाने के संभावित खतरे ने उन आशंकाओ को और बढ़ा दिया जिनसे प्रेरित होकर स्मिथ-कौनाली ऐक्ट के मातहत राजनीतिक अभियान कोषो में चन्दा देने पर प्रतिबन्ध लगाया गया था। यूनियनो से लोग अब भी नाराज़ थे। १९४४ मे लोकमत का सर्वे करने पर पता चला कि जिन लोगों से पूछ-ताछ की गई उनमें से ६७ प्रतिशत यूनियनो की गतिविधियो पर और अंकुश लगाने के पक्ष में थे और अखबारों की टिप्पणियाँ अधिकाधिक खिलाफ होती जा रही थी।

राजनीतिक कार्रवाई समिति ने गौम्पर्स के समय से चली आ रही मज़दूर संगठनो की परम्परा को निबाहते हुए रिपब्लिकन और डैमोक्रैटिक दोनों सम्मेलनो में सुनवाई कराने का यत्न किया किन्तु इसके निकटतम सम्बन्ध स्वभावत: डैमोक्रैटिक पार्टी के साथ थे जिसने मज़दूरो के लक्ष्य को इतने उल्लेखनीय ढंग से आगे बढाया था और जो स्वयं मज़दूरो के राजनीतिक समर्थन पर बहुत अधिक निर्भर करती थी। राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के साथ उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार छाँटने में इसका प्रभाव बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। हेनरी वालेस की नामज़दगी कराने में विफल रहने के बाद इसने जेम्स एफ बायर्न्स का रास्ता रोक दिया और हेरी ट्रूमन के लिए मार्ग साफ कर दिया। इन राजनीतिक तारबर्कियों के पीछे सबसे शक्तिशाली हाथ हिलमैन का बताया जाता है और इस किस्से के फैलने से कि रूज़वेल्ट ने "सब कुछ सिडनी से साफ करा लेने" का आदेश दिया है, उसकी चढ़ती हुई महत्ता देशव्यापी हो गई। यद्यपि इस कहानी से सब सम्बन्धित लोगों ने इन्कार किया तो भी प्रेस ने इसका पीछा नही छोड़ा और राष्ट्रपति के विरोधियो ने हरदम इसका उपयोग किया।

राजनीतिक कार्रवाई समिति पर उसे क्रांतिकारी, ग़ैर-अमरीकी और उन कम्युनिस्टो द्वारा प्रभावित बता कर चोटें की गईं जो इस युद्ध-कालीन चुनाव आन्दोलन मे रूज़वेल्ट का दृढता से समर्थन कर रहे थे। गैर-अमरीकी हरकतों पर डाइस कमेटी की लम्बी रिपोर्ट के आखिर में यह आरोप लगाया गया कि "सम्पूर्ण आन्दोलन अमरीकी कांग्रेस को अपने तानाशाही कार्यक्रम के अनुकूल ढालने का एक विध्वंसक कम्युनिस्ट अभियान है।" यूनियन पैसिफिक रेलरोड के अध्यक्ष ने गम्भीरता से यह चेतावनी दी कि राजनीतिक कार्रवाई समिति

एक "घृणित नवीकरण है जो अमरीकी राजनीति में वस्तुतः धोखा देकर घुस आई है।" ओहायो के गवर्नर ब्रिकर ने कहा कि यह "क्रातिकारी और कम्यु-निस्टी कार्यक्रमो से हमारी सरकार पर हावी होने की चेष्टा कर रही है।"

हिलमैन चूँकि विदेश में जन्मा और यहूदी था इसलिए उस पर अन्य असहिष्णुतापूर्ण आक्षेप भी किए गए। चुनाव के बाद सी. आई. ओ. के सम्मेलन मे भाषण देते हुए उसने कहा कि "राजनीतिक कार्रवाई समिति को बदनाम करने के व्यापक प्रयत्न झूठो का एक अम्बार और अखबारो का सफेद झूठ साबित हुआ जिनके सम्पादक, मुझे विश्वास है, अपने अग्रलेखो को पढ पढ-कर अब शर्मिन्दा हो रहे होगे...उनके लिए कोई भी निन्दा बहुत बुरी, लोगो की भावनाओ से की गई कोई भी अपील बहुत मतान्ध और कोई भी चाल बहुत सिद्धान्तभ्रष्ट नही थी" यह एक उचित आरोप था और खुफिया विभाग द्वारा की गई जांच-पडताल से सिद्ध हो गया कि हिलमैन के खिलाफ लगाए गए कम्युनिज्म के आरोप बिल्कुल निराधार थे।

ए. एफ एल. के बहुत-से नेताओ तथा ए. एफ. एल. से सम्बद्ध यूनियनों ने सी आई. ओ. की राजनीतिक कार्रवाई समिति के साथ सहयोग किया। अन्य उदार ग्रुपो ने या तो इसके साथ अप्रत्यक्ष रूप से काम किया या इससे सम्बद्ध राष्ट्रीय नागरिक राजनीतिक कार्रवाई समिति के साथ काम किया। ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. के कोई १४० अखबारो के, जिनकी कुल ग्राहक-सख्या ६० लाख थी, राष्ट्रव्यापी मत-सर्वेक्षण से रूजवेल्ट के लिए मजदूरों का समर्थन स्पष्ट जाहिर हो गया। बड़े-बड़े शहरो के अखबारो के तुलनात्मक सर्वेक्षण के नतीजो के बिल्कुल विपरीत उसने बताया कि इन सब मज़दूर-अखबारो में से सिर्फ एक ड्यूई का समर्थक है और केवल ११ ए. एफ. एल. की निष्पक्षता की अधिकृत नीति के हामी हैं। रूजवेल्ट जिस भारी बहुमत से फिर चुने गए उसका श्रेय निस्सन्देह राजनीतिक कार्रवाई समिति के मज़दूरो के वोट उन्हे दिलाने के लिए किए गये अथक प्रयत्नो को है। यह भी दावा किया गया कि १७ सेनेटर, १२० प्रतिनिधि-सभासद और ६ गवर्नर भी, जिनकी उम्मीद-वारो की स्थानीय रूप से प्रस्तावना की गई थी, इस समिति की बदौलत ही चुने गए।

चुनाव-आन्दोलन के बाद सी. आई. ओ. ने तीसरी पार्टी की स्थापना के

विरुद्ध अपनी सम्मति को फिर दोहराया किन्तु राजनीतिक कार्रवाई समिति को राष्ट्रव्यापी आधार पर एकतामय राजनीतिक गतिविधियो को प्रोत्साहन देने के हेतु एक स्वतन्त्र निर्दलीय समिति के रूप में जारी रखना मंजूर किया। अध्यक्ष मरें ने कहा : "मजदूरो न अब काफी अरसे से समझ लिया है कि आर्थिक कार्रवाई से वे जो लाभ प्राप्त करते है उनकी रक्षा, परिपालन और विस्तार तभी किया जा सकता है जब वे विधि-निर्माण का एक प्रगतिशील कार्यक्रम अपनाएँ और राष्ट्र के राजनीतिक जीवन में प्रभावशाली ढंग से भाग लेकर उसका कानून बनना निश्चित कर दें।"

जर्मनी के खिलाफ लगातार आगे बढ़ते जाने और प्रशान्त महासागर में सफल कार्रवाइयो के बाद जब युद्ध अन्ततः समाप्त हुआ तो मजदूर चामत्कारिक प्रगति कर चुके थे। उन्होंने युद्ध को जीतने में महान् योग दिया और अपने निजी प्रयत्नो से अपने आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभाव के निर्माण मे चामत्कारिक प्रगति की। प्रथम विश्व-युद्ध की तरह राष्ट्रीय आपातकाल अवसरो का काल सिद्ध हुआ और मजदूरो ने उससे भरपूर लाभ उठाया।

विजय की प्राप्ति में सगठित मजदूरो का योग उत्पादन के शानदार रिकार्ड से ज़ाहिर हो जाता है जो राष्ट्रीय रक्षा की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए हमारे अर्थतन्त्र के चामत्कारिक परिवर्तन में राष्ट्र के मजदूरो द्वारा पूरा सहयोग दिए बिना सम्भव न होता। जुलाई, १९४० तथा जुलाई १९४५ के बीच प्रबन्धको तथा मजदूरो के सम्मिलित प्रयत्नों से २ लाख लड़ाई के कामके विमान, ७१,००० नौसैनिक जहाज, ५००० मालवाही जहाज, ९००० भारी तोपें, २०,००,००० भारी मशीनगनें, १,२०,००,००० रायफलें और कार्बाइन, ८६,००० टैंक, १६,००० बख्तरबन्द गाड़ियाँ, २४,००,००० सैनिक ट्रकें, ६०,००,००० विमान से गिराए जाने वाले बम, ५,३७,००० तारपीडो बम, बनाए गए। कोयले का उत्पादन ६,००,००० टन प्रति वर्ष के रिकार्ड पर जा पहुँचा, विद्युत् शक्ति का उत्पादन १३,००,००० लाख किलोवाट घण्टे से बढ कर २३,००,००० लाख किलोवाट घण्टे जा पहुँचा और लोहे के ढोकों का निर्माण ४,७०,००,००० टन से बढ़कर ८,००,००,००० टन हो गया।

इन चामत्कारिक सफलताओं में मजदूरो के योग की घर और बाहर दोनो

जगह अमरीकी नेताओं ने सराहना की। जनरल आइज़नहावर और ऐडमिरल किंग ने, युद्ध-मन्त्री और नौसेना मन्त्री ने, युद्ध-उत्पादन-बोर्ड डोनाल्ड नेल्सन ने और युद्ध मनुष्य-शक्ति आयोग के पाल वी. मैकनट ने हमारी स्थल और नौसेना को इतनी उत्कृष्ट और लड़ाकू सेना बनाने में सहायता के रूप में मज़दूरों द्वारा किये नए शानदार काम की बार-बार सराहना की। राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने कहा कि आगामी पीढियो के लिए अपनी विरासत को सुरक्षित रखने के अमरीकी मज़दूरो के दृढ सकल्प ने "विश्व के इतिहास मे उत्पादन की महानतम सफलता" को सम्भव बना दिया।

जहाँ तक व्यक्तिगत लाभ का प्रश्न है, युद्धकाल मे संगठित मज़दूरो की यूनियन सदस्यता ५० प्रतिशत बढ गई। युद्ध की समाप्ति पर कुल सदस्य संख्या १,४०,००,००० थी। इनमें से ए. एफ. एल के ६८,००,००० सदस्य और सी. आई. ओ. के ६०,००,००० सदस्य थे। अन्य सदस्य रेलवे ब्रदरहुडो, युनाइटेड माइन वर्कर्स तथा अन्य स्वतंत्र यूनियनों के थे। सामूहिक उत्पादन के बड़े उद्योगो मे जहाँ एक दशाब्दी पूर्व मज़दूर बिल्कुल असंगठित थे, वहा प्राय. सभी मज़दूरों पर अब सामूहिक सौदेबाज़ी के समझौते लागू हो गए थे। यद्यपि ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. के बीच फूट अभी खत्म नही हुई थी जो कभी-कभी दोनो में वह सहयोग स्थापित नही होने देती थी, जिसकी बदौलत मज़दूरो के हितो की ज्यादा प्रभावशाली ढग से रक्षा की जा सकती, तो भी अमरीकी मजदूर आन्दोलन की सगठित शक्ति पहले किसी भी समय से अधिक प्रबल हो गई थी।

साथ ही मज़दूरो को इतनी तेज़ी से प्राप्त इतने अधिक लाभो ने न केवल व्यावसायिक हितो को, जिन्हे प्रबन्धको की नियत्रण व्यवस्था पर खतरा आया प्रतीत होता था, भयभीत किया बल्कि, जैसा कि हमने देखा अन्य लोगों मे भी यह व्यापक भय उत्पन्न कर दिया कि क्या मज़दुर अपनी नई प्राप्त शक्ति का उपयोग जनकल्याण का उचित ध्यान रखते हुए करेंगे। कुछ यूनियनो की ज्यादतियों और बहुत से मज़दूरो की आक्रामक रूप से उग्रभावना ने, जिन्होंने . मूहिक सौदेबाज़ी से आई औद्योगिक सम्बन्धों की स्थिरता को खतरा पैदा कर दिया था, मज़दूरों को प्रदान किए गए विशेषाधिकारों मे और कटौती की मांग को तेज कर दिया था जिसकी अभिव्यक्ति स्मिथ-कोनाली ऐक्ट के

रूप मे हुई। मज़दूरो की शक्ति को कम करने के हर प्रयत्नो में जब उद्योग अपना पूरा सहयोग देने को तैयार रहते थे तब वस्तुत. यूनियनो की स्थिति, जैसी कि युद्धकालीन विकास से प्रतीत होती थी, उससे ज्यादा सुभेद्य थी।

यूरोप और प्रशान्त महासागर मे जब तोपें शान्त हो गईं तो मज़दूर एक महत्त्वपूर्ण चौराहे पर खड़े थे। अगर उन्हें अपनी शक्ति बनाए रखनी थी, जनता का विश्वास फिर से प्राप्त करना था, और राष्ट्रीय अर्थतंत्र के स्थिरीकरण तथा औद्योगिक शांति को कायम रखने में अपनी भूमिका अदा करनी थी तो स्पष्ट ही उसने उनसे उच्चकोटि की राजनीतिज्ञता की अपेक्षा की जाती थी।

—:०:—

१६ : युद्धोत्तर काल में श्रमिकों की स्थिति

युद्ध की समाप्ति भी अमरीकी जनता के लिए उतनी ही बड़ी चुनौती थी जितनी युद्ध का प्रारम्भ। जर्मनी और जापान पर विजय पाने के लिए आवश्यक मनुष्य-शक्ति और युद्ध सामग्री मुहैया करने की एकमात्र दृष्टि से संचालित अर्थतंत्र को किसी-न-किसी प्रकार शांति की उतनी ही कठिन आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना था। राष्ट्र के सामने समस्या यह थी कि बेकारी को राष्ट्र को तत्काल मंदी में झोंके देने बिना और मुद्रा प्रसार के दबावों को बढते हुए मूल्यों और बढते हुए वेतनों की क्रिया-प्रतिक्रिया प्रारम्भ करने दिए बिना, जिससे खुशहाली और फिर विस्फोट के उतने ही खतरनाक चक्र को प्रोत्साहन मिल सकता है, यह परिवर्तन कैसे लाया जाए।

मजदूर बहुत चिन्तित थे। युद्ध की समाप्ति से पहले ही यह भय फैलने लगा था कि शांति का मतलब होगा—बेकारी और कम वेतन और यूनियनों की शक्ति को कम करने की इच्छुक यूनियन-विरोधी ताकतें और ज्यादा तादाद में उभर आएँगी। जापान पर विजय के बाद असुरक्षा की यह भावना मजदूरों, उद्योगपतियों और सरकारी अर्थशास्त्रियों की इस सर्व-सम्मत घोषणाओं से और भी बढ़ गई कि १९४६ की वसन्त ऋतु तक बेरोजगारी १ करोड तक बढ सकती है। ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनों ने ही यह कहा कि राष्ट्रीय अर्थतंत्र में यह विध्वंस राष्ट्र की क्रय शक्ति को बनाए रखने और औद्योगिक सामान के लिए विस्तृत बाजार बनाने के लिए पूर्ण रोज़गार तथा वेतन-वृद्धियों के एक कार्यक्रम का सक्रिय समर्थन करके ही रोका जा सकता है।

जब शांति का तात्कालिक परिणाम ४० घण्टे के सप्ताह पर लौट आने के कारण कम वेतन-प्राप्ति हुआ और अपनी मशीनें बदलने के लिए कारखानों के बन्द हो जाने से मजदूर व्यापक क्षेत्रों में अस्थायी रूप से बेकार हो गए तो वेतन-वृद्धियों पर मजदूरों का आग्रह ज़ोर पकड़ गया। आलोचकों ने इन माँगों को "लूट-खसोट के लिए कदम" ही बताया, किन्तु मजदूरों ने महसूस

किया कि उनसे तो मशीनो के नवीकरण का बोझा उठाने को कहा जा रहा है किन्तु सरकार कर वापस करके तथा अन्य प्रकार से अप्रत्यक्ष सहायता देकर वस्तुतः उद्योगपतियो की मदद कर रही है। इसके अलावा कीमतें चढ़ रही थी। युद्ध-श्रम बोर्ड ने वेतनो में जो सीमित हेर-फेर की अनुमति प्रदान की थी वह पहले लगाये गये नियन्त्रणो मे ढील दे दिए जाने के कारण रहन-सहन का खर्चा बढ जाने की वजह से बिल्कुल अपर्याप्त हो गई थी। एक के बाद एक यूनियन ने वास्तविक क्रयशक्ति की दृष्टि से युद्धकालीन वेतनो को बनाए रखने के लिए प्रति घण्टा मजदूरी की दर बढाए जाने की माँग की।

जब उद्योगो ने इन माँगो को सामान्यत अस्वीकार कर दिया तो मजदूरों का जवाब था—हडताल। जब तक मजदूरो की ताकत बनी थी तब तक संभावित मंदी और बेकारी से यूनियनो के कमजोर हो जाने से पूर्व ही उन्होने अपने हितो की रक्षा करने का सकल्प किया। इस आन्दोलन के पीछे सी. आई. ओ. की एक सुविचारित योजना थी और मज़दूर नेता जानते थे कि वे क्या करने जा रहे हैं। वे राष्ट्रीय नीति की बात करते थे और उपभोक्ता की क्रयशक्ति तथा मज़दूरो के अधिकार दोनो पर निरन्तर ज़ोर दे रहे थे।

स्थिति १६१६ से बहुत भिन्न थी। तब भी मज़दूर युद्धकालीन लाभो को प्राप्त रखने के लिए भरसक-संघर्ष करने को उद्यत थे। सिर्फ इस्पात को छोडकर बाकी उद्योगो में १६१६ में जो हडतालें हुई वे जहाँ-तहाँ, इक्की-दुक्की और किसी प्रभावशाली संगठन अथवा नेतृत्व के बिना यकायक उद्भूत हुई थी, उनसे हिंसा-प्रतिहिंसा जाग उठी थी। अन्त में यूनियनो के प्रति बढते हुए विरोध के वातावरण में सरकार ने उद्योग को अपना समर्थन प्रदान किया था। कुछ अस्थायी लाभो के बावजूद संगठित मजदूरो को बचाव के पैंतरे पर आने को मजबूर कर दिया गया और शनैः-शनैः पीछे हटने को बाध्य किया जो १६२० की दशाब्दी की मुख्य बात थी।

सन् १६४५ की मज़बूत यूनियनो की एकता बनाए रखने की शक्ति ने इस तसवीर को बदल दिया था और युद्ध के बाद जिन उद्योगो मे हडताले हुईं उन्होने उत्पादन बनाए रखने की कोशिश भी नही की। सघर्ष १६१६ की अपेक्षा कम कठिन नहीं था किन्तु यह एक ढीले-ढाले मैच के बजाय कष्ट-सहन की प्रतियोगिता थी। १६४६ के शुरू में यद्यपि पहले किसी भी समय से अधिक

संख्या में मजदूर हड़ताल पर थे तो भी नाजुक श्रम विवादो में पहली बार रक्तपात सामान्यतः नही हुआ।[1] भावनाएँ तो काफी उग्र हो गई थी किन्तु शारीरिक हिंसा नही जागी। तेल, मोटर, इस्पात, बिजली का सामान, कृषि उपकरण, कोयला और रेलवे में जब एक के बाद एक हड़ताले हुई तो १९३३ से बने औद्योगिक कर्मचारियों के राष्ट्रव्यापी संगठनों के विशाल परिणामों का नजारा नाटकीय ढंग से सामने आया। राष्ट्रीय अर्थतंत्र को यह बिल्कुल एक नई चुनौती थी। इसमें पुराने ढंग की हिंसा, तोड़-फोड और औद्योगिक लडाई का खतरा नही था किन्तु यह राष्ट्रव्यापी पैमाने पर एक शातिमय पर अधिक प्रभावशाली ढग से काम रोक दिए जाने के कारण आर्थिक जीवन को अपग कर देना था।

जापान की पराजय के तुरन्त पश्चात् ट्रूमन सरकार को एक नई श्रमनीति अपनाने की कठिन समस्या का सामना करना पड़ा। अब मजदूरो से अपनी युद्धकालीन हड़ताल न करने की प्रतिज्ञा को कायम रखने की आशा नहीं की जा सकती थी और राष्ट्रपति को आशा थी कि युद्ध-कालीन अर्थ-व्यवस्था को पुनः शांतिकालीन अर्थव्यवस्था में बदलने के काम को खतरे में डाले विना सामूहिक सौदेबाजी की सामान्य प्रक्रिया पर लौटा जा सकता है। इसलिए सरकारी नियंत्रण ढीले कर दिये गए और जिस हद तक वर्तमान मूल्यों पर असर न पड़े वहाँ तक मूल्य-वृद्धि की अनुमति दे दी गई। अपनी भूतपूर्व सत्ता से प्रायः वंचित कर दिए जाने के बाद युद्ध-श्रम बोर्ड श्रम विभाग को स्थानान्तरित कर दिया गया। इसने शीघ्र ही अपनी गतिविधियाँ गोल करनी शुरू कर दी और १९४६ के शुरू मे इसके स्थान पर राष्ट्रीय वेतन स्थिरीकरण बोर्ड (नेशनल वेज स्टेबिलाइजेशन बोर्ड) कायम कर दिया गया। ट्रूमन ने मजदूरों और उद्योगो—दोनो से अपील की कि वे अपने बुनियादी युद्धकालीन समझौतों को कायम रखे और जो कुछ हेर-फेर करने की जरूरत हो उसे शांतिपूर्ण बातचीत के जरिये करें।

युद्ध-श्रम बोर्ड की पीठ पर से अपना हाथ हटा लेने के बावजूद सरकार का रवैया मजदूरो के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रहा। उसने कहा कि यूनियनों को वे सरक्षण प्राप्त करने का अधिकार है, जिनसे उनकी असुरक्षा की भावना दूर हो, तैयार माल पर कीमतें वढाए विना उद्योग वेतन सम्बन्धी उपयुक्त

रियायतें दे सकें और इन मामलो को तय करने के लिए सामूहिक सौदेबाजी पर निर्भर किया जा सके। २० अक्तूबर को राष्ट्रपति ने कहा कि "मजदूरो पर आए धक्के को सम्हालने, पर्याप्त क्रय शक्ति बनाए रखने, और राष्ट्रीय आय बढ़ाने के लिए वेतनो में वृद्धियाँ अनिवार्य है,...सौभाग्य से मूल्यो के वर्तमान स्तर को कायम रखते हुए ही उद्योग के लिए वेतन दरो में इन रियायतो को देने की गुंजायश मौजूद है।"

इस नीति के बखान को न्यू डील के राजनीतिक पक्षपात को जारी रखने का प्रयत्न कहकर उसकी अधिक आलोचना की गई। सेनेटर टैफ्ट ने गुस्से से इसे सी. आई. ओ. के सामने घुटने टेक देना कहा किन्तु राष्ट्रपति के दुश्मन यद्यपि इसे तुष्टीकरण कहकर उनके कार्यक्रम की आलोचना कर सकते है तो भी युद्ध के बाद मज़दूरो का समर्थन करने की उनकी नीति उस विचारधारा की पुष्टि करती थी जिसमें राष्ट्र के करोड़ो औद्योगिक मज़दूरों की बेकारी से रक्षा करना और उनका जीवन स्तर उन्नत करने के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करना सरकार का उत्तरदायित्व स्वीकार किया गया था। राष्ट्रीय क्रयशक्ति को बनाए रखना ट्रूमन के चिन्तन में भी उतना ही बुनियादी था जितना रूजवेल्ट के चिन्तन मे। समग्र देश की खुशहाली के लिए मज़दूरों की खुशहाली को आवश्यक समझा गया।

तो भी स्थिरीकरण प्रोग्राम को अस्त-व्यस्त किए बिना राष्ट्रपति द्वारा सुझाई गई वेतन-वृद्धियाँ किस हद तक दी जा सकती है, यह विषय बहुत विवादास्पद बना रहा। ट्रूमन की स्थिति सरकार के उन सर्वेक्षणो से और मजबूत हो गई थीं जिन्होने यह जाहिर किया कि उद्योग २४ प्रतिशत वेतन बढाकर भी युक्तियुक्त मुनाफा कमा सकते है। युद्धकाल में कम्पनियो का रिकार्ड देखने से पता चला कि उन्हें युद्ध-पूर्व के समय की अपेक्षा २॥ गुना कमाई हुई है और युद्ध लाभबन्दी तथा अनुपरिवर्तन (वार मोबिलाईजेशन ऐण्ड रिकन्वर्शन) के निदेशक जॉन आर. स्टीलमैन ने अक्तूबर, १९४६ मे रिपोर्ट दी कि टैक्स कटकटा कर बचने वाले मुनाफे अब तक के इतिहास में सबसे ज्यादा है। किन्तु उद्योगो के प्रवक्ताओ ने इन रिपोर्टों की प्रामाणिकता से स्पष्ट इन्कार किया, स्थिति का बिलकुल भिन्न विश्लेषण किया और कहा कि अधिक वेतनो से लागत बहुत बढ जायगी, जिसे शायद मौजूदा मूल्य-ढाँचे में

खपाया न जा सके।

इसके वाद वेतन और मुनाफों के वारे मे समाप्त न होने वाली जो बहस छिड पड़ी उसमें सच्चाई कही भी हो, तथ्य यह था कि यह मामला सामूहिक सौदेबाज़ी पर छोड़ दिया जाना कामयाब नही रहा। शायद सरकारी नियंत्रण के जमाने में मजदूर और उद्योग दोनो को ही इस तरीके को आजमाने के लिए जग लग गया था और कुछ भी हो उन्होने परस्पर मिल बैठने की कोई इच्छा ज़ाहिर नही की। मजदूर मौजूदा प्रतिघण्टा दर में ३० प्रतिशत वृद्धि की माँग कर रहे थे और उद्योगो का कहना था कि इतनी वेतन वृद्धि वे तव तक नही दे सकते जव तक कि चीजो की ऊँची कीमतो के रूप में उन्हे उसका भार आम जनता पर डालने की अनुमति नही दी जाती। तव जव यूनियनो ने यह सिद्ध करने के लिए कि मूल्य वढाए विना वेतन-वृद्धियाँ दी जा सकती है, कम्पनी के रिकार्डों की छानवीन करने का अधिकार दिए जाने की प्रार्थना की तो प्रवन्धको ने उलटकर तेज़ी से प्रहार किया और कहा कि यह उनके कार्यो पर अतिक्रमण की कोशिश करना और व्यवसाय के परिचालन पर मज़दूरों के नियन्त्रण के लिए द्वार खोलना है। इस तरह के सव प्रस्तावो को उद्योग को दी गई एक चुनौती समझा गया और व्यवसाय की स्वतन्त्रता के नाम पर उनका विरोध किया गया।

मज़दूरो की माँग के विरोध मे इस तथ्य से भी मजवूती आई कि वहुत-सी कम्पनियाँ उस अग्नि-परीक्षा का स्वागत करने की स्थिति मे थी जिसका देर-सवेर आना अवश्यम्भावी था। १९४६ में घाटा होने की हालत में पहले दिए गए अत्यधिक मुनाफा-कर मे से एक अश की वापसी का अधिकार सीमित उत्पादन के सभावित प्रभावो का महत्त्वपूर्ण मुआवज़ा था। किन्तु अगर उद्योग अपनी रक्षा के लिए कृतसंकल्प था तो मज़दूरो का 'आक्रमण' का इरादा उनसे भी पक्का था। और भी अधिक व्यापक मोर्चे पर झगडे वढने लगे और राष्ट्रीय श्रम सम्वन्ध वोर्ड के पास स्मिथ-कॉनानी ऐक्ट की शर्तों के मुताविक हडताल-मत लिए जाने की प्रार्थनाओ का ढेर लग गया। अक्तूवर, १९४५ तक ऐसी ८०० प्रार्थनाएँ वोर्ड के पास पहुँच चुकी थी और अधिकाश मामलो मे इस वात की कोई परवाह नही की गई थी कि हडताल-मत लिए जाने पर उसका परिणाम क्या होगा।

सामूहिक सौदेबाजी की विफलता और गंभीर औद्योगिक अशांति की ऐसी बढ़ती हुई साक्षी को देखकर राष्ट्रपति ट्रूमन १९१९ में ऐसी ही परिस्थितियों में राष्ट्रपति विल्सन की तरह मजदूर-प्रबन्धक सम्मेलन की ओर झुके। ५ नवम्बर, १९४५ को यूनियनो और प्रबन्धको के प्रतिनिधियों को वाशिंगटन बुलाया गया और उनसे "औद्योगिक शांति तथा प्रगति के लिए एक व्यापक और स्थायी आधार" नियत करने की कोशिश करने को कहा गया। वे बाकायदा मिले और बातचीत हुई किन्तु इसमें उन्हें उससे ज्यादा सफलता नही मिली, जितनी विल्सन को मिली थी। सामूहिक सौदेबाजी के बुनियादी सिद्धान्त पर एक सामान्य समझौता कर सकना संभव हुआ जो १९१९ की स्थिति पर वास्तव मे एक वास्तविक प्रगति थी, किन्तु कार्यविधि के बारे मे कोई समझौता नही हो सका जिससे वर्तमान गतिरोध दूर हो सकता। श्रम विभाग की मेल कराने वाली सेवा के विस्तार की सिफारिश करने के अलावा सम्मेलन का कोई क्रियात्मक परिणाम नही निकला।

इसकी विफलता अप्रत्याशित नही थी क्योकि जब इसकी बैठकें चल रही थी तभी हड़तालो की लहर जिसकी पतझड़ के शुरू मे ही आशंका की जा रही थी, पूरी तेज़ी से आ गई। तेल साफ करने वाले कारखानो के कर्मचारी, काष्ठ कर्मचारी, काच कर्मचारी, सानफ्रांसिस्को मे मशीन चालक और जहाज़ी घाट के कर्मचारी, न्यूयार्क मे इमारती मजदूर और जहाजो पर माल लादने उतारने का काम करने वाले कर्मचारी, मिडवेस्ट के ट्रक ड्राइवर और पेंसिलवेनिया के कोयला खनिक उस विद्रोह की अगली पंक्ति मे थे जो सारे देश मे फूट पडा था। बीसियों शहरो में प्रदर्शन-पट्ट लिए जलूस निकाले गए जिनमे यूनियन सुरक्षा तथा युद्धकालीन वेतनो के बराबर घर ले जा सकने वाली तनख्वाह की माँग की गई। उस वक्त नारा था "४० के बदले ५२, वरना संघर्ष।"

तब २१ नवम्बर को १२ राज्यों में जनरल मोटर्स के कारखानो के कोई २ लाख कर्मचारियो ने काम बन्द कर दिया जिससे राष्ट्रव्यापी हड़तालियो की संख्या ५ लाख पहुँच गई और एक सप्ताह बाद मनहूस वोट ने ७,५०,००० इस्पात कर्मचारियो की आसन्न हड़ताल की सूचना दी। नवम्बर के आखिरी दिन जब मज़दूरो और प्रबन्धको के प्रतिनिधि वाशिंगटन में अपना

बोरिया-बिस्तर समेट रहे थे तब राष्ट्र के सामने एक ऐसा संकट खड़ा था जिससे अनु-परिवर्तन (युद्धकालीन अर्थतंत्र को पुनः शांतिकालीन अर्थतंत्र में लाना) का सारा प्रोग्राम खतरे में पड़ गया।

जनरल मोटर्स की हड़ताल न केवल अपने आप में महत्त्वपूर्ण थी, बल्कि इसलिए भी इसका महत्त्व था कि १९४६ के शुरू में जिन हडतालो ने इतने व्यापक पैमाने पर राष्ट्रीय अर्थतन्त्र को छिन्न-भिन्न किया यह उनका एक नमूना था। जैसा खयाल था उससे पहले ही यह प्रारम्भ हो गई थी। सी. आई. ओ. के कुशल नीतिज्ञ पहली परख इस्पात के बुनियादी उद्योग में करना चाहते थे जिस पर अन्य सब निर्माता उद्योग इतना ज्यादा निर्भर करते थे, किन्तु मोटर कर्मचारियों में व्याप्त अशांति तथा यूनियन की राजनीति ने युनाइटेड आटोमोबाइल वर्कर्स को मजबूर कर दिया था। युद्धोत्तर काल के वस्तुतः पहले बड़े पैमाने के मजदूर-प्रहार की बड़ी चोट जनरल मोटर्स को सहन करनी पड़ी।

इस समय यू. ए. डब्लू. का अध्यक्ष यद्यपि आर. जे. टामस था तो भी जनरल मोटर्स की हड़ताल का संचालन वाल्टर रूथर के ओजपूर्ण नेतृत्व में किया गया। रूथर मोटर कर्मचारियो की यूनियन में एक उदीयमान नक्षत्र था जो शीघ्र ही संघर्ष करते-करते इसका अध्यक्ष बन गया। अभी वह ४० वर्ष का भी नही हुआ था कि मज़दूर सघर्षों में उसे अनुभवी समझा जाने लगा था और फोर्ड कारखानों में कर्मचारियो का सगठन करने के शुरू के प्रयत्नों में कम्पनी के सर्विस विभाग के कर्मचारियो ने उसे बुरी तरह पीटा था। देखने में वह कठोर संघर्षकारी मजदूर नेता के बजाय एक नौजवान समृद्ध उद्योगपति-सा लगता था; कठिन रुचि का, अच्छे वस्त्र पहनने वाला, गम्भीर स्वभाव का रूथर अपने जिम्मे लिए गए काम के प्रति दृढ आस्थावान तया साथ ही अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी साबित हुआ। वह न धूम्रपान करता था और न शराब पीता था और समाज के झंझटों से अलग रहकर एकाग्रभाव से अपनी सारी शक्तियाँ एक जगह केन्द्रित करते हुए वह सदा अपने काम में ही जुटा रहता था जिसकी बदौलत वह शनैः-शनैः समस्त मजदूर आंदोलन में एक अत्यन्त शक्तिशाली नेता बन गया।

उसके विचार व्यापक और समावेशक थे जो उसे व्यावसायिक यूनियनवाद की तात्कालिक समस्याओं से बहुत दूर ले जाते थे। रूथर का विश्वास था कि मज़दूर "समाज के साथ प्रगति करके ही" अब तक प्राप्त किए गए लाभो को स्थिर रख सकते हैं। उसके विचारो मे कुछ-कुछ समाजवादी सिद्धान्तो की छाया थी किन्तु यू. ए. डब्लू. के अन्दर कम्युनिस्ट तत्त्वो का वह प्रबल विरोधी था और अध्यक्ष बनने के बाद वह निरन्तर उनका मुकाबला करता रहा और अन्त में उन्हें सत्ता से च्युत कर दिया। उसके बुनियादी दृष्टिकोण अमरीकी प्रगतिवाद की सर्वोत्तम परम्पराओ के अनुरूप थे। रूथर का विश्वास था कि संगठित श्रमिको को देश के राजनीतिक और आर्थिक जीवन में बड़ी भूमिका अदा करनी चाहिए।

एक बार उसने कहा कि "हम जैसा मज़दूर आन्दोलन चाहते हैं वह अपने वेतन के लिफाफे मे पैसे आए जान सन्तुष्ट हो जाने वाले किस्म का नही है। हम मजदूर आन्दोलन का निर्माण इसलिए नही कर रहे कि पुरानी दुनिया को सुधारें जिससे आदमी कई बार भूखा रहे बल्कि इसलिए कर रहे है कि एक नई दुनियाँ बनाएँ जिसमे मजदूरो को अपने श्रम का लाभ मिले।"

इसी विचारधारा से प्रेरित होकर उसने जनरल मोटर्स की हड़ताल का सचालन किया। यूनियन ३० प्रतिशत वेतन-वृद्धि की माँग कर रही थी। रूथर का कहना था कि मोटरो के मूल्य में कोई वृद्धि किए बिना इतना वेतन बढाया जा सकता है। आँकड़ो की साक्षियाँ इसकी पुष्टि कर रही थी। उसने ...ह कि कीमते न बढ़ने देने के लिए वह उद्योग की क्षमता से ज्यादा वेतन-वृद्धि की माँग नही कर रहा। वह सिर्फ मोटर कर्मचारियो के लिए अधिक वेतन के बजाय राष्ट्रीय क्रयशक्ति और मूल्यों के स्थिरीकरण की दृष्टि से सोच रहा था। जब जनरल मोटर्स ने यह घोषित कर दिया कि उसके लिए १० प्रतिशत से अधिक वृद्धि कर सकना सभव नही है और यूनियन की शर्तें "पच-फैसले का प्रस्ताव नहीं बल्कि कारखाना छोड़ देने की माँग है" तो रूथर का जवाब "हिसाब की किताबें दिखाई जाएँ," आगे चलकर उसकी इस माँग ने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। कम्पनी ने जब क्रोधपूर्वक ऐसे किसी प्रस्ताव पर विचार करना अस्वीकार कर दिया तो करार की बातचीत भंग हो गई और जनरल मोटर्स की हड़ताल शुरू हो गई।

इन घटनाओ के तथा इस्पात की आगामी हड़ताल के प्रकाश में ट्रूमन के सामने उनकी युद्धोत्तर श्रम नीति की विफलता आ खड़ी हुई। वे औद्योगिक सम्बन्धो मे सरकार का हस्तक्षेप अब भी कम से कम रखना चाहते थे किन्तु ऐसी कोई कार्रवाई करने के लिए विवश थे जिससे तुरन्त श्रमिक शाति कायम करने में मदद मिलती और मुद्रा प्रसार के बढ़ते हुए खतरे मे आम स्थिरीकरण कार्यक्रम को बल प्रदान करती। उन्होने किसी भी हड़ताल के आह्वान से पूर्व ३० दिन शाति रखने का प्रस्ताव किया और इस बीच विवाद-ग्रस्त मामले राष्ट्रपति के तथ्यान्वेषक बोर्डो को सुपुर्द करने के लिए कहा जो सब सम्बद्ध जानकारी के सम्बन्ध में खुल्लमखुल्ला अपनी रिपोर्ट देगे। इसके अलावा उन्होने मजदूरो का सुझाव स्वीकार करते हुए कहा कि इन तथ्यान्वेपक बोर्डो को औद्योगिक रिकार्डो की समीक्षा करने का अधिकार प्रदान किया जाना चाहिए।

मजदूरो अथवा उद्योगो मे से किसी ने भी इस प्रस्ताव का स्वागत नही किया। मजदूरो ने कहा कि इससे उनके हडताल करने के अधिकार पर आँच आती है, और उद्योग सरकारके "जाल मे फँसाने के अभियान" के लिए कम्पनी के खाते खोलने को तैयार नही थे। जब किसी भी क्षेत्र से इतना कम सहयोग मिला तो काग्रेस ने राष्ट्रपति की सिफारिश पर कोई कार्रवाई करने से इन्कार कर दिया।

किन्तु जहाँ तक तथ्यान्वेपक बोर्डो की नियुक्ति का प्रश्न था ट्रूमन ने अपने अधिकार की बदौलत आगे बढने का निश्चय किया और २७ नवम्बर, १९४५ तथा १७ जनवरी, १९४६ के बीच ऐसे ६ बोर्ड नियुक्त किए गए। पहला बोर्ड तेल साफ करने के कारखानो मे चल रही हडताल के लिए नियुक्त किया गया, जहाँ सरकार कारखानो पर पहले ही कब्जा कर चुकी थी। किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बोर्ड जनरल मोटर्स के झगडे मे १२ दिसम्बर को नियुक्त किया गया। जनरल मोटर्स के प्रबन्धको ने सहयोग करने से इन्कार कर दिया। जब ट्रूमन ने यह कहा कि "वेतन देने की क्षमता प्रासंगिक चीज है" तो जनरल मोटर्स ने बोर्ड की सुनवाई का बहिष्कार कर दिया। आटो मोबाइल की हडताल टूटने के कोई आसार नजर नही आ रहे थे क्योकि यूनियन और कम्पनी दोनो अपने-अपने मूल प्रस्तावो पर अडे रहे। यह गतिरोध छठे सप्ताह तक भी चलता रहा

जब कि मज़दूर अब भी काम पर नही जाते थे और कम्पनी के कारखाने बन्द पड़े थे। तनातनी बढ़ती गई जबकि विवाद के दोनो फरीकों की नीयत पर आरोप-प्रत्यारोपो ने मज़दूरो तथा प्रबन्धको के बीच खाई पैदा करने वाले अविश्वास और विद्वेष को और बढ़ा दिया।

इस बीच जब सी॰ आई॰ ओ॰ यूनियनो ने सामूहिक उत्पादन के उद्योगो के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी अभियान की अपनी नीति को और विकसित किया तो हड़तालें अन्य उद्योगो में भी फैलने लगी। तेल साफ करने के कारखानो में विवाद, जिसमे ४०,००० कर्मचारी हडताल पर थे, अभी हल नही हुआ था; वर्ष की समाप्ति के शीघ्र पश्चात् मास पैक करने वाले ३,००,००० कर्मचारियो ने हड़ताल करदी और इन कारखानो को सरकार ने अपने हाथ मे ले लिया, इसके बाद जनरल इलैक्ट्रिक, वेस्टिंग हाउस और जनरल मोटर्स के वैद्युतिक उपकरण विभाग मे हडताल के कारण हड़तालियो की संख्या १,८०,००० और बढ गई; और अन्त में २१ जनवरी को ७,५०,००० इस्पात कर्मचारियो ने अपने एक पूर्व वोट के मुताबिक काम बन्द कर दिया। जनरल मोटर्स के कर्मचारियो को मिलाकर इस समय समस्त राष्ट्र में एक साथ हड़ताल कर रहे कर्मचारियो की सख्या २०,००,००० की विशाल सख्या पर जा पहुँची थी। एक छोर से दूसरे छोर तक अखबारो की सुर्खियो मे औद्योगिक संकट की गम्भीरता पर बल दिया गया और जनता नें कुछ-न-कुछ औद्योगिक शाँति कायम करने के लिये निर्णायक कार्रवाई की माँग की। सबका ध्यान खास तौर से इस्पात पर था। इसका उत्पादन करीब करीब बिल्कुल ठप्प हो जाने के कारण जब अन्य उद्योगो पर भी बढते हुए औद्योगिक लकवे का प्रभाव पडा तो हजारो अन्य कर्मचारियो को काम से हटा दिया गया।

ट्रूमन अपने तथ्यान्वेषण कार्यक्रम पर अटल रहे। अधिक सीधी कार्रवाई के लिए लोकमत की माँग बावजूद उन्होने तब तक प्रतीक्षा की जब तक विभिन्न सम्बन्धित उद्योगो के बारे मे जाँच-पडताल से हडतालों के समाधान का ऐसा तरीका न निकल आए जिससे मज़दूरो की उचित माँगें भी पूरी हो जाएँ और मूल्य भी स्थिर रहें। अन्त में यह नीति अपनायी गई कि १९४१ के बाद से अनुमानतः रहन-सहन के खर्चे में जो ३० प्रतिशत वृद्धि हुई है उसके अनुरूप वेतन-वृद्धि की अनुमति दे दी जाए और यदि किसी कम्पनी की आय युद्ध-पूर्व की औसत आय

से कम है तो उसके माल की कीमतो में आवश्यक वृद्धि की अनुमति प्रदान की जाए। इस कार्यक्रम को अमल मे लाने का अभिप्राय था कि लिटल स्टील फार्मूले के अन्दर जो वेतन-वृद्धि प्रदान की गई है उससे विभिन्न उद्योगों मे १७॥ से २० प्रतिशत अधिक वेतन प्रदान किए जाने का अधिकार दिया जाए यद्यपि मजदूरो की माँग ३० प्रतिशत वृद्धि किए जाने की थी। इस फार्मूले से व्यवहारतः १८॥ सेण्ट प्रति घण्टा वेतन-वृद्धि हुई और इससे रहन-सहन के बढ़े हुए खर्च के अनुरूप काफी हद तक वेतन-दर मे हेर-फेर करना सम्भव हुआ यद्यपि ओवरटाइम का सिलसिला खत्म हो जाने के कारण मजदूरो द्वारा प्रति सप्ताह घर ले जायी जाने वाली तनख्वाह युद्ध-कालीन स्तर से तब भी काफी कम रही।

नई वेतन-मूल्य नीति की १४ फरवरी को बाकायदा घोषणा कर दी गई और इस तारीख से पहले ही इसी रूपरेखा पर तेलशोधक कारखानो तथा पैकिंग उद्योगो मे झगड़े निबटा लिए गए थे। किन्तु इस्पात के विवाद पर इसको लागू करना औद्योगिक गतिरोध को भंग करने मे और भी निर्णायक सिद्ध हुआ। इस विवाद में यूनाइटेड स्टील वर्कर्स और उनके मालिको के बीच, जिनके प्रवक्ता थे, यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के अध्यक्ष फेयरलेस, मतभेद शनैः-शनैः पहले ही काफी कम कर लिए गए थे और राष्ट्रपति ट्रूमन ने तब सीधा १८½ सेण्ट प्रति घण्टा वेतन वृद्धि का समझौता-प्रस्ताव रखा। किन्तु यूनियन ने जहाँ यह वेतन-वृद्धि तुरन्त स्वीकार करली वहाँ उद्योग ने इसे तब तक मानने से इन्कार कर दिया जब तक उसे कीमतो मे राहत देने का कोई निश्चित आश्वासन प्रदान नही किया जाता। जब नई वेतन-मूल्य-नीति लागू की गई और इस्पात उद्योग को एक टन इस्पात पर ५ डालर कीमत बढ़ा देने की अनुमति प्रदान करने की विशेष व्यवस्था की गई तो समझौते मे अंतिम बाधा भी दूर हो गई। तीन सप्ताह की हड़ताल के बाद जिसमें देशभर में भट्टियाँ ठण्डी हो गई थी और उत्पादन कुल क्षमता का सिर्फ ६ प्रतिशत रह गया था, राष्ट्रपति के फार्मूले के आधार पर यूनियन और प्रबन्धको में समझौता हो गया।

जनरल मोटर्स की हड़ताल को निबटाना अभी बाकी था और अंतिम समझौता होने से पूर्व इसे चलते हुए चार महीने हो चुके थे, जिसमे मजदूरो

को १३,००,००,००० डालर की और कम्पनी को ६० करोड डालर की हानि उठानी पडी। नए करार में १८½ प्रतिशत वेतन वृद्धि प्रदान की गई। वैद्युतिक कर्मचारियो को भी समझौता करने मे काफी देर लगी किन्तु वहाँ भी अन्ततः १८½ प्रतिशत की सामान्य वेतन वृद्धि के फार्मूले पर समझौता हो गया। मार्च तक देशभर में हडतालियो की सख्या घटकर २,००,००० से भी कम रह गई और वर्ष के प्रारम्भ में राष्ट्र के सामने जो संकट दिखाई देता था वह हल हो गया था। अनुपरिवर्तन के कार्यक्रम को काफी धक्का पहुँचा था किन्तु राष्ट्रीय अर्थ-तंत्र की लोच ने तेज़ी से पुनः अपना करिश्मा दिखाया।

तो भी यह सवाल बना रहा कि औद्योगिक शांति के लिए क्या बहुत बड़ी कीमत अदा नही की गई। जिन उद्योगो मे हड़तालें हुई थी उनसे इतर उद्योगो के कर्मचारियों ने भी स्वभावत. अपने वेतन तथ्यान्वेषक बोर्डो द्वारा सिफारिश स्तर तक बढ़ाए जाने की माँग की और उस समय की परिस्थतियो में मालिको के पास उनकी माँग को स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नही था। अप्रैल में राष्ट्रीय वेतन स्थिरीकरण बोर्ड के समक्ष ऐसे ४,००० ऐच्छिक समझौते स्वीकृति के लिए पेश किए गए और उस ज़माने में औद्योगिक मज़दूरो को औसतन प्रतिशत की वेतन वृद्धि प्रदान की गई।

मूल्य नियंत्रण का कोई प्रभावशाली कार्यक्रम इन अपेक्षाकृत सीमित वेतन-वृद्धियो से उत्पन्न महँगाई के दबाव के सामने क्या सफल हो सकता था? खतरे के सकेत स्पष्ट नज़र आ रहे थे। तो भी ट्रूमन का अपनी सफलता में विश्वास बना रहा। अपनी नई वेतन-मूल्य नीति का दिग्दर्शन कराते हुए उन्होने स्वीकार किया कि "रेखा में खरोच जरूर आ गयी है किन्तु अगर आप सब मेरे साथ सहयोग करेंगे तो इसे कही से कटने नही दिया जाएगा।"

किन्तु यही इति नही थी। मज़दूरो को इतने अधिक लाभ प्रदान करने वाली ये पहली हड़तालें मुश्किल से समाप्त ही हुई थी कि कोयला खनिकों के लिए नए करार की बातचीत अनिवार्यतः भग हो गई। लेविस से अलग रहने की आशा नहीं की जा सकती थी और समय को पहचानने में अपनी परम्परा-गत चतुराई के साथ वह अपनी माँगो में सी. आई. ओ. से भी एक कदम आगे बढ़ गया। सदा की भाँति वेतन-वृद्धि ही विवाद का मुख्य विषय थी किन्तु

खान मालिक जब राष्ट्रपति के नए फार्मूले को स्वीकार करने को तत्पर हो गए तो उसने कामकी हालतों में अतिरिक्त सुरक्षितताएं प्रदान किए जाने तथा खान से निकाले गए प्रत्येक टन कोयले पर खनिक कल्याण कोष के लिए ७ सेण्ट की रायल्टी जमा कराए जाने का आग्रह किया। जब प्रवन्धकों ने यह कह कर कि रायल्टी से ६,००,००,००० डालर का वार्षिक खर्चा बढ़ जाएगा, उसकी माँग नामजूर करदी तो लेविस यकायक सम्मेलन से बाहर चला गया और उसने कहा बताते है, "नमस्कार, भाइयो! हमें विश्वास है कि अब समय ही, जब वह तुम्हारी थैलियों मे कटौती कर देगा, शायद तुम्हारे कजूसी से भरी और समाज-विरोधी नीयत में सुधार करेगा।" एक अप्रैल को पश्चिम पेंसिलवेनिया, पश्चिम वर्जीनिया, अलाबामा, कैण्टकी, इलिनौयस और आयोवा के छोटे-छोटे नीरस नगरो में कोई ४ लाख खनिकों ने खानो मे अपने कामो से एक बार फिर छुट्टी मनाई।

पहले की कोयला हड़तालों का ही ढर्रा दोहराया गया। प्रस्तावों, प्रति प्रस्तावो से कोई लाभ नही हुआ, मध्यस्थता के प्रयत्न पूर्णतः विफल हो गए, एक अस्थायी विरामसंधि शीघ्र भंग हो गई और दुराग्रही खनिको का सरदार जो पिछले १३ वर्षों में अपने तौर-तरीकों से खनिको का वेतन १५ डालर प्रति सप्ताह से बढ़ाकर ६३ डालर प्रति सप्ताह करवा देने में सफल रहा था, खान-मालिको, सरकार और लोकमत को स [illegible] की भाँति चुनौती देते हुए अपनी माँग पर डटा रहा। खानो से निकले हुए कोयले का स्टाक सिर्फ ३ सप्ताह का रह गया और इस्पात उद्योग अपनी आधी से कुछ अधिक क्षमता पर काम करने को मजबूर हो गया। माल-परिवहन पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबन्ध लगा दिया गया और एक छोर से दूसरे छोर तक शहर, कोयले को सार्वजनिक उपयोग के लिए बचाने के हेतु फालतू रोशनी न करने का आदेश जारी करने को मजबूर हुए।

मई मे १२ दिन की विराम संधि के दौरान नए सिरे से चलाई गई बातचीत जब फिर विफल हो गई तो बढ़ते हुए संकट ने सरकार को हस्तक्षेप के लिए मजबूर किया और उस अधिकार के मातहत जिसकी लेविस ने "बदनाम स्मिथ-कौनाली ऐक्ट" कह कर निन्दा थी, खानों पर कब्ज़ा कर लिया गया। और तब युद्धकाल के समान समझौते के आगे के प्रयत्न गृहमंत्री के कार्यालय में

हुए जहाँ अन्तत सरकार और यूनियन के बीच एक समझौता हो गया। खनिकों को १८½ सेण्ट प्रति घण्टा वेतन वृद्धि प्रदान की गई, सभी खानों में सुरक्षा के संघीय नियम लागू कर दिए गए और एक कल्याण कोष में ५ सेण्ट प्रति टन रायल्टी प्रदान किए जाने का निश्चय किया गया। कोष पर खान-मालिकों व यूनियन का संयुक्त प्रशासन रखा गया। कल्याण कोष के मामले में लेविस ने कुछ रियायतें जरूर दी किन्तु सामान्यतः उसने एक और आश्चर्यजनक विजय प्राप्त की थी। यूनियन ने गर्वपूर्वक "सन् १८९० में यूनियन के जन्म के बाद से किसी एक ही वेतन-समझौते में यूनाइटेड माइन वर्कर्स द्वारा प्राप्त महानतम आर्थिक व सामाजिक लाभो" की घोषणा की।

यह समझौता एक और हड़ताल की पृष्ठभूमि में किया गया था जिसने अपने नाटकीय परिणामो के कारण इस संकटपूर्ण वर्ष में अन्य सब हड़तालो को फीका कर दिया। रेलवे कर्मचारियो और रेल कम्पनियो के बीच वेतन सम्बन्धी वार्ता भंग हो गई थी। रेलवे श्रम अधिनियम की भारी-भरकम मशीनरी एक बार फिर उस संकट को टालने मे विफल रही जो इस्पात व कोयला उद्योगो मे काम बन्द हो जाने से भी ज्यादा लोगो के स्वास्थ्य, कल्याण और सुरक्षा को खतरा पहुँचा रहा था। हमारे बहुत अधिक अन्योन्याश्रित अर्थतन्त्र में रेलवे हड़ताल का भीषण परिणाम हुए बिना नही रह सकता था तो भी सरकार द्वारा इसको रोकने के लिए यथासम्भव कोई कदम उठाये बिना यह आसन्न प्रतीत हो रही थी। एक आपातकालीन बोर्ड अन्त में ऐसी शर्तें तैयार करने में कामयाब हुआ जिन्हे रेलवे के सचालन कार्य से असम्बद्ध यूनियनो और दो रेलवे-ब्रदरहुडो ने स्वीकार कर लिया। वे वेतन सम्बन्धी मामले पर पचफैसले के लिए तथा नियमो में परिवर्तन की माँग को स्थगित करने के लिए राज़ी हो गई किन्तु इस बार रेलवे ट्रेनमैनो और लोकोमोटिव इंजीनियरो ने, जिनकी संख्या ३,००,००० थी, उनका साथ देने से इन्कार कर दिया। १८ मई से हड़ताल करने का आदेश जारी कर दिया गया।

१९४३ में रूज़वेल्ट की भाँति ट्रूमन ने तुरन्त ही रेलो पर कब्जा किए जाने का आदेश जारी कर दिया। हड़ताल की नियत तारीख से एक दिन पहले उन पर कब्जा कर लिया गया और राष्ट्रपति हड़ताल को ५ दिन स्थगित कराने में सफल हो गए। किन्तु इस बीच यद्यपि अन्य सब यूनियनें तत्काल

वेतन-वृद्धियो के बोर्ड के फैसलो को मानने के लिये राजी हो गई, ट्रेनमैन और इंजीनियर वेतन-वृद्धियो के अलावा नियमों में परिवर्तन की तत्काल आवश्यकता की अपनी टेक से टस से मस नही हुए। २३ मई को हड़ताल हो गई। सब रेल परिवहन ठप्प हो गया। इजनचालको ने अपने गन्तव्य स्थानो पर पहुँच कर और कोई ट्रेन ले जाने से इन्कार कर दिया था।

अगले दिन राष्ट्रपति ने रेडियो पर ट्रेनमैनो और इंजनचालको से राष्ट्र-व्यापी अपील की कि वे अपने यूनियन नेताओ के आदेशों की अवज्ञा कर काम पर लौट जाएँ। उन्होने कहा, "यह हड़ताल आपकी सरकार के खिलाफ हडताल है......सरकार को इस चुनौती का सामना करना होगा वरना उसे अपनी अशक्तता स्वीकार करनी होगी" तब हड़तालियो को अल्टीमेटम दिया गया। उन्हे वही शर्ते पेश की गई जो अन्य यूनियनो ने स्वीकार कर ली थी लेकिन चेतावनी दी गई कि अगर अगले दिन तीसरे पहर ४ बजे तक वे काम पर नहीं लौटे तो सरकार रेलो का संचालन अपने हाथ में ले लेगी और "इस आवश्य-कता की घड़ी में अपने देश की पुकार पर जो कोई व्यक्ति भी ध्यान देगा" उसकी रक्षा के लिए सशस्त्र सैनिक मुहैया करेगी।

तब भी हठी यूनियन नेताओ ने—लोकोमोटिव इजीनियर्स के ऐलवनले जौन्स्टन तथा रेल रोड ट्रेनमैन के ए. एफ. ह्विटनी ने अपने आदमियो को काम पर लौटाने के लिए कोई कदम नही उठाया। चौथाई सदी पूर्व निरोधादेशो की कार्रवाई के बाद से अत्यन्त कठोर हडताल विरोधी कार्रवाइयो की तैयारी की गई और जब अल्टीमेटम की अवधि समाप्त होने को आई तो सारा देश उत्तेजित हालत में प्रतीक्षा कर रहा था और राष्ट्रपति अपनी नीति के लिए विशेष रूप से अधिकार माँगने कांग्रेस के समक्ष गए। यह एक विशेष संयुक्त अधिवेशन था—तनावपूर्ण और आतुरता से भरा हुआ।

ट्रूमन ने शुरुआत देशभक्ति के अभाव के लिए हडताली नेताओ की निन्दा से की। उन्होने कहा कि बातचीत सर्वथा "दो व्यक्तियों के दुराग्रह-पूर्ण दम्भ" के कारण भंग हुई है। उन्होने जन-हित को नुकसान पहुँचाने वाले किसी भी आपातकाल मे हडताली नेताओ के खिलाफ निरोधादेश के लिए अर्जी देने के अस्थायी अधिकार की माँग की, साथ में हडतालियों को वरिष्ठता के अधिकारों से वंचित करने और सरकार के खिलाफ हडताल करने पर

उन्हें जबरन सेना मे भरती करने के हक की भी माँग की। जब वह भाषण देते-देते यहाँ तक आ पहुँचे तो यकायक उन्हें टोक दिया गया। एक क्लर्क ने उन्हें जल्दी-जल्दी में लिखा एक नोट अर्पित किया और चुप्पी के बीच उन्होने मन्द स्वर में घोषणा की, "अभी-अभी सूचना मिली है कि रेलवे हड़ताल राष्ट्रपति की शर्तो पर खत्म कर दी गई है।" किन्तु इस घोषणा के स्वागत में तुमुल करतल ध्वनि जब शान्त हुई, तब ट्रूमन अपना तैयार किया हुआ वक्तव्य पढ़ते रहे। अपने मन्तव्य में कोई हेर-फेर किए बिना उन्होने कांग्रेस से कहा कि मै जिन कदमो का प्रस्ताव कर रहा हूँ, वे सख्त प्रतीत हो सकते हैं किन्तु तात्कालिक संकट का सामना करने के लिए ऐसे कदम उठाए जाने ज़रूरी है।

कांग्रेस के समक्ष आने से पूर्व क्या राष्ट्रपति को मालूम था कि हड़ताल वापस ले ली गई है? उनकी कार्रवाई ने बड़ा तीव्र विवाद उत्पन्न कर दिया। सेनेटर मोर्स ने आरोप लगाया कि ह्वाइट हाउस के सलाहकारो को दोपहर से पहले ही मालूम हो गया था कि दोनो ब्रदरहुडो ने झुक जाने का फैसला कर लिया है और इस तथ्य को राष्ट्रपति ने इसलिए छिपाया कि मज़दूर-विरोधी भावना उग्र बनी रहे और वे कांग्रेस से अपना बिल पास करालें। बीच मे भाषण रोके जाने के बारे में सेनेटर की स्पष्टवादितापूर्ण टिप्पणी थी: "मैने इतनी अधिक नाटकीयता का भद्दा प्रदर्शन पहले कभी नही देखा।" किन्तु अल्टीमेटम की अवधि खत्म होने का समय इतना नजदीक था कि इसका सही-सही विश्लेषण नही किया जा सकता। यूनियनों और रेल कम्पनियो के बीच वास्तविक समझौते पर ३-५५ पर दस्तखत हुए, ३-५७ पर हडताल वापस ली गई और ट्रूमन की घोषणा ४-१० पर हुई।

प्रतिनिधि सभा ने राष्ट्रपति की अपील पर तुरन्त ध्यान दिया और १३ के खिलाफ ३०६ के भारी बहुमत से उनके द्वारा पेश किया गया बिल पास कर दिया। किन्तु जब रेल हड़ताल खत्म हो गई तो सेनेट में इस बिल का विरोध बढ गया। सामान्य गठबन्धनो में विचित्र परिवर्तन हुआ। कंज़रवेटिव, रिपब्लिकन और विशेषकर सेनेटर टैफ्ट ने सरकार के बिल को मज़दूरो के प्रति अन्यायपूर्ण तथा उनके नागरिक अधिकारो पर आघात करने वाला बता कर उसकी निन्दा करने में नेतृत्व किया। उनके आग्रह पर प्रतिनिधि सभा

द्वारा पास किए गए बिल में पहले बुनियादी तौर पर संशोधन किया गया और जब तब भी विरोध खत्म नही हुआ तो कमेटी में जाकर वह निःशेष हो गया।

उदार क्षेत्रों और मजदूरों में ट्रूमन के कार्यक्रम की तीव्र आलोचना हुई। राष्ट्रपति पर बिलकुल यूनियनो के खिलाफ हो जाने का आरोप लगाया गया। सी. आई. ओ. के सम्मेलन में उन्हें "अमरीकी बैंकरों और रेल कम्पनियो का अव्वल दर्जे का हड़तालभंजक" कहकर उनकी तीव्र निन्दा की गई और रेलवे ट्रेनमैनों के क्रुद्ध नेता ए. एफ. व्हिटनी ने उन्हें व्यंग्य से एक "राजनीतिक दुर्घटना" बताया। ट्रूमन अगर फिर चुनाव लड़ना चाहे तो उन्हें हराने के लिए यूनियन के खजाने में पडे ४,७०,००,००० डालर के समस्त कोष का उपयोग करने का वचन दिया गया।

१९४६ की ग्रीष्म ऋतु में कुछ अन्य हडतालें भी हुईं, या हड़तालों का खतरा सिर पर आया। अत्यन्त जटिल नौ-यातायात झगड़े कुछ समय के लिए विशेष रूप से विक्षोभकारी रहे। इनमें पूर्व-पश्चिम दोनों तटों पर ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. दोनों की यूनियनों से सम्बन्धित जहाजी मजदूरों ने भाग लिया। किन्तु करीब-करीब अन्तिम क्षण में समस्त जहाज यातायात ठप्प होने से बचा लिया गया। अन्य विवादो मे टी. डब्लू. ए. हवाई सर्विस के पायलटो द्वारा २०,००० डालर के वेतन स्तर की मांग से लेकर हालीवुड के अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी झगड़े तक शामिल थे जिसमें मेकअप कलाकार तथा तरह-तरह की शैली के बाल बनाने में कुशल कारीगर मोशन पिक्चर कस्ट्यूमर्स के खिलाफ सन्नद्ध हो गए थे। किन्तु बड़े-बड़े उद्योगों में हडतालें शात हो गई थीं और देश अधिक आसानी से सांस ले पा रहा था।

जापान में विजय के बाद के १२ महीनो का रिकार्ट बहुत खराब रहा। कुल ४६३० हड़तालें हुईं जिनमे ५० लाख से अधिक मजदूरों ने भाग लिया। १२ करोड़ मनुष्य-दिवसो की हानि हुई। तो भी इन हड़तालों ने अनुपरिवर्तन कार्यक्रम में जो भी रुकावटे डालीं, उन सबके बावजूद उत्पादन और रोजगार वस्तुतः शांतिकाल के एक नए स्तर पर जा पहुंचे। दसियों लाख मजदूरो द्वारा अ-विद्यमान रोजगारों की खोज करने के बजाय, जैसा होने की भविष्यवाणी की गई थी, सेना ने छँटनी किए गए व्यक्तियो को ज्यादातर

उद्योगो में खपा लिया गया। १९४६ के अन्त तक रोजगार मे लगे असैनिक कर्मचारियो की संख्या अब तक के सबसे ऊँचे रिकार्ड ५,५०,००,००० पर जा पहुँची थी।

उद्योगो के अनुपरिवर्तन मे जो सफलता मिली वह महँगाई को रोकने मे नही मिल सकी। वेतन-वृद्धियाँ प्राप्त कर लेने के बाद मज़दूर मूल्यों पर नियंत्रण जारी रखने के प्रबल समर्थक बन गए। दूसरी ओर उद्योग मूल्य-नियंत्रण उठा लेने के पक्ष में था। उसकी युक्ति यह थी कि उत्पादन की वृद्धि में रुकावट पड़ रही है और राष्ट्रीय आर्थिक तंत्र में संतुलन स्वाभाविक प्रतियोगिता तक ताकतों को खुली छूट देकर ज्यादा अच्छी तरह कायम किया जा सकता है। किन्तु जो चीज़ें युद्धकाल मे उपलब्ध नहीं थीं उन्हे उत्पादन बढ़ाकर उपभोक्ता को उपलब्ध कराने तक क्या मूल्य स्थिर रह सकेंगे? मज़दूरो ने साफ कह दिया कि अगर रहन-सहन की लागत और बढी तो नई वेतन-वृद्धि आवश्यक हो जाएगी। सी॰ आई. ओ. के अध्यक्ष मर्रे ने स्पष्ट चेतावनी दी कि १९४६ के प्रारम्भ के समझौते "वर्तमान सरकार के इस वचन और आश्वासन पर ही स्वीकार किए गए हैं कि मूल्य बढ़ने नहीं दिए जाएँगे।"

रेखा मे खरोच आ जाने पर भी मध्यग्रीष्म मे स्थिरीकरण कार्यक्रम अभी कारगर प्रतीत हो रहा था। अप्रैल, १९४३ मे जब राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने अपने मूल्य-वृद्धि-रोक आदेश की घोषणा की थी उसके बाद से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक सिर्फ १० अंश बढा था किन्तु जापान पर विजय होने के बाद से अनेक वेतन वृद्धियाँ देने के बावजूद यह अक सिर्फ ४ अश बढा था किन्तु मूल्य-वेतन के सम्बन्धो में यह आपेक्षिक स्थिरता अल्प-स्थायी ही रही जबकि मौजूदा नियमों के विरोधियो ने सरकार की नीति पर एक के बाद एक चोटें की।

ओ. पी॰ ए. नियंत्रण जब पहली बार हटाए गए और आंशिक रूप से फिर लगा दिए गए और अन्ततः फिर खत्म हो जाने दिए गए, तब जो कुछ हुआ उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में प्रशासन और उसके राजनीतिक दुश्मनों के बीच राजनीतिक संघर्ष के कारण गरमागरम आरोप-प्रत्यारोप लगाए गए। कुछ भी हो, १९४६ तक स्थिरीकरण का सारा कार्यक्रम इतिहास बन चुका

था और जीवन-यापन का खर्चा तेजी से बढ़ रहा था। उपभोक्ता मूल्य सूचकाक जुलाई में ७ अंश बढ़ गया था और सितम्बर में ४ अंश और बढ़ गया। वर्ष की समाप्ति पर यह मध्यग्रीष्म की अपेक्षा २० अंश अधिक हो गया था। १५३ पर पहुँच जाने के बाद इसमें पिछले ६ महीने में इतनी वृद्धि हो गई थी जितनी ओ. पी. ए. कण्ट्रोल के समस्त तीन वर्षो मे नही हुई थी।

उद्योग ने वेतन-वृद्धियों के कारण इसकी ज्यादा जिम्मेदारी मजदूरो पर डाली और मजदूरों ने कहा कि मुनाफ़ो के ज्याद लोभ के कारण कसूरवार उद्योग है। इस प्रकार जब दोनों में मुखालफत बढ़ रही थी तो दोनों यह भूल गए कि जीवन-यापन का खर्चा बढ़ने का सबसे बड़ा कारण खाद्य पदार्थों के मूल्यों में ३४ प्रतिशत बढोतरी हो जाना है। यह कटुतापूर्ण बहस चलती रही और उसका कोई परिणाम नहीं निकला। इस विवाद के कुहासे में से एक ही चीज़ प्रत्यक्ष हुई और वह थी निस्सन्देह बढ़ती हुई महँगाई।

इन चेतावनियो के बावजूद कि इन परिस्थितियो में और वेतन-वृद्धियो की माँग का मतलब होगा अतिरिक्त मूल्य-वृद्धि को खुला न्यौता देना, मज़दूर अधिकाधिक बेचैन होते गए। एक के बाद एक यूनियन ने बढती हुई मूल्य-तालिका के साथ कदम मिलाकर चलने के एकमात्र साधन के रूप में नई वेतन-वृद्धियों की माँग का आधार तैयार करना शुरू कर दिया। जब मोटर और इस्पात कर्मचारियो दोनो ने वर्तमान करारो पर पुनर्विचार करने को कहा तो १९४६ की शरद् ऋतु तक उद्योग को एक और चुनौती के लिए मच तैयार हो गया। किन्तु वेतन-वृद्धियों के माँग के इस दूसरे दौर की शुरुआत का सदिग्ध श्रेय सी. आई. ओ. यूनियनो को नही मिला। यह काम यकायक लेविस ने अपने हाथ में ले लिया। नवम्बर में राष्ट्र को ५ वर्षो में ८वी बार कोयला संकट का सामना करना पड़ा।

वर्ष के शुरू में सरकार से जो समझौता किया गया था उसके स्थान पर खनिको और खान मालिकों के बीच एक नया करार कराने के सब प्रयत्न विफल हो गए। मालिकों के प्रस्ताव को ठुकराते हुए लेविस ने कहा: "हम नही चाहते कि तुम्हारे प्रस्ताव से आहिस्ता-आहिस्ता गला घोटे जाने के लिए हमें मूक पशुओ की तरह बूचडखाने में घसीटकर ले जाया जाए।" यूनाइटेड माइन वर्कर्स की दलील यह थी मूल्य-वेतनों में अनुपात बदल जाने से सरकार

के साथ किए गए करार पर फिर से विचार करना जरूरी हो गया है और वेतन-वृद्धि तथा काम के घण्टो में कमी करने की दोनो माँगें उसने पेश की। गृहमंत्री क्रुग ने करार पर फिर से गौर करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि जब तक खानो पर सरकारी नियंत्रण है तब तक यह करार चलेगा और तब तक खनिको को हडताल करने का कोई कानूनी हक हासिल नही है। जब लेविस अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और खनिक "करार नही तो काम नही" का अपना चिर-परिचित नारा लगाते हुए काम छोड़ गए तो क्रुग ने वाशिंगटन मे संघीय जिलान्यायालय के न्यायाधीश टी. ऐलन गोल्ड्सबरो से हडताल से सम्बन्धित समस्त हलचल को रोकने के लिये निरोधादेश जारी किए जाने की प्रार्थना की।

स्थिति जैसी बताई गई, बडी नाजुक थी। अबकी बार यह निश्चय करके कि लेविस के सामने झुकना नही है, सरकार ने कहा कि खानो से अलग रहने का खनिको का निश्चय एक हडताल ही है जो जनहित को खतरे में डाल रही है और जिसपर निरोधादेश की कार्रवाई किया जाना उचित है। यूनियन ने इसका तीव्र प्रतिरोध करते हुए कहा कि ऐसी कोई भी कार्रवाई नौरिस-ला गार्दिया ऐक्ट के खिलाफ होगी जिसके अन्तर्गत श्रम सम्बन्धी विवादो में निरोधादेश के प्रयोग की मुमानियत है और इसकी हड़ताल सरकार के खिलाफ .ही है क्योकि खानो पर गृहमंत्रालय का नियंत्रण नाममात्र का है। चूंकि अस्थायी रोक आदेश के बावजूद काम रुका रहा इसलिए मूल प्रश्न को अब समाधान के लिए अदालतो मे ले जाया गया। सारा देश अमरीका के राष्ट्रपति .ार यूनाइटेड माइन वर्कर्स के अध्यक्ष के बीच उत्पन्न होने वाले इस स्पष्ट ंघर्प के परिणामो की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था।

कानूनी कार्रवाई बहुत जटिल रही किन्तु इसका अंतिम परिणाम यह हुआ कि न्यायाधीश गोल्ड्सबरो ने फैसला दिया कि नौरिस-ला गार्दिया ऐक्ट उन श्रम-विवादों पर लागू नही होता, जिनमें एक फरीक सरकार हो और अपनी सार्वभौम सत्ता का प्रयोग करते हुए सरकार यूनियन को समाज को "एक सार्वजनिक विपत्ति" से बचाने का आदेश दे सकती है। जब लेविस ने तब भी अदालत के आदेश को मानने से इन्कार किया तब उसके खिलाफ अदालत की तौहीन करने का अभियोग चलाया गया और ४ दिसम्बर को उसे

बाकायदा अपराधी घोषित कर दिया गया। यूनाइटेड माइन वर्कर्स पर ३५,००,००० डालर जुर्माने की और स्वयं लेविस को १०,००० डालर जुर्माना भरने की सज़ा दी गई।

इन घटनाओं से उत्पन्न अत्यधिक आवेशपूर्ण वातावरण में निरोधादेश के उपयोग पर बहस खनिकों के रवैये पर हुई पहली बहसों से भी ज्यादा उग्र थी। लेविस ने अदालत में कहा कि "मैं निरोधादेश द्वारा प्रशासन की भद्दी पुनरावृत्ति को स्वीकार नहीं कर सकता" और ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनों में उसकी वैयक्तिक अप्रतिष्ठा के बावजूद मजदूरों ने सामान्यतः उसके कथन का समर्थन किया। दूसरी ओर गोल्ड्सबरो की इस युक्ति को कि "हड़ताल एक बुराई, शैतानी और स्वयं लोकतंत्रीय सरकार को एक खतरा है," आम जनता का व्यापक समर्थन मिला। कुछ समय तक तो खनिक फिर भी काम पर नहीं आए, किन्तु अदालत की तौहीन के जिम्मेदार ठहराये जाने के बाद लेविस ने एक अन्य विरामसंधि करते हुए उन्हें काम पर वापस जाने का आदेश दिया। सुप्रीमकोर्ट में तुरन्त अपील करने के प्रयत्न किए गए और लेविस ने कहा कि जब इस अदालत में मामले पर विचार हो रहा हो तब मैं "आर्थिक संकट के आतंक से उत्पन्न लोकमत के दबाव से" मुक्त हो जाना चाहता हूँ।

अन्त में सुप्रीम कोर्ट ने निरोधादेश जारी करने और उसका पालन न करने पर लेविस तथा युनाइटेड माइन वर्कर्स दोनों को अदालत की मान-हानि का अपराधी घोषित करने के न्यायाधीश गोल्ड्सबरो के निर्णय को पुष्ट किया। यह सिद्धान्त, भले ही ४ के विरुद्ध ५ मतों से, स्पष्ट रूप से प्रतिपादित कर दिया गया कि जहाँ हड़ताल राष्ट्रीय हित और सुरक्षा को खतरे में डालती हो उसके बारे में नौरिस-ला गार्दिया ऐक्ट सरकार को निरोधादेश प्राप्त करने से नहीं रोकता किन्तु युनाइटेड माइन वर्कर्स पर किया गया जुर्माना घटाकर इस शर्त पर ७,००,००० डालर कर दिया गया कि हड़ताल स्थायी रूप से वापस ले ली जाए और १९ मार्च को लेविस ने अन्ततः ऐसा आदेश जारी कर दिया।

लेविस को अस्थायी रूप से पीछे हटने को बाध्य होना पड़ा किन्तु कोयला खान मालिकों से उसकी सौदेबाजी की क्षमता को ज्यादा हानि नहीं पहुँची

थी। जब स्मिथ-कौनाली ऐक्ट की समाप्ति के बाद कोयला खानें ३० जून, १९४७ को पुनः निजी खानमालिको को वापस करनी पड़ीं तो वह एक नया करार करने में सफल हुआ जिसमें वेतन वृद्धि प्रदान की गई, काम के घण्टे कम कर दिये गए और खनिक कल्याण कोष में रायल्टी चन्दे की मात्रा बढा दी गई।

कोयला-विवाद के अतिम रूप से हल होने के पहले ही एक वर्ष पूर्व-की-सी परिस्थितियो में अन्य यूनियनो ने वेतन-वृद्धि की माँगो का दूसरा दौर प्रारम्भ कर दिया था। १९४६ के बाद से जीवनयापन का खर्चा १८ प्रतिशत और बढ गया था और महँगाई में वृद्धि अभी जब जारी ही थी तो मजदूरो ने फिर यह महसूस किया कि उद्योग के तो मुनाफे बढते जा रहे है किन्तु उनके हितो की उपेक्षा की जा रही है। अब २३ प्रतिशत वेतन-वृद्धि की माँग की जाने लगी और मजदूरो ने पुनः इस बात पर बल दिया कि उद्योग चीजों के मूल्य बढाए बिना यह वेतन-वृद्धि प्रदान कर सकते हैं। उनके इस कथन की पुष्टि राबर्ट आर. नाथन की उस प्रसिद्ध रिपोर्ट से होती थी जिसमें दिखाया गया था कि उद्योगो के मुनाफ़े वस्तुतः ५० प्रतिशत बढ गए है। प्रबन्धकों ने भी तोता रटन्त की तरह यह बात दोहरायी कि अतिरिक्त वेतन वृद्धियों से कीमतो का और बढना अनिवार्य है। ऐसा लगा कि देश मुद्रा-प्रसार के दुष्चक्र में फँस गया है। उद्योगो को ज्यादा मुनाफा मिलता हो या मज़दूरो को ज्यादा वेतन, यह बात निश्चित थी कि उपभोक्ताओ को सदा खरीदी गई चीज़ों के लिए उत्तरोत्तर अधिक कीमत देनी पड रही थी। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि मजदूरो को जितना लाभ वेतन-वृद्धि से हुआ उससे ज्यादा नुकसान उपभोक्ता के नाते उन्हें चीजे खरीदने में होता था किन्तु जीवन-यापन का खर्चा बढ़ने के तात्कालिक दबाव के कारण वे नई माँगे रखने को विवश थे।

तो भी १९४७ में उद्योग और मज़दूर दोनो १९४६ की अपेक्षा समझौते की ज्यादा मूड में थे। यूनियन सुरक्षा का प्रश्न जो पहले वेतन वृद्धियों जितना ही मूल्यवान् था अब उतना महत्त्वपूर्ण नही रह गया था। मज़दूरो ने अपनी शक्ति दिखला दी थी और बारहमासी वेतन-विवादो का कोई भी फरीक हडतालो का एक और दौर देखने का इच्छुक नही था, जिनसे सबको बहुत

नुकसान होता था। फलस्वरूप सामूहिक सौदेबाजी बड़े उद्योगों मे समझौते कराने में कामयाब हुई। औसतन १५ सेण्ट प्रति घण्टा वेतन वृद्धि के समझौते किए गए।

इस समझौते में यद्यपि पहले से काफी तरक्की की गई थी तो भी मजदूरों को युद्ध-कालीन स्थिति प्राप्त नही हुई थी। महँगाई में लगातार वृद्धि ने इसके लाभो को मंसूख कर दिया। श्रममंत्री ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा कि निर्माण उद्योगो में जून, १९४६ और जून, १९४७ के बीच यद्यपि औसत साप्ताहिक वेतन ४३·३१ डालर से बढ़कर ४९·५३ डालर हो गया तो भी वास्तविक क्रय शक्ति में यह ५ प्रतिशत घट गया। उन्होने कहा कि "महँगाई में वृद्धि ने १९४६-४७ के दौरान प्राप्त की गई वेतन वृद्धियो की और पर्ल-हार्बर के बाद से प्राप्त मजदूरो के लाभ के अधिकांश भाग का सफाया कर दिया है।" इसके अलावा जून, १९४७ मे श्रम सम्बन्धी आंकड़ों के ब्यूरो ने बताया कि २००० डालर की औसत वार्षिक आय के मुकाबले देशभर के शहरो में ४ सदस्यो के परिवारों का बजट जो स्वास्थ्य तथा युक्तिसंगत सुख-सुविधाओं के लिए काफी हो, औसतन ३००४ से ३४५८ डालर तक है।

इन वेतन सम्बन्धी समझौतो के बाद उत्पन्न झगड़ो के कारण नाविको, जहाजी कर्मचारियों और गोदी कर्मचारियों की जो हड़तालें हुईं उनमें भारी अन्तर-यूनियन कलह देखने को मिला। टेलीफोन कर्मचारियों की एक हड़ताल ने कुछ समय तक संचार साधन ठप्प रखे जबकि राष्ट्रव्यापी समझौतो की एक असफल मांग की गई। किन्तु १९४७ की तसवीर अपेक्षाकृत अधिक औद्योगिक शांति की रही। पहले ६ महीनों में हड़तालो से कुल ०.५ प्रतिशत कार्य समय का नुकसान हुआ, जब कि १९४६ को इसी अवधि ने ३०४ प्रतिशत कार्य समय का नुकसान हुआ था। बाद के महीनों में की राष्ट्रीय या उद्योग-व्यापी हड़तालें नही हुईं।

आम स्थिति में इतना सुधार होने के बावजूद सामान्य जनता जिसने संगठित मजदूरो को अनु-परिवर्तन के कार्यक्रम को करीब-करीब ठप्प करते देखा था, स्थिति को जैसे का तैसा रहने देने को तैयार नही थी। युद्ध के अंतिम वर्षों में जो यूनियन-विरोधी भावनाएँ उभर रही थी वे १९४६ में जन-हित की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए बडे उद्योगों में की गई हड़तालों मे

बहुत तीव्र हो गई थी मज़दूरों के प्रति इस वैरभाव को अगर सिद्धान्ततः यूनियन-सगठन के विरोधी प्रतिक्रियावादी तत्त्वो ने और बढ़ाया तो बार-बार लिए हुए लोकमत सर्वेक्षणो से यह ज़ाहिर हो गया कि अमरीकी जनता की आम राय में मज़दूर नेता अपनी शक्ति के मुताबिक जिम्मेदारी की भावना प्रदर्शित करने में असफल रहे। सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा को नुकसान पहुँचाने वाली हड़तालो को, चाहे वे कोयला, रेलवे, इस्पात या अन्य बड़े उद्योगो में की गई हो इतना खतरनाक समझा गया कि उन्हें सहन नही किया जा सकता था। यह अधिकाधिक महसूस किया गया कि राष्ट्र के आर्थिक तंत्र पर किसी संगठित अल्पमत को, भले ही वह मज़दूरो का व्यापक प्रतिनिधित्व करता हो, तानाशाही ढग से हावी होने से रोकने के लिए कोई न कोई उपाय अवश्य किया जाना चाहिए। अतीत मे सरकार को बडे उद्योगपतियो पर अपना अकुश रखने को मजबूर किया गया था अब उसे बड़ी यूनियनों की उतनी ही बड़ी चुनौती का सामना करने के लिए कहा गया।

मज़दूर यूनियनों पर ज्यादा प्रभावशाली नियत्रण स्थापित करने की यह लोकप्रिय माँग कांग्रेस में फिर प्रतिक्षिप्त हुई। वागनर ऐक्ट मे, जिसमे यकीनन सिर्फ मालिकों की तरफ़ से की जाने वाली श्रम सम्बन्धी नाजायज हरकतों को ही ग़ैर-क़ानूनी ठहराया गया था, सशोधन की माँग पहले-पहल १९४६ के संकट मे की गई जब कि समस्त अनु-परिवर्तन को कार्यक्रम ठप्प पड़ जाने का खतरा पैदा हो गया था। फरवरी में प्रतिनिधिसभा ने एक सख्त प्रतिबन्धात्मक बिल पास किया जिसे प्रतिनिधि केस ने प्रस्तुत किया था। तात्कालिक हड़ताल का खतरा टल जाने पर इस बिल के बारे मे आगे कार्रवाई स्थगित कर दी गई। जब कोयला और रेलवे हड़तालों ने पुनः सार्वजनिक आशका उत्पन्न कर दी तो सेनेट ने इस बिल पर विचार किया और उसे मजूर कर दिया। २९ मई को केस बिल राष्ट्रपति के पास भेजा गया। अन्य बातो के अलावा इसमें एक संघीय मध्यस्थता बोर्ड की स्थापना, हडताल करने से पूर्व ६० दिन तक शाति बनाए रखने और इन परिस्थितियो मे काम छोड़ देने पर किसी भी मज़दूर को अधिकारो से वंचित किए जाने की व्यवस्था रखी गई; गौण बहिष्कारो तथा अधिकारक्षेत्र सम्बन्धी हड़तालो दोनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और हिंसात्मक तथा बाधात्मक घरने को रोकने के लिए निरोधादेशो के

उपयोग का अधिकार दिया गया।

राष्ट्रपति ट्रूमन ने बिल पर निषेधाधिकार का प्रयोग किया। यद्यपि यह बिल उतना सख्त नहीं था जितना उनका अपना हड़तालियो को फौज में भरती करने का प्रस्ताव, तो भी उन्होंने महसूस किया कि एक स्थायी कानून बन जाने की हालत में यह यूनियनों पर अनावश्यक प्रतिबन्ध लगा देगा, झगड़ो के कारणों को दूर करने के बजाय सिर्फ उनके ऊपरी लक्षणों का इलाज कर सकेगा। राष्ट्रपति ने कांग्रेस से कहा कि औद्योगिक शांति कायम रखने के किसी भी दीर्घकालीन कार्यक्रम में यूनियन सुरक्षा के बुनियादी सिद्धान्त पर कोई आंच नहीं आने देनी चाहिए। यह उद्देश्य उनके मत मे प्रस्तावित कानून से पूरा नहीं हो सकता था इसलिए उन्होंने कांग्रेस से सारे कार्यक्रम पर फिर से विचार करने का अनुरोध किया।

कांग्रेस ने उनके निषेधाधिकार को लांघकर केस बिल को पास नहीं किया लेकिन उसका इस मामले को यूँही छोड देने का कोई इरादा नहीं था। १६४६ के मध्यावधि चुनावो में रिपब्लिकनो की विजयो से मजदूर-विरोधी ताकतें मजबूत हुई और वर्ष के अन्त तक यूनियनो पर अंकुश लगाने के आन्दोलन मे नई शक्ति आ गई। वस्तुतः कुछ क्षेत्रो मे इस चुनाव का यह अभिप्राय लगाया गया कि पिछले १४ वर्षों मे जो पलड़ा मजदूरो के पक्ष में इतना ज्यादा झुका दिया गया था उसे संतुलित करने के लिए कठोर कदम उठाने के हेतु यह लोकमत का सीधा आदेश है। १६४७ मे कांग्रेस में ही नहीं बल्कि कोई ३० राज्यो में नए प्रतिबन्धात्मक कानून पास किए गए।

मजदूर अपने हितो पर आए इस खतरे से एकदम चौकन्ने हो गए और उनके शब्दो मे "मजदूर आन्दोलन को नष्ट नहीं तो पंगु करने के लिए जान-बूझ कर चलाए गए शैतानी आन्दोलन" का मुकाबला करने के लिए उन्होंने संयुक्त कार्रवाई की अपील की किन्तु अन्त मे विधि-निर्माण की चक्की ने पीस पास कर टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट तैयार कर ही डाला। पहले प्रतिनिधिसभा द्वारा पास किए गए इस बिल की ज्यादा कठोर धाराओ मे सेनेट मे काफी संशोधन कर दिए गए किन्तु तो भी मजदूरो के दोस्तो की निगाह मे यह औचित्य की सीमा को काफी दूर तक लांघ गया था। राष्ट्रपति ट्रूमन ने इन पर भी निषेधाधिकार का प्रयोग किया। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित बिल का उद्देश्य

मज़दूर यूनियनो को कमजोर कर देता है, यह मज़दूरों को उनके बुनियादी अधिकारा की वैधानिक रक्षा से वंचित कर हड़तालो को हतोत्साहित करने के बजाय प्रोत्साहित करेगा और "हर समझौते की मेज़ पर सरकार को एक अवांछनीय भागीदार" बना देगा। उन्होंने कहा कि "इसकी व्यवस्थाएँ भयावह है, मज़दूरो के लिए बुरी है, प्रबन्धको के लिए बुरी है और देश के लिए बुरी है।" किन्तु इस बार काँग्रेस का इसे कानून बनाने का दृढ संकल्प था। राष्ट्रपति के रवैये पर तीक्ष्ण प्रहार करते हुए और गलत प्रतिनिधित्व का अप्रच्छन्न आरोप लगाते हुए २३ जून, १९४७ को उनकी आपत्तियों को रद्द कर दिया गया और उनके निषेधाधिकार की अवहेलना कर बिल पास कर दिया गया।

टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट अत्यधिक लम्बा और जटिल कानून था जिसकी बीसियो धाराओ मे से कोई निश्चित बात निकाल लेना कठिन था। इसका घोषित उद्देश्य मालिक व कर्मचारियो के बीच सौदेबाज़ी की क्षमता में फिर से सन्तुलन कायम करना था। इस उद्देश्य के लिए वागनर ऐक्ट में मज़दूरो को प्रदान किए गए बुनियादी हक लौटाए नही गए किन्तु उनके मुकाबले के अधिकार मालिको को भी प्रदान कर दिये गए। या अगर इसे दूसरे शब्दों मे कहा जाए तो पहले के कानूनो ने जहाँ सिर्फ मालिको के नाजायज तरीकों की निन्दा की गई थी वहाँ नए कानून में मज़दूर यूनियनो की नाजायज़ हरकतो पर अंकुश लगाया गया था। अब से यूनियनों को कर्मचारियो के साथ जोर-ज़बर्दस्ती करने, सामूहिक करार से इन्कार करने, अत्यधिक सदस्यता-फीस लेने, या गौण बहिष्कार अथवा अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी हड़तालो की अनुमति प्रदान नही की जाती थी। दूसरी ओर यद्यपि मालिको के लिए यूनियनों को मान्यता देना और उनके साथ सामूहिक करारो की बातचीत करना लाजिमी था वहाँ उन्हे बदले की धमकियो अथवा लाभ के प्रलोभनो को छोड़कर यूनियन-सगठन के बारे में अपने विचार व्यक्त करने की पूरी आज़ादी दे दी गई और उन्हें सामूहिक सौदेबाज़ी के लिए कौन-सी यूनियन मज़दूरों का प्रतिनिधित्व करेगी, इसका चुनाव स्वयं कराने का हक प्रदान कर दिया गया।

किन्तु इस नये कानून ने सौदेबाज़ी की क्षमता को सन्तुलित करने के इरादे से भी आगे जाकर यूनियन सुरक्षा पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालने वाले और

अंकुश लगाए। न केवल बन्द-शॉपों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया, बल्कि यूनियनशॉपों पर भी अत्यन्त सख्त व जटिल प्रतिबन्ध लगा दिये गए। इसके अलावा यूनियनों के लिए यह अनिवार्य कर दिया गया कि किसी समझौते को समाप्त करने या उसमें संशोधन करवाने के इरादे के लिए ६० दिन का नोटिस दिया जाए और करार भंग करने पर संघीय न्यायालय में उन पर मुकदमा चलाए जा सकने की व्यवस्था की गई। उन पर राजनीतिक आन्दोलनों में चन्दा देने या कोष खर्च करने का प्रतिबन्ध लगा दिया गया और यूनियन के अधिकारियों से इस बारे में हलफनामे दाखिल करने के लिए कहा गया कि वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य नहीं हैं।

दूसरे अध्याय में राष्ट्रीय संकटकाल की हड़तालों से निबटने के लिए एक लम्बा-चौड़ा फार्मूला प्रदान किया गया था। जब कभी किसी हड़ताल से समस्त उद्योग पर या उसके बड़े अंश पर प्रभाव पड़ता हो और उससे राष्ट्र के स्वास्थ्य तथा सुरक्षा को हानि पहुँचती हो तो उस हालत में राष्ट्रपति को एक जाँच-बोर्ड नियुक्त करने का और उसकी प्रारम्भिक रिपोर्ट प्राप्त हो जाने पर ८० दिन के लिए हड़ताल सम्बन्धी समस्त गतिविधियाँ रोक देने के लिये निरोधादेश प्राप्त करने के हेतु अटार्नी जनरल की मार्फत अर्जी देने का अधिकार प्रदान किया गया। अगर इस अवधि में कोई समझौता न हो सके तो निरोधादेश २० दिन और बढ़ा देने की व्यवस्था की गई, जिस बीच गुप्त मतदान द्वारा समस्त कर्मचारियों की इस बारे में राय ली जानी थी कि मालिकों द्वारा प्रस्तुत समझौते की अन्तिम शर्तें उन्हें स्वीकार हैं या नहीं। अगर इन प्रयत्नों के बाद भी समझौता न हो सके तो ऐक्ट में उसके बाद सिर्फ यह व्यवस्था की गई थी कि राष्ट्रपति उस घटना की रिपोर्ट "विचार और उचित कार्रवाई के लिए अपनी सिफारिशों के साथ" कांग्रेस में पेश करें।

अन्त में कुछ प्रशासनात्मक परिवर्तन किये गए थे, जैसे राष्ट्रीय श्रम-सम्बन्ध-बोर्ड का विस्तार और सब अनुचित तौर-तरीकों के बारे में अभियोग दायर करने के लिए एक बड़े वकील की नियुक्ति। एक नई और स्वतन्त्र संघीय मध्यस्थता और मेल-मिलाप सेवा स्थापित की गई जिसे ऐसे किसी भी श्रम-विवाद में हस्तक्षेप करने का अधिकार प्रदान किया गया जिससे

वाणिज्य में बड़े पैमाने पर रुकावट पड़ने की आशंका पैदा होती हो।

कांग्रस में बहस के समस्त प्रारम्भिक काल में और विशेषकर निषेधाधिकार के प्रयोग और बिल को फिर पास करने की अवधि के बीच, इस बिल में निहित मसलो पर देश भर में गरमागरम बहस की गई। नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स के नेतृत्व में मालिको के एसोसियेशनो की सारी शक्ति बिल को कानून बनाने के आन्दोलन के पीछे लगा दी गई। ए एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. ने समझौते की कोई प्रवृत्ति दिखाए बिना संघर्ष किया और इस बिल की पूर्ण पराजय की अपनी माँग में कोई रू-रियायत करने से इन्कार कर दिया। उद्योग तथा मज़दूर दोनों ने कांग्रेस की सुनवाइयो में अपने प्रवक्ता भेजे। अपने-अपने दृष्टिकोण ज़नता के सामने रखने के लिए रेडियो समय खरीदा तथा अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए अखबारो में पूरे पृष्ठ के विज्ञापन निकाले।

इस बिल के समर्थको का कहना था कि प्रस्तावित बिल श्रम-सम्बन्धो मे पुन. कुछ न्याय की स्थापना करने से आगे नही जाता। सेनेटर टैफ्ट ने कहा. "यह बिल सिर्फ मजदूर यूनियनों के नेताओ को दिए गए विशेष अधिकारो मे कमी करता है।" दूसरी ओर मज़दूरो ने समस्त यूनियनवाद पर इसे बदले की भावना से किया गया आक्षेप बताया। ए. एफ. एल. ने कहा कि "इस देश में प्रतिक्रियावाद की ताकतें स्वतन्त्र अमरीकी मजदूरो के साथ दो-दो हाथ कर लेना चाहती हैं।"

मज़दूरो की स्थिति मे कुछ बुनियादी कमजोरी थी। लोक-समर्थन प्राप्त करने तथा यूनियन सुरक्षा पर चोट करने वाले किसी कानून के प्रति विरोध को एकत्र करने का आन्दोलन उन्होने बहुत देर से शुरू किया। वागनर ऐक्ट में सशोधन करने के आन्दोलन के लिए एकमात्र यूनियन-विरोधी मालिको और नेशनल ऐसोसियेशन आव मैन्युफैक्चरर्स को जिम्मेदार ठहराते हुए ए. एफ एल. और सी. आई. ओ. के नेताओ ने इस तथ्य को दर-गुजर कर दिया कि आम जनता मजदूरो की "गैर ज़िम्मेदारी पर कितनी विक्षुब्ध थी। उद्योगव्यापी हड़तालो ने जब बुनियादी लोक-सेवाओं मे बाधा डाली तो लोगो में निराशा की आम भावना की ज्यादातर उपेक्षा कर दी गई। इससे भी महत्त्व की बात यह थी कि मज़दूरो ने टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट का कोई विकल्प नहीं रखा। वे अपने

तौर-तरीको को युद्धोत्तर काल की परिस्थितियों के अनुरूप ढालने के लिए और वागनर ऐक्ट में किसी किस्म के संशोधन की आवश्यकता को स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे। अगर कुछ समझौते का रुख अपनाया गया होता तो सम्भव है लोकमत कुछ नरम संशोधनों के पक्ष में हो जाता जिससे यूनियन सुरक्षा पर कोई आँच आए बिना लोकहित की रक्षा हो सकती। सितम्बर मे किए गए लोकमत के सर्वेक्षणो में जिन लोगों से पूछ-ताछ की गई या जिन्हें टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की जानकारी थी उनमे से ५३ प्रतिशत का खयाल था कि इसमे या तो संशोधन किया जाए, या इसे रद्द कर दिया जाए। किन्तु मज़दूरो की नीति इस प्रच्छन्न समर्थन को और बढाने या उसे बनाए रखने मे विफल रही।

---

२० : ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. का विलय

आगामी वर्षो में आधी सदी गुज़र जाने पर भी यद्यपि संगठित मज़दूर आन्दोलन पर टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की छाया लटकती रही तो भी अमरीकी समाज मे मजदूरो की हैसियत के निरन्तर सुधरते जाने में कोई रुकावट नही पड़ी'। यूनियनो के विकास की रफ्तार यद्यपि वह नही थी जो १६३० की दशाब्दी के बाद के वर्षो में या १६४० की दशाब्दी के प्रारभिक वर्षों में थी तो भी सदस्य संख्या बढ़कर करीब ८० लाख हो गई और ऐसे कर्मचारियो की संख्या निरन्तर बढ रही थी जिनपर सामूहिक सौदेबाज़ी के समझौते लागू होते थे। अप्रत्याशित रूप से स्थिर आर्थिक परिस्थितियो की जिनपर शस्त्रीकरण पर किए जाने वाले खर्च और विदेशो को दी जाने वाली सहायता का काफी हद तक प्रभाव पड़ा था, पृष्ठभूमि में यूनियन गतिविधि भी आम औसत वेतनो में वृद्धि कराने तथा अतिरिक्त आनुषगिक लाभ प्राप्त कराने में सफल हुई।

इन परिस्थितियो में संगठित मज़दूरो की शक्ति और प्रभाव को राजनीतिक दृष्टि से नही तो आर्थिक दृष्टि से पहले किसी भी समय की अपेक्षा अधिक स्वीकार किया गया। वेतन और काम की शर्तें निर्धारित करने के लिए प्रबन्धक नियमित रूप से सामूहिक सौदेबाज़ी का आश्रय ले रहे थे। इस में शायद ही कोई अपवाद रहा हो। पहले के ज़माने की परिस्थितियो के बिल्कुल विपरीत उद्योगपतियो के अधिक-से-अधिक पुराणपन्थी प्रवक्ताओ ने भी राष्ट्रीय अर्थतन्त्र तथा अमरीकी समाज के व्यापक क्षेत्रो में यूनियनो के बुनियादी रोल को स्वीकार कर लिया था। फॉर्चून के सम्पादको ने कहा : "उनकी सत्ता और प्रतिष्ठा में वृद्धि स्वयमेव आधुनिक स्वतंत्र व्यवसाय पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।"

मध्य सदी की इन घटनाओ से यद्यपि यह स्पष्ट था कि टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट को 'गुलाम मज़दूर' बिल कहना कितना गलत था तो भी इसके खिलाफ सी.आई. ओ. और ए. एफ. एल. दोनो के अभियान में कोई शिथिलता नही आई।

इसे रद्द कराने के लिये कांग्रेस पर सब सम्भव दबाव डाला गया और मौजूदा राजनीतिक गठबन्धनो में कंज़रवेटिव और लिबरल तत्त्वो के बीच यह एक अत्यन्त स्पष्ट विवाद का विषय बन गया। जब १९४८ का राष्ट्रपति का चुनाव नज़दीक आया तो दोनो बडे दल इस प्रश्न पर कोई न कोई टेक लेने को बाध्य हो गए और १९३० की दशाब्दी का वही बुनियादी राजनीतिक ढाँचा फिर दोहराया गया। डैमोक्रैटो ने टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट को तुरन्त रद्द किए जाने पर जोर दिया और रिपब्लिकनो ने इस विषय में इससे ज्यादा सीधा और कुछ नही कहा कि उनकी पार्टी "मज़दूर-प्रबन्धक सम्बन्धी कानूनों को निरन्तर सुधारते जाने" के पक्ष में है।

राष्ट्रपति ट्रूमन की अप्रत्याशित विजय ने तुरन्त मज़दूरो की यह आशा बढादी कि इस ऐक्ट को अब रद्द कर दिया जाएगा। किन्तु यह उनका भ्रम साबित हुआ। काग्रेस पर रिपब्लिकनो और दक्षिण के डैमोक्रैटो के, जिनको सगठित मज़दूरो की माँग से कोई सहानुभूति नही थी, एक मिले-जुले ब्लाक का नियत्रण रहा और सेनेटर टैफ्ट ने वर्तमान कानून में कोई बडा परिवर्तन करने की सख्त मुखालफत की। एक संशोधन सन् १९५१ मे किया गया। यूनियन शापो का चुनाव कराते-कराते अनुभवो से इस विषय में मजदूरो का रवैया इतना स्पष्ट हो गया था (इन चुनावो में करीब ८७ प्रतिशत मजदूर यूनियन का समर्थन करते थे) कि चुनावो की देखरेख में किए जाने वाले खर्च को बचाने के लिए काग्रेस ने कानून में सशोधन कर मज़दूरो के वोट लिए बिना यूनियन-शाप समझौते करने की अनुमति दे दी। इसको छोड़कर टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट ज्यों-का-त्यो रहा, चाहे इसके मज़दूर-दुश्मनो ने इसके बारे में कुछ भी कहा हो या कुछ भी किया हो।

१९५२ में यह फिर चुनाव आन्दोलन का विषय बना। एक बार फिर डैमोक्रैटो न इसे रद्द किए जाने का आग्रह किया और रिपब्लिकनों ने इससे आगे कोई वायदा नही करना चाहा कि समय और परिस्थितियो के अनुसार जैसी ज़रूरत होगी वैसा वे इस ऐक्ट में संशोधन करेंगे। किन्तु रिपब्लिकनों की विजय के बावजूद मजदूर इसके खिलाफ कार्रवाई के लिए ज़ोर देते रहे। राष्ट्रपति आइज़नहावर द्वारा अपने श्रम मत्री पद पर युनाइटेड ऐसोसियेशन आव जर्नीमैन प्लम्बर्स ऐण्ड स्टीम फायरर्स के भूतपूर्व अध्यक्ष मार्टिन पी. डर्किन

की नियुक्ति का (यह कहा जाता था कि राष्ट्रपति आइजनहावर के मंत्रिमण्डल में ९ करोड़पति और एक प्लम्बर है) और २ फरवरी को कांग्रेस में दिए गए उनके इस वक्तव्य का कि अनुभव ने टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट मे सुधार की आवश्यकता प्रदर्शित की है, यह अर्थ लगाया गया कि यद्यपि इस कानून के रद्द होने की आशा छोडनी पडेगी तो भी इसमें सशोधनो के लिए द्वार खुला रखा गया है।

तो भी अब की बार भी कुछ नही किया गया। डर्किन ने १९ सशोधन तैयार किए और यह ख़याल करके कि इन्हें राष्ट्रपति आइनजहावर का समर्थन प्राप्त है उन्हे कांग्रेस में पेश किए जाने के लिए एक सिफारिश का मसविदा प्रकाशित कर दिया। आइजनहावर ने इस बात से इन्कार किया कि उन्होने इनका समर्थन करने का वचन दिया है। एक 'पूर्व-सहमत' नीति का प्रतिवाद कर दिए जाने से नाराज होकर डर्किन ने मन्त्रिमण्डल से इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रपति आइजनहावर ने यद्यपि अपनी स्थिति को स्पष्ट करने और मज़दूरो को अपनी सहानुभूति का आश्वासन दिलाने की कोशिश की तो भी यूनियन नेताओं को यकीन हो गया था कि राष्ट्रपति को घेरे रहने वाली कंज़रवेटिव ताकतो ने राष्ट्रपति को अपने वायदे से मुकर जाने को विवश कर दिया। राष्ट्रपति के लिए यह कह देना ही काफी नही था, जैसा कि उन्होने सितम्बर में ए. एफ. एल. के सम्मेलन मे कहा कि "वह यह खूब अच्छी तरह समझते है कि संगठित मजदूरो ने इस देश के लिए क्या किया है।" टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट के संशोधन में अपने ही मत्री का समर्थन न करने पर यूनियनें क्रुद्ध हो गईं। ए, एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनो के नेताओं ने अधिक सौहार्दपूर्ण कानून बनवाने के लिए सब सभव राजनीतिक दबाव डालने के अपने संकल्प को पुनः दृढता से व्यक्त किया।

किन्तु इस चीज़ का अब भी कोई वास्तविक प्रमाण नही था (शायद कुछ क्षेत्रो में संगठन के नए आन्दोलनो पर सम्भवत. कुछ प्रतिबन्धात्मक प्रभाव को छोड़कर) कि टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट ने मजदूर आन्दोलन की बढती हुई शक्ति मे पर्याप्त रुकावट डाली है। कानून की निरोधादेश सम्बन्धी व्यवस्थाओ को, जो राष्ट्रीय आपत्तिकाल की हड़तालो पर अपनाई जाती थी, विरले ही कभी लागू किया गया और इसकी तथाकथित यूनियन विरोधी धाराओ का ऐसा कोई परिणाम नही हुआ जैसी मज़दूरो को आशंका थी। इन दिनो के मज़दूर-

प्रबन्धक झगड़ो से यह बात जाहिर हुई कि बड़ी यूनियनों की सौदेबाजी की शक्ति में कोई ह्रास होने के बजाय उनकी शक्ति बढ़ रही है।

पहला बडा विवाद, जिसमे ट्रैफ्ट-हार्टले ऐक्ट का इस्तेमाल किया गया, बारह-मासी अशान्त कोयला उद्योग में खड़ा हुआ, जहाँ १९४७ मे हुए समझौते के बावजूद जान एल. लेविस के अब भी आक्रामक नेतृत्व मे रुक-रुक कर हडतालों का होना जारी था। लेविस के इस अभियोग के बारे में कि खान मालिको ने स्वास्थ्य और कल्याण कोष के विषय मे अपने करारो को पूरा नही किया है, खनिको और खानमालिको के बीच एक नया विवाद, उत्पन्न हो गया। १९४८ मे महीने भर की हड़ताल के बाद इस बारे मे हुए समझौते से भी कोयला-खानों में पुन: शाति कायम नही हुई और लेविस उद्योग की सामान्यत: अनिश्चित हालतो पर अधिकाधिक चिन्तित हो उठा। ऊँचे वेतनों और अधिक अनुकूल करार के लिए मालिको पर और दबाव डालने के हेतु नाममात्र को खानों में होने वाली मौतो और घायलों की संख्या पर विरोध प्रकट करते हुए उसने खनिको से रुक-रुक कर हड़ताल करते रहने का आह्वान किया। सम्पूर्ण १९४९ में उत्पादन मे बाधा पडती रही; और दिसम्बर मे यद्यपि कुछ खान-मालिको के साथ नए समझौते हो गए तो भी अनधिकृत हड़तालें जारी रही।

अन्त में, ६ फरवरी, १९५० को यूनाइटेड माइन वर्कर्स को सीधा करने के लिये राष्ट्रपति ट्रूमन ने टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की राष्ट्रीय आपातकालीन व्यवस्थाओं का आश्रय लिया और आगे कोई और हड़ताल न करने के लिये अस्थायी निरोधादेश जारी किया गया। यूनियन अधिकारियो ने खनिको को वापस काम पर जाने के आदेश जारी कर दिए किन्तु इनकी ज्यादातर उपेक्षा कर दी गई। तब यूनाइटेड माइन वर्कर्स के खिलाफ अदालत की मानहानि का मुकदमा दायर किया गया। सरकार ने कहा कि हड़तालियो को काम पर वापस जाने के लिए कहकर यूनियन ने सिर्फ 'लाक्षणिक' रूप में निरोधादेश का पालन किया है। किन्तु एक सघीय न्यायालय ने इस आधार पर अभियोग को सम्पुष्ट करने से इन्कार कर दिया कि यूनियन के आदेश में बदनीयती साबित नही हुई। इस गतिरोध में ट्रूमन ने काग्रेस से कोयलाखानो पर कब्जा करने का अधिकार माँगा किन्तु कोई कार्रवाई किए जाने से पूर्व मार्च मे खान-मालिको तथा यूनियन के बीच नए समझौते हो गए। कुछ-कुछ व्यवस्था तो

स्थापित हो गई किन्तु टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट का अनुभव कम-से-कम बहुत अधूरा रहा ।

इन्ही, १६४६ और १६५० के वर्षों में अन्य कई महत्त्वपूर्ण हड़तालें हुईं, विशेषकर मोटर और रेल उद्योगों में किन्तु टैफ्ट-हार्टले एक्ट लागू नही किया गया। क्रिसलर कम्पनी और यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स में अन्तिम समझौता होने से पूर्व कर्मचारी १०० दिन तक कारखाने से बाहर रहे। इससे भी लम्बी रेल कर्मचारियो की हड़ताल १६५१ तक जारी रही। बार-बार की जाने वाली इन रेल हड़तालों को देखकर सरकार ने रेलो पर कब्ज़ा कर लिया और एक बार सेनामत्री ने काम पर न आने वाले सब कर्मचारियों को बर्खास्त कर देने की धमकी दी। अन्त में १६५२ में एक समझौते के बाद सरकारी नियंत्रण हटा लिया गया। इस समझौते में अन्य बातों के अलावा रेलों का संचालन-कार्य करने वाले मज़दूरो से इतर मज़दूरो के लिए एक यूनियन शाप की व्यवस्था रखी गई थी।

टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट को लेकर सबसे प्रखर विवाद १६५२ की इस्पात हड़ताल थी जो इस उद्योग के इतिहास में सबसे लम्बी और महँगी पड़ी। कोरिया युद्ध तथा एक आपातकालीन स्थिति की पृष्ठभूमि में यह हडताल हुई थी, जिसमें सरकार ने वेतनो तथा मूल्यो दोनो पर फिर से नियंत्रण लगा दिए थे। लोगो को १६४१ से लेकर १६४५ तक का जमाना याद आने लगा।

उद्योग तथा यूनाइटेड स्टील वर्कर्स के बीच नए करार की बातचीत १६५१ की समाप्ति पर भंग हो गई किन्तु यह विवाद नए वेतन स्थिरीकरण बोर्ड को सौंपे जानें के बाद यूनियन ने उसकी रिपोर्ट आनें तक हड़ताल सम्बन्धी कोई भी कार्रवाई स्थगित रखना स्वीकार कर लिया। तीन महीने बाद घोषित फैसले को मज़दूरों ने तो स्वीकार कर लिया किन्तु उद्योग ने इसमें यूनियन शाप को मान्यता दिए जाने की निन्दा की और प्रस्तावित वेतन-वृद्धि को तब तक मानने से इन्कार कर दिया जब तक उसकी भरपाई के लिए इस्पात के मूल्य में वृद्धि नही की जाती। आर्थिक स्थिरीकरण निदेशक ने मूल्य बढ़ाना स्वीकार नही किया और आगे बातचीत टूट जाने से यूनाइटेड स्टील वर्कर्स ने हड़ताल की तैयारी कर दी।

उद्योग ने तुरन्त टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की आपातकालीन व्यवस्थाओ को

लागू किए जाने का आग्रह किया किन्तु मज़दूर क्योंकि तीन महीने से रुके रहे थे इसलिए ट्रूमन ने इसका प्रयोग करने से इन्कार कर दिया। इसके बदले ८ अप्रैल, १९५२ को उन्होंने आपातकाल में उत्पादन चालू रखने के एक मात्र उपाय के रूप में इस्पात मिलो पर कब्ज़ा करने का कड़ा कदम उठाया। उन्होंने कहा : "मुझे विश्वास है कि इस विशेष समय पर सब इस्पात मिलो को बन्द हो जाने देकर संविधान मुझे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डालने के लिए नहीं कहता।"

उनकी इस कार्रवाई पर विवाद और विरोध का तूफान उठ खडा हुआ। इस्पात उद्योग मामले को तुरन्त ही अदालतो में ले गया और कारखानो पर सरकारी नियंत्रण के विरुद्ध प्रारम्भिक निरोधादेश अदालती आदेश के अस्थायी स्थगन, रुक-रुक कर होने वाली हड़तालो और आगे होने वाली व्यर्थ बातचीत की पृष्ठि-भूमि मे कानूनी दांव-पेच लड़े जाते रहे। अन्त में २ जून को सुप्रीम-कोर्ट ने फैसला दिया कि मिलो पर ज़ब्ती सरकार का असाविधानिक कार्य थी और राष्ट्रपति को मजबूर होकर इस्पात मिलें उनके मालिको को लौटाए जाने का आदेश जारी करना पडा। लगभग ६,५०,००० इस्पात कर्मचारियो ने तुरन्त अपनी हड़ताल शुरू कर दी और समस्त उद्योग मे उत्पादन ठप्प हो गया।

इसके बाद दो महीने और गुजर गए, जबकि २६ जुलाई को इस्पात कम्पनियो तथा यूनियन में आखिरकार एक समझौता हो गया जो बहुत कुछ वेतन स्थिरीकरण बोर्ड द्वारा पहले प्रस्तुत सुझावो के अनुरूप था। अनुमानतः इस हड़ताल से उद्योग को ३५ करोड़ डालर का और मज़दूरो को ५ करोड़ डालर के वेतन का नुकसान हुआ। इसके अतिरिक्त इस हड़ताल ने सिर्फ इस्पात उद्योग को ही ठप्प नही किया था; इस्पात का उपयोग करने वाले बहुत से कारखाने इसके कारण बन्द हो गए थे और मोटरों का निर्माण भी कुछ समय के लिए रुक गया था। ट्रूमन द्वारा टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट को अमल मे लाने से इन्कार करने तथा इस्पात कम्पनियो को सरकारी नियंत्रण में लेने के उनके प्रयत्नो पर जब राजनीतिक सघर्ष जारी था तो कोरिया में सैनिको को सामान की सप्लाई कुछ अरसे के लिए गम्भीर रूप से खतरे में पड़ गई थी।

१९५२ के वर्ष मे यदि इस्पात हड़ताल की प्रधानता रही तो १९५३ की सबसे विशिष्ट हड़ताल न्यूयार्क के गोदी व जहाजी घाट कर्मचारियो की रही।

इस विवाद के परिणाम अत्यन्त जटिल रहे। वेतन और काम की शर्तो के बारे में इसमें इण्टरनेशनल लोगशोर मैन्स ऐसोसियेशन तथा न्यूयार्क शिपिंग ऐसोसियेशन में संघर्ष हो गया। किन्तु अन्ततः शांति स्थापित होने से पूर्व सेनेट की एक जाँच समिति ने इस यूनियन को भ्रष्टाचार, कम्युनिज्म और अपराधियों की जमात बताया'। न्यूयार्क और न्यूजर्सी दोनों राज्यो के अधिकारियो ने हस्तक्षेप किया। ए. एफ. एल. ने आई. एल. ए. को ज़ोर-ज़बर्दस्ती से रकम वसूल करने और गबन के आरोपों में फेडरेशन से निकाल कर गोदी कर्मचारियो की एक नई यूनियन बना दी और राष्ट्रपति आइज़नहावर ने टैफ्ट-हार्टले एक्ट का सहारा लिया। किन्तु इनमें से किसी भी कार्रवाई से हिंसा और गुण्डागर्दी खत्म नही हुई और सेनेट की जाँच समिति ने इस यूनियन के बारे में जो कुछ कहा था, वह सब सच प्रतीत होने लगा।

इन परिस्थितियो में राष्ट्रीय श्रम सम्बन्ध बोर्ड ने बन्दरगाह पर सौदेबाज़ी के लिए अधिकारी एजेण्ट के चुनाव की व्यवस्था करके पुरानी आई. एल. ए. तथा ए. एफ. एल. द्वारा स्थापित नई यूनियन के बीच पैदा हुई विद्वेषपूर्ण प्रतिद्वन्द्विता को दूर करने का प्रयत्न किया। इसमे जॉन एल. लेविस द्वारा पुनः संगठित तथा समर्थित पुरानी आइ. एल. ए. विजयी हुई किन्तु चुनाव परिणाम आतक और जोर-ज़बर्दस्ती के आरोपों पर रद्द कर दिए गए। तब अन्धा-धुन्ध अनेक हडताले हुईं, जो १९५४ तक भी चलती रही और राष्ट्रीय श्रम सम्बन्ध बोर्ड ने उन्हे खत्म किए जाने की शर्त पर दुबारा चुनाव कराने की व्यवस्था की। ये चुनाव मई में हुए और सब तरफ से लगाए गए आरोपो और ए. एफ. एल. के अब भी जारी विरोध के बावजूद पुरानी यूनियन ही पुन. जीत गई। २७ अगस्त, १९५४ को राष्ट्रीय श्रम-सम्बन्ध बोर्ड ने इसे गोदी मज़दूरो का अधिकृत सौदेबाजी-एजेण्ट स्वीकार कर लिया और ए. एफ. एल. ने नई यूनियन बनाने का प्रयत्न छोड़ दिया। यद्यपि इसके बाद भी कभी-कभी काम रुका किन्तु अन्त मे नवम्बर में हडताल और ताला-बन्दी पर प्रतिबन्ध का दो वर्ष का एक समझौता कर लिया गया। किन्तु यह अभी देखना था कि पुरानी आई. एल. ए. की अच्छे व्यवहार की प्रतिज्ञा तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिए न्यूयार्क और न्यूजर्सी के कमीशनों द्वारा उठाए गए कदम क्या स्थिति को सफलतापूर्वक सुधार सकेंगे ? किन्त अशान्त बन्दरगाह पर फिलहाल बेचैनीपूर्ण शांति

कायम हो गई थी।

गोदी मजदूरो के आपसी सघर्ष और कोयला, इस्पात, मोटर तथा रेल उद्योगों में हुई हडतालें सदा अखबारो की मोटी-मोटी सुर्खियाँ बनाती थी। बिना काम रोके किए गए समझौतो पर कोई ध्यान नही दिया जाता था, यद्यपि ऐसा होना एक अपवाद के बजाय सामान्य बात थी। टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट के स्वीकार किए जाने के बाद ६ वर्षो का रिकार्ड वस्तुत: यह बताता है कि राष्ट्रव्यापी हडतालों में और उनके द्वारा हुई काम की हानि में निरन्तर कमी हुई। १९२७ से १९५१ तक औसतन ४ करोड़ कनुष्य दिवसो की प्रतिवर्ष हानि हुई, (१९४६ मे यह सख्या ११,६०,००,००० मनुष्य दिवस थी) १९५२ में ५५० लाख हो गई, अगले वर्ष लगभग आधी हो गई और १९५४ में २,२०,००,००० रह गई जो सब मजदूरो के कुल कार्य समय के ०·२५ प्रतिशत से अधिक नही थी।

इस काल की किसी भी हडताल मे मजदूरो को गम्भीर क्षति नही उठानी पडी। प्रत्येक महत्त्वपूर्ण हड़ताल में अतिम समझौते के फलस्वरूप मजदूरो को और ज्यादा वेतन-वृद्धियाँ मिलती थी और कई मामलो में तो प्रबन्धको ने मज़दूरो को अतिरिक्त आनुषगिक लाभ प्रदान किए। समृद्धि बढते जाने के कारण यूनियने इस प्रकार की माँगो पर जोर दे सकी और मालिक एक सीमित और अपनी हानि को बचाने के सघर्ष से ज्यादा कुछ नही कर सके: नए समझौतो में बराबर वेतन-वृद्धियो के अलावा काम की बहतर हालतो, बीमा सम्बन्धी लाभो, सवेतन छुट्टियो, और सबसे महत्त्वपूर्ण बात विस्तृत पेशन कोषो की व्यवस्था की गई।

इस काल में सामूहिक सौदेबाजी के जितने समझौते किए गए उनमें एक सबसे मज़ेदार मई, १९५० में जनरल मोटर्स और यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स के बीच किया गया। यह समझौता इस उद्योग में तथा अन्य उद्योगो मे बाद के समझौतो के लिए एक नमूने की चीज़ बन गई। इसमें एक उदार पेशन प्रणाली, विशेष बीमा लाभो, वार्षिक वेतन-वृद्धियो और श्रम साख्यिकी ब्यूरो के जीवनयापन के खर्चे के सूचकाक के अनुसार वेतनो में हेरफेर की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त यह करार ५ वर्ष के लिए किया गया। शायद इस मध्य सदी की किसी और अकेली घटना ने मजदूरो और प्रबन्धकों

के बीच सम्बन्धो में की गई चामत्कारिक प्रगति का इतना पूर्ण प्रदर्शन नही किया जितना इस व्यापक और समावेशक समझौते ने।

सामान्यत. मजदूरों द्वारा प्राप्त किए गए लाभ इस मूल तथ्य मे प्रगट हुए कि १९५० के दशक के मध्य तक दो-तिहाई गैर-कृषिजीवी मजदूरो—लगभग ३ करोड पर—सामूहिक सौदेबाज़ी के समझौते लागू हो गए थे। निर्माता उद्योगो में काम करने वाले मज़दूरो की आय बढ़कर ७५ डालर हो गई थी। यह वद्धि डालर की कीमतो मे हुए हेरफेर को और मूल्य-वृद्धियो को ध्यान में रखते हुए भी १९३९ के स्तर से ५० प्रतिशत अधिक थी। इस वेतन-वृद्धि में अनेक प्रकार के आनुषंगिक लाभ भी शामिल करने होगे जो अब अपवाद नही, नियम बन गए थे।

संगठित मजदूरो का प्रमुख लक्ष्य यद्यपि अब भी यूनियन सदस्यों के हितो की रक्षा के लिए आर्थिक कार्रवाई करना था तो भी ये राजनीतिक गतिविधियो में काफी उलझे रहे। सी. आई. ओ. की पालिसी ऐक्शन कमेटी तथा राजनीतिक शिक्षा के लिए ए. एफ. एल. की लेबर लीग द्वारा १९४८ और १९५२ दोनो चुनाव आन्दोलनो में डैमोक्रैटिक सरकार के चुनाव के लिए चलाए गए आन्दोलन इसके उदाहरण है। इसके अतिरिक्त मजदूर सामाजिक सुरक्षा को और व्यापक बनाने, न्यूनतम वेतन दरों मे वृद्धि तथा टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट मे संशोधन के लिए ज़ोर-शोर मे आन्दोलन करते रहे। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उनकी सफलता नाटकीय नही तो महत्त्वपूर्ण अवश्य थी। सामाजिक सुरक्षा अधिनियम बुढापा तथा उत्तराधिकारी बीमा-लाभो के सिलसिले में अधिकाधिक मज़दूरो पर लागू किया गया। न्यूनतम वेतन दरें भी ऊँची की गई और १९५५ में राष्ट्रपति आइज़नहावर ने उस समय की न्यूनतम दर को ७५ सेंट से बढाकर ९० सेंट प्रति घण्टा कर देने का प्रस्ताव किया। मजदूरो की माँग १·२५ डालर की थी। इन दोनों के बीच की संख्या पर यह समझौता उचित ही था।

किन्तु मज़दूरो को सिर्फ अपने वेतनों या सामान्य राष्ट्रीय विषयो से सम्बन्धित कानूनो की ही चिन्ता नही थी। वे घरेलू क्षितिज से भी परे देखते थे। जब स्थायी शाँति की महान् आशाएँ कम्युनिस्ट साम्राज्यवाद तथा शीत-युद्ध के कठोर परिणामो से छिन्न-भिन्न हो गई तो विदेशनीति मज़दूरों तथा

अमरीकी समाज के अन्य तत्वो के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई ।

ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनो ने ट्रूमन सरकार की और बाद में आइजनहावर सरकार की बुनियादी नीतियों का जोरदार समर्थन किया। उनके वार्षिक सम्मेलनों तथा अनेक इन्टरनेशनल यूनियनो के सम्मेलनो में पास किए गए प्रस्तावो मे ट्रूमन सिद्धान्त की पुष्टि की गई, मार्शल योजना का जोरदार समर्थन किया गया, चार-सूत्री कार्यक्रम पर [पूरे अमल की मांग की गई और उत्तर अटलांटिक सधि संगठन में अमरीका की भागीदारी का समर्थन किया गया। कम्युनिज्म की रोकथाम करने के लिए उठाया गया कोई कदम ऐसा नही था जिसे मजदूरो का हार्दिक समर्थन न मिला हो, और राष्ट्र के सामने विद्यमान संकटो को ज्यादा अच्छी तरह समझने के लिये अपील करने में मजदूर नेताओ ने बार-बार पहल की।

जनवरी, १९४८ मे ए. एफ. एल. के तत्कालीन सचिव-कोषाध्यक्ष जार्ज मीनी ने 'अमेरिकन फेडरेशनिस्ट' मे लिखते हुए इस बात पर बल दिया कि शांति प्राप्त करने के लिए अमरीका को अपने साथी लोकतंत्रो को स्वतंत्र रखने की कोशिश करनी चाहिए। मार्शल योजना को यूरोप मे तानाशाही के अग्रिम प्रसार को रोकने का सर्वोत्तम साधन बताते हुए उन्होने कहा कि इसकी वार्षिक कीमत उससे ज्यादा नहीं होगी, जितना राष्ट्र ने युद्ध के सिर्फ १९ दिनों मे स्वेच्छा से खर्च किया है। बाद में उन्होने एक और लेख में उत्तरी अटलांटिक संधि की जोरदार वकालत की। उन्होने कहा : "इस गंभीर संकट की घड़ी मे अमरीका के लोग इस बात पर पूरा भरोसा कर सकते है कि अमरीकी श्रमिक देश में और देश के बाहर दोनो जगह लोकतन्त्र के एकनिष्ठ, दृढ और जीवट वाले चैम्पियन है।"

इसी प्रकार के वक्तव्य सी. आई. ओ. के नेताओ ने भी दिए। वाल्टर रूथर और फिलिप मरें ने ट्रूमन अचेसन नीति का निरन्तर समर्थन किया, संयुक्त राष्ट्रसघ को मजबूत करने के लिये और कार्रवाई का अनुरोध किया और चतुःसूत्री कार्यक्रम के महत्त्व पर बल दिया। रूथर ने एक अवसर पर देश के रक्षा और विदेश-सहायता कार्यक्रम के समर्थन मे सामाजिक कार्रवाई का एक व्यापक कार्यक्रम" तैयार करने के लिये कहा। सी. आई. ओ. न्यूज़ में एक लेख मे कहा गया कि पर्याप्त समर्थन से चतु.सूत्री कार्यक्रम को इतना

विकसित किया जा सकता है कि इससे न केवल दो-तिहाई मानवता का ही हित हो, बल्कि अमरीका मे भी लोगो को और रोज़गार मिले।

सन् १९५० में कोरिया मे युद्ध छिड़ने के बाद ए. एफ. एल. ने एक प्रस्ताव स्वीकार करके कहा कि इस युद्ध के प्रकाश में स्वतन्त्र मज़दूर आदोलन का महानतम् कार्य सोवियत साम्राज्यवाद को रोकना और मुमकिन हो तो उसे निर्णायक पराजय देना है। सी. आई. ओ. ने भी इस अवसर पर "साम्यवादी आक्रमण के खिलाफ सघर्ष मे अपनी सरकार तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ को अपने पूर्ण समर्थन का फिर वचन दिया।"

अपने नज़दीकी कार्यक्षेत्र मे अमरीकी मज़दूर अतर्राष्ट्रीय श्रम-कार्यालय से सहयोग करते रहे, जब यह लगा कि ट्रेड यूनियनो का विश्व संघ पूर्णत: कम्युनिस्टो के प्रभाव मे जा रहा है तो इसके प्रतिनिधि (ए. एफ. एल. नही, किन्तु सी. आई. ओ. मूलत: इसमे शामिल हुई थी) इससे हट गए और १९४९ मे नए स्वतन्त्र ट्रेड यूनियनो के अन्तर्राष्ट्रीय महासघ के निर्माण में उन्होंने सहयोग किया। साथ ही स्वदेश मे मज़दूर आदोलन पर से कम्युनिज्म के किसी भी धब्बे को मिटा डालने के लिए ज़ोर-शोर से कार्रवाई की गई।

१९४९ के सी. आई. ओ. के सम्मेलन में यह प्रश्न बड़ा विवाद का विषय बन गया, वामपक्ष और दक्षिण का संघर्ष उत्पन्न हो गया और यूनियनों मे किसी भी कम्युनिस्ट नेतृत्व को मिटा डालने के लिए कदम उठाए गए। संविधान में संशोधन कर कम्युनिस्टो पर सी. आई. ओ. के भीतर किसी प्रशासनिक पद के लिए चुने जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और कम्युनिस्टों की राह पर चलने वाली किसी भी राष्ट्रीय यूनियन को दो-तिहाई मतों से सगठन से निकाल देने की व्यवस्था की गई। यूनाइटेड इलैक्ट्रिकल, रेडियो एण्ड मशीन वर्कर्स के मामले में तुरन्त कार्रवाई की गई और १० अन्य यूनियनों की, जिनपर साम्यवादियो के प्रभाव में होने का आरोप था, नीति की समीक्षा करने के लिये तीन समितियां बना दी गई। अगले वर्ष एक अपवाद को छोड़कर उन्हें भी संगठन से निकाल दिया गया।

सी. आई. ओ. ने निष्कासित यूनियनो के स्थान पर नई यूनियने बनाने की कोशिश की और अपनी खोई हुई सदस्य संख्या को फिर से प्राप्त करने मे कामयाब हुई। फिलिप मरे ने कहा कि कम्युनिस्ट-नियंत्रित यूनियनों के अधि-

कारी कम्युनिस्ट कार्यक्रम के प्रति आस्था रखते हुए, "परेशान करने, मुखालफ़त करने और अड़ंगे डालने" की नीति पर चल रहे है। किन्तु सी. आई. ओ. संगठन मे उनका "एक बहुत छोटा पर शोर मचाने वाला गुट है।"

कोरियाई युद्ध के कारण सगठित मजदूरो के सामने कुछ वैसे ही सवाल आए, जैसे दूसरे युद्ध के दौरान आए थे। राष्ट्रीय अर्थतंत्र पर फिर से सरकारी नियंत्रण हो जाने तथा आर्थिक स्थिरीकरण एजेंसी के एक अंग के रूप में वेतन स्थिरीकरण बोर्ड की स्थापना ने सामूहिक सौदेबाजी के संपूर्ण कार्यक्रमो मे अनेक नई बातो का समावेश किया। १९४१-४५ के वर्षो की भाँति मज़दूर सरकार से पूर्ण सहयोग के लिए उद्यत थे। राष्ट्रीय आपातकाल में औद्योगिक शांति के लिए एक ठोस आधार प्रदान करने का प्रयत्न करने के हेतु श्रम-सम्बन्धी नीतियो के बारे में सरकार को परामर्श देने के लिये ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. ने मिलकर एक संयुक्त श्रम नीति समिति स्थापित की। इसका तात्कालिक कार्य मनुष्य शक्ति सम्बन्धी समस्याओ, उत्पादन, वेतन, मूल्य और सार्वजनिक पदो पर यूनियन अधिकारियो की नियुक्ति के मामले में बड़ी यूनियनो के बीच समझौते कराना था।

इस कार्यक्रम को अमली रूप देने मे काफी सघर्ष पैदा हो गया और कुछ समय तक सरकार व सगठित मजदूरो के सम्बन्ध काफी तनावपूर्ण रहे। मज़दूरों के दृष्टिकोण पर बहुत कम ध्यान दिए जाने और जनवरी १९५० के स्तर से १० प्रतिशत से अधिक वेतन वृद्धियो पर पाबन्दी लगाने की नीति अपनाए जाने के कारण सयुक्त श्रम नीति समिति ने मज़दूर सदस्यो से वेतन स्थिरीकरण बोर्ड तथा अन्य सरकारी एजेंसियो से हट जाने को कहा। यह बहिष्कार दो महीने जारी रहा किन्तु अन्त में विवादग्रस्त मामले हल हो गए। तब मजदूरो ने लाभबन्दी नीति पर राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड में अपने प्रतिनिधि भेजना स्वीकार कर लिया और पुनर्गठित वेतन स्थिरीकरण बोर्ड मे भी वे लौट आए।

संयुक्त श्रमनीति समिति जिसने इन सब घटनाओ मे बहुत भाग लिया था और असाधारण यूनियन सहयोग प्रदर्शित किया था ए. एफ. एल. सदस्यो के हट जाने के कारण यकायका भंग हो गई। किन्तु उस वक्त तक इस कथन का औचित्य काफी हद तक सही साबित हुआ था कि "काफी हद तक इसने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया।" क्योकि सब प्रकार की कठिनाइयो और

सरकारी एर्जेंसियो मे प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर ,विवाद उत्पन्न हो जाने के बावजूद सगठित मज़दूर राष्ट्रीय रक्षा प्रयत्नो को सहयोग देते रहे। १९५१ और १९५२ के आखिरी दिनों में हडताल सम्बन्धी गतिविधि वस्तुतः बहुत कम हो गई।

शांतिपूर्ण सामूहिक सौदेबाज़ी अथवा हड़तालों के ज़रिये मज़दूरों की सुरक्षा को बढ़ाने तथा घरेलू राजनीति और विदेशी मामलों में मज़दूरों के अधिकाधिक भाग लेने के अलावा अन्य भी कारणों से नवम्बर, १९५३ का महीना अमरीकी मजदूरो के इतिहास में एक असाधारण महीना सिद्ध हुआ। ९ नवम्बर को जॉन एल. लेविस के त्यागपत्र देने के बाद से ही सी॰ आई॰ ओ. के अध्यक्ष फिलिप मर्रे यकायक दिल की धडकन बन्द हो जाने से गुज़र गए, और २१ नवम्बर को ३० वर्ष से चले आ रहे ए. एफ॰ एल. के अध्यक्ष विलिमय ग्रीन भी इतने ही अप्रत्याशित रूप में चल बसे। १२ दिनो की अल्प अवधि में सगठित मज़दूरो को दो प्रबल आघात लगे थे और सी॰ आई॰ ओ. तथा ए. एफ॰ एल. दोनो के सामने नए नेता चुनने का कठिन सवाल उत्पन्न हो गया।

इससे पूर्व कि सी॰ आई. ओ॰ की अध्यक्षता, प्रतिभाशाली कठोर प्रहार करने वाले यूनाइटेड आटो वर्कर्स के ओजस्वी मुखिया वाल्टर रूथर को सौंपी जाती, काफी संघर्ष हुआ। हाल के वर्षो में उसका सितारा काफी ऊँचा चढ़ा है। 'वह एक तीसरा मज़दूर दल बनाना चाहता है,' इस तरह की रिपोर्टें, बन्द हो जाने पर भी उसकी महत्त्वाकाक्षाओ के बारे मे कुछ ठीक पता नही चलता था तो भी इसमें शक नही कि मजदूरों के हित-साधन के पीछे वह पूर्णतः और एक निष्ठता से दीवाना था। रूथर लेविस के पद का वाजिब उत्तराधिकारी था।

ए. एफ॰ एल॰ ने अपना नया अध्यक्ष सचिव-कोषाध्यक्ष जॉर्ज मीनी को चुना। यूनियन सदस्यो के बाहर प्राय. अज्ञात मीनी ने अपना व्यावसायिक जीवन एक अप्रैण्टिस प्लम्बर से शुरू किया था और संगठित मज़दूरो मे उसकी गतिविधियो का एक लम्बा रिकार्ड था। यूनियन व्यावसायिक एजेण्ट, न्यूयार्क बिल्डिंग ट्रेड्स काउंसिल के सचिव ए. एफ. एल. के राज्य-अध्यक्ष और १९३९

से राष्ट्रीय महासंघ के सचिव-कोषाध्यक्ष के पद पर उसने काम किया। २२८ पौण्ड वज़न के भारी भरकम शरीर वाले इस व्यक्ति को "बुल डॉग व सांड के बीच की चीज़" कहा जाता था। वह पुराने ढंग का परम्परागत मज़दूर नेता लगता था और एक बड़े सिगार को पीते हुए या दृढ़ता से एक सिगार को चबाते हुए चित्रित किया जाता था लेकिन दिलचस्पी की व्यापकता में वह अपने पूर्ववर्तियों से कतई नही मिलता था। नृत्य के शौकीन, सुन्दर पियानोवादक को खेलों में भी बड़ी दिलचस्पी थी और गोल्फ खेलने वाला वह पहला ए. एफ. एल. का अध्यक्ष था।

अन्य यूनियन नेताओं तथा प्रबन्धको के प्रतिनिधियो के साथ सम्बन्धो में मीनी स्पष्टवादिता और कभी-कभी आवेश से काम लेता था। वह ए. एफ. एल. के उन गिने चुने अधिकारियो में से था जो लेविस के सामने तनकर खड़े होना चाहते थे और खड़े हो सके। १९४७ मे उसने कम्युनिस्ट न होने के हलफनामों पर दस्तखत करने के प्रश्न पर लेविस के कथन को सफल चुनौती दी और जहाँ तक ए. एफ. एल. का सम्बन्ध है, उसमें कामयाबी हासिल की। वह परिस्थितियों के मुताबिक जितना चाहे उतना सख्त हो सकता था।

अपने समस्त व्यावसायिक जीवन मे वह प्रगतिशील सिद्धान्तो का हामी रहा जो सदा ए. एफ एल. की नीति से सोलहो आने मेल नही खाते थे और जिस काम को वह अपने हाथ मे लेता उसे पूरा करने के लिए जी-जान लड़ा देता था। किसी भी प्रकार के जातीय अथवा धार्मिक भेदभाव का वह कट्टर विरोधी था। ए. एफ. एल. के अन्य अधिकारियो की अपेक्षा राजनीति मे ज्यादा रुचि रखते हुए मीनी को सामाजिक मामलो मे चिरकाल से दिलचस्पी थी और वह समझता था कि यूनियन सदस्यो को इस प्रकार की गतिविधियों मे ज्यादा हिस्सा लेना चाहिये।

जैसा कि कहा जा चुका है, दोनो मज़दूर संघो के नए अध्यक्ष ओजस्वी, दृढ और असाधारण रूप से व्यापक रुचि के व्यक्ति थे। यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि उनके सत्तारूढ होने से संगठित मज़दूरो को नई ताकत मिली है। ए. एफ एल. तथा सी. आई. ओ. दोनो की ओर से किए गए संगठन के अभियानो को इनसे नई प्रेरणा मिली और अपने नीति-सम्बन्धी सार्वजनिक वक्तव्यो मे वे स्वदेश मे उदार नीतियो और विदेश मे प्रभावशाली

अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के पक्ष मे मजदूरो के समर्थन का दृढता से बखान करते रहे।

इसके अलावा क्षितिज पर एक नई घटना घट रही थी। उसको भी इन्होने नया सम्बल प्रदान किया। यह था ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ का चिर-विचारित विलय जिसकी समय-समय पर भविष्यवाणी की जाती थी किन्तु जिसे हमेशा स्थगित कर दिया जाता था। इन दोनो महान् राष्ट्रीय सगठनों के बीच मूल विवादास्पद प्रश्न कभी के मिट चुके थे और आतरिक राजनीतिक मतभेद धीरे-धीरे दूर किए जा रहे थे। इसलिए दोनो के राष्ट्रीय नेतृत्व मे एक साथ परिवर्तन के कारण ऐसा लगा कि परम्परागत प्रतिद्वन्द्विताओ को अन्तिम रूप से खतम कर देने का और मज़दूरों की बड़ी ताकतो को एक ही राष्ट्रीय सघ मे एकजूट कर देने का अद्वितीय अवसर आ पहुँचा है।

वर्ष गुजरते जाने के साथ ए. एफ. एल और सी. आई. ओ. के बीच आपेक्षिक सतुलन भी बदल गया था। कुल १,८०,००,००० यूनियन सदस्यो मे से ए. एफ. एल. के ६५ लाख, तथा सी. आई. ओ. के लगभग ६० लाख सदस्य थे और २५ लाख रेलवे ब्रदरहुडो, युनाइटेड माइन वर्कर्स तथा दोनो संघो के बाहर अन्य स्वतंत्र यूनियनो के सदस्य थे। सी. आई. ओ. ने औद्योगिक यूनियनवाद पर जो बल दिया था वह ए. एफ. एल. को सामूहिक उत्पादन के उद्योगो मे संगठन सम्बन्धी हलचलें बढ़ाने की आवश्यकता तथा सब तरफ अधिक जोरदार नीतियाँ अपनाने के प्रति सजग करने मे सहायक बना रहा। इसके अलावा जिस प्रकार दोनो संगठन आर्थिक कार्रवाई से सम्बन्धित मामलो में एक दूसरे के निकट आ गए थे इसी प्रकार सी. आई. ओ. का उदाहरण राजनीतिक कार्रवाई के क्षेत्र मे अधिक बड़ा रोल अदा करने के लिए ए. एफ. एल. को प्रेरित किया करता था। सहयोग अधिकाधिक एक नियम बन गया था। सी. आई. ओ. की राजनीति कार्रवाई समिति 'राजनीतिक शिक्षा के लिए मजदूरो की लीग' के साथ निकट सहयोग पूर्वक काम कर रही थी।

सम्भावित विलय के प्रति, जिसकी तरफ अनेक यूनियनें व्यक्तिगत रूप से पहले भी मार्गदर्शन कर चुकी थी, पहला महत्त्वपूर्ण कदम यह था कि जून १९५४ मे ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ की घटक यूनियनो के बीच दो वर्ष का अनतिक्रमण समझौता हो गया। तथ्यो से पता लगा कि व्यापक रूप

से प्रचलित यूनियन सम्बन्धी लूट-खसोट और उसके फलस्वरूप होने वाली अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी हड़तालें हर दृष्टि से निरर्थक तथा समय और शक्ति का महँगा अपव्यय था। मीनी और रूथर में ऐसे कदम उठाने के लिए आवश्यक उदार दृष्टि और अधिकार थे जो यूनियनों मे आपसी कलह को बन्द कर समस्त मजदूर जगत् मे अधिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर सके। १९५५ तक ए. एफ एल. की ११० में से ८० यूनियनो ने और सी. आई. ओ. की सिर्फ दो यूनियनों को छोड़कर बाकी सब यूनियनो ने इस अनतिक्रमण समझौते को सम्पुष्ट कर दिया।

इस बीच एक संयुक्त एकता समिति भी काम करने लगी जिसमे पुनः मीनी और रूथर ने बड़ी भूमिका अदा की। अनतिक्रमण समझौते ने वस्तुतः इस बात की आशा बाँधी कि इस समिति के विचार-विमर्श से शायद कोई ठोस परिणाम निकल सके और इस बात के सकेत मिल रहे थे कि सी. आई. ओ. तथा ए. एफ. एल. की अनेक अन्तर्राज्यीय यूनियनें एकता के लिए अधिकाधिक प्रयत्न कर रही है। किन्तु विलय-वार्ता क्या वस्तुतः सफल हो रही है, इसका बहुत ही अंतरंग मजदूर क्षेत्रो से बाहर कुछ पता नही था। ९ फरवरी, १९५५ को नाटकीय आकस्मिकता के साथ संयुक्त समिति ने घोषणा की कि दोनों संगठनो के विलय के बारे मे ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनों के प्रतिनिधियों के बीच पूर्ण समझौता हो गया है।

यह कहा गया कि इस प्रस्तावित विलय से अनतिक्रमण समझौता जारी रहने के कारण प्रत्येक घटक राज्यीय व अन्तर्राज्यीय यूनियन अपनी अखण्डता को सुरक्षित रख सकेगी और ए. एफ. एल. के अन्दर मौजूदा विशेष विभागो की तरह औद्योगिक संगठन की विशेष परिषद् स्थापित करके सी. आई. ओ. का विशिष्ट अस्तित्व बना रहेगा। इस प्रकार नए संघ ने हर तरह से यह कबूल कर लिया कि सगठित मजदूरो में औद्योगिक यूनियनों तथा शिल्प यूनियनो दोनो का स्थान है और हर मामले में सम्बन्धित मजदूरो के अधिकारो की सुरक्षा के लिए सबसे प्रभावशाली संगठनात्मक साधन निर्णायक तत्त्व होगा।

एकता से यह भी आशा बँधी कि अब मजदूरो की बड़ी समस्याओ का सामना करने में प्रभावशाली कदम उठाया जा सकेगा। इसने कम्युनिस्टो की

घुसपैठ, पैसा ऐंठने और जातीय भेदभाव जैसी बुराइयो से जूझने वाली ताकतो को बहुत मजबूत किया। एकता समिति की रिपोर्ट में खास तौर से कहा गया कि सयुक्त संघ अमरीकी ट्रेड यूनियन आन्दोलन को "किसी भी या सब तरह के भ्रष्ट प्रभाव से, कम्युनिस्ट एजेंसियो और हमारे लोकतत्र तथा स्वतत्र और लोकतत्रीय ट्रेड यूनियनवाद के बुनियादी सिद्धान्तो की मुखालफत करने वाले अन्य सब तत्त्वो से" बचाने की हर कोशिश करेगा।

प्रस्तावित विलय में जो बाधा सदैव दुर्लंघ्य रही, अर्थात् नए सगठन के नेतृत्व की, वह सी. आई. ओ. द्वारा स्वेच्छा से नेतृत्व ए. एफ. एल. को सौप दिए जाने के कारण दूर हो गई। एक बार जब विलय को दोनो संगठनो ने अंतिम रूप से सम्पुष्ट कर दिया तो एकता समिति को प्रदान किए गए समर्थन तथा ए. एफ एल. और सी. आई. ओ. दोनो की कार्यसमितियो द्वारा की गई अनुकूल कार्रवाई से यह पहले ही स्पष्ट हो गया कि जार्ज मीनी समस्त राष्ट्र और सम्पूर्ण उद्योगो में १५० लाख सदस्यो वाले नए सघ के अध्यक्ष बनेंगे।

ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. को एक सयुक्त ट्रेड यूनियन अन्दोलन में गूँथने के अतिम समझौते की घोषणा करने वाले अपने ऐतिहासिक वक्तव्यो में मीनी और रूथर ने सयुक्त रूप में कहा :

"हमे विश्वास है कि दोनो यूनियन ग्रुपो का जिनका हम प्रतिनिधित्व करते है विलय इस तनावपूर्ण युग मे हमारे राष्ट्र और उसकी जनता के लिए एक वरदान होगा। हमें खुशी है कि हम अपने ढंग से ऐसे समय में अमरीकी मजदूर आन्दोलन मे एकता स्थापित कर सके जब विश्व शांति और सभ्यता पर कम्युनिस्टो के खतरे को देखते हुए समस्त अमरीकी जनता की एकता तुरन्त ही परमावश्यक है।"

स्वतत्र और लोकतत्रीय ट्रेड यूनियनवाद के लक्ष्य को अग्रसर करने की दृष्टि से इस प्रस्तावित विलय का मजदूरो में ही स्वागत नहीं किया गया। राष्ट्रीय निर्माता ऐसोसियेशन के अध्यक्ष के इस वक्तव्य के अलावा कि विलय को "गैर-कानूनी" करार दिया जाना चाहिए तथा अनुदार मत्रियों के कभी-कभी प्रकट किए गए इस भय को छोड़कर कि इससे मजदूरो का एकाधिपत्य स्थापित हो जाएगा, व्यावसायिक वर्ग के समाचार-पत्रो ने भी इस कदम का समर्थन किया और आशा प्रकट की कि इससे औद्योगिक शाति स्थापित होगी।

वाल स्ट्रीट' जर्नल ने इन्कार किया कि इस विलय से किसी भी प्रकार मज़दूरों के एकाधिपत्य मे वृद्धि होगी और 'नेशन्स बिजनेस' ने यह कहते हुए भी कि इस विलय का मतलब 'एक राजनीतिक शक्ति-स्रोत" हो सकता है, बताया कि अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी झगड़े कम हो जाने से इस विलय से उद्योगो को क्या लाभ हो सकते है।

अन्य अखबारो में न्यूयार्क टाइम्स ने विलय को 'राजनीतिज्ञता का करिश्मा' बताया, वाशिंगटन पोस्ट तथा टाइम्स हैरल्ड ने इसे "मजदूरों द्वारा प्राप्त की गई परिपक्वता तथा जिम्मेदारी की भावना का प्रभावशाली प्रदर्शन" बताया, 'क्रिश्चियन साइन्स मानीटर' ने भी इसे मज़दूरो मे परिपक्वता और जिम्मेदारी की बढती हुई भावना का प्रतीक बताया और वाशिंगटन स्टार ने यह विश्वास प्रकट किया, जो अन्य अखबारों मे भी प्रतिध्वनित हुआ कि इस विलय से "मजदूर प्रबन्धक सम्बन्धो मे दीर्घकालीन स्थिरता" आनी चाहिए। मजदूर-संगठन के प्रति अनुदारपन्थी रवैया पिछली दो दशाब्दियो मे कितना बदल गया था, इसका इससे बढ़िया और क्या सबूत मिल सकता था कि ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. के विलय का देशभर में स्वागत किया गया।

विलय की घोषणा के कुछ ही देर बाद मीनी ने 'फौर्चून' मे एक महत्व-पूर्ण लेख लिखा जिसमें उसने सगठित मज़दूरो के नए लक्ष्यो और महत्त्वाका-क्षाओ की रूपरेखा बताई। यूनियनो की वर्तमान स्थिति का उल्लेख करते हुए उन्होने मजदूरो की स्थिति में और सुधार की निरन्तर आवश्यकता तथा आर्थिक और राजनीतिक दोनो प्रकार की कार्रवाई के महत्त्व पर बल दिया। उन्होने कहा : सरकारी नीतियो में मज़दूरो का हिताहित ज्यादा संलग्न रहने के कारण " हम राजनीति मे रहेंगे।"

मजदूर विशेष रूप से और क्या चाहते है ? इस प्रश्न के उत्तर में मीनी ने लिखा

"हम अमरीकी समाज को किसी खास सैद्धान्तिक शक्ल में नही ढालना चाहते। हम चाहते है मजदूरो का जीवन स्तर हमेशा उन्नत होता जाए। साम गौम्पर्स ने यही बात एक बार संक्षेप में कही थी। यह पूछे जाने पर कि मज़दूर आन्दोलन क्या चाहता है, उसने कहा था 'अधिक'। अगर बेहतर जीवन स्तर से हमारा अभिप्राय अधिक पैसे के अलावा अधिक अवकाश तथा समृद्धतर

सांस्कृतिक जीवन भी है तो उस प्रश्न का उत्तर अब भी 'अधिक' ही है।"

इसी समय रूथर इस बात को और भी स्पष्ट कर रहा था कि बड़े निर्माताओ तथा युनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स के बीच नए समझौतों मे गारण्टी प्राप्त वार्षिक वेतन के विचारो को समाविष्ट करके वह भी मजदूरों के लिए 'अधिक' वेतन चाहता है। यह उसका तात्कालिक उद्देश्य था और उसने अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त किया कि समस्याएं कठिन भले ही लगे मोटर उद्योग तथा उसके कर्मचारियों के पारस्परिक हित की दृष्टि से उनका समाधान सम्भव है। वह यह नही समझता था कि वार्षिक वेतन की गारण्टी अथवा जिसे कभी-कभी वर्ष पर काम पर लगे रहने की गारण्टी कहा जाता था, औद्योगिक सम्बन्धो का रामबाण इलाज है किन्तु वह यह ज़रूर समझता था कि यह उद्योग मालिको के नजरिये को ऊँचा उठाने मे जरूर सहायक हो सकता है जिससे कि अपनी योजनाएं बनाते समय वे आय और क्रय शक्ति के सतत प्रवाह के बारे मे अपने कारखाने के मज़दूरो और समस्त समाज की आवश्यकताओ का ध्यान रखें।

तो भी १९५५ की वसन्त ऋतु में गारण्टी प्राप्त वेतन की इस योजना का व्यावसायिक वर्ग में व्यापक विरोध था और वे इसकी व्यावहारिकता में सन्देह करते थे। १ मार्च को जर्नल आव कामर्स ने राष्ट्र के प्रमुख उद्योगो मे बडे-बडे प्रबन्धको की इस भावना को मूर्त रूप दिया। यह अभी देखना था कि उक्त विरोध के बावजूद वार्षिक वेतन की गारण्टी को "आर्थिक दृष्टि से हितकारी और नैतिक दृष्टि से उचित" समझने वाले रूथर के साथ इस मामले पर कोई समझौता हो सकता है या नही।

इस मामले पर सघर्ष करने के उसके इरादे के बारे मे कोई सन्देह नही था। रूथर ने कहा कि "यह एक जिहाद, आर्थिक बाहुल्य को मानवीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने का जिहाद है। हम प्रबन्धको को पहाड़ की चोटी पर ले जाकर अपनी दृष्टि का कुछ अंश उन्हे प्रदान करना चाहते है। हम उन्हें यह दिखाना चाहेंगे कि अगर स्वतंत्र मज़दूर, स्वतन्त्र प्रबन्धक, स्वतत्र सरकार और स्वतंत्र जनता अमरीका की शक्ति को जुटाने और उससे लोगो की बुनियादी जरूरतें पूरी करने मे परस्पर सहयोग करे तो कैसे महान् नए संसार की सृष्टि की जा सकती है।"

ग्रीष्म के प्रारम्भ में नए समझौतों के लिए मोटर उद्योग के साथ बातचीत में रूथर अपने नए यूनियन उद्देश्य की प्राप्ति मे काफी हद तक सफल हुआ। प्रमुख कम्पनियाँ वस्तुतः वार्षिक वेतन की गारण्टी के सिद्धान्त पर सहमत हो गईं और युनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स ने हड़ताल की धमकियों के बिना ही अधिक से अधिक आशावादी यूनियन सदस्यो की आशा से भी अधिक लाभ प्राप्त किए। फोर्ड कम्पनी ने और उसके तुरन्त बाद ही जनरल मोटर्स ने सर्वप्रथम ऐसे समझौते किए जिनमे करीब-करीब सामान्य दर पर कम-से-कम आधे वर्ष के वेतन की गारण्टी प्रदान की गई थी।

वार्षिक वेतन की गारण्टी के अलावा मजदूरों की और भी समस्याएँ थी। अनेक राज्यों मे (१९५५ मे १७ राज्यो में) "काम के अधिकार" का व्यापक अस्तित्व बन्द शाप तथा यूनियन शाप दोनो के खिलाफ भेदभाव में यूनियन सुरक्षा को बड़ा खतरा समझा जाता था। यह कानून टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की एक धारा के मातहत बनना सभव हुआ, जिसमे कहा गया था कि यूनियन सुरक्षा के बारे मे राज्य के कानून यदि संघीय कानून से ज्यादा प्रतिबन्धात्मक हैं तो राज्य के कानून ही चलेंगे। यद्यपि नए श्रममन्त्री जेम्स पी. मिचेल ने राज्यो से इन कानूनो को रद्द कर देने के लिये कहा तो भी सगठित मजदूर उनका मुकाबला करने का सबसे अच्छा उपाय यही समझते थे कि टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की उस धारा को ही खत्म करा दिया जाए, जिसके मातहत उन कानूनो का बनना सभव हुआ है।

यूनियन सदस्यो के लिए शायद इस से भी महत्त्वपूर्ण बात ऑटोमेशन-मशीन द्वारा मशीनका-सचालन-द्वारा बेकारी बढने का सभावित परिणाम थी। मजदूर ऑटोमेशन का विरोध नही कर रहे थे किन्तु उनका कहना था कि वार्षिक वेतन की गारण्टी या अन्य ऐसे उपायों से फैक्ट्री मजदूरो की तेजी से की जाने वाली छँटनी के धक्के को झेलने लायक बनाने की व्यवस्था की जाए। यह एक ऐसा प्रश्न था जिस पर धन्धे की सुरक्षा की दृष्टि से ही नही, बल्कि सामूहिक क्रय-शक्ति बढ़ाने के लिए आवश्यक पूर्ण रोज़गार की ज़रूरत की दृष्टि से भी मज़दूर स्वयं को अपनी आवाज सुने जाने के अधिकारी मानते थे।

यह स्पष्ट था कि इन समस्याओं तथा टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट के संशोधन के

बारे में सगठित मज़दूर सब मजदूरो के हितों की रक्षा और उनको अग्रसर करने में सब कुछ कर डालने के लिये अपनी समस्त आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का जो ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. के विलय से और मज़बूत हो गई थी, प्रयोग करने पर आमादा थे। 'अधिक' का भावी लक्ष्य निरन्तर अपने ध्यान मे रखने का निश्चय किया गया।

तो भी 'फौर्चून' में अपने लेख की परिसमाप्ति करते हुए मीनी अतीत का महान सफलता की दृष्टि से सिंहावलोकन कर सका। उसने लिखा कि अमरीकी मज़दूरों का जीवन-स्तर १९०० के बाद से दुगना हो गया है और काम का समय एक-तिहाई घट गया है। वह स्वतन्त्र व्यवसाय प्रणाली के ढाँचे के अन्तर्गत जिसकी बदौलत अमरीकी समाज मे अमरीकी मज़दूरो की अच्छी स्थिति सभव हो सकी है, इन्ही दिशाओ में और प्रगति करने का विश्वासपूर्वक स्वप्न लिया करता था।

—:•:—

२१ : मज़दूरों के सामने अनिश्चित भविष्य

ए एफ. एल तथा सी. आई. ओ. के विलय और १९५५ मे मज़दूरों की सामान्यत. अनुकूल स्थिति से मजदूर आन्दोलन के और ज्यादा विकास की बहुत आशा बँध रही थी। अगले ५ वर्षों मे ये आशाएँ पूर्णतः पूरी हुईं। वस्तुतः १९६० की दशाब्दी के आरम्भ मे सगठित मज़दूर हार-पर-हार खाते प्रतीत हुए जिससे मज़दूर नेताओ मे गम्भीर चिन्ता उत्पन्न हो गई और ए. एफ. एल. सी. आई ओ. के सम्मेलन मे अन्धकार-सा छा गया।

संयुक्त सघ ने अपने पहले सम्मेलन मे अगले १० वर्षों मे यूनियन-सदस्यता को दुगुना करने का लक्ष्य रखा था किन्तु इसकी आधी अवधि बीत जाने पर भी सदस्यता मे कोई वृद्धि नही हुई और संगठन सम्बन्धी हलचल करीब-करीब ठप्प रही। अनेक यूनियनो मे भ्रष्टाचार तथा पैसे ऐंठे जाने की वारदातों के भण्डाफोड़ से, जिसका मजदूर व प्रबन्धक क्षेत्र मे अनुचित तौर-तरीकों पर सेनेट की समिति की रिपोर्ट से व्यापक प्रचार हो गया था, यूनियनो की जिम्मेदारी की भावना मे जनता का विश्वास उत्पन्न नही हो सका। अन्त मे कांग्रेस ने १० वर्षो में लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट नाम से पहला कानून बनाकर यूनियनो की शक्ति पर महत्त्वपूर्ण अंकुश लगा दिए। यूनियनें जहाँ यह समझती थी कि १९५८ के मध्यावधि चुनावो मे उदारपथियो की विजयो की विजय के बाद टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट को रद्द कराना अथवा उसमे संशोधन करा लेना उनके लिए बहुत आसान हो गया है वहाँ सगठित मजदूरो ने न्यूडील के बाद से अब तक किसी भी समय मे अपने हाथ पाँव सबसे ज्यादा बधे हुए पाए।

हो सकता है कि १९६० के दशक के प्रारम्भ मे मज़दूरो मे व्याप्त यह निराशा पूर्णतः उचित न हो। इन सब धक्को के बावजूद यूनियनें बहुत शक्तिशाली थी और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र पर बहुत प्रभाव डाल सकती थी। बडी औद्योगिक यूनियनो द्वारा किए गए सामूहिक सौदेबाजी के समझौतो से उनके सदस्यो को अधिक वेतन और ज्यादा आनुषगिक लाभो के रूप मे फायदा होता रहा। १९५९-६० की लम्बी इस्पात हडताल मे, देश के बुनियादी उद्योग में

पुराने ढंग के सत्ता-संघर्ष मे, अन्ततोगत्वा मज़दूरो की ही आपेक्षिक जीत हुई थी। तो भी राष्ट्र के अर्थतन्त्र में बुनियादी परिवर्तनो—विशेषकर मजदू-शक्ति के स्वरूप में परिवर्तन और बहुत से उद्योगो में ऑटोमेशन की तेज रफ्तार ने भविष्य की अनिश्चितताओं को सामने ला खड़ा किया। '६० के दशक में मज़दूर कहाँ जा रहे हैं? इस प्रश्न के उत्तर में एक सुप्रसिद्ध अर्थ-शास्त्री ने निःसंकोच उत्तर दिया "बहुत दूर नही।" संगठित मज़दूरो ने स्वयं यह अनुभव किया कि अगर उन्हें अपना वह आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव कायम रखना है जो पिछली चौथाई सदी के राष्ट्रीय स्तर पर उनकी भूमिका की विशेषता रही है तो उन्हें अपनी कुछ नीतियाँ बदलनी होगी।

ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. के प्रशासनिक निकायों के अधिकृत विलय से ही मज़दूर आन्दोलन मे वह सामष्टिक एकता कायम नहीं हो गई जो उसके राष्ट्रीय नेताओ का लक्ष्य थी। राज्य-संघो तथा स्थानीय संगठनों मे मेल कराने और मज़दूर आन्दोलन के समस्त विक्षुब्ध इतिहास में उसके लिए अभिशाप रूप अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी झगड़ो को रोकने के अधिक प्रभावशाली उपाय करने की कठिन और दुरूह समस्या बनी रही। यद्यपि ए. एफ. एल. सी. आई. ओ. के अध्यक्ष के रूप में जार्ज मीनी संयुक्त श्रमिक शक्ति का इतना प्रभावशाली नेता सिद्ध हुआ कि अनेक समस्याएँ उसे सिर्फ यही कह कर सौंप दी जाती थी कि "अरे, यह काम जार्ज पर छोड़ दो," तो भी उसे राज्य संघों अथवा वैयक्तिक यूनियनो मे अधिकारियो का सदा पूरा सहयोग नही मिला। स्थानीय विलय वार्ताएँ प्राय. कृच्छ्रगति से चलती रही और १९५० के दशक की समाप्ति तक ही समस्त राज्यों मे यह विलय पूरा हो सका। तब भी कुछ ऐसे स्थानीय संगठन मौजूद थे जिन्होंने एक पूर्णतः संयुक्त श्रम मोर्चा उपस्थित करने के लिए अतिम व्यवस्थाएँ पूरी नही की थी।

इसके अतिरिक्त यूनियनो के भ्रष्टाचार के बारे में सेनेट की जाँच के परिणामों के प्रकाश में अपसरण और निष्कासनो के कारण भी इन वर्षों में ए. एफ. एल. तथा सी. आई. ओ. दोनो से सम्बद्ध राज्यीय तथा अन्तर्राज्यीय यूनि-यनों की सख्या कम हो गई थी। १९६० की दशाब्दी के प्रारम्भ में मज़दूरों के इस संयुक्त संघ मे १३४ यूनियनें थी किन्तु उनके सदस्यों की संख्या १९५६

में १,७,००,००० से घटकर १,३५,००,००० रह गई थी। इस ह्रास का बहुत बड़ा कारण टीमस्टर्स यूनियन का निष्कासन था, जिसके फलस्वरूप असम्बद्ध यूनियनो की सदस्य सख्या भी बढ़ी।

ए. एफ. एल. सी. आई. ओ. से अलग हो जाने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यूनियन सदस्यता में सामान्य कमी हो जाना था, जो इन आँकड़ों से ज़ाहिर होती थी। १९५८ में अधिकृत द्विवार्षिक रिपोर्ट में बताया गया कि सदस्य सख्या दो दशाब्दियो में पहली बार कम हुई है। यह १,८५,००,००० से घट कर १,८१,००,००० हो गई। अगले दो वर्षो के अनुमानों में भी इस संख्या में कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ। इसका मतलब हुआ कि जनवरी १९६० में कुल सिविल श्रम-शक्ति के मुकाबले में, जो लगभग ६,८२,००,००० की हो गई थी, यूनियन सदस्यो का अनुपात राष्ट्र के मज़दूरों के एक चौथाई से भी कम था। वाल्टर रूथर ने स्पष्ट कहा: "हमारे कदम पीछे हट रहे हैं।"

यूनियनो की सदस्य सख्या में इस कमी के कई कारण थे, किन्तु इसका मूल कारण सभवत: यह था कि निर्माण, खान तथा परिवहन उद्योगो में कर्मचारियों की संख्या प्रशासन, थोक न परचून व्यापार, वित्त विनियोग, और विशेषकर सर्विस उद्योगों में कर्मचारियो की बढ़ती हुई सख्या के अनुपात में घट रही थी। रोजगार के स्वरूप मे इस परिवर्तन के दोनों कारण थे। उत्पादन उद्योगो मे अधिकाधिक ऑटोमेशन का सहारा लिया जा रहा था जहाँ नई-नई प्रक्रिया और नई-नई मशीने आवश्यक कर्मचारियो की संख्या कम करती जा रही थी और अधिक सर्विस चालू करने की जनता की माँग पूरी करने के लिये अनुत्पादक उद्योगों का विस्तार किया जा रहा था। वस्तुत: हो यह रहा था कि जो कर्मचारी सदा से संगठन प्रेमी रहते आए थे उनका अनुपात कम हो गया और जो यूनियन सदस्यता के विचार के घोर विरोधी थे, उनका अनुपात बढ़ रहा था। सफेदपोश कर्मचारी नीलपोश कर्मचारियों पर हावी हो रहे थे।

संगठन सम्बन्धी गतिविधियो में ए. एफ. एल—सी. आई. ओ. को अन्य कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा। जिन उद्योगों मे यूनियन की जड़ें बहुत गहरी जमी हुई थी वहाँ भी यूनियन की सदस्यता में दिलचस्पी कम हो गई थी और दक्षिण में यूनियन-संगठन की मुखालफत घटने के बजाय बढ़ गई।

स्वयं मजदूर नेताओं मे १६३० और १६४० के दशकों का-सा जोश ठण्डा हो गया प्रतीत होता था। किन्तु राष्ट्रीय एकता के हित में ए. एफ. एल. और सी. आई. ओ. का विलय करते हुए संयुक्त मजदूर आन्दोलन ने अपने और विकास की जो आशा व्यक्त की थी, उसकी पूर्ति मे विफलता का बडा कारण राष्ट्र की श्रमिक शक्ति के स्वरूप का बदल जाना ही था।

राजनीतिक क्षेत्र मे नए सघ ने राजनीतिक शिक्षा के लिए एक नई समिति बनाकर मज़दूरो के हितो को अग्रसर करने में तत्परता से काम करना शुरू कर दिया। दोनो मे से किसी भी बड़े राजनीतिक दल के साथ मज़दूरो को सम्बद्ध करने का अब भी कोई इरादा नही था। राजनीतिक शिक्षा समिति ने "पूर्णतः निर्दलीय नीति" अपनाए रखने का सकल्प व्यक्त किया किन्तु १६५६ मे दोनो पार्टियो के सम्मेलन मे मज़दूरो द्वारा जो प्रस्ताव पेश किए गए उनपर डैमोक्रैटिक पार्टी का ज्यादा अनुकूल रुख देख कर मज़दूरो ने राष्ट्रपति-पद के चुनावो मे डैमोक्रैटिक पार्टी का ही समर्थन किया जैसा कि वे रूज़वेल्ट के ज़माने से निरन्तर करते आए थे। ए. एफ. एल. सी. आई. ओ. की कार्यकारिणी ने ऐडलाई स्टीवेंसन की उम्मीदवारी का समर्थन किया और राजनीतिक शिक्षा समिति ने उनकी तरफ से और काग्रस के लिए ऐसे उम्मीदवारो के पक्ष मे चाहे वे डैमोक्रैट हो या रिपब्लिकन जिनकी नीति का यह समर्थन करती थी, जोरदार चुनाव आन्दोलन किया। राष्ट्रपति आईजनहावर के पुनर्निर्वाचन से निराश होकर भी मज़दूरो को काग्रेस में डैमोक्रैटिक और लिबरल तत्त्वो के अधिक सख्या में आ जाने से सन्तोष हुआ।

सगठन सम्बन्धी अभियान अथवा राजनीतिक कार्रवाई की भी अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण एक अन्य मोर्चे पर ए. एफ. एल. सी. आई. ओ. की आशाएँ चकनाचूर हो गई। विलय का एक मुख्य उद्देश्य यूनियन सगठन को नई ताकत देने के अलावा गैर-जिम्मेदार यूनियनो पर अधिक प्रभावशाली नियत्रण स्थापित करना भी था। इस उद्देश्य के लिए संघ ने एक नैतिक आचरण समिति स्थापित की जो एक आचार संहिता लागू करके मज़दूरो पर लगाए गए अधिकाधिक गम्भीर आरोपो के सामने अपने घर की गडबडी खुद ठीक कर लेने की आशा रखती थी। मज़दूरो पर लगाए जाने वाले ये आरोप थे—यूनियन कोषो का, विशेषकर कल्याणकार्य व पेंशन योजनाओ मे लगाए गए धन का

दुरुपयोग; यूनियन नेताओ का दुर्व्यवहार तथा यूनियन सम्बन्धी मामलो में भ्रष्टाचार तथा अनैतिक आचरण के अन्य उदाहरण। किन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि अनेक यूनियनो मे स्थिति इतनी खराब हो गई है कि जनता व काग्रेस मे से कोई भी इस मामले को पूर्णतः ए. एफ. एल. सी आई. ओ. के डण्डे के लिए ही नही छोड़ देना चाहता था, बल्कि वे सरकारी जाँच-पड़ताल और सभावित सरकारी कार्रवाई के लिए आग्रह कर रहे थे।

फलस्वरूप काग्रेस ने १९५७ मे मजदूर या प्रबन्ध जगत् मे से कही भी अनुचित तौर-तरीको की जाँच के लिए एक प्रवर समिति नियुक्त की और आरकन्सास के सेनेटर जॉन एल मैक्लेल्लान की अध्यक्षता मे इसने तुरन्त ही आम सुनवाइयाँ शुरू करदी जिनमें प्रकट असलियत से सारा देश स्तब्ध रह गया। तानाशाही नियत्रण, व्यापक भ्रष्टाचार, हिसा और पैसा ऐंठे जाने की वारदातें वस्तुतः कुछ ही यूनियनो के बारे मे प्रकट हुईं किन्तु इससे सारे मजदूर आन्दोलन को शका की दृष्टि से देखा जाने लगा और इसके नेताओ को बचाव के पैतरे पर आना पडा।

काग्रेस की जाँच-पड़ताल का एक मुख्य लक्ष्य टीमस्टर्स यूनियन थी। समिति की सुनवाइयो मे एक के बाद एक गवाह ने जो चौंका देने वाले रहस्य खोले उनसे पता चला कि इसका अध्यक्ष डेविड बेक इस यूनियन को मनमाने ढग से चला रहा था और उसका बहुत सा धन उसनें अपने निजी कार्यो मे खर्च कर दिया था। घमण्डी और समिति की सत्ता की अवहेलना करने वाले इस टीमस्टर्स के अध्यक्ष ने सवालो का जवाब देने से बार-बार इन्कार कर दिया और जब इसपर मानहानि का दावा दायर करने की धमकी दी गई तो उसने ५वे सशोधन की शरण ली। तो भी उसके खिलाफ जो साक्षियाँ पेश की गईं, उससे वह यूनियन की अध्यक्षता छोडने को मजबूर हो गया और अन्ततोगत्वा उस पर आयकर अदा न करने और लूट खसोट के अभियोगो मे मुकदमा चलाया गया तथा सजा दी गई।

समिति की जाँच-पड़ताल से यह भी पता चला कि टीमस्टर्स की स्थानीय शाखाओ मे चुनावो मे धाँधलेबाज़ी से काम लिया जाता था। यूनियन के अधिकारी मालिको के साथ ज़ोर-जबर्दस्ती करते थे, डरा-धमकाकर रुपया पैसा ऐंठे जाने की घृणित वारदातें की जाती थीं, यूनियन अधिकारियो तथा

कुख्यात गुण्डों में (विशेषकर न्यूयार्क में) निकट सम्बन्ध था और हिंसा तथा आतंक के अन्य विविध कुकृत्य होते थे। बाद मे यह भी पता चला कि टीमस्टर्स यूनियन मे डेविड वेक का स्थान लेने वाला जेम्स आर. हौफा भी वही सब कुछ किया करता था जिसके लिए उसकी यूनियन बदनाम थी। मैक्लेल्लान समिति की रिपोर्ट के अनुसार वह एक "गुण्डो का राज्य" चला रहा था।

यह स्थिति और ज्यादा उलझन पूर्ण हो गई। कुछ यूनियन सदस्यो ने हौफा के खिलाफ चुनावो मे धाँधलेबाज़ी का अभियोग चलाया। सब कानूनी उपायो से उसने इसका मुकाबिला किया। अन्त में अदालतों ने यूनियन के मामलो की निगरानी तथा सचालन के लिए एक मानीटर बोर्ड नियुक्त कर दिया। किन्तु ये कानूनी दाँव-पेंच जारी थे और हौफा के खिलाफ दुराचरण के अनेक आरोप लगाए गए तो भी वह अपने पद पर कायम रहा और यूनियन के मामलो में प्रायः अदालतो और काँग्रेस दोनो को चुनौती देता रहा।

मैक्लेल्लान समिति ने जो सुनवाइयाँ की उनमें टीमस्टर्स के बारे मे की गई सुनवाई सबसे ज्यादा सनसनीखेज़ थी। किन्तु होटल ऐण्ड रेस्तराँ एम्प्लायीज़, बेकरी ऐण्ड कन्फैक्शनरी वर्कर्स, आपरेटिंग इजीनियर्स, एलाइड इण्डस्ट्रियल वर्कर्स और यूनाइटेड टैक्सटाइल वर्कर्स के मामले में खुले रहस्य इससे कुछ ही कम सनसनीखेज़ थे। एक के बाद एक गवाह ने यूनियन नेताओ तथा मालिको के बीच साँठ-गाँठ की, यूनियन कोषो के दुरुपयोग की, जबर्दस्ती पैसा ऐंठे जाने और हिंसात्मक कार्यो के बारे मे साक्षियाँ दी। समिति की सुनवाइयों से यह तसवीर सामने आई कि ऐसी बहुत-सी महत्त्वपूर्ण यूनियनें है जहाँ सिद्धान्तहीन और बेईमान नेताओ ने जो टीमस्टर्स की तरह प्रायः ही स्थानाय समाज के अपराधी तत्त्वो से निकट सम्बन्ध रखते है, लोकतत्रीय परम्पराओ तथा यूनियन सदस्यो के अधिकारो की बिल्कुल उपेक्षा कर रखी थी। यह स्थिति ऐसी थी, जिसमें यूनियन सदस्यो, प्रबन्धको और जनता के हितो को नुकसान पहुँचाने वाला भ्रष्टाचार और हिंसा पनपती थी।

इस प्रकार के रहस्योद्‌घाटन के पश्चात् ए. एफ. एल., सी. आई. ओ. की नैतिक आचरण समिति ने तुरन्त कार्रवाई की। इसने अभियुक्त यूनियनों से जवाब तलब किया और आन्तरिक सुधारों के बारे में समिति की शर्तों को पूरा करने के लिये मोहलत दी। अपने घर की गड़बड़ी ठीक न करने पर संघ

उन्हे निकाल देने को तत्पर था और दिसम्बर, १९५७ मे टीमस्टर्स यूनियन, लाण्ड्री वर्कर्स तथा बेकरी ऐण्ड कन्फेक्शनरी वर्कर्स के मामलो मे उसने उक्त कार्रवाई की। ए. एफ. एल., सी. आई. ओ. जिम्मेदार यूनियन नेतृत्व के उच्च स्तर और अनुशासन लागू करने के मजदूरो के दृढ़ सकल्प का इज़हार कर रहा था।

तो भी मार्च, १९५८ में अपनी पहली रिपोर्ट में मैक्लेल्लान समिति ने आग्रह किया कि यूनियन-भ्रष्टाचार के बारे मे जो रहस्य उसने सप्रमाण उद्घाटित किए है, उनका इलाज करने के लिए कांग्रेस कदम उठाए और जनता यूनियनो पर सरकार का और नियंत्रण स्थापित करने का समर्थन करती प्रतीत होती थी। जब राष्ट्रपति आइज़नहॉवर ने "मजदूर-प्रबन्धक समझौतों मे भ्रष्टाचार, लूट-खसोट और विश्वस तथा सत्ता के दुरुपयोग" को रोकने के लिये कानून बनाने को अपील की तो काग्रेस उसके लिए तैयार थी।

किन्तु कानून बनाने की इस कोशिश से मज़दूर यूनियनो के कानूनी अधिकार का समस्त विवादग्रस्त विषय और टैफ्ट-हार्टले कानून मे सशोधन करने या उसे रद्द करने का पुराना प्रश्न तुरन्त फिर उभर आया। मज़दूरो के दुश्मनो ने भ्रष्टाचार के रहस्योद्घाटनो से उपलब्ध अवसर का लाभ उठाकर यूनियनों की उपयुक्त गतिविधियों पर भी नए प्रतिबन्ध लगवाने की चेष्टा की। मजदूरो के दोस्त भ्रष्टाचार को दूर करने की आवश्यकता स्वीकार करने को तैयार थे किन्तु वे स्थिति का लाभ उठाकर यूनियनो के पूर्व स्वीकृत अधिकारों में कटौती कर देने के प्रयत्नो का जोरदार विरोध कर रहे थे। तथाकथित डगलस-कैनेडी-आइव्स ऐक्ट नाम के एक कानून पर समझौता हो गया, जिसमें कहा गया था कि कर्मचारी-कल्याण और पेंशन योजनाओ पर पूरी रोशनी डाली जाए, किन्तु बुनियादी मामलो के बारे मे ज्यादा सख्त कानून बनाने का हर प्रयत्न आगामी मध्यावधि चुनावो के कारण गहरे होते जाने वाले राजनीतिक विवाद के कारण विफल हो गया। अन्त में सेनेट ने एक और आइव्स-कैनेडी बिल पास किया जो एक नरम भ्रष्टाचार-विरोधी कानून था किन्तु प्रतिनिधि सभा ने इसे नरम होने के कारण ही अस्वीकृत कर दिया।

१९५८ का स्थान जब १९५९ ने लिया तब भी मैक्लेल्लान समिति द्वारा

यूनियनों के अनुचित तौर-तरीकों का भण्डाफोड़ जारी रहने के कारण मज़दूरो के मामले कांग्रेस की बैठको मे प्रमुख विषय बन गए। सेनेट और प्रतिनिधि सभा दोनो में मजदूरों के दुश्मनो तथा मज़दूरो के मित्रो के बीच एक बार फिर सघर्ष छिड गया और मध्यवर्ती चुनावों मे डैमोक्रैटिक पार्टी की जीत के बावजूद यह धीरे-धीरे स्पष्ट हो गया कि यूनियनो पर सन् १६४८ के बाद किसी भी समय से सबसे अधिक सख्त नियम लागू करने के लिए कांग्रेस कृत-सकल्प है। लोकमत काफी उत्तेजित हो गया था। प्रस्तावित कानून को सिर्फ भ्रष्टाचार-विरोधी उपायो तक सीमित रखने के संघर्ष मे मज़दूर हारते जा रहे थे।

इस तीव्र संघर्ष के फलस्वरूप बने कानून पर राष्ट्रपति आइज़नहावर ने १४ सितम्बर, १६५८ को दस्तखत कर दिए और इसे '१६५६ का मजदूर-प्रबन्ध रिपोर्ट और रहस्योद्‌घाटन अधिनियम', का भारी-भरकम नाम दिया। प्रतिनिधि-सभा मे दोनो दलो के प्रस्तावको के नाम पर इसका ज्यादा लोकप्रिय नाम लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट था। इसमे मज़दूरो को दिए गए बुनियादी अधिकारों की रूपरेखा निर्दिष्ट की गई थी, जिसमे यूनियनो के अदर लोकतत्रीय प्रक्रियाओं के सरक्षण की और यूनियन कोषो का दुरुपयोग करने के अपराधी किसी भी अधिकारी के लिए जुर्माने व कैद की सज़ा का विधान करके इन कोषों की रक्षा की व्यवस्था की गई थी; किसी कम्युनिस्ट अथवा सज़ायाफ्ता व्यक्ति पर कम्युनिस्ट पार्टी से अलग होने अथवा जेल से छूटने के बाद ५ वर्ष तक यूनियन के अधिकारी बनने पर पाबन्दी लगा दी गई और यूनियन सदस्यो के अधिकारों मे जबरन हस्तक्षेप को संघीय अपराध घोषित कर दिया गया। भ्रष्टाचार तथा रुपया-पैसा ऐंठे जाने की वारदातों से सम्बन्धित व्यवस्थाएँ करने के अलावा इस नए कानून की बदौलत बहिष्कार और घरना दिए जाने के मामलो में टैफ्ट हार्टले ऐक्ट में संशोधन भी कर दिए गए थे जिससे सब यूनियनो की आर्थिक शक्ति बहुत सीमित हो गई।

लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट मे गौण बहिष्कार की, जिस पर टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट के मातहत पहले ही प्रतिबन्ध लगा हुआ था, परिभाषा व्यापक करके उसमें यूनियनो के हितों को बढ़ावा देने की दृष्टि से एक मालिक को किसी दूसरे मालिक से व्यापार करने देने के लिए मजबूर करना भी शामिल कर दिया

गया था; और इसमें कहा गया कि जिस कम्पनी में कोई और यूनियन कानूनी रूप से मान्य है, उसके खिलाफ धरना देना मज़दूरो का अनुचित तरीका है। एक अन्य किन्तु विवादास्पद प्रश्न पर भी इसने उन सब श्रम विवादो को जिनमे राष्ट्रीय श्रम सम्बन्ध बोर्ड कार्रवाई करने से इन्कार कर दे, राज्यो को अपने कार्य-क्षेत्र में लेने का अधिकार प्रदान किया।

लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट किसी के लिए भी पूर्णत सन्तोषजनक नही था। प्रबन्धक तो इस चीज से असंतुष्ट थे कि बहिष्कार तथा धरना देने के बारे मे यूनियनो पर काफी सख्त नियन्त्रण नही लगाए गए और मजदूर इसलिए बहुत दु खित थे कि टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की कट्टर मजदूर विरोधी व्यवस्थाओ मे संशोधन करने के बजाय उन्हें और मजबूत कर दिया गया। ए. एफ एल. सी. आई. ओ. की कार्यकारिणी ने नए कानून की स्पष्ट निन्दा की और कहा कि मज़दूरो के लिहाज से "यह एक दशाब्दी में सबसे सख्त धक्का है।" 'फेडरेशनिस्ट' ने कहा कि इसका उद्देश्य "मजदूरो को नष्ट करना" है। विधि-मोर्चे के अन्य क्षेत्रों मे मज़दूर सफल संघर्ष कर रहे थे। १९५५ के बाद से सिर्फ दो और राज्यो ने "काम का अधिकार" सम्बन्धी अत्यन्त विवादास्पद क़ानून पास किए और १९५८ में जब कैलिफोर्निया, ओहायो, कोलोरैडो, इडाहो और वाशिंगटन ने ऐसे कानून बनाने से इन्कार कर दिया तो ऐसा प्रतीत हुआ कि इस सारे आन्दोलन को एक निर्णायक धक्का लगा है। किन्तु कांग्रेस ने, उस समय जब कि अधिकाश मजदूर नेता यह आशा कर रहे थे कि भ्रष्टाचार के खिलाफ युक्तियुक्त सरक्षणो के साथ-साथ संगठन सम्बन्धी गतिविधियों के लिए अधिक स्वतन्त्रता प्रदान की जाएगी, ऐसी टेक अपनाई जिसे अत्यन्त मज़दूर-विरोधी समझा गया।

यह सच था कि लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट कई दृष्टियो से मजदूरो के लिए एक बड़ा धक्का था। इसमे कोई सन्देह नहीं कि यह यूनियनो के प्रति परिवर्तित लोकमत को जाहिर करता था जो प्राय: यूनियनो की एकाधिकारिक दीखने वाली सत्ता और श्रम सम्बन्धी तौर-तरीको मे भ्रष्टाचार व हिंसा के भण्डाफोड़ से बना था। इससे अधिक सख्त श्रम-नीति के निर्माण के कांग्रेस के संकल्प का पता चला। प्रबन्धक यूनियनों की ताकत कम करने के उद्देश्य से पहले प्राप्त करने मे सफल हुए। तो भी नए कानून ने सगठित श्रमिकों की

शक्ति के बुनियादी आधारों को ज्यादा नुकसान नही पहुँचाया। इसका सौदे-बाज़ी के एकमात्र अधिकार, अनिवार्य यूनियन सदस्यता या यूनियनो के कानूनी संरक्षणो पर, जो रूढ़िपन्थी उद्योग के वास्तविक निशाने थे, कोई प्रभाव नहीं पड़ा। और इसमें गैर-ज़िम्मेदारी या भ्रष्ट यूनियन-नेतृत्व के खिलाफ रक्षात्मक बाधाएँ खडी करके यूनियन-लोकतंत्र को जो संरक्षण प्रदान किया गया था वह मज़दूरो तथा आम जनता के हित मे था। इसके अतिरिक्त पहले के श्रम-कानूनो की तरह लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट के अन्तिम परिणाम भी इस कानून के बारे मे अदालती परिभाषा पर निर्भर थे।

यूनियन-भ्रष्टाचार के भण्डा-फोड़ से जहाँ संगठित मज़दूरों की शक्ति के बारे में ये कानूनी संघर्ष लड़े जा रहे थे वहाँ स्वत: राष्ट्र के औद्योगिक मजदूरों को उत्तरोत्तर अधिक लाभ मिल रहे थे। जैसे अधिक वेतन, काम के कम घंटे और बेहतर कल्याण कार्यक्रम जो दूसरे विश्व-युद्ध के बाद से देश के आर्थिक इतिहास की विशेषता रही है। १९५० के दशक के उत्तरार्ध में सामूहिक सौदे-बाज़ी के जो समझौते किए गए उनमें करीब-करीब बिना अपवाद यूनियन सदस्यों को नए लाभ प्राप्त हुए। उदाहरणार्थ यूनाइटेड स्टील वर्कर्स ने १९५६ मे एक अत्यन्त लाभप्रद त्रिवर्षीय करार प्राप्त किया और दो वर्ष बाद यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स ने जो समझौता किया वह यद्यपि आशा के अनुकूल नही रहा तो भी उसमे वार्षिक सुधार, जीवन-यापन के खर्चे की तालिका के अनुसार वेतनो में हेर-फेर तथा बीमा व पेंशन के लाभों में वृद्धि की व्यवस्था की गई थी।

इन वर्षों के दौरान औद्योगिक वेतनो मे निरन्तर वृद्धि से औसत साप्ताहिक आय ९२.५२ डालर हो गई और काम का औसत सप्ताह ४० घण्टे का हो गया। यह सही है कि ये लाभ महँगाई में निरन्तर वृद्धि से कुछ हद तक बराबर हो गए तो भी महँगाई मे वृद्धि की रफ्तार काफी कम हो गई थी जिससे राष्ट्र के मज़दूरो की आय में डालर ही नही बढ़े, अपितु वास्तविक आमदनी भी बढी। अधिकाश कर्मचारियो को अधिक पेंशन, अन्य पूरक लाभ, लम्बी छुट्टियाँ और अधिक अवकाश के जो अन्य लाभ मिले, उनकी तुलना इस सम्पूर्ण क्षेत्र में चामत्कारिक युद्धोत्तरवर्ती विकास से पहले की परिस्थितियों से मुश्किल से ही की जा सकती है।

किन्तु तात्कालिक आर्थिक लाभ की तसवीर का एक दूसरा पहलू भी था। १९५० के दशक की आम समृद्धि में १९५७-५८ की मन्दी से रुकावट पडी। औद्योगिक हलचलो में कमी का, जो सौभाग्य से बहुत थोड़े दिन तक रही, वेतनों पर कोई गम्भीर प्रभाव नही पडा किन्तु इससे बेकारी एकदम बढ़ गई। मन्दी जब पूरे यौवन पर थी तो बेकारो की संख्या ५४,००,००० अर्थात् कुल श्रमिक शक्ति का ६ प्रतिशत थी। अपने-आप मे यह बात बहुत विक्षोभकारी नही थी किन्तु मजदूरो के लिए इससे भी ज़्यादा चिन्ता की बात यह थी कि जब अर्थव्यवस्था सुधर गई और औद्योगिक उत्पादन फिर बढ़ गया तब भी बेकारो की संख्या अनुपात से बहुत ज्यादा रही। मदी के बाद काफी औद्योगिक क्षेत्र अवसाद में पडे रह गए जिनके तथा देश की आम समृद्धि बीच बडा फर्क हो गया था और १९६० की वसन्त ऋतु मे बेकारो की सख्या अब भी ३५ लाख अथवा कुल श्रमिक शक्ति की ४.९ प्रतिशत थी।

यह भविष्य के लिए बुरा संकेत था। ऐसा प्रतीत हुआ कि हमेशा बनी रहने वाली इस बेकारी का कारण अस्थायी मन्दी उतना नही, जितना औद्योगिक ऑटोमेशन, जिसने १९५७-५८ के समय की कठिनाइयो को और बढ़ा दिया था। ऑटोमेशन के, जिसे मजदूरो के जिम्मेदार नेता राष्ट्र के भावी आर्थिक विस्तार मे अनिवार्य समझते थे, और अतिक्रमणो से यूनियन सदस्यो की रक्षा कैसे की जाए, यही संगठित मजदूरो की सबसे कठिन समस्या बन गई। इसे फिकर हुई कि नए लोगो को रोज़गार प्राप्त होना तो दूर की बात है, औद्योगिक उत्पादन मे ऑटोमेशन के कारण, जिससे उत्पादन बढने पर भी उपलब्ध रोज़गार कम हो जाते है, काम पर लगे हुए श्रमिको की संख्या क्या बरकरार रखी जा सकती है। इस मूल समस्या का कोई हाज़िर जवाब नही था किन्तु यूनियनों को एक ऐसा कार्यक्रम बना लेना सम्भव प्रतीत होता था जिससे जहाँ कही सम्भव हो वहाँ रोज़गार की रक्षा हो सके और अन्यत्र हटाए हुए कर्मचारियों को पुन. प्रशिक्षण अथवा वैयक्तिक अनुकूलनो के जरिये नए अवसर प्रदान किए जा सकें। बढी हुई कार्यकुशलता के लाभो को मानना तो लाज़िमी था तो भी मजदूर नेता यह मानने को तैयार नही थे कि मज़दूरों की सहायता के अन्य उपाय किए बिना ऑटोमेशन की वेदी पर उनकी पूर्णत. बलि चढा दी जाए।

सामान्यतः १९५० की दशाब्दी का उत्तरार्ध किसी अधिक विध्वंसक औद्योगिक सघर्ष से मुक्त रहा। सामूहिक सौदेबाज़ी की प्रक्रिया जब भग हो जाती थी तो बेशक हडतालें होती थी किन्तु इनसे मनुष्य दिवसो की हानि ज्यादा नही हुई। १९५७ में इनकी संख्या सिर्फ १७० लाख रह गई जो युद्ध के बाद के वर्षो में सबसे कम थी और १९५८ मे भी यह सख्या सिर्फ २३० लाख तक ही पहुँची। किन्तु अगले वर्ष एक ऐसी हडताल हुई जितनी लम्बी किसी बड़े उद्योग मे देश ने शायद पहले कभी नहीं देखी थी। यह ११६ दिन तक चली, हर किसी के लिए वहुत महँगी पड़ी और कुछ समय के लिए तो राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के लिए वहुत खतरनाक प्रतीत हुई। और इस्पात उद्योग की इस महान् हडताल के पीछे औद्योगिक ऑटोमेशन की तेज रफ्तार से उत्पन्न समस्याएँ ही मूल कारण थी। यह वस्तुत. मजदूरो और प्रवन्धको के बीच सत्ता के लिए सघर्ष था। इसमे इस्पात कर्मचारी काम के नियमो के बारे में अपना अधिकार क्षेत्र कायम रखने की कोशिश कर रहे थे जिससे रोज़गारो की रक्षा हो सकती और इस्पात उद्योग उत्पादन के सब नए साधनो पर नियत्रण के लिए खुली छूट पाने को प्रयत्नशील था।

यह स्वाभाविक था कि यह शक्ति-परीक्षा इस्पात उद्योग मे होती। इस हडताल से उन पुराने बड़े सघर्षों—होमस्टेड, १९१९ की इस्पात हडताल, १९३७ की लिटल स्टील हडताल की याद आ गई जिनमे मज़दूरो ने देश के विशालतम उद्योग की मज़बूती से जमी ताकत के खिलाफ़ अपने अधिकारो के लिए जमकर लोहा लिया था। और १९५९ मे पुनः सगठित श्रमिको और उद्योग की समस्त ताकतो ने यह महसूस किया कि इस्पात की हड़ताल के परिणामो पर उनके समस्त हितो का दारोमदार है। इस बार हिंसा और आतक के दौर-दौरे के बजाय कष्ट-सहिष्णुता की अग्नि-परीक्षा थी।

पहले सघर्ष का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट नही हुआ था। यूनाइटेड स्टील वर्कर्स तथा इस्पात उद्योग मे नए करार की बातचीत वेतनों के बारे में कभी समाप्त न होने वाली सौदेबाज़ी का एक और अध्याय प्रतीत होती थी और यह आम ख़याल था कि अन्त में कोई न कोई ऐसा समझौता हो जाएगा, जैसे युद्धोत्तर काल मे होते आए है। असहाय जनता आशंकित थी कि मज़दूरो के वेतन वढ़ेंगे, उसके वाद इस्पात का मूल्य वढाया जाएगा और उसके फलस्वरूप

अन्त में महँगाई बढ़ेगी।

वेतन सम्बन्धी बातचीत के प्रारम्भिक दौर में इस्पात उद्योग का जो रवैया सामने आया उससे पता चला कि इस बार वह वेतनों में और वृद्धि प्रदान न करने के लिए कटिबद्ध है। उसके प्रवक्ताओ ने कहा कि महँगाई पर नियत्रण रखने का एकमात्र यही उपाय है और उनकी इस दलील को आम जनता का भी बहुत समर्थन मिला। दूसरी ओर इस्पात मज़दूरो का कहना था कि उत्पादन मे वृद्धि तथा महँगाई बढ जाने—इन दोनो कारणो से वे अधिक वेतन पाने के हकदार हैं और उन्होने दृढ़ता से कहा कि इस्पात कम्पनियो के मुनाफे इतने ज्यादा है कि वे इस्पात के दाम बढ़ाए बिना मजदूरो की अधिक वेतन की माँग को पूरा कर सकती हैं। स्वय इसी बात पर भी समझौता होना कठिन था किन्तु धीरे-धीरे यह प्रकट हुआ कि उलझनें और भी है। क्योंकि जब उद्योग ने काम के मौजूदा नियमों मे सशोधन की माँग की तो इस्पात कर्मचारियो ने अपना प्रतिरोध कड़ा कर दिया। जिसे वे अपने लिए वेतनवृद्धि से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण चीज़ समझते थे, उस पर उन्होने कोई भी रियायत देने से इन्कार कर दिया। वेतन के मामले मे तो वे समाझौते को सदा सभव समझते थे।

इन परिस्थितियों में जुलाई के मध्य मे करार की बातचीत टूट गई और देश भर मे इस्पात कर्मचारियो ने हडताल कर दी। मज़दूरो तथा उद्योग के बीच खाई को पाटने के बाद मे किए गए प्रयत्न ऊबा देने वाली नियमितता से विफल होते चले गए और जब हड़ताल असमाप्त हफ्तों तक खिचती चली गई और इस्पात की सप्लाई खात्मे पर आ गई तो राष्ट्र का सम्पूर्ण अर्थतंत्र लडखड़ाने लगा। क्रुद्ध जनता, जो दाँव पर लगे मामलो को अब भी ठीक से नही समझ रही थी, बल्कि यही समझ रही थी कि इस्पात यूनियन तथा उद्योग आम जनता को नुकसान पहुँचाकर अपना निजी वेतन-युद्ध लड रहे हैं औद्योगिक शाति और समृद्धि के हक में सरकार के हस्तक्षेप की माँग करने लगी। आइजनहावर सरकार ने बड़ी मन्द गति से और बड़ी अनिच्छा से कदम उठाया। राष्ट्रपति अन्त तक भी किसी श्रम-विवाद में नहीं उलझना चाहते थे। अन्त मे वे कार्रवाई के लिए मजबूर हुए और अक्तूबर के अन्त में उन्होने टैफ्ट हार्टले ऐक्ट की आपातकालीन व्यवस्थाओ का आश्रय लिया अर्थात्

उन्होंने घोषणा की कि हड़ताल का जारी रहना राष्ट्र के स्वास्थ्य तथा सुरक्षा लिए खतरा है और जाँच के लिए एक बोर्ड नियुक्त कर दिया। जब इस बोर्ड ने यह रिपोर्ट दी कि हडताल के समाधान का कोई आधार नही मिल सका तो उन्होने न्याय विभाग को यूनियन के खिलाफ ८० दिन का निरोधादेश प्राप्त करने का आदेश दिया। सर्किट कोर्ट ने जिला अदालत द्वारा दिए गए निरोधादेश की पुष्टि की और यद्यपि यूनियन ने इस आधार पर अपील की कि हडताल ने कोई राष्ट्रीय सकट उत्पन्न नही किया है (राष्ट्रीय रक्षा के लिए आवश्यक सब इस्पात बनाने का उसने वायदा किया था) सुप्रीम कोर्ट ने ७ नवम्बर को १ के विरुद्ध ८ मतो से निचली अदालत के फैसले को सम्पुष्ट किया तब हड़ताली काम पर लौट गए किन्तु यूनाइटेड स्टील वर्कर्स ने हड़-ताल को भंग करने के लिए प्रशासन पर तीव्र आक्षेप किए और किसी भी मुद्दे पर नरम हुए बिना वह निरोधादेश की अवधि समाप्त हो जाने पर पुनः हडताल करने पर आमादा प्रतीत हुई।

यह गतिरोध अलड्ध्य प्रतीत हुआ। वेतन सम्बन्धी मामले की तो बड़ी चर्चा होती थी किन्तु वास्तविक अड़चन, जिस पर कोई भी पक्ष झुकने को तैयार नही था, काम के नियमो के बारे में उत्पन्न विवाद और ऑटोमेशन के साथ उन नियमो का सम्भावित सम्बन्ध ही बना रहा। वर्ष की समाप्ति पर हड़ताल फिर प्रारम्भ हो जाने की आशका उत्पन्न हो गई और इस्पात का सारा स्टाक पिछली हड़ताल मे खत्म हो जाने के कारण अब राष्ट्र के लिए इसके और भी गम्भीर परिणामो की संभावना से लोग इसके और भी खिलाफ हो गए। तो भी यूनियनो ने हड़ताल के लिए कमर कस रखी थी। वस्तुतः काम के नियमो के बारे मे उद्योग के दुराग्रही रवैये के कारण इस्पात कर्म-चारियो का हड़ताल का संकल्प और मज़बूत हो गया था। जब कैसर कम्पनी ने इस्पात उद्योग के संगठन से अलग होकर यूनियन के साथ स्वतन्त्र समझौता कर लिया तो कुछ समय के लिए तो उद्योग का मोर्चा टूटता प्रतीत हुआ किन्तु उसने अपनी दरार शीघ्र ही भर ली। उद्योग के प्रवक्ताओ ने किसी भी करार के लिए आवश्यक शर्त के रूप में काम के नियमो में परिवर्तन पर फिर ज़ोर दिया।

तब ५ जनवरी, १९६० को एक आकस्मिक और नाटकीय समझौते की

घोषणा की गई। शनैः-शनैः बढते हुए आर्थिक और राजनीतिक दबाव के सामने और इस आशका से कि सरकार फिर से हडताल होने देने के बजाय उस पर कोई असन्तोषजनक फैसला लाद देगी, इस्पात उद्योग ने वस्तुत. घुटने टेक दिए और यूनियन के साथ समझौता कर लिया। समझौते में अधिक पेंशन, बीमा-भुगतान और बाद में वेतनवृद्धि की व्यवस्था की गई किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि कार्य के वर्तमान नियमो को बरकरार रखने की बात भी इसमें शामिल की गई। दो सयुक्त समितियाँ भी स्थापित की गई जिनमें से एक को उद्योग के अन्दर मानवीय सम्बन्धों की समस्याओ का अध्ययन करना था और दूसरी को एक निष्पक्ष अध्यक्ष की देख-रेख मे काम की स्थानीय हालतो के अध्ययन का काम सौंपा गया। इस्पात कर्मचारियो के नेता डेविड मैकडानल्ड ने इस करार को यूनियन द्वारा किए गए अब तक के करारो मे सबसे अच्छा बताया।

इस प्रकार के सख्त विरोध के मुकाबले जीती गई यूनियन की यह विजय वेतन-वृद्धि की अपेक्षा, जिसके लिए ४ महीने निष्क्रिय रहकर इतनी बड़ी कीमत चुकाई गई थी, इस दृष्टि से ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी कि इसके फलस्वरूप ऑटोमेशन की प्रक्रिया के सहल हो जाने की सभावना थी। और यह विजय यूनाइटेड स्टील वर्कर्स के लिए ही नही, बल्कि सभी यूनियनो के लिए महत्त्वपूर्ण थी क्योकि यह समस्त उद्योगो के मुकाबले में प्राप्त की गई थी, जिन्होने इस्पात उद्योग का दृढता से समर्थन किया था। संगठित मजदूरो ने यूनियन सदस्यो के हितो की रक्षा के लिए अपनी आर्थिक शक्ति का पुन प्रदर्शन किया था। अन्य जो भी धक्के इसे लगे और कॉंग्रेस द्वारा लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट पास किए जाने का चाहे कुछ ही अर्थ लगाया जाए, उस सबके बावजूद उन्होने मज़दूर आन्दोलन की महान् तेजस्विता और शक्ति का इजहार किया था।

किन्तु यह मानना पडेगा कि श्रमिक और उद्योग दोनो की दृष्टि से और अमरीकी जनता की दृष्टि से भी इस्पात उद्योग को चिरकाल तक पंगु रखने वाली हड़ताल जैसी अन्य कोई हडताल राष्ट्रीय अर्थतंत्र के लिए विनाशकारी हो सकती थी। और टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की आपातकालीन व्यवस्थाएँ स्पष्ट ही इस समस्या का कोई हल नही थी। यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि लोकहित के अधिक प्रभावशाली संरक्षण के लिए कुछ करना होगा। किन्तु कॉंग्रेस

चुनाव के वर्ष मे कुछ करना नही चाहती थी और कुछ करने की आश्यकता के बारे मे उस वक्त की चर्चाओ के बावजूद एक बार समझौता हो जाने पर इस्पात की हडताल को किल्कुल भुला दिया गया प्रतीत होना था। संगठित मज़दूरो तथा उद्योग के बीच उच्चस्तर पर सम्मेलन के प्रस्ताव किए गए जिसका राष्ट्रपति आइजनहावर ने समर्थन किया और बाद में ऐसा सम्मेलन बुलाया भी; किन्तु इस बात का कोई सकेत नही मिला कि जब तक देश के सामने पुन: राष्ट्रीय सकट उपस्थित न हो जाए तब तक उद्योग-व्यापी हड़तालो को पहले से ही रोकने के लिए कोई और कदम उठाया जाएगा।

१६५६ मे अन्तर्राज्यीय खलासी-यूनियन समेत अन्य यूनियनो की तरफ से अन्य अनेक हड़ताले हुई और उनमे भी राष्ट्रपति ने टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट की सकट-कालीन व्यवस्थाओ का आश्रय लिया किन्तु औद्योगिक जगत् पर इस्पात की हड़-ताल छायी रही। यह बड़ा दु खदायी अनुभव साबित हुआ। आर्थिक मोर्चे पर इस सघर्ष मे अन्तत: मजदूरो की जीत ने राजनीतिक क्षेत्र में उनकी हार की भर-पाई कर दी। तो भी इस वर्ष की घटनाओ ने ए. एफ एल. सी. आई. ओ. के नेताओ को झकझोर दिया और जैसा कि कार्यकारिणी ने घोषणा की, इसने महसूस किया कि "ट्रेड यूनियन इतिहास के कुछ सबसे खराब तूफानो में से मज़दूर आन्दोलन मुश्किल से ही बचकर निकल सका है।

इन घटनाओ के कारण १६६० के दशक के प्रारम्भ में सगठित मज़दूरों ने अपनी स्थिति को काफी कठिन पाया। यद्यपि इसने इस्पात उद्योग पर विजय प्राप्त की थी तो भी इन कठोर सत्यो को दर-गुजर नही किया जा सकता कि राष्ट्र के मजदूरो को और सगठित करने का आन्दोलन अपना वेग खो चुका था और लैण्ड्रम-ग्रिफिन ऐक्ट में शामिल नए प्रतिबन्धो में प्रतिक्षिप्त लोकमत पिछली दशाब्दी या इससे भी अधिक अर्से मे किसी भी समय की अपेक्षा अब ज्यादा यूनियन-विरोधी प्रतीत हुआ। जब १६५६ की शरद् ऋतु मे ए. एफ. एल., सी. आई. ओ. का वार्षिक सम्मेलन हुआ तो उसके नेताओ और सदस्यो दोनो की मूड निराशामय थी और सम्मेलन में मुख्यत. इसी बात की चर्चा रही कि नए मजदूर-विरोधी अभियान की, जिसे संपूर्ण मज़दूर आन्दो-लन को कमजोर करने अथवा नष्ट करने के लिए बड़े उद्योगपतियो का

षड्यन्त्र समझा गया, चुनौती का सामना करने के लिए एकता की आवश्यकता है।

इस स्थिति का सामना करने, श्रमिक शक्ति मे सक्रमण से उत्पन्न समस्या को तथा ऑटोमेशन के बढते हुए प्रभाव का सामना करने के हेतु ए. एफ. एल. सी. आई. ओ. के नेता फिर से आम जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए सब कुछ करने को तत्पर थे। इसने सगठित मज़दूरो के बारे मे एक नए विचार की सृष्टि का आन्दोलन प्रारम्भ किया जिससे मैक्लेल्लान समिति द्वारा भ्रष्टाचार तथा ठगी की वारदातो के भण्डाफोड़ से जन-मानस मे बनी तसवीर को मिटाया जा सके। मजदूरों को एक सामाजिक शक्ति के रूप मे और मीनी के शब्दो में "भलाई के साधन" के रूप मे चित्रित किया गया जिसको न केवल यूनियन सदस्यो के लिए वेतन-वृद्धि और काम की बेहतर हालतें प्राप्त करने की परम्परागत माँगो से ही सरोकार था, अपितु सामान्यत: समस्त अमरीकी जनता के हितो से वास्ता था। नए प्रचार मे उन व्यापक प्रश्नों पर, जिन पर मजदूरो ने अपना एक निश्चित मत बना लिया था और सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति मे श्रमिको के योगदान पर बल दिया गया था।

मज़दूरो का पक्ष बड़ा सबल था। ए एफ. एल. सी. आई. ओ. ने सामाजिक सुरक्षा के कार्यक्रम को और व्यापक बनाने और न्यूनतम वेतन बढ़ाए जाने का सदा समर्थन किया था। उसने बार-बार अच्छे मकानो, शिक्षा के लिए अधिक सहयोग तथा नागरिक अधिकारों की अधिक प्रभावशाली गारण्टी की माँग की थी। स्वयं मजदूर तथा अन्य क्षेत्रो में इसने जातीय मेल-मिलाप के हक में और जीवन के हर क्षेत्र मे नीग्रो के खिलाफ भेदभाव की समाप्ति के बारे में साफ-साफ अपना मत व्यक्त किया था। इसके अलावा फेडरेशन ने एक ऐसी विदेश नीति को बनाए रखने मे अपने प्रभाव का उपयोग करने की कोशिश की जो कम्युनिस्ट साम्राज्यवाद के खतरो के खिलाफ देश की रक्षा करती रहे और साथ ही समस्त ससार को शाति और स्वाधीनता प्राप्त कराने के हर सम्भव उपाय की खोजबीन करती रहे। अपने कार्यक्रम के इन पहलुओ पर जोर देकर विशेषकर अप्रैल १९६० मे विश्व मामलो पर अपने सम्मेलन मे इन पर जोर देकर ए. एफ एल.-सी. आई. ओ. स्पष्ट ही जनमानस मे मजदूर आन्दोलन बारे मे अधिक अनुकूल तथा सहानुभूतिमय

चित्र निर्मित करने की आशा करता था ।

श्रमिकों के नेताओं ने मज़दूरो के लक्ष्यो तथा सामान्य लक्ष्यो को व्यापक बनाने तथा अपने 'नैतिक नेतृत्व के उत्तरदायित्व' पर कितना ही ज़ोर दिया हो, ट्रेड यूनियन आन्दोलन के लिए मज़दूरो की खुशहाली ही मुख्य चिन्तनीय विषय रही। पहले के प्रत्येक जमाने की भाँति अब भी मज़दूर नेताओ से मज़दूरो के तात्कालिक हितों की प्रभावशाली रक्षा और बढ़ोतरी के लिए अच्छी नीतियो के निर्माण की ही सबसे पहले आशा की जाती थी। 'मज़दूर आम लोगों के समर्थन पर निर्भर करते हैं और यह समर्थन लोगो के इस विश्वास पर निर्भर है कि मजदूर जिम्मेदारी से काम करने को तैयार हैं', इस मान्यता का यह अर्थ लगाया जा सकता था कि नए युग में मज़दूरों की स्थिति का अत्यन्त यथार्थवादी मूल्यांकन किया गया है। इस धारणा को लेकर क्या मज़दूर नेता संगठित मजदूरो के सामने विद्यमान गहन समस्याओं का सफलतापूर्वक सामना करने के उपाय ढूँढ सकेंगे, यह अभी देखना है।

—·०·—

२२ : उप-संहार

अमरीका के सम्पूर्ण इतिहास में कुछ बुनियादी बातों ने संगठित आन्दोलन पर गहरा प्रभाव डाला है। अमरीका में विद्यमान स्वाधीनता तथा जीवन-यापन के अवसर ने किसी वर्गीय भावना को पनपने से रोके रखा। हाल के वर्षों तक बाहर से श्रमिको के आते रहने के कारण मजदूरो की बहुतायत ने प्रभावशाली मज़दूर संगठन को असाधारण रूप से कठिन बना दिया था; जाति, भाषा और धर्म सम्बन्धी भेद कुछ अरसे के लिए सामूहिक उत्पादन के उद्योगों में सहयोग स्थापित करने के मार्ग में अलङ्घ्य बाधा सिद्ध हुए। और प्रबन्धक इतने लम्बे अर्से तक न केवल आर्थिक लाभ के आधार पर बल्कि उन्मुक्त अर्थ-व्यवस्था की व्यापक विचारधारा के कारण भी मज़दूर यूनियनों के सख्त विरुद्ध थे और उद्योगो में एकाधिकारी प्रवृत्तियो के बावजूद वे मजदूरो को सम्मिलित कार्रवाई का अधिकार देने से इन्कार करते थे।

अमरीका में जीवन-यापन की परिस्थितियो के कारण ही अमरीका के मज़दूर आन्दोलन की यूरोपीय देशो के मज़दूर आन्दोलनों के समान कोई निश्चित ढंग की विचारधारा नही रही। औद्योगिक क्रांति के शुरू के दौरों में अमरीकी मजदूर नेता एक सहकारी कोमनवेल्थ के निर्माण का धुँधला-सा स्वप्न लिया करते थे जिसमें उत्पादन के साधनो के स्वामी अन्ततोगत्वा स्वय मज़दूर ही बन जाएँगे। किन्तु ये सुनहरे स्वप्न कठोर वास्तविकताओं के साथ अनुकूलन की बजाय उद्योगवाद के परिणामो से बचने के प्रयत्न प्रतीत होते थे और मज़दूरो ने शायद ही कभी उन्हे अपना हार्दिक समर्थन प्रदान किया हो। अपने लिए और उससे भी ज्यादा अपने बच्चो के लिए अमरीकी जीवन के अवसरो में विश्वास रखते हुए उनकी लोकतंत्रीय पूँजीवाद में मौलिक आस्था थी। उन्हे समाज के मौजूदा ढाँचे मे सिर्फ अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार करने से ही वास्ता था।

अमरीकी मज़दूरो पर मार्क्सवादी समाजवाद के मन्तव्यो का कभी भी कोई गम्भीर प्रभाव नही पड़ा था। वे राजनीतिक तथा आर्थिक मामलो पर

मूलतः रूढ़िवादी रुख से ज्यादा इधर-उधर नही भटकें। उग्र हलचलो के इक्के-दुक्के उदाहरण जैसे आई. डब्लू. डब्लू. के हिंसात्मक कार्य अथवा कम्युनिस्टों की तरफ से किया गया प्रचार और साजिशें सिर्फ इस बात को ही और ज्यादा स्पष्ट रूप से सामने लाती है कि अमरीकी मजदूरो की बहुत अधिक सख्या का दृष्टिकोण नरम ही था। न ही आज की आर्थिक घटनाओ से मजदूरो का यह विश्वास ढीला पडा है कि स्वतन्त्र व्यवसाय प्रणाली में उनका भविष्य और भी उज्ज्वल है। मज़दूरो में हाल के मत सर्वेक्षणो से पता चला है कि वे अमरीका में व्यक्ति और समूहो दोनो की प्रगति की सभावनाओ में विश्वास ही नहीं करते बल्कि अधिकाश का यह खयाल है कि उनके बच्चे उनसे भी ज्यादा सुख-सुविधाओ का उपभोग कर सकेंगे।

इन कारणो से मजदूर दल बनाने का हर प्रयत्न विफल रहा। उन्हे एक करने के लिए समाजवाद जैसे किसी निश्चित ध्येय के अभाव मे मज़दूर अमरीकी समाज के अन्य किसी भी वर्ग के सदस्यों की भाँति अपनी राजनीतिक निष्ठा में सदा से विभक्त ही रहे। किन्तु अगर उनके बारे में कोई सामान्य बात कही जा सकती है तो वह यही है कि उन्होंने अपना प्रभाव सामाजिक सुधार और प्रगतिशील ताकतो के पक्ष में डाला। मजदूरो के मौलिक लक्ष्य एक वर्ग के रूप मे उनके तात्कालिक हितो से ज्यादा व्यापक सिद्ध हुए। हर आर्थिक और राजनीतिक आन्दोलन की भाँति अमरीकी मज़दूर आन्दोलन में भी अवसरवादिता, संकीर्ण स्वार्थपरता और गैर-जिम्मेदारी की भावनाएँ विद्यमान थी किन्तु सभी ट्रेड यूनियन नेताओ के दिमाग मे मजबूत लोकतन्त्रीय धारणाएं बद्धमूल रही। वे शनैः-शनैः एक ऐसे समाज के विकास की आशा करते रहे है जिसमें अमरीकी जीवन के अवसर तथा पुरस्कार उत्तरोत्तर बढ़ती हुई समानता के आधार पर सभी लोगो को प्राप्त हो।

मज़बूत एकजूट मजदूर आन्दोलन की स्थापना में राष्ट्रीय मज़दूर यूनियन तथा नाइट्स आव लेबर दोनो की विफलता के बाद १९वी सदी की समाप्ति के दिनो मे नए ढग का सगठन किया गया। व्यावहारिक व्यावसायिक यूनियनवाद पर जोर दिया गया। ए. एफ एल. ने अपने ट्रेड यूनियन सदस्यों के लिए काम की हालतों में तुरन्त सुधार करने से आगे अधिक व्यापक तथा दूर के लक्ष्यो को दृढता से तिलांजलि दे दी। यह कार्यक्रम उस ज़माने की परिस्थितियों

से बहुत अच्छा मेल खाता था और ए. एफ. एल. पहली बार अमरीकी मजदूरों मे एक स्थायी राष्ट्रीय संघ बनाने में कामयाब हुआ। किन्तु न्यू डील से उत्पन्न संभावनाओं के कारण संगठन सम्बन्धी दृष्टिकोण में एक बार फिर परिवर्तन सम्भव हुआ और राजनीति तथा सुधारो मे, जो सिर्फ राजनीतिक कार्रवाई से ही किए जा सकते थे, मजदूरो की दिलचस्पी फिर जाग उठी। सी. आई. ओ. ने जहाँ शिल्प-यूनियनवाद के विरुद्ध औद्योगिक यूनियनवाद के दावो पर जोर देने के लिए एक मुकाबले का संगठन बना लिया और इस दिशा में औरो से आगे बढ गया, वहाँ ए. एफ. एल. ने भी अपना दृष्टिकोण व्यापक किया और अपनी नीतियाँ बदली। आज के बहुत से मज़दूर नेताओ के विचार सैम्युअल गौम्पर्स की बनिस्बत विलियम सिलविस तथा टेरेंस पाउडरली के विचारो के अधिक निकट है। मजदूरो मे सहज मतभेदो के बावजूद सामान्य उद्देश्यो के बारे में जो यूनियन सुरक्षा तथा वेतन-घण्टा समझौतो से कही आगे तक जाते है, काफी मतैक्य है। और यद्यपि मजदूर तीसरे दल की स्थापना का अब भी विरोध करते है तो भी राजनीतिक दृष्टि से वे पहले से कही ज्यादा सक्रिय है और कहीं ज्यादा सफल है।

वस्तुतः तो हाल के वर्षो में मजदूर राजनीतिक व आर्थिक दोनो दृष्टियों से इतने शक्तिशाली हो गए है कि वे अपनी शक्ति का उपयोग किस तरह करते है, यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात हो गई है। यूनियन गतिविधियो मे अच्छाई तथा बुराई दोनो की विशाल क्षमता है और स्वतंत्र व्यवसाय का भविष्य जितना उद्योग में जिम्मेदार नेतृत्व पर निर्भर करता है उतना ही जिम्मेदार श्रमिक पर भी अवलम्बित है।

मज़दूरो की स्थिति में निरन्तर सुधार से हमारी आर्थिक और सामाजिक सस्थाओं के सरक्षण में पर्याप्त योग मिलना चाहिए अधिक वेतन से परिवर्तित क्रयशक्ति और काम के घण्टे कम हो जाने से सामाजिक कार्यकलापो में अधिक भाग लेकर ही मज़दूर अमरीकी जीवन-प्रणाली की स्थिरता को कायम रखने मे अपना योग दे सकते है। यह कहना ठीक ही होगा कि मज़दूरों के लाभ अन्तत. सारे राष्ट्र के लाभ है। तो भी आजकल की बडी यूनियनें अगर अन्य किसी कारण से नही तो अपने बड़े आकार के कारण ही अपनी आर्थिक शक्ति के अन्धाधुन्ध प्रयोग के कारण लोकतत्रीय समाज के लिए खतरा बन सकती

हैं। मजदूरो के एकाधिपत्य को उद्योग के एकाधिपत्य से ज्यादा माफ नही किया जा सकता। जिन नीतियो मे जन-हित की अवहेलना कर दी जाती है वे चाहे संगठित मजदूरो की हो या संगठित उद्योगपतियो की, वे समान रूप से खतरनाक है। लोकतंत्र किसी भी एक ग्रुप को चाहे उसका आधार कितना भी व्यापक हो, आर्थिक या राजनीतिक क्षेत्र मे अनियंत्रित प्रभुत्व प्राप्त नही करने दे सकता।

युद्धोत्तर काल कई दृष्टियो से असाधारण रहा है। इसकी प्रमुख विशेषता-कम्युनिस्ट साम्राज्यवाद के बढते हुए खतरे के फलस्वरूप विदेशी मामलो की प्रमुखता ने औद्योगिक सम्बन्धो पर भी उतना ही सीधा प्रभाव डाला है जितना घरेलू जीवन के अन्य पहलुओ पर। राष्ट्रीय प्रतिरक्षा तथा विदेश-सहायता की आवश्यकताओ की पूर्ति के कारण हुई उत्पादन-वृद्धि ने और इन कार्यक्रमो से उत्पन्न मुद्राप्रसार के दबाव ने, जिसने राष्ट्रीय अर्थतत्र पर गहरा प्रभाव डाला है, मजदूरो की स्थिति को मजबूत करने में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया है। क्योकि समृद्धि ने प्रबन्धको और कर्मचारियो के बीच तात्कालिक विवाद के मामलो को औद्योगिक आय के बँटवारे में सीमित कर देने मे सफलता प्राप्त की। यह आय इतनी अधिक थी कि एक तरफ तो इससे कम्पनियो को पर्याप्त और कभी-कभी तो रिकार्ड मुनाफे हुए और दूसरी ओर मजदूरो के वेतनो में शनैः-शनैः वृद्धि होती गई। इन सौभाग्यपूर्ण परिस्थितियो मे बड़े परचून व्यवसायो और महान् कृषि व्यवसाय के साथ बडे उद्योग और बडी मजदूर यूनियनो की सतुलनकारी शक्तियो ने काफी सतुलित अर्थव्यवस्था बनाए रखी है। और सामाजिक सुरक्षा को बढाने में बडी सरकार का भी और अधिक गहरा और कभी-कभी ज्यादा उलझनपूर्ण प्रभाव रहा है।

आर्थिक गतिविधियो में ह्रास तथा संभावित मन्दी का इन सतुलनकारी ताकतो के मौजूदा सतुलन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है, यह बिल्कुल दूसरी बात है और बड़ी सरकार के भावी रोल के बारे मे और भी ज्यादा अनिश्चितताएँ है। तथापि १९६० में सगठित मजदूर यूनियन सदस्यो के हितो की रक्षा के लिए एकमात्र नही तो ज्यादातर अपनी आर्थिक शक्ति पर भरोसा करते प्रतीत होते है। जैसा कि टैफ्ट-हार्टले ऐक्ट और राज्यो के 'काम का अधिकार' सम्बन्धी कानूनो के खिलाफ इनके निरन्तर अभियान से स्पष्ट है,

मज़दूर मैत्रीपूर्ण कानून के महत्त्व को पूर्णतः स्वीकार करते है, नई कोशिशें अधिक सामान्य बातों के लिए संघीय कानून पास कराने के लिए की गई जिनसे अधिक विशिष्ट सरकारी संरक्षण प्राप्त होने के बजाय सर्वप्रथम वागनर ऐक्ट द्वारा संस्थापित मौलिक सिद्धान्तो का अस्तित्व बना रहे।

हाल के वर्षों मे मज़दूरो और प्रबन्धको के बीच जो सघर्ष उत्पन्न हुए उनसे कभी-कभी राष्ट्र के आर्थिक जीवन मे गम्भीर बधाएँ पडी।. कभी-कभी उनमें सरकार को हस्तक्षेप भी करना पड़ा। यह मानना पडेगा कि जहाँ प्रबन्धको तथा मजदूरों के बीच समझौता न हो सकने के कारण जन-कल्याण पर सकट उत्पन्न होता हो, वहाँ सरकार पर आम जनता के हित की रक्षा के लिए अपने अधिकारो के प्रयोग का उत्तरदायित्व है। पहले जमाने के उन्मुक्त अर्थ-व्यवस्था के विचार अब बिल्कुल दफना दिए गए है। तो भी हम यहाँ फिर इस बात को दोहरा दें कि कुछ थोडी सी हडताले, जिन्होने वाकई खतरनाक सूरत अख़्त्यार करली थी या जिनमें सरकार को दखल देना पड़ा था, उन अधिकाश मामलों पर पर्दा डाल देती है जिनमे समूहिक सौदेबाजी सफलता-पूर्वक सम्पन्न की गई और जिनमे प्रबन्धको तथा मजदूरो के बीच बिना हड़ताल अथवा तालाबन्दी के रजामन्दी के साथ समझौते कर लिए गए।

इस प्रकार की सामूहिक सौदेबाजी का शनै -शनैः विस्तृत होता हुआ क्षेत्र, बातचीत अस्थायी रूप से भग हो जाने पर पचफैसले अथवा मध्यस्थता की व्यवस्था को अधिकाधिक अपनाया जाना, यूनियन करारों में आम प्रगति तथा हड़ताल अगर हो ही जाए तब भी हिसा की कम होती जाने वाली वारदातें इस बात की साक्षी है कि प्रबन्धको और मजदूरो दोनो मे ज़िम्मेदारी की भावना बढ रही है। आधुनिक समाज में औद्योगिक सम्बन्ध अब भी एक अत्यन्त विवादास्पद विषय है। तो भी यूनियनो की, विशेषकर नई औद्योगिक यूनियनो की बढती हुई परिपक्वता इस बात की अत्यधिक आशा बँधाए हुए है कि अपने अधिकारो को मनवाने के लिये अमरीकी मजदूरो के लम्बे अभियान से न केवल राष्ट्र के मज़दूरो को बल्कि सामान्यत आम जनता को लाभ हो रहा है।

१९६० मे एक चीज और स्पष्ट हो गई। स्वतत्र, लोकतत्रीय यूनियनो का अस्तित्व स्वतंत्र समाज की रक्षा के लिए एक मज़बूत कवच है। कम्युनिज्म के

तानाशाही खतरे के सामने अमरीकी लोकतत्र के मौलिक सिद्धान्तो की रक्षा के लिए संगठित मज़दूर अन्दोलन से ज्यादा शक्तिशाली और कोई प्रभाव काम नही कर रहा। जैसा कि स्वदेश और विदेशो दोनो जगह उदार नीतियो को दिए गए इसके सहयोग और समर्थन से स्पष्ट है, मजदूर आन्दोलन ने स्वयं को उन ताकतों से असदिग्ध रूप में सम्बद्ध कर लिया है जिनका सतत लक्ष्य एक स्वतंत्र और सुरक्षित संसार में एक स्वतत्र और सुरक्षित अमरीका की सृष्टि करना है।

—:o:—